प्रयोग संग्रह

तृतीय भाग

लेखक एवं संकलन कर्त्ता:-

वैद्य गोपाल शरण गर्ग आयुर्वेदाचार्य

सम्पादक 'सुधानिधि'

धन्वन्तरि कार्यालय विजयगढ़

मूल्य-20 रुपया

प्रकाशकीय

सुधानिधि की ओर से पाठकों की सेवा में "प्रयोग संग्रह [तृतीय भाग]" प्रस्तुत करते हुये मुझे विशेष प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। सुधानिधि का यह १२वां वर्ष है। १२ वर्ष वैद्य समाज की सेवा करते हुये आज इसे आयुर्वेद पत्र जगत में सर्वोत्तम होने का सम्मान प्राप्त है। वर्तमान मंहगाई के समय में जब कि कागज, मुद्रण सामग्री, पोस्ट-व्यय सभी मंहगे हैं; सुधानिधि उसी शान-बान से आपकी सेवा में संलग्न है। इस सफलता के २ मुख्य कारण हैं—(१) हमने सुधानिधि से धनोपार्जन की कभी लालसा नहीं की, प्रत्युत हजारों रुपया प्रति-वर्ष घाटा देते हुये पाठकों की इच्छा के अनुरूप अधिकाधिक उपयोगी सामग्री भेंट करने में तत्पर रहे हैं। (२) दूसरा कारण सुधानिधि के ग्राहकों की गुण ग्राहकता है। सुधानिधि के ग्राहक "सुधानिधि" की सेवा से सदैव सन्तुष्ट रहे हैं और इसीलिये इसकी उन्नति हो, ऐसी कामना ही नहीं; अपितु सक्रिय सहयोग कर इसके नवीन ग्राहक बनाकर हमें कृतार्थ करते रहते हैं। यही दो कारण हैं, कि अनेक कष्ट और आपत्तियों को झेलते हुए सुधानिधि आज उस सुखद स्थिति में पहुंच गया है, जिस स्थिति में पहुंचकर कोई भी पत्र अपने को गौरवान्वित अनुभव कर सकता है। आज सुधानिधि के १०००० से अधिक स्थायी ग्राहक हैं और इससे कई गुने पाठक हर माह इसे पढ़कर लाभान्वित होते हैं। सुधानिधि की प्रगति यात्रा जारी है, इसमें आप अपना सहयोग पूर्ववत् बनाये रखेंगे, ऐसी पूर्ण आशा और विश्वास है।

प्रस्तुत ग्रन्थ के विषय में

प्रस्तुत "प्रयोग संग्रह [तृतीय भाग]" उस ऐतिहासिक शृङ्खला का तृतीय पुष्प है, जिसके दो भाग क्रमशः १९८१ तथा १९८२ में प्रकाशित किये जा चुके हैं। पूर्व के दोनों भागों की जो आयुर्वेद जगत् में चतुर्दिक प्रशंसा हुई है, उस से सभी पाठक परिचित हैं। देश के कोने-कोने से विद्वान् चिकित्सकों के सहस्रों पत्र इस विशेषांक शृङ्खला को साधुवाद देने के लिये प्राप्त होते रहे हैं। उसी शृङ्खला में यह तृतीय भाग भी वही सम्मान प्राप्त करेगा और पाठकों की दृष्टि में खरा उतरेगा, ऐसा हमारा विश्वास है। प्रस्तुत भाग में पिछले भाग के आगे अकारादि क्रम से १२ बड़े-बड़े रोगों पर प्रयोगों का संग्रह क्रमबद्ध रूप से किया गया है और इसी के साथ "अ" से "ज्ञ" तक के सभी बड़े रोगों पर प्रयोगों का संग्रह पूरा हो गया है। अब इसके चतुर्थ भाग में जिसके १९८६ में प्रकाशित होने की आशा है, अवशिष्ट क्षुद्र रोगों पर प्रयोगों का संग्रह दिया जावेगा। १९८५ में "निदान चिकित्सा विज्ञानांक" का तृतीय भाग प्रकाशित किया जावेगा।

सुधानिधि के पाठकों को एक अतिरिक्त अङ्क

सुधानिधि के प्रकाशन के समय से ही यह क्रम रखा गया था कि एक वर्ष में ग्राहकों को १० साधारण अङ्क (लघु विशेषांकों सहित) तथा २ माह का संयुक्त अङ्क (विशेषांक रूप में) भेंट किया जाता था। जनवरी के अङ्क प्रकाशन के बाद फरवरी+मार्च का विशेषांक हम अप्रैल माह में भेज पाते थे, जो सभी ग्राहकों के पास मई के अन्त तक पहुंच पाता था। जनवरी के अङ्क और विशेषांक के बीच में जो अवकाश रहता था, वह पाठकों

को बहुत खलना था। इसीलिये इस वर्ष यह निश्चय किया गया, कि फरवरी+मार्च का एक साधारण अङ्क पाठकों की सेवा में और भेजा जाय; उसके उपरान्त विशेषांक पर कोई माह अङ्कित न करके उसे पुस्तक रूप में पाठकों की सेवा में समर्पित किया जाय। इसी निर्णय के अनुसार फरवरी+मार्च का संयुक्त साधारण अङ्क पाठकों की सेवा में भेजा जा चुका है और अब यह विशेषांक पुस्तक रूप में भेजा जा रहा है। हमारे इस निर्णय से इस वर्ष पाठकों को एक अङ्क का अतिरिक्त लाभ प्राप्त हुआ है। आशा है, हमारे इस निर्णय से पाठक सन्तुष्ट एवं प्रसन्न होंगे। इस अङ्क के प्रकाशन के कारण विशेषांक प्रकाशन में एक माह का विलम्ब हुआ है। आशा है, पाठक उसके लिये हमें क्षमा करेंगे। आगामी अङ्क समय पर ही पाठकों की सेवा में भेजे जा सकेंगे, ऐसा हमारा विश्वास है।

इस वर्ष के लघु विशेषांक

गत वर्षों की तरह से ही इस वर्ष सुधानिधि ५ लघु विशेषांक प्रकाशित कर रहा है, जिनके नाम तथा रूपरेखा इस प्रकार है—

(१) मलावरोध अङ्क—इस अङ्क का प्रकाशन गत वर्ष होना था, लेकिन किन्हीं कारणों से सम्भव नहीं हो पाया। इस वर्ष इस अङ्क का प्रकाशन किया जा रहा है। यह सम्भवतया मई माह मे प्रकाशित किया जावेगा। इसके विशेष सम्पादन का भार वैद्य बल्देवप्रसाद एच० पनारा को सौंपा गया है।

(२) गर्भावस्था रोग चिकित्सांक [प्रथम भाग]—गर्भावस्था में होने वाले विकारों का वर्णन इस लघु विशेषांक में दिया जावेगा। इस अङ्क का सम्पादन डा० कृष्णाकुमारी देवी लेक्चरार, ललितहरि आयुर्वेद कालेज पीलीभीत करने जा रही हैं। यह अङ्क जौलाई माह में प्रकाशित करने का विचार है।

(३) कास रोगांक—कास रोग से सम्बन्धित विस्तृत जानकारी देने वाला यह लघु अङ्क आयुर्वेद जगत् के जाने-माने विद्वान् आगरा के वैद्य शिवकुमार शास्त्री के सम्पादन में प्रकाशित होगा। यह अङ्क सितम्बर माह में प्रकाशित किया जावेगा।

(४) काम समस्या अङ्क [चतुर्थ भाग]—इसके ३ भाग गत ३ वर्षों में प्रकाशित किये जा चुके हैं, जिसे पाठकों ने विशेष उपयोगी पाया है। पाठकों की अत्यधिक रुचि देखकर इस विषय पर एक और अङ्क चतुर्थ भाग के रूप में इस वर्ष नवम्बर माह में डा० गिरधारीलाल मिश्र के सम्पादकत्व में प्रकाशित किया जावेगा।

(५) यकृत् रोग चिकित्सांक—विभिन्न यकृत् विकारों के लक्षण, कारण, निदान एवं चिकित्सा का ब्योरेवार वर्णन इस लघु विशेषांक में किया जावेगा। इस लघु विशेषांक के सम्पादन का भार डा० अशोक मिश्र, घाटा बालाजी (राज०) को सौंपा गया है। यह अङ्क दिसम्बर माह में प्रकाशित किया जावेगा।

सभी लघु विशेषांक अपने विषय के अद्वितीय अङ्क होंगे, ऐसा हमारा विश्वास है। लेखकों के पास इन लघु विशेषांकों के लिये लेख भेजने हेतु सूचना पृथक् पत्र द्वारा भेजो जावेगी।

लेखक पुरस्कार योजना

गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी सुधानिधि के गत वर्ष प्रकाशित तीन सर्वोत्तम लेखों पर प्रथम, द्वितीय तृतीय पुरस्कारों का चयन किया गया है। निर्णायक समिति द्वारा जिन तीन लेखों को पुरस्कार के लिये छांटा गया है, उनका नाम तथा लेखकों के नाम इस प्रकार हैं—

(१) संग्रहणी की अनुभूत चिकित्सा—वैद्य चन्द्रशेखर व्यास, आयुर्वेद विशारद, चुरू (राजस्थान)

(२) भगन्दर—वैद्य मोहरसिंह आर्य, मु० पो० मिसरी (भिवानी) हरियाणा [गुद रोगांक मई १९८३]।

(३) काम-समस्याओं के समाधान के लिए काम-शिक्षा की आवश्यकता—डा० विमला देवी शर्मा जनकपुरी, नई दिल्ली [काम-समस्या अङ्क १९८३]।

उपरोक्त तीनों महानुभावों को सुधानिधि की ओर से हार्दिक बधाई देते हैं। आपको क्रमशः १०१, ५१ तथा ३१ रुपये नगद तथा ५१, ३१, २१ रुपये मूल्य की पुस्तकें पुरस्कार स्वरूप भेजी जा रही हैं। विद्वान् वैद्य समाज से हमारा निवेदन है, कि वे सुधानिधि को अधिक सुन्दर एवं उपयोगी बनाने में अपना सक्रिय सहयोग अवश्य प्रदान करें। अनुभव के आदान-प्रदान की उदार प्रवृत्ति के कारण ही पाश्चात्य विज्ञान आज समुज्वल अवस्था को पहुँचा है। अतः आयुर्वेद के सफल चिकित्सकों को भी चाहिये, कि अपने अनुभवों को अपने तक ही सीमित न रखें; अपि-तु वैद्य समाज के समक्ष अवश्य प्रस्तुत करते रहें और इस प्रकार आयुर्वेद एवं आयुर्वेदज्ञों को जनता की अधिकाधिक सेवा योग्य बनाने में सहायक बनें। सुधानिधि इस प्रकार के आपके अनुभवों को वैद्य समाज के समक्ष रखने के लिये सदैव तत्पर है।

इस वर्ष सुधानिधि की वार्षिक मूल्य वृद्धि नहीं

गत वर्ष प्रकाशकीय में यह घोषणा की गयी थी, कि आगामी वर्ष सुधानिधि के ग्राहक मूल्य में ३-४ रुपये मूल्य तक की वृद्धि सम्भव है; लेकिन ग्राहकों के आग्रह पर सुधानिधि का वार्षिक मूल्य इस वर्ष बढ़ाने का निर्णय स्थगित कर दिया है। सम्प्रति हर वस्तु बहुत मंहगी हो गयी है तथा होती जा रही है। कागज, स्याही, मशीनरी-व्यय, कर्मचारी सभी कुछ मंहगे हैं। ऐसी दशा में पोस्ट-व्यय सहित २०.०० में जो साहित्य सुधानिधि द्वारा पाठकों को अब तक दिया जा रहा है, सम्भवतः आगामी वर्ष नहीं दे पावेंगे और सुधानिधि का वार्षिक मूल्य बढ़ाना पड़ेगा, ऐसा अनिवार्य प्रतीत होता है। इस वर्ष मूल्य वृद्धि नहीं करने से जो हमें अतिरिक्त हानि होगी, वह आपके द्वारा १-२ नवीन ग्राहक बनाने पर किसी सीमा तक पूर्ण हो सकेगी। अतः अन्त में पुनः १-२ नवीन ग्राहक बनाने की प्रार्थना करते हुए तथा आपके उज्वल भविष्य और उत्तम स्वास्थ्य की कामना करते हुये विदा लेते हैं।

—मुरारीलाल गर्ग।

शुभकामनायें

लोकपति त्रिपाठी
स्वास्थ्य-मन्त्री

विधान सभा भवन,
लखनऊ

✻ सन्देश ✻

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुयी कि धन्वन्तरि कार्यालय, विजयगढ़ द्वारा "प्रयोग-संग्रह [तृतीय भाग]" प्रकाशित किया जा रहा है। हमारी पुरातन चिकित्सा-पद्धति आयुर्वेदिक रही है, जो अपने आप में एक अनूठी मिशाल रखती थी कालान्तर में इसका ह्रास हुआ। आप इस दिशा में प्रयत्नशील हैं कि अपने अतीत के गौरव को पुनः प्राप्त किया जा सके, यह जानकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुयी।

मैं आशा करता हूँ कि आप इस ऐतिहासिक ग्रन्थ में ऐसी उपलब्धियों का उल्लेख करेंगे जिनसे इसके पाठकों में आयुर्वेद के प्रति रुचि स्वतः बढ़े और लोग इसके महत्व को समझ सकें।

मैं आपके प्रयास की सफलता की कामना करता हूँ। हस्ताक्षर—लोकपति त्रिपाठी।

धर्मदत्त वैद्य
भू० पू० स्वास्थ्य-मन्त्री उ० प्र० सरकार

•

प्रियवन्धु,

यह जानकर प्रसन्नता है कि इस वर्ष "प्रयोग संग्रह [तृतीय भाग]" प्रकाशित होने जा रहा है। आप अनेक वर्षों से आयुर्वेद की स्मरणीय सेवा में संलग्न हैं, आशा है यह सेवा इस प्रकाशन से और पुष्ट होगी।

इसकी सफलता की कामना करता हूँ।

धन्वन्तरि मार्ग,
पो० इज्जतनगर, बरेली —धर्मदत्त वैद्य।

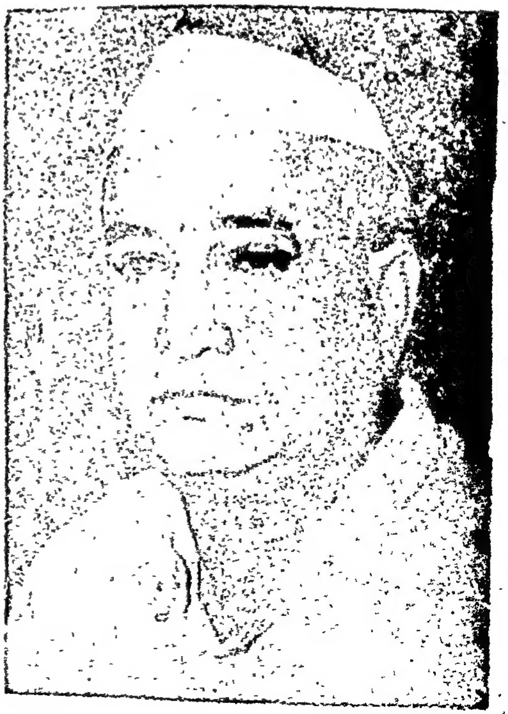

आचार्य विश्वनाथ द्विवेदी

कुसुम भवन, नगवा

वाराणसी

प्रिय गर्ग जी,

स्नेह शुभाशीर्वाद !

आपका पत्र मिला, यह जानकर कि आप "प्रयोग संग्रह" का तृतीय भाग निकाल रहे हैं, अतीव प्रसन्नता हुयी। वास्तव में आयुर्वेद की चिकित्सा के लिये यह संग्रहणीय ग्रन्थ है, यह इसके पूर्व प्रकाशित दोनों भागों से स्पष्ट हो गया है। यह तृतीय भाग भी ऐसे ही प्रयोगों के संग्रह से युक्त होगा और चिकित्सकों के लिये संग्रहणीय सामग्री से ओत-प्रोत होगा, ऐसा हमारा विश्वास है।

—विश्वनाथ द्विवेदी।

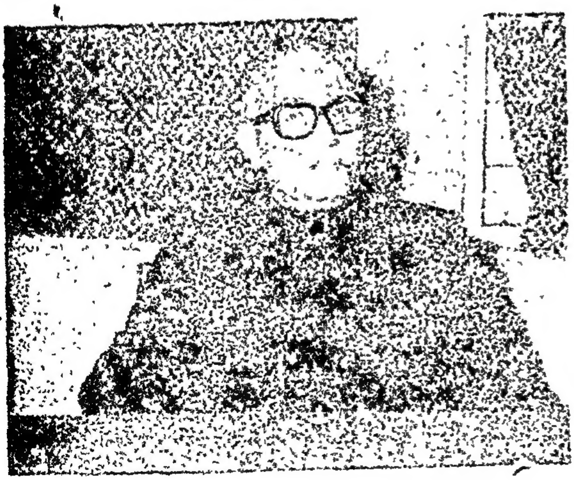

आशुतोष मजुमदार

भारतीय चिकित्सा केन्द्रीय परिषद्

ई/६ स्वामी रामतीर्थ नगर, नई दिल्ली

प्रिय महोदय,

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हुयी कि आपके द्वारा इस वर्ष "प्रयोग संग्रह [तृतीय भाग]" प्रकाशित किया जा रहा है। इस उपयोगी संग्रह के माध्यम से वैद्यों को अनुभूत प्रयोगों की जो जानकारी आप आयुर्वेद-जगत् को प्रदान कर रहे हैं। यह आपका सराहनीय प्रयास है। मैं इस अनुपम संग्रह की सफलता की कामना करता हूँ।

—आशुतोष मजुमदार।

आचार्य प्रियव्रत शर्मा

३९, गुरुधाम कालोनी,
वाराणसी-१

•

प्रिय गर्ग जी,

आपका पत्र मिला ! जानकर प्रसन्नता हुयी कि आप इस वर्ष "प्रयोग संग्रह [तृतीय भाग]" प्रकाशित करने जा रहे हैं। यह प्रकाशन वैद्य समुदाय तथा शोध-कर्ताओं के लिये अत्यन्त उपादेय होगा।

इस उपयोगी प्रकाशन के लिये मेरी हार्दिक शुभ-कामनायें स्वीकार करें।

—प्रियव्रत शर्मा।

आयुर्वेद-चक्रवर्ती ताराशंकर वैद्य

आचार्य-श्री अर्जुन आयुर्वेद विद्यालय,
रामपुरी जगतगंज, वाराणसी

•

मान्य महोदय,

इस वर्ष कार्यालय द्वारा 'प्रयोग संग्रह [तृतीय भाग]" प्रकाशित किया जा रहा है, यह आनन्द का विषय है। धन्वन्तरि कार्यालय ने अनेक उपयोगी प्रकाशनों द्वारा आयुर्वेद की महती सेवा की है।

प्रस्तुत अङ्क उक्त परम्परा में आदर्श स्थापित करेगा, यह मेरा विश्वास है।

—ताराशंकर वैद्य।

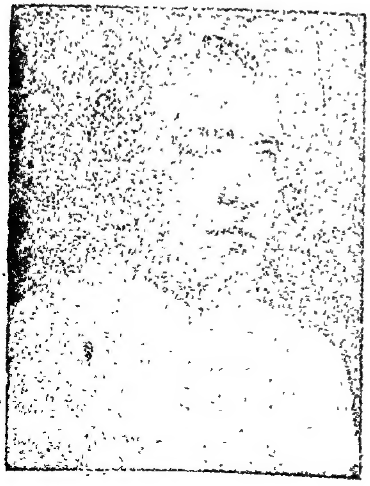

वैद्य सीताराम मिश्र

सदस्य—भारतीय चिकित्सा केन्द्रीय परिषद्
भू० पू० अध्यक्ष—राजस्थान वैद्य सभा
जयपुर ३०२००६

•

प्रिय गर्ग जी,

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुयी कि "धन्वन्तरि कार्यालय" द्वारा इस वर्ष "प्रयोग संग्रह" का तृतीय भाग प्रकाशित करने का निश्चय किया गया है, यह कार्य वास्तव में प्रशंसनीय है। मुझे आशा है कि इस ग्रन्थ में आयुर्वेद-विद्वानों के शोधपूर्ण प्रयोगों का प्रकाशन होगा। मैं इसकी सफलता की कामना करता हूं।

—सीताराम मिश्र।

आयुर्वेद-चक्रवर्ती

कविराज डा० गिरधारीलाल मिश्र

मुख्य चिकि०—केदारमल मैमोरियल आयुर्वेदिक हास्पीटल,

तेजपुर (आसाम)

•

श्रीयुत् गोपालशरण जी,

जय आयुर्वेद !

आपका २८—३—८४ का पत्र मिला, तदनुसार आपके प्रकाशन के लिये शुभ-कामनायें भेज रहा हूँ।

यह जानकर अतीव प्रसन्नता हुयी कि "धन्वन्तरि कार्यालय" द्वारा अपनी उज्वल परम्परा के अन्तर्गत "प्रयोग-संग्रह [तृतीय भाग]" प्रकाशित किया जा रहा है। निश्चय ही यह अनुपम संग्रह आयुर्वेद-जगत् के लिये उपयोगी सिद्ध हो रहा है। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि प्रस्तुत तृतीय भाग भी एकौषध, अनुभूत तथा पेटेण्ट योगों का अपने विषय का श्रेष्ठतम संकलन होगा। मै हृदय से इसकी सफलता की कामना करता हूँ।

—गिरधारीलाल मिश्र।

डा० अयोध्याप्रसाद "अचल"

योगायुर्वेद शोध-संस्थान,

रमना, गया

•

बन्धुवर गर्ग जी,

आपका पत्र मिला, इतने कम समय में निदान तथा चिकित्सा के विभिन्न अङ्गों एवं क्षेत्रों से सम्बन्धित महत्त्वपूर्ण एवं सारगर्भित सामग्री से परिपूर्ण ११ विशालकाय दिशा निर्देशक विशेषांक निकालकर आयुर्वेद-जगत् में एक बड़ी कमी की पूर्ति की है। इसका प्रत्येक प्रकाशन अपने आप में एक ग्रन्थ का महत्त्व रखता है। जिससे न केवल चिकित्सक, शिक्षक तथा विद्यार्थी बल्कि आयुर्वेद में आस्था रखने वाले अनेक आयुर्वेद-प्रेमी भी समुचित लाभ उठा रहे हैं। काय-चिकित्सा क्षेत्र में यह महत्त्व योगदान है। मुझे पूरा विश्वास है कि यह भाग भी पूर्व प्रकाशित दोनों भागों की तरह उपयोगी और संग्रहणीय प्रकाशित होगा। मेरी शुभ-कामनायें स्वीकार करें।

—अयोध्याप्रसाद "अचल"।

"प्रयोग संग्रह [तृतीय भाग]" में आने वाले सन्दर्भ ग्रन्थों, विशेषांकों एवं पत्रिकाओं की सूची

ग्रन्थ—

१. चिकित्सा चन्द्रोदय — प्रथम भाग
२. ,, ,, — द्वितीय भाग
३. ,, ,, — तृतीय भाग
४. ,, ,, — चतुर्थ भाग
५. ,, ,, — पंचम भाग
६. ,, ,, — छठा भाग
७. ,, ,, — सातवां भाग
८. रसतन्त्रसार — प्रथम भाग
९. ,, — द्वितीय भाग
१०. गांवों में औषधिरत्न — प्रथम भाग
११. ,, ,, — द्वितीय भाग
१२. अनुभूत योग — प्रथम भाग
१३. ,, — द्वितीय भाग
१४ ,, — तृतीय भाग
१५. ,, — चतुर्थ भाग
१६. अनुभूत योग प्रकाश
१७. गुप्त रोग रत्नावली
१८. प्रयोग रत्नावली
१९. वैद्य सहचर
२०. सिद्ध प्रयोग संग्रह
२१. तत्काल फलप्रद प्रयोग
२२. कब्ज रोग चिकित्सा
२३. चिकित्सा तत्व प्रदीपिका
२४. रसायनसार
२५. वनौषधि चन्द्रोदय — प्रथम भाग
२६. ,, ,, — द्वितीय भाग
२७. ,, ,, — तृतीय भाग
२८. ,, ,, — चतुर्थ भाग
२९. ,, ,, — पंचम भाग
३०. ,, ,, — षष्टम भाग
३१. ,, ,, — सातवां भाग
३२. ,, ,, — आठवां भाग
३३. ,, ,, — नवां भाग
३४. ,, ,, — दसवां भाग
३५ चिकित्सादर्श
३६. वैद्य देवीशरण गर्ग के संग्रहीत प्रयोग (अप्रकाशित)

विशेषांक एवं पत्रिकायें

धन्वन्तरि—

१. वनौषधि विशेषांक प्रथम भाग (१९६१)
२. ,, ,, द्वितीय भाग (१९६३)
३. ,, ,, तृतीय भाग (१९६५)
४. ,, ,, चतुर्थ भाग (१९६७)
५. ,, ,, पंचम भाग (१९६९)
६. ,, ,, छठवां भाग (१९७१)
७. प्राणिज खनिज द्रव्यांक (१९७३)
८. सफल सिद्ध प्रयोगांक (१९७४)
९. प्रयोगांक (१९२८)
१०. अनुभवांक (१९३१)
११. अनुभूत योगांक (१९४२)

१२. परीक्षित प्रयोगांक (१९३३)
१३. अनुभूत चिकित्सांक (१९३४)
१४. गुप्त सिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग (१९४७)
१५. „ „ द्वितीय भाग (१९४९)
१६. „ „ तृतीय भाग (१९५०)
१७. „ „ चतुर्थ भाग (१९५५)
१८. चिकित्सा विशेषांक प्रथम भाग (१९७०)
१९. „ „ द्वितीय भाग (१९७२)
२०. यूनानी चिकित्सांक (१९६४)
२१. नारी रोगांक (१९४०)
२२. „ (१९६०)
२३. शिशु रोगांक (१९६२)
२४. पुरुष रोगांक (१९६८)
२५. मलावरोधांक (१९२७)
२६. पक्षाघात रोगांक (१९६७)
२७. अनुभवांक प्रथम भाग (सितम्बर ७७)
२८. „ द्वितीय भाग (नवम्बर ७७)
२९. सूखा रोगांक (१९६१)

पत्रिकायें—

जौलाई १९३१, अक्टूबर १९३१, नवम्बर १९३१, जून १९३३, सितम्बर १९३३, नवम्बर १९४०, अप्रेल १९४१, मई १९४१, जून १९४१, जौलाई १९४१, सितम्बर १९४१, अक्टूबर १९४६, सितम्बर १९४७, दिसम्बर १९४७, जनवरी १९४८, मार्च १९४८, अप्रेल १९४८, मई १९५३, अगस्त १९५३, नवम्बर १९५८, दिसम्बर १९५८, दिसम्बर १९६७, दिसम्बर १९७४, अक्टूबर १९७६, जनवरी १९७७, अप्रेल १९८३।

सुधानिधि—

१. महिला रोग चिकित्सांक (१९७३)
२. पुरुष रोग चिकित्सांक (१९७४)
३. शिशु रोग चिकित्सांक (१९७५)
४. जटिल रोग चिकित्सांक (१९७६)
५. हृदय-फुफ्फुस रोग चिकित्सांक (१९७७)
६. शिरःशूलांक (१९७९)
७. श्वास रोग चिकित्सांक (१९८३)
८. कैपसूल अङ्क (१९७५)
९. मधुमेह अङ्क (१९८१)

पत्रिकायें—

दिसम्बर १९७२

प्राणाचार्य—

१. प्रयोग मणिमाला (१९५९)
२. प्रयोग मणिमालांक (१९४९)
३ प्रमेह रोगांक (१९६१)
४. स्त्री रोगांक (१९५५)

स्वास्थ्य—

१. अनुभवांक (१९७७)
२. „ (१९७९)

पत्रिकायें—

मार्च १९६७, अगस्त १९८०, मार्च १९७९, जनवरी १९८०।

अनुभूत योगमाला—

अनुभव सिद्ध प्रयोगांक (१९६०)

आयुर्वेद विकास—

मधुमेह अं (१९८३)

अन्य पत्रिकायें—

शिशु रोग चिकित्सांक (जीवन सुधा मासिक)

प्रयोग संग्रह

तृतीय भाग

[प्रयोग विश्वकोष–तृतीय भाग]

की

विषय-सूची

[१] बालरोग सामान्य

(अ) एकौषधि एवं साधारण प्रयोग ....
(आ) अनुभूत एवं परीक्षित प्रयोग ....
(इ) बालरोग नाशक कुछ उपयोगी घुटियां ....
(ई) प्रमुख शास्त्रीय योग ....
—बालरोगों में सामान्य चिकित्सा-उपक्रम ....
—बालरोगों में सफल औषधि व्यवस्था-पत्र ....
(उ) प्रमुख पेटेण्ट आयुर्वेदीय योग ....
(ऊ) प्रमुख पेटेण्ट एलोपैथिक योग ....

[२] मधुमेह

(अ) साधारण एवं एकौषधि प्रयोग ....
(आ) अनुभूत एवं परीक्षित प्रयोग ....
(इ) प्रमुख शास्त्रीय योग ....
—मधुमेह नाशक सामान्य चिकित्सा-उपक्रम ....
—मधुमेह नाशक सफल औषधि व्यवस्था-पत्र ....
—मधुमेह के उपद्रवों में सफल औषधि व्यवस्था-पत्र ....
(ई) प्रमुख पेटेण्ट आयुर्वेदीय योग ....
(उ) प्रमुख पेटेन्ट एलोपैथिक योग ....

[३] मलावरोध

(अ) एकौषधि एवं साधारण प्रयोग ....
(आ) अनुभूत एवं परीक्षित प्रयोग ....

(इ) प्रमुख शास्त्रीय योग	....	१३०
—मलावरोध में सामान्य चिकित्सा-उपक्रम	....	१३३
—मलावरोधनाशक सफल औषधि व्यवस्था-पत्र	....	१३३
(ई) प्रमुख पेटेण्ट आयुर्वेदिक योग	....	१३३
(उ) प्रमुख पेटेण्ट एलोपैथिक योग	....	१३४

[४] मलेरिया (विषम ज्वर) ....

(अ) एकौषधि एवं साधारण प्रयोग	....	१३६
(आ) अनुभूत एवं परीक्षित प्रयोग	....	१४५
(इ) प्रमुख शास्त्रीय योग	....	१५७
—मलेरिया में सामान्य चिकित्सा-उपक्रम	....	१६०
—मलेरिया में सफल औषधि व्यवस्था-पत्र	....	१६०
(ई) प्रमुख पेटेण्ट आयुर्वेदीय योग	....	१६०
(उ) प्रमुख पेटेण्ट एलोपैथिक योग	....	१६१

[५] मूत्रकृच्छ्रता, मूत्राघात, मूत्रावरोध—

(अ) एकौषधि एवं साधारण प्रयोग	....	१६३
(आ) अनुभूत एवं परीक्षित प्रयोग	....	१६६
(इ) प्रमुख शास्त्रीय योग	....	१७१
मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, मूत्रावरोध में सामान्य चिकित्सा उपक्रम	....	१७४
(ई) प्रमुख पेटेण्ट आयुर्वेदीय योग	....	१७५
(उ) प्रमुख पेटेण्ट एलोपैथिक योग	....	१७६

[६] यक्ष्मा (क्षय)—

(अ) एकौषधि एवं साधारण प्रयोग	....	१७६
(आ) अनुभूत एवं परीक्षित प्रयोग	....	१८३
(इ) प्रमुख शास्त्रीय योग	....	१९२
—यक्ष्मा में सामान्य चिकित्सा-उपक्रम	....	१९८
—यक्ष्मा में सामान्य औषधि व्यवस्था-पत्र	....	१९८
—यक्ष्मा की विशेष अवस्थाओं में औषधि व्यवस्था-पत्र	....	१९९
—यक्ष्मा के अन्य प्रकारों में औषधि व्यवस्था-पत्र	....	१९९
—क्षयहर पर्पटी कल्प	....	१९९
(ई) प्रमुख पेटेण्ट आयुर्वेदीय योग	....	२०१
(उ) प्रमुख पेटेण्ट एलोपैथिक योग	....	२०२

[७] रक्तपित्त—

(अ) एकोषधि एवं साधारण प्रयोग २०५
(आ) अनुभूत एवं परीक्षित प्रयोग २११
(इ) प्रमुख शास्त्रीय प्रयोग २१५
रक्तपित्त में सामान्य चिकित्सा-उपक्रम २१७
रक्तपित्त में सफल औषधि व्यवस्था-पत्र २१७
(ई) प्रमुख पेटेण्ट आयुर्वेदीय योग २१७
(उ) प्रमुख पेटेण्ट एलोपैथिक योग २१८

[८] व्रण, विद्रधि, फ़ोड़े-फुंसियां—

(अ) एकौषधि एवं साधारण प्रयोग २२०
(आ) अनुभूत एवं परीक्षित प्रयोग २४१
(इ) प्रमुख शास्त्रीय योग २६०
व्रण, विद्रधि में सामान्य चिकित्सा-उपक्रम २६३
व्रण, विद्रधि में सफल औषधि व्यवस्था-पत्र २६३
(ई) प्रमुख पेटेण्ट आयुर्वेदीय योग २६३
(उ) प्रमुख पेटेण्ट एलोपैथिक योग २६४

[९] वातज-विकार—

(अ) एकौषधि एवं साधारण प्रयोग २६८
(आ) अनुभूत एवं परीक्षित प्रयोग २७७
(इ) प्रमुख शास्त्रीय योग २८८
—वात-विकारों में सामान्य चिकित्सा-उपक्रम २९१
—आक्षेपयुक्त वात-व्याधियों में
सफल औषधि व्यवस्था-पत्र २९२
—धनुस्तम्भ, आभ्यन्तरायाम, वाह्यायाम, पार्श्वायाम में
सफल औषधि व्यवस्था-पत्र २९२
—धनुर्वात में सफल औषधि व्यवस्था-पत्र २९२
—पक्षवध, एकांगघात, सर्वाङ्गघात, अधरांगघात में
सफल औषधि व्यवस्था-पत्र २९३
—अर्दित पर सफल औषधि व्यवस्था-पत्र २९३
—विश्वाची, अववाहुक पर सफल औषधि व्यवस्था-पत्र २९३
—गृध्रसी पर सफल औषधि व्यवस्था-पत्र २९३
—क्रोष्टुशीर्ष में सफल औषधि व्यवस्था-पत्र २९४
—मन्यास्तम्भ में सफल औषधि व्यवस्था-पत्र २९४
—मूक, मिन्मिन, गद्गद में सफल औषधि व्यवस्था-पत्र २९४

(ई) प्रमुख पेटेण्ट आयुर्वेदीय योग २९४
(उ) प्रमुख पेटेण्ट एलोपैथिक योग २९५

[१०] शिरःशूल—

(अ) एकौषधि एवं साधारण प्रयोग २९७
(आ) अनुभूत एवं परीक्षित प्रयोग ३०४
(इ) प्रमुख शास्त्रीय योग ३११
—शिरःशूल में सामान्य चिकित्सा-उपक्रम ३१५
—शिरःशूल में सफल औषधि व्यवस्था-पत्र ३१५
—शिरःशूल के कुछ विशेष प्रकारों में सफल औषधि व्यवस्था-पत्र ३१५
(ई) प्रमुख पेटेण्ट आयुर्वेदीय योग ३१८
(उ) प्रमुख पेटेण्ट एलोपैथिक योग ३१८

[११] श्वास रोग—

(अ) एकौषधि एवं साधारण प्रयोग ३२०
(आ) अनुभूत एवं परीक्षित प्रयोग ३३०
(इ) प्रमुख शास्त्रीय योग ३४३
—श्वास में सामान्य चिकित्सा-उपक्रम ३४७
—श्वास में सफल औषधि व्यवस्था-पत्र ३४७
—श्वास रोग की विशेष अवस्थाओं में सफल औषधि व्यवस्था-पत्र ३४७
(ई) प्रमुख पेटेण्ट आयुर्वेदीय योग ३४८
(उ) प्रमुख पेटेण्ट एलोपैथिक योग ३४९

[१२] स्त्री विकार (सामान्य)—

(अ) एकौषधि एवं साधारण प्रयोग ३५२
[१] मासिकस्राव सम्बन्धी विकार (रजोदोष) ३५२
[२] गर्भाशयजन्य रोग ३५८
[३] गर्भावस्था एवं प्रसूतिजन्य विकार ३५९
[४] योनि रोग-सोम रोग ३६४
[५] वन्ध्यत्व ३६७
[६] स्तन विकार ३६८
(आ) अनुभूत एवं परीक्षित प्रयोग ३६९
[१] मासिकस्राव सम्बन्धी विकार ३६९
[२] योनि एवं गर्भाशय सम्बन्धी विकार ३७५

[३] वन्ध्यत्वहर योग ३७९
[४] गर्भावस्था एवं प्रसूतिजन्य रोग ३८१
[५] स्त्री रोगनाशक सामान्य योग ३८५

(इ) प्रमुख शास्त्रीय योग ३९२
—प्रमुख स्त्री रोगों में सामान्य चिकित्सा उपक्रम ३९६
—प्रमुख स्त्री रोगों में सफल औषधि व्यवस्था-पत्र ३९६
—सोमरोग में सफल औषधि व्यवस्था-पत्र ३९६
—नष्टार्तव और कष्टार्तव में सफल औषधि व्यवस्था-पत्र ३९६
—वन्ध्यत्व में सफल औषधि व्यवस्था-पत्र ३९७
—सूतिकारोग में सफल औषधि व्यवस्था-पत्र ३९९
—सूतिका ज्वर में सफल औषधि व्यवस्था-पत्र ३९९
(ई) प्रमुख पेटेन्ट आयुर्वेदीय योग ३९९
(उ) प्रमुख पेटेण्ट एलोपैथिक योग — ४०१

विशेष उद्धरणों की सूची

१. बालचतुर्थी के गुण — ४३
२. सप्तरंगी का मधुमेह पर प्रभाव — ९१
३. मधुमेह की कल्प-चिकित्सा — १०२
४. सप्तरंग्यादि वटी की क्लीनिकल रिपोर्ट — १०४
५. विषम ज्वर में सूर्यावर्त (हुलहुल) पर मेरा अनुभव — १६३
६. यक्ष्मा तथा रुदन्ती — १८०
७. क्षयहर पर्पटी कल्प — १९९
८. अपामार्ग का व्रणनाशक प्रभाव — २३०
९. व्रण पर स्वानुभव — २३६
१०. अनन्तवात की सफल चिकित्सा — ३१६
११. अर्कपर्णी तथा श्वासरोग- — ३३०
१२. वन्ध्यत्व की सफल चिकित्सा — ३९७

ग्रन्थ में आने वाले प्रयोगों के लेखक, संग्रहकर्त्ताओं के नाम तथा पृष्ठ संख्या

श्री अमृतलाल शर्मा ३२५
,, अश्वनीकुमार शर्मा ३२८
,, अंजनीनन्दन जी वर्मा ३४२
,, अशोककुमार मिश्र १८६
,, अमरनाथ जी शास्त्री २४७
,, अम्बिकादेवी शु० ६८
,, कवि० अभयानन्द सोनी १४०
,, अर्जुनसिंह जी वर्मा १४५,१५१, २५२,१६६,
,, अत्रिदेव गुप्त विद्या० २८०
,, अम्बाप्रसाद जी बराठे १६०
,, वैद्य अम्बाप्रसाद जी २८०
,, अर्पणादेवी ६५,१४३,३७७
,, अनन्तदेव शर्मा ६१,२७८,१८८
,, अनन्तदेव जी दीक्षित ६१
,, अनन्तदेव जी वेदपाठी ३०६
,, अम्बालाल जी जोशी ३०८,३४० ३८०,३८३
,, सेठ आनन्दीलाल ३२५
,, वैद्य आई० आई० शेख ३२७
,, कवि० आशुतोष मजूमदार १५२ २४२
,, आर० सी० रावत ९५
,, आदित्यभाई पटेल १०६
,, आशानन्द जी पंचरत्न १८२,१४६
,, इन्द्रमणि जी जैन ६८,३४८,२०६
,, इन्द्रदत्त जी १२८,१४८,२४३ २४४,२७६,३८१,३८५
,, इन्दिरादेवी २१२,३८८
,, स्वामी ईश्वरदास जी शा० २३५ ३२७

श्री चौ० ईशरराम जी ४६,१२३
,, वैद्य ईश्वरीप्रसाद वर्मा १६८
,, वैद्य ईश्वरीप्रसाद शर्मा ३२६
,, पं० ईश्वरीदत्त शर्मा २१३
,, वैद्य उदयलाल महात्मा ६२,२७८
,, उपेन्द्रनाथदास जी २३७,२७३
,, उमादत्त जी शर्मा २०६
,, उदयलाल जी वैद्य ४६
,, उमादत्त जी शर्मा ३२७
,, उमाशंकर जी दाधीच ५६,३६१
,, ए० एम० अडसोड ६६
,, एस० एन० बोस ३२८
,, एस० बी० सातोडकर ३७०
,, पं० ओंकारनाथ शर्मा १४४
,, ऋषिवल्लभ त्रिवेदी ८१
,, पं० कृष्णाचार्य १६८,३८६
,, कृष्णप्रसाद जी त्रिवेदी २३६ २५२,३७६,३३२,३२६
,, कृष्णचन्द जी गुप्ता ६८,२५४
,, कृष्णचन्द जी त्रिपाठी ३०३
,, वैद्य कृष्णगोपाल जोशी ३०४
,, कृष्णाकुमारी जी ३६८
,, कृष्णलाल जी वर्मा ३३७
,, कवि० कमलेश्वर वशिष्ठ १२१
,, कमलापति शास्त्री २४८
,, काशीराम जी शर्मा ५१
,, पं० कान्तिनारायण जी ६६
,, कालीशंकर बाजपेयी ६५,१७१
,, वैद्य कान्तीलाल जी १८१
,, सैयदकासमभाई राजवैद्य २१०
,, कामेश्वरदीन शर्मा २११

श्री कामेश्वर जी शुक्ला २४७
,, पं० किशोरीलाल शर्मा ५६
,, वैद्यराज किशनलाल अग्र० १२०
,, किशनलाल वर्मा २७४
,, वैद्य कुंवरप्रसाद जी मित्तल १४६
,, डा० के०डी० तलनियां ७०
,, के० मी० गर्ग १०८
,, के० एस० जायसवाल ३१०
,, कौशिक वैद्य ३२६
,, खुशालचन्द्र जी वर्मा ५१
,, पं० खूबचन्द्र मिश्र १४४
,, वैद्य खेमराज जी शर्मा छांगाणी १२८,१५०
श्री गयाप्रसाद जी शास्त्री १०२,१५४ १८४,३७६
,, रावगणपतसिंह यादव ६४
,, गणेशीलाल जैन ३६२
,, गणपतलाल सेडूराम १४३
,, गणेशदत्त पाण्डेय २८४
,, श्रीमती गंगादेवी राजवैद्या १४१ ३२५,३८६
श्री गंगाप्रसाद जी स्वर्णकार ६१ ३३१,३३२
,, प्रोफेसर गंगाशरण शर्मा १४४ ३०८
,, गंगासहाय जी शर्मा ५३
,, गंगाधरराव वैद्य शास्त्री २३४
,, गंगाप्रसाद गौड़ २१३
,, पं० गंगाचरण शर्मा २११
,, गंगादत्त शर्मा ३७५
,, गिरजादत्त पाठक ७०,१७०

श्री गुरुदास द्विवेदी ३४२
,, गुलराज शर्मा २८१,३०७
,, वैद्य गुरुचरण कुशवाहा ६६,६५
१२४,१५०
श्री गुणप्रकाश जी शर्मा ३५७,३७०
३८२
,, गोपाल जी कुंवर जी ठक्कर ५६
५३,२८०
,, गोवर्धन जी चागलानी २५१
३०६,३७५
,, पं० गोवर्धन शर्मा छांगाणी १२०
,, गोकुलप्रसाद, व्रजलाल पटेल ६३
,, गोपालशरण गर्ग सम्पादक १६०
१०३,२३१,११०
,, डा० कुंवर घनश्यामनारायणसिंह
५४
,, घनानन्द जी पन्त १४३
,, पं० घेवरचन्द वैद्य शास्त्री १४६
,, चन्द्रशेखर जी जैन ५८,७६,१२३
१७०,१८७,२३३,३११,३५६,३५८
,, पं० चन्द्रशेखर शर्मा २४८
,, चौ० चन्द्रसिंह २३६,२८२
,, चन्द्रभूषण जी पाण्डेय ३२६,३४१
,, चन्द्रदत्त जी शास्त्री ३०२
,, चतुर्भुज शर्मा १८७
,, पं० चिरंजीलाल आयु० १८२
२३८
,, छत्रधारीलाल १४१,३०६
,, छाजूराम शर्मा ३८३
,, छेदालाल शर्मा ३२६
,, छेदीलाल शर्मा १४३
,, वा० छोटेलाल जैन ३०२
,, जगदम्बाप्रसाद श्रीवास्तव ५५
१८३,१६०
,, जयनारायणगिरि "इन्दु" ६७
१०६
,, जवरी व्यास ३२६,३४१
श्री पं० जगदीशप्रसाद जी ३७२
,, कवि० जगदीशचन्द्र भारद्वाज ५४
,, जगदीशनारायन ३६२
,, जगन्नाथप्रसाद केशरी १८६
,, जगन्नाथप्रसाद शुक्ला ३८१
,, जगतनरायण शर्मा २१३
,, पं० जनार्दन शर्मा २८२
,, वैद्य पं० जानकीवल्लभ शर्मा १४३
,, जीवानन्द जी साहू ३५७
,, वैद्य जुगलकिशोर जी शास्त्री १८६
,, डोरीलाल जी ४६
,, टिकाराम सोना २५०
,, ठाकुरदत्त शर्मा १०१,१०८,३७६
,, ताराचन्द लोढा २५१,३८४
,, पं० ताराचन्द शर्मा ३८७
,, पं० तुलसीराम शुक्ला ५०
,, तेजीलाल नेमा ६३,३७६
,, पं० दयाशंकर शुक्ल १२१
,, दरोगा मिश्र ६४,२३५
,, दयानन्द पाठक ६७
,, वैद्य दलजीतसिंह हकीम ६७३-
३६१
,, दलीपसिंह आर्य ६७
,, द्वारिकाप्रसाद दुवे ३३७
,, द्वारिकाप्रसाद शर्मा २०६
,, दमोदर जोशी २०६,२३५
,, पं० दीनानाथ शर्मा ५६,२४२
,, दीपचन्द शर्मा २३६
श्री वैद्य दुर्गाप्रसाद वै० र० २७८
,, देवदत्त शर्मा ३७०
,, डा० देवीसहाय आयुर्वेदा० ५५
,, देवानन्द जी शु० २४६
,, देवेन्द्रदत्त जी कौशिक २३४
,, डा० देवेन्द्रकुमार जी १४२
,, पं० देवराज शर्मा ६२
,, वैद्यराज देवीशरण गर्ग ५५,७३
१८१,२८१
,, देवकरण जी बाजपेयी ७०,२३४
,, धर्मदत्त जी चौधरी ६२,२३४
३८६,३८६,३६०
,, धर्मपाल जी २१३
,, पं० धर्मेन्द्रनाथ १८२
,, पं० नन्दलाल शर्मा १२४,३०७
,, पं० नन्दकिशोर जोशी २४६
,, वैद्य नवमीलाल २७६
,, नटवरलाल शास्त्री ५४
,, वैद्य नथमल सिखवाल ५१
,, नर्मदाप्रसाद गौतम २३४
,, नवनीतदास वार्ष्णेय १२८,२५३
,, नानकचन्द जी ५२
,, पं० नागरदत्त शर्मा १४२
,, नारायणदत्त बेहेरा १४५
,, नाथूराम चौरसे ३५७
,, निशिकान्त B.A. २७५
,, नित्यानन्द शास्त्री ३२७
,, नीरातारास ३३१
,, प्रयागदत्त शास्त्री २१०,२८१
३०६,३३५
श्री प्रभुदत्त शास्त्री ३८६
,, प्रकाशवती देवी ५३,३२,२८६
,, प्रकाशचन्द जी वैद्य १०४,१४०
,, कवि० प्रतापसिंह जी २५२
,, प्रद्युम्नकुमार त्रिपाठी १४७
,, वैद्य प्रहलादराय शर्मा ३०६
,, वैद्य प्रदीपनारायण १५३
,, प्रहलाददत्त शर्मा २३६
,, परसादीलाल झा १५२
,, पन्नालाल जैन सरल १६८
,, डा० परमानन्द श्रावास्तव २३५
,, परशुरामसिंह जी वैद्य भूषण २४२
,, वैद्य भू० पी०एन० पंडित २८१
,, पूर्णानन्द जी व्यास २४५,२८३
,, प्रेमलाल जी सहगल ६८,१८५
,, ब्रह्मदत्त जी शर्मा २१३,३३३,३३४

श्री पं० वृजमोहन मिश्रा २७७
,, पं० व्रजमोहन शर्मा १४६
,, व्यासनारायण शुक्ल ९४
,, पं० व्यापक रामायणी ५७
,, कवि० व्यासनारायण ५३
,, बहोरीलाल शुक्ला ३८१
,, बंसरीलाल गाहनी ५६,७१
,, बचानसिंह ६५,२४६,३०३,३२६
,, बक्सीराम शुक्ला ६५
,, आचार्य बद्रीदत्त ११०,१५७-२७४
,, ब्रह्मानन्द चन्द्रवंशी २४८,२७५
,, ब्रह्मानन्द त्रिपाठी ५४
,, बद्रीप्रसाद शर्मा १२१
,, बाबूराम बाजपेयी १२३,२४६
,, बालकराम शुक्ल ९८,९९,१४१ १८२,३०५
,, बांकेलाल गुप्त ९६,१०६
,, कवि० बासदेवकृष्ण जोशी ६४ ३०४
,, वासुदेव यदुवंशी १६८
,, वासुदेव शास्त्री २४०,३५६
,, बालकृष्ण नड़ोला २३७
,, वैद्य बालमुकुन्द शास्त्री ७६
,, बालमुकुन्द त्रिपाठी २४६
,, बाबूलाल अग्रवाल १७०
,, बाबूराम जी गुप्ता आर्य ७५
,, बाबूराम जैन २४३
,, बाबूराम चतुर्वेदी ५०
,, विश्वेश्वरदयाल १२१,१४५ २३६,२४८
,, विजयकाली भट्टाचार्य १४८,१५२
,, कवि० विश्वनाथ जी ७२,१५४ २५६,३७६
,, विश्वम्भरदयाल गोयल २०६ २५३
श्री विश्रामानन्द जी ९९,२८४
,, विमलादेवी वर्मा १५७
,, पं० विष्णुदत्त शर्मा १५०
,, विद्यानन्द शुक्ल ७५
,, पं० विद्याधर शर्मा १४२,२१२ ३२५
,, बिहारीलाल शर्मा २३६
,, विष्णुदुला पाटील २४२
,, विभूतिराम त्रिपाठी २४९
,, बिहारीलाल शर्मा २५०
,, कवि० विष्णुप्रकाश २७५
,, आयु० वि० पी० एन० २८५
,, विजयशंकर शास्त्री ३०६
, बिहारीलाल मिश्रा ३२६
,, विद्याभूषण वैद्य ३३५
,, विश्वनाथ त्रिपाठी वैद्य ३३७
,, वीरेन्द्रदेव जी आयु० ५९
,, बी० एस० प्रेमी ७१,७३,१०७ ११०,३४१
,, बा० बीरबान जौहरी २२८
,, डा० बी० एस० थापर १७०
,, कवि० बी० एन० शर्मा ३२५
,, बुद्धिप्रकाश आर्य ९५
,, बा० बूरसिंह सोनी ४९,१२३
,, वेदप्रकाश जी गुप्ता ९५,१०५
,, वेदव्यासदत्त शर्मा १२७,१४६ १५१,१८८,१८९,३७०
,, वेदप्रकाश शर्मा ३२८
, श्रीमती बेलारानीदेवी १५०
,, हकीम बैजनाथ अग्रवाल १४४
,, बैनीप्रसाद शर्मा ३२७
,, बैद्यनाथप्रसाद शर्मा २७५
,, वैद्यनाथ कैशोरि ३७७
,, भंवरलाल जी गोटेचा ५२
,, भंवरलाल शर्मा २३८
,, महन्त भगवानदास जी ५४
श्री भगवानदत्त शर्मा १४६
,, भगवानदास जी भण्डारी ३५७ ३८७
,, पं० भगवानदास जी शुक्ल २४३
,, भवानीशंकर शर्मा २७६
,, भवानीशंकर शर्मा २४३
,, भाई जी हकीम ५१
,, वैद्य भानुप्रताप आर० मिश्रा- १६६
,, भागीरथ शास्त्री २३४
,, वैद्य भाईशंकर एम० २३७
,, भुवनेश्वरीप्रसाद शर्मा ३८२
,, भोवरेलाल जी १४२
,, डा० भोलानाथ पाठक २०६
,, महावीरप्रसाद अग्रवाल २३७
,, मदनमोहन अग्निहोत्री ३०३
,, मनोहरलाल मिश्र ३७७
,, मनोहरदत्त वैद्यराज ४९
,, मक्खनलाल शर्मा ७६
,, महानन्द सिद्धालंकार १४७
,, पं० महेन्द्रनाथ अग्रवाल १४५
,, पं० महावीरप्रसाद शर्मा ३३५
,, कवि० महेन्द्रकुमार शास्त्री ३७६
,, कवि० महेन्द्रकुमार शास्त्री २८२
,, महावीरप्रसाद जोशी ६३,१२९ २३३,२४३,३०२ ३३१,३३२,३८४
,, मनोहरलाल वैद्य १८१,३०४ ३८२
,, मस्तराम जी शास्त्री ९९,२८४
,, महेश्वरप्रसाद उमाशंकर १०० १५४,१८९
,, वै० मधुसूदन जोशी ३४१
,, मक्खनलाल कौशिक ३४३
,, श्रीमती मनोरमा आचार्य ३७७
,, वैद्य माताप्रसाद त्रिपाठी २०६

श्री माधवाचार्य कवले १६८
,, मायाराम जी उनियाल ३३०
,, प्रो० माधवाचार्य २८४
,, वैद्य मिश्रीलाल २११
,, मिलापचन्द जैन ३३५
,, मुरारीलाल त्रिपाठी ५२
,, मुकन्दचन्द व्यास ३३६
,, मुनेश्वरीप्रसाद ३७०
,, मुकुन्दप्रसाद ३७१
,, वैद्य मुन्नालाल गुप्त १२३,१४७, २४४,३०६,३२६
,, मुन्नालाल पाटनी २१४
,, मोहरसिंह आर्य ७७,१६१
,, मोहन जी भट्ट १५०
,, वैं० मोहनलाल शर्मा २१४,३६१
,, श्रीमती यशोदादेवी २८६
,, यमुनाप्रसाद १४६,२७६
,, यादवजी त्रिक्रमजी ५३,७४, १४५,१५१
,, योगेन्द्रदत्त जी मि० ३२८
,, योगेन्द्रसिंह कश्यप ३०४
,, वैं० रविदत्त जी गाटिया १०५
,, वैं० रतनलाल जैन ३६१
,, अब्दुलरहीमखां १२६
,, रघुवरदयाल भट्ट ६७
,, रणवीरसिंह वर्मा २४६,३०३
,, रघुवीरशरण जी आयु० २७५
,, डा० रघुवंशलाल शर्मा १८८
,, पं० रघुवरदयाल २५२
,, वैं० र० नारायणचन्द्र २८६
,, राजविहारी मिश्र १०५
,, राजकुमार अवस्थी १४२
,, राजेन्द्रप्रकाश भटनागर २३८
,, राजकुमार जैन २३८
,, श्रीमती राजकुमारी त्यागी ३८०
,, वैं० राजमल गिरधारीलाल २८२
,, पं० राजेश्वर जी द्विवेदी ३०७

श्री वैं० राजेश्वरदत्त जी ६६
,, प्रो० राधाकृष्ण जी पाराशर ६३
,, स्व० राधावल्लभ वैद्यराज १५१
,, राधाकृष्ण शर्मा २३३
,, पं० राधावल्लभ मिश्र ३५७
,, पं० राधेमोहन मिश्र २७४,२८०
,, रामस्वरूप जी वैद्य ५४
,, रामस्वरूप जी गौड़ २४६
,, रामस्वरूप जी शर्मा १५३,१८५, १८७,१६०,३२८
,, रामगोपाल गुप्त ५२
,, पं० रामगोपाल मिश्र ६४,१४८, २५१,३०६
,, रामगोपाल शर्मा ३३७ ३५७
,, रामचन्द्रसिंह वर्मा २४५
,, रामचन्द्र जी प्रफुल्ल २३३
,, रामचन्द्र जी वैं० शा० १८२
,, रामचन्द्र जी शाकल्य ३०४
,, पं० रामप्रसाद जी शर्मा ३७१, ३७२
,, रामप्रसाददास ३०२
,, वैं० रामप्यारेलाल जी ५३,६६
,, वैं० भू० रामकृष्ण ताम्रकार २७८
,, पं० रामकृष्ण दुवे १५४
,, वैं० रामकृष्ण शर्मा २३३,२३५
,, पं० रामदत्त शर्मा १६८,३८६
,, रामलखनजी वैद्य २०६
,, पं० राममूर्ति शर्मा २३७
,, वैं० रामशंकर जी पाठक २३८
,, रामजीवन त्रिपाठी २४३
,, रामजी पाण्डेय १२०,१८६
,, रामावतार जी पाण्डेय ५१,३५७
,, डा० रामरतन जी निगम ५१
,, रामसनेहीअवस्थी ५६
,, रामवृक्ष जी ५७
,, पं० रामलाल जी जैन ६५
,, पं० रामसुन्दर जी वैद्य ६८

श्री डा० रामविलास चौरसिया १४३
,, कवि० पं० रामाधार द्वि० १४१
,, रामचरण जी शुक्ला २३७
,, पं० रामचरन शर्मा १८२
,, रामधन शर्मा ३३६
,, पं० रामनारायन शास्त्री ३८४
,, पं० रामेश्वरप्रसाद २१४
,, रुद्रनारायणसिंह ७८
,, पं० रूपेन्द्रनाथ द्विवेदी १७०
,, रूपनारायण कोठारी ३२६
,, रेवाशंकर शर्मा १५१
,, रोशनलाल जैन २३४
,, लक्ष्मीनारायण शर्मा ६०,१४५, २१३
,, लक्ष्मीनारायण दुवे १४७,३३१
,, पं० लक्ष्मीचन्द्र जामोरिया ५३
,, डा० लक्ष्मीनारायणसिंह २४४
,, वैं० शि० लक्ष्मीचन्द्र २७५
,, पं० लक्ष्मणकुमार ५१
,, लक्ष्मणप्रसाद ज्योतिषी ३०७
,, लादूराम शास्त्री २४५
,, लादूराम जी विरक्त २८२
,, श्यामदास प्रपन्नाश्रमी २४८,३४०
,, पं० श्यामसुन्दरलाल जी ३८६
,, श्यामविहारीलाल जी २७५,२७८
,, पं० शशीन्द्र पाठक शास्त्री १८७, ३८८
,, वैं० शंकरलाल ६६,१०७
,, पं० शंकरलाल जैन ३५६
,, शम्भूनाथ जी पाण्डेय ३३३
,, पं० शालिगराम शर्मा ५६,१२६, १४१,२७४,३०२
,, वैद्या शान्तीदेवी आत्रेय ३०३, ३६६
,, वैं० शा० श्रावण सातपुते २३८
,, पं० शान्तीसवरूप जी मिश्रा ३२६, ३३३

श्री शिखरचन्द जैन १४८
,, शिवकुमार शास्त्री १२२,१२५, १४५,२८३
,, पं० शिवशर्मा १२१
,, शिवचन्दजी राजवैद्य ६४
,, पं० शिवचरण जी तिवारी १८६, २८५
,, शिवलाल तुर्फल अहमद २८०
,, पं० शिवनाथ शास्त्री २८५
,, वै० शिवनरेश पाठक ३२७
,, पं० श्रीकृष्ण शर्मा १२४,२११, ३०५,३८७,३६०
,, पं० श्रीपतिप्रसाद १५४
,, श्रीनिवास जी ३३१
,, इला श्रीकान्त देशपाण्डेय ३७८, ३८०
,, पं० शोभालाल हीरालाल शर्मा ६८
,, पं० सत्येश्वरानन्द शर्मा ६६,१४१, २३७
,, सत्यनारायण गुप्त १०१
,, सत्यव्रत प्रेमी ३८७
,, सत्यपाल गुप्ता ६६
,, डा० सत्यार्थप्रकाश ३४२
,, पं० सत्यनारायण मिश्र ३३४
,, सनतकुमार जी वै० शास्त्री ६६
,, सदाशिवशर्मा कुं० स्नेहलता परमार १०४
,, जी० के० दवे, वै० डी० एन० शहाणे १०४
,, वै० जे० वी० डगाया, वै० सरोजपेन पण्ड्या १०४
श्री सभाकान्त झा ३५६
,, सन्त बसन्तसिंह २३३
,, श्रीमती सरोजनी देवी ३७८
,, पं० सागरचन्द महात्मा २७४
,, महन्त साधुशरणदास २३७
,, श्रीमती सावित्री वै० शा० २१२
,, वै० साधूसिंह कुशवाहा १८८
,, सियाप्रसाद अष्ठाना ५२,६७, २१०
,, डा० सिद्धगोपाल पुरोहित ३२८
,, कवि० सीताराम अजमेरा १८२, २३८
,, गोस्वामी सीताराम ३५६,३७५
,, सुन्दरलाल जी जैन ६६,१४१, २७५,३७४
,, पं० सुरेशदत्तशर्मा ५२,३०३
,, स्नातक सुरेन्द्रदेव शा० ६३
,, पं० सुदेवचन्द्र पाराशरी २११
,, पं० सुरेन्द्रनाथ दीक्षित ३३३
,, सुदर्शनसिंह जी चन्द्र १८३
,, वैद्यराज सूरजमल जोषी २४८
,, सूरजमल २३५
,, पं० सूरजप्रसाद १८५
,, पं० सोमदेव २३४,३०७,३२५, २६०
,, पं० हर्पुलमिश्र ५५,७२,६५, १००,१६६, १७१,१६१,२८३
,, हरिरामजी बराटे १४६,३०८, ३५७ ३६०
,, हरिनारायण शर्मा शा० १२७, २८२,३३३
,, कवि० हरिशंकर टंडन १४३
,, पं० हरिप्रसाद चतुर्वेदी १४५
,, पं० हरिशंकर पाचोली ३८२
,, पं० हरिनारायण मिश्र २८६
,, हरिचरणसिंह जी २८५
,, हरदयाल वै० वाच० २३४
,, हनुमानप्रसाद शर्मा ३३७
,, क्षेमचन्द जैन १५३
,, पं० क्षेत्रपाल शर्मा १८२

दो शब्द

"प्रयोग संग्रह [तृतीय भाग]" पाठकों की सेवा में सादर समर्पित है। इस ग्रन्थ के पूर्व प्रकाशित दोनों भाग आयुर्वेद जगत् में पर्याप्त प्रशंसा प्राप्त कर चुके हैं, यह मेरे लिये बहुत सौभाग्य की बात है। लेखक का परिश्रम तभी सार्थक होता है, जब उसका रचित साहित्य पाठकों की दृष्टि में उपयोगी प्रमाणित होता है, इस सम्बन्ध में प्राप्त सहस्रों पत्रों से मैं आश्वस्त हो गया हूँ, कि मेरा प्रयास सार्थक हुआ है। विशेषांक प्रकाशन के बाद नित्य अनेक पत्र इस विशेषांक की प्रशंसा में मिलते रहे हैं। मैं उन सभी सज्जनों को जिन्होंने मुझे साधुवाद लिखकर भेजा है, पर मैं उन्हें पत्र नहीं लिख पाया। अतः यह दो शब्द लिखते समय सर्वप्रथम उन्हें धन्यवाद देना अपना कर्तव्य समझता हूँ।

विशेषांक के प्रथम भाग को पढ़कर जो पाठकों के पत्र हमें मिले थे, उन्हें हमने द्वितीय भाग में प्रकाशित किया था। द्वितीय भाग को पढ़कर भी ऐसे अनेक पत्र हमें मिले हैं, जिनमें से कुछ के अंश यहां दिये जा रहे हैं—

विशेषांक की प्रशंसा में इस बार सर्वप्रथम पत्र मिला जंघई बाजार इलाहाबाद के वैद्य अवधनारायण शुक्ल का जिन्होंने विशेषांक की सम्मति में यह शब्द लिखकर भेजे—सम्मत्यर्थं सुधानिधि का प्रयोग संग्रह अङ्क यथा समय प्राप्त हुआ। मेरी सम्मति में सुधानिधि का यह प्रयोग संग्रह अङ्क अद्भुत है। संक्षेप में कहना हो, तो प्रयोगों के विषय में यह विशेषांक आयुर्वेदिक रामायण बन गया है। प्रचीन से प्राचीन, नवीन से नवीन, सस्ते से सस्ते और मंहगे से मंहगे योगों का संकलन; विद्वान् से विद्वान् और अल्पज्ञ से अल्पज्ञ के समझने लायक सामग्री देखकर मेरी सरस्वती कहती है "विलोड्य वैद्यागमसिन्धु गाधम् प्रवच्मि ते पुत्रक साम्यसूयाः, प्रयोग सग्राहकमङ्क मेकम् सुधानिधेर्यस्य स एव वैद्यः।" इस पत्र के बाद प्रशंसा सूचक पत्रों की झड़ी लग गयी। आयुर्वेद जगत् के जाने-माने विद्वान् वैद्यराज अम्बालाल जोशी ने अपनी प्रशस्ति में एक कुण्डली लिखकर भेजी, जिसकी अन्तिम दो पंक्तिया इस प्रकार थीं—"कहें अम्बु कविराज सफल श्रम भयो तुम्हारो, सरल सुगम कर योग सुधानिधि घट भर डारो।" इसी तरह उर्दू में इन शब्दों के साथ—"अल्लाह करे जोरे-कलम और जियादा।" लाड़कुई (सिहोर) म० प्र० ने हमें उत्साहित किया और साथ में यह आग्रह भी किया—"मेरी प्रार्थना विनम्र शब्दों में यही है, कि आप इस शृङ्खला को विशृङ्खलित न करके सन् १९८३ में ही इसका तृतीय भाग प्रकाशित करें। यद्यपि इसमें आपको अपेक्षाकृत अधिक कष्ट तो होगा, परन्तु हम उपयोगी साहित्य से १ वर्ष वञ्चित न रहेंगे। इसी आग्रह को लखनऊ के डा० जे० पी० यादव ने इस प्रकार लिखा—"प्रयोग संग्रह अङ्क द्वितीय भाग मिला, उसका अध्ययन कर मुझे अपार हर्ष हुआ। लेकिन यह सूचना पढ़कर दुःख हुआ कि इसका आगामी भाग १९८४ में प्रकाशित किया जावेगा। चिकित्सक समाज के हित को दृष्टिगोचर रखते हुये मैं आपसे करबद्ध प्रार्थना करना चाहूंगा, कि इसी प्रकार क्रमशः जब तक समस्त रोगों पर प्रयोगों का संग्रह समाप्त न हो जाय, तब तक अन्य अङ्कों का प्रकाशन स्थगित कर दिया जाय।" हमारे परम आदरणीय वैद्यराज आचार्य हरदयाल वाचस्पति ने विशेषांक के सम्बन्ध में यह शब्द लिखकर मुझे आशीर्वाद भेजा—"आपके द्वारा प्रेषित सुधानिधि प्रयोग संग्रह विशेपाक १९८२ का मिला। इस वर्ष का प्रयोग संग्रह अङ्क [द्वितीय भाग] पढ़कर अतिशय प्रसन्नता हुई। यह भाग प्रथम भाग की अपेक्षा उपयोगी सामग्री तथा नूतन साज-सज्जा विभूषित है।

आपका यह अथक परिश्रम आपको और आपके इस प्रयोग संग्रह शृङ्खला को अमर बना देंगे इसमें सन्देह नहीं, मेरा आशीर्वाद स्वीकार करें।" ऐसा ही आशीर्वाद सूचक पत्र प्राप्त हुआ रायपुर (म० प्र०) से सुधानिधि के पाठकों के पूर्व परिचित वैद्य हर्पुल मिश्र का। उन्होंने लिखा—"प्रिय गोपालशरण जी, आपके द्वारा प्रेषित सुधानिधि का प्रयोग संग्रह अङ्क [द्वितीय भाग] १ सप्ताह पूर्व मिला था, तब से नित्य २-३ घण्टे इसका अध्ययन कर रहा हूँ। आपका परिश्रम श्लाघनीय है। आयुर्वेद जगत् में ऐसा साहित्य मेरी दृष्टिपथ में आज तक नहीं आया, जिसमें एक रोग पर इतने प्रयोगों का संग्रह एक साथ दिया गया हो। इस ऐतिहासिक रचना के लिये मेरा आशीर्वाद सदैव तुम्हारे साथ है।" प्राणिज खनिज द्रव्यांक तथा स्वास्थ्य रक्षा अङ्क जैसे विशेषांकों के यशस्वी सम्पादक वैद्य छगनलाल समदर्शी ने इन शब्दों में अपनी प्रशस्ति भेजी—"आपके द्वारा प्रेषित सुधानिधि का प्रयोग संग्रह अङ्क [द्वितीय भाग] प्राप्त हुआ। प्रस्तुत अङ्क में कुष्ठ से लेकर प्लीहा-यकृत्वृद्धि तक १७ रोगों पर जिन सफल प्रयोगों का संग्रह किया है, उन्हें देखते हुये यही कहूँगा कि इस अमर साहित्य के निर्माण में आपने बहुत श्रम किया है। इस द्वितीय भाग में रोग से सम्बन्धित हर प्रकार के चिकित्सा प्रयोगों के साथ-साथ जो सफल औषधि व्यवस्था-पत्र दिये गये हैं, उनसे पाठकों को विशेष लाभ होगा।" इस तरह प्रशंसा में अनेक पत्र प्राप्त हुये, जिन्हें पढ़कर मुझे अतीव प्रसन्नता तथा उत्साह का अनुभव होता रहा। लेकिन इन सबसे भी अधिक प्रशंसा इस पत्र को पढ़कर मिली—वैद्यराज गोपालशरण जी, मैं सुधानिधि का १ वर्ष पहले ही ग्राहक बना हूँ। मैं वैद्य नहीं हूँ, लेकिन आयुर्वेद में रुचि रखता हूँ। आपका इस वर्ष का प्रयोग संग्रह अङ्क अद्वितीय है। मेरा तो इस विशेषांक ने डूबता हुआ संसार बचा लिया है। मेरी पत्नी १ माह पूर्व तीव्र पक्षाघात रोग से पीड़ित हो गयी। अनेक चिकित्सा कराई, लेकिन कोई लाभ नहीं मिला। हम उसके जीवन की आशा छोड़ चुके थे। मैं और मेरे बच्चे भविष्य की कल्पना करके रात-दिन अश्रु प्रवाहित कर रहे थे, तभी आपका प्रयोग संग्रह अङ्क [द्वितीय भाग] मिला, जिसमें पक्षाघात प्रकरण में पक्षाघात की सफल चिकित्सा पृष्ठ २७२ पर दी गयी थी। मैं उसको पढ़कर एक परिचित वैद्य जी के पास गया और आपके दिये हुये क्रम से चिकित्सा करने का आग्रह किया। उन्होंने उसी दिन से आपके लिखे निर्देशों के अनुसार चिकित्सा प्रारम्भ कर दी। तीन दिन बाद से ही रोगिणी के स्वास्थ्य में सुधार प्रारम्भ हो गया और १५ दिन की चिकित्सा में वह लगभग ठीक हो गयी। चिकित्सा अभी चल रही है और १ माह में बिलकुल ठीक हो जायगी, ऐसा हमारा विश्वास है। मैं और मेरे बच्चे जीवन भर आपके तथा विशेषांक के ऋणी रहेंगे। इस तरह एक रोगिणी के प्राण बच गये। निश्चित रूप से विशेषांकों में वर्णित अन्य योगों ने भी कष्टपूर्ण असाध्य रोगियों को रोगमुक्त किया होगा, ऐसा हमारा विश्वास है।

इन प्रशंसा-पत्रों के साथ-साथ कुछ आलोचनात्मक पत्र भी हमें मिले। जिनमें से चुरू के ७० वर्षीय वयोवृद्ध वैद्यराज चन्द्रशेखर व्यास ने हमें ५-५-८२ के पत्र में इन शब्दों से लताड़ लगायी—आपका विशेषांक मिला। आपने परिश्रम तो किया है, परन्तु आपने इस अङ्क में पिष्ट प्रेषण ही अधिक किया है। बुरा न मानना इस विशेषांक का नाम पिष्ट प्रेषणांक होता, तो उत्तम था। महोदय, यह तो किसी फार्मेसी का सूचीपत्र मात्र प्रतीत होता है। इस विशेषांक से आयुर्वेद जगत् को कोई लाभ नहीं होगा। आपको मेरा लिखना कटु जरूर प्रतीत होगा, परन्तु आपका हित इसमें छिपा हुआ है। आपका शुभचिन्तक हूँ, विचार करें। लेकिन ठीक १ माह बाद ६-५-८२ के पत्र में लिखा—"मैंने एक कार्ड द्वारा आपके अङ्क को 'पिष्ट प्रेषणांक' लिखकर भेजा था, वह मेरी भूल थी, आप क्षमा करेंगे। आपने जो औषधि संकलन किया है, वह सराहनीय है।" गया (बिहार) के एक वैद्य जी ने लिखा—" आपके दिये गये छोटे-छोटे अधिकांश प्रयोग निरर्थक हैं और बड़े प्रयोग बनाने में इतने कष्टदायक हैं, कि उन्हें साधारण वैद्य नहीं बना सकता। इतने एक साथ प्रयोग देने के बजाय कुछ चुने हुये उपयोगी योग ही दिये जाते, तो पाठकों को विशेष लाभ होता।" लेकिन इसके साथ ही जलेसर (एटा) के एक

नवस्नातक वैद्य ने लिखा—"आपने प्रयोग संग्रह में जिन ग्रन्थों का सहारा लिया है, वह बहुत थोड़े हैं। कितना अच्छा होता कि अन्य ग्रन्थों को भी लेकर इस संकलन को और विस्तार दिया जाता। गंवा (बदायूं) के डाक्टर ओमप्रकाश शर्मा ने लिखा—"विशेषांक मिला, उत्तम है; लेकिन इतने स्टैंडर्ड पत्र में प्रूफ रीडिंग में इतना प्रमाद बहुत कष्टदायक है। भविष्य में विशेषांक की प्रूफ रीडिंग में सुधार कीजिये।" ज्वालापुर (सहारनपुर) के डा० विनोदकुमार शर्मा ने अपनी आलोचना इस प्रकार लिखकर भेजा—"आपने जो ऐलोपैथिक योगों का संकलन दिया है, वह अपने आप में अधूरा है। अनेक ऐसी औषधियों के नाम इसमें संग्रहीत हैं, जो अब प्रचलित नहीं हैं तथा अनेक प्रचलित योगों का संकलन नहीं किया गया है। भविष्य में किसी योग्य एलोपैथिक डाक्टर से यह संकलन करावें।" दिल्ली के एक महोदय ने अपनी शिकायत इस प्रकार लिखकर भेजी—"आपका विशेषांक मिला। संकलन के हिसाब से बहुत उपयोगी है, लेकिन इसमें आप जो भाषा प्रयोग करते हैं वह बहुत क्लिष्ट है, कृपया इतने उपयोगी साहित्य को साधारण भाषा में लिखें; विशेषकर रोगों के नाम तथा घटकों के प्रचलित हिन्दी नाम दें। जैसे—गृध्रसी, अर्धावभेदक, अभिष्यन्द, उष्णवात आदि रोगों के नामों से कितने साधारण जन परिचित होंगे।

इन प्रशंसा और आलोचना भरे पत्रों के साथ-साथ कुछ अत्यन्त उपयोगी पत्र भी हमें मिले, जिनमें विशेषांक में वर्णित योगों के फलाफल के सम्बन्ध में अपने अनुभव इस प्रकार लिखकर भेजे—

आजमगढ़ से वैद्य महेशचन्द शुक्ला ने विशेषांक के अनेक योगों का निर्माण करके अपने रोगियों पर परीक्षण किया। उन्होंने अपने अनेक अनुभव हमें लिखकर भेजे, उनमें से कुछ पाठकों के हितार्थ यहां दियेजा रहे है—

(१) गयाप्रसाद नामक रोगी जो जलोदर की जटिल अवस्था में पहुंच गया था, आपके विशेषांक के १४५ पृष्ठ पर दिये गये पिप्पली कल्प से बिलकुल स्वस्थ हो गया।

(२) नेत्रज्योति वर्धक योग "ज्योति स्मृति" जो विशेषांक के पृष्ठ २५५ पर दिया गया है, नेत्र रोगियों के लिये बहुत उपयोगी प्रमाणित हुआ है। इसके प्रयोग से अनेक लोगों के चश्मे छूट गये हैं। रात्रि अन्धता में भी लाभकर है।

(३) विशेषांक के द्वितीय भाग के पृष्ठ ३१६ पर दिया गया चिन्चा बीज चूर्ण प्रदर के लिए उपयोगी प्रमाणित हुआ। कुछ को छोड़कर अधिकांश रोगिणी ठीक हो गयीं।'

(४) धातु-दौर्बल्य प्रकरण में पृष्ठ ११८ पर ८४ नम्बर पर दिया गया योग स्वप्नदोष तथा धातुदौर्बल्य में विशेष उपयोगी है।

(५) ज्वर प्रकरण में पं० हर्षुल मिश्र द्वारा दिया गया "हर्षुल ज्वरासि" अत्यन्त उपयोगी है। जीर्णज्वर के अनेक रोगी इस योग के प्रयोग से स्वस्थ हो गये। निर्माण में जटिल है, लेकिन बहुत उपयोगी है। प्रत्येक वैद्य को इसे निर्माण करके रखना चाहिये।

(६) गृध्रसी में हारसिंगार पत्र का प्रयोग जो पृष्ठ ८० पर दिया गया है। गृध्रसी की हर अवस्था में उपयोगी पाया गया। इसका प्रयोग धैर्यपूर्वक कुछ दिन कराना चाहिये, उपयोगी योग है।

पटियाला के एक पाठक ने अपनी पत्नी पर पलाशपत्र योग (द्वितीय भाग पृष्ठ ७०) का प्रयोग कराया और अपने अनुभव इस प्रयोग इस प्रकार लिखकर भेजे—

मेरी पत्नी (३० वर्ष) को गर्भावस्था के दूसरे माह में गर्भपात हो जाता था। ४ गर्भपात होने के बाद हम निराश हो गये थे। आपके विशेषांक को पढ़कर मेरे बड़े भाई, जो आपके सुधानिधि के ग्राहक हैं, उन्होंने मेरी पत्नी पर इसका प्रयोग कराया। ९ माह तक विधिपूर्वक इस योग का सेवन कराने से मेरी पत्नी ने गत माह शिशु को जन्म दिया है। इसलिये आपको बधाई देने के लिये यह पत्र लिख रहा हूँ।

गोवरधन (मथुरा) के एक वैद्य ने प्रयोग संग्रह अङ्क (प्रथम भाग) में पृष्ठ ३१८ पर वर्णित "हर्पुल ग्रन्थि मोचन वटी" का प्रयोग अनेक रोगियों पर कराया और अपने अनुभव इस प्रकार लिखकर भेजे—

गण्डमाला तथा विभिन्न प्रकार की ग्रन्थियों पर ग्रन्थि मोचन वटी का प्रयोग अत्यन्त उपयोगी पाया गया। अनेक रोगी इस प्रयोग से ठीक हो चुके हैं। बालकों के गले में जो ग्रन्थियां हो जाती है और डाक्टर लोग टी० बी० ग्लैण्ड्स बताते है, इसके प्रयोग से शत-प्रतिशत ठीक हो जाते हैं। एक कुष्ठ रोगी को भी इस योग का प्रयोग कराया जा रहा है, जिसे बहुत लाभ है। ऐसे प्रयोग निश्चय आयुर्वेद का नाम उज्ज्वल करने वाले है।

बहराइच से डा० अवस्थी प्रसाद ने खांसी के रोगियों पर प्रयोग सग्रह अङ्क के प्रथम भाग में पृष्ठ ३९२ पर प्रकाशित "मधुवासक" प्रयोग कराया और यह अनुभव लिखकर भेजा—

प्रयोग संग्रह अङ्क (प्रथम भाग) में कास पर संग्रहीत प्रयोगों में अन्य योगों की अपेक्षा "मधुवासक" अत्यन्त उपयोगी सिद्ध हुआ। सूखी खांसी में रामबाण कार्य करता है। तर खांसी म द्राक्षारिष्ट और वासारिष्ट के साथ मिलाकर देने पर लाभ करता है। श्वास रोगियों को भी इसका प्रयोग कराया गया और बहुत उपयोगी प्रमाणित हुआ।

सिवनी (म० प्र०) के ओमप्रकाश आचार्य ने प्रयोग संग्रह अङ्क (प्रथम भाग) के पृष्ठ २५३ पर वर्णित शिशु शूलहर वटिका पर अपना अनुभव इस प्रकार लिखकर भेजा—

मैंने अपने चिकित्सालय में शिशु शूलहर वटिका का निर्माण करके अनेक बच्चों पर प्रयोग कराया। मलावरोधजन्य उदरशूल में बहुत उपयोगी है, देने के ½-१ घण्टे में उदर से मल निकलकर उदरशूल शान्त हो जाता है। उदरशूलान्तक धूनी (प्रयोग सग्रह अङ्क प्रथम भाग, पृष्ठ २५३) भी उदरशूल में चमत्कारी है।

उदरशूल पर ही नवाबगंज (बरेली) के एक डाक्टर महोदय ने प्रयोग संग्रह अङ्क (प्रथम भाग) में पृष्ठ २५४ पर वर्णित वृन्ताक वटी को बहुत उपयोगी पाया।

पुरी (उड़ीसा) के वैद्य तीर्थराम पिरोहित ने प्रयोग संग्रह अङ्क (द्वितीय भाग) के कुछ योगों का परीक्षण कर उनका फलाफल इस प्रकार लिखकर भेजा—

पृष्ठ २०३ पर वर्णित वाजीकरण वटी धातु-दौर्बल्य के रोगियों पर बहुत उपयोगी पायी गयी। पृष्ठ २०२ पर वर्णित हर्पुल वाजीकरण मोदक भी उत्तम योग है।

इस प्रकार जिन सज्जनों ने हमे विशेषांक के योगो का फलाफल लिखकर भेजा, उन पाठकों के हम आभारी हैं। अन्य पाठकों ने भी अन्य योगों का निर्माण कर उनका परीक्षण किया होगा, उनसे भी अनुरोध है कि वह अपने अनुभव हमें लिखकर भेजें, जिससे विशेष उपयोगी योग पाठकों की दृष्टि में आ सकें।

प्रस्तुत विशेषांक

प्रस्तुत विशेषांक बालरोग से स्त्री विकार (सामान्य) कुल १२ रोगों पर अकारादि क्रम से प्रयोगों का संग्रह किया गया है। इस बार कुछ रोगों पर अधिक प्रयोगों का संग्रह होने से केवल १२ रोगों का ही उल्लेख सम्भव हो पाया है। संयोग से स्त्री-विकार तक सभी बड़े रोगों की सूची समाप्त हो जाती है। इस प्रकार तीन भागों में कुल ५२ रोगों पर प्रयोग संग्रह किये गये हैं, उनके नाम इस प्रकार है—

(१) अग्निदग्ध, (२) अजीर्ण, अग्निमांद्य, मन्दाग्नि, (३) अतीसार, (४) अर्धावभेदक, (५) अनिद्रा, (६) अपस्मार, (७) अभिष्यन्द, (८) अम्लपित्त, (९) अर्श, (१०) अश्मरी, (११) असृग्दर [रक्त प्रदर], (१२) आध्मान, आनाह, अफारा, (१३) आन्त्रिक ज्वर, (१४) आमवात, (१५) उदरशूल, (१६) उन्माद, (१७) उपदंश, (१८) उष्णवात, (१९) कण्ठमाला, गण्डमाला, अपची, (२०) कण्डू, पामा, दद्रु, विचर्चिका एवं

(II) **मलावरोध**—माताओं के खान-पान मे उनके दूध के दूषित हो जाने से बच्चे का पेट खराब हो जाता है, जिससे उसकी समान और अपान वायु में विकार पैदा हो जाता है। मल सूख जाता है, मल सूख जाने से शिशु का पेट फूल जाता है पेट में दर्द रहता है, शिशु को वमन होने लगता है और इन कष्टों के कारण रोते-रोते वेहाल हो जाता है। बच्चों के मलावरोध में हमारे अनुभव कुछ इस प्रकार हैं—

(१) थोड़ा-सा रीठा का फॅस (फेन) गुदामार्ग में प्रवेश कराने से उसका दस्त खुल जाता है।

(२) वड़ी हरड़ का चूर्ण ३ ग्राम, वीज निकाले मुनक्का ६ ग्राम जल के योग से सिल पर वारीक पीस लें। ५० ग्राम गाय का दूध तथा ५० ग्राम जल मिलाकर उपरोक्त पिसी लुगदी घोलकर ओटावें। जव पानी जल जाय और दूध मात्र शेष रह जाय, तो उसे छानकर कटोरी मे रख लें। इस दूध में से २-२ चम्मच थोड़ा गुनगुना-गुनगुना वच्चे को कई वार में पिलावें। इससे वच्चे का मलावरोध दूर होता है और रुकी हुई गांठें वाहर निकल आती हैं।

(३) जुलाफा हरड़ को जल के साथ स्वच्छ पत्थर पर घिसकर दूध में घोलकर देने से वच्चे का मलावरोध दूर हो जाता है।

(III) **वालातिसार**—प्रारम्भ के १-२ वर्षों तक शिशु की आन्त्र वहुत संवेदनशील होती है। आहार-विहारका परिवर्तन उसकी आंतों पर शीघ्र प्रभाव करता है। अतः स्तनसेवी बच्चों को अतीसार होने पर माता के आहार-विहार का विशेष ध्यान रखना आवश्यक है। ऊपर का दूध पीने वाले वच्चों के दूध का विशेष ध्यान देना जरूरी है। प्रारम्भ में वच्चे को गाय के दूध में वरावर का पानी मिलाकर सेवन कराना चाहिये और बाद में पानी की मात्रा घटाते-घटाते केवल दूध पर आना चाहिये। अतीसार की अवस्था में यह वात ध्यान देने योग्य है, कि यदि वच्चा दिन में ३-४ वार दस्त जावे तो उस पर ध्यान न दें। लेकिन यदि मल की संख्या ३-४ बार से अधिक, राशि सामान्य से अधिक, दुर्गन्धि एवं हरा-पीला वर्ण, जल की मात्रा की अधिकता या मल के साथ रक्त या आंव आने लगे, उसका उपचार करना चाहिये। हमारे अनुभव में वालातीसार में निम्न चिकित्सा लाभप्रद प्रमाणित हुई है—

(१) अहिफेनयुक्त औषधियों से वालकों को हानि होने का भय वना रहता है, इसलिये इन्हें देने से वचना चाहिये। लेकिन यदि मल प्रवाह को कम करना हो और साधारण औषधि काम न कर रही हों, तो कर्पूर रस और अगस्ति सूतराज औषधि का प्रयोग निःसंकोच सही मात्रा में कराना चाहिये। कर्पूर रस का प्रयोग तीव्र प्रवाहिका की अवस्था मे विशेष लाभप्रद पाया गया है। मात्रा ६० मि०ग्रा० से १२० मि०ग्रा० तक देनी चाहिए।

(२) वालचतुर्थी अपचजन्य वालातीसार की अवस्था में वहुत लाभदायक है। अतीसार में इसका प्रयोग २ से ८ रत्ती तक आवश्यकतानुसार शहद के साथ कराना चाहिये।

(३) महागन्धक रस पाचन तन्त्र की विकृति को दूर कर दस्त वन्द कर देता है। यह बहुत ही उत्तम लाभप्रद योग है। वालकों की जीर्ण अतीसार की अवस्था में महागन्धक रस १ रत्ती, कर्पूर रस ¼ रत्ती, कपर्द भस्म १ रत्ती तथा जातीफलादि चूर्ण १ रत्ती मिलाकर एक मात्रा वना लें और प्रातः, सायं सौफ अर्क के साथ मिलाकर चटावें, तो थोड़े दिनों में निश्चितरूप से लाभ हो जाता है।

(IV) **वालशोष**—वालशोष छोटे वच्चों का प्रधान रोग है, जो हमारे देश में वहुतायत से पाया जाता है। इसकी उत्पत्ति होने से हीनपोषण, अल्पपोषण अथवा पाचन सम्वन्धी विकारों के कारण तीनों दोषों के प्रकुपित होने पर रस-रक्तादि धातुओं के क्षय होने से होती है। वालशोष की अवस्था में हमारे अनुभव इस प्रकार हैं—

(१) दीपन, पाचन, उचित पोषण, अभ्यङ्ग तथा बृंहण व बल्य पदार्थों का सेवन इसमें हितावह उपाय है।

(२) शम्बूक [घोंघे] का प्रयोग इसमें बहुत लाभदायक क्वाथ है। उसे क्वाथ बनाकर रस के रूप में अथवा घी में तलकर या भूनकर देना चाहिए।

(३) गम्भारी फल, नागवला, अश्वगन्धा अथवा मुलहठी इनमें से किसी एक में सिद्ध किये गये दूध में मिश्री मिलाकर बालक को पिलाने से लाभ होता है।

(४) चन्दनबला लाक्षादि तैल या शतावरी तैल की मालिश ½-१ घण्टे तक नित्य बच्चे को कराने से लाभ होता है। अनेक रोगी केवल तैल मात्र के अभ्यङ्ग से ठीक हो जाते हैं, ऐसा हमारा अनुभव है।

(५) अन्तःसेव्य औषधियों में शास्त्रोक्त कुमारकल्याण रस बहुत उपयोगी औषधि है। अकेला कुमार कल्याण रस ५० मि० ग्रा० की मात्रा में प्रातः, सायं शहद के साथ तथा अरविन्दासव ६ मि० लि० सेवन कराकर हमने बालशोष के अनेक बच्चे स्वस्थ किये हैं।

(६) यदि बालक फक्क रोग से पीड़ित है, तो उपरोक्त आयुर्वेदिक औषधियों के साथ-साथ आधुनिक विटामिन डी के योग भी प्रयोग कराये जा सकते हैं।

(V) **उदर कृमि**—बालकों को उदर कृमि रोग बहुतायत से मिलता है। उदर कृमि की अवस्था में बच्चा सदैव पेट में दर्द बताता रहता है और हमेशा टट्टी की जगह अंगुली से खुजलाता रहता है। कई बच्चे रात में दांत कटकटाते हैं। इन सब लक्षणों से पेट में कृमि होने का अनुमान लगाना चाहिये। पेट में कीड़े होने पर निम्न उपाय लाभदायक हो सकते हैं—

(१) कबीला ३ रत्ती, वायविडङ्ग ६ रत्ती तथा सुहागे का फूला ३ रत्ती। इन सबकी २ मात्रायें बनाकर सुबह, शाम शहद में मिला चटाकर ऊपर से गरम पानी पिलाना चाहिये। जो बच्चे छोटे हों, उन्हें पानी में घोलकर भी दे सकते हैं। उनके लिये ऊपर लिखी मात्राओं की ४ खुराक बनाकर देनी चाहिये। इसके कुछ दिन प्रयोग से उदर कृमि निश्चित रूप से समाप्त हो जाते हैं।

(२) अनार की जड़ की ताजी छाल के टुकड़े कूटे हुये ५० ग्राम, पलाश बीज का चूर्ण ६ ग्राम, वायविडङ्ग का चूर्ण १० ग्राम तथा जल १० ग्राम लें। सबको मिलाकर ढक्कनदान कलई के बर्तन में १॥ घण्टे तक आधा जल शेष रहने तक उबाल लें। फिर शीतल होने पर छानकर बोतलों में भर लें। इसमें से बच्चे की आयु के अनुसार १० से ५० ग्राम तक थोड़ा शहद मिलाकर दिन में ३-४ बार पिलावें, तो आंतों में चिपके हुये कृमि भी बाहर निकल आते हैं।

(VI) **उत्फुल्लिका (डब्बा) रोग**—दूध न पचने से, बालक का कफदोष विकृत होकर तीव्र ज्वर, मलावरोध, मूत्रावरोध, कास, श्वास आदि विकार होकर बच्चे को उत्फुल्लिका रोग हो जाता है। यदि ठीक उपचार न हो, तो यही विकार बढ़कर कफ विशिष्ट सन्निपात, वात श्वसनक ज्वर, ब्रांको निमोनियां का विकराल रूप धारण कर लेता है। ऐसी अवस्था में निम्न उपचार लाभदायक है—

(१) प्रारम्भिक अवस्था में कटु इन्द्रायन के फल के बीजों का चूर्ण २ से ४ रत्ती तक ले ५० ग्राम जल में पकाकर पिलाने से इस रोग के बढ़ने की सम्भावना नहीं रहती।

(२) गिलोय, नीम की छाल, मुलहठी, वायविडङ्ग, सनाय, सौंफ, कांगड़ासिंगी, प्रत्येक १-१ ग्राम लेकर कूट २०० ग्राम जल में क्वाथ करें। २५ ग्राम जल शेष रहने पर उसमें ६ ग्राम मिश्री मिलाकर पिलाने से २-३ दिन में यह रोग निर्मूल हो जाता है।

(३) यदि रोग प्रारम्भिक अवस्था में ठीक न होकर न्यूमोनियां की स्थिति में पहुंच गया हो, तो छाती पर अलसी की पुल्टिस या तारपीन के तैल से सिकाई करने से बहुत लाभ होता है। ऐसी अवस्था में गिलोय आदि के क्वाथ में त्रिभुवनकीर्ति रस की उचित मात्रा में देने से लाभ होता है।

(VII) **मुखपाक**—बच्चो के लिये बहुत कष्टदायक है। बच्चे की मुख की श्लेष्मलकला तथा जिह्वा पर रक्तिमा लिये छोटे-छोटे दाने मिलते है। बच्चे की भूख कम हो जाती है, मुख से लार टपकती रहती है, मुख में पीडा तथा जलन से बच्चे बेहाल हो जाते है। ऐसी अवस्था में हमारे अनुभव इस प्रकार है—

(१) सर्वप्रथम देखना चाहिये कि बच्चे को मलावरोध तो नही है। मलवद्धता हो तो मृदु रेचक औषधि का प्रयोग कराकर उसे दूर करना चाहिये।

(२) टंकण क्षार को शहद मे या ग्लिसरीन मे मिलाकर छालो पर लगाने से शीघ्र लाभ होता है।

(३) कत्था, सेलखड़ी, शीतल चीनी, मुलहठी, छोटी इलायची सभी १०-१० ग्राम लेकर बारीक पीस रख लें। मुख मे छाले होने पर इसे बुरकने से अतिशीघ्र लाभ होता है। छोटे बच्चों को गाय के घी, शहद या ग्लिसरीन मे मिलाकर लगाना चाहिये।

(VIII) **शैयामूत्र**—कृमि, मलावरोध, मानसिक आघात, मूत्र पूयता आदि विभिन्न कारणों से बच्चों में शैयामूत्र की आदत पड़ जाती है। शैयामूत्र की अवस्था में हमारे अनुभवों से पाठक इस प्रकार लाभ उठा सकते हैं—

(१) सोते समय द्रव पदार्थों को कम या न देने से, सोने से पहले और रात मे जगाकर पेशाब करा देने तथा कृमि आदि विकारों को दूर कर देने से शैया मूत्र की आदत छूट जाती है।

(२) गगनादि लौह तथा तारकेश्वर रस इसमें लाभदायक है। १-२ रत्ती की मात्रा में सुबह तथा रात्रि को सोते समय देने से लाभ होता है।

पथ्यापथ्य—विभिन्न रोगों के बड़ों को जो पथ्यापथ्य कहे गये हैं, उनकी ही व्यवस्था बालकों के रोगों में भी करनी चाहिए। बालकों को बार-बार असमय भोजन देना; बासी, सड़ी-गली गरिष्ठ चीजें खिलाना, डराना, धमकाना आदि हानिकारक होते हैं।

[२] मधुमेह—

इस रोग का मुख्य स्वरूप मूत्रगत शर्करा तथा रक्त शर्करा का सामान्य से बढ़ा हुआ होना है। अग्न्याशय द्वारा इन्सुलिन के निर्माण मे कमी होने से यह रोग होता है। चिन्ता, उपसर्ग, अग्न्याशय के रक्त-प्रवाह में कमी आदि लक्षणों से इन्सुलिन के निर्माण मे कमी होती है। मूत्र की मात्रा एवं संख्या की अधिकता, भूख-प्यास की अधिकता, दौर्बल्य, हथेली और तलुवों मे जलन, चक्कर आना आदि लक्षण मधुमेह मे विशेष रूप से देखने को मिलते हैं। भार मे कमी, दौर्बल्य, अत्यधिक भूख तथा प्यास, मूत्र और रक्त में शर्करा की उपस्थिति से इस रोग का निदान हो जाता है। इस रोग पर हमारे चिकित्सकीय अनुभव इस प्रकार है—

(१) मधुमेह जड़ से नही जाता, यह भ्रामधारणा है। पाठकों के लाभार्थ मधुमेह से सदैव के लिये छुटकारा पाने के लिये एक कल्प प्रयोग यहां दे रहे हैं। हमें यह योग एक पुस्तक में मिला था और तब से हमने कई रोगियों पर प्रयोग कराया है। पाठक इससे लाभ उठावें—

शालसारादिगण (सु०) की औषधियो से कम से कम ३ बार भावित शुद्ध शिलाजीत को स्थूल रोगियो में नाग भस्म के साथ तथा दुर्बल रोगियो मे यशद भस्म के साथ कल्प रूप मे साल भर तक देने से मधुमेह ठीक हो जाता है। रोगी का यथावश्यक शोधन कराकर शुभ मुहूर्त में प्रथम दिन शिलाजीत ½ ग्राम चार मात्रायें नागवला भस्म ६० मि० ग्रा० या यशद भस्म १२० मि० ग्रा० मिलाकर गोदुग्ध के साथ दें। फिर प्रतिदिन कुल ½ भाग शिलाजीत बढ़ाते हुये सत्ताईसवें (२७वें) दिन १५ ग्राम की मात्रा में लाकर स्थिर कर दे। यही मात्रा ३०० दिन तक देते रहे, उसके बाद क्रमशः ½ ग्राम प्रतिदिन घटाते हुये ३५४वें दिन फिर २ ग्राम की मात्रा पर लायें। फिर ११ दिन यही मात्रा देकर कल्प बन्द कर दें। शिलाजीत जब बड़ी मात्रा पर पहुँच जावे, तो उसे

आवश्यकतानुसार ६-७ मात्राओं में विभाजित कर दे सकते है, किन्तु नाग भस्म प्रतिदिन २५० मि० ग्रा० व यशद भस्म ५०० मि० ग्रा० से अधिक न दें। कल्प के दिनों में पीने के लिए जामुन की ताजी हरी छाल का पानी दें (विना कुटी हुई ६० ग्राम छाल १ किलो जल में प्रातःकाल डाल दें, वही पानी दिन भर पिलावें)। रोगी को खाने में जौ की रोटी अधिक दें। शर्करा, शर्करा बहुल पदार्थ, गरिष्ठ पदार्थों का परहेज रखें। कल्प के दिनों में रोगी अपना व्यवसाय चालू रख सकता है। इस कल्प में लगभग ५ किलो शिलाजीत लग जाता है। चिकित्सक को अपने निरीक्षण में अच्छे पत्थरों से सूर्यतापी विधि से शिलाजीत निकालकर रखना चाहिये।

(२) मधुमेहान्तक चूर्ण जो विशेषांक के पृष्ठ ११० पर ४१ संख्या पर दिया गया है। हमारा अनुभूत योग है। पाठकों को इसका निर्माण कर मधुमेह रोगियों पर प्रयोग कराना चाहिये।

पथ्यापथ्य—मधुमेह में जौ का प्रयोग विशेष लाभदायक है। यदि खाली जौ न खा सके तो चना तथा गेहूँ मिलाकर खाना चाहिये। रोगी को अन्न कम देकर शाक-तरकारियां अधिक देनी चाहिये। मधुर रस वाली वस्तुयें, चावल, कन्द रूप तरकारियां आलू आदि सर्वथा त्याग देनें चाहिये। तिक्त कषाय रस वाली वस्तुयें यथा—करेला, जामुन, निम्ब अधिक लाभप्रद है। नित्य टहलना बहुत उपयोगी है।

[३] मलावरोध—

वेगावरोध, अध्यशन, मिताशन, जलन्यूनता, अनिद्रा, अव्यायाम, मानसिक चिन्ता, जीर्ण ज्वर, आन्त्र के रोग आदि कई कारणों से अपान वायु प्रकुपित हो जाती है। उपर्युक्त जल का मल में अभाव हो जाता है, तब आन्त्र की अनुलोमन गति एवं मलत्याग की प्रवृत्ति में न्यूनता आ जाने से मल कठिन हो जाता है, यही मलावरोध कहलाता है। बार-बार जाने पर भी उदर से मल का निष्कासन सम्यक् रूप से न होना मलावरोध का प्रमुख लक्षण है। मलावरोध के उपद्रव स्वरूप अरुचि, मन्दाग्नि, आलस्य, मुख की विरसता, उदरशूल, अर्श, त्वचा-विकार, शिरःशूल आदि लक्षण देखने को मिलते है। मलावरोध की अवस्था में हमारे अनुभव इस प्रकार हैं—

(१) जिन कारणों से मलावरोध हुआ हो, उन कारणों को दूर करना चाहिये। जैसे भोजन ठीक समय पर उचित परिमाण में करना मलावरोध के रोगी के लिये बहुत आवश्यक है।

(२) मलावरोध के रोगी को प्रातःकाल मलत्याग से पहले जल पीने से विशेष लाभ होता है।

(३) हरे साग, फल आदि का अधिक सेवन करने से मलावरोध दूर हो जाता है।

(४) यदि उपरोक्त उपायों से मलावरोध दूर न हो, तो सामान्य विरेचक औषधि लेनी चाहिये। परन्तु यह स्मरण रखें कि विरेचन तात्कालिक उपाय है, नित्य ही करने योग्य उपचार नहीं। अतः अत्यन्त आवश्यक होने पर ही विरेचन लेना चाहिये।

(५) मलावरोधनाशक तीन अनुभूत प्रयोग पाठकों के हितार्थ यहां दे रहे हैं—

मलावरोधान्तक चूर्ण—त्रिफला ३० ग्राम, त्रिकुटा ३० ग्राम, पांचों नमक ५० ग्राम, अनारदाना १० ग्राम, जुलाफा १० ग्राम, सनाय की पत्ती १३० ग्राम मिलाकर चूर्ण बना लें। ३-५ ग्राम रात्रि को दूध के साथ या गरम जल के साथ लेने से मलावरोध दूर होता है।

मलावरोधान्तक वटी—कालादाना १०० ग्राम, सनाय की पत्ती १२५ ग्राम, काला नमक ६० ग्राम, सोंठ १० ग्राम, अजवायन २० ग्राम सभी को कूट-कपड़छन कर अमलतास के गूदे के साथ घोटकर ६-६ रत्ती की गोली बना लें। १-२ गोली रात को गरम जल या दूध के साथ सेवन कराने से मलावरोध दूर होता है।

पञ्चामृत चूर्ण—काले मुनक्का बीज निकले ४०० ग्राम लें। इनको खरल में पीसकर अमलतास का गूदा २५ ग्राम, सोंठ, मरिच, पीपल तीनों का चूर्ण १०-१० ग्राम, सैंधव लवण २५ ग्राम मिला खरल में पीसकर रख लें। ५ से १० ग्राम तक रात्रि को गरम जल के साथ लेने से मलावरोध दूर होता है।

पथ्यापथ्य—संयमित भोजन का सेवन करना चाहिये। भोजन में हरी सब्जी का प्रयोग अधिक करना चाहिये। वायुकर सब्जियां आलू, अरवी, मिण्डी आदि का सेवन नहीं करना चाहिये। फलों में पपीता, अमरूद, अन्जीर, अंगूर आदि का प्रयोग अधिक करना चाहिये। मरिच, गरम मसाले, चाय का प्रयोग कम से कम करना चाहिये। प्रातःकाल टहलना मलावरोध के लिए श्रेष्ठ उपाय है।

[४] मलेरिया या विषम ज्वर—

जो कभी शीतपूर्वक, कभी दाहपूर्वक आता हो; जिसके होने, बढ़ने या स्थिर रहने का समय निश्चित न हो तथा जिसके वेग में विषमता पाई जावे, उसे आयुर्वेद में विषम ज्वर कहते हैं। मलेरिया पैरेसाइट के उपसर्ग से होने वाला ज्वर ऐलोपैथी में मलेरिया कहलाता है और उसके लक्षण आयुर्वेदीय विषम ज्वर से मिलते हैं। यकायक ठण्ड देकर या बिना ठण्ड दिये हुए ही ज्वर का तीव्रता के साथ बढ़ना और काफी पसीना देकर उतरना, सिर तथा शरीर में तीव्र पीड़ा, प्लीहावृद्धि तथा कभी-कभी यकृत्वृद्धि आदि लक्षण मलेरिया में देखने को मिलते हैं। मलेरिया की अवस्था में हमारे निम्न अनुभवों से पाठक लाभ उठावें—

(१) मलेरिया के उपचार के लिये सबसे पहले पाचन प्रणाली को स्वस्थ बनाना आवश्यक है। मनुष्य की बड़ी आंत में पड़ा आवश्यकता से अधिक देर तक रुका मल सड़ता रहता है, जिससे रोग का संक्रमण शीघ्र एवं तीव्रता से होता है। इसलिये मलेरिया की औषधि देने के पहले किसी औषधि से रोगी का उदर-साफ कराना जरूरी है।

(२) शुद्ध मल्ल, गिलोयसत्व एवं गोदन्ती हरताल भस्म उचित मात्रा में मिलाकर ज्वर आने से पूर्व देने से ज्वर नहीं आता। ज्वर आने की अवस्था में इसे सेवन न करावें।

(३) केवल शुद्ध स्फटिका ½ ग्राम से १ ग्राम तक मिश्री मिलाकर देने से मलेरिया ज्वर रुक जाता है। ध्यान रहे ज्वर आने से पहले ही ६-६ घण्टे से इसकी ४ मात्रायें ले लेनी चाहिये।

(४) उपरोक्त साधारण योगों के अतिरिक्त पं० विश्वनाथ जी द्विवेदी का मलेरिया संहार योग भी बहुत उत्तम प्रमाणित हुआ है। पाठकों के लाभ हेतु उसका प्रयोग दिया जा रहा है—

कालमेघ घनसत्व १० ग्राम, सप्तपर्णत्वक् भस्म १० ग्राम, कुटकी सत्व १० ग्राम, कुचलात्वक् सत्व १० ग्राम, शुद्ध करंज बीज चूर्ण ४० ग्राम, रक्तस्फटिका ४० ग्राम। सबको मिलाकर पानी के साथ ३ रत्ती की गोलियां बनालें। मात्रा १-२ गोली जाड़ा आने से १२ घण्टा पूर्व या आवश्यकतानुसार ४ घण्टे के अन्तर से प्रयोग करना चाहिये। हम उपरोक्त योग में प्रवालपिष्टी १० ग्राम और मिलाकर बनाते हैं, इससे योग खुश्की कम करता है।

पथ्यापथ्य—मलेरिया ज्वर में साधारण ज्वर की तरह पथ्य दिया जाता है। मलेरिया के लक्षण प्रगट होते ही भोजन त्याग देना चाहिये। ३-४ दिन का उपवास प्रत्येक अवस्था में लाभदायक है। हर ३-४ घण्टे पर गरम पानी में नीबू का रस तथा शहद मिलाकर लेने से लाभ होता है। दुर्बल रोगियों तथा बच्चों को मौसमी, अनार, सन्तरा आदि का रस, फटे दूध का पानी अथवा सब्जी का सूप आदि ३-४ घण्टे से दिया जा सकता है। मलेरिया प्रकोप के दिनों में १०-१२ तुलसी के पत्ते नित्य क्वाथ कर पीने से मलेरिया का भय नहीं रहता।

[५] मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात—

मूत्र जब शिश्न के मूल, मध्य या अग्रभाग में रुककर दाह और पीड़ा के साथ बूंद-बूंद करके निकलता है तब उस अवस्था को मूत्रकृच्छ्र कहते हैं। मल-मूत्रादि के रोकने से, बस्तिगत वायु के दुष्ट होने पर जब

मूत्र बनना रुक जाता है या मूत्र त्याग रुककर धीरे-धीरे होता है तब उस अवस्था को मूत्राघात कहते हैं। इन दोनों अवस्थाओं में हमारे निम्न अनुभवों से पाठक लाभ उठावें—

(१) साधारणतः कारण व लक्षण देखकर दोषानुसार चिकित्सा करनी चाहिये जिन औषधियों का प्रयोग मूत्रकृच्छ्र में किया जाता है उन्हीं औषधियों को मूत्राघात में अधिक शक्तिशाली बनाकर देने से लाभ होता है।

(२) कलमीशोरा का लेप, चूहे की विष्टा का लेप, पलाश पुष्प की पोटली या क्वाथ से सेंक, कलमी शोरा तथा श्वेत जीरक का पिचु, तारपीन के तेल से स्वेदन आदि घरेलू उपाय होने पर भी बहुत लाभदायक है अतः अन्तः सेव्य औषधि के प्रयोग के साथ-साथ यह बाह्य उपचार अवश्य कराने चाहिये।

(३) श्वेतपर्पटी ½ ग्राम, हजरलजहूर भस्म ½ ग्राम तथा चन्दनादि वटी २ गोली मिलाकर ताजा पानी से ४-४ घण्टे पर सेवन कराने से मूत्रकृच्छ्र, मूत्रावरोध में निश्चित लाभ मिलता है। चन्दनादि वटी का योग इस प्रकार है—श्वेतचन्दन का बुरादा, सफेद राल, कबाबचीनी, छोटी इलायची के बीज, गन्धाबैरोजा का सत्व, कत्था, आंवला प्रत्येक ४०-४० ग्राम, कर्पूर १० ग्राम इसका चूर्ण करलें और इसमें ५० ग्राम उत्तम चन्दन का तेल तथा गोली बन सके इतनी शुद्ध रसौत मिलाकर ५-५ रत्ती की गोली बनालें।

पथ्यापथ्य—पुराना लाल शाठी चावल, मूंग, खांड, गाय का दूध, तक्र, दही, पेठा, परवल, नारियल, आंवला आदि हितकारी द्रव्य हैं। मद्य, विरुद्ध भोजन, विषम भोजन, मछली, मांस, नमक, हींग, उड़द, अति तीक्ष्ण द्रव्य, लाल मरिच, विदाही द्रव्य अचार आदि अपथ्य हैं।

[६] यक्ष्मा--

यक्ष्मा एक जटिल व्याधि है यह अधिकतर युवावस्था में होती है तथा वर्तमान में साध्य होने से इसके रोगी अधिक संख्या में चिकित्सकों के पास आते हैं। आयुर्वेद में जहां वेगरोध, क्षय, साहस, विषमासन आदि चार कारण इसके माने हैं वहां आधुनिक विज्ञान इस रोग का प्रधान कारण यक्ष्मा दण्डाणु (Mycobycterium tuberculosis) मानता है। खाते पीते निरन्तर वजन का घटना, बिना परिश्रम के थकावट होना, सायंकाल ज्वरांश की वृद्धि होना, अकारण बार-बार प्रतिश्याय, कास, अरुचि, रक्तष्ठीवन, रात्रि स्वेद आदि लक्षणों से इस रोग का पता लग जाता है। यक्ष्मा के प्रकरण में अनेक उपयोगी प्रयोग दिये गये हैं। यक्ष्मा के सम्बन्ध में हमारे निम्न अनुभवों से पाठक लाभान्वित हों—

(१) यक्ष्मा की चिकित्सा में औषधियों की अपेक्षा विश्राम व बल पुष्टिकारक पथ्य का अधिक महत्व है अतः औषधि सेवन के साथ आवश्यकतानुसार दूध, फल, मक्खन, अण्डा आदि का सेवन कराना चाहिये।

(२) रुदन्ती नामक बनौषधि से यक्ष्मा की चिकित्सा में चमत्कार पैदा किया है। रुदन्ती चूर्ण का बिना किसी मिश्रण के (विवरण पृष्ठ १८० पर देखें) या स्वर्णबसन्तमालती, प्रवालभस्म, सितोपलादि चूर्ण के साथ मिश्रित कर देने से यक्ष्मा में विशेष लाभ होता है। यक्ष्मा की आधुनिक औषधियों के निष्फल होने पर हमने रुदन्ती आदि के मिश्रित योगों से अनेक रोगी स्वस्थ किये हैं। ऐसा ही एक अनुभूत योग यक्ष्मा प्रकरण में १६० पृष्ठ पर २५ नम्बर पर "एकादश सितोपला चूर्ण" नाम से दिया गया है जो यक्ष्मा की प्रत्येक दशा में लाभदायक है। पाठक इसे प्रयोग कर लाभ उठावें।

पथ्यापथ्य—रोगी को सुपाच्य, हल्का पौष्टिक आहार देना चाहिये। दूध, अण्डे, मांस रस, मक्खन, फल, रोटी, शाक, दाल, भात आदि सब तरह का भोजन रोगी की रुचि के अनुसार देना चाहिये। यक्ष्मा में मछली का तेल विशेष लाभकारी है इसे अकेले या दूध या फलों के रस में मिलाकर देवें। विरुद्ध, विषम, शुष्क पर

कफ कर खट्टे चरपरे तीक्ष्ण आहार यक्ष्मा रोगी को नहीं देने चाहिये। मैथुन, श्रम, वेग धारण, भारवहन आदि से बचना चाहिये।

[७] रक्तपित्त—

शरीर के विभिन्न मार्गों से रक्त के निर्गम को रक्तपित्त कहा जाता है। यह रोग मनुष्य को किसी भी आयु मे किसी भी ऋतु में उत्पन्न होकर तीव्रावस्था धारण कर मृत्यु की अवस्था तक पहुँचा देता है। पाश्चात्य चिकित्सा शास्त्र वर्णित विभिन्न रक्तस्रावी रोगों के साथ आयुर्वेदोक्त रक्तपित्त रोग की तुलना की जा सकती है। रक्त वमन, रक्तनिष्ठीवन, नासामार्ग से रक्तस्राव, नेत्रस्राव आदि ऊर्ध्वग रक्तपित्त के अन्तर्गत, मूत्रमार्ग द्वारा रक्तस्राव, गर्भाशयज रक्तस्राव, अन्त्र से रक्तस्राव अधोग रक्तपित्त के अन्तर्गत, त्वचान्तर्गत रक्तस्राव तिर्यग्गत रक्तपित्त के अन्तर्गत आता है। रक्तपित्त की अवस्था में हमारे चिकित्सा सम्बन्धी अनुभव इस प्रकार है—

(१) अडूसा, मुनक्का, हरीतकी का क्वाथ शक्कर के साथ, पुटपक्व वासापत्र स्वरस शहद व शक्कर के साथ, गूलर का रस शहद के साथ, लाक्षा, रक्तचन्दन, अर्जुन छाल व मोचरस का क्वाथ रक्तपित्त में विशेष लाभदायक उपाय है।

(२) बावली घास रक्तपित्त की प्रत्येक अवस्था में बहुत उपयोगी औषधि है इसका प्रयोग चूर्ण, घनसत्व आदि के रूप में कराया जा सकता है।

(३) नासा प्रवृत्त रक्तपित्त में अनार पुष्प, दूर्वा, प्याज आदि के रस की नस्य देने से रक्त बन्द हो जाता है। शिर में शीतल जल सेचन, बर्फ जल का नस्य लेने या पीली मिट्टी का नासिका पर बदल-बदल कर लेप करने से भी नासिका रक्तस्राव रुक जाता है। फिटकरी का बारीक कपड़छन चूर्ण कर उसे थोड़े पानी में घोलकर और उसमें रुई भिगोकर नाक के अन्दर बदल-बदल कर रखने से भी नासिका से आने वाला रक्तपित्त रुक जाता है।

(४) मूत्रमार्ग के साथ आने वाले रक्तपित्त में तृणपंचमूल का क्षीरपाक बनाकर सेवन कराने से लाभ होता है।

(५) अधोग रक्तपित्त में रक्तातिसार के समान एवं योनि प्रवृत्त रक्तपित्त में रक्तप्रदर के समान चिकित्सा करनी चाहिये।

पथ्यापथ्य—शीतल जल, अनार, मौसमी, कच्चा केला, यव, गोधूम का अन्न, शालिचावल, शक्कर व मधु मिले सत्तू, परवल आदि रक्तपित्त में पथ्य तथा अम्ल, उष्ण, लवणयुक्त, एवं कटु पदार्थ, मद्य, चाय आदि का प्रयोग रक्तपित्त में हानिकारक है।

[८] व्रण विद्रधि—

शरीर के किसी भाग में सूजन, दाह होकर अन्दर से पकाव की स्थिति उत्पन्न होती है तो उसे व्रण अवस्था कहते हैं। व्रणशोथ की पक्वावस्था को ही विद्रधि कहा जाता है। दाह, मथने के समान पीड़ा, भूरे रङ्ग का शोथ व तरङ्ग प्रतीत आदि स्थानिक लक्षण व्रण की अवस्था में मिलते हैं। ज्वर, स्वेद तथा रक्त में श्वेत-कणों की वृद्धि यह सार्वदैहिक लक्षण देखने को मिलते हैं। व्रण के पूर्णरूप से पकने पर वह फूटता है और उससे गाढ़ा कभी पतला, श्वेत कभी पीला और रक्त मिश्रित पीव निकलता है। व्रण-विद्रधि की चिकित्सा में हमारे अनुभव इस प्रकार है—

(१) बाह्य विद्रधि या व्रणशोथ की चिकित्सा एक ही प्रकार की जाती है। व्रण होने पर पहले लेप, स्वेद, परिषेक आदि से उसे मृदु करना चाहिये। मृदु होने पर उपनाह या पुल्टिस बांधकर उसे फोड़ने की चेष्टा करनी चाहिये यदि पुल्टिस आदि से व्रण न फूटे तो शस्त्र द्वारा चीरा लगाना हितकर होता है। व्रण के फूटने पर और उसका पूय अच्छी तरह निकलने पर खुले व्रण को भरने के लिये रोपण चिकित्सा करनी चाहिये। कुछ प्रयोग इनके लिये यहां दिये जा रहे हैं—

(२) कुटी अलसी व दशांग लेप में थोड़ा नमक और घी डालकर लेही की तरह पुल्टिस बनाकर गरम-गरम बांधनी चाहिये। प्रारम्भ में बांधने से फोड़ा बैठ जाता है। पकना प्रारम्भ होने पर इसे बांधने से फूट जाता है।

(३) व्रण के फूटकर शुद्ध हो जाने पर जात्यादि तेल या घृत, निर्गुण्डी तेल या अन्य कोई मलहम लगाने से घाव भर जाता है। घाव भरने के लिये हमारे एक परिचित मित्र ने अपामार्ग तेल का प्रयोग हमें बताया था जिसे हमने बहुत उपयोगी पाया है। अपामार्ग पंचांग द्वारा निर्मित यह तेल कैसे भी सड़े से सड़े गले व्रण के लिये रामबाण प्रमाणित हुआ है। अपामार्ग पंचांग की राख को गाय के घी में मिलाकर व्रणों पर लगाने से भी व्रण शीघ्र भर जाते हैं। एक रोगी के पांव के तलवे का १० वर्ष पुराना व्रण जो हजारों रुपयों की औषधि से ठीक नहीं हुआ इस गाय के घी मिश्रित अपामार्ग पंचांग की मलहम से १ माह में बिलकुल ठीक हो गया।

(४) व्रण विद्रधि के रोगी को बाह्य उपचार के साथ-साथ सप्तविंशति गुग्गुल या त्रिफला गुग्गुल लगभग ३ ग्राम की मात्रा में प्रतिदिन सेवन कराने से बहुत शीघ्र लाभ होता है। विशेषांक के पृष्ठ २५० पर वर्णित व्रणापहारी वटी भी हमारा अनुभूत एवं उपयोगी योग है जिससे पाठक लाभ उठा सकते हैं। व्रण विद्रधि, फोड़ा, कटे जले के लिये एक और प्रयोग पाठकों के लिये प्रस्तुत है।

तिल का तेल ४०० ग्राम, नीलाथोथा ६ ग्राम, जंगालहरा ४० ग्राम, कर्पूर १५ ग्राम लें। तेल को गरम कर अग्नि से उतार लें और फिर एक खरल में जंगाल डालकर घोटें जब रवा रहे तब नीलाथोथा डालकर घोटें जब अच्छी प्रकार घुट जाय तब शेष तेल मिलाकर कपड़े में छानकर रख लें। इसे रुई के फाये में भिगोकर लगावें। चाकू, छुरा आदि किसी हथियार से कट गया हो, घाव हो गया हो, या फोड़ा का घाव हो इसके लगाने से ठीक हो जाता है।

व्रण अवस्था में आयुर्वेदीय व्रण-प्रक्षालन अर्क भी बहुत उपयोगी पाया है, जिसका निर्माण पाठक इस प्रकार कर सकते हैं—

नीम की छाल, बबूल की छाल, बड़ की छाल, पीपल की छाल, गूलर की छाल, पिलखुन की छाल २०-२० ग्राम, दम्बुल अखवैन ३० ग्राम, रतनजोत १० ग्राम, रसौत २० ग्राम, देशी शराब या मैथिलेटिड स्प्रिट ५ पौण्ड।

विधि—सब छालों के बारीक छोटे-छोटे टुकड़े कर लें तथा दम्बुल अखवैन और रसौत का कपड़छन चूर्ण करके चीनीमिट्टी या कांच के बर्तन में डालकर ऊपर से शराब या स्प्रिट भर दें और किसी उष्ण स्थान में रख दें। इस बर्तन को प्रतिदिन ३-४ बार हिला दिया करें। दस दिन पश्चात् बारीक कपड़े में छानकर बोतलों में भरकर रख लें। जिस प्रकार टिंक्चर आयोडीन व्यवहार किया जाता है, उसी प्रकार इसका व्यवहार करें। इसके व्यवहार से व्रण से खून का गिरना, मवाद का निकलना, जलन, सूजन आदि में शीघ्र लाभ होता है।

यह प्रयोग व्रणाधिकार में वर्णित २५२ पर ४६ नम्बर से मिलता-जुलता है, लेकिन उससे उपयोगी और सफल प्रमाणित हुआ है।

पथ्यापथ्य—व्रण विद्रधि आदि की अवस्था में पुराने लघु अन्न, तिक्तकटु रस वाली सब्जियां यथा परवल, करेला आदि मौसमी तथा मीठे फल और सूखे मेवे आदि खाने को दें। व्रण विद्रधि की अवस्था में विबन्ध हानिकारक होता है उसे दूर करने के लिये समय-समय पर स्वल्प विरेचन लेना चाहिये और भोजन में बथुआ, पालक आदि का सेवन कराना चाहिये। गुरु, विष्टम्भी, अभिष्यन्दी, बासे अन्नपान आदि का सेवन नहीं करना चाहिये।

[६] वातज विकार—

वातदोष से स्वतन्त्र रूप में उत्पन्न होने वाले विकार नानात्मज वात व्याधि के अन्तर्गत आते हैं आयुर्वेदिक शास्त्र में इनकी संख्या अपरिसंख्य मानी गयी है लेकिन चिकित्सा सौकर्य की दृष्टि से इनकी संख्या ८० मानी गयी है। इन सब वात विकारों में वात के स्वाभाविक स्वरूप कुछ प्रमुख लक्षण रूक्षता, शीतलता, लघुता, विशदता, गति और अस्थिरता आदि मिलते हैं यह लक्षण न्यून या अधिक सम्पूर्ण सर्वांग अथवा एकांग में उपस्थित हों तो वातिक विकार का निर्णय करना चाहिये। वातनाशक अनेक प्रयोग विशेषांक में यथा स्थान दिये गये हैं। यहां हम अपने अनुभव के तीन प्रयोग पाठकों के हितार्थ प्रस्तुत कर रहे हैं।

(१) वातारि वटी—शुद्ध गूगल १५० ग्राम लेकर खरल में डालकर कूटें जब मोम जैसा हो जाय तब उसमें शुद्ध आंवलासार गन्धक ३० ग्राम मिलाकर खरल करें जब दोनों एकजीव हो जाय तब उसमें हरीतकी चूर्ण ३० ग्राम मिलाकर खरल करें उसके पश्चात् ३० ग्राम बहेड़े का चूर्ण और ३० ग्राम आंवले का चूर्ण मिलाकर खरल करें। त्रिफला के चूर्ण के ठीक तरह मिल जाने पर उसमें रेंडी का तेल ५० ग्राम मिलाकर खरल करें घोटते-घोटते जब श्वेत रङ्ग का हो जाय तब समझना चाहिये कि औषधि तैयार हो गयी। इसकी ४-६ रत्ती तक की गोली बनाकर रखलें। २-२ गोली प्रातः-सायं रास्नादि क्वाथ से सेवन करानी चाहिये। सभी वातरोगों में बहुत लाभकर योग है।

(२) वातनाशक तेल—अण्डी के पत्तों का स्वरस, आक के पत्तों का स्वरस, धतूरे के पत्तों का स्वरस, तिल का तेल १-१ किलो, लहसुन ४० ग्राम, संखिया सफेद १५ ग्राम, बच्छनाग १५ ग्राम। पहले लहसुन को पीसकर तेल में मिला दें और सब अर्कों और तेल को मिलाकर पाक करें जब तेल मात्र शेष रह जाय तब उतारकर छानलें और शीशी में भरकर रखलें। वातरोगों के लिये यह बहुत उपयोगी तेल है। हम अपने धर्मार्थ चिकित्सालय में इसको बनाकर रोगियों को देते हैं।

(३) वातारि मलहम—अजवायन, कायफल ५०-५० ग्राम, मोम, सोंठ, नीलगिरी का तैल १०-१० ग्राम, तिल का तैल २०० ग्राम।

विधि—कायफल, अजवायन, सोंठ को कपड़छन करके रख लें, फिर तैल को मन्द अग्नि पर पकावें, जब तैल गरम हो जाय तब उक्त तीनों चीजों के चूर्ण को सावधानी से तैल में थोड़ा-थोड़ा करके डालें अन्यथा उफन जावेगा। इसका धुंआ भी नाक में नहीं जाना चाहिये। जब सभी औषधि पड़ जाय तो तैल को नीचे उतार कर छान लें और फिर इस थोड़े गरम तैल में मोम और नीलगिरी का तैल डालकर चलाते रहें। इस प्रकार मलहम बन जावेगी। शरीर के किसी भी भाग में वायु का दर्द हो, इस मलहम की मालिश और सिकाई से शीघ्र लाभ होता है।

पथ्यापथ्य—शुद्ध वात रोगों में मधुर, अम्ल, लवण रस वाले पदार्थ, घृत, तैल, मांस के व्यन्जन, मछली लाभकारी हैं। हलुवा, सेवे, उड़द से बनी मिठाइयां, सुस्वादु पेय, देशी घी से बनी कचौरियां आदि पथ्य

हैं। लहसुन, प्याज आदि का सेवन लाभकर है। आवृत वात में आवरण को दूर करने के लिए दोषानुसार पथ्य दें। मटर, सवां, कोदों आदि रूक्ष पदार्थ वात रोगों में हानिकारक है।

[१०] श्वास रोग—

वर्तमान में श्वास रोग बहुत विस्तार प्राप्त कर चुका है। अन्य रोगों की तरह इस रोग की वृद्धि भी अति बृहद् रूप में हुई है। यही कारण है कि आजकल श्वास के रोगी अत्यधिक पाये जाते हैं। प्राणवायु का अधिक मात्रा में ऊर्ध्वगामी होना, जिसमें वक्षस्थल धूकनी के समान गति करता है, श्वास कहलाता है। इसे व्यवहार में दम फूलना या दमा भी कहते हैं। शारीरिक क्रिया की दृष्टि से आधुनिक वाङ्मय में श्वास शब्द का अर्थ श्वासकृच्छ्रता की एक अवस्था है। यह लक्षण अनेक व्याधियों में मिलता है। श्वास रोग की चिकित्सा में हमारे अनुभव इस प्रकार हैं—

श्वास रोग की चिकित्सा २ भागों में बांटी जाती है—(१) आवेग काल, (२) आवेगान्तर काल। आवेगकाल की अवस्था में सद्यः लाभप्रद कुछ प्रयोग पाठकों के लाभार्थ यहां दे रहे हैं—

(१) पंच लवण, समुद्रफेन, टंकण भस्म, वराटिका भस्म, शुक्ति भस्म सभी १०-१० ग्राम लेकर आक के दूध में खरल करें। लुगदी बनाकर आकपत्र में लपेट सम्पुट देकर फूंक दें। स्वांगशीतल होने पर इसमें ३ रत्ती शुद्ध संखिया मिश्रित कर लें तथा १-१ रत्ती की मात्रा में आवेगकाल में प्रति २-२ घण्टे पर शहद से ३ बार दें। ऊपर से १० मि० लि० कनकासव तथा १० मि० लि० अर्जुनारिष्ट मिलाकर दें। इससे श्वास का दौरा कम पड़ जावेगा तथा कफ शीघ्र बाहर निकलकर रोगी को शान्ति मिलेगी।

(२) वह सभी औषधियां जो आवेगकाल में लाभ पहुँचाती हैं, आवेगान्तर काल में भी लाभ पहुँचाती हैं, किन्तु कुछ विशिष्ट क्रम के अनुसार रोग को समूल नष्ट करने के लिए लम्बे समय तक चिकित्सा करनी पड़ती है।

(३) श्वास रोग में स्थायी लाभ के लिए एक प्रयोग यहां दे रहे हैं—फिटकरी सफेद ८०० ग्राम, नीला-थोथा ८०० ग्राम, संखिया सफेद ५० ग्राम, हरताल वर्की ५० ग्राम। सबको बारीक कूट आकाश-पाताल यन्त्र से अर्क निकालकर शीशी में भर लें। अब इस अर्क में से ५० ग्राम लेकर किसी उत्तम बोतल में भर दें और उसी बोतल में देशी मधु ५० ग्राम डाल खूब हिला लें। यही श्वासनाशक अव्यर्थ प्रयोग है। ३ ग्राम से १० ग्राम तक इसकी मात्रा है। किन्तु रोगी को प्रथम दिन ३ ग्राम की मात्रा में दें, फिर क्रमशः बढ़ाते हुए १० ग्राम तक इसकी मात्रा कर दें। इसके सेवन के प्रारम्भ में १५ दिन तक रोगी को घृत बहुत थोड़ा दें और १५ दिन बाद रोगी को घृत खूब खिलावें। पित्त प्रकृति के रोगी को औषधि यदि गरमी करे, तब गावजवां का अर्क और घृत का सेवन करावें। यह औषधि अधिक से अधिक १ मास तक दी जा सकती है। श्वास रोग में स्थायी लाभ हेतु यह प्रयोग हमने कई रोगियों पर सफल पाया है।

पथ्यापथ्य—स्नेहन, स्वेदन, वमन, विरेचन, धूम्रपान, शाठी चावल, भोजन के पूर्व शयन, मुनक्का, अंगूर, आंवला, गेहूँ, जौ, लहसुन आदि श्वास रोग में पथ्य हैं। गुरुपाकी, रूक्ष जैसे दधि, रात्रि जागरण, अधिक परिश्रम, अधिक भोजन, अध्यशन, विषमासन, चिन्ता, शोक, क्रोध आदि श्वास रोग में हानिकारक हैं।

[११] शिरःशूल—

वर्तमान के समय में जो सर्वसाधारण व्याधि व्याप्त है, वह शिरःशूल या शिर दर्द है। चिकित्सकों के पास नित्य प्रतिदिन इस रोग को लेकर आने वाले रोगियों की संख्या सर्वाधिक होती है। कभी सामान्य तथा कभी भयंकर शिर दर्द से पीड़ित रोगी देखने को मिलते हैं। शिरःशूल कोई स्वतन्त्र रोग नहीं है, वरन् अनेक रोगों का परिणाम या लक्षण मात्र है। शिरदर्द, मस्तिष्क दौर्बल्य, अधिक मानसिक श्रम, उदर विकार, जीर्ण

प्रतिश्याय, उच्च रक्तदाब, आदि अवस्थाओं में विशेष देखने को मिलता है। शिरदर्द की अवस्था में हमारे अनुभव इस प्रकार है—

(१) शिर दर्द की चिकित्सा करने से पूर्व किस कारण से शिरदर्द है, इस कारण का पता लगाकर दूर करने की कोशिश करनी चाहिए। कभी-कभी चश्मे का नम्बर ठीक न होने से दृष्टिदोष के कारण शिरदर्द हो जाता है। कभी शिर पर अधिक बालों के होने तथा उनमें तैल न डालने से शिरदर्द हो सकता है। अतः शिरदर्द का क्या कारण है, उसका पता लगाना अत्यन्त आवश्यक है।

(२) शिरदर्द की चिकित्सा में पथ्य और अपथ्य की ओर ध्यान देना परम आवश्यक है। पौष्टिक और हलका भोजन शिरदर्द के रोगी को देना चाहिए। शिरदर्द के रोगी को मलावरोध न रहे, यह विशेष ध्यान देने योग्य है। शिरःशूल के लिए ४ योग पाठकों के लाभार्थ यहां दिये जा रहे हैं—

[अ] शिरःशूलहर लेप—आमला, सिंघाड़ा, हाऊबेर, कमलपत्र या कमलगट्टा की मींग, पद्माक, दूब घास, खस, वालछड़, नीम के पत्र; इन सबको बारीक करके गुलाब जल और यदि न मिले तो शीतल जल में घोलकर सिर पर लेप कर दें। पित्तज तथा जीर्ण शिरःशूल में इस लेप को १ सप्ताह तक करने से उत्तम लाभ होता है।

[आ] शिरःशूल शामक हिम—उस्तखद्दूस १ ग्राम, धनियां ४॥ ग्राम, कालीमरिच ७ नग, सबको यवकुट करके आधा किलो जल में शाम को मिट्टी के पात्र में भिगो दें और ढंक दें। प्रातःकाल मथकर नितार लें और सूर्य निकलने से पूर्व इसे पी लें। यह प्रयोग किसी प्राचीन पुस्तक में हमने पढ़ा था। उस समय से हम इसका बराबर प्रयोग कर रहे हैं। पुराने शिरदर्द में बहुत लाभदायक योग है।

[इ] शिरःशूलहर वटी—शुद्ध कनक बीज ६० ग्राम, सोंठ ३० ग्राम, रेवन्दचीनी २० ग्राम। तीनों वस्तुओं को कूट कपड़छन कर लें और बबूल के गोंद के लुआब से १-१ रत्ती की गोलियां बना लें। हमारा अनुभव है कि पुराने से पुराने शिरदर्द में इसके प्रयोग से लाभ होता है। शाम को भोजन के बाद थोड़ी-सी मलाई में लपेट कर १ गोली निगल लें और ऊपर से गाय का गरम किया हुआ दूध२५० ग्राम गाय का थोड़ा घृत मिलाकर पी लेवें।

(ई) शिरःशूलहर पुल्टिस—बादाम, पोस्त का दाना, चिरोंजी, तिल, राई, पिस्ता सभी १०-१० ग्राम, लोहबान ६ ग्राम, शु० कुचला चूर्ण ६ ग्राम।

विधि—सब वस्तुओं को किंचित् पानी का छींटा मारकर खूब पीस लें और शुद्ध घी के साथ पुल्टिस बना लें। इस पुल्टिस से मस्तिष्क की सिकाई करने से कफज शिरःशूल और अनन्त वात मे बहुत लाभ होता है। यह प्रयोग बहुत समय से हमने व्यवहार किया है और उपयोगी पाया है।

पथ्यापथ्य—पुराने हल्के अन्न, गाय या बकरी का दूध, घी, मिश्री, नीबू, मट्ठा, परवल, बथुआ, टमाटर आदि सब्जियां, आम, अंगूर, सेब, आंवला आदि पथ्य हैं। वेगावरोध, विरुद्ध भोजन, दिवा शयन, दही आदि अभिष्यन्दी पदार्थ, आनूप मांस व कन्द की सब्जियां अपथ्य हैं।

[१२] स्त्री विकार—

विशेषांक के पृष्ठ ३५२ से ४०२ तक विभिन्न स्त्री रोगों पर अनेक एकौषधि तथा परीक्षित प्रयोग दिये गये हैं। कुछ प्रमुख स्त्री रोगों पर हमने अपने अनुभव पाठकों के समक्ष प्रस्तुत कर रहे हैं—

[१] आर्तव सम्बन्धी विकार—नियमित रजोदर्शन नारी के सुन्दर स्वास्थ्य और सौन्दर्य का नियामक तथा सहायक हैं। ठीक समय पर रजोदर्शन न होना, अल्प होना, कष्ट के साथ होना, अधिक होना या

असमय में सर्वथा बन्द हो जाना किसी रोग का परिचायक है। आर्तव की अधिकता, असृग्दर रोग के अन्दर आती है, जिसका उल्लेख विशेषांक के प्रथम भाग में हो चुका है। मासिकस्राव की अनियमितता काट तथा पीड़ा सम्बन्धी विकारों पर हमारा अनुभव इस प्रकार है—

(१) जिन कारणों से रजोऽवरोध हुआ हो, पहले उन कारणों की खोज करके उन्हें दूर करना चाहिये। अनन्तर औषधोपचार प्रारम्भ करना चाहिये। जब तक मूल कारण दूर नहीं होते, तब तक उपचार से कोई लाभ नहीं होता।

(२) रजःप्रवर्तिनी वटी [भै० र०], नष्टपुष्पान्तक रस [भै० र०] तथा बोलादि वटी [सि० यो० सं०] तीनों को ½-½ ग्राम मिश्रित कर काला तिल, लिसौड़े की पत्ती, कलौंजी के गुड़ मिले क्वाथ से २-३ विभाजित मात्राओं में कुछ दिनों तक रोगिणी को पिलाने से नष्टार्तव, कष्टार्तव में निश्चित रूप से देखने को मिलता है। साथ में भोजनोपरान्त कुमारी आसव २० मि० लि० में २४० मि० ग्रा० टंकण भस्म मिलाकर भी देनी चाहिए। अनेक रोगिणियों पर इसका प्रयोग कराया जा चुका है।

[२] गर्भाशय सम्बन्धी विकार—गर्भाशय शोथ का महिला जगत में बाहुल्य दृष्टिगोचर हो रहा है। गर्भाशय शोथ का प्रभाव नारी शरीर के साथ-साथ प्रजनन शक्ति पर भी विशेष रूप से पड़ता है। गर्भाशय शोथ की आन्तरिक एवं बाह्य चिकित्सा दो प्रकार की होती है। बाह्य चिकित्सा में लेप, सेंक, स्वेद आदि उपक्रम किये जाते हैं तथा आभ्यन्तर चिकित्सा में नानाविधि औषधि अनुपानों का सेवन, वस्तिक्रिया आदि का विधान किया जाता है। पाठकों के लाभार्थ यहां कुछ प्रयोग दिये जाते हैं—

गर्भाशय शोथहर लेप—बहेड़े का छिलका, सहिंजने की छाल, पुनर्नवा की जड़, आमा हल्दी, खाने की हल्दी समभाग और समान अण्डी की मिंगी मिलाकर लेप बनावें। इसका गर्भाशय पर लेप करने से शीघ्र ही गर्भाशय शोथ दूर हो जाता है।

गर्भाशय शोथहर वर्ति—तबाखीर, छोटी इलायची, सोंचलनमक, सोंफ, यवक्षार, सोरा कलमी, इन्द्रजौ, मुनक्का प्रत्येक ६-६ ग्राम, वायविडङ्ग ५० ग्राम, मिश्री कूंजा १०० ग्राम। सबको बारीक पीसकर शहद और स्वच्छ डाक्टरी रुई इतनी मिलावें कि बत्ती बनाने योग्य हो जाय; तब अंगूठे के बराबर मोटी बत्ती बना लें। इस वर्ति को मासिकधर्म होने के ७ दिन बाद योनि में ग्लिसरीन में डुबोकर रख दें। इस बत्ती को लगाकर २ घण्टे तक स्त्री लेटे रहे, इसके पश्चात् बत्ती को निकालकर फेंक दें। इस वर्ति के कुछ दिनों के प्रयोग से गर्भाशय शोथ बहुत शीघ्र ठीक हो जाता है और जिन स्त्रियों के गर्भाशय शोथ के कारण गर्भस्थिति नहीं होती उन्हें हो जाती है।

[३] योनिगत रोग—योनिगत रोगों में प्रदर, सोमरोग, योनिकण्डू आदि रोग बहुतायत में देखने को मिलते हैं। प्रदर पर पृथक् से प्रकरण विशेषांक के द्वितीय भाग में दिया गया है। सोमरोग तथा योनिकण्डू पर अपने अनुभव लिख रहे हैं—

सोमरोग—शोक, श्रम, अतिमैथुन, अतिसारक प्रयोगों की अधिकता, शरीरस्थ जलीय धातु का क्षोभ होकर स्त्री की योनि से जो पानी जैसा स्राव होने लगता है वह सोमरोग कहलाता है। सोमरोग में चन्द्रप्रभा वटी, सुपारीपाग, पुष्यानुग चूर्ण बहुत अच्छा लाभ करते हैं। इसके अतिरिक्त सिरीष मज्जा चूर्ण १० ग्राम, चोबचीनी चूर्ण १० ग्राम, घृतभ्रष्ट विजया चूर्ण ६ ग्राम, भुने तिल ६० ग्राम, मिश्री ४० ग्राम लेकर चूर्ण बनालें। पके केले के रस के साथ ६ ग्राम की मात्रा में कुछ दिनों तक प्रयोग कराने से सोमरोग में लाभ हो जाता है।

योनिकण्डू—योनि से दूषित स्राव, योनि की अस्वच्छता आदि कारणों से योनिकण्डू रोग हो जाता है। योनिकण्डू के लिये कर्पूरादि मलहम बहुत लाभकर योग है। प्रयोग इस प्रकार है—

कर्पूर ६ ग्राम, मुर्दासन २० ग्राम, कबीला १० ग्राम, गन्धक आंवलासार १० ग्राम, सुहागे का फूला १० ग्राम, गोदुग्ध ५० ग्राम मोम में मिलाकर मलहम बनालें। योनि क्षेत्र को नीम के पत्तों के क्वाथ से स्वच्छ करके यह मलहम लगाने से योनिकण्डू निश्चित ठीक हो जाती है।

गर्भ सम्बन्धी रोग—गर्भावस्था में अनेक उपद्रव तथा रोग रहने का भय रहता है। गर्भपात एवं गर्भस्राव इनमें मुख्य उपद्रव हैं जिसका उल्लेख विशेषांक में पृथक् से दिया जा चुका है। गर्भावस्था सम्बन्धी कुछ अन्य रोगों पर अपने अनुभव लिख रहे हैं—

गर्भावस्था में वमन—गर्भ स्थिति के दूसरे माह से चौथे माह तक यह उपद्रव हुआ करता है। वमन प्रातःकाल विशेष रूप से होती है और वमन में केवल झाग और आमाशयिक श्लेष्मा निकलता है। इसके लिए नैपाली धनिये का चूर्ण ४ ग्राम में बराबर मिश्री मिलाकर प्रातः-सायं तण्डुलोदक के साथ देने से गर्भावस्था जन्य वमन कम हो जाती है। एलादि चूर्ण थोड़ा-थोड़ा चाटने से तथा सौंफ का अर्क २-२ चम्मच कई बार देने से भी गर्भावस्था जन्य वमन में लाभ होता है। कर्पूरासव की ४ बूंद प्रातः बताशे में रखकर देने से भी लाभ होता है।

गर्भावस्था में मलावरोध—गर्भावस्था में मलावरोध प्रायः मिलता है उस अवस्था में तीव्र रेचक औषधि का प्रयोग न कराकर गुलकन्द ६० ग्राम, मुनक्का बीज रहित १० ग्राम दूध में औटाकर नित्य रात्रि को देने से मलावरोध दूर हो जाता है।

गर्भावस्था में ज्वर—गर्भावस्था में अति तीव्र ज्वर होने से गर्भपात की आशंका रहती है। वातज व कफज ज्वर में कृष्णचतुर्मुख, पित्तज ज्वर में कामदुधा या मुक्तापंचामृत जीर्ण ज्वर में मुक्तापिष्टी मिलाकर बसन्तमालती देने से लाभ होता है। विषम ज्वर में गोदन्ती हरताल भस्म तथा विषमज्वरान्तक लौह मिलाकर देने से लाभ होता है।

(४) सूतिका रोग—विभिन्न सूतिका रोगों को मोटे तौर से निम्न वर्गों में बांट सकते हैं (क) ज्वर या ज्वरयुक्त रोग (ख) ज्वर रहित अन्य रोग (ग) स्तन रोग (घ) स्तन्यदुष्टि (ङ) स्तन्यनाश इन रोगों पर हमारे अनुभव इस प्रकार हैं—

प्रसूति ज्वर—प्रसूति ज्वर की अवस्था में प्रतापलंकेश्वर रस आयुर्वेद की दिव्य औषधि है इसका प्रयोग अकेले या संजीवनी रस के साथ आर्द्रक स्वरस तथा मधु में मिलाकर देने से प्रसूति ज्वर में निश्चित लाभ होता है। जीर्ण सूतिका ज्वर में जयमंगल रस, पुटपक्वविषमज्वरान्तक लौह, स्वर्णवसन्त मालती आदि का प्रयोग कराना चाहिये। ज्वर की अवस्था में प्रलाप आदि लक्षण हों तो सूतिकाहर रस प्रयोग कराना चाहिये।

ज्वर रहित प्रसूति रोग—ज्वर रहित सूतिका रोगों में गर्भाशय, मक्कलशूल, योनिशूल, रक्तस्राव आदि रोग मिलते हैं। गर्भाशय भ्रंश की अवस्था में गर्भाशय पुष्टिकारक पोटली का प्रयोग विशेष लाभदायक है।

गर्भाशय पुष्टिकारक पोटली—माजूफल, तज, फूल सुपारी, सुपारी मुलायम, कड़ी सुपारी; छोटी इलायची, बड़ी इलायची, कमरकस, हरड़ छोटी, कचूर, बड़ी हरड़ का वक्कल, फिटकरी, धाय के फूल, गुलनार, नसपाल, फूल गुलाब, माई सब बराबर-बराबर लेकर बारीक पीसकर कपड़े में छानकर ६ ग्राम लेकर मलमल के बारीक कपड़े की पोटली बना लें पोटली के किनारे पर एक डोरा बांध दें। इस पोटली को योनि में धारण करावें। इसके कुछ दिनों के प्रयोग से गर्भाशय पुष्ट हो जाता है और उसमें दृढ़ता आकर बाहर निकलना बन्द हो जाता है।

मक्कलशूल की अवस्था में ३ ग्राम यवक्षार में शुद्ध हींग ½ ग्राम मिलाकर घी से अथवा गरम जल के साथ देने से लाभ होता है। योनिशूल की अवस्था में कालाजीरा, पिप्पली व कालेनमक के चूर्ण को १-१ ग्राम मिलाकर मधु के साथ कई बार लेने से योनिशूल नष्ट हो जाता है। प्रसवोत्तर रक्तस्राव में कबूतर की बीट ½ ग्राम दिन में कई बार तण्डुलोदक के साथ देने से लाभ होता है।

(५) स्तन रोग—स्तन रोगों में शोथ, स्तन विद्रधि, चूचुक विकार आदि विशेष रूप से देखने को मिलते है। स्तनशोथ तथा स्तन विद्रधि में आमावस्था, पच्यमानावस्था तथा पक्वावस्था का विचार करते हुये विद्रधि के समान चिकित्सा करें। चूचुक विदार पर भी व्रण चिकित्सा करें। स्तन से दूध पिलाने से पूर्व चूचुक को मक्खन आदि से स्निग्ध करादें।

स्तन्य दुष्टि—प्राकृत शुद्ध दूध स्वच्छ, सफेद मधुर आदि गुणों से युक्त होता है किन्तु माता के गुरु पदार्थों के अत्यधिक सेवन से स्तन्य दूषित हो जाता है। स्तन शुद्धि के लिये हमारे निम्न अनुभूत प्रयोग से पाठक लाभ उठावें—

दुग्ध शुद्ध कर क्वाथ—पाठा, सोंठ, देवदारु, नागरमोंथा, मूर्वा, गिलोय, इन्द्रजौ, चिरायता, कुटकी सारिवा इन सब वस्तुओं को समान मात्रा में लेकर यवकुट करलें। २०-२० ग्राम की पुड़िया बनालें और १-१ पुड़िया प्रातः-सायं २५० ग्राम पानी में औटावें चतुर्थांश रहने पर छानकर पिलादें। इसके सेवन से दुग्ध के विकार दूर हो जाते हैं।

स्तन्य नाश—रूक्ष अन्नपान, लंघन, क्रोध, शोक आदि कारणों से स्तन्य का नाश या कमी आ जाती है ऐसी अवस्था में शतावर का क्षीरपाक अथवा उसके चूर्ण को मिश्री मिश्रित दुग्ध के साथ देने से लाभ होता है निम्न प्रयोग भी इसके लिये बहुत लाभदायक है।

दुग्धवर्धक मोदक—जीरा सफेद (बिना भुना), बबूल का गोंद २०-२० ग्राम, शाठी चावल १०० ग्राम, गाय का दूध २ किलो, ईख का रस १ किलो, गाय का घी २०० ग्राम, मिश्री १ किलो।

विधि—दूध का खोवा बनाकर घी मे भूनलें बाद मे सभी चीजें डालकर ४०-४० ग्राम के मोदक बनालें। इसमें से १-१ लड्डू प्रातः-सायं दुग्ध के साथ सेवन कराने से दुग्ध की वृद्धि हो जाती है।

स्त्रीरोगों में पथ्यापथ्य—आर्तव विकारों में बकरी या गाय का दूध, पुराने लघु अन्न, हरे शाक व फल देने चाहिये, सरसों का तेल, गरम मसाला, अचार, अभिष्यन्दी एवं उष्ण तीक्ष्ण पदार्थ सेवन नहीं करने चाहिये। सोमरोग में, मक्खन निकाला गोदुग्ध, पका केला आदि अधिक लाभकारी है। मिष्ठान्न, कच्चे फल तथा शीतल पदार्थ सोमरोग में हानिकारक हैं। गर्भिणी को हलके सुपाच्य, स्वादिष्ट, अन्नपान, मक्खन, घी, दूध, परवल, टमाटर, अनार, मौसम्बी आदि का प्रयोग कराना चाहिये। गर्भिणी को गरम तेज मसाले, गुरु विष्टम्भी अन्नपान निषेध हैं। परिश्रम, मैथुन, क्रोध, शोक, ऊंची-नीची जगह पर चलना आदि से बचाना चाहिये। प्रसूता को चार माह या कम से कम डेढ़ माह तक परहेज करना चाहिये। उसे वात कफनाशक अन्नपान, बृंहण, सुपाच्य, स्निग्ध पदार्थों का सेवन कराना चाहिये। परिश्रम, क्रोध, शोक, मैथुन तथा शीत रूक्ष पदार्थों का परहेज करना चाहिये।

शास्त्रीय प्रयोग संग्रह में आये सन्दर्भ ग्रन्थों के पूर्ण नाम

शास्त्रीय प्रयोग संग्रह में सन्दर्भ ग्रन्थों के संकेत मात्र दिये गये हैं। उनके पूर्ण नाम यहां दे रहे हैं—

ग्रन्थ नाम	संकेत	ग्रन्थ नाम	संकेत	ग्रन्थनाम	संकेत
१. चरक संहिता	चरक०	१३. रसराज सुन्दर	र० रा० सु०	२३. रसचण्डांशु	र० च०
२. सुश्रुत संहिता	सुश्रुत०	१४. रसेन्द्रसार संग्रह	र० सा० सं०	२४. भेलसंहिता	भे० सं०
३. अष्टांगहृदय	अ० हृ०	१५. वैद्य जीवन	वै० जी०	२५. त्रिशती	त्रि०
४. शार्ङ्गधर संहिता	शा० सं०	१६. सिद्धभेषज्य मणिमाला		२६. निघण्टु रत्नाकर	नि० र०
५. योगरत्नाकर	यो० र०		सि० भे० मणि०	२७. रसराज महोदधि	र० रा० म०
६. भैषज्य रत्नावली	भै० र०	१७. सिद्धभेषज्य मञ्जूषा		२८ वृन्दमाधव	वृ० मा०
७. रसरत्न समुच्चय	र० र० स०		सि० भे० मञ्जू०	२९. रसरत्नाकर	र० र०
८. वसवराजीयम्	व० रा०	१८. गदनिग्रह	ग० नि०	३०. वनौषधि निर्दशिका	व० नि०
९. रसेन्द्र चिन्तामणि	र० चि०	१९. वंगसेनसंहिता	वं० सं०	३१. कल्याणकारक	क० का०
१०. रसतरङ्गिणी	र० त०	२०. रसयोग सागर	र० यो० सा०	३२. सिद्धयोग संग्रह	सि० यो० सं०
११. चक्रदत्त	च० द०	२१. राजमार्तण्ड	रा० मा०	३३. बृहत् पाक संग्रह	
१२. रसतन्त्रसार	र० त० सा०	२२. भावप्रकाश	भा० प्र०		बृ० पा० सं०

पेटेण्ट आयुर्वेदीय योगों में दिये गये—

पेटेण्ट आयुर्वेदिक औषधि-निर्माताओं के पते

१—वैद्यनाथ आयुर्वेदिक भवन झांसी एवं वैद्यनाथ भवन रोड, पटना। २—गर्ग वनौषधि भण्डार, विजयगढ़ (अलीगढ़)। ३—पंकज फार्मा, डी ७९ इण्डस्ट्रियल स्टेट, अलीगढ़। ४—ज्वाला आयुर्वेद भवन, मामूभान्जा रोड, अलीगढ़। ५—सिद्धि फार्मेसी प्रा० लि०, ८ सिविल लाइन्स, ललितपुर (उ० प्र०)। ६—जी० ए० मिश्रा आयुर्वेदिक फार्मेसी, झांसी (उ० प्र०)। ७—बुन्देलखण्ड आयुर्वेद फार्मेसी, झांसी (उ० प्र०)। ८—चरक फार्मेस्युटिकल्स, बम्बई—४०००११। ९—डाबर (डा० एस० के० बर्मन), २०/५ मथुरा रोड, फरीदाबाद (उ० प्र०)। १०—मोहता रसायनशाला, इण्डस्ट्रियल एरिया, हाथरस। ११—झलारसिन, १२ के सुभाष मार्ग, आरिकॉन हाउस, फोर्ट बम्बई। १२—मार्तण्ड फार्मेस्युटिकल्स, बड़ौत (मेरठ)। १३—त्रिमूर्ति फार्मेसी, बीकानेर (राजस्थान)। १४—कोपरेटिव ड्रग फैक्टरी, रानीखेत (उ० प्र०)। १५—हिमालय ड्रग कम्पनी, शिवसागर ई, डा० बी० रोड, बम्बई—४०००१८। १६—गैम्बर्स लेबो० वेल बिल्डिंग, १९ पी० एम० रोड, बम्बई—१। १५—धूतपापेश्वर आयु० फार्मेसी, पनवेल (महाराष्ट्र)। १८—प्रताप आयु० फार्मेसी, राजपुरा रोड, देहरादून (उ० प्र०)। १९—झन्डू फार्मेस्युटिकल्स, गोखले रोड (दक्षिण) दादर—बम्बई। २० ए० बी० एम० रिसर्च फार्मेसी, हापुड़ (उ० प्र०)। २१—ऊंझा फार्मेसी, ऊंझा (उत्तर गुजरात)। २२—भजनाश्रम आयुर्वेद रसायनशाला, वृन्दावन (उ० प्र०)। २३—गुरुकुल कांगड़ी आयु० फार्मेसी, हरिद्वार। २४—देशरक्षक आयु० फार्मेसी, कनखल (सहारनपुर)। २५—राजवैद्य शीतलप्रसाद एण्ड सन्स, १३२१ चांदनी चौक, दिल्ली। २६—धन्वन्तरि कार्यालय, विजयगढ़ (अलीगढ़)।

बालरोग सामान्य [CHILDREN DISEASES]

[अ] एकौषधि एवं साधारण प्रयोग

(१) अकरकरा २ भाग, इन्द्रयव (मीठा), सोंठ, जीरा तथा पीली कौड़ी की भस्म १-१ भाग, लेकर सबका महीन चूर्ण एकत्र कर शीशी में भरकर रखलें। बच्चों को ४ रत्ती से १ ग्राम तक उष्णोदक या अन्य योग्य अनुपान के साथ सेवन कराने से उनके उदर विकार, अनीसार, यकृत् विकार आदि में लाभ होता है।

(२) पुटपाक विधि से निकाला हुआ वासा स्वरस २० बूंद तथा सुहागे का फूला २ रत्ती तथा शहद ४ ग्राम एकत्र मिलाकर बालक की शक्ति के अनुसार दिन में ४-५ वार चटाने से और इसके पत्तों को पीस गरम कर छाती पर लेप करने से बच्चों के डब्बा तथा कफ विकारो मे लाभ होता है।

(३) बच्चों की पुरानी खांसी पर जिसमें बालक खांसते-खांसते परेशान हो जाता है उसको अतीस तथा मुलहठी का वारीक चूर्ण सममाग और इनसे अर्धभाग मिश्री का चूर्ण मिलाकर १ रत्ती से १ ग्राम तक की मात्रा में शहद के साथ चटाने से विशेप लाभ होता है। इसी तरह अतीस चूर्ण के सममाग सुहागे की खील या अपामार्ग क्षार मिलाकर शहद या उष्ण जल के साथ सेवन कराने से बच्चों की कुकरकास में लाभ होता है।

(४) अतीस २० ग्राम तथा वायविडङ्ग १५ ग्राम दोनों को कुचलकर आधा किलो जल में पकावें। चतुर्थांश शेष रहने पर उतार लें, ठंडा कर छान लें और मिश्री १५० ग्राम मिलाकर शरवत की चाशनी तैयार करें। पश्चात् उसमें चौकिया सुहागे की भस्म ५ ग्राम पीस-कर मिला देवें। १ वर्ष के बच्चे को ५ बूंद माता के दुग्ध के साथ दिन में ३ बार देवें, और शरीर पर लाक्षादि तैल की मालिश करावें। तो बालक के शरीर की पुष्टि, वृद्धि होती है तथा खांसी, श्वास तथा अपचे रोग नही सताते।

(५) वालक के उदर में कृमि होने के कारण यदि उससे ज्वर, पाण्डुता खांसी तथा वमन आदि विकार हों तो अतीस तथा वायविडङ्ग का समान भाग चूर्ण कर १-२ रत्ती की मात्रा में दूध के साथ दिन में ३ बार सेवन कराने मे लाभ होता है।

(६) बालकों के उदर विकारो मे केवल अतीस के चूर्ण को देने मात्र से विशेप लाभ होता है। बालक की अवस्थानुसार इसे १-४ रत्ती तक शहद या माता के दूध के साथ सेवन कराना चाहिये।

(७) अफसन्तीन की जड़ को ताजे गो दुग्ध के साथ पीसकर देने से वच्चों के अतीसार में विशेप लाभ होता है। इसकी जड़ को शहद में घिसकर पिलाने से अथवा इसके पत्तों का रस शहद में मिलाकर बच्चों को चटाने से कास, प्रतिश्याय तथा कृमि रोग में लाभ होता है।

(८) आक के पत्तों का रस १० बूंद तक उसमें चौथाई रत्ती सेन्धवलवण मिलाकर पिला देने से बालकों को वमन तथा अतीसार होकर डब्बारोग में लाभ हो जाता है। यदि पेट में अफरा हो तो थोड़ा गर्म-गर्म तैल लगाकर ५-१० मिनट तक आक के पत्तों से सेक करने से लाभ होता है तथा छाती पर निवाये सरसों के तैल को मलकर गर्म कपडे की पट्टी बांध देने से अन्दर के कफ का जमाव दूर हो जाता है।

(९) अच्छे मोटे आलू चुनकर साफ करलें, फिर उन्हें छिलके सहित महीन कतर कर या कद्दूकस में कसकर उन्हें मन्द अग्नि पर भूनकर चूर्ण बनाकर शीशी में भर कर रखलें, इस चूर्ण को दूध की मलाई के साथ १-४ रत्ती तक सेवन कराने से बालक शीघ्र ही पुष्ट हो जाते हैं। इस चूर्ण को दूध के साथ भी चाय जैसी बनाकर पिला सकते है यह बालकों के लिये उत्तम खाद्य तथा पेय है।

(१०) बालकों के गुदकट्टक रोग जिसमें गुदा में खुजली युक्त लाल व्रण हो जाते हैं। उस अवस्था में विजयसार की छाल को पीसकर लेप करने से लाभ हो जाता है।

(११) बालकों की छाती में कफ भर जाने से कंठ में आवरण हो जाता है इसे गलोघ (Croup) कहते हैं। ऐसी अवस्था में ईसरमूल के पत्र रस को पिलाने से वमन होकर कंठ खुल जाता है और बालक सरलता पूर्वक दुग्ध पान करने लगता है कंठ में जो झिल्ली बढ़ जाती है वह भी टूट-टूटकर निकल जाती है।

(१२) बालकों के निमोनियां में छाती पर तथा उदर-शूल में उदर के ऊपर ईसरमूल को अगर के साथ पीसकर प्रलेप करने से लाभ होता है।

—वनौषधि विशेषांक प्रथम भाग से।

(१३) शिशुओं के वमन रोग में जब दूध पीते ही जोर से वमन होती हो और वमन के बाद बच्चा निस्तेज हो जाता हो या कभी दूध पीने के बाद दही जैसे पदार्थ की वमन होती हो तथा उसके साथ हरा लसलसा मल निकलता हो और आक्षेप भी होते हों उस अवस्था में ककोड़ा बाझ (मोमोर्डिका कोचिन चिनेसिस) की १ रत्ती मात्रा पानी या दूध में मिलाकर देने से लाभ होता है।

(१४) बालकों के कफोल्वण ज्वर तथा अतीसार में कटमरिया के पत्र स्वरस में थोड़ा शहद मिलाकर दिन में ३-४ बार चटाने से लाभ होता है। यदि अतीसार हो तो पत्र के क्वाथ में थोड़ी सोंठ मिलाकर सेवन कराने से लाभ होता है।

(१५) छोटी तथा बड़ी कटेरी के पत्र समभाग कूट-कर निचोड़कर स्वरस निकाल लें, ३ ग्राम स्वरस में पापड़क्षार आधी रत्ती तथा थोड़ा शहद मिलाकर देने से वमन तथा सौम्य रेचन होकर कफ निकल जाता है एवं रोग निवृत्त हो जाता है।

(१६) सफेद फूल वाली कन्नेर के फूलों को एकत्र कर छाया में शुष्क कर महीन चूर्ण करलें, यह छोटे बच्चों के लिये नसवार है। जब नन्हे बच्चे को जुकाम हो, नाक बन्द हो तो इसमें से १ चावल भर नसवार उसके नाक में रखकर फूंकदें, उसका मुख थोड़ा ऊपर करदें, छींक आवेगी, नाक खुल जावेगी जुकाम ठीक हो जायगा।

(१७) उत्तम बिनौले को आधा किलो मात्रा में लेकर पानी में उबालकर रखलें, फिर समभाग रेंडी बीजों को आग पर थोड़ा सेक कर छिलके अलग कर उक्त उबले हुये बिनौले के साथ कूटकर लुगदी बनालें। एक मटकी में २॥ किलो जल डालकर उबालें और उसमें उपरोक्त लुगदी डालदें थोड़ी देर बाद नीचे उतारकर ऊपर तैरते हुये तैल को फाये से निकालकर एक बर्तन में रखकर धूप में रखदें बाद में जलीयांश सूख जाने पर शीशी में भरकर रखें। ३ ग्राम से १० ग्राम तक शक्कर के साथ यह तैल सेवन कराने से बालक की उदर शुद्धि होती है, तथा उत्तम स्वास्थ्य लाभ होता है।

(१८) अतिबला का सूखा रोग पर प्रयोग—अतिबला (कंघी) की ताजी पत्तियों को पीसकर छोटी सी एक गोल टिकिया बालक के सिर पर तालु स्थान या ब्रह्मरन्ध्र पर वहां के बाल निकलवाकर प्रथम गुड़ की छोटी टिकिया रखकर उस पर उक्त टिकिया को रखदें फिर उस पर शुद्ध रुई का फाया रखकर कपड़े की पट्टी बांध देते हैं। यह क्रिया प्रातः या रात्रि को बालक के सोते समय की जाती है। अतः पट्टी खोलकर देखने से मालूम होता है, यहां गुड़ बिलकुल नहीं है। जब तक गुड़ के गायब होने की क्रिया जारी रहे तब तक प्रतिदिन रात्रि में यह प्रयोग करना चाहिये। जब गुड़ उसमें दिखाई देने लगे तब भी इसका प्रयोग २-३ दिन तक करना चाहिये। बाद में बन्द कर देना चाहिये। इसके प्रयोग से बालक का सूखा रोग दूर होकर बालक हृष्ट पुष्ट हो जाता है। यदि इस प्रयोग के प्रारम्भ करने में गुड़ जैसे का तैसा निकले तो समझ लें यह सूखा रोग न होकर कोई अन्य रोग है। इस प्रयोग के समय बच्चे को धूप में लिटाकर "काड लिवर आइल" की मालिश भी करानी चाहिये।

—श्री गणेशदत्त शर्मा "इन्द्र"।

(१९) बच्चे के दांत निकलते समय यदि ज्वर, अतीसार, कास तथा पाचन सम्बन्धी सामान्य विकार हों तो काकड़ासिंगी के समानभाग अतीस, छोटी पीपर,

नागरमोथा का चूर्ण मिलाकर २-८ रत्ती तक की मात्रा में शहद के साथ चटाने से विशेष लाभ होता है।[1]

(२०) कालमेघ के पचाङ्ग का चूर्ण २-४ रत्ती या इसका फाण्ट १५-६० बूंद सेवन कराने से बच्चों की पाचन क्रिया में सुधार होकर शरीर पुष्ट हो जाता है। अथवा इसके पत्र रस में इलायची तथा लोंग का चूर्ण मिलाकर २-२ रत्ती की गोलियां बनाकर जल के साथ सेवन कराने से बच्चों की आन्त्र पीड़ा, अतीसार तथा क्षुधामांद्य में लाभ होता है।

(२१) कुकरौंदा तथा सहदेई का स्वरस समभाग लेकर खरल कर लें। जब गोली बनाने योग्य हो जाय, तब चने जैसी गोलियां बनाकर प्रातः-सायं १-१ गोली माता के दूध या जल के साथ घिसकर ७ दिन पिलावें तो बच्चों के सूखा रोग में लाभ हो जाता है।

(२२) कुटकी के छोटे-छोटे टुकड़े कर तवे पर मन्दाग्नि से भून लें। करछली से बराबर चलाते रहें, अच्छी तरह लाल हो जाने पर नीचे उतार कर शीतल हो जाने पर चूर्ण कर लें। इसे बालकों को २-४ रत्ती तक सुखोष्ण जल के साथ सेवन कराने से १-२ दस्त होकर अपचन, आलस्य, आध्मान, यकृत्-विकार आदि दूर हो जाते हैं।

(२३) कुटकी को उपरोक्त विधि से भूनकर कोयला जैसी कर लें। फिर इसका चूर्ण २-३ रत्ती दिन में २-३ बार शहद के साथ चटावें। इससे बालकों को वमन होकर कफ सरलता से निकलकर लाभ की शान्ति हो जाती है।

(२४) केला के पुष्प के अन्दर जो नन्हीं-नन्ही केलों की फलियां निकलती हैं, उन्हें पीसकर रस निचोड़ लें। उस रस में जीरे का चूर्ण तथा मिश्री मिलाकर बालक की शक्ति के अनुसार ३ से ६ ग्राम तक ७ दिन तक पिलाने से दांत आसानी से निकलने लगते हैं। उक्त रस को दांत निकलने वाले स्थान पर धीरे-धीरे मलने से भी लाभ होता है।

केशर तथा बालरोग—

(२५) केशर तथा कर्पूर दोनों १-१ रत्ती एकत्र खरल कर दूध के साथ देने से बालकों के कृमिरोग में लाभ होता है।

(२६) केशर, जायफल, आम की गुठली तथा वच जल में घिसकर पिलाने से बालकों के अतीसार तथा उदर-पीड़ा में लाभ होता है।

(२७) केशर को दूध में घिसकर आग पर गरम करके सुखोष्ण पिलाने तथा केशर के साथ जायफल को

---

[1]—शास्त्र में यह "बालचातुर्भद्रिका" के नाम से जाना जाता है। वैद्यराज देवीशरण गर्ग बालरोगों में इस योग का प्रयोग बहुत करते थे। वह इस योग में समानभाग सुहागे की खील डलवाकर थोड़ा पानी मिलाकर चम्मच में डालकर आग पर गर्म कराके बच्चे को पिलवाते थे। दांत निकलते समय के सामान्य विकारों में बहुत लाभदायक योग है। हमने भी सहस्रों रोगियों पर परीक्षा की है। इस मिश्रण के सम्बन्ध में वनौषधि विशेषांक के सम्पादक स्वर्गीय श्री कृष्णप्रसाद जी त्रिवेदी ने धन्वन्तरि के शिशुरोगांक में एक लेख दिया है जिसमें "बाल- चतुर्थी" के विषय में विस्तार से बताया गया है। इस लेख के कुछ अंश अविकल यहां पाठकों के लाभार्थ दे रहे हैं—

बालचतुर्थी (चारों द्रव्य मिश्रित) के गुण—ये चारों द्रव्य प्रधान रूप से कफघ्न एवं पित्तघ्न हैं। तथा इनका कार्य क्षेत्र विशेषतः मुख से लेकर आमाशय तक है। इनमें से अतीस काकड़ासिंगी और नागरमोथा अपने सम्मिलित तिक्त और कषाय रस तथा रूक्ष गुण के प्रभाव से क्लेदक कफ एवं पाचक पित्तान्तर्गत परिवृद्ध दूषित द्रवांश का शोषण करते हैं तथा अपने सम्मिलित उष्ण वीर्य से दीपन पाचन कार्य का सम्पादन कर वमन, अतीसार एवं ज्वरांश का नाश करते हैं।

उक्त ग्राही कार्य के सम्पन्न होते ही कफ संश्रय स्थानान्तर्गत दूषित कफ की न्यूनता हो जाने से कास श्वास में लाभ होता है। यदि कास शुष्क हो कफ जम गया हो, सरलता से नहीं निकालता हो तो ऐसी दशा में अनुलोमन कार्यार्थ पिप्पली का योग इसमें दिया गया है। इसके योग से ही अतीस और काकड़ासिंगी

पानी में घिसकर कपाल, छाती तथा नाक पर लेप करने से बच्चों की सर्दी, खांसी तथा ज्वर में लाभ होता है।

(२८) केशर के साथ दारुहल्दी, लाख, सोनागेरू, मैनसिला तथा वायविडङ्ग इनके समभाग मिलित चूर्ण को खरल कर अन्जन बना नेत्रों मे आंजने से वालकों के नेत्र-विकारों में लाभ होता है।

(२९) केशर तथा दालचीनी पीसकर गोली बना सेवन कराने से बच्चों के उदरशूल में लाभ होता है।

(३०) उत्तम केशर १० ग्राम को काली गाय के ६४० ग्राम मूत्र में अच्छी तरह घोंट पात्र में उसका मुख बन्द कर रखें। ८ दिन बाद छानकर शीशियों में भर कर रख लें। १०-२० बूंद वालक की अवस्थानुसार दूध में मिलाकर देने से सूखा रोग दूर होकर वालक हृष्ट-पुष्ट हो जाता है।

(३१) वालकों के बार-बार होने वाले वमन में खस के चूर्ण को शहद तथा मिश्री के साथ चटाने से लाभ होता है। प्यास की अधिकता में इसके चूर्ण को कमल-गट्टा की गिरी के चूर्ण के साथ देने से लाभ होता है।

(३२) खैर की अन्तरछाल ३ ग्राम को गोदुग्ध में पीस लें और छानकर उसमें २ रत्ती गोरोचन मिला नित्य प्रातः एक बार ३ दिनों तक पिलाने के वालकों के डब्बा रोग में लाभ होता है।

(३३) बच्चों को नियमित ताजी गाजरों का रस पिलाते रहने से बच्चों के दांत निकलते समय के रोग नहीं सताते तथा दूध भी ठीक तरह पच जाता है। [सर्दी से बचने के लिए थोड़ा गरम करके दें।]

(३४) वालकों के मुखपाक में दाह शमनार्थ तथा व्रणरोपण के लिए गावजवां के पत्ते एवं पुष्पों की भस्म बनाकर बुरकने से लाभ होता है।

(३५) गुन्जा की जड़ का महीन चूर्ण २ से ३ रत्ती लेकर उसमें सोंठ का चूर्ण मिलाकर मिश्रण कर शहद

का विशेषतः "कफ वात क्षय ज्वरान् हन्ति" का कार्य सम्पन्न होता है अर्थात् कफ वात शमन के साथ ही साथ राजयक्ष्मा का कास और ज्वर भी शान्त होता है तो फिर साधारण ज्वर तो टिक ही नहीं सकता।

नागरमोंथा के योग से यह प्रयोग कफज वमन का निवारक हो गया है। साथ ही साथ पिप्पली के योग से यह दन्तोद्भव के समय होने वाले ज्वर, अतीसार, कास एवं पाचन सम्बन्धी विकारों को सहज ही में दूर कर देता है। ऐसी अवस्था में इस प्रयोग की मात्रा २ से ४ रत्ती तक शहद के साथ ३-३ घण्टे से चटाते रहने से विशेष लाभ होता है। इस प्रयोग में नागरमोंथा न मिलाते हुए शेष तीनों का ही चूर्ण उक्त प्रकार से सेवन करने से भी वालकों के ज्वर, कास और वमन में यथेष्ठ लाभ होता है। यह वाल त्रिभद्रिका है। इसे वालभद्र भी कहते हैं।

वाल चातुर्भद्रिका का सफल प्रयोग वालकों का बार-बार मुख से लालास्राव होना, मुखपाक, शैया मूत्रत्व, रक्तक्षीणता या कफज पांडुता, दांतों का शीघ्र ही उद्गम न होना, यकृत्उदर, प्लीहोदर आदि विकारों पर किया जाता है।

यदि कास अति कष्टदायक एवं शुष्क हो तो इसके साथ सुहागे की खील या मुलहठी या केवल वंश-लोचन मिलाकर देना चाहिये। यदि अतीसार की विशेषता हो तो इसके साथ शंखभस्म की योजना एवं वमन की अधिकता हो तो मौक्तिक भस्म की योजना करने से यथेष्ट लाभ होता है।

यदि इस प्रयोग में अर्धभाग सितोपलादि चूर्ण मिला, मात्रा ६ रत्ती तक प्रातः सायं शहद या दूध के साथ शिशु को चटाया जाय तो शीघ्र ही दीपन कार्य होकर यह प्रयोग उसके लिये रोग प्रतिबन्धक होता है। दन्तोद्भव के समय कोई विकार नहीं होने पाते तथा वह सुदृढ़ एवं हृष्ट पुष्ट होता है। यह एक प्रकार का वालामृत हो जाता है।

यदि इसके साथ समभाग चूर्ण तथा चतुर्थ भाग शृङ्गभस्म (शृङ्गभस्म अर्धभाग तक मिलाया जा सकता है) मिला, प्रातः-सायं ६-६ रत्ती की मात्रा में शहद के साथ दिया जाय तो अस्थिक्षीणता एवं अस्थि वैषम्य में उत्तम लाभ होता है।

के साथ चटाने से बच्चों की काली खांसी में लाभ होता है।

(३६) गुञ्जा की ताजी जड़ ५० ग्राम जौकुट कर उसमें ताजी मिण्डी के टुकड़े ५० ग्राम मिलाकर २५० ग्राम पानी में मन्द अग्नि पर आध घण्टा तक पकाकर मोटे कपड़े में मसलते हुए छान लें, फिर उसमें १०० ग्राम शक्कर या शहद मिला मन्द अग्नि पर रख शर्वत की चाशनी तैयार कर लें। इसे बार-बार चटाते रहने से बालकों के कास आदि कफ-विकारों पर शीघ्र लाभ होता है। यह शर्वत अधिक दिनों तक रखने से विगड़ जाता है, अतः २-३ दिन बाद पुनः-पुनः ताजा तैयार कर लेना चाहिए।

(३७) ग्वारपाठे के रस में थोड़ा एलुआ तथा बबूल का गोंद मिला घोटकर पसलियों पर लेप करने से बच्चों के डब्बारोग में लाभ होता है।

—वनौषधि विशेषांक भाग २ से।

(३८) यदि सूखा रोग हो, तो चित्रक छाल के महीन चूर्ण १ भाग में ८ भाग मृतसंजीवनी सुरा या रैक्टीफाइड स्प्रिट मिलाकर आसव या टिंचर बना लें। २-५ बूंद माता के दूध के साथ या जल में मिलाकर सेवन कराने से लाभ होता है।

(३९) बालकों के उत्फुल्लिका (डब्बा रोग) में चित्रक की मूल का महीन चूर्ण आधा रत्ती की मात्रा में माता के दूध या शहद के साथ देने से लाभ होता है। अथवा इसके मूल को माता के दूध में घिसकर थोड़ा शहद मिला सेवन कराने से २-३ दिन में ही लाभ हो जाता है।

(४०) जलपिप्पली के पत्र स्वरस की १०-२० बूंद मधु में मिलाकर चटाने से बच्चे का पेट साफ होकर मलावरोध दूर होता है।

(४१) बच्चों के मस्तक पर होने वाले फोड़ा, फुंसी तथा खुजली पर जलपिप्पली के पत्रों को पीसकर मक्खन में मिला लेप करने से लाभ होता है। इसके साथ बबूल पत्र तथा मुल्तानी मिट्टी भी मिला लेने से और उत्तम लाभ होता है।

(४२) अनार की एक कली को बीच में चाकू से चीरकर उसमें शुद्ध अफीम चौथाई रत्ती भरकर थोड़ी चिकनी मिट्टी से कली को चारों ओर से पोतकर कण्डे की अग्नि पर पका लें। फिर ऊपर की मिट्टी साफ कर उसे एक नग जायफल के साथ खरल कर मसूर जैसी गोलियां बना लें। इन गोलियों के सेवन से अतीसार तथा पेट की ऐंठन में लाभ होता है। दूध पीते बच्चों को मातृदुग्ध या या मधु से, बड़े बच्चों को मधु या गरम किये हुए शीतल जल के साथ सेवन करावें। यदि अतीसार अधिक हो तो ४-४ घण्टे पर सेवन करानी चाहिए।

(४३) बालकों की छाती में कफ भर जाने से होने वाली सर्दी एवं श्वास पर जायफल को जल में घिसकर कुछ गरम करके छाती पर लेप करने से विशेष लाभ होता है।

(४४) जायफल के चूर्ण तथा सोंठ के चूर्ण को गोघृत के साथ चटाने से बालकों के प्रतिश्याय में लाभ होता है।

(४५) तुलसी के बीज १ से १॥ रत्ती की मात्रा में पीस थोड़े गोघृत में घोलकर पिलाने से बालकों के अतीसार में लाभ होता है। इसी मात्रा में यह योग दिन में ३-४ बार तक सेवन कराया जा सकता है।

(४६) नागफनी के फलों का रस [फलों को थोड़े घृत में भून लें जिससे ऊपर के तीक्ष्ण रोम जल जावें, फिर उन्हें पानी से धोकर प्रत्येक फल में छिद्र कर कपड़े में मसल कर रस निचोड़ लें] १ किलो लेकर उसमें सम-भाग शक्कर या मिश्री मिला मन्द अग्नि पर पकावें। शर्वत की चाशनी आ जाने पर नीचे उतार कर उसमें पिपरमैण्ट, कपूर, अजवायन का सत् प्रत्येक १॥-१॥ ग्राम मिला शीशी में सुरक्षित रखें। बालकों को १० ग्राम तक की मात्रा में २-३ बार चटाते रहने से बच्चों के हरे-पीले दस्त, अजीर्ण, शूल, अफरा आदि उदर-विकारों में लाभ होता है।

(४७) ताजी दुद्धी तथा काली मरिच समभाग को महीन पीसकर काली मरिच जैसी गोलियां बना लें। १-१ गोली प्रातः-सायं माता के दूध या जल के साथ सेवन करावें तो शोष [सूखा] रोग में लाभ होता है।

(४८) ताजी दुद्धी २५ ग्राम, छोटी इलायची २० ग्राम, सुहागा चौकिया ३ ग्राम तथा मोती भस्म ४ रत्ती लेकर सबको महीन पीस उसमें दुद्धी के रस की भावना देकर मूंग जैसी गोलियां बना लें। १-१ गोली माता के

दूध या पानी के साथ सेवन कराने से बालशोष में लाभ होता है।

(४९) दुद्धी स्वरस २०० ग्राम, छोटी इलायची, जायफल, बालछड़, तालीस पत्र प्रत्येक २०-२० ग्राम। इनको कूट-पीसकर गोदुग्ध आधा किलो, तिल तैल आधा किलो तथा तैल से चौगुना पानी मिलाकर मन्दाग्नि पर तैल पाक करें। इसकी मालिश से बालकों का शोष रोग दूर होता है। —वनौषधि विशेषांक भाग ३ से।

(५०) नाड़ी शाक के पत्र या पञ्चाङ्ग १० ग्राम लेकर सिल पर पीस उसमें १० ग्राम काले तिल मिलाकर खूब घोट, थोड़ा जल मिलाकर आग पर गरम करें। लेही जैसी गाढ़ी हो जाने पर उतार ठण्डा कर बालक की पसलियों पर दोनों ओर जहा गड्ढे पड़ते हैं, वहां गाढ़ा-गाढ़ा लेप कर देते हैं। यह लेप १ घण्टे तक लगा रहने दें। इससे बालक के डब्बा रोग [पसली चलना-न्यूमोनियां] में लाभ होता है।

(५१) निशोथ, हरड़, छाया शुष्क पोदीना के पत्र प्रत्येक १०-१० ग्राम तथा अतीस १ ग्राम लेकर चूर्ण कर लें। १-१॥ ग्राम तक बलाबल के अनुसार दिन-रात में ४ बार तुलसी-पत्र स्वरस तथा माता के दूध के साथ घुटी बनाकर पिलाने से बालकों के सामान्य विकार ज्वर, वमन कास, श्वास, अतीसार, संग्रहणी तथा दांत निकलते समय के रोग नही सताते।

(५२) प्रवाल भस्म १ ग्राम, मुक्ताशुक्ति भस्म २ ग्राम, शंख भस्म ३ ग्राम, कौड़ी भस्म ४ ग्राम, कछुये की पीठ की भस्म ५ ग्राम, गोदन्ती हरताल भस्म ६ ग्राम खरल में डालकर नीबू के रस की भावना देकर सुखा लें। फिर महीन चूर्ण कर ½ से १ ग्राम तक प्रातः-सायं दूध के साथ सेवन कराने से सूखा रोग तथा चूने की कमी से होने वाले बच्चों के रोगों में लाभ होता है।

(५३) एक नीबू तथा एक सन्तरे का रस मिलाकर अवस्थानुसार मात्रा में यदि रोज पिलाया जाय तो शरीर का सूखना, हड्डियों की दुर्बलता आदि बच्चों के विकार दूर होते हैं।

(५४) नीबू के बीजों का चूर्ण नाभि में भरकर ऊपर से शीतल पानी की धारा डालने से बालकों का मूत्रावरोध दूर होता है।

(५५) दांत निकलते समय पिप्पली के चूर्ण को शहद में मिलाकर मसूड़ों पर मलने से दांत बिना कष्ट निकलने लगते हैं।

(५६) पिप्पली, मजीठ, नागरमोथा तथा काकडासिंगी का एकत्र चूर्ण ½ ग्राम से १ ग्राम तक शहद के साथ चटाने से बालकों के ज्वर, कास, अतीसार तथा वमन में लाभ होता है।

(५७) यदि बालक अधिक रोता हो, तो उसे पिप्पली तथा त्रिफला के समभाग मिश्रित चूर्ण को घृत तथा शहद में मिलाकर चटाने से लाभ होता है।

(५८) बालक के तीव्र ज्वर में जब अत्यधिक प्यास के कारण वह बार-बार चिल्लाता हो और बार-बार पानी देने पर भी प्यास न मिटती हो, जीभ बार-बार बाहर निकालता हो, तो पीपल की छाल की राख को ६ ग्राम तक गावजवां के १०० ग्राम अर्क [अभाव में उतने ही उबले जल] में मिला अच्छी तरह घोलकर थोड़ी देर बाद ऊपर का स्वच्छ जल नितार कर पिलाने से तृषा की शीघ्र शान्ति होती है।

(५९) बालकों के आक्षेप में पीपल की जटा का महीन चूर्ण तथा केशर समभाग एकत्र करके खूब खरल कर १-१ रत्ती की मात्रा में जल के साथ आधा-आधा घण्टे पर देने से तीव्र आक्षेप शमन हो जाते हैं।

(६०) पुनर्नवा के १०० ग्राम पत्र-रस के साथ २०० ग्राम चीनी या मिश्री मिलाकर पकावे। पकाते समय ६ ग्राम छोटी पिप्पली का चूर्ण भी मिला देवे। शर्बत की चाशनी तैयार हो जाने पर शीशी मे भरकर रखे। इसे थोड़ा-थोड़ा चटाते रहने से बच्चो की खांसी, श्वास, फेफड़ों की सूजन, प्रतिश्याय, सर्दी, लालास्राव, हरे-पीले दस्त तथा वमन मे शीघ्र लाभ होता है।

(६१) पोहकरमूल, अतीस, काकड़ासिंगी, पिप्पली व धमासा समभाग का चूर्ण शहद के साथ चटाने से [१ वर्ष के बालक को १ रत्ती तक देवे] सभी प्रकार की खांसी में लाभ होता है।

(६२) पोहकरमूल तथा अतीस का चूर्ण उचित मात्रा में शहद के साथ या माता के दूध के साथ देने से बच्चों का ज्वर, श्वास, निमोनियां, पसली की पीड़ा आदि ठीक होते हैं।

(६३) प्याज को आग पर सेंक कर उसका रस निचोड़ कर ३ ग्राम तक पिलाने से बच्चों के उदरशूल में लाभ होता है।

(६४) प्याज का रस निकाल कर किसी पात्र में रख उसमें पीपल वृक्ष की जलती हुई लकड़ी के टुकड़े को बुझाकर कोयला निकाल महीन पीसकर शीशी में रखें। यह रस जिसमें कोयला बुझाया गया है, ३ ग्राम पिला देने से अथवा कोयले का चूर्ण ३ रत्ती की मात्रा में सादे जल में घोलकर पिलाने से बच्चों के अतीसार में लाभ होता है।

यदि बालक के कान में पीड़ा हो, तो गरम राख में भुनी प्याज के रस की २-३ बूंदें सुखोष्ण कान में डालने से पीड़ा शीघ्र शान्त हो जाती है।

(६५) यदि बच्चे की आंख में पीड़ा हो, तो प्याज का रस तथा शुद्ध मधु मिलाकर १-२ बूंद प्रातः-सायं डालने से लाभ होता है।

(६६) श्वेत प्याज को चीरकर उसका ताजा टुकड़ा नाक पर रखकर बार-बार सुंघाने से बालकों के अपस्मार का दौरा दूर होता है।

(६७) बालकों के तालुपात या तालुकण्टक रोग [इसमें तालु का नीचे की ओर खिसक जाना] में श्वेत प्याज को भूनकर महीन पीस लें तथा उसमें गोघृत मिला वटी बना तालु प्रदेश पर रख ऊपर से अण्डी का ताजा पत्र रख कपड़े से बांध देवें। इस प्रकार तीन दिन तक करें। प्रतिदिन शाम को उक्त बन्धन खोलकर पट्टी को दूर कर गोघृत तालु पर लगा दें, साथ ही श्वेत प्याज के रस में थोड़े जीरे के चूर्ण तथा मिश्री मिला बालक को पिलाने से लाभ होता है। —वनौषधि विशेषांक भाग ४ से।

(६८) यदि बच्चे को कोई अन्य बीमारी नहीं है और वह अकस्मात मूर्च्छित हो जाता है, मुख से फेन आने लगता है तथा उसके अङ्गों में ऐंठन शुरू होती हो तो यह समझना चाहिए कि वह बालापस्मार से पीड़ित है। ऐसी अवस्था में १-२ रत्ती [१-२ वर्ष के बालक को] वच का महीन चूर्ण माता या गाय के दूध के साथ पिलाने से तथा इसका चूर्ण घृत में मिलाकर उसके मस्तक और सर्वाङ्ग पर मालिश करने से एवं चूर्ण को आग पर डालकर उसकी धूनी देने से लाभ होता है।

(६९) छोटे बच्चों के पेट में कृमि हों, तो वच को १-२ रत्ती तक दूध के साथ घिसकर ३-४ दिन तक पिलाने से नष्ट हो जाते हैं तथा कृमियों की नई उत्पत्ति बन्द हो जाती है।

(७०) वच को खूब महीन पीसकर ३ साल पुराने गुड़ में मिलाकर छोटी मटर जैसी गोलियां बनाकर माता के दूध से १-१ गोली प्रातः-सायं सेवन करने से बालकों के ज्वर, अतीसार खांसी आदि में लाभ हो जाता है।

(७१) श्वासावरोध की अवस्था में जब छाती में कफ के जम जाने से बच्चा व्याकुल हो जाता है उस अवस्था में वच को महीन पीसकर गोघृत में मिलाकर गरम कर बालक की छाती, कण्ठ तथा पीठ पर धीरे-धीरे मर्दन कर गरम वस्त्र लपेट देने से विशेष लाभ होता है।

(७२) वच तथा खरैंटी मूल का महीन चूर्ण ४०-४० ग्राम लेकर १ किलो तिल तैल में मिलाकर कांच के पात्र में भरकर पात्र का मुख बन्द कर ७ दिन तक धूप में रखकर छानलें, इसकी मालिश से समस्त बालरोग नष्ट होकर बालक पुष्ट हो जाता है।

(७३) बादाम की गिरी, किशमिश, छुहारा (गुठली निकला हुआ), नारियल की गिरी प्रत्येक १०० ग्राम; भुने हुये छिले चने ४०० ग्राम तथा शक्कर ८०० ग्राम सबको कूटकर चूर्ण कर रखें प्रातः ५-१० ग्राम तक बालकों को खिलाने से बल वृद्धि होकर शरीर पुष्ट होता है।

(७४) बालकों के प्रायः सर्व रोगों के लिये वायविडङ्ग अच्छी औषधि है। कृमि, सूखा रोग, आध्मान, शूल, अग्निमांद्यादि में नित्य नियमित इसके ५-६ दाने दूध में उबालकर छानकर पिलाते रहने से बच्चों का स्वास्थ्य ठीक रहता है और उपरोक्त सब विकार दूर हो जाते हैं।

(७५) जन्म के पश्चात् १ महीने तक प्रतिदिन वायविडङ्ग का १ दाना, दूसरे महीने में प्रतिदिन २-२ दाने; तीसरे माह में ३-३ दाने क्रमशः बढ़ाते हुये देते रहने से बालकों को उदर सम्बन्धी कोई भी रोग सहसा नहीं होने पाते।

(७६) निर्बल, कृश तथा जिसकी पाचन क्रिया ठीक न हो ऐसे बालक को विदारीकन्द का चूर्ण, गेहूं तथा जौ का आटा समभाग एकत्र मिलाकर घी में भूनकर उसमें, घी व मधु विषम भाग तथा दूध और मिश्री मिला हलुआ जैसा पकाकर १०-२० ग्राम की मात्रा में खिलाने से शीघ्र लाभ होता है।

(७७) विदारीकन्द का चूर्ण १० ग्राम को शहद के साथ चटाते रहने से बच्चों की निर्बलता दूर होती है तथा इसके चूर्ण में पिप्पली चूर्ण व मधु मिलाकर चटाने से पाचन शक्ति बढ़ती है।

(७८) बेलगिरी को सौंफ के अर्क में घिसकर देने से बालकों के हरे पीले दस्तों की शिकायत दूर होती है।

(७९) बैंगन के महीन चूर्ण को जल के साथ मिलाकर पिलाने से कम से कम १ वर्ष के लिये बच्चा खसरे से सुरक्षित रहता है। इसके लिये लम्बी किस्म के बैंगनों के बीज लेना ठीक रहता है। जिस घर में खसरे का रोगी हो उस घर के अन्य बच्चों को इस चूर्ण के सेवन से उन्हें इसका भय नहीं रहता।

(८०) छोटे बालक को या तत्काल के पैदा हुये नवजात शिशु को कफ प्रकोप के कारण कण्ठ में घरघराहट हो तो पीले भांगरे के ताजे पत्र स्वरस की २ बूंद ८ बूंद शहद में मिलाकर अंगुली से गले तक पहुंचा देने पर सब कफ निकल जाता है और बच्चा स्वास्थ्य लाभ करता है।

(८१) पीले भांगरे की जड़ का चूर्ण २-४ रत्ती की मात्रा में मन्दोष्ण दूध के साथ सेवन कराने से बच्चों के जीर्ण ज्वर में लाभ होता है।

—वनौषधि विशेषांक भाग ५ से।

(८२) सोया २० ग्राम, कालानमक ५ ग्राम दोनों को जल में पीसकर टिकिया बनालें, २०० ग्राम शुद्ध एरण्ड तैल को कड़ाही में डालकर उपरोक्त टिकिया डालकर पकावें टिकिया बादामी रङ्ग की होने पर कड़ाही को आग से उतार कर टिकिया को अलग हटाकर तैल को छानकर शीशी में रखलें। इस एरण्ड तैल की ३-४ बूंदें थोड़े से शहद में मिलाकर तीसरे चौथे तथा आठवें दिन एक समय बच्चों को देने से बालक तन्दुरुस्त रहता है। इससे उसके शरीर में वायु तथा कब्ज की तकलीफ नहीं होती।

(८३) सौंफ १०० ग्राम को आधा किलो पानी में औटावें आधा रहने पर भुना सुहागा ३ ग्राम, खांड २५० ग्राम मिलाकर शरबत बनालें। १-३ ग्राम तक बच्चों को नियमित सेवन कराते रहने से उनका हाजमा ठीक रहता है। —वनौषधि विशेषांक भाग ६ से।

(८४) यदि बच्चे को प्यास का रोग हो तो अनार के दाने, जीरा तथा नागकेशर इन तीनों को महीन पीसकर इनका चूर्ण, मिश्री तथा शहद में मिलाकर २-४ रत्ती तक चटाने से बालकों का प्यास कम हो जाती है।

(८५) कटेरी के फलों की केसर को पीसकर उसे शहद में मिलाकर चटाने से बालकों की बहुत पुरानी खांसी भी ठीक हो जाती है।

(८६) पीपल की छाल तथा पीपल के पत्तों को पीसकर लेप करने से बालकों का मुखपाक रोग नष्ट हो जाता है।

(८७) शंख, मुलहठी तथा रसौत इन औषधियों को पानी में पीसकर लेप करने से गुदपाक में लाभ हो जाता है।

(८८) गुदा के मल मूत्र को अच्छी तरह साफ न करने से खुजली तथा घाव हो जाते हैं। तथा मवाद बहने लगता है (इसे अहिपूतन रोग कहते हैं) इस रोग में शंख, सफेद सुरमा तथा मुलहठी सबको महीन पीसकर लेप करने से लाभ होता है।

(८९) करेले के पत्ते, अडूसे के पत्ते, पान तथा जामुन की छाल इन सबका रस निकालकर एकत्र करलें, इस रस में वच घिसकर पिलाने से सात दिन में डब्बा रोग से निश्चित छुटकारा मिल जाता है।

(९०) अगर बालक के कान में कीड़ा या मच्छर घुस जाय तो मकोय के पत्तों का रस कान में टपकावें तो वह बाहर निकल आता है। अगर कान में कनखजूरा घुस गया हो तो मरोड़फली की जड़ को अण्डी के तैल में घिसकर १०-१५ बूंद टपकाने से वह मरकर बाहर आ जाता है।

(९१) अगर बालक के पेट में अफरा हो तो गधे की लीद गरम करके पेट पर बांधने से शीघ्र लाभ होता है। आक के पत्ते को गर्म कर घी चुपड़कर या सरसों की

खल गरम-गरम पेट पर बांधने से भी बालक का आध्मान दूर होता है।

(६२) हींग को जल में पीसकर तथा गरम कर नाभि के आस-पास लेप करने से आध्मान दूर होता है।

(६३) अगर बालक को १-२ दस्त कराने हों तो रात को छुहारा पानी में भिगोदें, सुवह उसे पानी में मसलकर निचोड़ लें तथा छुहारे को फेंकदें पीछे वही पानी वच्चे को यथोचित मात्रा में पिलादें। १-२ दस्त होकर पेट साफ हो जाता है।

—चिकित्सा चन्द्रोदय पांचवे भाग से।

(६४) नीबू के रस में शोधा हुआ खपरिया, काबली हरड़ की छाल का चूर्ण, सफेद इलायची का छिलका प्रत्येक १००-१०० ग्राम इनका वारीक चूर्ण करलें। २-४ रत्ती तक्र के ऊपर के नितरे जल के साथ सेवन कराने से बालशोष, उल्टी, अतीसार, जीर्ण ज्वर, दुर्वलता आदि बच्चों के विकार में लाभ होता है।

—वैद्य गोपाल जी कुंवर जी ठक्कर द्वारा धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(६५) हींग, केशर तथा अफीम तीनों १०-१० ग्राम जल में खरल कर मूली के बीज के समान गोलियां बनाकर रखलें। १-१ गोली सुवह शाम देने से बच्चों को कैसा भी अतीसार हो ३-४ मात्रा देने से बिलकुल स्वस्थ हो जाता है। —उदयलाल महात्मा वैद्य द्वारा धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(६६) बकरी का दूध ५० ग्राम, अहिफेन सरसों के दाने के वरावर लेकर दोनों को खूव मिलालें। वाद में एक (खिपड़ा) गरम कर दूध में ५-६ वार डालें फिर वह दूध पिला देवें बच्चों को कैसे भी भयंकर दस्त हों इसके सेवन से ठीक हो जाते है।

—चौधरी ईशरराम प्रेमराज वहनीवाल द्वारा धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(६७) काली गाय का मूत्र ६ ग्राम; केशर ½ रत्ती, एलुआ २ रत्ती तथा शहद ६ ग्राम, सवको मिलाकर एक बार में ही डब्वा [निमोनियां] रोग से ग्रसित बालक को पिला दें तथा फुलवा [पहाड़ पर होने वाला एक द्रव्य जो घी जैसा होता है] १० ग्राम, सिंगरफ ६ ग्राम, अफीम ४ रत्ती सवको घोट मिलाकर लेप वना वच्चे की पसलियों पर लगाकर नामे से सेंक कर दें। इस प्रयोग से निमोनियां की आत्ययिक अवस्था में भी लाभ होता है।

—श्री डोरीलाल जी द्वारा धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(६८) अनविधे मोती १ ग्राम तथा आंवले सूखे ६ ग्राम लेकर अर्क वेदमुश्क तथा अर्क गुलाव में ३-४ दिन खूब खरल कर वाजरे के वरावर गोलियां वना लें और चांदी के वर्क लपेट दें। माता के दूध या अर्क गावजवां के साथ नित्य प्रातः-सायं १-२ गोली सेवन कराने से बच्चों के हरे-पीले दस्त वन्द होते हैं, भूख तथा वजन वढ़ता है। —वावू वूरसिंह सोनी द्वारा धन्वन्तरि अनुभूत योगांक से।

(६६) वायविडङ्ग, पलाश बीज, खुरासानी अजवायन, पीपल, त्रिफला पांचों समान भाग का चूर्ण बनाकर अवस्थानुसार २ रत्ती से ८ रत्ती तक शहद या माता के दूध के साथ सेवन कराने से बच्चों के कृमि नष्ट हो जाते हैं। —श्री मनोहरदत्त वैद्यराज द्वारा धन्वन्तरि अनुभूत चिकित्सांक से।

(१००) उड़द का आटा ६० ग्राम लेकर उसमें १ ग्राम हींग पानी में घोलकर मिला दें तथा १० ग्राम मूषक की विष्टा (लेंड़) पीसकर भी उसमें मिला लें और एक आटे की रोटी वना तवे पर एक तरफ कुछ सेंक लें। जिस तरफ कच्ची रहे, उसी तरफ एरण्ड तैल लगाकर कुछ गर्म-गर्म वच्चे के पेट पर वांध दें। इससे आध्मान दूर होकर वच्चे की वायु सरने लगती है।

(१०१) ढाक के फूल २० ग्राम, कलमी शोरा १० ग्राम, कर्पूर ३ ग्राम पानी में पीसकर एक अंगुल मोटा लेप नाभि के नीचे पेडू पर लगाने से वच्चे का मूत्रावरोध नष्ट होता है।

(१०२) ६० ग्राम वकरी के कच्चे दूध में २५ ग्राम कलमी शोरा मिलाकर एक वालिस्त कपड़ा उसमें भिगोकर नाभि के नीचे रखने से वच्चे का मूत्रावरोध दूर होता है।

(१०३) मलावरोध यदि औषधि सेवन से दूर न हो या वालक को औषधि न दी जा सकती हो, तो पानी में इतना सावुन घोलें जिससे पानी कुछ गाढ़ा हो जाय।

उसमें ४-६ अंगुल कपड़ा भिगोकर एक वत्ती बना बच्चे की गुदा में थोड़ी चढ़ा दें, शीघ्र दस्त हो जायगा।

—धन्वन्तरि अनुभूत योगांक से।

(१०४) सफेद इलायची के दाने ३ ग्राम, केशर, वंशलोचन ६-६ ग्राम, मुक्ता भस्म १ ग्राम, सबको घोट-कर ६० ग्राम शहद में डाल रख छोड़ें। प्रातः, सायं १-१ ग्राम चटाने या दूध में घोलकर पिलाने से बालशोष में लाभ होता है।

(१०५) सज्जी, सोंठ, कूठ, मरोड़ फली, पीपल की लाख, हल्दी, मंजीठ, मुलहठी आठों ५०-५० ग्राम लेकर कल्क कर लें। पश्चात् मूर्च्छित तिल तैल २ किलो लेकर उसमें १२ किलो गाय के दूध का दही मलाईयुक्त मिला-कर पकावें। तैल मात्र शेष रह जाने पर छानकर रख लें। इस तैल से बालशोष के रोगी का अभ्यङ्ग कराने से विशेष लाभ होता है।

(१०६) पीपल की लाख, देवदारु ३-३ ग्राम तथा काले तिल १० ग्राम, तीनों को बकरी के दूध में पीसकर बच्चों को रोज उबटन लगाने से सूखा आदि विकार दूर होकर बच्चा हृष्ट-पुष्ट बनता है।

—पं० तुलसीराम शुक्ल द्वारा
धन्वन्तरि अनुभूत योगांक से।

(१०७) लोंग का फूल २ नग, छोटी कटहेरी के फूल का जीरा ४ नग तथा गनू अजवायन ½ रत्ती लेकर एक मात्रा बना लें और मां के दूध में पीसकर पिलावें, तो बच्चों के निमोनियां में शीघ्र लाभ होता है।

—पं० बाबूराम चतुर्वेदी द्वारा
धन्वन्तरि सिद्ध योगांक से।

(१०८) बालकों के सूखा रोग पर चाकसू का प्रयोग—चाकसू २५० ग्राम लेकर उसके दानों को साफ छिटक कर तथा साफ कपड़े की पोटली में बांधकर एक चौड़े मुख की हांडी में १ किलो गधे का लीद और आधा किलो गधे का मूत्र भरकर उसी के बीचोंबीच इस पोटली को दोलायन्त्र की तरह लटका कर चूल्हे पर चढ़ा पकावें। जब मूत्र सूख जाय, तब हांडी को आंच से उतार कर ठण्डी होने दें। हांडी के ठण्डे हो जाने पर पोटली में से चाकसू के बीजों को निकाल कर बीजों के छिलके हाथ से मसल-मसल कर अलग उतार कर साफ कर लें। फिर उन बीजों को खरल में डालकर खूब बारीक रगड़ लें। जब खूब बारीक रगड़ जाय, तब १ किलो काली तुलसी के पत्तों का रस थोड़ा-थोड़ा करके उसमें डाल घोट-घोट कर सुखा लें। जब गोली बनाने लायक लुगदी हो जाय, तब उसकी ज्वार के दाने के बराबर गोली बना छाया में सुखाकर रख लें।

सेवन विधि—१ माह से १ वर्ष तक के बालकों को आधी से १ गोली तक अवस्था के अनुसार उसकी माता के दूध, सौंफ के अर्क, गुलाब के अर्क या कब्ज अधिक रहती हो, तो अमलतास के काढ़े के साथ दो बार सेवन करानी चाहिए। रोग की प्रबल दशा में कभी-कभी दिन में तीन बार भी दी जा सकती है।

१ वर्ष से ऊपर आयु वाले बालकों को २-२ गोली तक एक बार में दी जा सकती है। कभी-कभी इन गोलियों के सेवन कराने के दर्मियान बालक को हरे-पीले दस्त आने लग जाते हैं। परन्तु इससे भयभीत न होना चाहिए, दवा बराबर सेवन कराते रहना चाहिए। दस्त अपने आप रुक जावेंगे। इन गोलियों के सेवन कराने से बालक का वजन [यदि बीच में कोई दुर्घटना न हुई तो] एक महीने के भीतर तिगुना बढ़ जाता है।

गुण—इससे बालक की पाचन-शक्ति बढ़कर जो कुछ दूध वह पीता है या अन्न खाता है, उसका अधिकांश विशुद्ध रस-रक्त बनकर शरीर की विगतप्राय पोषण क्रिया पुनर्वार प्रबल वेग से होने लगती है। शरीर में पूर्व संचित अशुद्ध रक्त शुद्ध होकर पेट और चेहरे के ऊपर दिखाई देने वाली पीली-पीली नसें शुद्ध रक्त से पूर्ण होकर रक्त वर्ण धारण करती हैं। मांस आदि धातुओं का निर्माण व पोषण पुनर्वार आरम्भ होकर बालक का कंकाल प्रायः शरीर थोड़े दिनों में ही सुडौल, गठित और लावण्ययुक्त हो जाता है।

इससे बालकों का ग्रहदोष और भूत-बाधा आदि भी दूर हो जाते हैं।

(१०९) शुक्ल पक्ष में प्रातः अपामार्ग को जड़ सहित उखाड़ लावें तथा छाया में सुखा लें। इस सूखे पञ्चाङ्ग को जलाकर उसकी काली भस्म बना लें। इसकी १० ग्राम

मात्रा में ४ रत्ती बोरिक पाउडर मिलाकर शीशी में भर लें। २ रत्ती से १ ग्राम तक १ माह से ४ वर्ष तक के बालक को मात्रानुसार मां के दूध या गाय के दूध के साथ देने से बालकों की खांसी, फ्लू, निमोनिया आदि सर्दी से होने वाले कफज विकारों में आशातीत लाभ होता है। साधारण परन्तु चमत्कारी प्रभाव वाली औषधि है।

—भाई जी हकीम द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(११०) गोमूत्र १० ग्राम, लवण २ ग्राम तथा मिश्री ५ ग्राम, हल्दी १॥ ग्राम सबको मिलाकर अच्छी तरह ४ बार मोटे कपड़े में छान लेवें और शीशी में भरकर रखें। ½-½ घण्टे बाद ½-½ चम्मच सेवन कराने से बच्चों के दस्त, वमन, डब्बा रोग आदि दूर होते हैं।

—पं० लक्ष्मण कुमार द्वारा
धन्वन्तरि गुप्त सिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(१११) एलुआ, जुन्दवेदस्तर, कुन्दरू गोंद सब बराबर लेकर खरल में आर्द्रक के स्वरस में बारीक पीस लें तथा सरसों के बराबर गोलियां बना लें। इसमें से २ माह के बच्चों को १-१ गोली तथा ३ माह के बच्चों को ३-३ गोली गर्म पानी से रोज देनी चाहिए। बालापस्मारनाशक यह उत्तम गोलियां है, लेकिन इन गोलियों के सेवन के समय अजीर्ण तथा मलावरोध बच्चे को नहीं होना चाहिए।

—पं० काशीराम शर्मा द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(११२) छुहारा २ नग, हींग, अफीम, केशर तथा जायफल चारों समान भाग लें। पहले छुहारों को एक ओर से चीरकर गुठली निकाल शेष सब वस्तुओं को छुहारों के अन्दर पीसकर भर दें और ऊपर से धागा लपेट कर गूंदा हुआ आटा लपेट दें। फिर इन्हें भूभर की आग में रखकर पकावें। जब आटा सुर्ख हो जाय, तब आग से निकाल कर आटा हटा दें और खूब पीसकर बाजरा के बराबर गोलियां बना लें। १-२ गोली सोफ अर्क अथवा मां या गाय के दूध के साथ सेवन कराने से बच्चों के दस्त, वमन, अतीसार में लाभ होता है।

—डा० रामरतन निगम द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(११३) गोरोचन, रेवन्दसार तथा सुहागे की खीलें, सबको समभाग ले चूर्ण कर शीशी में रखें। २-४ रत्ती तक निम्न अनुपान के साथ इसका प्रयोग कराने से बालकों के डब्बा रोग में आशातीत लाभ होता है—

अनुपान—गोमूत्र ५० ग्राम में हल्दी का चूर्ण ६ ग्राम, सेंधे नमक का चूर्ण ४ ग्राम, मालम मिश्री का चूर्ण ६ ग्राम मिलाकर मोटे दोहरे कपड़े से २-३ बार छानकर शीशी में रख शीशी का मुख बन्द कर रखें। यह अनुपान ८ घण्टे तक काम दे सकता है। इसके बाद नया बनाना चाहिए।

—श्री रामावतार पाण्डेय द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक तृतीय भाग से।

(११४) पापड़ा १ किलो तथा हीराकसीस ½ किलो लेकर दोनों को अलग-अलग पानी में घोलकर रख लें और एक हड़िया में पहले पापड़ खार तथा फिर कसीस छानें। तत्पश्चात् उस हड़िया को जल से ऊपर तक भर दें। शाम को नितार कर यह पानी निकाल दें और दूसरा भर दें। इस प्रकार २१ बार पानी बदल कर नितार लें और बाद में हाडी में बैठे क्षार को कांसे के पात्र में रखकर सुखा लें तथा शीशी में भरकर रख दें। यह गेरुआ रंग की भस्म बच्चों के निमोनियां रोग में शतप्रतिशत लाभदायक औषधि है। १ माह के बच्चे को १ रत्ती दवा १ बूंद तुलसी के स्वरस, १ बूंद अदरक के रस तथा ६ ग्राम शहद में मिलाकर देनी चाहिए। इस प्रकार जितने माह का बच्चा हो उतनी ही रत्ती दवा, उतने ही बूंद दोनों स्वरस तथा शहद मिलाकर पिलानी चाहिए। दवा की मात्रा ३-३ घण्टे से दी जानी चाहिए।

—वैद्य खुशालचन्द्र जी वर्मा द्वारा
धन्वन्तरि गुप्त सिद्ध प्रयोगांक तृतीय भाग से।

(११५) सत्यानाशी के बीज तथा उसारे रेवन्द यह दोनों बराबर लेकर सत्यानाशी के रस में घोटकर उड़द के बराबर गोली बना लें तथा छाया में सुखाकर सुरक्षित रख लें। १-२ गोली शहद या मां के दूध में घोलकर देने से डब्बा रोग में लाभ होता है।

—वैद्य विशारद पं० नथमल शिखवाल द्वारा
धन्वन्तरि गुप्त सिद्ध प्रयोगांक तृतीय भाग से।

(११६) भुने चने का चूर्ण, तुलसी पत्र, भांग, मांजूफल, अनार की डोंडी सबको समान भाग लेकर चूर्ण कर लें। जिस बालक का काग गिर गया हो, इस चूर्ण को थोड़ा अंगूठे पर लगाकर बालक के गले को ऊपर दबाने से काग आसानी से उठ जाता है।

—कविराज पं० नानकचन्द्र जी द्वारा
धन्वन्तरि गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(११७) अपामार्ग के पत्ते २० ग्राम, तुलसी पत्र १० ग्राम, अतीस, लौंग, वंशलोचन प्रत्येक ३-३ ग्राम; छोटी इलायची ६ ग्राम सबको कूट-पीस चूर्ण कर जल में अच्छी तरह मर्दन करके चना प्रमाण की गोलियां बना लें तथा छाया में सुखा लें। १-१ गोली मां के दूध या उष्ण जल से सेवन करानी चाहिए। इसके प्रयोग से बच्चों के हरे-पीले दस्त, आंव के दस्त, दूध न पचना, वमन होना, खांसी आदि रोगों में अत्यन्त लाभ होता है।

—श्री सियाप्रसाद अस्थाना द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(११८) पीपल, शुद्ध हिंगुल, शुद्ध गन्धक, शुद्ध टंकण, शुद्ध बच्छनाग, अभ्रक भस्म, अतीस, कुडा की छाल, निर्गुण्डी के बीज, सेंधव प्रत्येक समभाग ले पीसकर त्रिफला क्वाथ तथा दन्तीमूल के क्वाथ की ४-४ भावना देकर १-१ रत्ती की गोलियां बना लें। १-२ रत्ती लौंग के साथ घिसकर दिन-रात में ४-५ बार सेवन कराने से बच्चों की ज्वरावस्था में होने वाले आक्षेप में लाभ होता है। जब दौरे कम हो जांय, तब औषधि की मात्रा कम कर देनी चाहिए।

—वैद्य भंवरलाल गोठेचा द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(११९) जहरमोहरा खताई पिष्टी, प्रवाल, स्वर्ण सूतशेखर प्रत्येक ३-३ रत्ती लेकर तीन पुड़िया बना लें। दिन में ३ मात्रा माता के दूध के साथ सेवन करावें। अगर बच्चा मां का दूध नहीं पीता है, तो गाय के दूध के साथ प्रयोग करावे। इस मिश्रण के प्रयोग से कुछ दिनों में दुर्बल बच्चा भी पुष्ट हो जाता है। कैलशियम की कमी से होने वाले रोग दूर होते हैं।

(१२०) मलावरोध के कारण अगर बच्चे का बार-बार पेट फूलता हो और उसकी आयु १-२ वर्ष तक हो, उसके पेट में कृमि न हों, तो अजवायन ३ ग्राम, हीरा हींग २ रत्ती, सेंधा नमक ४ रत्ती, वच १॥ ग्राम, जायफल १॥ ग्राम तथा तिली का शुद्ध तैल ५० ग्राम लेकर तैल सिद्ध कर लें। इस तैल की पेट पर हलके हाथ से मालिश करने से बच्चे का मलावरोध दूर होता है और पेट फूलना दूर हो जाता है। इसकी अधिक मालिश से अधिक दस्त हो जाते हैं, इसलिए आवश्यकतानुसार सावधानी से इसका प्रयोग करना चाहिए।

—पं० मुरारीलाल त्रिपाठी द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(१२१) रस सिन्दूर ६ ग्राम, गोदन्ती भस्म, प्रवाल-पिष्टी, कच्छपपृष्ठ भस्म, वंशलोचन असली, पीपल छोटी, गिलोय सत्व, इलायची छोटी, अतीस प्रत्येक १०-१० ग्राम। इन सम्पूर्ण औषधियों को पीसकर पुनः भस्म तथा रससिन्दूर को पीसकर पूरी दवा में मिला दें। ¼ रत्ती से ½ रत्ती तक दिन में ३ बार मां के दूध के साथ या गाय या बकरी के दूध के साथ सेवन कराने से बच्चों के सूखा रोग, अतीसार, कास, ज्वर, दांत निकलते समय के रोग; चिड़चिड़ापन आदि विकार दूर होते हैं। बालक को इसके कुछ दिनों तक प्रयोग कराने से पुनर्जीवन मिलता है।

—श्री रामगोपाल गुप्त द्वारा
धन्वन्तरि गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(१२२) अजवायन देशी १ ग्राम, केशर असली ४ रत्ती; मोंम देशी १० ग्राम, जैतून तैल १० ग्राम, तैल बाबूना १० ग्राम। प्रथम ३ औषधियों को दोनों तैलों में पीसकर अग्नि पर जलावें और कपड़े में छानकर तैल में मोंम मिलाकर मलहम बना लें। इस मलहम को छाती पर मलने से बालकों के उब्बारोग, कास, सर्दी आदि विकार दूर होते हैं।

—पं० सुरेशदत्त शर्मा द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(१२३) कटकरंज गिरी १० ग्राम, पीपर ६ ग्राम, मुलहठी ६ ग्राम, सुहागे का लावा ६ ग्राम। सुहागे के अतिरिक्त उपरोक्त तीनों वस्तुओं का कपड़छान चूर्ण कर अलग-अलग उपरोक्त मात्रा में ले लेवें और बाद में सुहागे का फूला बनाकर मिला दें। बाद में पानी में पीसकर ३-३ रत्ती के प्रमाण की गोलियां बना लें। बच्चों की

आयु के अनुसार ½-१ गोली शहद के साथ चटाने से बच्चों के सब प्रकार के ज्वरों में लाभ होता है।

—श्री व्यासराम कविराज द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(१२४) गोदन्ती हरताल भस्म १०० ग्राम, गन्धक आमलासार [दूध से शुद्ध किया हुआ] २० ग्राम दोनों को खूब बारीक पीसकर शीशी में भरकर रख लें। २-३ रत्ती तक मधु, घृत, शर्करा अथवा दूध के साथ दिन में २-४ बार सेवन कराने से बालकों के ज्वर, अतीसार, मन्दाग्नि, अरुचि, वमन आदि विकार दूर होते हैं।

—वैद्य गोपाल जी कुंवर जी ठक्कर द्वारा
धन्वन्तरि गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(१२५) रस सिन्दूर ३ ग्राम, यशद भस्म १॥ ग्राम, मुक्तापिष्टी (अभाव में मुक्ताशुक्ति) ६ ग्राम, गोदन्ती भस्म १० ग्राम, गोरोचन १॥ ग्राम, सबको बारीक पीसकर रख लें। १-२ रत्ती तक मधु में चटाने से बालकों के सूखा रोग में लाभ होता है। यह योग "बाल पञ्चभद्र" के नाम से जाना जाता है।

—पं० यादव जी त्रिक्रम जी द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(१२६) खूबकलां ४० ग्राम, अनविधे मोती १ ग्राम, स्वर्ण के वर्क १ ग्राम ले लें। पहले खूबकलां को गर्म पानी में धोकर स्वच्छ करके पोटली बांध लें और अजा-दुग्ध २ लिटर में दोलायन्त्र से मन्दाग्नि पर पकावें। जब दूध गाढ़ा हो जाय, तब पोटली निकालकर छाया में सुखा लें, फिर वस्त्रपूत चूर्ण कर रख लें। मुक्ता तथा स्वर्ण के वर्कों को अर्क वेदमुश्क में निरन्तर सात दिन तक खरल करके रखना चाहिए। खूबकलां १ ग्राम में २ चावल भर स्वर्ण मुक्ता घुटी हुई लेकर गोदुग्ध के साथ सेवन करानी चाहिए। यह १ मात्रा है, ऐसी २ मात्रा सुबह, शाम कुछ दिनों तक सेवन कराने से सूखा रोग में लाभ होता है। —वैद्य मोहरसिंह आर्य द्वारा
सफल सिद्ध प्रयोगांक से

(१२७) जहरमोहरा भस्म ३ ग्राम, हजरूलयहूद ४ ग्राम, मीठा अतीस ५ ग्राम, गोदन्तीभस्म ६ ग्राम तथा कुमारकल्याण घुटी १½ ग्राम सबको ६ गुने गुलाब-जल में घोटकर रखलें २-३ रत्ती सुबह दोपहर शाम गधी के दूध में मिलाकर देने से सूखा रोग में लाभ होता है। अतीसार में शहद या बेल के मुरब्बे के साथ तथा ज्वर कास में शर्बतबनफसा से देने से लाभ होता है।

—वैद्या प्रकाशवती देवी द्वारा
सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(१२८) हरड़ देशी, मिर्च काली, रसौत, चूक सभी समानभाग लेकर कूटकर महीन कपड़े से छानकर गर्म जल से पीसकर चना प्रमाण गोली बनाकर छाया में सुखालें, बच्चों को कैसा भी निमोनिया हो और उसके कारण पसलियां चलती हों तो १ वटी मां के दूध में घोलकर *कुछ गर्म कर बच्चे को पिलादें तथा ३-४ गोली पीसकर* मां के दूध में मिलाकर गर्म कर सुहाता सुहाता पीड़ित स्थान पर लेप करदें १-२ बार के प्रयोग से ही रोग की तीव्रता घट जाती है। और बाद में रोग से बच्चा मुक्त हो जाता है। —पं० गंगासहाय शर्मा द्वारा
प्रयोग मणिमालांक से।

(१२९) अक्सर तलाव व तलईयों में घोंघा मिल जाता है। उसके अन्दर एक प्रकार का कीड़ा होता है। निकालने पर मांस का टुकड़ा जैसा मालूम होता है (इसे कहीं-कहीं बिकारी कहते हैं) कीट सहित उस घोंघा को लाकर गाय के घी में जलावें जब भस्म हो जाय तब निकालकर खरल में डालकर पीसलें। १ वर्ष के बालक को १-२ रत्ती, ३-७ वर्ष के बालक को ६-१२ रत्ती तक माता के दूध के साथ, तुलसीपत्र स्वरस या शहद के साथ सेवन कराने से बच्चों के सूखारोग में विशेष लाभ होता है। —वैद्य रामप्यारेलाल द्वारा
प्राणाचार्य प्रयोग मणिमालांक से।

(१३०) गाय का मूत्र, लहसुन का रस, प्याज का रस तीनों ६०-६० ग्राम तथा रेवन्दचीनी का सीरा १० ग्राम घोटकर छान लेवें। छानने के बाद उसमें १० ग्राम रेक्टीफाइड स्प्रिट मिला देवें। इस मिश्रण को ३-३ बूंद मां के दूध या गरम पानी में घोलकर बच्चे को देने से पसली चलना, निमोनियां, आध्मान आदि विकार दूर होते हैं। —पं० लक्ष्मीचन्द जामोरिया द्वारा
प्रयोग मणिमालांक से।

(१३१) काले तिल ६० ग्राम, जामुन का सिरका ६० ग्राम तथा मुर्गी के एक अण्डे की जर्दी ले लें। पहले सिरका में तिल खूब बारीक पीसले, फिर उसमें अण्डे की जर्दी मिलादे इतना घोटे कि तीनों चीजें एक हो जायं। फिर ५० फाये मोटे कपड़े के (८ अंगुल चौडा तथा ६ अंगुल लम्बा हर फाया होना चाहिये) ले लें। यह सब फाये बारी-बारी से उपरोक्त मिश्रण में भिगोकर ५-५ मिनट के बाद तालु पर रखकर बदलने चाहिये। यह प्रयोग ७ दिन तक कराने से बच्चों के सूखारोग में लाभ हो जाता है।

—डा० कुंवर घनश्याम नारायणसिंह द्वारा प्रयोग मणिमालांक से।

(१३२) यदि सूखा रोग में अग्निमांद्य न हो तो उस अवस्था में विदारीकन्द का चूर्ण तथा जौ का आटा दोनों समभाग लें इसमें वंशलोचन, मुलहठी का सत्व, आटे के अष्टमांश मिलाकर घी में हलुआ बनाकर खिलाने से लाभ होता है।

—ब्रह्मानन्द त्रिपाठी द्वारा धन्वन्तरि शिशुरोगांक से।

(१३३) चिमगादड़ की ताजी गीली विष्टा और ताजी न मिलने के अभाव में सूखी विष्टा सूखा रोग की उत्तम दवा है। बच्चे की आयु और शरीर के प्रमाण के अनुसार ५ ग्राम से ३० ग्राम तक लेकर किञ्चित् पानी मिलाकर लेप सा करले। और शाम के समय रोगी के सर्वांग शरीर पर लगाकर धीरे-धीरे धीमे हाथों से मर्दन करें। शरीर के अच्छी तरह सूख जाने पर बच्चे को वस्त्र पहनाकर सुला दें। प्रातःकाल जल्दी सुखोष्ण जल से स्नान करावें और महीन वस्त्र से हल्के-हल्के पोंछें। इस प्रकार सप्ताह में दो बार अथवा कोई अनिष्ट प्रभाव न दीखने पर ३-४ बार यह प्रयोग किया जा सकता है। व्याधि की उग्रता अथवा जीर्णावस्था होते हुये भी अधिक से अधिक तीन सप्ताह तक इसका प्रयोग करना चाहिये। बाद में १ सप्ताह छोड़कर पुनः प्रयोग कराया जा सकता है। अधिक से अधिक ३ माह में इस प्रयोग से बच्चा ठीक हो जाता है। स्नान में साबुन या बेसन अथवा तैल का उपयोग हर स्नान पर नहीं करना चाहिये किन्तु सप्ताह में १ बार कराया जा सकता है।

—वैद्य नटवरलाल शास्त्री द्वारा धन्वन्तरि शिशुरोगांक से।

(१३४) टंकण (सुहागे) का चूर्ण बना मधु में मिलाकर या ग्लिसरीन में मिलाकर मुंह में बुरकाने से या छोटी इलायची १ ग्राम, बड़ी इलायची १ ग्राम, गिलोयसत्व ३ ग्राम, वंशलोचन ३ ग्राम, मिश्री २० ग्राम सभी का वस्त्रपूत चूर्ण कर मुख के छालों पर बुरकते रहने से बच्चों के मुखपाक में लाभ होता है।

—कविराज जगदीशचन्द्र भारद्वाज द्वारा धन्वन्तरि शिशुरोगांक से।

(१३५) ताजे आवले छाया में सुखालें, तथा उनका सूक्ष्म चूर्ण करलें इसमे ताजे आवलों के रस की २१ भावना देकर सुखालें। यह आंवले का चूर्ण २० भाग, कान्तलौह भस्म ३ भाग, माण्डूर भस्म, स्वर्णमाक्षिक भस्म, अभ्रक भस्म, प्रवाल भस्म प्रत्येक ३-३ भाग इन सबको घोटकर रखलें। बच्चे को १-२ रत्ती तक मधु के साथ सेवन कराने से बालकों के स्कर्वी रोग में लाभ होता है।

—पं० रामस्वरूप वैद्य द्वारा धन्वन्तरि शिशुरोगांक से।

(१३६) नीलाथोथा ३ ग्राम, शुद्ध जयपाल के बीज १२ ग्राम, शुण्ठी ३६ ग्राम इन तीन औषधियों को बारीक पीसकर कपड़छन चूर्ण बनाकर तुलसी के स्वरस में ३ घण्टा पर्यन्त मर्दन करके ¼-¼ रत्ती की गुटिका बनाकर शीशी में सुरक्षित रखें। न्यूमोनियां की अवस्था में १ गोली माता के दूध तथा मधु के साथ देने से उल्टी या अतीसार होकर कफ निकलकर न्यूमोनियां में आराम हो जाता है। अगर १ गोली देने से वमन या अतीसार न हो तो दूसरी गोली भी दी जा सकती है। वमन तथा अतीसार होने पर गोदन्ती भस्म, श्वासकुठार रस, माणिक रस, शंखभस्म ¼-¼ रत्ती मिलाकर १ मात्रा बनाकर तुलसी स्वरस के साथ सेवन करावें। उपरोक्त दोनों प्रयोगों से बच्चों के निमोनियां में लाभ होता है।

—महन्त भगवानदास वैद्य द्वारा शिशुरोगांक से।

(१३७) मुर्गी के अण्डे की सफेदी लेकर उसी के बराबर पालक का रस लेकर दोनों मिलाकर कई दिन घुटाई करे जब सूखा चूर्ण बन जाय तो बालक की आवश्यकतनुसार ३-५ रत्ती तक दूध के साथ सेवन कराने से सूखा रोग मे अवश्य लाभ हो जाता है।

—डा० देवीसहाय आयुर्वेदाचार्य द्वारा धन्वन्तरि शिशुरोगांक से।

(१३८) चने की दाल तथा गूलर का दूध ले लें। एक पात्र मे चने की दाल डालकर उस पर इतना गूलर का दूध डाले कि दाल तर हो जावे। जब दाल फूल जाय तो पीसकर चने प्रमाण गोलियां बनालें। १ गोली प्रतिदिन प्रातःकाल गधी के दूध के साथ सेवन कराने से बालशोष मे विशेष लाभ होता है।

(१३९) हरड़, बहेड़ा, आंवले के फलों के छिलकों का महीन चूर्ण १० ग्राम, लोध्र चूर्ण १० ग्राम, पुनर्नवामूलत्वक् चूर्ण १० ग्राम, शुण्ठी चूर्ण १० ग्राम, छोटी कटेरी १० ग्राम सब द्रव्यों को मिलाकर रखलें आवश्यकता के समय उपर्युक्त लेप को पानी में घोलकर एक पात्र में डालकर पकावे। इस लेप को बालकों के पलकों पर सुखोष्ण लेप करदें। इस लेप को लगातार १० दिन तक प्रयोग करने से बालकों का कुकूणक रोग समूल नष्ट हो जाता है।

(१४०) हीग १० ग्राम, सोंठ १० ग्राम, सेंधा नमक १० ग्राम, सफेद मदार की जड़ की त्वक् १० ग्राम, रसौत १० ग्राम सबको जल मे पीसकर कल्क बनालें फिर इस कल्क को १०० ग्राम सरसों के तैल में छोड़कर तैल पाक विधि से तैल सिद्ध करलें। इस तैल के प्रयोग से बालकों के कर्णशूल में शीघ्र लाभ हो जाता है।

—पं० हर्षुलमिश्र द्वारा शिशुरोग चिकित्सांक से।

(१४१) भुनी हीग, सोंठ, पीपर, छोटी हरड़, सौंफ, वायविडङ्ग, सुहागे की खील तथा मुलहठी प्रत्येक समान भाग लेकर कपड़छान चूर्ण करें। मां के दूध, या शहद आदि के साथ २-४ रत्ती तक सेवन कराने से बच्चों के कास, श्वास, उदर विकार, कृमिरोग, शूल, अजीर्ण, अतीसार, प्रवाहिका आदि में लाभ होता है।

(१४२) कायफल, कुटकी, तुलसी, काकड़ासिङ्गी, कपूर तथा पिप्पली सबको समभाग लेकर महीन चूर्ण करलें। १-६ रत्ती तक बच्चे की आयु के अनुसार मधु में मिलाकर सेवन कराने से बच्चों के विभिन्न प्रकार के ज्वरों यथा क्षुद्रज्वर, विषमज्वर, कफज्वर, कास, श्वास, पार्श्वशूल आदि में लाभ होता है। अजीर्ण में भी लाभदायक है।

(१४३) यवक्षार, काकड़ासिङ्गी, अतीस, मुलहठी, छोटी पीपर, तुलसी इनका समभाग चूर्ण मधु से सेवन करने से कुकरकास आदि कास में प्रयोग कराने से लाभ होता है। —श्री जगदम्बा प्रसाद श्रीवास्तव द्वारा सुधानिधि शिशुरोग चिकित्सांक से।

(१४४) सूखे लभेड़े जलाकर रखलें तथा उसकी राख को घृत में मिलाकर बच्चों की कांच पर चुपड़ दें, तथा हाथ मे अन्दर करदें इसके प्रयोग से थोड़े दिनों में ही कांच का निकलना (गुदभ्रंश) बन्द हो जाता है।

(१४५) सेन्धानमक २ भाग, कच्चा गेरू २ भाग तथा कपर्दभस्म लेकर बारीक पीसकर रखलें। तथा बालकों के मसूड़ों पर माता के दुग्ध में मिलाकर दिन में ३-४ बार रगड़ने से बच्चों के दांत आसानी से निकल आते हैं तथा बच्चों को परेशानी कम होती है।

(१४६) वंशलोचन, केशर, कुलंजन, राई, अकरकरा; नवसादर सब समानभाग लेकर बारीक पीसकर शहद में मिलाकर जीभ पर मलने से बच्चों के हकलाने में लाभ होता है।

(१४७) अडूसे की जड़, आंवला, कत्था, गिलोय, नीम की छाल; परवल के पत्ते, बहेड़े का वक्कुल, हरड़ का वक्कुल सभी ६ ६ ग्राम लेकर सभी वस्तुओं को कूटकर ८ मात्रा बनानी चाहिये। १ मात्रा औषधि सिल पर पीसकर आधा किलो पानी में घोलकर पकावें जब चतुर्थांश रह जाय तब छानले तथा धीरे-धीरे १-१ चम्मच पिलाकर १ घण्टे में सब पिलादे प्रातः-सायं इसी प्रकार सेवन कराने से बच्चों की चेचक का बैठ जाना तथा ठीक प्रकार से उभार नहीं होना, ज्वर की तीव्रता आदि उपद्रव ठीक हो जाते हैं। अति उत्तम प्रयोग है।

—वैद्यराज देवीनारायण जी गर्ग के संग्रहीत प्रयोगों से।

(१४८) कुटकी २५ भाग, अतीस ५० भाग, प्रवाल-पिष्टी ५० भाग, रेवन्दचीनी २०० भाग, सत्तगिलोय १०० भाग, मीठा सोडा १०० भाग कूट-पीसकर मैदा के समान चूर्ण वनाकर खरल में लगभग १२ घण्टे घुटाई करके रखलें। २-४ रत्ती मां के दूध के साथ दिन में ३-४ वार सेवन कराने से वच्चों के दन्तोदभेद कालीन ज्वर, कास, अपचन जन्य विकार दूर होते हैं। ऐसे वालक जिनको किसी न किसी कारण से मन्द ज्वर बना रहता हो इस मिश्रण के प्रयोग से कुछ दिन में ही ठीकहो जाते हैं।

(१४९) वड़ी हरड़ (अधिकतम जितनी वड़ी प्राप्त हो) को जल के साथ पत्थर पर चन्दन के समान घिसकर मूंग वरावर काला नमक डालकर कुछ गुनगुना कर २४ घण्टे में १ वार देते रहने से वालकों के अपचन सम्वन्धी विकार, मलावरोध, आध्मान आदि नहीं सताते। इससे वालक की पाचन प्रणाली सक्रिय रहती है।

—श्री उमाशंकर दाधीच द्वारा
सुधानिधि शिशुरोग चिकित्सांक से।

(१५०) कडवीनाय की मूल १०० ग्राम तथा कालीमरिच २५ ग्राम को मिलाकर कूटकर कपड़छन चूर्ण करें। ½-२ रत्ती तक दिन में ३ वार सेवन करावें। यह ज्वरान्तक चूर्ण वालकों के ज्वर के लिये अति हितावह है। मलावरोध, अपचन कफ प्रकोप आदि को दूर करता है। यदि पतले दस्त होते हों तो इसमें फिटकरी का फूला १ रत्ती मिलाकर सेवन करने से लाभ होता है।

(१५१) केंचुये गीले २०० ग्राम को तिल तैल ६०० ग्राम में मिलाकर अति मन्द अग्नि पर पकावें। तैल पक जाने पर कड़ाही उतारकर तुरन्त छान लेवें। यह तैल वालशोष पर अति लाभदायक है प्रतिदिन रात्रि को सम्पूर्ण शरीर में मालिश कराते रहने पर सूखारोग में लाभ हो जाता है। —रसतन्त्रसार द्वितीय भाग से।

(१५२) यदि वच्चा शैया पर पेशाव कर लेता हो तो होम्योपैथी की सीपिया २०० शक्ति की गोलियां वहुत फलप्रद हैं केवल ४ गोलियां सरसों वरावर नित्य दे दिया करें। प्रथम दिन में ही पूर्णलाभ देखने को मिलता है।

—रामस्नेही अवस्थी द्वारा
धन्वन्तरि जनवरी ७६ से।

(१५३) वटजटा १ भाग, रुद्राक्ष असली १ भाग, भांग का चूर्ण १ भाग तीनों को सूक्ष्म चूर्ण करके रखलें। ३-३ रत्ती दिन में ३-४ वार जल, गोदुग्ध, अजादुग्ध अथवा माता के दुग्ध के साथ सेवन कराने से शोषरोग से पीड़ित वालक हृष्ट-पुष्ट हो जाता है। जिस स्त्री के वालक शोषरोग से ग्रसित होकर मर जाते हों वह स्त्री गर्भावस्था में ही इस औषधि का सेवन निरन्तर करती रहे तो वालक दीर्घायु होकर जीवित रहते हैं।

(१५४) रेवन्दखताई १ भाग, दरियाई नारियल १ भाग, माजूफल १ भाग, हल्दी १ भाग, छुहारा १ भाग, वादाम गिरी १ भाग, जहरमोहरा १ भाग, रसौत १ भाग सबको अर्क गुलाव या साधारण जल में मर्दन कर रखलें। २ रत्ती की मात्रा दिन में ३-४ वार सेवन कराने से वालशोष, दुर्वलता आदि सामान्य विकारों में लाभ होता है। —श्री बन्सरीलाल साहनी द्वारा
शिशुरोग चिकित्सांक से।

(१५५) कछुये की पीठ का टुकड़ा १ ग्राम, चूल्हे की जली मिट्टी १ ग्राम, शुद्ध सुहागा १ ग्राम, विना वुझा सूखा कलई का चूना १ ग्राम, मिश्री ३ ग्राम सवको एकत्र कूट-पीसकर गंगाजल में ६ घण्टे तक घोटलें फिर मटर वरावर गोलियां वनाकर छाया में सुखालें। वालक की आयु के अनुसार १-२ गोली प्रातः-सायं गोमूत्र में घोलकर सेवन कराने से वालशोष में लाभ होता है।

(१५६) कुछ तन्त्र एवं मन्त्र प्रयोग—वालशोष के रोगी के सिरहाने एक छोटा कूष्माण्ड (पेठा) लाल वस्त्र में जो वालक का पहना हुआ हो लपेटकर ७ वार वच्चे पर फेरकर शनि की रात्रि को सिरहाने रखदें। प्रातः विना बोले उसे उठाकर समीप की नदी या जलाशय के किनारे उस पेठे को खोलदें। "तेरा हरा तू ले और हमारा हरा हमको दे" यह मन्त्र वोलकर लपेटने वाले लाल वस्त्र को पानी में डुवोकर विना निचोड़े ही १ भाग हाथ में पकड़कर घर ले आवें और सूखने पर वालक को पहिना दें। इस प्रयोग के कुछ ही दिन वाद वालक विना दवा के ही स्वस्थ हो जायगा।

(१५७) वालकों की दृष्टिदोष पर चौराहे की कंकड़ सहित मिट्टी १ मुट्ठी, राई व नमक सांभर विना पिसा

१ मुट्ठी दोनों को मिलाकर बच्चे के सिर से पैरों तक ७ वार वांयें से दायें वार कर चारों दिशाओं में सायंकाल के समय में थोड़ा फेंकदे शेष बचा भाग चूल्हे में डालकर उसका धुंआं बालक के शरीर में लगावें। एक बार में ही लाभ हो जाता है।

(१५८) "ॐ नमो नृसिंहाय हिरण्य कश्यपु वक्ष स्थल विदारणाय त्रिभुवन व्यापकाय भूत प्रेत पिशाच शाकिनी डाकिनी कीलनोत्मूलनाय स्तंभोद्भव समस्त दोषान् हन-हन सर-सर चल-चल कम्प-कम्प मथ-मथ हुंफट-हुंफट ठंठं महारुद्र जापित स्वाहाः।।"

उपरोक्त मन्त्र को नृसिंह मन्त्र कहते हैं। इस मन्त्र को शरद पूर्णिमा, महाशिव रात्रि, होली, दिवाली, रामनवमी, जन्माष्टमी या नृसिंह जयन्ती की रात्रि में १२१ बार धूप, दीप के सामने जपकर सिद्ध कर लेना चाहिये फिर बालक को सामने बैठाकर कुशा हाथ में लेकर मन्त्र का उच्चारण करते हुये ७ बार से २१ बार तक झाड़ देने से व उसी कुशा को बालक के दाहिने हाथ में बांधने से दृष्टिदोष दूर होता है। —पं० व्यापक रामायणी द्वारा सुधानिधि शिशुरोग चिकित्सांक से।

(१५९) सूखारोग के लिये एक विशेष मान्त्रिक तान्त्रिक योग—

सात सरीसो सो रह गई। बैठल योगिन तेल परोई।।
से तेल में लगे लिलारा। तुम बांधों आस-पास,
मोहि बांधो छव मास।।
छव मास में किया खेती। भूत वैताल समिटो।।

अञ्जनि के मन्त्र जहां वे तहां जाये। सतगुरु के वन्दे पांव सिद्ध के दोहाई इसी के साथ—इयं कुमारी ब्रह्मचारिणी दृष्टिदोष निवारण हनुमन्तं स्मराम्यहम।

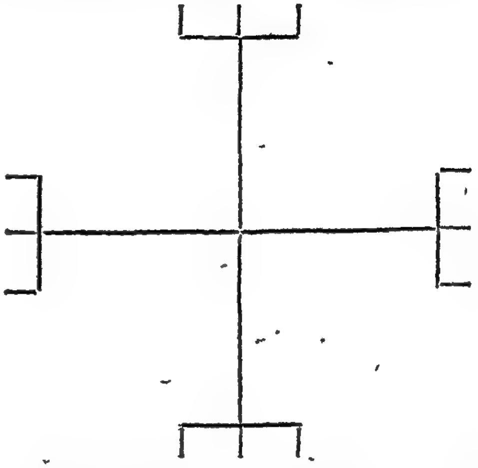

इस उपरोक्त यन्त्र को जमीन पर बनालें। गाय के गोयठा (कंडा) से आग जलाकर बकरी के दूध में बिना चीनी के ही धोंधों से खीर बनावें। कुमारी कन्या के द्वारा कते सूत को धोंधों मे ११ बार लपेटें। उपर प्रथम दिये मन्त्र को पढ़कर ११ बार झाड़ें। खीर रोगी के हाथ में रखें व बाद में यही खीर रोगी को खिलावें इससे सूखा रोग एक बार में ही छूट जाता है। —श्रीराम वृक्ष द्वारा धन्वन्तरि सूखा रोगांक से।

[आ] अनुभूत एवं परीक्षित प्रयोग

(१) अतिविषादि टिंचर—अतीस १५ ग्राम तथा मुलहठी, नागरमोंथा, काकड़ासिंगी, पीपल, वच, वायविडङ्ग, जायपत्री, जायफल तथा केशर १०-१० ग्राम सबका चूर्ण कर उसमें ३ ग्राम कस्तूरी मिलाकर सबको बोतल में भरकर उसमें लगभग ½ किलो शुद्ध मद्य या रैक्टीफाइड स्प्रिट डालकर मजबूत कार्क बन्द कर ७ दिन तक धूप में रखें। ८ वें दिन मसलकर ब्लॉटिंग पेपर में छानकर रखें।

मात्रा—१ बूंद से १० बूंद तक पानी या माता के दूध में मिलाकर देने से बच्चों की सर्दी, खांसी, कफ, निमोनियां आदि बालकों के अनेक भयंकर रोगों में इससे लाभ होता है। —वनौषधि विशेषांक प्रथम भाग से।

(२) अकरकरादि वटी—अकरकरा ४ भाग, जायफल ३ भाग, लौंग, पीपरामूल तथा केशर २-२ भाग, दालचीनी ३ भाग, अफीम १ भाग, भांग तथा मुलहठी ४-४ भाग, आक की जड़ की छाल ५ भाग, वायविडङ्ग ३ भाग और शहद ५ भाग।

विधि—सब वस्तुओं का चूर्ण करलें बाद में शहद मिलाकर छोटी-छोटी गोलियां बनाकर रखलें।

मात्रा—½-२½ रत्ती तक दूध से।

उपयोग—बच्चों का चिड़चिड़ापन, दांत निकलते समय की पीड़ा, अतीसार, उदरशूल वमन आदि विकार दूर होते है। —वनौषधि विशेषांक प्रथम भाग से।

(३) कालमेघ वटी—कालमेघ का पत्र रस ४० ग्राम में बड़ी इलायची के दाने, दालचीनी, जायफल तथा श्वेत भुना जीरा ६-६ ग्राम, भुनी हींग ३ ग्राम।

विधि—सब चीजों का महीन चूर्ण कर मटर जैसी गोलियां बनालें।

मात्रा—१-१ गोली सुबह-शाम दूध मे या जल में घोलकर सेवन करावें।

उपयोग—बच्चों की दुर्बलता, अग्निमान्द्य, मरोड़, अतीसार में विशेष लाभ होता है।

—वनौषधि विशेषांक भाग २ से

(४) बालामृत शर्बत—कुचला के शुद्ध बीजों का चूर्ण तथा अनार के फूल ५०-५० ग्राम, शुद्ध चौकिया सुहागा, केशर, श्वेत चन्दन का बुरादा २०-२० ग्राम, सौंफ तथा गुलाब के फूल १००-१०० ग्राम सबको लेकर १० किलो पानी में पकावे। २ किलो शेष रहने पर छानकर २ किलो मिश्री मिलाकर चाशनी शर्बत की तैयार करलें।

मात्रा—छोटे बच्चों को ½-१ चम्मच दोनों समय माता या बकरी के दूध के साथ सेवन करावें।

उपयोग—बच्चों के रोगों में बहुत लाभकारी पेय है कास, श्वास, सूखा रोग, निर्बलता आदि नष्ट होकर बालक पुष्ट हो जाता है। —वनौषधि विशेषांक भाग २ से।

(५) कली बालामृत शर्बत—नागफनी के पके फलों का रस तथा कली चूने का नितरा हुआ जल ३००-३०० ग्राम लेकर रखदें। बायविडङ्ग, सौंफ, सतावर ५०-५० ग्राम का जौकुट १½ किलो जल में भिगोदें। १४ घण्टे बाद चतुर्थांश क्वाथ सिद्ध कर छानकर उसमें उक्त फलों का रस तथा चूने का नितरा जल मिलादें। तथा २। किलो चीनी डालकर शर्बत की चाशनी तैयार करलें।

मात्रा—१० ग्राम प्रात-सायं (यह १ वर्ष के बच्चे की मात्रा है छोटे बच्चे को ५ ग्राम देनी चाहिये) दूध में मिलाकर सेवन कराना चाहिये।

उपयोग—इससे बच्चों का बढ़ा हुआ यकृत्, साधारण बड़ी प्लीहा, दूध के अजीर्ण से होने वाले वमन, पतले दस्त, मन्दाग्नि, उदर कृमि, दौर्बल्य तथा हड्डियों की कमजोरी दूर होती है।

—वनौषधि विशेषांक भाग से।

(६) बालरोगनाशक कणासव—पीपल छोटी, बायविडङ्ग, नागरमोथा, मुलहठी का सत्व, काकड़ासिंगी, जायफल, जावित्री, अतीस, दूधिया वच, केशर प्रत्येक १०-१० ग्राम, कस्तूरी ४ ग्राम, उत्तम सुरा ४०० ग्राम।

विधि—एक स्वच्छ अमृतवान में प्रथम इन दवाओं को कूट छानकर रखदें, फिर एक बड़ी शीशी लेकर उसमें सुरा डालकर कस्तूरी को घोल कर डाल दें मिल जाने पर उपर्युक्त औषधियों का कुटा चूर्ण भी डाल देवें। और १०-११ दिन तक डाट लगाकर वह शीशी रखी रहनें दें प्रातः-सायं ४-५ बार हिला दिया करें। बारहवें दिन छान साफकर दूसरी शीशी में रखलें।

मात्रा—२-३ बूंद।

उपयोग—बच्चों के अपच, हरे पीले दस्त, ज्वर, वमन आदि सामान्य विकारों में बहुत लाभदायक योग है थोड़े दिनों के सेवन मात्र से बच्चा हृष्ट-पुष्ट हो जाता है। —पं० चन्द्रशेखर जैन द्वारा धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(७) कुमारकल्याण रसायन—बिना बुझा चूना कलई ३०० ग्राम, अंगूर का स्वरस ६०० ग्राम, सन्तरा स्वरस १०० ग्राम, ताजा जल १ किलो २०० ग्राम। मिश्री ३०० ग्राम तथा मृतसंजीवनी सुरा (अभाव में मदिरा) १०० ग्राम।

विधि—प्रथम मदिरा के अलावा शेप तरल वस्तुओं को एकत्रित कर कलईदार पात्र में बिना बुझी चूना कलई डालकर मिश्री आधी पीसकर डालदें। शेष आधी मिश्री तथा मदिरा अलग रख छोड़ें तदनन्तर उसे चूने में एकत्रित तरल पदार्थ छोड़दें और ढककर रखदें। दो पहर पश्चात् घोलकर निथरने के लिये रखदें। जब शुद्ध साफ द्रव ऊपर आ जाय तो उसे धीरे-धीरे अन्य पात्र में ले लें। जब कुल निथरा हुआ द्रव उतार लें तब उसको भबका

यन्त्र द्वारा अर्क खींचले। उस अर्क में शेष मिश्री पीसकर तथा सुरा मिला दें बस दवा तैयार हो गई यह रङ्ग रूप में ग्राइपवाटर के समान दिखलाई देगी।

मात्रा—३ मास तक के बालक को १५-१५ बूंद माता के दूध में ३-६ माह वाले बालक को २५ बूंद जल या माता के दूध के साथ। ६ माह से १॥ वर्ष के बालक को ३०-६० बूंद तक जल से सेवन करावें।

उपयोग—बालकों के उदर सम्बन्धी विकार तथा दांत निकलते समय की व्याधियां, दौर्बल्य तथा सूखारोग पर आश्चर्यकारी गुण रखता है।

—वैद्य वीरेन्द्रदेव आयुर्वेदाचार्य द्वारा
धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(८) बालरोगामृत चूर्ण—वंशलोचन, सौंफ, काकड़ासिंगी, सूखे अनार के फल की ग्रीवा, हरीतकी, गिरी बादाम (पूर्व भिगोकर छिलका उतारकर पुनः छाया में सुखाकर किसी द्रव्य में मिलाकर पिसा हुआ) प्रत्येक २०-२० ग्राम, छोटी इलायची, कचूर, विडङ्ग, कबीला, खूब का आटा (खुम्ब छत्रा जातीय वस्तु है जब पक जाती है काली हो जाती है। तथा मुलायम आटा सी हो जाती है), असगन्ध, शुद्ध गन्धक (सम. दुग्ध घृत में शोधित) प्रत्येक १०-१० ग्राम, नवसादर उड़ा हुआ, सौभाग्यभस्म, स्फटिका भस्म प्रत्येक ६-६ ग्राम, विजया ३ ग्राम, कर्पूर २ ग्राम, केशर १ ग्राम, शर्करा सबसे दुगनी ४२० ग्राम।

विधि—कूट पीस छानकर शीशी में भरलें।

मात्रा सेवन विधि—२-४ रत्ती तक सामान्य मात्रा है अधिक भी दी जा सकती है। माता के दूध या गाय के दूध के साथ, मधु में या वैसे ही चटायी जा सकती है।

उपयोग—बालकों के अनेक विकारों में यथा बालकास, दांत निकलते समय के रोग, वमन, हरे पीले दस्त, तालुपात, कृमि, मुखपाक, ज्वर आदि में लाभदायक है। बच्चों को रोज चटाने से वह हृष्ट-पुष्ट हो जाता है और उसे कोई विकार नहीं सताते।

—पं० दीनानाथ शर्मा द्वारा
धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(९) शर्बत बालामृत—दारुकाली, वच मीठी, कूठ मीठा, पीली हरड़ का छिलका प्रत्येक २००-२०० ग्राम, इन्द्र जौ २० ग्राम, उन्नाव, काकड़ासिंगी, छोटी पीपर, पंचकोल, षडङ्ग, सौंफ, धान्य पंचक प्रत्येक १००-१०० ग्राम, दरियायी नारियल, अतीस, नागरमोथा, गुलाब फूल १०-१० ग्राम, जहरमोहरा, गावजवां, बनफ्सा, अजवायन, पलाशबीज, अमलतास ५०-५० ग्राम, जल आठ गुना।

विधि—द्रव्यको यवकुट कर रात को भिगोकर प्रातः भवका से अर्क खींचलें फिर १ किलो अर्क में अन बुझा चूना ६० ग्राम के लगभग घोलकर तीन दिन बाद निथार लें फिर मिश्री १ किलो डालकर चाशनी बनालें।

मात्रा तथा सेवन विधि—१ माह से ६ माह तक ५-५ बूंद दिन में २ बार १ वर्ष तक १०-१० बूंद, १ साल से २ साल तक २०-२० बूंद, २-४ वर्ष तक ३०-३० बूंद दूध या जल में मिलाकर दें।

उपयोग—सूखा रोग, ज्वर, कास, हरे पीले दस्त आदि बाल विकारों में लाभदायक शर्बत है। इसके सेवन से बच्चे हृष्ट-पुष्ट तथा निरोग रहते हैं।

—पं० शालिगराम शर्मा द्वारा
धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(१०) प्रवाल पंचक—प्रवाल उत्तम, मुक्ताशुक्ति, जहरमोहरा खताई, राजावर्त, पत्थर बेर २०-२० ग्राम, अर्क गुलाब २ किलो।

निर्माण विधि—पांचों द्रव्यों को कूटकर सूक्ष्म पीसकर खरल में डालदें, प्रतिदिन १ पाव अर्क डालकर घुटाई करें इस तरह सम्पूर्ण गुलाबजल के खरल हो जाने के पश्चात् छाया में सुखाकर रखलें।

मात्रा—बच्चों को १-१ रत्ती दिन में २ बार शहद में मिलाकर चटाना चाहिये।

उपयोग—बच्चों के सूखारोग में लाभदायक है

—पं० किशोरीलाल शर्मा द्वारा
धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(११) बालशोष अवलेह—आंवले ४०० ग्राम, उत्तम मधु ४०० ग्राम, मिश्री ६०० ग्राम, गाय का घृत १०० ग्राम, पीपल छोटी ६ ग्राम, दालचीनी ६ ग्राम,

काकड़ासिंगी, गावजवां, गिलोयसत्व, गुलवनपसा, तालीस पत्र, इलायची दाने, वंशलोचन, मुलहठी छिली हुयी, वहेड़े प्रत्येक १०-१० ग्राम।

विधि—आंवलों को जल में पकाकर वीज तथा रेशे निकाल दें और सिल पर पीसकर घृत में भून लें। जिस जल में आंवले पके थे, उसी जल में चाशनी तैयार कर लें। वाद में अन्य चीजों का कपड़छन चूर्ण, भुने आंवले शहद में मिला दें।

व्यवहार—६ ग्राम से २० ग्राम तक प्रातः, सायं गाय के धारोष्ण दूध से या गाय के गर्म कर ठण्डे किये दूध से सेवन करावें।

उपयोग—यह वच्चों के क्षय तथा वालशोष के लिए अति उत्तम रसायन है। जब वच्चे सूखकर अस्थिपञ्जर मात्र रह जाते है, तव इस रसायन के सेवन से रोगमुक्त हो जाते है। बच्चों की कास, ज्वरान्त की दुर्वलता आदि विकार भी दूर होते है। —पं० गिरिजादत्त पाठक द्वारा धन्वन्तरि अनुभूत योगांक से।

(१२) वालजीवन वटी—गोरोचन ३ ग्राम, एलुआ ६ ग्राम, उसारे रेवन्द १० गाम, केशर असली १० ग्राम, कटहेरी का जीरा १० ग्राम, यवक्षार १० ग्राम, सत्यानाशी के वीज १० ग्राम।

विधि—सवको कूटकर कपड़े में छान लें, फिर अदरक के रस में दिनभर घोटकर मूंग के वरावर गोली वना छाया मे सुखा लें।

व्यवहार—मात्रा १ गोली मां के दूध या मधु में मिलाकर दें।

उपयोग—बच्चों का पसली चलना, पेशाव या अतीसार का साफ न आना, आध्मान, खांसी आदि शिकायतें दूर होती हैं। —पं० लक्ष्मीनारायण शर्मा वैद्यराज द्वारा धन्वन्तरि अनुभूत योगांक से।

(१३) वालशोषहरी वटी—स्वर्ण के वर्क, मुक्ता-पिष्टी, वंशलोचन, कछुये की खोपड़ी, केशर तथा सफेद इलायची के दाने प्रत्येक १-१ ग्राम।

विधि—केशर को गुलाब जल में घोटकर उस जल से यह समस्त औषधियां घोटें और मूंग के वरावर गोलियां वना लें।

व्यवहार—प्रतिदिन प्रातः, सायं १-१ गोली माता के दूध अथवा शहद में मिलाकर सेवन करावें।

उपयोग—वालशोष का रोगी बालक जव सामान्य औषधियों के प्रयोग से निरोग न हो, तो इस वटी का प्रयोग कराना चाहिए। यह सूखा रोग में निश्चित प्रभावकारी योग है। —पं० उमादत्त जी शर्मा द्वारा धन्वन्तरि अनुभूत योगांक से।

(१४) वाल अतीसार एवं कासवटी—सत्व लोहवान, भुना सुहागा, पीपरामूल, अफीम, लौंग फूलदार, काकड़ासिंगी, वालछड़, कटु अतीस, नमक सैंधव प्रत्येक ३-३ ग्राम, पान १० ग्राम, सत्व मुलहठी २० ग्राम

विधि—सवको पीसकर ज्वार जैसी गोलियां वनालें।

व्यवहार—१ गोली दिन में २-३ वार मां के दूध में घोलकर दें।

उपयोग—जिस वच्चे को अतीसार तथा खांसी साथ-साथ हो, उस अवस्था में अत्यन्त निरापद गोलियां है।

—वावू शिखरचन्द जैन द्वारा धन्वन्तरि अनुभूत योगांक से।

(१५) वाल कल्याण वटी—मोती अनविधे शुद्ध, जस्ता भस्म उत्तम, चौकिया सुहागा भुना, इलायची दाना चारों ३-३ ग्राम, गोरोचन १॥ ग्राम, काली मरिच १० ग्राम, अफीम शुद्ध ४ ग्राम, कर्पूर देशी, अतीस, शुद्ध हींग उत्तम, कच्चे विल्व का गूदा प्रत्येक ६-६ ग्राम।

विधि—इन ११ औषधियों को कूट-पीस कपड़छन करके छोटी दुद्धी के स्वरस की पांच भावना देकर मिर्च के वरावर गोली वना छाया में सुखाकर रख लें।

उपयोग—वालशोष तथा हर प्रकार की दुर्वलता तथा हरे-पीले दस्त, अजीर्ण, अफरा, मन्दाग्नि, कास तथा समस्त वाल रोगों के लिए अमृत तुल्य औषधि है।

(१६) वालसखा तैल—भांगरा, मकोय, घृत-कुमारी, छोटी दुद्धी, पान वंगला, तालमखाना देशी इन सवका स्वरस २००-२०० ग्राम, काले तिल का तैल १॥ किलो।

विधि—स्वरस तथा तैल कढ़ाही में डालकर मन्दाग्नि से सिद्ध कर छान उसमें दालचीनी का तैल, देशी कपूर १०-१० ग्राम डाल शीशी में बन्द कर रखें।

उपयोग—इस तैल से बालक के सर्वाङ्ग में मालिश करें और कानों में डालें तो सूखा रोग, ज्वर, अतीसार, सिर दर्द, दुर्बलता आदि बालकों के समस्त रोगों में लाभ होता है। —पं० अनन्तदेव शर्मा वैद्य द्वारा धन्वन्तरि अनुभूत योगांक से।

(१७) बालशोषान्तक रसायन—दरद योगेन जारित लोह भस्म ३ ग्राम, मकरध्वज, मुक्ता भस्म दोनों २-२ ग्राम, उत्तम अभ्रक भस्म १ ग्राम, प्रवाल भस्म, वंशलोचन दोनों ६-६ ग्राम, अतीस ३ ग्राम, सफेद इलायची दाना ६ ग्राम।

विधि—इन सबको घोटकर १-१ रत्ती प्रातः, सायं शहद के साथ सेवन करावें

उपयोग—बालशोष के रोगी के लिए बहुत उत्तम रसायन है।

(१८) बालशोषहर वटी—वंशलोचन, सफेद इलायची दाना, समुद्री नारियल, जहरमोहरा खताई, हजरत यहूद, जदरू, पद्माख प्रत्येक ६-६ ग्राम, अनविधे शुद्ध मोती ६ रत्ती।

विधि—सबको गुलाब जल में घोटकर सरसों के बराबर गोलियां बना लें।

मात्रा—मां के दूध के साथ या शहद मिलाकर सुबह, शाम १-१ गोली सेवन करावें।

उपयोग—बालशोष में उपयोगी वटी है।

—पं० गंगाप्रसाद स्वर्णकार द्वारा धन्वन्तरि अनुभूत चिकित्सांक से।

(१९) बाल अमृत बिन्दु—शतावरी स्वरस, अर्क सौंफ दोनों १-१ किलो, अतीस असली, इन्द्र यव, नागरमोंथा, मिर्च सफेद, सत् अजवायन, पिपरमैण्ट प्रत्येक ६॥-६॥ ग्राम, गिलोयसत्व १२ ग्राम, अफीम शुद्ध १५ ग्राम, कागजी नींबू का स्वरस १८० ग्राम, चूने का पानी ५० ग्राम, मिश्री बढ़िया १ किलो ७५० ग्राम।

विधि—अर्क सौंफ, शतावरी, चूने का पानी तथा मिश्री मिलाकर चाशनी बनावें। शर्बत के समान चाशनी बनने पर शुद्ध अफीम गरम पानी में घोलक फिर नीचे उतार-कर शेष दवायें कुटी-ि की हुई इसमें मिला दें। सबसे बाद में नींबू का स्वरस मिलावें और बोतलों में भर लें।

मात्रा एवं सेवन विधि—१ माह के बालक को दवा २ बूंद देनी चाहिए। उसी प्रकार ८ माह के बालक तक १-१ बिन्दु बढ़ाते जावें। फिर १ वर्ष तक मां के दूध में १० बूंद दें। २ वर्ष से ४ वर्ष तक के बालक को १५ बूंद देनी चाहिए।

उपयोग—बच्चों के अतीसार, संग्रहणी, शूल, कास, वमन, मन्दाग्नि, आध्मान, अजीर्ण आदि अनेक विकारों में बहुत लाभदायक बिन्दु है। अनेक बार का अनुभूत योग है।

(२०) बालशोषहर तैल—बंगला पान का अर्क, मकोय का स्वरस, तालमखाने की पत्ती का स्वरस, भांगरा स्वरस, घृतकुमारी का स्वरस, क्वाथ शालपर्णी का सभी १००-१०० ग्राम, बकरी का दूध १। किलो, काले तिल का तैल १। किलो।

विधि—इन आठों औषधियों को कढ़ाही में डालकर मन्दाग्नि से पकावें। तैल मात्र शेष रहने पर छानकर बोतलों में भर लें और १० ग्राम देशी कर्पूर, १० ग्राम दालचीनी का तैल, ३ ग्राम केशर असली मिला दें।

व्यवहार—बालक की रीढ़ पर अच्छी तरह मालिश करें और कानों में ३-३ बूंद डालें। यह क्रिया कई बार करने से बच्चे का बालशोष ठीक हो जाता है।

—श्री अनन्तदेव जी दीक्षित द्वारा धन्वन्तरि सिद्ध योगांक से।

(२१) बालरोगनाशक चूर्ण—वंशलोचन, छोटी इलायची के दाने, फिटकरी का फूला, कमलगट्टा की मिंगी, मांजूफल, तवाखीर, रूमीमस्तङ्गी, मोंथा, कचूर तथा अतीस कडुवी।

विधि—प्रत्येक समान भाग लेकर चूर्ण कर लें।

मात्रा—२ रत्ती से १ ग्राम तक।

अनुपान—पतले दस्तों में अर्क सौंफ से, वमन में

उपयोग—बालकों के सामान्य रोगों में बहुत उपयोगी योग है। दांत निकलते समय इसका प्रयोग करने से अनेक रोग नहीं सताते।

—स्व० धर्मदत्त चौधरी द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(२२) बालशोषहर वटिका—बसरई मोती २ ग्राम, जहरमोहरा खताई ४ ग्राम, नारियल दरियाई ४ ग्राम, वंशलोचन ४ ग्राम, पत्थरबेर ४ ग्राम, इलायची दाना ४ ग्राम, गुलाब जीरा ४ ग्राम।

विधि—सर्वप्रथम मोतियों को अर्क गुलाब तथा अर्क बेदमुश्क में घोटने चाहिए। फिर उपर्युक्त शेष ५ चीजों को बारीक कर इसी में डाल दें। अर्क बेदमुश्क के साथ एक दिन मर्दन कर १-१ रत्ती की गोलियां बनाकर सुखा लें।

मात्रा—प्रातः, सायं १-१ गोली अर्क केवड़ा व अर्क बेदमुश्क दोनों बराबर मिला १० ग्राम में घोलकर बच्चों को पिला दें।

उपयोग—जिस बालक का शरीर सूखकर कांटा हो गया हो, उनको इस औषधि से अवश्य लाभ होगा। एक माह के प्रयोग से रोग नष्ट हो जाता है, लेकिन औषधि २ माह तक चालू रहनी चाहिए, जिससे बालक हृष्ट-पुष्ट हो जाता है। —पं० देवराज शास्त्री द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(२३) कुमारकल्पद्रुम—सत् मुलहठी, अतीस, नागरमोथा, पीपल, वच, वायविडङ्ग, जायफल, जावित्री, केशर प्रत्येक १०-१० ग्राम, उत्तम शुद्ध कस्तूरी• ३ ग्राम, रैक्टीफाइड स्प्रिट १ पौण्ड।

निर्माण विधि—काष्ठादिक औषधियों को जौकुट करके रैक्टीफाइड स्प्रिट में डाल दे। बाद में कस्तूरी तथा केशर भी डाल दे और बोतल पर मजबूत कार्क (डाट) लगाकर रख दें। ३ दिन के उपरान्त शीशी को हिला दें फिर ४ दिन पर्यन्त धूप में रखकर आठवें दिन नियारी हुई दवा लेकर फिल्टर पेपर में छान ले और मजबूत कार्क वाली शीशी में रख लें।

प्रयोग विधि—१ दिन से ३ माह के बालक को १ बूंद से २ बूंद तक; १ माह से १ वर्ष तक के बालक को ३ से ५ बूंद तक; १ वर्ष से १५ वर्ष तक के बालक को ५ से १० बूंद तक तथा युवकों को १० बूंद से २० बूंद तक।

उपयोग—बालकों के सभी विकारों पर इसका प्रयोग लाभदायक प्रमाणित हुआ है। सर्दी के दिनों में इसका प्रयोग बालकों को सर्दी तथा उससे होने वाले कास, निमोनियां आदि नहीं होते।

—वैद्या प्रकाशवती देवी जैन द्वारा
धन्वन्तरि गुप्त सिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(२४) बाल गुटिका—जावित्री २० ग्राम, केशर १० ग्राम, जायफल ६ ग्राम, लवंग २० ग्राम, अजमोद १० ग्राम, छुहारा १० ग्राम, अफीम १० ग्राम, मोचरस १० ग्राम, शहद २० ग्राम।

विधि—पीसने योग्य वस्तुओं को बारीक पीसकर शहद मिला मूंग के बराबर गोलियां बना ले।

मात्रा—बालक की आयु तथा बल के अनुसार ½-१ गोली तक प्रातः, सायं मां के दूध या शहद में घोलकर सेवन करानी चाहिए।

उपयोग—बालकों के अतीसार, वमन, दन्तोद्भेद, पारगर्मिक, बच्चों का अधिक रोना, दुर्बलता आदि विकार नष्ट होते है। —वैद्य उदयलाल महात्मा द्वारा
धन्वन्तरि गुप्त सिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(२५) बालसुधा वटी—अहिफेन ६ ग्राम, सुहागे का लावा ६ ग्राम, घी में भुनी हींग ६ ग्राम, इलायची छोटी दाना, कत्था सफेद, सोंठ तीनों १०-१० ग्राम।

विधि—प्रथम इलायची, खैर तथा सोंठ का कपड़-छन चूर्ण करें। शेष द्रव्यों को खरल में पानी के साथ

• आजकल शुद्ध कस्तूरी मिलना अत्यन्त कष्टसाध्य एवं व्ययसाध्य है, इसलिए बिना कस्तूरी डाले भी प्रयोग का निर्माण हमने किया है और बालकों पर प्रयोग किया है, लाभदायक है। गर्मी के दिनों में तो इस योग को बिना कस्तूरी और जावित्री डाले ही बालकों को प्रयोग कराना चाहिए। —सम्पादक।

खरल करें। खूब घुट जाने पर चूर्ण डाल खरल कर उड़द के बराबर गोलियां बना लें।

मात्रा—½-१ गोली मधु या माता के दूध के साथ दिन में २-३ बार।

उपयोग—बालकों की आंव, पेचिश, हरे-पीले दस्त, वमन, कास तथा ज्वरादि में विशेष लाभदायक योग है।

—पं० महावीरप्रसाद जी मालवीय 'वीर' द्वारा गुप्त सिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(२६) बालशोष नाशक तैल—तिल का तैल २ किलो, भांगरा स्वरस २ किलो, कुकुरोंदा स्वरस २ किलो, अपामार्ग स्वरस २ किलो।

विधि—प्रथम तिल के तैल में सभी स्वरस डालकर सिद्ध करलें। तैल सिद्ध हो जाने पर उसमें १०० ग्राम कछुये की पीठ की हड्डी को पीसकर डाल दें और तैल को अग्नि पर रखकर जलने देवें। भुन जाने पर तैल को उतार उसमें १५ ग्राम अफीम डालकर घोल देनी चाहिए और ठण्डी होने पर छानकर बोतलों में भर लें तथा उसमें २५ ग्राम असली सन्दल का तैल और मिला दें। तैल तैयार हो गया।

उपयोग—सूखा रोग की शर्तिया दवा है, किसी भी प्रकार का तथा किसी भी स्टेज पर मालिश करने से, सूखा रोग का नाश हो जाता है। दिन में २ बार प्रातः सायं समस्त शरीर में मालिश करानी चाहिए। कानों में भी दोनों सदय २-२ बूंद डालनी चाहिए।

(२७) सूखारोग नाशक वटी—टंकण [सुहागा] ४ भाग, शुद्ध अफीम १ भाग, स्वर्णमाक्षिक भस्म, मृगांक, जीरा, स्वर्णमालिनी बसन्त, काकड़ासिंगी, गिलोयसत्व, अर्क-क्षार, तम्बाकू क्षार प्रत्येक २-२ भाग।

विधि—उपरोक्त दशों वस्तुओं को एकत्रित कर चिरचिटा के स्वरस की सात भावना दें। तत्पश्चात् १-१ रत्ती की गोलियां बनाकर रख लें। प्रातः-सायं १-१ गोली मां के दुग्ध के साथ देनी चाहिए।

उपयोग—बहुत उपयोगी योग है। उपरोक्त तैल तथा इस वटी का प्रयोग कराने से कैसा भी सूखा रोग हो ठीक हो जायगा। अनेक बार का अनुभूत प्रयोग है।

—स्नातक सुरेन्द्रदेव शास्त्री द्वारा गुप्त सिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(२८) बालरोगारि वटी—डीकामाली, अनार की जड़, खुरासानी अजवायन, कबीला, इन्द्रायण, करञ्ज गिरी, इन्द्र जौ, पलाश पापड़ा, निशोथ, अतीस, नवसादर, सैंधा नमक, पद्माग प्रत्येक १०-१० ग्राम, दालचीनी, सोंठ, मरिच, पीपल, तेजपत्र, अजमोद, तुलसीपत्र, अजवायन, भुनी हींग, एलुआ, भिलावा तैल, कर्पूर, कौंच के रोंये प्रत्येक ३-३ ग्राम, सुदर्शन चूर्ण सबका चतुर्थांश।

निर्माण—सबका चूर्ण करले, बबूल की अन्तर छाल के रस में, गोमूत्र तथा करेला के रस में १-१ दिन खरल कर १-१ रत्ती की गोली बनालें।

सेवन विधि—६ माह से ५ वर्ष तक के बालक को ½-२ गोली तक गरम जल या मां के दूध के साथ दिन में ३ बार दें।

उपयोग—इसके सेवन से बालकों का ज्वर, अतीसार, खांसी, अफारा, वमन, दांत निकलते समय के विकार, पाचन विकृति तथा सूखा आदि विकार दूर होते हैं। —गोकुलप्रसाद ब्रजलाल पटेल द्वारा गुप्तसिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(२९) बालशूलामृत—सोया का अर्क १०० ग्राम, सौंफ का अर्क १०० ग्राम, चूना का जल १०० ग्राम, मिश्री बारीक पिसी छनी ५० ग्राम, संजीवनी सुरा ५० ग्राम।

विधि—सबको कांच की बोतल में डालकर कड़ी डाट लगाकर सूर्य किरणों में तीन दिन तक रखा रहने दें।

मात्रा—नये जन्म पाये बच्चे को ५ १० बूंद, ६ माह के छोटे बच्चे को १ छोटा चम्मच, १ वर्ष तक के बालक को २ चम्मच।

उपयोग—इसके सेवन से पेट का दर्द, अपचन, अजीर्ण, अतीसार, वमन, आध्मान, दांत निकलने समय की पीड़ा आदि विकार दूर होते है।

—श्री तेजीलाल नेमा द्वारा गुप्तसिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(३०) बालामृत रसायन—नागफनी (थूहर) के डोंडे (जो पककर अच्छी तरह सुर्ख हो गये हों) १ किलो लाकर सायकाल को सूखी घास में डालकर आग लगादें।

फलों के ऊपर के कांटे साफ हो जावेंगे। पानी से कूड़ा-करकट अच्छी तरह साफ कर लोहे के खरल में कूटें तथा मज़बूत कपड़े से निचोड़ लें, फोक को पुनः कूटकर निचोड़ लें लगभग ½ सेर लाल रङ्ग का अर्क निकल आवेगा इस अर्क में पीपल ५० ग्राम, अतीस, काकड़ासिंगी, नागरमोंथा तीनों २५-२५ ग्राम को १ किलो पानी में क्वाथ करें २५० ग्राम शेष रहने पर छानकर उपरोक्त अर्क में मिलादें। इस मिश्रण में ७५० ग्राम मिश्री डालकर चाशनी करलें। तथा रैक्टीफाइड स्प्रिट ६ ग्राम बोतल में डाल रख छोड़ें।

मात्रा—५ वर्ष तक के बालक को ३-३ ग्राम दिन में ३-४ बार दूध या पानी में मिलाकर पिलावें।

उपयोग—बालकों का ज्वर, खांसी, अतीसार आदि विकारों में इसके प्रयोग से विशेष लाभ देखने को मिला है। —श्री तेजीलाल नेमा द्वारा

धन्वन्तरि गुप्तसिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(३१) तालुकण्टक नाशक योग—भूरी मरिच का चूर्ण, माजूफल, छोटी इलायची के बीज ३-३ ग्राम, वंशलोचन का चूर्ण, बादामगिरी, कमल के डोंडे की गिरी, कत्था, वच की लकड़ी ६-६ ग्राम, गुलाब के फूल १० ग्राम, सिन्दूर १० ग्राम।

विधि—सिन्दूर के अतिरिक्त समस्त वस्तुओं को सूक्ष्म पीसलें और स्वच्छ वस्त्र से छानलें और सबको मिलाकर खूब घुटाई करें। थोड़ा सा गाय का घी लें, और चम्मच में डालकर गर्म करें और उसमें थोड़ा सा गुड़ डालदें जब गुड़ जलकर काला हो जाय तो गुड़ को फेंकदें तथा घी को छानलें, इस घी में दो चिमटी दवा मिलाकर बालक को पिलादें इसी प्रकार दवा को तैयार करके थोड़ी मात्रा में नाक और कान में भी डालदें।

उपयोग—दोनों समय इसी प्रकार प्रयोग कराने से तालुकंटक रोग से बालक २-४ दिन में ठीक हो जाता है।

विशेष—उपरोक्त विधि से तैयार किये हुये घृत में आक के पीले पत्ते को गरम करके उसका रस मिलादें, इसकी नस्य दें तो बालक को छींक आकर काग ऊपर उठ जाता है। —डा० राव गणपतिसिंह यादव द्वारा

धन्वन्तरि सितम्बर ४७ से।

(३२) बृहद् बालरोगान्तक वटी—पीपर, स्याह जीरा, कैथ, जायफल, सफेद जीरा, जावित्री, काकड़ासिंगी, बहेड़ा, लौंग, सतावर, हरड़, अतीस, मीठा कूठ, गिलोयसत्व, पीपरामूल, अगर, प्रियंगु, सोंठ, नागकेशर, मरिच, कर्पूर, आंवला, मोंथा, अभ्रकभस्म, चित्रक, अजवायन, पुष्करमूल, तालीसपत्र, अजमोद, वायविडङ्ग, तगर, यष्ठीमधु, मोंथा, खस, देवदार, निशोथ, सुगन्धबाला, कचूर, अम्लवेत, तज, यवासा, तेजपात, कमलगट्टा, धनियां, रक्त चन्दन, कंकोल।

विधि—उपरोक्त ४६ दवाओं को समभाग लेकर सबके बराबर मिश्री मिलाकर मटर के बराबर गोलियां बनालें।

मात्रा—मधु से सुबह दोपहर शाम १-१ गोली सेवन करानी चाहिये।

उपयोग—बालकों के ज्वर, कास, अतीसार, वमन, हिचकी, आदि रोग समूल नष्ट होते हैं। यह सूखा रोग के लिये अव्यर्थ औषधि है। कुछ दिन के सेवन से बालक हृष्ट पुष्ट हो जाता है। जब साधारण औषधि काम न करें तो इस दिव्य योग का प्रयोग करना चाहिये।

—पं० नन्दकुमार शर्मा द्वारा

धन्वन्तरि दिसम्बर १६४७ से।

(३३) सूखा रोग नाशक धूनी—जौ, सरसों, उड़द, तिल, अजवायन, अजवायन खुरासानी, अजमोद, गन्धक, नौसादर, हल्दी दोनों, बन्दर की बींट।

विधि—इन सबको समभाग ले कूटकर बच्चे को धूनी दें यह ध्यान रखना चाहिये कि गर्दन से ऊपर के हिस्से में उसकी गन्ध न पहुंचनी चाहिये।

उपयोग—सूखा रोग के लिये उत्तम धूनी है इसके साथ-साथ नीचे का तैल भी प्रयोग कराना चाहिये।

(३४) सूखा रोग नाशक तैल—मैनसिल १० ग्राम, बीरबहूटी १० ग्राम, मसूर के पत्ते, सिरस के पत्ते, वन तुलसी के पत्ते, नीम के पत्ते, कुमार के पत्ते, अरलू के पत्ते, भांगरे के पत्ते, मकोय के पत्ते, पसेंदू के पत्ते प्रत्येक ६०-६० ग्राम, तिल का तैल १ किलो में मन्दाग्नि से जलावें उपरोक्त धूनी के उपरान्त इस तैल की मालिश करा दें।

उपयोग—सूखा रोग नाशक अति उत्तम तैल है उपरोक्त धूनी के साथ इसका प्रयोग करने से बच्चा सूखा रोग से अवश्य ठीक हो जाता है।

—पं० ववशीराम शुक्ल द्वारा
धन्वन्तरि अप्रैल १९४८ से।

(३५) बालहितैषी वटी—एलुआ १० ग्राम, रूदसलीव १७ ग्राम, सनाय ६ ग्राम, काला दाना ६ ग्राम, कुन्दरु गोंद ६ ग्राम, रूमीमस्तङ्गी १० ग्राम, गुलाब का फूल १० ग्राम।

विधि—सबको कूट छानकर पानी में घोटकर १-१ रत्ती की गोलियां बनालें।

मात्रा—१-१ गोली दिन में ३ बार माता के दूध या जल के साथ घोलकर सेवन करावें।

उपयोग—यह बालापस्मार नाशक अति उत्तम गोलियां हैं। इसकी १ गोली देते ही बच्चे को होश आ जाता है। २१ दिन तक नियमित इसका प्रयोग कराने से अपस्मार का दौरा बाद में नहीं पड़ता है बालक इसके सेवन से हृष्ट पुष्ट भी हो जाता है।

—पं० रामलाल जैन द्वारा
धन्वन्तरि गुप्तसिद्ध द्वितीय भाग से।

(३६) ग्राइप वाटर स्पेशल—चूना २५ ग्राम, शर्करा २५ ग्राम, जल २५० ग्राम।

विधि—प्रथम जल में शर्करा घोललें घुल जाने पर उसमें चूना मिलाकर रखें। १२ घण्टे के पश्चात् उत्तम वस्त्र में छान लेना चाहिये (शर्करा मिश्रित जल में चूना अधिक अच्छी तरह घुल जाता है) जब छानकर जल तैयार हो जाय तब उसमें ८० बूंद कर्पूरार्क (स्प्रिट कॅफर) ६० बूंद, सौंफ का तैल, शुंठी का अर्क ३० बूंद मिलाकर काम में लाना चाहिये सौंफ का तैल जल में मिलाना कठिन होता है इसलिये थोड़ा सा खाने का सोडा एक खरल में लेकर उस पर सौंफ के तैल की बूंद डालकर घोटलें और उस सोड़े को जल में मिलादें।

मात्रा—१ वर्ष तक के बालक को २०-३० बूंद दो बार या तीन बार देना चाहिये।

उपयोग—बालकों के अपचन, वमन, हरे पीले दस्त, दांत निकलते समय के कष्ट, कैलशियम की कमी से होने वाले विकार इस ग्राइपवाटर से दूर होते हैं।

—श्रीमती अपर्णादेवी द्वारा
गुप्तसिद्ध द्वितीय भाग से।

(३७) सूखा नाशक तैल—काले तिल का तैल १ किलो, काली मकोय की पत्ती, काले धतूरे की पत्ती, सम्भालू की पत्ती, तालाब की काई, सफेद दूब, असगन्ध नागौरी यह सब ५०-५०, ग्राम बच्छनाग १० ग्राम।

विधि—जो दवायें रस निकालने की हैं। उनका रस निकालकर दूब तथा काई का कल्क करलें और असगन्ध का क्वाथ कर तैल विधि से पाक करलें और बच्छनाग डालकर पीसलें, और इसे छानकर प्रयोग में लावें।

प्रयोग—बच्चे के सम्पूर्ण शरीर पर नियमित रूप से मालिश करानी चाहिये।

उपयोग—सूखा रोग में अति उपयोगी तैल है अनेक असाध्य सूखा के बालकों पर इसका प्रयोग कर इसकी सफलता का ज्ञान हो चुका है।

—पं० कालीशंकर वाजपेयी द्वारा
धन्वन्तरि गुप्तसिद्ध तृतीय भाग से।

(३८) बाल निमोनिया नाशक लेप—मस्तङ्गी ३ ग्राम, कर्पूर देशी ३ ग्राम, नमक सैन्धव ३ ग्राम, अफीम १ ग्राम, मोंम ६ ग्राम तथा गाय का घी २५ ग्राम।

विधि—पहले मस्तङ्गी पीसकर फिर दवा पीसकर रखलें। फिर मोंम तथा घी गरम करलें, और दवा मिलाकर रखलें।

उपयोग—दिन रात में २-३ बार बच्चे की पसलियों पर धीरे-धीरे मलना चाहिये और ऊपर से घी चुपड़कर नामा रखकर बांधना चाहिये।

उपयोग—बाल निमोनिया में जब पसली जोर-जोर से चलती है उस अवस्था में यह आइन्टमैन्ट विशेष लाभदायक है। —वैद्य बचानसिंह द्वारा
गुप्तसिद्ध तृतीय भाग से।

(३९) बालसंजीवन वटी—चाकसू २५० ग्राम, गधे का मूत्र ५०० ग्राम, तुलसी काली के पत्तों का रस ५०० ग्राम।

निर्माण विधि—पहले हांडी में चाकसू तथा मूत्र डालकर खूब मिलालें फिर ढकना लगाकर उसे कपड़-मिट्टी करके सुखादें। एक गड्ढा खोदकर उसमें गधे की लीद लगभग २॥ किलो नीचे तथा २॥ किलो ऊपर रखकर उसमें इस हांडी को दबादें। १५ दिन के पश्चात् इस हांडी को निकालकर उसमें से चाकसू निकालकर हाथ से मसलकर उसके छिलके अलग करदें जो गिरी निकले उसे खरल में गोली ही पीसलें बाद में उसमें तुलसी पत्र रस घोट-घोटकर मोठ के बराबर गोलियां बनालें और शीशी मे भरकर रखले। अच्छी तरह कार्क लगाकर इन गोलियों को रखने से यह १० वर्ष तक प्रभावहीन नहीं होती।

मात्रा एवं व्यवहार विधि—सौंफ ६ ग्राम, अजवायन ६ ग्राम, कालानमक ५ रत्ती तथा पानी १०० ग्राम लेकर एक बर्तन में पकावें ५० ग्राम शेष रहने पर उतार कर छानले और शीशी में भरकर रखलें, रोगी तथा रोग के अनुसार उपरोक्त गोलियों में से १-१ गोली दिन में २-३ बार उपरोक्त अनुपान के साथ घोलकर बच्चे को पिलानी चाहिये। यह मात्रा १-२ वर्ष तक के बालक के लिये है। इससे छोटे या बड़े बच्चे को अपने विवेक से मात्रा निर्धारण करके देनी चाहिये।

उपयोग—इन गोलियों को उपरोक्त अनुपान के साथ प्रयोग कराने से बालकों की अन्तड़ियों में चिपका हुआ लेसदार चिक्कट मल बाहर निकल जाता है। रक्त तथा यकृत् में संचित दूषित पित्त, कफ, मल तथा स्वेद द्वारा बाहर निकल जाता है। १५ दिन के सेवन मात्र से बालक के चेहरे की मुर्दानगी, त्वचा की सिकुड़न तथा पीलापन, पेट का तुम्बापन तथा पेट पर दिखाई देने वाली नसें विलीन हो जाती है। बालक का मुख-मण्डल दमकने लगता हैं। बालक का चिड़चिड़ापन शनैः-शनैः दूर होने लगता है। यदि बालक को ज्वर या कास का भी संयोग हो, तो वह भी दूर हो जाता है।

विशेष—जैसे-जैसे बालक ठीक होने लगे, औषधि की मात्रा घटा देनी चाहिए, किन्तु औषधि का प्रयोग तब तक करना चाहिए, जब तक बालक बिलकुल निरोग न हो जाय। औषधि सेवन के समय बालक को लाक्षादि चन्दनबला लाक्षादि आदि तैलों का बाह्य प्रयोग अवश्य कराते रहना चाहिए।

सावधानी—किसी रोगी के रक्त में तीव्र अम्ल, क्षारत्व प्रभाव संचित रहने के कारण औषधि सेवन कराने के १०-१५ दिन के उपरान्त बाहर त्वचा पर वेदनायुक्त फोड़े-फुंसी निकलने आरम्भ हो जाते हैं। यह विकार अन्दर के संचित विकार बाहर निकलने से होता है। अतः घबराना नहीं चाहिए और उपरोक्त तैल की मालिश कराते रहना चाहिए। इससे सभी विकार स्वतः शान्त हो जाते हैं।

—पं० सत्येश्वरानन्द जी शर्मा द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक तृतीय भाग से।

(४०) बाल संजीवनी वटी [२]—नागरमोंथा, काकड़ासिंगी, समुद्रफल, वायविडङ्ग, अतीस, हरड़ की छाल, बहेड़े की छाल, पीपल, आंवला, अजवायन, काली मरिच, सोंठ, शुद्ध पारद, सफेद इलायची के दाने, शुद्ध गन्धक प्रत्येक ३-३ ग्राम, चौकिया सुहागा, वंशलोचन तथा रूमी मस्तङ्गी तीनों ६-६ ग्राम।

विधि—पहले पारद तथा गन्धक की कज्जली बना लें। फिर अन्य सभी औषधियों को कूट कपड़े में छानकर उसमें मिला दें। उचित मात्रा में तुलसी स्वरस में घोट ½-½ रत्ती प्रमाण की गोली बना लें।

मात्रा—१-१ गोली माता के दूध या पानी से दिन में ३ बार सेवन करावे।

उपयोग—इससे बालकों के ज्वर, कास, प्रतिश्याय, अतीसार आदि रोगों में लाभ होता है। इसके सेवन से शरीरगत सप्तधातुओं की पुष्टि होकर बालक में स्फूर्ति का संचार होता है।

—पं० कान्तिनारायण मिश्र द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(४१) बालरोगहरी वटी—वंशलोचन, बेलगिरी, अतीस, काकड़ासिंगी, नागरमोंथा, पीपल छोटी, बच सफेद, सेंधानमक, कालानमक प्रत्येक २०-२० ग्राम, धनियां, सुगन्धवाला, जावित्री, काली मरिच, रूमीमस्तंगी, मुलहठी, इन्द्र जौ, सुहागा भुना, पोदीना सूखा, गुलाब के फूल, कुलञ्जन, हींग भुनी, जहरमोहरा खताई प्रत्येक

६-६ ग्राम, जायफल दक्षिणी २ नग, छोटी इलायची के बीज, कर्पूर, केशर प्रत्येक ३-३ ग्राम, अनार की कली (जिसका मुंह बन्द हो), अफीम १ ग्राम।

विधि—अर्क गुलाब में सबको खूब घोटकर चना के बराबर गोली बना लें।

मात्रा—१-१ गोली दिन में ३ बार मां के दूध या तुलसीपत्र स्वरस से दें।

उपयोग—बच्चों के ज्वर, कास, छर्दि, अतीसार, शोथ, दौर्बल्य, उदरशूल, विबन्ध तथा अजीर्ण आदि रोग दूर होते हैं। —श्री दयानन्द पाठक द्वारा

गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(४२) बालजीवन मिश्रण—कुमारी आसव [सिद्ध भैषज्य मणिमाला], अरविन्दासव [भैषज्य रत्नावली], रोहितकारिष्ट [भैषज्य रत्नावली], लोहासव [गदनिग्रह]।

विधि—चारों आसवों को समभाग मिलाकर बोतल में भरकर रख लें।

मात्रा—६ माह के बच्चे को ३ बूंद, १ वर्ष से ३ वर्ष तक के बच्चे को ६-७ बूंद, ४ वर्ष से ५ वर्ष तक के बच्चे को ८ बूंद से १० बूंद तक, ६ वर्ष से १० वर्ष तक के बच्चे को १५ बूंद। अवस्थानुसार दवा की मात्रा बढ़ाकर दी जा सकती है। औषधि सुबह, शाम दो समय बराबर जल मिलाकर सेवन करानी चाहिए।

उपयोग—यह चार आसव अरिष्ट मिलकर बालकों को बालरोगनाशक एक प्रभावकरी औषधि बन जाती है। बालकों के सम्पूर्ण उदर रोग, प्लीहा-यकृत् वृद्धि, सूखा रोग, खून की कमी, शोथ, मन्द ज्वर, कृमि, मलावरोध, कास आदि अनेक रोग दूर होते हैं।•

—श्री सियाप्रसाद आस्थाना द्वारा

गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(४३) सूखारि वटी—तुलसी के हरे पत्ते, सितावर गोली, पीपल की दाढ़ी शुष्क, साठी चावल, अपामार्ग की गीली जड़, छोटी इलायची, वंशलोचन असली प्रत्येक १०-१० ग्राम, केशर काश्मीरी १ ग्राम।

विधि—सबको घोटकर गधी के मूत्र के साथ खरल कर ज्वार के बराबर गोली बना लें।

मात्रा—१-२ गोली बल तथा आयु के अनुरूप मात्रा, बकरी या गाय के दूध में घोलकर सेवन करावें।

उपयोग—सूखारोग नाशक अति उत्तम गोलियां हैं, अनेक बार इसका प्रयोग मरणासन्न सूखा बालकों को नव जीवन प्रदान करता है।

—श्री दलीपसिंह आर्य द्वारा

गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(४४) बालशोषारि मिश्रण—प्रवाल भस्म, मुक्ताशुक्ति भस्म, लोह भस्म प्रत्येक ६-६ ग्राम, शंख भस्म, गोदन्ती भस्म, फिटकरी भस्म कच्छपपृष्ठ भस्म, माण्डूर भस्म प्रत्येक १२-१२ ग्राम, गिलोय सत्व तथा स्वर्णगैरिक २५-२५ ग्राम, त्रिकटु ३५ ग्राम, बंशलोचन असली ५० ग्राम तथा एस्कोरबिक एसिड [विटामिन सी] ५०० मि० ग्रा० की १५ गोलियां।

विधि—इन सभी औषधियों का सूक्ष्म चूर्ण बनाकर ब्राह्मी रस की ७ भावना देकर तथा कुछ शहद मिला ४-४ रत्ती की गोलियां बना लें।

मात्रा—१-१ गोली शहद में मिलाकर सुबह, शाम चटानी चाहिए।

उपयोग—प्रस्तुत योग बालशोष में अमृत की तरह कल्याणकारी है। इसके प्रयोग से बालकों की अस्थियां मजबूत होती हैं। पाचन विकार ठीक होते हैं, फलस्वरूप शुद्ध रक्त का निर्माण होता है और रक्ताल्पता दूर होती है, कैलशियम की कमी से होने वाले रोगों के लिए अत्यन्त प्रभावशाली मिश्रण है।

—डा० जयनारायण गिरि इन्दु द्वारा

सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

• प्रस्तुत प्रयोग का हमने अपनी चिकित्सा में विशेष अनुभव किया है। प्रयोग वास्तव में बहुत उपयोगी है। इस मिश्रण मात्र से सहस्रों बालक हमने स्वस्थ किये हैं। इसमें एक अवगुण है, कभी-कभी बालकों को यह पतले दस्त लाता है, इसलिए इसमें कुटजारिष्ट ¼ भाग मिश्रण को अपने चिकित्सालय में बनाकर रखें, उन्हें सफलता अवश्य मिलेगी। —सम्पादक।

(४५) बाल सुधा—लाल चन्दन का चूर्ण २० ग्राम, खाने के चूना की डली ५० ग्राम, केशर ३ ग्राम, शुद्ध टकण चूर्ण २० ग्राम, मिश्री २५० ग्राम, इलायची छोटी १० ग्राम, गुलाबजल १०० ग्राम।

निर्माण विधि—सर्व प्रथम चूने को पीसकर बराबर-बराबर ३ बोतलों में डालकर स्वच्छ पानी से भर दें। बोतल के चूने व पानी को हिलाकर छोड़ दें। ८-१० घण्टे बाद बोतलों के पानी को काच या चीनी मिट्टी के बर्तन मे चूना आने तक निथार लें, पश्चात् निथरा हुआ पानी वापस उन्हीं बोतलो को स्वच्छ करके भर दें। ८-१० घण्टे बाद पुन: एक बार निथार लें और निथरे हुए पानी को मिट्टी के बर्तन में लें। उसमें उपरोक्त औषधिया डालकर अग्नि पर चढ़ा दें। उपरोक्त औषधियों मे केवल केशर को थोड़े से पानी के साथ घोटकर मिलायें। एक चौथाई पानी रहने पर गरम करें, पश्चात् उतार ठण्डा कर लें और छानकर बोतल में भर लें।

मात्रा—१-१ चम्मच दिन में ३ बार या इससे अधिक भी दे सकते हैं।

उपयोग—यह औषधि बालकों के लिए अत्यन्त लाभदायक सिद्ध हुयी है। यह बालकों को पुष्ट करती है। दूध का न पचना, हरे-पीले दस्त होना, बालक का चिड़चिड़ा होना आदि विकारों को दूर करती है।

—वैद्य कृष्णचन्द गुप्त द्वारा
सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(४६) बाल डब्बानाशक लेप—एलुआ, केशर, कायफल, कालीजीरी, अरण्ड की जड़, बारहसिंगा के सींग प्रत्येक ६-६ ग्राम, अफीम १ ग्राम, अलसी १० ग्राम, सोंठ, आमाहल्दी, वच्छनाग तीनों ३-३ ग्राम।

विधि—सबको कूट-छानकर रख लें।

उपयोग—आवश्यकतानुसार थोड़ा-सा लेप लेकर गोमूत्र में पीस थोड़ा गरम कर छाती व पसली पर लेप करें तथा अग्नि से थोड़ा सेंक कर दें। इससे बालकों के डब्बा रोग के कारण होने वाले पसली के दर्द, सर्दी, खांसी में लाभ होता है। —पं० रामसुन्दर जी वैद्य द्वारा
प्राणाचार्य प्रयोग मणिमाला से।

(४७) बाल रोगहर वटी—जामुन की छाल का स्वरस १०० ग्राम, नागरपान का स्वरस १०० ग्राम, अडूसे का स्वरस १०० ग्राम, करेले के पान का स्वरस १०० ग्राम, गधे की लीद का रस १०० ग्राम, गोरोचन असली १० ग्राम।

विधि—पांचों स्वरस एक कलईदार कढ़ाही में डाल कर मन्दाग्नि पर गरम करें। जब खोवा सा बन जाय, तब उतार कर उसमें गोरोचन कपड़छन कर डालें और घोटकर १-१ रत्ती की गोलियां बना लें।

मात्रा—प्रातः, सायं १-१ गोली माता के दूध के साथ दें।

उपयोग—बालकों के श्वास, कास, पसली का रोग, उदर विकारों में लाभ होता है।

—श्रीमती अम्बिका देवी शुक्ल द्वारा
प्राणाचार्य प्रयोग मणिमाला से।

(४८) बालशोषारि—स्वर्ण भस्म, रौप्य भस्म, मुक्ता पिष्टी, प्रवाल पिष्टी प्रत्येक १-१ ग्राम, केशर, मूर्वा, जायफल, दुधवच, छुहारा, कमलगट्टा की मींग, शुद्ध हिंगुल प्रत्येक ३-३ ग्राम।

विधि—काष्ठौषधियों को कूट कपड़छन कर रखलें। प्रथम खरल में शुद्ध हिंगुल डाल खरल करें। जब रवा न रहे तब भस्म तथा पिष्टी डाल दें और बाद में कपड़छन चूर्ण भी मिलाकर गिलोय, तुलसी स्वरस तथा पान के अर्क की १-१ भावना देकर मूंग के बराबर गोली बना लें।

सेवन विधि—प्रातः, सायं १-१ गोली माता के दूध के साथ या गाय के दूध के साथ सेवन करावें।

उपयोग—बालशोष तथा उसके साथ होने वाले अन्य उपद्रवों के लिए बहु-उपयोगी योग है। जब साधारण औषधियों से लाभ न हो, तो इस मूल्यवान् औषधि के प्रयोग से लाभ उठाना चाहिए।

—वैद्य इन्द्रमणि जैन द्वारा प्रयोग मणिमाला से।

(४९) सूखा संहार वटिका—हंसराज १० ग्राम, साहस मुरिया की जड़ [अभाव में बड़ की जटा] २० ग्राम, गूलर के फल, कबीला प्रत्येक १०-१० ग्राम, छोटी

इलायची ६ ग्राम, मयूर शिखा ६ ग्राम, दूधिया कत्था ६ ग्राम, पान २४ नग।

विधि—सबको पीसकर पान के अर्क में मटर बराबर गोली बना लें।

मात्रा—१-१ गोली सुबह, शाम माता के दूध या गुनगुने जल के साथ दें।

उपयोग—सूखा रोगनाशक अति उत्तम प्रयोग है। साथ में निम्न तैल का भी प्रयोग करना चाहिए—

(५०) सूखा संहार तैल—मकोय, तालमखाना, देशी पान, सहदेई की जड़, भांगरा, घीग्वार का गूदा, साहस मुरिया की जड़ [अभाव में वड़ की जटा], मयूर शिखा, मुलहठी, देवदारु, वायविडङ्ग, नागरमोंथा, देशी हल्दी, सम्भालू, पीपर की लाख, लाल चन्दन, वच कड़वी, असगन्ध नागौरी, रास्ना प्रत्येक १०-१० ग्राम।

विधि—उपरोक्त सभी चीजों को अधकुटा कर १ किलो पानी तथा २ किलो बकरी के दूध में १ दिन १ रात्रि भिगो दें। फिर ७५० ग्राम शुद्ध तिल तैल डाल धीमी-धीमी अग्नि पर पकावें। जब तैल मात्र शेष रहे, तब गरम ही छानकर बोतल में भर कार्क लगाकर एक बाल्टी में पानी भर उसमें ४-६ घण्टे रखा रहने दें।

उपयोग—इस तैल की सम्पूर्ण शरीर पर मालिश करने से बालकों के सूखा रोग में लाभ होता है। २-२ बूंद बालक के कान में भी डालना चाहिए।

—वैद्य रामप्यारेलाल वैद्यभूषण द्वारा
प्रयोग मणिमाला से।

(५१) कुमारी आसव—घृत कुमारी का रस ४ किलो, पुराना गुड़ आधा किलो, मण्डूर भस्म, भुना सुहागा, यवक्षार, काला नमक, सांभर नमक, सेंधा नमक, समुद्र नमक, विड नमक, सज्जी खार, नौसादर प्रत्येक ४०-४० ग्राम।

विधि—सब एकत्र कर चीनी मिट्टी के पात्र में रख, मुंह बन्द कर धान्य राशि में १५ दिन रखें, पश्चात् छान लें।

मात्रा—बालकों को ३ ग्राम समभाग जल मिलाकर दिन-रात में २-चार दें।

उपयोग—बालकों की यकृत् वृद्धि, प्लीहा वृद्धि, उदरशूल, कब्ज आदि में अति उत्तम औषधि है।

—श्री सुन्दरलाल जैन वैद्यभूषण द्वारा
धन्वन्तरि शिशु रोगांक से।

(५२) बाल कर्णस्रावहर योग—शराब ब्राण्डी १०० ग्राम, कागजी नीबू का स्वरस १०० ग्राम, नीम की पत्ती का रस ५० ग्राम, बाबूना का तैल ५० ग्राम, तिल का तैल ५० ग्राम, रीछ की चर्बी २५ ग्राम, पंवार के फूल १० ग्राम।

विधि—सबको आग पर मन्दाग्नि से पकावें। तैल मात्र रहने पर छान लें। फिर इस तैल में अफीम २० ग्राम, शुद्ध सुहागा ६ ग्राम, कौड़ी भस्म ६ ग्राम को खूब बारीक पीसकर मिला दें।

उपयोग—आवश्यकता पड़ने पर २-४ बूंद बालक के कान में डालने से बालक के कान का दर्द, कान का बहना आदि विकार दूर होते हैं।

—हकीम गुरुचरण लाल द्वारा शिशु रोगांक से।

(५३) आयुर्वेदीय मल्टी विटामिन ड्राप्स—गाय का घी १ भाग, तिल का तैल १ भाग, मधु ८ भाग।

विधि—इनको मिलाकर खूब हिला लें। बस, योग तैयार है।

मात्रा—इसे बालकों की आयु के अनुसार ½ से २ चम्मच तक दिन में २-४ बार जन्म से ही प्रयोग कराना चाहिए।

उपयोग—आजकल सूखा रोग पर एलोपैथिक मल्टी विटामिन्स ड्राप्स बहुत मिलते हैं। परन्तु वह अत्यन्त मंहगे पड़ते हैं। उपरोक्त प्रयोग अत्यन्त सस्ता होने पर भी उनके समान प्रभावशाली है। इससे सूखा रोग का डर नहीं रहता। यदि हो जाय, तो इसके सेवन से अच्छा हो जाता है। इसमें विटामिन ए तथा डी विद्यमान रहते हैं।

—डा० ए० एम० अडसोड द्वारा
धन्वन्तरि सूखा रोगांक से।

(५४) सूखा रोग नाशक वटी—मूंगाभस्म, पीलीकौड़ी भस्म, मुक्ताशुक्ति भस्म, स्फटिका भस्म, टंकण भस्म, शंख भस्म, शुद्ध रसौत, भुनी हल्दी सभी

६-६ ग्राम, छोटी पीपल ६ ग्राम, तुलसीपत्र ७५ ग्राम, अपामार्ग के पत्र ७५ ग्राम ।

विधि—सबको एकत्र कर खरल में खूब अच्छी तरह मर्दन कर झरबेर के बराबर गोलियां बनालें ।

मात्रा तथा अनुपान—१ गोली सुबह शाम शहद या शरबत कासनी के साथ दें ।

उपयोग—बालकों का सूखा रोग, ज्वर, दूध पलटना, अतीसार आदि विकार २१ दिन में अवश्य ठीक हो जाते हैं यह औषधि ४० दिन तक सेवन कराने से बालक हृष्ट पुष्ट तथा निरोग हो जाता है ।

—पं० देवकरण वाजपेयी द्वारा
जीवनसुधा मासिक के शिशुरोग विज्ञानांक से ।

(५५) सर्व बालरोग नाशक स्वादिष्ट अर्क—चूना (कलई बिना बुझी) २॥ किलो, चीनी दानेदार २॥ किलो, अमलतास का गूदा २५० ग्राम, हरड़ तथा शुद्ध सुहागा १५०-१५० ग्राम, गुलबनपसा, सौंफ, श्वेत जीरा, गुलाब के फूल, उन्नाव, वायविडङ्ग, मुनक्का तथा सोंठ १००-१०० ग्राम, मुलहठी, पीपर छोटी तथा काकड़ासिङ्गी तीनों ५०-५० ग्राम, अतीस तथा सत्व नीबू २५ ग्राम, गुलाब, चन्दन तैल, सत्व नौसादर, तैल दालचीनी १०-१० ग्राम, कर्पूर देशी, पिपरमैण्ट ६-६ ग्राम, सत्व अजवायन ३ ग्राम, टिंचर कैंपसीकम १ ड्राम, स्प्रिट क्लोरोफार्म ४ ड्राम एसिड हाइड्रोस्यानिक डाइल्यूट २ ड्राम ।

विधि—चीनी इत्र गुलाब, पिपरमैण्ट, कर्पूर, सत्व अजवायन, दोनों तैल, सत्व नीबू, सत्व नौसादर टिंचर कैप्सीकम तथा स्प्रिट क्लोरोफार्म तथा एसिड हाइड्रोस्यानिक इनको छोड़कर सब वस्तुओं को जौकुट करलें । चूने को साफ औटते पानी में बुझालें । चूना घण्टे-घण्टे बाद एक बड़ी कलईदार करछी से हिलावें ऐसा १७ बार करके ३ घण्टे बाद चूने के ऊपर जमी मलाई फेंकदें पानी धीरे-धीरे कलईदार एक बड़े मिट्टी के मटके में डालकर जौकुट वाली औषधियां भी डालदें हल्की अग्नि से पकावें अष्टमांश क्वाथ शेष रहने पर साफ कपड़े से तीन बार छानकर चीनी मिलाकर पुनः अग्नि दें । एक तार की चाशनी हो जाने पर पुनः छानकर नीबू सत्व का महीन चूरा मिलाकर रखलें । २ रोज तक घण्टे-घण्टे बाद दवा हिलाते रहें पश्चात् ७ दिन तक दवा को न हिलावें फिर नवें रोज ऊपर का अर्क या तो पिचकारी से खींचलें या धीरे से निथारलें नीचे का जमा फोक उसमें न मिलने पावे । अब इस अर्क में काफूर अजवायन, पिपरमैण्ट का पिघलाया हुआ अर्क तथा अन्य सभी तरल पदार्थ मिलाकर चीनी मिलाकर कागदार शीशी में भरकर रखलें ।

मात्रा—बालकों की आयु के अनुसार १० बूंद से ४ चम्मच तक ।

उपयोग—यह बालकों को सर्वरोग नाशक उत्तम अर्क है । स्वादिष्ट होने से बालक इसे आसानी से पी लेते हैं । दांत निकलते समय इसका प्रयोग कराते रहने से बालक को कोई रोग नहीं सताता ।

—डा० के० डी० तलनियां भिषगाचार्य द्वारा
जीवनसुधा मासिक के शिशुरोग विज्ञानांक से ।

(५६) कुमारमंगल योग—वच, ब्राह्मी, छोटी पीपर, कूठ मीठा, शंखपुष्पी, द्राक्षा, सोंठ, जीरा, कचूर, तुलसी, नागरमोथा, छोटी इलायची, जटामांसी, पोहकर मूल, गजपीपल, सरसों ।

विधि—ऊपर लिखे सोलह द्रव्यों को समभाग लेकर कूट-पीसकर कपड़छान करलें, फिर छोटी कटेरी, सुगन्धवाला, मोचरस, बेलगिरी इन सबको ४०-४० ग्राम लेकर ८०० ग्राम पानी में पकाकर ४०० ग्राम शेष बचालें और उसको छानकर खरल में उपरोक्त वस्त्र पूत चूर्ण में भावना देवें घन हो जाने पर १-१ रत्ती की गोलियां बनालें तथा सुखालें ।

मात्रा—रोगानुसार तथा बालक की आयु अनुसार २-२ गोली तक माता के दूध में, गोदुग्ध में या पानी में घोलकर देनी चाहिये ।

उपयोग—यह योग बालकों के सभी रोगनाशक है । ग्रह व्यापद जन्य विकारों में भी लाभप्रद है इसके सेवन से बालकों के सभी सामान्य विकार दूर हो जाते हैं ।

(५७) बालकुकरकास नाशक योग—शुद्ध टंकण, शुद्ध नरसार, जवाखार, पिप्पली चूर्ण, गोदन्ती भस्म, सतगिलोय, अभ्रक भस्म; चन्द्रामृत रस, मयूरपिंच्छ भस्म;

छोटी कटेरी के फूल, वांसा के फूल, लक्ष्मीविलास रस लवङ्गादिवटी तथा प्रवालपिष्टी।

विधि—उपरोक्त १४ द्रव्यों को समभाग लेकर कूट-पीसकर मुलहठी, बड़ी एला, द्राक्षा, सौंफ, वहेड़ा, काकड़ासिङ्गी इन ६ औषधियों को ४०-४० ग्राम लेकर यवकुट करके १ किलो पानी में औटावें, और ५०० ग्राम रहने पर उतारकर छानलें, तथा उपरोक्त १४ द्रव्यों के चूर्ण में भावना दें। १-१ रत्ती की गोली वनालें।

मात्रा—१-१ गोली दिन में ४ बार तथा रात्रि में ३ बार शर्वत वनफ्सा के साथ मिलाकर चटावें।

उपयोग—कुकरकास नाशक, कास, सर्दी जन्य विकार दूर होते हैं। क्षय में भी लाभकारी है।

(५८) शिशु पोलियो नाशक वटी—वातकुलान्तक रस २ ग्राम, महायोगराज गूगल १½ ग्राम, शुद्ध कुचला १ ग्राम, रसराज रस ½ ग्राम, शृङ्गभस्म ½ ग्राम, मुक्तापिष्टी ६ रत्ती, वृ० वातचिन्तामणि ४ रत्ती, कस्तूरी २ रत्ती।

विधि—इन आठों द्रव्यों को एक साथ मिश्रित करके रास्ना तथा दशमूल दोनों ही १००-१०० ग्राम लेकर १ किलो पानी में पकावें और आधा रहने पर छानकर उससे घोटें। ½ रत्ती की गोलियां वनालें। लहसुन १ किलो कूटकर १ रोटी बनालें उस रोटी पर इन गोलियों को रखकर धूप में सुखालें।

मात्रा—१-१ गोली प्रातः-सायं रास्नासप्तक क्वाथ से सेवन करावें। यदि बालक छोटा हो तो दूध में पीसकर सेवन करा सकते हैं।

उपयोग—वालकों के पोलियो नाशक उत्तम गोलियां हैं। इस गोली के सेवन के साथ-साथ महानारायण तैल, महामाष तैल तथा शतावरी तैल की मालिश तथा निर्गुण्डी, रास्ना तथा एरण्ड के पत्तों के क्वाथ से परिषेचन कराना चाहिये।

(५९) बालकर्णस्राव रिपु—शुद्ध फिटकरी २ ग्राम, कौड़ी भस्म २ ग्राम, नीम के पत्र २ ग्राम, शम्बूक भस्म २ ग्राम, कपित्थ चूर्ण २ ग्राम, लाख चूर्ण ४ रत्ती, रसौत चूर्ण १ ग्राम, जामुन की गुठली १ ग्राम, आम की गुठली १ ग्राम, तेंदूफल चूर्ण २ ग्राम, हरड़ का छिलका २ ग्राम, लोध्र चूर्ण २ ग्राम, मुलहठी चूर्ण १ ग्राम, धाय के फूल ४ ग्राम।

विधि—उपरोक्त द्रव्यों को कूट-पीसकर छानकर मिश्रित करलें और फिर मजीठ, प्रियंगु, पाठा, पृष्ठपर्णी, आंवला, महुआ तथा रसौत इनको २०-२० ग्राम लेकर १ किलो पानी में औटावें चतुर्थांश रहने पर छानलें और उसकी भावना उपरोक्त कूटे पिसे द्रव्यों में देकर १-१ रत्ती की गोलियां वनालें।

मात्रा—प्रात-सायं मजिष्ठादि क्वाथ अथवा अर्क उशवा के साथ १-१ गोली दें।

उपयोग—वालकों के कर्णस्राव पर बहुत उपयोगी योग है। —कविराज वी० एस० प्रेमी द्वारा सुधानिधि शिशुरोग चिकित्सांक से।

(६०) बालरोगान्तक चूर्ण—मछली का आटा अथवा अनार का छिलका ४०० ग्राम, जावित्री ५० ग्राम, विधारा ५० ग्राम, नागरमोथा ५० ग्राम, असगन्धा १०० ग्राम, सेमर मूसली ५० ग्राम, काकड़ासिङ्गी ५० ग्राम, छोटी इलायची २० ग्राम, विडङ्ग २० ग्राम, मुलहठी ५० ग्राम, सौंफ ५० ग्राम, अतीस मीठी ५० ग्राम, अतीस कड़वी २० ग्राम, सुहागा ५० ग्राम, अजायकृत २० ग्राम अथवा कच्छपास्थि भस्म २० ग्राम।

विधि—सभी को कूट-पीसकर चूर्ण वनालें।

मात्रा—वालक की आयु के अनुसार ½-१ ग्राम तक दूध के साथ।

उपयोग—वालशोष में बहुत उपयोगी योग है इस प्रयोग से सैकड़ों सूखाग्रस्त रोगी वालक निरोग हो चुके हैं। —वैद्य वंसरीलाल साहनी द्वारा सुधानिधि शिशु रोग चिकित्सांक से।

(६१) हर्षुल बालकल्याण वटी—शम्बूक भस्म, टंकण भस्म, जहरमोहरा पिष्टी, कान्तलौह भस्म, मीठा इन्द्रयव का महीन चूर्ण, विल्व चूर्ण, मरोड़फली चूर्ण, कच्छपास्थि भस्म, अतीस चूर्ण, नागरमोथा चूर्ण पके सूखे आंवलों का महीन चूर्ण, वालहरड़, काकड़ासिङ्गी, पिप्पली चूर्ण, मुलहठी का महीन चूर्ण, स्वर्णमाक्षिक भस्म, विडङ्ग चूर्ण, अजवायन चूर्ण, शुद्ध हिंगुल १०-१० ग्राम।

निर्माण विधि—समस्त औषधियों को खरल में डालकर भृंगराज रस, तुलसी पत्र रस, निर्गुण्डी पत्र रस, श्वेत पुनर्नवा रस, कटेरी रस, अद्रक स्वरस, अमृता स्वरस की क्रमशः भावना देकर खूब मर्दन करें जब यह द्रव्य घुटकर मक्खन की तरह मुलायम और गाढ़ा हो जाय तब ४ रत्ती की गोलियां बनाकर छाया में सुखालें।

सेवन विधि—१ वर्ष के अन्दर के बालक को १ गोली असली शहद से या माता के दूध में मिलाकर चटावें तथा दन्तपाली पर धीरे-धीरे इसे अंगुली से मलें।

समय—प्रातः-सायं तथा रोग के वेगानुसार प्रति ६ घण्टे के अन्तर से सेवन करावें।

उपयोग—इस औषधि के प्रयोग से बिना कष्ट के दांत निकल आते हैं। और बालक स्वस्थ बना रहता है। यह औषधि १ माह से लेकर १० वर्ष के बालकों की हर प्रकार की बीमारी में उपयुक्त है। १ माह के दुधमुंहे बालक को माता के स्तन में शहद के साथ इस औषधि को लगाकर दूध पिलाने से मां का दूध दोष बालक को नहीं सताता अपितु बालक उत्तरोत्तर स्वस्थ तथा बलवान् हो जाता है। —पं० हर्षुल मिश्र द्वारा

सुधानिधि शिशु रोग चिकित्सांक से।

(६२) बाल रोगों में उपयोगी सोया जल—सोया, अजवायन, सौंफ, पलाश बीज, शुष्क पोदीना, बड़ी इलायची, लौंग, ज़ायफल, धनियां, काली मरिच, प्रत्येक १०० ग्राम।

विधि—सब द्रव्य कुचलकर परिश्रावण यन्त्र या भबकें में द्रव्य तथा इससे ८ गुना जल डालकर रात भर रहने दें सुबह आग पर चढ़ादें तथा अर्क की तरह धीमी अग्नि पर रखकर ५ बोतल अर्क निकाल लें। इन ५ बोतलों में ५ ग्राम अजवायन का सत्व तथा ५ ग्राम पिपरमैण्ट थौर घोलदें और बोतलों में डाट लगाकर धूप में रखदें सब घुल जावेंगे। बाद में विधिवत् शीशियों में भरकर रखें।

मात्रा—बालकों को आधा चम्मच से एक चम्मच दिन में ३ बार, प्रत्येक बार २ बूंद शहद मिला दें।

उपयोग—यह अग्नि को बढ़ाकर भूख लगाता है। पेट को दर्द दूर करता है, तथा बालकों को स्वस्थ रखता है। ग्राइप वाटर से कई गुना उपयोगी है। यह बालकों के लिए आध्मानहर, अग्निवर्धक, आमदोष पाचक तथा उदर शूलहर है। आतातीसार तथा प्रत्येक ज्वर में लाभप्रद है। बड़ों को भी अधिक मात्रा में देने से लाभकारी है। —पं० विश्वनाथ द्विवेदी द्वारा

सुधानिधि शिशु रोग चिकित्सांक से।

(६३) शैयामूत्रनाशक, शिशु मूत्र नियामक वटी—शिलाजीत सत्व १ ग्राम मल्ल सिन्दूर २ चावल भर, शुद्ध अफीम १ रत्ती, चूल्हे की भुनी मिट्टी ४ रत्ती, काले तिल १० ग्राम, गगनादि लौह २ ग्राम, तालकेश्वर रस १ ग्राम, कालीमरिच १ ग्राम, पीपल ४ रत्ती, जामुन की गुठली १० ग्राम, आम की गुठली १० ग्राम, तुलसी पत्र ६ ग्राम, बिल्व पत्र ६ ग्राम, वट वृक्ष के फल १० ग्राम, गूलर के फल २० ग्राम, पीपल के फल १२ ग्राम, शुद्ध भिलावा २ रत्ती, कत्था ५ ग्राम।

विधि—इन सब द्रव्यों को कूट-पीसकर मिश्रित कर लें। फिर पिलखुन या पीपल या खदिर की आधा किलो छाल को यवकुट करके १ किलो पानी में क्वाथ करें। चतुर्थांश शेष रहने पर छानकर इस क्वाथ से उपरोक्त मिश्रण में भावना दें और ४-४ चावल प्रमाण की गोलियां बना लें।

मात्रा—१-१ गोली प्रातः, सायं तथा रात्रि को बिना किसी अनुपान के जल में घोलकर दे सकते हैं।

उपयोग—प्रथम दिन में ही अपना चमत्कार दिखाती है। शैयामूत्र के अतिरिक्त यह औषधि ज्वरातीसार, बालशोष, गुदपाक आदि विकारों में भी लाभप्रद है।

(६४) बालशोषहर—शम्बूक भस्म २ ग्राम, कर्कटक भस्म ४ ग्राम, गम्भारी चूर्ण १० ग्राम, अश्वगन्धा चूर्ण ६ ग्राम, मधुयष्ठी चूर्ण ६ ग्राम, नागबला चूर्ण ४ ग्राम, लाल चन्दन २ ग्राम, खरैंटी फल १० ग्राम, शतावरी ६ ग्राम, नीलोफर ६ ग्राम, बङ्ग भस्म २ ग्राम, कुक्कुटाण्डत्वक् भस्म १ ग्राम, बसन्त मालती १ ग्राम, मुक्ता पञ्चामृत रस १ ग्राम, बाल पञ्चभद्र रस २ ग्राम, माणिक्य भस्म २ ग्राम।

विधि—इन १६ औषधियों को मिश्रित करके द्राक्षा के क्वाथ से भावना देकर १-१ रत्ती की गोलियां बना

लें और प्रातः, सायं मलाई या मक्खन से चटाकर ऊपर से सौंफ का अर्क २ चम्मच सेवन करावें।

उपयोग—यह योग पोषण तत्वों के अभाव से होने वाले वालशोष पर अति उत्तम है। यह धातुओं का परिपाक करता है।

(६५) कुमार शक्ति पंचानन—स्वर्ण भस्म १ ग्राम, वैक्रान्त भस्म २ ग्राम, माणिक्य भस्म २ ग्राम, मुक्तापिष्टी २ ग्राम, अभ्रक शतपुटी १ ग्राम, प्रवालपिष्टी २ ग्राम, लौह भस्म शतपुटी १ ग्राम, केंकड़ा भस्म ४ ग्राम, कुक्कुटाण्डत्वक् भस्म २ ग्राम, भृङ्गराज घनसत्व १० ग्राम, पीपल चूर्ण ६ ग्राम, वंशलोचन १० ग्राम, शुद्ध स्वर्ण गैरिक ३ ग्राम, भिलावा शुद्ध १ ग्राम, गुग्गुल ४ ग्राम, मयूरपिच्छ भस्म २ ग्राम, शंखपुष्प चूर्ण १० ग्राम, छोटी इलायची ४ ग्राम, वच का चूर्ण २ ग्राम तथा हरी दूव ३० ग्राम।

विधि—सर्वप्रथम भस्मों को मिश्रित करें, फिर चूर्णों को मिश्रित करें। तत्पश्चात् भस्मों को ३० ग्राम हरी दूव के साथ खूब मर्दन करें और चूर्णों के मिश्रण को इसके साथ मिलाकर घुटाई करें। फिर १-१ भावना त्रिफला क्वाथ, ब्राह्मी स्वरस, गुडूची स्वरस, नागरमोथा क्वाथ, नीमपत्र स्वरस, कत्था क्वाथ, कुटकी क्वाथ इन सातों की देवें, तदनन्तर १-१ रत्ती की गोलियां बनावें।

मात्रा—१-२ गोली दूध, शहद आदि में घोलकर प्रातः, सायं सेवन करानी चाहिए। यह गोलियां लगाने के काम में भी आती हैं, इस हेतु प्रति २० ग्राम तिल तैल में २ गोली पीसकर मिला दें तथा सुहाता-सुहाता गरम कर मालिश करें।

उपयोग—बालकों के सभी प्रकार के रोगों पर इसका प्रयोग शतप्रतिशत सफल पाया गया है। क्षीरालसक, वालातीसार, वालशोष, पारगर्भिक रोग, डब्बा रोग, पोलियो आदि रोगों में तो विशेष लाभकारी है। दुर्बल बालक जिनके जीवन की आशा शेष न हो, उन्हें इसका प्रयोग कर लाभ उठाया जा सकता है।

—श्री वी० एस० प्रेमी द्वारा
शिशु रोग चिकित्सांक से।

(६६) बाल यकृत् तथा प्लीहा रोग नाशक पपीतासव—सुपक्व पपीते का रस १० किलो, पुराना गुड़ ६ किलो, लहसुन, अजवायन, काली मरिच, सेंधा नमक प्रत्येक ५०-५० ग्राम, राई पपीता मूल २५०-२५० ग्राम, नौसादर, काला नमक १००-१०० ग्राम, जीरा सफेद, कलमी शोरा २५-२५ ग्राम, सज्जी क्षार, यव क्षार १०-१० ग्राम, मट्ठा २ किलो।

विधि—पपीते के रस में गुड़ मिला दें और अन्य सभी वस्तुओं का चूर्ण बनाकर चीनी मिट्टी के पात्र में भरकर पृथ्वी में १ माह तक गाड़ दें तथा १ माह पश्चात् मोटे वस्त्र से छानकर बोतलों में भर लें।

मात्रा—इसमें से ३ से ६ ग्राम तक बराबर जल मिलाकर दिन में २ बार सेवन कराना चाहिए।

उपयोग—बालकों के यकृत्, प्लीहा विकारों में बहुत लाभदायक योग है। इसके प्रयोग से यकृत् तथा प्लीहा विकार दूर होकर बालकों के मन्दाग्नि, मलावरोध आदि में लाभ हो जाता है।

—स्वर्गीय वैद्यराज देवीशरण जी गर्ग के
संग्रहीत प्रयोगों से।

(६७) प्रवालामृत—असगन्ध नागौरी, नागरमोथा, अतिवला, निम्ब गिलोय, सोयाबीन के बीज की मिंगी, वायविडङ्ग, इन्द्र जौ, पुदीना, अतीस प्रत्येक ५०-५० ग्राम, प्रवाल भस्म २५ ग्राम, स्वर्ण गैरिक तथा शुक्ति भस्म १०-१० ग्राम।

निर्माण विधि—सर्वप्रथम काष्ठौषधियों को जौकुट कर चूर्ण करें। इसके बाद इसे अठगुने जल में भिगोकर २४ घण्टे फूलने छोड़ दें। चौथाई जल शेष रहने पर हाथ से मसलकर पुनः २-३ उफान लगायें। इसके बाद छान आग पर चढ़ाकर विधिवत् घनसत्व बना लें। अब इसे खरल में डालकर सूक्ष्म कर लें। पश्चात् कपड़छान कर जिलाटिन के खाली कैपसूलों में भर लें।

मात्रा—बालकों को छोटा कैपसूल गाय के दूध या माता के दूध के साथ प्रातः-सायं निगलवायें।

उपयोग—यह बालकों के सूखा रोग, क्षय रोग, अस्थि मृदुता, कफ, कास, शक्तिक्षीणता आदि का विश्वस्त

योग है। बालकों के लिए यह अमृत तुल्य योग है। हजारों रोगियों पर परीक्षा कर इसे उपयोगी पाया है।

—सुधानिधि कैपसूल अङ्क से।

(६८) मुक्तादि वटी—मुक्तापिष्टी २० ग्राम, स्वर्ण वर्क, चांदी वर्क, कमल केशर, गुलाब केशर, कहरवा, जहरमोहरा खताई, संगयशद तथा गोरोचन यह आठों औषधियां १०-१० ग्राम, नागकेशर २० ग्राम, केशर ६ ग्राम कपूर ३ ग्राम, गोदन्ती भस्म १५ ग्राम।

विधि—वर्क के अतिरिक्त अन्य औषधियों के चूर्ण को फिर १-१ वर्क मिलाकर मर्दन करें। पश्चात् गुलाब-जल में ८ दिन खरल करके १-१ रत्ती की गोलियां बना लें।

मात्रा—१-४ गोली दिन में २ बार माता या गाय के दूध से।

उपयोग—यह वटी बालकों के शोष रोग को दूर करती है। जीर्ण ज्वर, बालक की दुर्बलता, पाण्डु रोग, अपचन, अफारा, अतीसार, वमन आदि दूर होकर बालक नीरोग तथा सबल हो जाता है।

वक्तव्य—इस वटी के साथ अरविन्दासव देते रहने से विशेष लाभ होता है।

—पं० यादव जी त्रिक्रम जी आचार्य द्वारा सिद्ध प्रयोग संग्रह से।

(६९) मालती चूर्ण—असली खर्पर १ किलो लेकर घड़े में डाल १ किलो नीबू के रस में मिलाकर मन्दाग्नि से उबालें। रस जल जाने पर हांडी को उतार लें और शीतल हो जाने पर धो लेवें। यह शुद्ध खर्पर १ किलो, बड़ी हरड़ १ किलो तथा छोटी इलायची ½ किलो मिला कूट कपड़छन चूर्ण कर बोतलों में भर लेवें।

मात्रा—१ से ३ रत्ती तक दिन में २ बार शहद या मां के दूध या जल के साथ दें।

उपयोग—यह चूर्ण बालकों के बालशोष, जीर्ण अतीसार, जीर्ण ज्वर, वमन, मुखपाक, गुदपाक, अस्थिमार्दव, निर्बलता, अग्निमांद्य आदि रोग तथा प्रसूता के जीर्ण ज्वर को दूर करता है। इस चूर्ण के उपयोग से बाल-शोष रोग थोड़े ही दिनों में दूर हो जाता है। यदि बाल-शोष के साथ ज्वर रहता हो, तो इस चूर्ण को शहद या जल के साथ १ माह तक देते रहने से बालक रोगमुक्त होकर पुष्ट बन जाता है। अस्थिमार्दव रोग में मालती चूर्ण को प्रवाल पिष्टी तथा माण्डूर भस्म के साथ मिलाकर सेवन कराने से सत्वर लाभ होता है।

(७०) बाल वटी—जीरा, छाया में शुष्क पोदीना, हरड़, वायविडङ्ग, लौंग, अतीस, सौंफ, जायफल, भांग, रुमीमस्तंगी, कछुये की पीठ की भस्म, कोयल [गोकर्णी] के बीज, जहरमोहरा पिष्टी तथा केशर यह सब १४ औषधियां समभाग लेकर कपड़छन चूर्ण करें। फिर घी-कुवार के रस में १२ घण्टे खरल करके १-१ रत्ती की गोलियां बना लें।

मात्रा—१-२ गोली प्रातः, सायं दूध में मिलाकर पिलावें।

उपयोग—इस गोली का सेवन कराने से बालकों को दूध का पचन अच्छी तरह हो जाता है। रक्त आदि धातुयें बलवान् बनती हैं और बालक का स्वास्थ्य उत्तम बना रहता है। —पं० यादव जी त्रिक्रम जी आचार्य द्वारा सिद्ध प्रयोग संग्रह से।

(७१) बाल शोषहर वटी—कस्तूरी १ ग्राम, केशर २ ग्राम, साठी चावल १० ग्राम, गधी का दूध ५० ग्राम लें।

विधि—सबको मिलाकर खरल करें। लगभग तीन दिन तक खरल करने से दूध का शोषण हो जायगा। फिर ½-½ रत्ती की गोलियां बना लें।

मात्रा—१-१ गोली दिन में २ बार दूध या शहद के साथ देवें। गधी के दूध का प्रबन्ध हो सके तो उसके साथ दे[illegible]धिक हितावह है।

उपयोग—यह बाल शोषहर वटी बाल शोष को दूर करती है। अस्थि विकृति हो, तो प्रवाल पिष्टी तथा वंशलोचन मिला लेना विशेष लाभदायक है। यदि बालक का उदर बहुत बढ़ गया हो, तो अभ्रक भस्म ½ रत्ती मिलाने पर जल्दी लाभ होता है।

—सिद्ध प्रयोग संग्रह से।

(७२) बालरक्षक शर्बत—शुद्ध डीकामाली [नाड़ी हिंगु], वायविडङ्ग १००-१०० ग्राम, नागरमोथा, इन्द्र जौ, सोया, छोटी इलायची के दाने चारों १५-१५ ग्राम।

विधि—सबको मिलाकर २॥ किलो जल में उबाल-कर चतुर्थांश क्वाथ करें। फिर छानकर १। किलो शक्कर तथा २ रत्ती केशर मिलाकर शर्बत बना लेवें। शर्बत तैयार होने पर तुरन्त छानकर शीतल होने पर बोतलों में भर लेवें।

मात्रा—६० बूंद [चाय का १ चम्मच] दिन में २ बार दें।

उपयोग—बालरक्षक शर्बत बालकों के स्वास्थ्य की रक्षा करने वाला स्वादिष्ट, सुगन्धित तथा सौम्य पेय है। यह शर्बत दीपन, पाचन, रुचिकर, कृमिघ्न तथा बल्य है मलावरोध, अतीसार, मिट्टी खाने की आदत, अपचन, अफारा, दूध पलटना, कृमि, उदर पीड़ा आदि विकारों को ठीक करता है। दांत निकलने के समय की पीड़ा, ज्वर, हरे-पीले दस्त आदि विकार ठीक हो जाते हैं।

—रसतन्त्रसार द्वितीय भाग से।

(७३) बाल रक्षक बिन्दु—केशर, जायफल, जावित्री, छोटी इलायची के दाने, लौंग, पीपल, अतीस, काकड़ासिंगी, नागरमोथा, सोया, बच, वायविडङ्ग यह १२ औषधियां १०-१० ग्राम, कस्तूरी ३ ग्राम तथा रैक्टीफाइड स्प्रिट ६०% ४०० ग्राम लेवें।

विधि—काष्ठौषधियों को जौकुट कर चूर्ण करें, फिर केशर तथा कस्तूरी को स्प्रिट की बोतल में डालकर एक सप्ताह तक रख देवें। रोज दिन में १-२ बार बोतल को हिला लेवें। ८वें दिन फिल्टर पेपर से छान लेवें और जितनी स्प्रिट कम हुई हो, उतनी और मिलाकर ४०० ग्राम पूरा कर लेवें।

मात्रा—२-५ बूंद स्तन्य, गोदुग्ध या जल के साथ दिन में ३ बार दें।

उपयोग—यह बिन्दु बालकों के लिए अमृत रूप उपकारक है। बालकों के कास, जुकाम, दूध पलटना, वमन, उदरशूल आदि में सत्वर लाभकारी है।

(७४) बालरोगान्तक उत्तम पौष्टिक योग—सौंफ, अजवायन, सनाय पत्ती [साफ-डण्ठल न हों, पतले पत्ते वाली], ढाक बीज, वायविडङ्ग, वायखुम्भा, काला नमक, सुहागा भुना, काली जवा हरड़, बड़ी हरड़ का छिलका, छोटी पीपर, मरोड़ फली, बच, बहेड़ा, इन्द्र जौ, कचूर, सोंठ, मुलहठी, नौसादर, रेवन्दचीनी, फूल गुलाब, फूल बनफसा, उत्तम तारों वाला पत्ती गावजवा यह सब १०-१० ग्राम, उन्नाव १० दाने, काले मुनक्के १० दाने, अन्जीर ५ दाने, गूदा अमलतास नया ५० ग्राम, चीनी १ किलो के साथ शर्बत तैयार करें।

सेवन-विधि—पैदा होने के साथ ही आधा चम्मच दवा एक माह तक पानी या मां के दूध के साथ दें। एक माह से तीन माह तक एक चम्मच, तीन माह से एक वर्ष तक २ चम्मच, १ वर्ष से २ वर्ष तक ३ चम्मच। इस प्रकार उम्र के बढ़ते-बढ़ते क्रम से ३ वर्ष तक बालकों को सेवन करावें। यदि पेट में कब्ज हो, तो औषधि को गरम जल के साथ सेवन कराना चाहिए। यदि अतीसार मरोड़ हो, तो ठण्डे जल के साथ दें।

उपयोग—इस औषधि के सेवन से बालकों के अपच, अजीर्ण, उदरशूल, मलावरोध, अतीसार, ज्वर, कास, सूखा, दांत निकलते समय के रोग नहीं सताते। यह योग मेरे ५० वर्ष के अनुभव पर खरा उतरा है। बालकों को मोटा-ताजा बनाने के लिए इस योग का प्रयोग चिकित्सकों को अवश्य कराना चाहिए।

—वैद्य बाबूराम गुप्तार्य द्वारा
धन्वन्तरि अनुभवांक द्वितीय भाग से।

(७५) सुखण्डी नाशक योग—मुलहठी का चूर्ण ६० ग्राम, दालचीनी का चूर्ण १२ ग्राम, वंशलोचन १२ ग्राम, छोटी एला का चूर्ण २४ ग्राम, तुलसी के सूखे पत्ते १२ ग्राम, मिश्री १२० ग्राम।

विधि—इन सब चीजों को कच्चे नारियल के पानी में खूब घोटें। घुटाई इतनी होनी चाहिए, कि कच्चे नारियल का लगभग २५० ग्राम पानी सूख जाय।

मात्रा—१-१ रत्ती की मात्रा दिन में ४-५ बार बकरी के दूध के साथ सेवन करावें। दूध की जगह केवल बकरी का दूध सेवन करावें।

उपयोग—यह योग सुखण्डी (सूखा) रोगनाशक अति उत्तम योग है, अनेक बार का परीक्षित है। पाठक लाभ उठावें, साथ में रोगी को चन्दनबला लाक्षादि तैल की मालिश करानी चाहिए। —डा० विद्यानन्द शुक्ला द्वारा
धन्वन्तरि अनुभवांक द्वितीय भाग से।

(७६) वालकल्याण योग—मण्डूर भस्म १०० ग्राम, स्वर्णमाक्षिक भस्म १० ग्राम, मुक्ताशुक्ति भस्म १० ग्राम, शंख भस्म १० ग्राम, वराटिका भस्म १० ग्राम, अतीस ६० ग्राम।

निर्माण-विधि—उपरोक्त सभी औषधियों को खरल में डालकर ७ भावना नीबू स्वरस की, ७ भावना भृङ्ग-राज स्वरस की, ७ भावना कमल पुष्प स्वरस की देकर रख लें। अन्त में ७ भावना अर्क वेदमुश्क की भी दें।

मात्रा—२-४ रत्ती दही, दूध या अर्क वेदमुश्क के साथ सेवन करावें।

उपयोग—वालकों की दुर्वलता नाशक अति उत्तम योग है। वालशोष नाशक भी अति उत्तम योग है। यह वालकों की भूख को वढ़ाता है तथा उनकी रस-रक्तादि धातुओं का सम्यक् पाक कराने में सहायक होता है

—वैद्य वालमुकुन्द शास्त्री द्वारा
स्वास्थ्य अगस्त १९८० से।

(७७) वाल यकृत् रोगारि योग—पपीता छिलका छाया शुष्क किया हुआ १०० ग्राम, पुनर्नवा चूर्ण, त्रिफला, नागरमोथा, अजवायन, कुटकी, रोहितक त्वक्, गिलोय, पीपल, सोंठ, भृङ्गराज, मेंहदी के पत्ते, विडङ्ग प्रत्येक ५०-५० ग्राम, तुलसी पञ्चाङ्ग, सौंफ १००-१०० ग्राम।

विधि—उपरोक्त सभी औषधियों का विधिवत् चूर्ण वना साफ, स्वच्छ पात्र में भरकर रख लें।

मात्रा—छोटे वालकों को क्वाथ वना मिश्री मिला-कर चटाना चाहिए। वड़े वालकों को ४-६ रत्ती दूध में घोलकर सुवह, शाम चटावें।

उपयोग—वालकों के यकृत् विकार में अति उत्तम योग है। जव यकृत् की क्रिया मन्द होने पर भूख न लगना, अफारा, पतले दस्त आदि विकार हो जाते हैं; तव इस योग के सेवन से विशेष लाभ होता है। वड़ों को भी यकृत् विकार में प्रयोग कराया जा सकता है।

—वैद्य मक्खनलाल शर्मा द्वारा
स्वास्थ्य अगस्त १९८० से।

(७८) शिशु कल्याण—शुद्ध हींग, शुद्ध सोहागा, वादाम की गिरी, उन्नाव, अञ्जीर, करञ्जुए की मींगी, पित्तपापड़ा, वायविडङ्ग, अमलतास का गूदा, गुलाव के फूल, नीलकण्ठी, वंशलोचन, काला मुनक्का, मुलहठी छिली हुई, जवा हरड़, वनफ्शा, इन्द्र जौ, सौंफ, अजवायन, सनाय की पत्तियां, मूर्वा, छोटी इलायची के दाने, मूली के बीज, मुसव्वर इन २३ चीजों को १०-१० ग्राम लें, एक साल पुराना गुड़ २३० ग्राम तथा ४६० ग्राम गाय का ताजा घृत लें।

निर्माण-विधि—सभी चीजों को कूट कपड़छन कर पृथक् रखें। फिर २५० ग्राम जल में गुड़ को खौलावें। जव गुड़ की चाशनी में उफान आने लगे, तव उसमें घी डाल दें और घी तथा चाशनी को कलछे से चलाकर ऊपर से चूर्ण डालकर मिलावें एवं कड़ाही को नीचे उतार लें। इसे शीशे के जार में ढककर रखना चाहिए।

गुण—छोटे वालक के पेट का तनाव, दर्द, अफारा, कब्ज, मल के महीन कृमि, जुकाम, खांसी, दम फूलना, दांत निकलते समय के कष्ट, ज्वर, आंव, यकृत् का दोष, पित्त की वृद्धि, प्यास, पतली टट्टी तथा वार-वार चौंक उठना इत्यादि अनेक प्रकार के विकार इस औषधि के सेवन से दूर हो जाते हैं। छोटे शिशु के लिए यह अत्यन्त उपयोगी चटनी है।

व्यवहार—१ वर्ष के वालक को ३ ग्राम, ६ माह के वालक को १॥ ग्राम और उससे नीची उम्र वाले को ४ रत्ती इसकी एक वार की मात्रा है। सुवह, शाम और सोते समय रात्रि में एक-एक मात्रा देनी चाहिए। वकरी या गाय के दूध को जरा गुनगुना कर उसी में औषधि मात्रा को घोलकर चम्मच से घुटी देनी चाहिए।

विशेष—रोगानुसार १-२ चम्मच खौलते हुए जल में इसे घोलकर या शहद में मिलाकर या मां के दूध के साथ भी इसका उपयोग कर लाभ उठाया जा सकता है।

—रसायनसार द्वितीय भाग से।

(७९) वाल-पार्श्वशूलहर लेप—कवीला, चूना तूतिया, वड़ी हरड़, वहेड़ा और कत्था ये सव १०-१० ग्राम लें और गाय का घी ३० ग्राम पृथक् से लें।

निर्माण विधि—सभी सूखी चीजों को कूटकर कपड़े में छान लें और घी में मिला लें।

गुण—इसके व्यवहार से वालकों की पसली का रोग शान्त होता है।

उपयोग—इसे जरा गरम कर एक कपड़े पर इसकी मोटी तह फैलावें और जहां पसली का कष्ट हो वहां पर साट दें। बिना कपड़े का भी लेप की भांति इसे व्यवहार किया जा सकता है।

दिन-रात मे इस लेप को ३-४ बार उपयोग करना चाहिए। एक बार के व्यवहार के बाद कम से कम २ घण्टे तक उसे लगा रहने देना चाहिए। लेप को हटाकर उस स्थान को सूखे कपड़े से साफ कर कपड़े से ढंक देना चाहिए। पुनः घण्टे-दो घण्टे के बाद लेप या पट्टी का उपयोग करना चाहिए —रसायनसार द्वितीय भाग से।

(८०) बालजीवनामृत—अतीस मीठा, काकड़ासिंगी, सौंफ, मंजीठ, सनाय, गुलाब के फूल, उशवा, गिलोय, खूबकलां, गुलबनपशा, मुलहठी, खरैंटी, खत्मी, बालछड़, नीलोफर, शुद्ध सुहागा, अमलतास का गूदा, हरड़, बहेड़ा, आंवला, नागरमोंथा, अजमोद, अनन्तमूल, इन्द्रयव, पित्तपापड़ा, मुनक्का, लिसौड़े, उन्नाव, अफसन्तीन, पुनर्नवा, हल्दी, कटेरी, आम्रगिरी, जामुनगिरी, असगन्ध इन सब द्रव्यों को ५०-५० ग्राम लेकर ४० लिटर जल में १२ घण्टे भिगोकर क्वाथ बनावें। जब क्वाथ चतुर्थांशावशेष रहे, उतार कर इसमें खांड ५ किलो, मधु २॥ किलो, लौहचूर्ण १। किलो, जायफल, तेजपात, अजवायन, खुरासानी अजवायन, छुहारा, दालचीनी, पीपल छोटी, नागकेशर, चित्रक, चन्दन सफेद, जीरा, काला जीरा, बच, कपूर, काली मरिच, रसौत, पीपलामूल, खूनखराबा, सारसापरेला इन सब द्रव्यों को २५-२५ ग्राम लेकर कूट प्रक्षेप देकर वायफूल ८०० ग्राम डाल पात्र का मुख बन्द कर रख दें। एक माह के बाद भबके में डालकर अर्क खींच लें। अर्क २० बोतल खींचकर पुनः उसी पात्र में डाल दें और दोबारा २५ बोतल अर्क खींचें। पुनः उसी पात्र में डालकर तीसरी बार १० बोतल अर्क खींच लें। इस अर्क में मधु २ किलो मिलाकर रख लें।

मात्रा—२ मिलीलिटर से ५ मिलीलिटर तक अथवा अवस्थानुसार दें।

गुण—यह बालकों के सब रोगों को दूर करके शारीरिक शक्ति को बढ़ाता है। पाचन विकार दूर करता है। पाचन शक्ति को बढ़ाता है, आयु को बढ़ाता है, बालकों के स्वास्थ्य का सच्चा रक्षक है। इसके सेवन से दूध का फेंकना, दूध का पाचन न होना, हरे-पीले दस्त, वमन, खांसी तथा गले पड़ना प्रभृति रोगों को दूर करता है। बाजारी बालामृतों से हजार गुना उत्तम है। इससे बालकों को भूख कम लगती है। पाचन विकार दूर हो जाते हैं। चेहरा गुलाब के फूल की भांति खिल उठता है। यकृत्-प्लीहा के विकार दूर करता है। उदर विकार नष्ट करता है, रक्ताल्पता को दूर करता है।

१. प्लीहावृद्धि—अर्क लवण अवस्थानुसार मात्रा में बालजीवनामृत के साथ दें। इससे तिल्ली ठीक हो जाती है।

२. रक्ताल्पता—माण्डूर भस्म के साथ दें।

३. पारिगर्भिक रोग—सगर्भा का दूध पीने से बालक का शरीर दुर्बल हो जाता है। सूखने लगता है, ऐसी दशा में यह बालजीवनामृत अमृत के तुल्य है।

४. सूखा मसान रोग—इसको कुमार कल्याण रस के साथ दें।

५. यकृत् वृद्धि—मण्डूर वटक के साथ दें।

६. उदरशूल—महाशंख वटी के साथ दें।

इसी प्रकार रोगानुसार भेषज योजना कर अनुपान रूप में दें, पूर्ण परीक्षित है।—श्री मोहरसिंह आर्य द्वारा

(८१) बालरोगनाशक-बालक पाल—कर्कटार्क• २॥ किलो, चूने का पानी ४ किलो, गुलाब के फूल २० ग्राम, लौंग ६ ग्राम, अमलतास का गूदा २५ ग्राम, छोटी एला १० ग्राम, नागरमोथा १० ग्राम, काकड़ासिङ्गी १० ग्राम, छोटी पीपर १० ग्राम, अजवायन १० ग्राम, पलाश पापड़ा १० ग्राम, वंशलोचन १० ग्राम, जायफल १० ग्राम, जावित्री १० ग्राम, दालचीनी १० ग्राम, कुटकी १०

• **कर्कटार्क निकालने की विधि**—बड़े तथा पुष्ट केंकड़े १ किलो, जल ४ किलो। प्रथम केंकड़े को कुचलकर जल के कलईदार पात्र में डालदें और २४ घण्टे पश्चात् अर्क खींचलें। —सम्पादक।

ग्राम, अडूसा पत्ती १० ग्राम, अतीस १५ ग्राम, वायविडङ्ग १५ ग्राम, मुलहठी २० ग्राम, सौंफ २० ग्राम, छोटी हरड़ २० ग्राम, छुहारा २५ ग्राम, बेलगिरी २५ ग्राम, सफेद चन्दन २५ ग्राम, चौपतिया बूटी सूखी २५ ग्राम, छोटी दुद्धी २५ ग्राम, लाल पुनर्नवा की जड़ २५ ग्राम, सहदेई छोटी २५ ग्राम, गिलोय हरी २५ ग्राम, गूलर की छाल २५ ग्राम, पीपल की छाल २५ ग्राम, वट वृक्ष की छाल २५ ग्राम, जामुन छाल २५ ग्राम, केले के छिलके की जली हुई कालीभस्म ६० ग्राम, मिश्री ४ किलो।

निर्माण विधि—कर्कटार्क और चूने के पानी में उपर्युक्त सभी औषधियों को साधारण बारीक पीसकर कलईदार पात्र में डालकर धूप में रखदें। करीब ४८ घण्टे के बाद जब झाग उठने लगे तब मथनी से छाछ की तरह खूब मथने बाद में भवका द्वारा ६ बोतल अर्क खींचलें। अर्क खींचते समय अर्क नली के मुख पर एक स्वच्छ कपड़े में ३ ग्राम केशर तथा १० ग्राम कर्पूर की पोटली बनाकर लटकादें ताकि अर्क इस पोटली से होकर टपकता रहे ध्यान रहे अर्क मन्द अग्नि पर ही परिस्रुत करें। अब अर्क में मिश्री डालकर अति मन्द-मन्द अग्नि के सहारे शर्बत बनाकर रखलें।

मात्रा—२-२ चम्मच सुबह शाम सेवन करावें।

उपयोग—यह शिशुओं के प्रायः सभी रोगों पर अव्यर्थ योग है। इसके नियमित प्रयोग से बालक स्वस्थ निरोग और हृष्ट पुष्ट बने रहते हैं और दांत कष्ट रहित बड़ी आसानी से निकल आते हैं। यह औषधि बालकों के ज्वर, खांसी, कुकरकास, अतीसार, वमन, दुर्बलता, भूख की कमी, कब्ज, कृमि आदि रोगों में शीघ्र लाभकारी है।

(८२) बाल जीवन वटी—यह भी बाल रोगों पर एक अमृत सदृश लाभदायक योग है।

घटक योग—सज्जीक्षार (खाने वाला सोड़ा) १० ग्राम, छोटी पीपल १० ग्राम, पके केले के छिलके की भस्म १० ग्राम, अतीस १० ग्राम, लाल हरीतकी १० ग्राम, एलाबीज १० ग्राम, वंशलोचन असली १० ग्राम, काकड़ासिङ्गी १० ग्राम, मण्डूर भस्म १० ग्राम, कच्छपास्थि भस्म १० ग्राम, पीपल वृक्ष की छाल १० ग्राम।

विधि—सबको छोटी दुद्धी के स्वरस में भलीभांति खरल कर चना बराबर गोलियां बनाकर छाया में शुष्क करलें।

मात्रा—१ से २ गोली दिन में दो या तीन बार अवस्थानुसार दें।

गुण—यह भी बालकों के सभी रोगों में अक्सीर है जैसे—कै, दस्त, ज्वर, खांसी, सभी प्रकार के उदर रोग, रक्ताल्पता, यकृत् दोष, मुंह के छाले, कब्ज और कुकरकास आदि बाल रोगों पर अव्यर्थ है, पाठकगण बनाकर लाभ उठावें, ये दोनों योग हमारे गुप्त पेटेण्ट योग हैं। —श्री रुद्रनारायण सिंह नयागांव सारण द्वारा अनुभूत योगमाला से।

(८३) बालकों के लिए एक मधुर पेय—चीनी मिट्टी का एक बड़ा पात्र लीजिए, जिसमें १० किलो पानी आ जाय, आप चाहें तो कांच या स्टेनलेस स्टील या कलईयुक्त पात्र ले सकते हैं। पात्र को गरम पानी से अच्छी प्रकार साफ करके स्वच्छ वस्त्र से पोंछ लें। इसमें बिना बुझा हुआ कलई चूना ५८० ग्राम डालें और फिर ऊपर से ८ किलो गरम पानी डालें। आधा घण्टे के बाद एक लकड़ी से अच्छी तरह चलावें। सारा पानी श्वेत वर्ण का हो जायगा, इसे रखा रहने दें। आठ घण्टे बाद सावधानी से इसे निथार लें। निथारते समय ध्यान रखें कि नीचे का चूने वाला भाग न आने पावे। जब चूने का अंश आना प्रतीत हो, तब निथारना बन्द कर दें। यदि इसमें असावधानी से कुछ चूने का अंश चला जाये, तो इसे पुनः दूसरे दिन भली प्रकार निथार लें। अब यह जल शर्बत बनाने के लिए तैयार हो गया।

यदि, उक्त चूने का पानी निथरा ६ किलो है, तो इसमें १॥ किलो मुलहठी का कूटन डाल दें और २४ घण्टे भीगने दें। बाद में देखेंगे कि पानी का वर्ण रक्त वर्ण का हो गया है। हां मुलहठी पीली ही होती है। अब इस पानी को सावधानी से निथार लें, निचोड़ें नहीं। शेष द्रव्यों को पृथक् रख दें, नीचे कुछ गाढ़ा सा भाग दिखाई देगा। इसे काम में न लें, केवल पानी जैसा तरल पदार्थ

ही उपयोग में लें। इसे भी ४ घण्टे और रखा रहने दें, जिससे भली प्रकार निथर जाय।

अब इसे स्टेनलेस स्टील के पात्र में डालकर अग्नि पर रखें। यदि ४ किलो पानी हो, तो ७५० ग्राम मिश्री मिलाकर मन्दाग्नि पर पाक करें। जब पकते-पकते एक तार की चाशनी हो जाय, तो तुरन्त उतार लें और स्वयं ठण्डा हो जाने पर निथार कर बोतलों में २०-२० ग्राम कतीरा गोंद का बारीक चूर्ण मिलाकर भर लें तथा इच्छानुसार प्रयोग करें।

इन बोतलों में कतीरा डालने के बाद अच्छी प्रकार हिलाना चाहिए। यह शर्बत वर्ष पर्यन्त सुरक्षित रहता है। फफूंदी आदि से सुरक्षित रखने के लिए अन्य किसी द्रव्य को मिलाने की आवश्यकता नहीं होती। बाजार में बिकने वाले ग्राइप वाटर और लाइम वाटरों से उत्तम कार्य करता है, अतः उपयोगी है।

[१] दूध पीते बच्चों का वमन एक ही मात्रा में ठीक हो जाता है।

[२] अपच के कारण होने वाले दस्तों में बच्चों के लिए उपयोगी है।

[३] दांत निकलते समय के बच्चों के कष्ट में मसूढ़ों पर लगाइये।

[४] अस्थिमार्दव और सूखा रोग में इसका उपयोग प्रारम्भ से ही करना चाहिए।

[५] बच्चों के ज्वर, खांसी, सर्दी और जुकाम में इसका प्रयोग लाभदायक है।

[६] बच्चों के विबन्ध मे दिन में ३-४ बार देना चाहिए।

[७] अतीसार में जायफल के चूर्ण के साथ चटाना चाहिए।

इस शर्बत का प्रयोग अनुपान भेद से अनेक बाल-रोगों में सफलता के साथ प्रयोग किया जाता है। यह अत्यन्त उपयोगी मधुर पेय है।

—वैद्य पं० चन्द्रशेखर जैन शास्त्री द्वारा मोहता आयुर्वेद पत्रिका से।

[इ] कुछ उपयोगी घुटियां

(६) जन्म घुटी—सौंफ, सौंफ की जड़, वायविडंग, अमलतास का गूदा, सनाय, बड़ी हरड़ का छिलका, छोटी हरड़, वच, अंजीर, अजवायन, गुलाब पुष्प तथा पत्ती ढाक बीज, मुनक्का, उन्नाव, गुड़, काला नमक, शुद्ध टंकण।

निर्माण विधि—इन सभी को समभाग लेकर यवकुट चूर्ण कर रखें तथा आवश्यकता पड़ने पर २ माशा से १० माशा तक, जल में चतुर्थांश क्वाथ कर पिलावें।

प्रयोग—इस घुटी के प्रयोग से मलावरोध, उदरशूल तथा कफ विकार दूर होते हैं निरन्तर प्रयोग से बाल निरोग तथा स्वस्थ रहता है।

(७) शिशु सुधार घुटी—गम्भारी फल, लाल कमल, खस, केशर, नील कमल, जटामांसी, खरैंटी, लघु एला, मजीठ, मोंथा, हरड़, बहेड़े का वक्कुल, आंवला, अनन्तमूल, वच, कपूर, निशोथ काली, नील पंचांग, परवल पत्ता, पित्तपापड़ा, मुलहठी, महुआ के फूल, मुरामांसी, अर्जुनछाल २-२ तोला तथा मुनक्का आधा किलो, धाय के फूल ३२ तोला सबको यवकुट करलें।

विधि—चिकने घृतपात्र में १२½ किलो जल डालें तथा २½ किलो मिश्री, १। किलो मधु तथा उक्त चूर्ण डाल कर मुखमुद्रा करदें तथा धूप में पड़ा रहने दें, ४० दिन के बाद छानकर शीशियों में रखकर डाट बन्द करलें।

प्रयोग—उक्त घुटी को २ से ४ माशा तथा बड़ों को १ से १। तोला तक समजल अथवा मातृ दुग्ध के साथ दें।

प्रभाव—इस घुटी के सेवन से बालक के उदर रोग, हड्डी का कमजोरी, उल्टी, दस्त तथा निरन्तर सेवन से सूखा रोग दूर होता है।

(८) बाल जन्म घुटी—सौंफ, शाहतरा, उन्नाव, वायविडङ्ग, चाकसू (भुने हुए), नरकचूर, बड़ी हरड़ का वक्कुल, लाल कमल, सनाय पत्ती १-१ माशा।

विधि—सब कूटकर यवकुट चूर्ण करें ७५ ग्राम जल में थोड़ा गर्म करें फिर गूदा अमलतास ६ माशा गुलकन्द

३ माशा, अलग गर्म पानी में भिगो दें और सुरक्षित शीशियों में रखें।

प्रयोग—हाल के बालक को १० दिन तक ३-४ बूंद दो बार पिलावें फिर दो माह तक दूसरे तीसरे दिन कुछ मात्रा बढ़ाकर तथा पुनः ६ माशा ६ माह तक हफ्ते में एक दो बार दें तो बालक को निरोग बनाये रखेगी।

(९) पाचन रेचन घुटी—अजवायन, अजमोद, बड़ी हरड़ का बक्कुल, छोटी हरड़, छुहारा बक्कुल, जीरास्याह, सुहागा चौकिया भुना, सनाय, गूदा अमलतास, दुधबच, मुलहठी, गुलाब फूल, लौंग, ब्राह्मी, दाख, बंशलोचन, गिलोय, सोंठ, इन्द्र जौ मोंथा, धनियां, चीता सभी वस्तु १-१ तोला, सेंधा नमक ३ माशा, गुड़ पुराना ५० ग्राम।

सबको यवकुट कर रखें, बालक होने के बाद आवश्यक समय पर ३ से ६ माशा तक १० तोला पानी में चतुर्थांश क्वाथ कर शीशी में रखें। ये ४ खुराक हैं।

प्रयोग—बालक को समय-समय पर सिपी में रुई की बत्ती बनाकर उक्त द्रव क्वाथ का एक भाग पिलावें। गर्मी के मौसम में जल तथा शीतऋतु में मातृ दुग्ध समभाग पिलाते समय मिला दें इससे बालक के उदर सम्बन्धी सभी रोग ठीक होंगे तथा बालक निरोग भी रहेगा।

(१०) शिशु रक्षक घुटी—उन्नाव, सुहागे का फूला, बायविडङ्ग, अमलास का गूदा, सौंफ की जड़, जीरा, सौंफ, बालबच, हरड़ छोटी, अजवायन, बड़ी हरड़ का बक्कुल, मुनक्का, गुलाब फूल, पुराना गुड़।

विधि—उपरोक्त सभी वस्तु बराबर लेकर यवकुट कर रखें, जब बालक को देना हो तब मिट्टी के सकोरे में या कलई के पात्र में थोड़ा पानी डालकर गर्म करें जब पानी खौलने लगे तब चूर्ण ३ से ६ माशे डालें और कुछ देर रखा रहने दें। फिर उसे मलकर छान लेवें उसमें ½ रत्ती काला नमक डालकर एक या दो खुराक करके बालक को अवस्था के अनुसार पिलावें।

प्रयोग—इसके प्रयोग से बालक के पेट की पीड़ा, बदहजमी, आध्मान, दूध पलटना, तथा पसली चलना रोग दूर होते है इसके नित्य सेवन से बालक हृष्ट पुष्ट हो जाता है।

मात्रा—अवस्था के अनुसार बढ़ा सकते हैं।

(११) बाल स्वास्थ्य रक्षक घुटी—इन्द्र जौ, जीरा भुना, पोदीना सूखे, बहेड़े का बक्कुल, मुलहठी, गुलबनफ्सा, बायखुम्मा, बायबिडङ्ग, अजवायन, छोटी इलायची, मरोड़ फली, गुलाब फूल, सुहागे का फूला, दुधबच, उन्नाब, सनाय प्रत्येक ६-६ माशा। छोटी हरड़, सौंफ १-१ तोला, बड़ी हरड़ का बक्कुल २ तोला, गूदा-अमलतास, ३ तोला, मिश्री १० तोला, मुनक्का २० दाने।

विधि—उक्त सब द्रव्यों को जवकुट करके रखलें।

प्रयोग—६-६ माशे को ६ तोला पानी मे औटावें आधा पानी रहने पर उतार कर छानकर शीशी में रखलें इसे बालक को दो तीन बार पिलावे। इस प्रकार १ हफ्ते में एक बार तो अवश्य ही पिलावें तथा आवश्यकता पड़ने पर भी पिलावें। हल्की मात्रा में अधिक दिन देने से बालक को कोई रोग नहीं सताता तथा हृष्ट पुष्ट रहता है। इसको आसव रूप में भी तैयार कर सकते हे अच्छा योग है।

(१२) बाल रक्षक घुटी—मुलहठी, बच मीठी, अतीस ५०-५० ग्राम, तुलसी पत्र २½ तोला, धाय के फूल २½ तोला, मिश्री ७½ ग्राम।

विधि—मिश्री की एक तार की चाशनी करके उक्त सभी वस्तु का चूर्ण डालकर रखदें तो शर्बत बन जायगा २० दिन के बाद छानलें तो यही घुटी बन जायगी।

प्रयोग—यह घुटी या शर्बत रूप में कैसे भी प्रयोग करें।

मात्रा—१ माशा से २ तोला तक अवस्था के अनुसार हैं। यह बाल रक्षक परम उपयोगी अमृत तुल्य महौषधि है तथा सस्ती व गुणकारी है।

एक दिन के बालक से लेकर १२ साल तक के को निस्सन्देह प्रयोग निरन्तर कराते रहने पर बालक को मोटा ताजा, बलवान् बनाने तथा प्रत्येक रोग को सुगमता से दूर करने में सहायक है, इसी शर्बत को अन्यौषधि में अनुपान स्वरूप प्रयोग किया जा सकता है।

इस प्रकार उक्त सात घुटियां समय, रोग तथा देश-काल व वय, बलाबल के अनुसार प्रयोग करने पर शिशुओं को निरोग तथा बलवान् बनाने में समर्थ है।

—श्री ऋषिबल्लभ त्रिवेदी द्वारा
सुधानिधि शिशुरोग चिकित्सांक से।

[ई] प्रमुख शास्त्रीय योग

क्रमांक	कल्पना	औषधि नाम	ग्रन्थ सन्दर्भ	मात्रा एवं समय	अनुपान	विशेष
१	रस	कुमारकल्याण रस	भै० र०	१–२ चावल दिन में २ बार	मधु+दुग्ध	शक्ति संरक्षण हेतु।
२	,,	बालरोगान्तक रस	,,	२–४ चावल दिन में २ बार	,,	त्रिदोष ज्वर, कास नाशक।
३	,,	बाल रस	,,	,, ,,	ताम्बूलपत्र स्वरस	ज्वर, श्वास नाशक।
४	,,	महागन्धक रस	,,	,, ,,	मधु या तक्र	अतीसारहर।
५	,,	लक्ष्मीनारायण रस	यो० र०	,, ,,	,,	ज्वर, अतीसारहर।
६	,,	दन्तोद्भेदगदान्तक रस	भै० र०	२५० मि०ग्रा० दिन में २ बार	जल में पीसकर दांतों पर घिसें	दन्तोद्भेदगद विनाशक।
७	,,	बालार्क रस	सि०यो०सं०	६०–१२० मि० ग्रा० दिन में २ बार	मधु	कृमि, ज्वर, आक्षेपहर।
८	,,	कनकसुन्दर रस	र० चि०	,, ,,	,,	दन्तोद्भेदगद विनाशक।
९	,,	कर्पूर रस	भै० र०	,, ,,	,,	पक्वातीसारहर।
१०	,,	मकरध्वज रस	,,	३० – ६० मि० ग्रा० दिन में २ बार	शृङ्ग भस्म+तुलसीपत्र-स्वरस+मधु	श्वासनाशक।
११	,,	आनन्दभैरव रस	,,	,, ,,	मधु	ज्वर, अतीसारहर।
१२	,,	चन्द्रशेखर रस	,,	,, ,,	,,	ज्वर, श्वास-कासहर
१३	,,	वसन्त मालती	यो० र०	,, ,,	,,	जीर्णज्वर, बालशोषहर।
१४	भस्म	सुधाषट्क योग	सि०यो०सं०	२५० मि०ग्रा० दिन में २ बार	दुग्ध	बालशोष विनाशक।
१५	,,	मण्डूर भस्म	र० त० सा०	१२५ मि०ग्रा० दिन में २ बार	मधु	यकृद्वृद्धिहर, रक्तवर्धक।
१६	,,	प्रवाल भस्म	,,	,, ,,	,,	ज्वर, कास, बालशोषहर।
१७	,,	शृङ्ग भस्म	,,	६०–१२५ मि० ग्रा० दिन में २ बार	,,	,, ,,
१८	,,	गोदन्ती भस्म	,,	१२५ मि०ग्रा० दिन में २ बार	,,	,, ,,
१९	वटी	बालवटी	सि०यो०सं०	½–१ गोली दिन में २ बार	दुग्ध	अजीर्ण, छर्दि, अनिद्राहर।
२०	,,	मुक्तादि वटी	,,	,, ,,	,,	बालशोष, दन्तोद्भेदगदहर।
२१	,,	मधुरान्तक वटी	र० त० सा०	,, ,,	जल+अमृतारिष्ट	ज्वरहर।
२२	,,	संजीवनी वटी	शा० सं०	,, ,,	मधु	ज्वर, अजीर्णहर।
२३	,,	लशुनादि वटी	वै० जी०	,, ,,	शतपुष्पार्क	विषूचिकाहर।

२४	वटी	माणिक्यरसादि वटी	आ० नि० मा०	१ गोली दिन में २-३ वार	ताम्बूल स्वरस	ज्वर, श्वास, अतीसारहर
२५	,,	हिंगुलादि वटी	सि० मै० मणि०	,, ,,	मदारपत्र-स्वरस	ज्वर, श्वास नाशक।
२६	लौह-मण्डूर	नवायस लौह	चरक०	६०–१२० मि० ग्रा० दिन में २-३ वार	मधु	यकृद्वृद्धिहर, रक्तवर्धक।
					,,	,, ,,
२७	,,	पुनर्नवादि मण्डूर	,,	,, ,,	,,	यकृद्वृद्धिहर, रक्तवर्धक, नेत्र-
२८	,,	सप्तामृत लौह	र० चि०	,, ,,		रोगहर।
२९	क्षार	शिग्रु क्षार	र० त०	,, ,,	शंखभस्म + मरिच + मधु	अतीसारहर।
३०	,,	यवक्षार	,,	,, ,,	जल	मूत्रकृच्छ्रहर।
३१	,,	अपामार्ग क्षार	,,	,, ,,	मधु	श्वास-कासहर।
३२	चूर्ण	बालपंचभद्र	सि० यो० सं०	२५०–५०० मि० ग्रा० दिन में २-३ वार	मधु + दुग्ध	बालशोषहर।
३३	,,	पिप्पल्यादि चूर्ण	च० द०	१२५–२५० मि० ग्रा० दिन में २-३ वार	मधु + शर्करा + निम्बू-स्वरस	हिक्कारोगहर।
३४	,,	पंचकोल चूर्ण	,,	,, ,,	मधु	छर्दिहर।
३५	,,	पुष्करादि चूर्ण	भै० र०	,, ,,	,,	कासहर।
३६	,,	धातक्यादि चूर्ण	,,	,, ,,	,,	ज्वरातीसारहर।
३७	,,	बालचातुर्भद्रिका	,,	,, ,,	,,	,,
३८	,,	बालमित्र चूर्ण	वृ० मा०	,, ,,	मधु + तक्र + तण्डुलोदक	रक्तातीसारहर।
३९	,,	लघु गंगाधर चूर्ण	शा० सं०	,, ,,	,,	रक्तातीसारहर, प्रवाहिकाहर।
४०	,,	तालीसादि चूर्ण	यो० र०	,, ,,	मधु	श्वास-कास, ज्वरहर।
४१	आसव-अरिष्ट	अरविन्दासव	भै० र०	५–१० मि० लि० भोजनोत्तर या दिन में ३-४ वार	समान जल मिलाकर	आयुष्य, ग्रहणदोषसर्वरोगहर
४२	,,	द्राक्षारिष्ट	,,	,, ,,	,,	मन्दाग्नि, विबन्धहर।
४३	,,	कुमार्यासव	यो० र०	,, ,,	,,	मन्दाग्नि, उदररोगहर।
४४	,,	लोहासव	भै० र०	,, ,,	,,	यकृद्वृद्धिहर, रक्तवर्धक।
४५	,,	सारस्वतारिष्ट	,,	,, ,,	,,	बुद्धिमान्द्यहर।
४६	,,	अमृतारिष्ट	,,	,, ,,	,,	ज्वरहर।
४७	क्वाथ	भद्रमुस्तादि	भै० र०	१ ग्राम + १६ ग्राम जल ४ ग्राम शेष	मधु मिलाकर दिन में २-३ वार	ज्वरनाशक।

४८	क्वाथ	धातक्यादि	शा० सं०	१ ग्राम + १६ ग्राम जल ४ ग्राम शेष दिन में २-३ बार	मधु मिलाकर	ज्वरातीसारहर।
४९	,,	जन्मघुण्टिका	सि० भै० मणि०	१ ग्राम + १० ग्राम जल ४ ग्राम शेष दिन में २-३ बार	गुड़ मिलाकर	आध्मान, कृमि, विबन्धहर।
५०	,,	कर्करादि क्वाथ	भै० र०	,, ,,	,,	अतीसार, छर्दिहर।
५१	घृत	कुमारकल्याण	भै० र०	४-५ बूंद दिन में २ बार	कवोष्ण दुग्ध	दन्तोद्भेदगदविनाशक।
५२	,,	अष्टमंगल	,,	१-२ ग्राम दिन में २-३ बार	,,	ग्रहदोषहर।
५३	,,	चांगेरी घृत	च० द०	,, ,,	,,	अतीसारहर।
५४	लेह	लवंगचतुःसम लेह	भै० र०	३०-१२० मि० ग्रा० दिन में २-३ बार	मधु + सिता	आमातीसारहर।
५५	,,	धातक्यादि लेह	च० द०	,, ,,	मधु	ज्वर, अतीसारहर।
५६	,,	कुष्ठादि लेह	च० द०	,, ,,	घृत + मधु	वर्णायुः कान्तिजनक।
५७	,,	बालकुटजावलेह	भै० र०	१२०-२४० मि० ग्रा० दिन में २-३ बार	मधु	आम, रक्तातीसार।
५८	,,	च्यवनप्राश	च० द०	१-२ ग्राम दिन में २-३ बार	दुग्ध	अङ्गवर्धक, रोगहर।
५९	,,	कण्टकार्यवलेह	शा० सं०	½ ग्राम-१ ग्राम दिन में २-३ बार	—	दुष्टकास, हिक्काहर।
६०	,,	अष्टाङ्गावलेह	वृ० मा०	,,	मधु + आर्द्रक स्वरस	कफज्वर, श्वास, कासहर।
६१	तैल	शंखपुष्पी तैल	भै० र०	यथेष्ट	अभ्यङ्ग हेतु	बालशोषहर।
६२	,,	लाक्षादि तैल	,,	,,	,,	शोष, ज्वर, ग्रहदोषहर।
६३	,,	चन्दनादि तैल	,,	,,	,,	जीर्णज्वर, यक्ष्मा दाहहर।
६४	,,	बिल्वादि तैल	शा० सं०	२-४ बूंद कान में २-३ बार डालें	—	कर्णशूल, कर्णस्रावहर।
६५	,,	बालरक्षक तैल	र० त० सा०	यथेष्ट दिन में २-३ बार	अभ्यङ्ग हेतु	ज्वर, बालशोष, पामाहर।
६६	धूप	महाधूप	भै० र०	थोड़ी-सी धूप अग्नि पर डालकर	बच्चों को धुंआं लगावें	ग्रहदोषहर।
६७	,,	माहेश्वर धूप	र० र० स०	,, ,,	,,	
६८	,,	विजय धूप	,,	,, ,,	,,	

६९	धूप	कुष्ठादि धूप	च० द०	थोड़ी-सी धूप अग्नि पर डालकर	बच्चों को धुंआं लगावें	ग्रहदोपहर।
७०	लेप	कासीसादि लेप	वृ० नि० र०	यथेष्ट, यथासमय	जल में पीसकर लेप करें	अहिपूतना (गुदा पकना) नाशक
७१	,,	द्विनिशादि लेप	शा० सं०	,, ,,	,,	क्षतजन्य शोथहर।

बाल रोगों में सामान्य चिकित्सा उपक्रम

जो रोग वयस्कों में होते हैं वही रोग प्रायः बालकों में भी पाये जाते हैं। किन्तु बड़ों की अपेक्षा उनमें देह, अग्नि तथा दोष आदि के लघु होने से उनके रोग भी लघु होते हैं। बालकों की आयु के अनुसार वह ३ प्रकार के होते हैं।

(१) केवल दूध पीने वाले (क्षीरप)।

(२) अन्न खाने वाले (अन्नज)।

(३) दूध तथा अन्न दोनों को सेवन करने वाले। इन तीनों प्रकारों के बालकों की चिकित्सा भी भिन्न होती है। क्षीरप बालक के रोग होने पर उसे धात्री (दूध पिलाने वाली) की चिकित्सा करनी चाहिये ताकि ओषधि प्रभावित दूध के द्वारा बालक का रोग दूर हो सके। अन्न तथा दुग्ध दोनों का सेवन करने वाले बालकों को रोग होने पर माता तथा बालक दोनों की चिकित्सा करनी चाहिये, केवल अन्न सेवन करने वाले बालकों को केवल उन्हें ही ओषधि देकर चिकित्सा करनी चाहिये।

धात्री को केवल यथावश्यक ही लंघन कराना चाहिये। शिशु के लिये अपतर्पण ठीक नहीं होता। पुरुषों के लिये समस्त रोगों की जो भेषज कही गई है वह सभी अत्यल्प मात्रा में बालकों को भी दिये जा सकते हैं।

कुछ बाल रोगों में सफल औषधि व्यवस्था-पत्र

[क] बालशोष (फक्क) रोग में—(१) वसन्तमालती १ रत्ती, शम्बूक भस्म २ रत्ती, कुक्कुटाण्डत्वक् भस्म ३ रत्ती, कुमारकल्याण रस ½ रत्ती। एक मात्रा × सुबह, दोपहर, शाम मधु या दुध के साथ मिलाकर दें।

(२) सुधापट्क योग (सिद्ध योग संग्रह) २ रत्ती × १ मात्रा दिन के ३ बजे शहद या दूध से दें।

(३) अरविन्दासव १-२ चम्मच बराबर जल मिलाकर दिन में १-२ बार भोजनोपरान्त दें।

(४) चन्दनबला लाक्षादि तैल—अभ्यंगार्थ प्रयोग करावें।

[ख] बाल कास में—(१) बालचातुर्भद्र चूर्ण १ रत्ती, चन्द्रामृत रस ½ रत्ती, शृङ्गभस्म ½ रत्ती। १ मात्रा × सुबह, दोपहर, शाम शहद या दूध में घोलकर दें।

(२) टंकण ½ रत्ती, सितोपला १ रत्ती। × १ मात्रा दिन के १० बजे तथा ४ बजे मधु या दूध के साथ यदि कुकरकास हो तो साथ में यवक्षार या अपामार्ग क्षार भी मिलाकर दें।

[ग] बाल निमोनियां तथा, वक्षशूल तथा सर्दी में—(१) रससिन्दूर ⅛ रत्ती, शृङ्गभस्म ½ रत्ती, केशर ¼ रत्ती। १ मात्रा × पान के रस में मिलाकर दिन में २-३ बार दें।

(२) छाती पर विषगर्भ तैल लगाकर पान चुपड़ कर छाती पर लगादें।

[घ] बाल उदर शूल में—(१) भुनी हींग ½ रत्ती, अजवायन १ रत्ती, काला जीरा भुना ४ रत्ती, काला नमक १ रत्ती । ×१ मात्रा लेकर १० ग्राम जल में पकाकर थोड़ा-थोड़ा करके दें ।

[ङ] दांत निकलते समय के रोगों में (दन्तोद्भेद)—(१) दन्तोद्भेदगदान्तक रस १ गोली, टंकण भस्म २ रत्ती । १ मात्रा ×मधु से सुबह, शाम दें ।

(२) बालचतुर्भद्र चूर्ण—२ रत्ती से ४ रत्ती तक १ चम्मच जल के साथ गर्म कर छानकर बालक को दिन में १-२ बार पिलावें ।

(३) चौकिया सुहागा भुना हुआ मधु में मिलाकर मसूड़ों की जड़ में नित्य रगड़ने से दांत आसानी से निकल आते हैं ।

[च] बाल अतीसार में—(१) संजीवनी ½ रत्ती, महागन्धक रस ½ रत्ती । १ मात्रा ×मधु से प्रातः-सायं चटावें । यदि अतीसार तीव्र हो तो इसमें कर्पूररस ½ रत्ती भी मिला सकते हैं । यदि साथ में ज्वर भी हो तो सिद्ध प्राणेश्वर रस ½ रत्ती तथा कनकसुन्दर रस या आनन्दभैरव रस ½ रत्ती मिलाकर दें ।

(२) लवंग चतुःसम—½-४ रत्ती तक दिन में १ बार शहद से दें ।

लवंग चतुःसम—जायफल १० ग्राम, लौंग १० ग्राम, जीरा श्वेत १० ग्राम, सुहागा खील १० ग्राम । मिश्रण लवंग चतुःसम कहलाता है । बालकों के अतीसार, ज्वरातीसार, उदर-विकार आदि के लिये श्रेष्ठ योग है ।

[उ] प्रमुख पेटेण्ट आयुर्वेदीय योग

क्रमांक	योग का नाम	निर्माता कम्पनी	उपयोग विधि	विशेष
१	शिशुशोषान्तक कैपसूल	गर्ग वनौषधि	१-२ कैपसूल तोड़कर मां के दूध या शहद में घोलकर दिन में २-३ बार दें ।	बालकों के सूखारोग, अस्थिमार्दव, सामान्य दुर्बलता, यकृत्-विकार आदि में अत्यन्त उपयोगी ।
२	शोषान्तक कैपसूल	ज्वाला आयु०	,, ,,	,, ,,
३	बालामृत	वैद्यनाथ	१-१ चम्मच दिन में २-३ बार ।	बालकों की दुर्बलता, अपच, कास तथा अन्य सामान्य विकारों में उपयोगी ।
४	बालविट ड्राप्स	गर्ग वनौषधि	,, ,,	,, ,,
५	बेबी ड्राप्स	पंकज फार्मा	,, ,,	,, ,,
६	लालशर	डाबर	,, ,,	,, ,,
७	बालामृत	देशरक्षक	,, ,,	,, ,,
८	लल्लामल्ला	भजनाश्रम	,, ,,	,, ,,
९	बालु शर्बत	गुरुकुल कांगड़ी	,, ,,	,, ,,
१०	लिव ५२ ड्राप्स	हिमालय ड्रग	८-१० बूंद दिन में ३-४ बार ।	बालकों के यकृत्-विकार, अपच, मन्दाग्नि आदि विकारों में लाभप्रद।
११	लिवोट्रिट टॉनिक	झण्डू	,, ,,	,, ,,
१२	लिवरक्यून सीरप	मार्तण्ड	,, ,,	,, ,,

१३	लिवामिन ड्राप	चरक	८-१० बूंद दिन में ३-४ वार।	बालकों के यकृत्-विकार, अपच, मन्दाग्नि आदि विकारों में लाभप्रद
१४	कुमारकल्याण घुटी	धन्वन्तरि कार्यालय	१–२ चम्मच दिन में ३-४ वार।	बालकों के सामान्य विकारों में उत्तम।
१५	जन्मघुटी	वैद्यनाथ	,, ,,	,, ,,
१६	बालघुटी	ज्वाला आयु०	,, ,,	,, ,,
१७	बालजीवन घुटी	हकीम तुलसीप्रसाद	,, ,,	,, ,,
१८	बालघुटी	कोपरेटिव ड्रग फैक्टरी	,, ,,	,, ,,
१९	मुगली घुटी ५५५	श्रीराम आयु०	,, ,,	,, ,,
२०	कुमाररक्षक तैल	धन्वन्तरि कार्यालय	मालिश के लिये।	सूखा तथा अन्य विकारों में मालिश से विशेष लाभ होता है।

[ऊ] प्रमुख पेटेण्ट एलोपैथिक योग

औषधि का नाम	निर्माता	मात्रा एवं व्यवहार-विधि	विशेष
बालसूखा, फक्क आदि दुर्बलता, नाशक योग			
१. इञ्जेक्शन–			
१. मेकाल्विट (Mecalvit Inj.)	Sandoz	½–१ मि०लि० बच्चे की आयु के अनुसार १ दिन छोड़कर मांस में दें	इसका सीरप भी आता है।
२. कैल्सी ऑस्टेलिन (Calci ostalin Inj.)	Glaxo	,, ,,	
३. मैक्राबिन (Mecrabin Inj.)	,,	५०–१०० माइक्रोग्राम रोगानुसार मांस में दें।	
४. बीथाडोक्सिन–१२ (Bithadoxin–12)	Bilogical Evans	१ मि०लि० मांस में नित्य या एक दिन छोड़कर कुछ दिनों तक दें।	
५. सीलिन (Cilin)	Glaxo	५० मि०ग्रा० नित्य दें।	इसकी टेबलेट भी आती है।
२. टेबलेट तथा कैपसूल–			
१. ओस्टोकैल्शियम टेबलेट (Ostacalciam tab.)	,,	½–१ गोली दिन में ३-४ वार।	इसका शर्बत भी आता है।
२. बेरिन टेबलेट (Berin tab.)	,,	,, ,,	
३. कैल्शिनोल टेबलेट (Calcinol tab.)	Raptakos	१–२ टेबलेट दिन में चूसने के लिये दें।	
४. थेराग्रान एम० टेबलेट (Theragran M. tab.)	Sarabhai	½–१ गोली दिन में २ वार।	

५. वेसीटोन टेवलेट फोर्ट (Basiton fort tab.)	Sarabhai	½–१ गोली दिन में २ वार।	इसकी ड्राप्स भी आती है।
६. वाई-मैग्ना कैप० (Vi-Magna Cap.)	Cynnamid	१ कैपसूल दिनभर में दें।	
७. ओसीविट कैप० (Ossivite Cap.)	Wyeth	"	
३. ड्राप्स तथा सीरप–			
१. एवडैक ड्राप्स (Abdec Drops)	Parke Davis	१–४ बूंद दिन में १-२ वार दूध या रस में मिलाकर चटावें।	
२. एरोविट ड्राप्स (Arovit Drops)	Roche	सामान्य अवस्था में ६–१० बूंद नित्य ३-४ वार दें।	
३. वेटोनिन ड्राप्स (Betonin Drops)	Boots	½–१ चम्मच दिन में १-३ वार।	
४. ड्रोपोविट ड्राप्स (Dropovit Drops)	Manners	४–१० बूंद दिन मे १-२ वार दूध में घोलकर।	
५. होविट ड्राप्स एवं सीरप (Hovite Drops & Syrup)	Raptakos	८ बूंद ड्राप्स को दिन में १-२ वार छोटे वच्चों को, ½–१ चम्मच २ वार सीरप बड़े वच्चों को।	
६. मल्टीवे सीरप (Multibay Syrup)	Bayer	½–१ चम्मच दिन में २-३ वार।	
७. मल्टी विटाप्लेक्स ड्राप्स (Multi vitaplex Drops)	Pfizer	" "	
८. पैडविट ड्राप्स (Pedvit Drops)	Unique	८–१० बूंद दिन मे २ वार।	इसका इन्जेक्शन भी आता है।
९. ट्राइरैडिसाल ड्राप्स (Triredisol Drops)	M. S. D.	"	
१०. कैल्शियम सैण्डोज सीरप (Calciam Sandoze Syrup)	Sandoz	१–२ चम्मच दिन में २ वार।	
११. ओस्टो कैल्शियम बी$_{१२}$ सीरप (Osto Calciam $B_{१२}$ Syrup)	Glaxo	½–१ चम्मच दिन मे ३-४ वार।	
१२. थैराग्रान सीरप (Theragran Syrup)	Sarabhai	" "	
१३. प्रोटोन (Protone)	Aristo	" "	
१४. रेरीकाल सस्पेंशन (Rarical Suspension)	Ethnor	"	
१५. मीनाडेक्स सीरप (Minadex Syrup)	Glaxo	१–२ चम्मच दिन में २-३ वार।	
१६. डाइनाबोल ड्राप्स Dianabol Drops)	Ciba	२–१४ वर्ष तक की अवस्था में ४–३० बूंद तक। (विशेष विवरण संलग्न-पत्रक में देखें)।	वच्चों की दुर्बलता अपोषण आदि विकारों में अति उपयोगी।
१७. फेरो बी० लिवर (Ferro B. Liver)	Unichem	१–२ चम्मच दिन में ३ वार।	
१८. इनक्रीमिन ड्राप्स Incremin Drops	Lederle	१०–२० बूंद सम्पूर्ण दिन में।	

१९. यूनीवाइट विद कोलिन लिक्विड (Univite with choline)	Unichem	१०–२० बूंद सम्पूर्ण दिन में।	अपचन, यकृत्-विकार, बालशोष आदि में उपयोगी
वालकों के अन्य रोगों में कुछ उपयोगी योग–			
१. एक्रोमाइसिन लिक्विड पेडियाट्रिक ड्राप्स (Achromycin Liquid Pediatric Drops)	Cymamid	२२–२४ मि०ग्रा० दवा प्रतिकिलो भार के अनुसार विभाजित मात्रा में।	बच्चों के निमोनिया, सर्दी, खांसी, इन्फ्लुएन्जा आदि विकारों में उपयोगी।
२. क्रिस्टापेन वी० ओरल (Crystapen V. oral)	Glaxo	½–१ चम्मच दिन में ४ बार।	पेनिसलीन का योग है, निमोनिया, मुखव्रण, फोड़ा-फुन्सी आदि में उपयोगी।
३. क्लोरोमाइसिटिन पाल्मीटेट (Chloromycetin Palmitate)	Parke Davis	५० मि०ग्रा० दवा प्रतिकिलो शरीर-भार के अनुसार ४ विभाजित मात्रा में।	टायफाइड तथा अन्य उपसर्गी ज्वरों में उपयोगी
४. पैराक्सिन ड्राय सीरप (Paraxin Dry Syrup)	B. Knoll	निर्देशानुसार पानी मिलाकर क्लोरोमाइसिटिन की तरह दें।	टायफाइड तथा कुकर कास में उपयोगी।
५. क्रोसिन सीरप (Chrosin Syrup)	Duphar	१–२ चम्मच दिन में ३ बार या आवश्यकतानुसार।	तीव्र ज्वर को उतारने के लिये तथा विभिन्न शूलों में उपयोगी
६. कैम्पिसिलिन ड्राइ सीरप (Campicilin dry Syrup)	Cadila	निर्देशानुसार पानी मिलाकर ½–१ चम्मच दिन में ३-४ बार।	निमोनिया, मियादी ज्वर, ब्रांकाइटिस तथा मूत्र-मार्गीय उपसर्ग में उपयोगी।
७. क्लोरोस्ट्रेप सस्पेंशन (Chlorostrep Sus.)	Parke Davis	½–२ चम्मच आवश्यकतानुसार।	बच्चों के अतीसार, प्रवाहिका में उपयोगी।
८. फ्यूरामाइड सस्पेंशन विद नियोमाइसिन (Furamide Sus. with Neomycin)	Boots	१–२ चम्मच दिन में ३-४ बार।	अतीसार, प्रवाहिका में उपयोगी
९. गाइनोमाइड सस्पेंशन फोर्ट (Guanimide Sus. Forte)	Glaxo	१–३ चम्मच २–४ घण्टे पर दें।	,,
१०. एण्ट्रीनिल ड्राप्स (Antrenyl Drops)	Ciba	१–१५ बूंद तक दिन में १–३ बार (विवरण संलग्न-पत्रक में देखें)।	उदरशूल, अतीसार, वमन आदि में उपयोगी।
११. वेरालगन ड्राप्स (Baralgan Drops)	Hoechst	५–१० बूंद आवश्यकता के समय।	उदरशूल में उपयोगी।

१२. हेल्मासिड सीरप (Helmacid Syrup)	Glaxo	संलग्न-पत्रक के अनुसार। ४ ड्राम दिन में १ बार।	मूत्र-कृमि तथा गोल-कृमि में उपयोगी।
१३. एण्टीपार एलिक्जर (Antipar Alixir)	Burroughs wellcome		मूत्र-कृमि में उपयोगी।
१४. बेटनीसोल ड्राप्स (Betnesol Drops)	Glaxo	२–३ बूंद प्रतिकिलो शरीर भार से १ दिन में विभाजित मात्रा में दें।	तीव्र उपसर्गों में अन्य प्रमुख औषधियों के साथ सहायक रूप में दें
१५. एथीनिन सीरप (Ethinin Syrup)	,,	१–२ चम्मच दिन में ३ बार।	बालकों की कास, कुकार काम में उपयोगी।
१६. प्रोट्यूसा (Protussa cough linctus)	Boots	,, ,,	,,
१७. पेरटूसिस सीरप (Pertussis Syrup)	Anglo French	½–१ चम्मच दिन में ३ बार।	,,
१८. पेरीनार्म सीरप (Perinorm Syrup)	IPCA	½–१ चम्मच आवश्यकता के समय	वमन में उपयोगी
१९. लारजैक्लिट सीरप (Largeclit Syrup)	M. B.	१०–२० बूंद आवश्यकता के समय	वमन, हिचकी मानसिक अशान्ति में।

मधुमेह [DIABETES]

[अ] साधारण तथा एकौषधि प्रयोग

(१) सुपरिपक्व अनन्नास के फलों के ऊपर का छिलका निकाल दें तथा अन्दर का कठिन भाग निकाल डालें फिर शेष भाग को कुचलकर रस निचोड़ लें। १० ग्राम रस में ५ ग्राम शहद मिलाकर १ रत्ती अम्बर मिला दिन में २ बार देने से मधुमेह में लाभ होता है।

(२) उक्त अनन्नास के रस १०० ग्राम में तिली, नमखम, हरड़, बहेड़ा, आंवला, गोखरू तथा जामुन के बीज प्रत्येक १०-१० ग्राम, चूर्ण कर मिलादें फिर उसमें ३ ग्राम अम्बर तथा १० ग्राम शहद डालकर लेह सा बनाले इस लेह को प्रातः-सायं ३-३ ग्राम के प्रमाण में चाटने से मधुमेह तथा बहुमूत्र में लाभ होता है।

(३) आम के छायाशुष्क पत्र १० ग्राम को ½ किलो जल में औटावें १०० ग्राम जल शेष रहने पर छानकर प्रातः-सायं एवं आवश्यकतानुसार मध्याह्न के समय भी पिलाने से मधुमेह में लाभ होता है।

—वनौषधि विज्ञान भाग १ से।

(४) कूष्माण्ड के छिलके के रस १०० ग्राम में ६ ग्राम केशर तथा उतना ही साठी चावल का चूर्ण मिलाकर इसकी २ मात्रा को प्रातः-सायं सेवन कराने तथा पथ्य में केवल जौ की रोटी का सेवन कराने से मधुमेह में लाभ होता है।

(५) कुन्दरु की ताजी जड़ का रस १० ग्राम अथवा इसके पत्तों का चूर्ण ४-६ ग्राम के साथ वंगेश्वर या सोमनाथ रस की १ गोली कुछ दिन तक प्रातः १ बार सेवन कराने से मधुमेह में लाभ होता है।

(६) कमरख की छाल १ किलो तथा हल्दी ४० ग्राम जौकुट कर ३२ किलो जल में पकावें अष्टमांश शेष रहने पर छानकर शुद्ध चिकने घड़े में भरकर ठण्डा होने पर उसमें १ किलो शहद तथा २५० ग्राम धायपुष्प चूर्ण मिलाकर मुख मुद्राकर १ माह तक रखने के बाद छानकर काम में लावें।

मात्रा—१० ग्राम से २५ ग्राम तक चूने के निथरे हुए चौगुने जल के साथ देने से मधुमेह, बहुमूत्र में लाभ होता है।

(७) करेले के फलों के टुकड़े कर छायाशुष्क करलें और बारीक पीसकर रखलें ३-६ ग्राम तक शहद या जल के साथ सेवन कराने से मधुमेह में लाभ होता है मूत्र तथा रक्तगत शर्करा की मात्रा शनैः-शनैः कम होने लगती है।

(८) गिलोयसत्व १॥ ग्राम तथा ताजा गाय का घी ३ ग्राम दोनों का मिश्रण प्रातः-सायं सेवन कराने से मधुमेह में लाभ होता है।

(९) गुड़मार के पत्तों के साथ जामुन पत्र बराबर-बराबर (६-६ ग्राम) लेकर क्वाथ कर पिलाते रहने से मधुमेह में लाभ होता है।

(१०) गुड़मार के पत्र ६०० ग्राम तथा जटामांसी व नागरमोथा १००-१०० ग्राम लेकर सबके चूर्ण को ८ गुने जल में भिगोकर दूसरे दिन अर्क खींचलें। २५-५० ग्राम तक दिन में थोड़ा शिलाजीत मिलाकर पिलाते रहने से मधुमेह में उत्तम लाभ होता है।

(११) गुड़मार के पत्ते १०० ग्राम, जामुन की गुठली तथा सोंठ ५०-५० ग्राम सबका महीन चूर्ण कर घीग्वार के रस में खरल कर ४-४ रत्ती की गोलियां बनालें। ३-३ गोली दिन में ३ बार शहद के साथ सेवन कराने से मधुमेह में लाभ होता है।

(१२) गुड़मार के पत्र १२० ग्राम, गिलोय चूर्ण ६० ग्राम, सोंठ चूर्ण २० ग्राम, शिलाजीत १० ग्राम, कान्तिसार भस्म ६ ग्राम तथा जामुन की गुठली का चूर्ण ५०

ग्राम सबको एक साथ खरल कर ६ ग्राम की मात्रा में दूध के साथ सेवन कराने से शर्करामेह में लाभ होता है।

(१३) गूमा के पत्ते १० ग्राम तथा काली मरिच १० ग्राम दोनों को पानी में पीसकर नित्य प्रातः-काल २१ दिन तक पिलाने से मधुप्रमेह में लाभ होता है।

—वनौषधि विशेषांक भाग २ से।

(१४) चित्रक के पंचांग का मोटा चूर्ण लगभग ६ ग्राम को ३६० ग्राम जल में मिलाकर मन्दाग्नि से पकावें। ६० ग्राम के लगभग शेष रहने पर छानकर कुछ ठण्डा हो जाने पर नित्य प्रातः सेवन कराने से २१ दिन में ही मधुमेह में लाभ हो जाता है।

(१५) चित्रक के पंचांग तथा किशमिश १०-१० ग्राम दोनों को जौकुट कर २५० ग्राम पानी में पकावें। १०० ग्राम शेष रहने पर छानकर नित्य रात्रि के समय ४२ दिन तक सेवन कराने से मधुमेह में लाभ होता है।

(१६) चिरायता छोटा (मामेजवा) के पंचांग का अर्क ५०-५० ग्राम दिन में २ बार ४-४ रत्ती शिलाजीत मिलाकर देते रहने से मूत्र में बढ़ी हुई शर्करा घट जाती है तथा पथ्यपूर्वक रहने से पुनः नहीं होती।

(१७) यकृत् विकृत् जन्य मधुमेह में सप्तरङ्गी का चूर्ण, जामुन की गुठली का चूर्ण तथा लहसुन का चूर्ण बराबर-बराबर मिलाकर १-२ ग्राम तक कुछ दिन तक सेवन कराने से मधुमेह में लाभ होता है। किन्तु ध्यान रहे इसका प्रयोग लगातार कई दिन तक नहीं कराना चाहिये क्योंकि कई दिन तक इसका प्रयोग कराने से पेट में जलन होने लगती है इसलिये ८-८ दिन छोड़कर प्रयोग कराना चाहिये।[1]

(१८) जामुन के पके फलों को २५ से ५० ग्राम तक लेकर २५० ग्राम उबलते हुये पानी में डालकर ढक दे। आध घण्टे के बाद मसलकर छान लें इसकी ३ मात्रा

१—सप्तरङ्गी का मधुमेह पर प्रभाव—केवल सप्तरङ्गी का चूर्ण या क्वाथ मधुमेह के लिये अचूक औषधि प्रमाणित हो चुकी है इसकी जड़ का चूर्ण २-६ ग्राम तक प्रातः मध्याह्न तथा सायंकाल जल के साथ प्रयोग कराना चाहिये। इसकी जड़ का क्वाथ भी ३०-५० ग्राम तक दिन में ३ बार प्रयोग कराने से मधुमेह में आशातीत लाभ देखने को मिलता है। यह मूत्र शर्करा तथा रक्त शर्करा दोनों पर लाभकारी है। इस औषधि के सम्बन्ध में आयुर्वेद चक्रवर्ती स्वर्गीय पं० शिवशर्मा का एक आलेख प्रकाशित हुआ था जिसे संक्षेप में पाठकों के लाभार्थ यहां दिया जा रहा है—

इस पौधे के औषधीय गुणों की जानकारी बिना किसी प्रयोगशाला के अनुसन्धान कार्यों के ही मैंने प्राप्त की है। इसका प्रयोग मैंने अपने रोगियों पर ही किया है। वास्तव में इस पौधे के द्वारा या इस औषधि के द्वारा जिन-जिन रोगियों को फायदा हुआ है, जिन-जिन रोगों की चिकित्सा हुई है, उसी के आधार पर मैंने इसके औषधीय गुणों की जानकारी प्राप्त की।

प्रथम रोगी जिसकी चिकित्सा में मैंने इस औषधि का प्रयोग किया वह इंग्लैण्ड के एक औषधीय प्रतिष्ठान के डायरेक्टर की पत्नी थीं। उनकी उम्र ४८ वर्ष की थी। "मिस्टर एक्स" ने २ जनवरी १९५६ के पत्र द्वारा मुझे सूचित किया, कि उनकी स्त्री प्रमेह से पीड़ित हैं। पत्र में उन्होंने अनुनय भरी भाषा में लिखा है—"मैं आपका आभारी रहूंगा, यदि आप इस रोग में उपयोग करने के लिए कोई दवा बनाकर देने की कृपा कर सकें। मेरी स्त्री के ८ बच्चे हैं तथा १० वर्षों से इस रोग से पीड़ित हैं।

गत ३ वर्षों से २० यूनिट प्रतिदिन इन्सुलिन पर चल रही हैं। इधर कुछ दिनों से इन्सुलिन मात्रा प्रतिदिन २० यूनिट से ४० यूनिट कर दी गयी है। आप मुझ पर कृपा कीजिए।

मैं उनके ऐसे पत्र को पाकर स्तब्ध रह गया। समझ में नहीं आया कि इस प्रकार के पुराने मरीज का इलाज पत्राचार के बल पर कैसे किया जा सकेगा? जो हो, पहले तो मैंने उन्हें पत्र लिखा कि एक अंग्रेज महिला आयुर्वेदिक औषधि का प्रयोग अपने पर कैसे करेगी, जो जड़ी-बूटियों द्वारा बनाई गयी होगी? दूसरी

कर दिन मे ३ वार इस फाण्ट को पिला दें कुछ दिनों तक सेवन करने से मधुमेह में लाभ होता है।

(१९) जामुन की गुठली तथा सोंठ १-१ भाग तथा गुड़मार बूटी २ भाग इन सबको कूट-पीसकर एव महीन छानकर ग्वारपाठे के रस में खूब घोटकर झरबेर के वरावर गोली बनाकर छाया में सुखालें। दिन में ३ वार १-१ गोली शहद के साथ लेने से मूत्र में आने वाली शक्कर १ या २ माह मे वन्द हो जाती है।

(२०) जामुन की गुठली १०० ग्राम महीन चूर्ण कर उसमे फिटकरी फुलाई हुई १० ग्राम, उत्तम शिलाजीत २५ ग्राम मिलाकर वेलपत्र के क्वाथ में खूब खरल कर १-१ ग्राम की गोलियां बना लें। प्रातः-सायं १-१ गोली लेकर ऊपर से वेलपत्र ५ नग को पानी ५० ग्राम में पीस छानकर कुछ गरम कर पीवें। १ माह के प्रयोग से मधुमेह मे विशेष लाभ देखने को मिलता है।

(२१) जामुन की गुठलियों को एकत्र कर छाया में शुष्क कर रखले आवश्यकतानुसार इनको कूटकर महीन चूर्ण कर ले फिर गुड़मार बूटी ३ ग्राम को पानी ५० ग्राम में पकावें ५० ग्राम शेप रहने पर छानकर शीशी में रखलें। प्रथम चूर्ण ३ ग्राम प्रातः फांककर ऊपर से यह गुड़मार का क्वाथ १५ ग्राम पिलादें। दोपहर को पुनः ६ ग्राम चूर्ण फांककर ऊपर से शेप वचा हुआ क्वाथ पिलावें इस प्रकार १-१॥ ग्राम तक निरन्तर नित्य गुड़मार बूटी के ताजे क्वाथ के साथ सेवन कराने से कष्टसाध्य मधुमेह भी ठीक हो जाता है।

(२२) जामुन की गुठली का चूर्ण ४०० ग्राम लेकर ४ पौण्ड पानी में खूब खरल करें ४ घण्टे के बाद इसमें १ पौण्ड और पानी डालकर कपड़े से छानलें और एक पात्र में भरकर रखलें। ४ घण्टे के वाद ऊपर के पानी को नितारकर फेंकदें। नीचे जो चूर्ण आ जावेगा इसे शुष्क करलें फिर रेक्टिफाइड स्प्रिट १ पौण्ड में यह चूर्ण डालकर १ बोतल में भरकर कार्क लगादें। २७ दिन वाद इसमें १५ पौण्ड स्प्रिट तथा ५ औंस शहद मिलावें पुनः कार्क वन्द कर ३० दिन वाद छानकर काम में लावें।

मात्रा—१ ड्राम (६० बूंद) पानी के साथ दिन में ४ वार सेवन करावें। —वनौषधि विशेषांक भाग ३ से।

(२३) २०० ग्राम नीवू का जितना रस निकले उसमें छोटी कौड़ी (वराटिका) जो ऊपर से पीली हो साफ कर

वात, इतनी दूर किस तरह औषधि भेजी जा सकेगी, क्योंकि देरी आदि का भारी बखेड़ा है। अपने पत्र में तीसरी वात जो मैने लिखी, वह यह कि इन्सुलिन की तरह इस औषधि का शीघ्र प्रभाव भी शायद नही होगा। ऐसी स्थिति मे जो चिकित्सा चला रहे है, वही चलावें। किन्तु डायरेक्टर महोदय मेरी एक भी दिक्कत पर सहानुभूतिपूर्वक विचार करने को तैयार नहीं हुए। उन्होंने मुझे चिकित्सा प्रारम्भ कर देने के लिए वाध्य कर दिया।

मैंने रोगी के लिए "सप्तरङ्गी" की औषधि तैयार कर दी। साथ ही कुछ अन्य आयुर्वेदिक औषधियां वसन्त कुसुमाकर रस के साथ-साथ सेवन को लिखा। मेरे निर्देशानुसार दवा चालू कर दी गयी। स्थिति की जानकारी एवं दवा आदि के सम्बन्ध में पत्राचार चलते रहे।

डायरेक्टर ने ४ जून १९५९ को मेरे पास जो पत्र लिखा वह इस प्रकार है कि—"आपकी भेजी हुई आयुर्वेदिक औषधियों के सेवन से मेरी स्त्री को बहुत फायदा हुआ है। आपकी औषधि ने जो फायदा किया हे, उतना इंग्लैण्ड की किसी औषधि ने नहीं किया। आपकी औषधि सेवन का यह तीसरा सप्ताह चल रहा है और मेरी पत्नी बिल्कुल आराम महसूस कर रही है। इन्सुलिन का लेना बिल्कुल वन्द कर दिया गया है।

थोड़े दिनों के वाद फिर जो पत्र आया उसमें उन्होंने लिखा कि "मेरी पत्नी के स्वास्थ्य में भारी परिवर्तन हो गया है। उनके सभी तरह के खराब लक्षण लुप्त हो गये हैं। आप मेरी ओर से धन्यवाद स्वीकार कीजिए।"

सप्तरङ्गी का औषधि के रूप में दूसरा प्रयोग मैंने केन्द्रीय स्वास्थ्य विभाग के एक उच्च पदाधिकारी पर किया। उन्हें सप्तरङ्गी पौधे की केवल जड़ का ही सेवन करा दिया, किन्तु बाद में मात्रा ठीक करली गयी और वे रोगमुक्त हो गये।

—बनौषधि विशेषांक भाग ६ से।

डालदें प्रातः छानकर रस पी जावे इस प्रकार प्रतिदिन ७ दिन तक लेने से मधुमेह सर्वथा ठीक हो जाता है ।

(२४) पारिभद्र (फरहद) की जड़ की छाल २० ग्राम जौकुटकर ४०० ग्राम जल में पकावें जब १०० ग्राम शेष रह जाय तो छानकर वसन्तकुसुमाकर की १-३ रत्ती मात्रा के साथ प्रतिदिन प्रातः-सायं सेवन कराने से मूत्र अन्तर्गत शर्करा कम हो जाती है ।

(२५) बरगद की छाल लाकर जौकुट करले इस छाल के २० ग्राम चूर्ण को ४०० ग्राम जल में पकावें २०-४० ग्राम जल शेष रहने पर उतारकर ठण्डा करके छानकर १ माह तक प्रातः सायं पिलाने से मधुमेह में पूर्ण लाभ देखने को मिलता है । —वनौषधि विशेषांक भाग ४ से ।

(२६) वेल के ताजे पत्तों को पीसकर इसके ५० ग्राम कल्क में २५ ग्राम असली शहद मिलाकर वस्त्र में रख अच्छी तरह निचोड़ने से जो रस निकले उसे दिन में २-३ बार पिलाने से मूत्र में आने वाली शर्करा ठीक होने लगती है ।[1]

(२७) वेलपत्र, हल्दी, गिलोय, हरड़, वहेड़ा, आंवला प्रत्येक ६-६ ग्राम । सबको कूटकर १०० ग्राम जल में रात्रि के समय मिट्टी के पात्र में भिगोवें । प्रातः खूब मसल छानकर इसकी आधी मात्रा प्रातः तथा शेष आधी मात्रा शाम को वसन्त कुसुमाकर रस की मात्रा के साथ सेवन कराने से मधुमेह में लाभ होता है ।

(२८) वेलपत्र २० ग्राम को पीसकर स्वरस निकाल उसमें २-३ नग मुनक्का तथा काली मरिच १ नग पीसकर मिला दें । प्रातः-सायं लगातार २-३ माह तक सेवन करने से मधुमेह में विशेष लाभ देखने को मिलता है । आयुर्वेद तथा एलोपैथी के समन्वयवादी चिकित्सक विल्व पत्र स्वरस के साथ-साथ इन्सुलिन के इन्जेक्शन भी देते रहना उत्तम समझते हैं । हमारे अनुभव में दोनों को साथ-साथ देने से स्थाई लाभ होते देखा गया है । कुछ चिकित्सक विल्वपत्र स्वरस के साथ गुड़मार स्वरस भी मिलाकर देना उत्तम समझते हैं ।

—प्रोफेसर राधाकृष्ण पाराशर आयुर्वेदाचार्य ।

(२९) वेलपत्र, नीमपत्र १०-१० नग तथा तुलसीपत्र ५ नग । इनको पीसकर गोली बना प्रातः नित्य जल के साथ सेवन कराने से मधुमेह में अवश्य लाभ देखने को मिलता है ।

(३०) वेलपत्रों को जल के साथ पीसकर वस्त्र में छानकर निकाले हुए १ किलो रस में कालीमरिच चूर्ण १० ग्राम तथा रैक्टीफाइड स्प्रिट १०० ग्राम मिला बोतलों में भरकर मजबूत कार्क लगा दें और ७ दिन बाद छान लें । ३ से ६ ग्राम तक समभाग जल के साथ सेवन कराने से मधुमेह में शीघ्र लाभ होता है ।

—वनौषधि विशेषांक भाग ५ से ।

(३१) आंवला, अशोक की छाल, वासा छाल, हरड़-त्वक्, कमल पुष्प इन छहों वस्तुओं को १२-१२ ग्राम लेकर सूक्ष्म चूर्ण करें । मामज्जक पत्र स्वरस में इस चूर्ण को घोटें और शीशी में भरकर रख लें । इस चूर्ण में से १० ग्राम प्रातः तथा सायंकाल दूध या जल के साथ सेवन करने से मधुमेह में लाभ होता है ।

—अनुभूत योग प्रकाश से ।

(३२) बड़े नींबुओं के १ किलो रस में मुर्गी के ८ अण्डे साबुत घोल दें और ढककर रख दें । ८ दिन बाद मथानी से लस्सी की तरह विलोकर छान लें । अण्डे छिलकों सहित गल जावेंगे । फिर इसमें आधी बोतल बढ़िया शराब मिला दें और स्वच्छ बोतलों में भर लें । इनमें से २५ ग्राम प्रातःकाल कुछ दिनों तक पिलाने से मधुमेह में लाभ हो जाता है । —गुप्त योग रत्नावली से ।

१—बहुत से वैद्य वेलपत्र के स्वरस का प्रयोग विना शहद मिलाये मधुमेह में सफलतापूर्वक करते हैं । बम्बई के स्वर्गीय वैद्य अप्पाशास्त्री साठे का कथन है, कि मधुमेह के बहुत से रोगियों को उन्होंने वेलपत्र का रस सेवन कराकर आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त की है । वे बेल के १५० पत्रों को पिसवाकर गोला-सा बना जल में ठण्डाई की तरह घोलकर प्रातः-सायं सेवन कराते थे । लंघन, वमन, विरेचन आदि कर्म भी करवाते थे । पथ्य में पुराना अन्न, साठी चावल, जौ, समां, मौठ, गेहूं, कुलथी, मूंग, तिल, पुराना मद्य, गधी तथा भैंस का मूत्र, परवल, करेला, लहसुन, कच्चे केला, गिलोय, त्रिफला आदि का सेवन कराते थे । —सम्पादक ।

(३३) हरड़, वहेड़ा, आंवला, नागरमोंथा, दारुहल्दी, इन्द्रायन की जड़, हल्दी, अर्जुन की छाल, जामुन के वीज प्रत्येक १०-१० ग्राम, शुद्ध शिलाजीत ८० ग्राम लेकर अनन्नास के रस में खूब घोटें तथा चना बराबर गोली बना लें। प्रातः-सायं १ गोली गोदुग्ध के साथ सेवन कराने से मधुमेह में लाभ हो जाता है।

—पं० रामगोपाल मिश्र द्वारा
धन्वन्तरि अनुभूत योगांक से।

(३४) द्रोणपुष्पी [गूमा] के पत्तों को १० ग्राम रगड़ कर २-४ काली मरिच डाल प्रातःकाल २१ दिन पिलावें, तो मधुमेह में लाभ देखने को मिलता है।

—पं० शिवचन्द्र राजवैद्य द्वारा
धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(३५) गोमूत्र २ किलो तथा त्रिफला चूर्ण ५० ग्राम लें। गोमूत्र में त्रिफला चूर्ण डालकर अग्नि पर पकावें। जब गोली बनाने योग्य गाढ़ा हो जाय, तो उतार कर २-२ रत्ती की गोलियां बना लें। जल के साथ १-१ गोली सुबह-शाम सेवन कराने से मधुमेह तथा बहुमूत्र में लाभ होता है।

—पं० व्यासनारायण जी शुक्ल द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(३६) वालमोंगरा के फल को लेकर छिलका तोड़ मज्जा का वस्त्रपूत चूर्ण बनाकर रख लें। मधुमेह के रोगियों को १०-२० ग्राम प्रातः, दोपहर, रात्रि को जल के साथ सेवन कराने से सुगर निल हो जाती है।

—वैद्य दरोगा मिश्र द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(३७) सूखा हुआ करेला ८० ग्राम, शिलाजीत विशुद्ध २० ग्राम, त्रिवङ्ग २० ग्राम, लोह भस्म १० ग्राम, शुद्ध अफीम ६ ग्राम, गुड़मार बूटी २० ग्राम, जामुन की सूखी गुठली ४० ग्राम। सब चीजों को घोट-पीसकर ग्वारपाठे के रस में घुटाई करें और ४-४ रत्ती की गोली बना लें। ४-४ गोली सुबह-शाम फीके दूध या जल के साथ सुबह, शाम सेवन कराने से मधुमेह में निश्चित लाभ होता है।

—कविराज वासुदेव कृष्ण जोशी द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(३८) पीपल वृक्ष के बीजों का चूर्ण २ रत्ती तथा शृङ्ग भस्म १ रत्ती, इन दोनों को मिलाकर मधु १० ग्राम तथा गाय का मट्ठा २५ ग्राम के साथ प्रातः-सायं लेवें। इससे मधुमेह में शीघ्र लाभ हो जाता है।

—पं० बालकराम शुक्ल द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(३९) जामुन की गुठली, गुड़मार, बबूल की पत्ती, हल्दी [घृत में भुनी], सोंठ, शिलाजीत, स्वर्णमाक्षिक भस्म सभी द्रव्य १००-१०० ग्राम ले, सभी का चूर्ण बना लें। त्रिफला के क्वाथ में पहले शिलाजीत को घोलकर तब चूर्ण तथा स्वर्णमाक्षिक भस्म डालकर २-२ ग्राम की गोली बना लें। सुबह, शाम १-१ गोली जल के साथ लम्बे समय तक सेवन कराने से मधुमेह में लाभ होता है।

—श्री काशीनाथ शास्त्री द्वारा
धन्वन्तरि सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(४०) बबूल के पत्ते, नीम के पत्ते, जामुन के पत्ते तीनों ५-५ ग्राम तथा गुड़हल के फूल २ ग्राम। इन सबको घोट-पीस १०० ग्राम पानी में घोलकर छान लें। दिन में केवल एक बार भोजन के पश्चात् इसका सेवन कराना चाहिए। लम्बे समय तक प्रयोग कराने से मधुमेह में लाभ होता है।

—श्री गणेशदत्त शर्मा द्वारा
धन्वन्तरि सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(४१) आम्र, आपण, सीताफल तीनों के छाया शुष्क पत्ते १००-१०० ग्राम, जामुन के पत्ते, गोरखमुण्डी, कैथ के पत्ते तीनों १५०-१५० ग्राम, नीम की अन्तरछाल, मामज्जक, कालीजीरी, मैंथी, कांकच [ऊपर का छिलका निकाला हुआ], सूखा करेला सभी १००-१०० ग्राम, इन्द्रयव १५० ग्राम, इनको कूट कपड़छन कर लें। २५ ग्राम दवा ५०० ग्राम पानी में उबालें। ५० ग्राम पानी शेष रहने पर रोगी को पिला दें, तो मधुमेह में लाभ होता है।

—वैद्य श्री चतुर्भुज द्वारा
धन्वन्तरि सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(४२) भुने चने के दाने [बिना छिलके के] १५० ग्राम, भुनी लाल फिटकरी १० ग्राम। इनको बारीक पीसकर रख लें। रात्रि को सोते समय ताजे जल से खाकर सो जावें। ३-४ दिन में ही ५-७ प्रतिशत शर्करा

घटकर १% शक्कर रह जायगी। साधारण तथा उत्तम प्रयोग है। —वैद्य बुद्धिप्रकाश आर्य द्वारा सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(४३) तन्दुक वृक्ष का गोंद १० ग्राम तथा अङ्गारों पर भुनी हुई हल्दी का चूर्ण १ ग्राम मिलाकर बेलपत्र के हिम के साथ सेवन कराने से १५ दिन में मूत्र में शर्करा आना बन्द हो जाता है। —पं० हर्पुल मिश्र द्वारा धन्वन्तरि मधुमेहांक से।

(४४) विजयसार चूर्ण २५ ग्राम को १०० ग्राम पानी में डालकर कांच के पात्र में रात्रि में समय भिगोकर रखें और प्रातःकाल उसे छानकर पी लें। इसी तरह प्रातः भिगो दें और शाम को पी लें। २ सप्ताह के अन्दर मूत्र में शर्करा आना बन्द हो जाता है। इसे लम्बे समय तक प्रयोग करने से मधुमेह समूल नष्ट होते देखा गया है।

(४५) विशुद्ध शिलाजीत ४० ग्राम, नीम के पत्तों का चूर्ण २० ग्राम, गुड़मार पत्र चूर्ण २० ग्राम, मामज्जक चूर्ण ४० ग्राम, करेले का चूर्ण ४० ग्राम, जामुन फल चूर्ण २० ग्राम, अरण्य जीरक चूर्ण २० ग्राम, सप्तरङ्गी का चूर्ण ४० ग्राम। सभी को खरल कर स्वच्छ वस्त्र से छानकर रख लें। १ ग्राम चूर्ण को विजयसार क्वाथ के साथ सुबह, शाम सेवन कराने से मधुमेह में निश्चित लाभ देखने को मिलता है।•

(४६) सफेद सेमल की छाल गाय के दूध में घिसें। पश्चात् इसमें सफेद जीरे का चूर्ण तथा मिश्री मिलाकर सुबह, शाम लगातार कुछ दिनों तक सेवन कराने से पेशाब में शक्कर आना बन्द हो जाता है। —श्री आर० सी० रावत द्वारा आयुर्वेद विकास मधुमेहांक से।

(४७) मामज्जक [कड़वी नाय] का चूर्ण १ से ५ ग्राम तक या घनसत्व ५०० मि० ग्रा० की मात्रा में दिन में ३ बार प्रातः जल से तथा दोपहर एवं रात्रि को भोजन लेने के थोड़ी देर पहले जल से सेवन कराने पर मूत्र शर्करा १-४% तक कम हो जाती है। इसके सेवन-काल में किन्हीं-किन्हीं रोगियों को विरेचन होने लगता है, ऐसी अवस्था में मात्रा कम कर देनी चाहिए। सेवन-काल में मूत्र एवं रक्त शर्करा की जांच बराबर कराते रहना चाहिए। यदि इसके साथ वसन्त कुसुमाकर आदि स्वर्णयुक्त औषधियां व सालसारादि कषाय भावित शिलाजीत का प्रयोग भी कराया जाय, तो विशेष लाभ देखने को मिलता है।

(४८) मधुमेह में पलाश अर्क—पलाश के मूल का त्वक् हरा लेकर छोटे-छोटे टुकड़े कर अर्क खींच लेवें। इस अर्क में पलाश बीज छिलका रहित कूट डालकर अहोरात्रि भिगो दें; फिर अर्क खींच लेवें। इस परिश्रुत अर्क को पुनः इसी प्रकार बीज डालकर एक अहोरात्रि रख पुनः अर्क खींचें। इस अर्क को १०-१५ मि० लि० दिन में २ बार सेवन कराना चाहिए। यह पलाश अर्क मधुमेह में बहुत लाभदायक है और शीघ्र ही मूत्र-शर्करा को कम कर देता है। —वैद्य गुरुचरण वर्णवाल द्वारा आयुर्वेद विकास मधुमेह अंक से।

(४९) बैंगन बिलिया की पत्तियों को छायाशुष्क तथा कपड़छन करके २ ग्राम की मात्रा में भोजन के बाद जल के साथ सेवन कराने से रक्त तथा मूत्र-शर्करा में कमी होने लगती है। यह नवीनतम अनुभव है; इस पर अधिक परीक्षण अपेक्षित है।

—डा० विनोदप्रकाश उपाध्याय द्वारा आयुर्वेद विकास मधुमेह अंक से।

(५०) कांचनार की छाल का क्वाथ अर्क, मंजिष्ठादि अर्क तथा बिल्वपत्र स्वरस समभाग ले मिलाकर रख लें। इसमें से १०-१० ग्राम दिन में ३ बार सेवन कराने से मधुमेहजन्य मधु पिडिकाओं में लाभ हो जाता है।

—कविराज वेदप्रकाश गुप्ता द्वारा आयुर्वेद विकास मधुमेह अंक से।

(५१) शिलाजतु [विषमुष्टि स्वरस भावित] ४ रत्ती, अहिफेन $\frac{1}{2}$ रत्ती, स्वर्ण वङ्ग १ रत्ती, लौह भस्म $\frac{1}{2}$ रत्ती

• यही प्रयोग वैद्य मोहरसिंह आर्य ने सुधानिधि के "चिकित्सक अनुभवांक" में भी प्रकाशित कराया है और अनेक रोगियों पर इस योग की परीक्षा का परिणाम दिया है। वास्तव में योग बहुत उपयोगी है। हमने भी अपनी चिकित्सा में इस योग को सफल पाया है। —सम्पादक।

सबको मिलाकर बेलपत्र स्वरस के साथ गोली बना रख लें। दारुहल्दी, नागरमोथा, आमलकी, चीते की छाल, देवदारु, विजयसार प्रत्येक समान भाग के क्वाथ के साथ सेवन करावें। विजयसार का जलपान करावें, तो मधुमेह में लाभ हो जाता है। —वैद्य सनतकुमार शास्त्री द्वारा प्राणाचार्य मधुमेहांक से।

(५२) वसन्त कुसुमाकर १॥ रत्ती, अहिफेन ½ रत्ती दोनों को घोटकर ६ मात्रा बना लें। ऐसी १-१ मात्रा प्रातः-सायं मक्खन या मधु के साथ सेवन करावें। इसके अतिरिक्त दोपहर तथा रात्रि में विजयसार के चूर्ण को जल में भिगोकर बाद में छान १-१ गिलास पिलाने से मधुमेह में लाभ होता है। —वैद्य बांकेलाल गुप्त द्वारा प्राणाचार्य प्रमेह रोगांक से।

(५३) गिलोय, हल्दी, बेलपत्र तीनों ६-६ ग्राम, त्रिफला १५ ग्राम। सबको यवकुट कर रात्रि को १२० ग्राम पानी में किसी चीनी मिट्टी के बर्तन में भिगो दें। सुबह मल-छानकर २० ग्राम शहद मिलाकर रोगी को पिला दें। इसी तरह सुबह भिगोकर रात्रि को पिला दें, इससे कुछ दिनों में ही मधुमेह में लाभ होने लगता है।

—वैद्य शंकरलाल द्वारा प्राणाचार्य प्रमेह रोगांक से।

(५४) नीम का ताजा तैल ३०-३० बूंद की मात्रा में प्रातः-सायं पिलावें। फिर क्रमशः बढ़ाते जाना चाहिए अर्थात् इसी मात्रा में दिन में ३-४ बार दें। इसके बाद प्रति मात्रा में १० बूंद की मात्रा बढ़ाते जावें। अन्त में १० मि० लि० को प्रातः, सायं या इसकी ४ मात्रा बनाकर दिन भर में दें। इसके सेवन से १ माह में ५ प्रतिशत रक्त शर्करा की निवृत्ति और २०० मि० ग्रा० प्रतिशत: रक्त शर्करा की निवृत्ति होती देखी गयी है। यदि नीम का ताजा तैल रोगी न पी सके, तो कैपसूल में रखकर रोगी को पिला दें। —वैद्यराज राजेश्वरदत्त शास्त्री।

[आ] परीक्षित तथा अनुभूत प्रयोग

(१) मधुमेह दमन चूर्ण—गुड़मार ८० ग्राम, विनौले की मिंगी ४० ग्राम, जामुन की गुठलियों की मिंगी ४० ग्राम, सूखे विल्वपत्र ६० ग्राम तथा शुष्क निम्बपत्र २० ग्राम।

विधि—सबको कूट-पीस कपड़छन चूर्ण बनाकर शीशी में भरलें।

मात्रा—२-३ ग्राम तक जल के साथ दिन में २ बार।

उपयोग—इसके सेवन से मधुमेह रोग के कारण उत्पन्न होते रहने वाली शर्करा पर अति शीघ्र नियन्त्रण हो जाता है। रक्तगत शर्करा भी शीघ्र कम हो जाती है।

(२) श्रेष्ठादि वटी—त्रिफला ८० ग्राम, शुद्ध गन्धक ४० ग्राम, हल्दी, गुड़मार, कर्पूर, वंगभस्म, निम्ब त्वक्, गूगल तथा आंवला इन ७ औषधियों को २०-२० ग्राम लेवें।

विधि—इन सबको कूट कपड़छन चूर्ण कर गुड़मार पत्र स्वरस तथा गूलर की छाल के क्वाथ की ७-७ भावना देवें।

मात्रा—४-८ रत्ती दिन में २ बार गुड़मार के क्वाथ के साथ।

उपयोग—मधुमेह तथा तज्जन्य प्रमेह पिडिका आदि उपद्रवों पर यह वटी रामबाण है इसका उपयोग हम अनेक वर्षों से कर रहे हैं।

(३) मधुमेह दर्पहारी—अफीम तथा शुद्ध शिलाजीत को सम प्रमाण में मिलाकर अदरक के रस की २१ भावना देकर ½-½ रत्ती की गोलियां बनावें।

मात्रा—१-१ गोली दिन में २ बार गुड़मार अर्क, धारोष्ण गोदुग्ध या जल के साथ देवें।

उपयोग—मधुमेह दर्पहारी का कार्य इक्षुमेह तथा मधुमेह इन दोनों में मूत्र के साथ जाने वाली शक्कर को कम करता है अशक्ति, बार-बार पेशाब होना, पेशाब अधिक उतरना, शारीरिक तथा मानसिक उत्साह का क्षय, अङ्गमर्द, आदि लक्षण होने पर मधुमेह दर्पहारी का प्रयोग अवश्य कराना चाहिये। —रसतन्त्र सार द्वितीय भाग से।

(४) मधुनाशिनी गुटी—कान्तिसार, गिलोयसत्व, विदारीकन्द, आमलकी रसायन, सफेद मूसली, स्याह

मूसली, चांदी के वर्क, शिलाजीत प्रत्येक २५-२५ ग्राम, आंवला ५० ग्राम, इलायची छोटी के बीज ५० ग्राम, केले की जड़ ५० ग्राम, माजूफल कटैया १०० ग्राम, काला हंसराज ६० ग्राम, जामुन की गुठली २५० ग्राम, अफीम १२ ग्राम तथा भांग ६ ग्राम।

विधि—उपरोक्त २७ चीजों को खूब महीन पीसकर मधुनाशिनी (गुड़मार) के स्वरस में ७ दिन तक घोटना चाहिये और प्रतिदिन २४० ग्राम स्वरस इसमें घोट देना चाहिये इसके बाद जामुन की छाल का क्वाथ बनाकर उसमें ३ दिन तक घोटना चाहिये तथा जंगली बेर के बराबर गोलियां बना लेनी चाहिये।

मात्रा—१-२ गोली जल के साथ भोजन से पूर्व सेवन करानी चाहिये।

उपयोग—मधुमेह में बहुत उपयोगी योग है अनेक बार इसका प्रयोग कर परीक्षा की जा चुकी है।

(५) मधुमेहसंहार रस—जायफल, जावित्री, छोटी इलायची के बीज, कालीमरिच, लवङ्ग, देशी कर्पूर अभ्रकभस्म, चन्द्रोदय प्रत्येक १२-१२ ग्राम, दालचीनी, श्वेत धतूरे के अशुद्ध बीज, लोहभस्म, शुद्ध हिंगुलोत्थ पारद, शुद्ध आंवलासार गन्धक पांचों ३०-३० ग्राम, अफीम १६५ ग्राम, खसखस के बीज २५ ग्राम, इमली के बीज २५ ग्राम।

विधि—प्रथम गन्धक पीसकर पारद के साथ कज्जली बनालें कज्जली होने पर चन्द्रोदय, अभ्रकभस्म तथा लोहभस्म मिलावें। सब एक रस होने पर शेष वनौषधियों का कपड़छन चूर्ण मिलाकर आठ पहर मर्दन करें। इसके बाद धतूरे के पत्तों का रस इतना मिलावें कि उसे घोटने पर गोली बन सके प्रत्येक गोली उड़द के प्रमाण की होनी चाहिये।

मात्रा—रात्रि को केवल १ गोली दूध से सेवन करावें।

उपयोग—मधुमेहनाशक बहुत उत्तम योग है। प्रयोग करने से पहले हल्का जुलाब देकर रोगी को १-२ दस्त करा देने चाहिये जब तक इस औषधि का सेवन चले २ गोली आरोग्यवर्धिनी वटी का प्रयोग कराते रहना चाहिये। —अनुभूत योग प्रकाश से।

(६) मधुमेह नाशिनी गुटिका—लोहभस्म, वंगभस्म, यशदभस्म, शीशकभस्म यह चारों १०-१० ग्राम, शुद्ध शिलाजीत की मलाई ३० ग्राम, शुद्ध अफीम ६ ग्राम, गुड़मार २० ग्राम, जामुन की गुठलियों की गिरियां ४० ग्राम, करेले के सूखे फल ८० ग्राम तथा घृतकुमारी का गूदा १ किलो।

निर्माण विधि—पत्थर के खरल में भस्मों को १ घण्टा खरल कर अलग-अलग करलें तीनों काष्ठ औषधियों को धूप में सुखाकर कूट कपड़छान करलें। अफीम तथा शिलाजीत को ५० ग्राम जल में सौलाकर लेई सी बनालें फिर सभी चीजों को मिलाकर खरल कर ऊपर से घृत कुमारी के गूदे का कपड़े से छना रस डालते जावें, जब १ किलो रस सूख जाय और पीठी गोली बनाने लायक हो जाय, तब ४-४ रत्ती की गोलियां बनालें धूप में इन्हें सुखाकर बन्द पात्र में रखलें।

मात्रा—इसकी पूर्ण मात्रा १-४ रत्ती तक की है प्रारम्भ से १ रत्ती प्रारम्भ कर क्रमशः आधी-आधी रत्ती की मात्रा बढ़ाकर ४ रत्ती की मात्रा पन्द्रह दिन के भीतर ले जानी चाहिये।

अनुपान—बकरी का दूध अभाव में गाय का दूध या जल।

समय—प्रातःकाल तथा सायंकाल १-१ मात्रा लेनी चाहिये।

उपयोग—इसके सेवन से मूत्र में आने वाली शर्करा कम हो जाती है तथा मधुमेह के कारण होने वाले अन्य उपद्रव यथा प्रमेह पिडिकायें, दुर्बलता, पेशाब की अधिकता आदि दूर हो जाते हैं। —अनुभूत योग तृतीय भाग से।

(७) मधुमेहनाशक चूर्ण—जामुन की पत्ती, बकायन की पत्ती, अकोय की पत्ती, बेलपत्र, गुड़मार पांचों समभाग लेकर बारीक कपड़छन चूर्ण करलें।

मात्रा—१ ग्राम से ३ ग्राम तक प्रातः सायं जल के साथ सेवन करावें।

उपयोग—मधुमेह तथा बहुमूत्र में बहुत लाभदायक योग है अनेक बार का परीक्षित है।

—पं० रघुवरदयाल भट्ट द्वारा गुप्तसिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(८) मधुमेहान्तक वटी—शुद्ध कर्पूर ६ ग्राम, असगन्ध ३ ग्राम, विधारे का चूर्ण ६ ग्राम, शीतलचीनी १० ग्राम, पलाश पुष्प ६ ग्राम, तालीसपत्र ३ ग्राम, लवङ्ग ३ ग्राम, नागरमोंथा ३ ग्राम, त्रिकुटा ६ ग्राम, त्रिफला ६ ग्राम, वंशलोचन १० ग्राम, गिलोयसत्व १० ग्राम, सफेद इलायची के दानों का चूर्ण ६ ग्राम, शृङ्ग भस्म ६ ग्राम, रससिन्दूर षड्गुणवलि जारित ६ ग्राम, लोहभस्म (हिंगुल मारित) ६ ग्राम, अभ्रकभस्म १० ग्राम, त्रिवङ्गभस्म ६ ग्राम, चांदी भस्म ६ ग्राम, स्वर्णभस्म ३ ग्राम तथा सुहागे का फूला ३ ग्राम।

विधि—पहले काष्ठौषधियों को कूट-पीस छान लें फिर रसभस्म मिलाकर करेले के पत्तों के स्वरस की ७ भावना तथा जामुन के पत्तों के स्वरस की ६ भावना तथा फिर २ ग्राम कस्तूरी की भावना देकर २-२ रत्ती की गोली बनालें।

मात्रा तथा अनुपान—विल्वपत्र स्वरस १० ग्राम तथा मधु ४ ग्राम के साथ प्रातः सायंकाल १-१ गोली सेवन करावें। भोजन के बाद लोध्रासव (चरकोक्त) १५-१५ ग्राम की मात्रा में पिलावें और ४ बजे के समय गुड़मार बूटी की पत्ती ३ ग्राम, कालीमरिच ५ नग लेकर जल के साथ घोट पीसकर गोली बनाकर प्रतिदिन सेवन करानी चाहिये।

उपयोग—४० दिन तक उपरोक्त विधि से प्रयोग कराने से मधुमेह में अवश्य लाभ देखने को मिलता है।

—पं० बालकराम शुक्ल द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से

(९) मधुमेह दुखभंजन योग—जामुन की गुठली का चूर्ण ५० ग्राम, गुड़मारबूटी चूर्ण ५० ग्राम, लोहभस्म (त्रिफला द्वारा निर्मित) १० ग्राम, अहिफेन शुद्ध ६ ग्राम, रसांजन शुद्ध २० ग्राम।

विधि—कोमल वट-जटा १ किलो लेकर उसका क्वाथ बनायें क्वाथ को छानकर मृदु अग्नि द्वारा उसे घन करें। गाढ़ा हो जाने पर उपर्युक्त औषधियां उसमें मिलावें और खूब घोटें जब गोली बनने लायक हो जाय तो ४-४ रत्ती की गोलियां बनालें।

मात्रा व सेवन विधि—बिल्वपत्र ६० ग्राम, मरिच ८-१० दाने २५० ग्राम जल में खूब घोटें थोड़ा सा सेंधव लवण मिलाकर कपड़े से छान लें इसके साथ १-२ गोली रोगी के बल तथा रोग की अवस्था के अनुसार देनी चाहिये।

उपयोग—मधुमेह रोग में बहुत उत्तम योग है अनेक बार का परीक्षित है। ठीक समय पर योग्य चिकित्सक द्वारा उपरोक्त योग का प्रयोग कराने पर रोगी मधुमेह से अवश्य छुटकारा पा जाता है।

—डा० प्रेमलाल सहगल द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(१०) मधुमेह हर रस—बसन्तकुसुमाकर रस १० ग्राम, अजवायन १५ ग्राम, जामुन की गुठली २५ ग्राम, गुड़मार बूटी २५ ग्राम, स्वर्णवर्क ११ नग।

विधि—ऊपर लिखित द्रव्यों को खूब महीन कर सबको मिलाकर उदुम्बरपत्र रस की २ भावना देकर रक्खें।

मात्रा—४ रत्ती से १ ग्राम तक हरिद्रा चूर्ण १ रत्ती, आंवला स्वरस ३ ग्राम, मधु २ ग्राम में मिलाकर सेवन करावें।

उपयोग—प्रारम्भिक मधुमेह के लिये अति उत्तम योग है। मूत्रशर्करा को शीघ्र बन्द कर देता है रक्तशर्करा पर भी लाभकारी है।

—पं० शोभालाल हीरालाल शर्मा द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(११) मधुमेह रिपु—हिंगुल २० ग्राम अभ्रकपत्र पर रखकर अग्नि पर चढ़ावें, उस पर ६० ग्राम नारी दुग्ध का चोआ दिया जाय फिर ६० ग्राम नारी दुग्ध में पकाया जाय फिर उस हिंगुल की डली को कपित्थफल (कैथ) में बन्द कर २० उपलों की आग दे दें स्वांग शीतल होने पर उसमें से निकाल लें यह अग्नि स्थायी हो जायगा तथा रक्तवर्ण ही रहेगा।

उपरोक्त हिंगुल, चौकिया सुहागा, हींग शुद्ध, अफीम शुद्ध १०-१० ग्राम, आमिया हल्दी तथा नीबू के रस की ७-७ भावना देकर फिर इसमें चन्दन सफेद, तबाखीर असली, जाफरान (असली), बुरादा हाथी दांत प्रत्येक ६-६ ग्राम

कौंच के बीज ४२० ग्राम, जीरा काला १० ग्राम मिलाकर कोकर गोंद के साथ गोली बनावें।

मात्रा—४ रत्ती जल के साथ २-३ बार सेवन करनी चाहिये।

उपयोग—इस औषधि के सेवन से मधुमेह में १५ दिन में ही लाभ होने लगता है। पुराने मधुमेह रोगियों के लिये भी उपयोगी है।

—पं० मस्तराम जी शर्मा द्वारा
धन्वन्तरि गुप्तसिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(१२) मधुमेह रिपु चूर्ण—गिलोय का चूर्ण २० ग्राम, जामुन की गिरी २० ग्राम, बङ्गभस्म उत्तम ३ ग्राम, प्रवाल भस्म ३ ग्राम, मुक्ताशुक्ति भस्म ३ ग्राम, गुलाब-पुष्प, गुलअनार, गिलेअरमनी, खसखस, खुरफा, मुलहठी का चूर्ण, गावजवां, गुल गोजिह्वा, गोंद कीकर, गोंद कतीरा, काहू प्रत्येक १०-१० ग्राम, गुड़मार चूर्ण २० ग्राम, अफीम ४ ग्राम।

विधि—सबको पृथक्-पृथक् पीस मिलाकर रख लें।

मात्रा—१०-२५ ग्राम तक प्रातः-सायं जल से दें।

उपयोग—इस चूर्ण के प्रयोग से मूत्र में आने वाली शर्करा शीघ्र ही सामान्य हो जाती है। अतः मूत्र परीक्षा कराते हुए इसका प्रयोग कराना चाहिए। शर्करा बन्द हो जाने पर मात्रा तिहाई कर देनी चाहिए।

—वैद्य सत्यपाल गुप्ता द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(१३) मधुमेह रिपु वटी—लोह भस्म हिंगुल वाली, चांदी भस्म, त्रिवङ्ग भस्म, स्वर्ण वङ्ग, प्रवाल भस्म, शुक्ति भस्म, अकीक भस्म, अभ्रक भस्म प्रत्येक १०-१० ग्राम, ...जीत सूर्यतापी २० ग्राम, शुद्ध अहिफेन ६ ग्राम, ... भस्म १० ग्राम।

... में घोटकर १-१ रत्ती की

...।, इमली

... गड़मार

...५।

उपयोग—मधुमेह के लिए बहुत ही उत्तम दवा है. अनेक बार का अनुभूत है। —महन्त रणजीतसिंह द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(१४) मधुमेहादि रस—लोह भस्म २० ग्राम, शिलाजीत २० ग्राम, मकरध्वज असली १० ग्राम, मुलहठी सत्व १० ग्राम, अफीम ३ ग्राम, स्वर्ण बङ्ग ६ ग्राम, त्रिबङ्ग भस्म १० ग्राम, बसन्त कुसुमाकर १० ग्राम।

विधि—उपर्युक्त सबको पीसकर बिल्व के रस में ३-३ रत्ती की गोली बना लें।

मात्रा—१-३ गोली प्रातः तथा सायंकाल बिल्वपत्र स्वरस के साथ दें।

उपयोग—मधुमेह में बहुत उपयोगी रस है। मूत्र शर्करा; रक्त शर्करा को शीघ्र रोक देता है; रोगी को शक्ति प्रदान करता है।

—श्री विश्रामानन्द वैद्य शास्त्री द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(१५) मधुमेहघ्न वटी—नीम के पत्ते २५ ग्राम, बेल के पत्ते २५ ग्राम, गुड़मार बूटी ५० ग्राम, शुद्ध शिलाजीत १० ग्राम, मुक्तापिष्टी, स्वर्ण वर्क, अभ्रक भस्म, लोह भस्म, प्रवाल भस्म, रजत भस्म, शुद्ध अफीम प्रत्येक ३-३ ग्राम, त्रिवङ्ग भस्म ९ ग्राम, कस्तूरी १॥ ग्राम।

विधि—पहले पत्तियों को सुखा कूट-छानकर रख लें, फिर सब औषधियों को मिलाकर बेल के पत्तों के रस में घोटकर २-२ रत्ती की गोलियां बना लें।

मात्रा—½-१ गोली प्रातः तथा रात्रि को आमला चूर्ण २ ग्राम, मधु ६ ग्राम के साथ लेवें तथा भोजन के बाद मद्यासव १०-१० ग्राम पिला दें।

उपयोग—३ माह तक लगातार प्रयोग कराने से मधुमेह में स्थायी लाभ हो जाता है। पथ्यपूर्वक रहना आवश्यक है। —वैद्य बालकराम शुक्ल द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(१६) मधुमेहनाशक वटिका—करेला [कच्चा] का स्वरस १५० ग्राम, गुड़मार बूटी चूर्ण ५० ग्राम, जामुन की गुठली का चूर्ण ५० ग्राम, वङ्ग भस्म ६.२५ ग्राम, सूर्यतापी शिलाजीत ६.२५ ग्राम, मकोयपत्र स्वरस १५० ग्राम, अर्जुन छाल चूर्ण २५ ग्राम, कर्सौंदी चूर्ण २५ ग्राम।

(८) मधुमेहान्तक वटी—शुद्ध कर्पूर ६ ग्राम, असगन्ध ३ ग्राम, विधारे का चूर्ण ६ ग्राम, शीतलचीनी १० ग्राम, पलाश पुष्प ६ ग्राम, तालीसपत्र ३ ग्राम, लवङ्ग ३ ग्राम, नागरमोथा ३ ग्राम, त्रिकुटा ६ ग्राम, त्रिफला ६ ग्राम, वंशलोचन १० ग्राम, गिलोयसत्व १० ग्राम, सफेद इलायची के दानों का चूर्ण ६ ग्राम, शृङ्ग भस्म ६ ग्राम, रससिन्दूर षट्गुणवलि जारित ६ ग्राम, लोहभस्म (हिंगुल मारित) ६ ग्राम, अभ्रकभस्म १० ग्राम, त्रिवङ्गभस्म ६ ग्राम, चांदी भस्म ६ ग्राम, स्वर्णभस्म ३ ग्राम तथा सुहागे का फूला ३ ग्राम।

विधि—पहले काष्ठौषधियों को कूट-पीस छान लें फिर रसभस्म मिलाकर करेले के पत्तों के स्वरस की ७ भावना तथा जामुन के पत्तों के स्वरस की ६ भावना तथा फिर २ ग्राम कस्तूरी की भावना देकर २-२ रत्ती की गोली बनालें।

मात्रा तथा अनुपान—विल्वपत्र स्वरस १० ग्राम तथा मधु ४ ग्राम के साथ प्रातः सायंकाल १-१ गोली सेवन करावें। भोजन के बाद लोध्रासव (चरकोक्त) १५-१५ ग्राम की मात्रा में पिलावें और ४ बजे के समय गुड़मार बूटी की पत्ती ३ ग्राम, कालीमरिच ५ नग लेकर जल के साथ घोट पीसकर गोली बनाकर प्रतिदिन सेवन करानी चाहिये।

उपयोग—४० दिन तक उपरोक्त विधि से प्रयोग कराने से मधुमेह में अवश्य लाभ देखने को मिलता है।

—पं० बालकराम शुक्ल द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से

(९) मधुमेह कुलभंजन योग—जामुन की गुठली का चूर्ण ५० ग्राम, गुड़मारबूटी चूर्ण ५० ग्राम, लोहभस्म (त्रिफला द्वारा निर्मित) १० ग्राम, अहिफेन शुद्ध ६ ग्राम, रसांजन शुद्ध २० ग्राम।

विधि—कोमल वट-जटा १ किलो लेकर उसका क्वाथ बनायें क्वाथ को छानकर मृदु अग्नि द्वारा उसे घन करें। गाढ़ा हो जाने पर उपर्युक्त औषधियां उसमें मिलावें और खूब घोटें जब गोली बनने लायक हो जाय तो ४-४ रत्ती की गोलियां बनालें।

मात्रा व सेवन विधि—बिल्वपत्र ६० ग्राम, मरिच ८-१० दाने २५० ग्राम जल में खूब घोटें थोड़ा सा सेंधव लवण मिलाकर कपड़े से छान लें इसके साथ १-२ गोली रोगी के बल तथा रोग की अवस्था के अनुसार देनी चाहिये।

उपयोग—मधुमेह रोग में बहुत उत्तम योग है अनेक बार का परीक्षित है। ठीक समय पर योग्य चिकित्सक द्वारा उपरोक्त योग का प्रयोग कराने पर रोगी मधुमेह से अवश्य छुटकारा पा जाता है।

—डा० प्रेमलाल सहगल द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(१०) मधुमेह हर रस—बसन्तकुसुमाकर रस १० ग्राम, अजवायन १५ ग्राम, जामुन की गुठली २५ ग्राम, गुड़मार बूटी २५ ग्राम, स्वर्णवर्क ११ नग।

विधि—ऊपर लिखित द्रव्यों को खूब महीन कर वर्क मिलाकर उदुम्बरपत्र रस की २ भावना देकर रखलें।

मात्रा—४ रत्ती से १ ग्राम तक हरिद्रा चूर्ण १ रत्ती, आंवला स्वरस ३ ग्राम, मधु २ ग्राम में मिलाकर सेवन करावें।

उपयोग—प्रारम्भिक मधुमेह के लिये अति उत्तम योग है। मूत्रशर्करा को शीघ्र बन्द कर देता है रक्तशर्करा पर भी लाभकारी है।

—पं० शोभालाल हीरालाल शर्मा द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(११) मधुमेह रिपु—हिंगुल २० ग्राम अभ्रकपत्र पर रखकर अग्नि पर चढ़ावें, उस पर ६० ग्राम नारी दुग्ध का चोआ दिया जाय फिर ६० ग्राम नारी दुग्ध में पकाया जाय फिर उस हिंगुल की डली को कपित्थफल (कैथ) में बन्द कर २० उपलों की आग दे दें स्वांग शीतल होने पर उसमें से निकाल लें यह अग्नि स्थायी हो जायगा तथा रक्तवर्ण ही रहेगा।

उपरोक्त हिंगुल, चौकिया सुहागा, हींग शुद्ध, अफीम शुद्ध १०-१० ग्राम, आमिया हल्दी तथा नीबू के रस की ७-७ भावना देकर फिर इसमें चन्दन सफेद, तवाखीर असली, जाफरान (असली), बुरादा हाथी दांत प्रत्येक ६-६ ग्राम,

कौंच के बीज ४२० ग्राम, जीरा काला १० ग्राम मिलाकर कीकर गोंद के साथ गोली बनावें।

मात्रा—४ रत्ती जल के साथ २-३ बार सेवन करनी चाहिये।

उपयोग—इस औषधि के सेवन से मधुमेह में १५ दिन में ही लाभ होने लगता है। पुराने मधुमेह रोगियों के लिये भी उपयोगी है।

—पं० मस्तराम जी शर्मा द्वारा
धन्वन्तरि गुप्तसिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(१२) मधुमेह रिपु चूर्ण—गिलोय का चूर्ण २० ग्राम, जामुन की गिरी २० ग्राम, बङ्ग भस्म उत्तम ३ ग्राम, प्रवाल भस्म ३ ग्राम, मुक्ताशुक्ति भस्म ३ ग्राम, गुलाब-पुष्प, गुलअनार, गिलेअरमनी, खसखस, खुरफा, मुलहठी का चूर्ण, गावजवां, गुल गोजिह्वा, गोंद कीकर, गोंद कतीरा, काहू प्रत्येक १०-१० ग्राम, गुड़मार चूर्ण २० ग्राम, अफीम ४ ग्राम।

विधि—सबको पृथक्-पृथक् पीस मिलाकर रख लें।

मात्रा—१०-२५ ग्राम तक प्रातः-सायं जल से दें।

उपयोग—इस चूर्ण के प्रयोग से मूत्र में आने वाली शर्करा शीघ्र ही सामान्य हो जाती है। अतः मूत्र परीक्षा कराते हुए इसका प्रयोग कराना चाहिए। शर्करा बन्द हो जाने पर मात्रा तिहाई कर देनी चाहिए।

—वैद्य सत्यपाल गुप्ता द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(१३) मधुमेह रिपु वटी—लोह भस्म हिंगुल वाली, चांदी भस्म, त्रिवङ्ग भस्म, स्वर्ण वङ्ग, प्रवाल भस्म, शुक्ति भस्म, अकीक भस्म, अभ्रक भस्म प्रत्येक १०-१० ग्राम, शुद्ध शिलाजीत सूर्यतापी २० ग्राम, शुद्ध अहिफेन ६ ग्राम, कुक्कुटाण्डत्वक् भस्म १० ग्राम।

विधि—पोस्त के पानी में घोटकर १-१ रत्ती की गोलियां बना लें।

मात्रा—३ गोली प्रतिदिन दें।

अनुपान—जामुन की गुठली, आम की गुठली, इमली की गुठली, बिल्व गूदा प्रत्येक १-१ ग्राम तथा गुड़मार बूटी ३ ग्राम। इनका बारीक चूर्ण बनाकर और ३ गोलियां मिलाकर सेवन करें ऊपर से ताजा जल पीना चाहिए।

उपयोग—मधुमेह के लिए बहुत ही उत्तम दवा है. अनेक बार का अनुभूत है। —महन्त रणजीतसिंह द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(१४) मधुमेहारि रस—लोह भस्म २० ग्राम, शिलाजीत २० ग्राम, मकरध्वज असली १० ग्राम, मुलहठी सत्व १० ग्राम, अफीम ३ ग्राम, स्वर्ण वङ्ग ६ ग्राम, त्रिवङ्ग भस्म १० ग्राम, बसन्त कुसुमाकर १० ग्राम।

विधि—उपर्युक्त सबको पीसकर बिल्व के रस में ३-३ रत्ती की गोली बना लें।

मात्रा—१-३ गोली प्रातः तथा सायंकाल बिल्वपत्र स्वरस के साथ दें।

उपयोग—मधुमेह में बहुत उपयोगी रस है। मूत्र शर्करा, रक्त शर्करा को शीघ्र रोक देता है; रोगी को शक्ति प्रदान करता है।

—श्री विश्रामानन्द वैद्य शास्त्री द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(१५) मधुमेहघ्न वटी—नीम के पत्ते २५ ग्राम, बेल के पत्ते २५ ग्राम, गुड़मार बूटी ५० ग्राम, शुद्ध शिलाजीत १० ग्राम, मुक्तापिष्टी, स्वर्ण वर्क, अभ्रक भस्म, लोह भस्म, प्रवाल भस्म, रजत भस्म, शुद्ध अफीम प्रत्येक ३-३ ग्राम, त्रिवङ्ग भस्म ९ ग्राम, कस्तूरी १॥ ग्राम।

विधि—पहले पत्तियों को सुखा कूट-छानकर रख लें, फिर सब औषधियों को मिलाकर बेल के पत्तों के रस में घोटकर २-२ रत्ती की गोलियां बना लें।

मात्रा—½-१ गोली प्रातः तथा रात्रि को आमला चूर्ण २ ग्राम, मधु ६ ग्राम के साथ लेवें तथा भोजन के बाद मधासव १०-१० ग्राम पिला दें।

उपयोग—३ माह तक लगातार प्रयोग कराने से मधुमेह में स्थायी लाभ हो जाता है। पथ्यपूर्वक रहना आवश्यक है। —वैद्य बालकराम शुक्ल द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(१६) मधुमेहनाशक वटिका—करेला [कच्चा] का स्वरस १५० ग्राम, गुड़मार बूटी चूर्ण ५० ग्राम, जामुन की गुठली का चूर्ण ५० ग्राम, वङ्ग भस्म ६.२५ ग्राम, सूर्यतापी शिलाजीत ६.२५ ग्राम, मकोयपत्र स्वरस १५० ग्राम, अर्जुन छाल चूर्ण २५ ग्राम, कर्णोंदी चूर्ण २५ ग्राम।

निर्माण विधि—सर्वप्रथम करेला स्वरस तथा मकोय-पत्र स्वरस को मिलाकर इन्हें मन्द-मन्द अग्नि पर गाढ़ा करें तथा घनसत्व बनावे। फिर गुड़मार बूटी, अर्जुन की छाल, जामुन की ताजी गुठली छिली हुई तथा कसौंदी का अलग-अलग सूक्ष्म चूर्ण कपड़छानकर तोल ले। इसके बाद एक खरल में सर्वप्रथम ऊपर वर्णित सभी काष्ठौषधियों को डाल दृढ हाथों से भली प्रकार खरल करें। पश्चात् शिलाजीत एवं भस्मों को डाल पुनः ६ घण्टे तक निरन्तर खरल करें। अच्छी तरह खरल हो जाने पर ३-३ रत्ती की गोलिया बना छाया में सुखा लें।

प्रयोग विधि—२-३ गोली ४% शर्करा जाने वाले रोगी को ताजे करेले के रस मे दिन में २-३ बार खिलावें। १-२ गोली मूत्र में २-३ प्रतिशत शर्करा जाने वाले रोगी को दिन मे २ बार करेले के रस में तथा १ गोली मूत्र में १-२ प्रतिशत शर्करा जाने वाले तथा बहुमूत्र, प्रमेह आदि के रोगी को दिन में २ बार करेले के रस से सेवन करावें।

उपयोग—यह मधुमेह, प्रमेह तथा बहुमूत्र रोग में अति लाभदायक औषधि है। इसका प्रयोग इन्सुलिन से अधिक निरापद एवं सुरक्षापूर्ण है। यह औषधि रक्त में शर्करा की मात्रा को भी शनैः-शनैः कम करके सामान्य पर ले आती है। —डा० महेश्वरप्रसाद उमाशंकर द्वारा सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(१७) मधुमेहारि—स्वर्ण सिन्दूर, वङ्ग भस्म, लोह भस्म, नाग भस्म, यशद भस्म, अभ्रक भस्म, स्वर्णमाक्षिक भस्म, छोटी इलायची के बीज, जायफल, सेमरकन्द, गुड़मार प्रत्येक १०-१० ग्राम।

विधि—सबको खरल करके बारीक पीस लें। जब खूब महीन हो जाय, तब शिलाजीत १५ ग्राम डालें और सेमल छाल के रस, गुडूची रस, बिल्वपत्र रस, कोमल दाडिम का रस, निम्बछाल का रस, गूलर के रस की पृथक्-पृथक् भावना देकर २-२ रत्ती की गोली बनाकर सुखा लें।

मात्रा एवं सेवन विधि—१ से २ गोली तक दिन में २ बार प्रातः, सायं मधु के साथ चटा ऊपर से गुडूची स्वरस २५ ग्राम पिला दें।

उपयोग—मधुमेह तथा मधुमेह के कारण होने वाली दुर्बलता में बहुत उपयोगी योग है।

—पं० रामगोपाल शर्मा द्वारा प्रयोग मणिमाला से।

(१८) शर्करांकुश—जामुन की गुठली, बिल्वपत्र घनसार, गुड़मार बूटी, आम की गुठली, उदुम्बरत्वक् सार, अङ्गारों पर भुनी हल्दी प्रत्येक ४०-४० ग्राम, तन्दुक वृक्ष का गोंद ८० ग्राम।

विधि—समस्त औषधियों को अलग-अलग महीन चूर्ण कर कपड़छन कर लें। फिर सबको पत्थर के खरल में डाल खूब मर्दन कर शीशी में भरकर रखना चाहिए।

सेवन विधि—२ से ४ ग्राम की मात्रा में चूर्ण फांक कर ऊपर से "त्रि" आकार का हिम ५० ग्राम शहद मिलाकर भोजन के बाद दिन-रात में केवल २ बार ही पीना चाहिए।

"त्रि" आकार का हिम—अर्जुन त्वक्, गिलोय तथा आम्र त्वक् तीनों १०-१० ग्राम। सबको यवकुट कर एक चीनी मिट्टी के पात्र में ६०-१२० ग्राम पानी में छोड़ दें तथा १२ घण्टे पश्चात् छानकर शहद मिला सेवन करावें।

उपयोग—मधुमेह, में उपयोगी योग है। कुछ समय तक प्रयोग कराने से ही प्रभावशाली लाभ देखने को मिलता है। —पं० हर्पुल मिश्र द्वारा धन्वन्तरि मधुमेहांक से।

(१९) मधुप्रमेह नाशक मिश्रण—जायफल, जावित्री, एला बीज, काली मरिच, लवङ्ग, कर्पूर देशी, अभ्रक भस्म, चन्द्रोदय प्रत्येक १०-१० ग्राम, दालचीनी, श्वेत धतूरे के अशुद्ध बीज, लोह भस्म, शुद्ध हिंगुलोत्थ पारद, शुद्ध आमलासार गन्धक प्रत्येक २५-२५ ग्राम, अफीम, पोस्त के दाने ४०-४० ग्राम, इमली के बीज [साफ धुले छिलके निकाले हुए सूखे] २० ग्राम।

निर्माण विधि—प्रथम पारद, गन्धक मिलावें और खरल में मर्दन करें। कज्जली हो जाने पर चन्द्रोदय, अभ्रक भस्म तथा लोह भस्म मिलावें। सब एकजीव हो जाने पर शेष काष्ठौषधियों का वस्त्रपूत चूर्ण मिला आठ प्रहर मर्दन करें। इसमें धतूरे का रस इतना मिलावें कि

घोटने पर गोली बनाई जा सके। प्रत्येक गोली उड़द प्रमाण की होनी चाहिए।

सेवन विधि—प्रयोग प्रारम्भ से पहले रोगी को हल्का जुलाब देकर १-२ साफ़ दस्त करा लेने चाहिए। तदुपरान्त १-१ गोली गुनगुने दूध के साथ सेवन करावें।

—श्री सत्यनारायण गुप्त द्वारा धन्वन्तरि मधुमेहांक से।

(२०) मधुमेह पर सिद्ध योग—हरड़, गुड़मार, बिल्वपत्र, नीमपत्र, विजयसार, लहसूड़ापत्र, गुठली जामुन, हरमल बीज प्रत्येक सममाग लेकर उसका घन बनावें। जितना घन हो उसमें स्वर्ण भस्म, रजत भस्म, पोस्त-डोंडा भस्म, फौलाद भस्म, कुचला भस्म, अफीम शुद्ध तथा कज्जली योग [कज्जली १० तोला में १ तोला रसकर्पूर शुद्ध मिलाकर कई दिन घुटाई करके बनाया हुआ] सभी सममाग लेकर २॥-२॥ रत्ती की गोली बना लें।

मात्रा—१-१ गोली भोजन के पश्चात् दूध के साथ खिलावें।

उपयोग—मधुमेह में बहुत उपयोगी योग है। जब साधारण प्रयोगों से काम न चलें, तब इसका प्रयोग कराकर रोगी को स्वस्थ करें।

—पं० ठाकुरदत्त शर्मा अमृतधारा द्वारा धन्वन्तरि मधुमेहांक से।

(२१) मधुमेहनाशिनी वटी [प्रथम]—रससिन्दूर १० ग्राम, कान्तलौह भस्म ४० ग्राम, नाग भस्म २० ग्राम, शुद्ध शिलाजीत ८० ग्राम, निम्बादि घनसत्व १५० ग्राम।

विधि—समस्त द्रव्यों को खरल में डालकर और अच्छी तरह खरल करके जल के योग से ४-४ रत्ती की गोलियां बना लेनी चाहिए।

मात्रा—प्रातः, सायं १-१ गोली गर्म दूध या जल से सेवन करानी चाहिए।

उपयोग—इसके कुछ दिन प्रयोग से ही शर्करा की मात्रा कम होकर शक्ति का संरक्षण होता है।

निम्बादि घनसत्व बनाने की विधि—नीम की पत्ती, जामुन की पत्ती, विल्व, सीताफल या शरीफा की पत्ती, गुड़मार बूटी। यह पांचों चीजें १-१ किलो लेकर इन्हें भली प्रकार कुचल लगभग १२ किलो जल में क्वाथ सिद्ध करें। ३ किलो क्वाथ अवशिष्ट रहने पर उसे मलकर किसी स्वच्छ कलईदार पात्र में छान लेना चाहिए। इस क्वाथ में ५० ग्राम गोघृत डालकर पात्र को पुनः अग्नि पर पाक करना चाहिए। जब क्वाथ अवलेह के समान गाढ़ा हो जाय, तो पात्र को चूल्हे पर से उतारकर ठण्डा करना चाहिए और बाद में इसका उपयोग करना चाहिए।

यह निम्बादि घनसत्व अकेला ही मधुमेह में प्रयोग करने से लाभ होता है। उपरोक्त प्रयोग के साथ तो इसकी उपयोगिता और भी बढ़ जाती है।

(२२) मधुमेहनाशिनी वटी [द्वितीय]—शुद्ध अफीम १० ग्राम, निम्बपत्र चूर्ण ५० ग्राम, लौह भस्म २० ग्राम, जामुन की गुठली का चूर्ण ५० ग्राम, नाग भस्म ४० ग्राम, शुद्ध शिलाजीत ८० ग्राम, गुड़मार बूटी चूर्ण ५० ग्राम।

विधि—उत्तम खरल में समस्त औषधियों को डालकर १५० ग्राम निम्बपत्र स्वरस से समस्त औषधियों को अच्छी तरह खरल करके २ से ४ रत्ती तक की गोलियां बना लेना चाहिए।

मात्रा—प्रातः, सायं २-२ गोली जल या विल्वपत्र स्वरस के साथ सेवन करानी चाहिए।

उपयोग—इसके सेवन से मधुमेह में उत्तम लाभ होता है तथा प्रमेह पिडिकाओं का भी शमन होता है।

(२३) मधुमेहनाशिनी वटी [तृतीय]—सोंठ १० ग्राम, जामुन की गुठली ४० ग्राम, काली मूसली, केशर, जायफल, अफीम, जावित्री, मुक्ताशुक्ति भस्म, लवङ्ग, शृङ्ग भस्म, नागकेशर, स्वर्णमाक्षिक भस्म, नागरमोथा, बंग भस्म, अर्जुन की छाल, नाग भस्म, वंशलोचन, लौह भस्म, गिलोय सत्व प्रत्येक १०-१० ग्राम, रससिन्दूर २० ग्राम, रीठे की गिरी २० ग्राम, शुद्ध गुग्गुलु ४० ग्राम, शुद्ध धतूरे के बीज २० ग्राम, शुद्ध शिलाजीत ८० ग्राम।

विधि—काष्ठादि औषधियों को कूट-पीसकर और कपड़े में छानकर सूक्ष्म चूर्ण बना लें। केशर को पृथक् किसी छोटे खरल में डालकर खरल कर लेना चाहिए।

अफीम, गुग्गुल तथा शिलाजीत को किसी कलईदार पात्र में १५० ग्राम जल डाल, अग्नि पर चढ़ाकर गला लेना चाहिए। अनन्तर किसी उत्तम लोहे या पत्थर के खरल में काष्ठादि औषधियों का सूक्ष्म चूर्ण, केशर चूर्ण, रस, भस्मादि तथा अफीम आदि डालकर भली प्रकार खरल कर लेना चाहिए। खरल करते समय १० ग्राम गोघृत मिला देने से स्निग्धता आ जाती है। समस्त द्रव्यों को अच्छी तरह खरल कर तथा एकजीव हो जाने पर २-४ रत्ती की गोलियां बनाकर छाया में सुखा लेनी चाहिए।

मात्रा—१ से २ गोली तक प्रातः, सायं दूध या जल के साथ दें।

उपयोग—विभिन्न अनुपान भेद से यह गोलियां सभी प्रकार के प्रमेहों में लाभकारी है। मधुमेह की असाध्य अवस्था में भी प्रयोग कराने से लाभ करती है।

—पं० गयाप्रसाद शास्त्री द्वारा
धन्वन्तरि मधुमेहांक से।

(२४) मधुमेह की यौगिक कल्प चिकित्सा•—अपने ३० वर्ष के चिकित्सा-काल में अनेक मधुमेही आये, जो जीवन से ही निराश हो चुके थे। दृष्टि पर स्पष्ट प्रभाव पड़ा था। शरीर भी पथ्यापथ्य का पालन करते-करते पिंजर मात्र रह गया था, परन्तु उनको एक विशेष चिकित्सा-विधि द्वारा पूर्ण स्वास्थ्य लाभ हुआ। विधि यह है कि रोगी को अन्न बन्द कराके केवल तक्र (मट्ठा) पर ४० दिन तक रखते हैं, साथ में औषधि-प्रयोग चलता है एवं प्रातः, सायं कुछ यौगिक-प्राणायाम तथा आसनों का अभ्यास कराया जाता है। कल्प समाप्त होने पर रोगी अपने रोग से मुक्ति तो पा ही जाते हैं, साथ ही उनकी शारीरिक शक्ति अधिक हो जाती है तथा भार भी बढ़ जाता है।

चिकित्सा-व्यवस्था—पंचकर्म शोधन कराके अथवा यदि रोगी अत्यन्त दुर्बल तथा कोमल प्रकृति का है, तो केवल उदर-शुद्धि हेतु हल्का विरेचन देते हैं। दूसरे दिन से कल्प प्रारम्भ कर देते हैं।

• आचार्य जी की उपरोक्त यौगिक कल्प चिकित्सा थोड़े समय पहले ही प्रकाशित आयुर्वेद विकास के "मधुमेहांक" में देखने को मिली और उपयोगी समझकर अविकल यहां दी जा रही है।

इस उपयोगी कल्प चिकित्सा को मैंने अपनी चिकित्सा में खरा पाया है। हमारे अत्यन्त आदरणीय आचार्य श्री श्री १०८ श्री बालमुकुन्दानन्द जी सरस्वती लगभग ३० वर्ष से मधुमेह से पीड़ित रहे। एलोपैथी, होम्योपैथी तथा आयुर्वेद की अनेकानेक औषधियों का प्रयोग करके भी सफलता न मिली। इन्सुलीन के सूचीवेधों से थोड़े समय के लिए राहत का अनुभव करते। दो वर्ष पूर्व मधुमेह के कारण उनका शरीर अत्यन्त जर्जर हो गया और जीवन से निराश होकर औषधियों का प्रयोग भी बन्द कर दिया। मूत्र में एल्ब्यूमिन भी आने लगी। यह समाचार जब मुझे एक मित्र से मिला, तो उनके दर्शनार्थ गया। अन्य कुशल क्षेम के पश्चात् उन्होंने मुझे अपनी नाड़ी दिखाई तो मुझे "ओजक्षय" के लक्षण देखने को मिले। मैंने ऐसी अवस्था में उनसे कल्प कराने का आग्रह किया, जिसके लिए वह सहमत हो गये। एक मित्र के घर पर उनके तक्र कल्प की व्यवस्था कराई गयी और संशोधन कर्म कराने के बाद उनका कल्प प्रारम्भ किया गया। प्रथम सप्ताह में भोजन, दलिया, फलों का रस दिया गया तथा साथ में २५० ग्राम मट्ठा से प्रारम्भ कर २५० ग्राम मट्ठा नित्य बढ़ाया गया। साथ में निम्न औषधि व्यवस्था की गयी—

(१) वसन्त कुसुमाकर रस १ रत्ती, मुक्तापिष्टी १ रत्ती × १ मात्रा। ऐसी २ मात्रा प्रातः तथा सायंकाल १० बादाम [घिसे हुये] के साथ दी गयीं।

(२) शंख भस्म १ रत्ती, ताप्यादि लोह १ रत्ती, आरोग्यवर्धिनी वटी ४ रत्ती, कामदुधा २ रत्ती × १ मात्रा। ऐसी ३ मात्रा प्रातः, मध्याह्न तथा सायंकाल दी गयीं। पंचामृत पर्पटी प्रतिदिन १-१ पुड़िया में ½ रत्ती बढ़ायी गयी।

(३) मधुमेहान्तक चूर्ण २-२ ग्राम भोजनोपरान्त मट्ठा के साथ दिया। [घटक आगे प्रयोग नम्बर ४१ पर दिया गया है]।

पथ्यापथ्य—अन्न बन्द करके केवल मट्ठा का सेवन कराया जाता है। दिन में कई बार १५० से २५० ग्राम तक मट्ठा पीने को देते हैं। ऐसे प्यास नहीं लगती है। यदि आवश्यकता हो, तो थोड़ा जल दिया जा सकता है। २०० ग्राम से अधिक एक बार में न दें।

औषधि-व्यवस्था—निम्न औषधि की गोलियां दिन में २ बार प्रात ७ बजे तथा सायं ७ बजे नीचे दिये क्रम से दी जायेंगी—

प्रथम दिन	प्रातः	२ गोली	सायं	२ गोली
द्वितीय दिन	,,	३ ,,	,,	३ ,,
तृतीय दिन	,,	४ ,,	,,	४ ,,
चतुर्थ दिन	,,	५ ,,	,,	५ ,,
पंचम दिन	,,	६ ,,	,,	६ ,,

सातवें दिन से तीसवें दिन तक प्रतिदिन प्रातः-सायं ७-७ गोली दी जायेंगी तथा बाद में ५ दिन में २-२ गोली प्रतिदिन घटाकर ४० दिन पूरे हो जाने पर कल्प समाप्त हो जायेगा।

शोधित निम्ब तैल २ बूंद, बिम्बी घनसत्व ७५ मि० ग्रा०, बिल्वपत्र घनसत्व ५० मि० ग्रा०, शंख भस्म ७५ मि० ग्रा०, करेला घनसत्व ७५ मि० ग्रा०, प्रवाल भस्म १०० मि० ग्रा०, शुद्ध शिलाजीत १५० मि० ग्रा०।

यौगिक व्यायाम-व्यवस्था—प्रातः शुद्ध खुली वायु के स्थान में गहरे श्वास-प्रश्वास अपनी शक्ति के अनुसार २ मिनट से प्रारम्भ कर १५ मिनट का अभ्यास करें। तत्पश्चात् यदि कोई योगाभ्यासी मिल सके, तो उसकी देख-रेख में कपाल-भाति का अभ्यास किया जा सकता है।

---

(४) चन्द्रप्रभा वटी २ गोली रात्रि को सोते समय दीं।

दूसरे सप्ताह में भोजन बन्द कर दिया गया। इच्छानुसार केवल मध्याह्न में दलिया तथा टमाटर का सूप दिया गया। दिन में २ बार फलों का रस दिया गया और प्रथम सप्ताह में चलने वाली औषधि व्यवस्था ही रखी गयी। केवल बसन्त कुसुमाकर २ रत्ती कर दिया गया और मट्ठा की मात्रा प्रतिदिन २५० ग्राम बढ़ाई जाती रही। तीसरे सप्ताह में अन्न, फल, रस आदि सब बन्द कर दिये गये और केवल मट्ठा का सेवन कराया गया। औषधि पूर्ववत् रहीं, बसन्त कुसुमाकर की मात्रा ३ रत्ती कर दी गयी। चौथे सप्ताह में भी यही क्रम रखा गया। मट्ठे का बढ़ाना बन्द कर उसकी मात्रा ७ दिन तक स्थिर रखी गयी। पांचवें सप्ताह में कल्प को उतार दिया गया और बढ़ाये हुए क्रम के अनुसार ही तक्र, औषधि की व्यवस्था कम की गयी। जब छठें सप्ताह में तक्र की मात्रा ६ किलो के लगभग रह गयी, तब पथ्य दिया गया। प्रथम दिन मूंग की दाल का पानी, दूसरे दिन दाल, तीसरे दिन लौकी का साग, चौथे दिन दलिया, पांचवें दिन फुलका दिया गया। पर्पटी की मात्रा आठवें सप्ताह में बन्द कर दी गयी तथा अन्य औषधियां चालू रहीं। इस प्रकार लगभग ६० दिन में कल्प पूर्ण हुआ।

प्रभाव—कल्प पूर्ण होते ही आचार्य जी के स्वास्थ्य में आश्चर्यजनक परिवर्तन देखने को मिला। मुखमण्डल आभायुक्त हो गया, शरीर में स्फूर्ति का संचार हुआ। पहले १० कदम चलने पर ही थक जाते थे, परन्तु अब २-३ मील रोज टहलने लगे। वजन में भी आशातीत वृद्धि हुई, मूत्र तथा रक्त में शर्करा की परीक्षा कराने पर बिल्कुल सामान्य निकली। कल्प पूर्ण होने के बाद उनके शब्दों में उन्हें नया जीवन मिला। कल्प पूर्ण हुए लगभग १० माह हो गये हैं, अभी तक उनका स्वास्थ्य ठीक बना हुआ है। सब दवा बन्द कर दी गयी हैं, वे केवल मधुमेहान्तक चूर्ण का प्रयोग निरन्तर चालू रखते हैं।

आचार्य जी पर कल्प चिकित्सा का जो प्रभाव देखने को मिला, उससे उनके सम्पर्कित व्यक्ति हतप्रभ रह गये और मैं स्वयं इस आयुर्वेद की अनुपम चिकित्सा विधि का प्रभाव देखकर आनन्दित हो उठा।

—गोपालशरण गर्ग, सम्पादक—"प्रयोग संग्रह अङ्क"।

सायं शवासन, सर्पासन तथा शक्ति के अनुसार सर्वाङ्गासन एवं हलासन का अभ्यास लाभकारी है। हृदय रोगी एवं रक्तचाप से पीड़ित बिना किसी योगाभ्यासी के परामर्श के शवासन के अतिरिक्त और कोई भी यौगिक क्रिया न करें, इससे हानि हो सकती है।

—आचार्य प्रकाशचन्द्र द्वारा
आयुर्वेद विकास मधुमेह चिकित्सांक से।

(२५) सप्तरंग्यादि वटी—सप्तरङ्गी, आमलकी, हरिद्रा, मामेजवा, जामुन बीज, महासुदर्शन चूर्ण प्रत्येक ७५-७५ मि० ग्रा०, आरोग्यवर्धिनी २५ मि० ग्रा०, त्रिवङ्ग भस्म २५ मि० ग्रा०। कुल ५०० मि० ग्रा०।

विधि—करेला, आमलकी एवं हरिद्रा की ३-३ भावना देकर गोलियां बना लें।

मात्रा—२-२, ३-३ या ४-४ टिकिया दिन में ३ बार जल के साथ।

उपयोग—मधुमेह में बहुत ही उपयोगी प्रमाणित हुई है।•

—वैद्य सदाशिव शर्मा एवं साथियों द्वारा
आयुर्वेद विकास मधुमेह चिकित्सांक से।

• इस औषधि पर अहमदाबाद के न्यू सिविल हास्पीटल में चलाये हुए रिसर्च विभाग द्वारा बहिरङ्ग विभाग में इसका अध्ययन किया गया। जो रिपोर्ट मिली उसको पाठकों के लाभार्थ यहां संक्षेप में प्रकाशित किया जा रहा है—

अवलोकन [Observation]—उक्त अध्ययन के लिए मधुमेह के ३० रुग्णों का चयन किया गया। लिंग के अनुसार यह सभी पुरुष थे। आयु की दृष्टि से १ से २० वर्ष का कोई रोगी न था। २१ से ३० वर्ष का १ रुग्ण (३%), ३१ से ४० वर्ष के रुग्ण (१७%), ४१ से ५० वर्ष तक के ६ रुग्ण (३०%) एवं ५० से अधिक उम्र वाले रुग्ण (५०%) मिले। रोग की अवधि की दृष्टि से १ से ३ वर्ष तक की आयु वाले ६ रुग्ण, ३ से ५ वर्ष तक की अवधि वाले ६ रुग्ण, ५ से १० वर्ष तक के ३ रुग्ण एवं उससे ज्यादा अवधि वाले ४ रुग्ण मिले।

पहले उपरोक्त मधुमेही रोगी को पथ्याहार पर रखा गया। बाद में पथ्याहार लेने से क्या लाभ हुआ। यह देखा गया। रुग्णों को पथ्याहार से कोई लाभ नहीं मिल रहा है। ऐसा निश्चित होने के बाद सप्तरंग्यादि वटी २-२ या ३-३ या ४-४ टिकिया दिन में ३ बार दी जाती रहीं। प्रत्येक १५ दिन बाद मूत्र-शर्करा तथा रक्त-शर्करा का परीक्षण किया गया।

परिणाम—परिणाम की दृष्टि से रक्त-शर्करा की कमी के आधार पर देखने से १-५० मि० ग्रा०/प्रतिशत रक्त-शर्करा की कमी १४ रोगियों में, ५१-१०० मि० ग्रा०/प्रतिशत रक्त-शर्करा की कमी १२ रुग्णों में, १०१ से १५० मि० ग्रा०/प्रतिशत रक्त-शर्करा की कमी २ रोगियों में, १५१ से २०० मि० ग्रा०/प्रतिशत रक्त-शर्करा की कमी १ रोगी में, ३०० से ३५० मि० ग्रा०/प्रतिशत रक्त-शर्करा की कमी १ रोगी में पायी गयी। २०१ से ३०० मि० ग्रा०/प्रतिशत रक्त-शर्करा की कमी किसी रोगी में नहीं मिली।

मधुमेह के प्रमुख लक्षणों पर चिकित्सा के प्रारम्भ से अन्त में लाभालाभ की दृष्टि से अवलोकन करने पर ५ रुग्णों को १००%, १० रुग्णों को ७५%, ८ रुग्णों को ५०% तथा १० रुग्णों को २५% लाभ देखने को मिला, लेकिन ४ रुग्णों में बिलकुल लाभ देखने को नहीं मिला।

निष्कर्ष—इस तरह प्रारम्भिक अवलोकन से इतना स्पष्ट है, कि सप्तरंग्यादि वटी से जीर्ण या असाध्य मधुमेह के रोगियों में भी लाभ देखने को मिला है। सप्तरंग्यादि वटी रक्त-शर्करा को कम करने वाली निश्चित औषधि है। सप्तरंग्यादि वटी में रक्त-शर्करा को कम करने वाले मामज्जक एवं सप्तरङ्गी दो प्रमुख द्रव्य हैं। ओज बढ़ाने वाले अमृत तुल्य आमलकी एवं गुडूची हैं। शिलाजीत तथा गुग्गुल यह दोनों रसायन द्रव्य भी हैं, इसलिए ओजोदुष्टि दूर होकर, ओज बढ़ाकर शरीर में शक्ति एवं बल बढ़ाने का कार्य भी इन गोलियों ने किया है। सम्भवतः यह औषधि यकृत्, पेनक्रियाज एवं रक्त तथा मांसपेशी पर एक साथ कार्य करने वाली है। शायद पिच्युटरी ग्रन्थि एवं थायराइड ग्रन्थि पर भी इसका प्रभाव होता होगा।

—वैद्य के० सदाशिव शर्मा, वैद्य जी० के० दवे, वैद्य डी० एन० शहाणे,
वैद्य जे० वी० डगाया, वैद्या सरोजबेन पंड्या, कुमारी स्नेहलता परमार,
आयुर्वेद संशोधन विभाग, न्यू सिविल हास्पीटल, असारवा, अहमदाबाद।

(२६) मधुमेहनाशक विशेष गन्धक रसायन—शुद्ध आंवलासार गन्धक १ किलो का बारीक चूर्ण करके रख लें। २५० ग्राम गोघृत [अभाव में शुद्ध घृत] कढ़ाही में डालकर चूल्हे पर चढ़ावें। कढ़ाही में उक्त गन्धक डालकर मन्दाग्नि तब तक दें, जब तक गन्धक पूर्णरूप से द्रुत न हो जाय। द्रुत गन्धक को त्रिफला के क्वाथ में डाल दें, त्रिफला का क्वाथ दूना होना चाहिए।

इस प्रकार ३ बार गन्धक को पिघलाकर त्रिफला क्वाथ, ३ बार करेला स्वरस, ३ बार निम्बपत्र स्वरस, ३ बार गुड़मार पत्ती स्वरस एवं ३ बार बिल्वपत्र स्वरस या क्वाथ में डालें। पश्चात् विशुद्ध गन्धक को जल से धोकर कपड़े से पोंछ लें। फिर उस गन्धक को खरल में सूक्ष्म चूर्ण करें तथा त्रिकुटा, निम्बपत्र, गिलोय, जामुन बीज, असगन्ध, गुड़मार, विजयसार, शीशम, छोटी इलायची के यथासम्भव स्वरस या क्वाथ की ७-७ भावना देकर शुष्क गन्धक रसायन को शीशी में भरकर रख लें।

मात्रा एवं अनुपान—रोगी को बलाबल देखकर इस रसायन का दूध के साथ सेवन करावें। प्रारम्भिक मात्रा ½ ग्राम से प्रारम्भ कर ३ ग्राम तक की है। इस रसायन के साथ वसन्त कुसुमाकर रस का या प्रमदेऽशांकुर रस भी सेवन कराया जाय तो विशेष लाभ देखने को मिलेगा।

उपयोग—यह रसायन सभी प्रकार की शर्करा, बहुमूत्र, क्षीणता एवं प्रमेह में रामबाण है। अनेक रोगियों पर परीक्षित है। —वैद्य राजविहारी मिश्र द्वारा आयुर्वेद विकास मधुमेह चिकित्सांक से।

(२७) मधुमेहहर कैपसूल—जामुन की पत्ती, जामुन की गुठली, बिल्वपत्र, अजवायन, कांकायन पत्र, बिभीतक पत्र, बिभीतक की गिरी प्रत्येक १०-१० ग्राम, बड़ी इलायची २० ग्राम, आंवला [गुठली निकाला हुआ] १० ग्राम, निम्बपत्र [कोमल पत्ती छाया शुष्क] २० ग्राम, शुद्ध शिलाजीत २० ग्राम, त्रिवङ्ग भस्म ३ ग्राम।

विधि—जामुन की छाल का क्वाथ ७० ग्राम, गुड़मार स्वरस २८० ग्राम, मेथी क्वाथ २८० ग्राम, करेला स्वरस २८० ग्राम; प्रत्येक की ७-७ भावना देकर सूखा कैपसूल भर लें।

मात्रा—१-१ कैपसूल सुबह, शाम जल से। भोजन के पश्चात् दोनों समय मेथी का चूर्ण ५-५ ग्राम भी जल के साथ सेवन करावें।

उपयोग—मधुमेह रोगियों के लिए परीक्षित औषधि है। उदयपुर में राजकीय चिकित्सालय में इसका परीक्षण हो चुका है। मूत्र तथा रक्त-शर्करा दोनों पर ही लाभकर है। —कविराज वेदप्रकाश गुप्ता द्वारा आयुर्वेद विकास मधुमेह चिकित्सांक से।

(२८) मधुमेहनाशक परीक्षित योग—लोह भस्म, गन्धक शुद्ध, जवाखार, कलमीशोरा प्रत्येक १६०-१६० ग्राम, रेवन्द चीनी ४०० ग्राम, छोटी इलायची २४० ग्राम, काली मरिच ४० ग्राम, हिरमिची शुद्ध, कर्पूर, मुलहठी, मंजीठ प्रत्येक ८०-८० ग्राम, कालीजीरी कुल भाग का आधा।

विधि—सब द्रव्यों को लेकर बारीक कपड़छन चूर्ण बनावें तथा कुल वजन से आधा कालीजीरी का बारीक चूर्ण मिलाकर रख लें।

सेवन-विधि—२-४ ग्राम की मात्रा सुबह, शाम शीतल जल के साथ सेवन करावें।

उपयोग—मधुमेहनाशक प्रभावकारी योग है। अनेक रोगियों पर इसकी परीक्षा की जा चुकी है।*

—वैद्य रविदत्त भाटिया द्वारा धन्वन्तरि अनुभयांक द्वितीय भाग से।

---

* वैद्य जी ने इस योग के सम्बन्ध में जो अन्य विवरण दिया है, वह इस प्रकार है—

यह योग मुझे एक यूनानी चिकित्सक द्वारा बहुत यत्न करने पर प्राप्त हुआ। जब मैंने इस पर परीक्षण किया तो मुझे उसके चमत्कारिक प्रभाव का बोध हुआ। मैंने सर्वप्रथम इस योग को ऐसे रोगी पर प्रयोग किया, जिसकी आयु लगभग ५० वर्ष थी तथा वह पिछले ३ वर्ष से मधुमेह से पीड़ित था। प्रतिदिन इन्सुलिन का सूचीवेध प्रयोग करवाता था। मैंने इस आग्रह पर यह औषधि सेवन कराई, कि मुझे प्रतिदिन की प्रगति से सूचित करावें, पर वे मुझे तीसरे दिन मिले। मैंने सोचा शायद औषधि ने कोई विपरीत प्रभाव दिया हो,

(२९) **मधुमेहासव**—कोमर के बीज, जामुन की गुठली, सोंठ, काली मूसली, जायफल, जावित्री, लौंग, नागकेसर, चोक सुपारी, पीपल की लाख, धनियां, धवई फूल, नागरमोथा प्रत्येक १००-१०० ग्राम; इन औषधियों का चूर्ण कर लें। जामुन की छाल, बरिया की छाल, अमर की छाल तीनों २॥-२॥ किलो, आम की छाल १॥ किलो, कोहा छाल १ किलो, खैर छाल, सेमर छाल, त्रिफला, आंवले की गिरी, बबूल की फली, महुआ प्रत्येक २००-२०० ग्राम, कुड़ा की छाल, बेल की जड़, अडूसे के पत्ते, ऐंठनी, कंजी फूल, पठानी लोध, वायविडङ्ग, सुपारी, सौंया, अनार के छिलके, गाठौन प्रत्येक १००-१०० ग्राम।

विधि—इनको ८० किलो पानी में डालकर क्वाथ करना चाहिए। जब जल २८ किलो मात्र शेष रह जाय, तो उतार कर छान लें। ठण्डा होने पर उसमें १४ किलो मधु मिला दें। स्मरण रहे इस आसव में गुड़ या चीनी नहीं मिलानी चाहिए। फिर उसे ९४ दिन तक जमीन में गढ़ा रहने दें। बाद में निकालकर और साफ करके बोतलों में भरकर रख दें।

मात्रा—२० ग्राम प्रातः, सायं भोजनोपरान्त बराबर जल मिलाकर दें।

उपयोग—इसके सेवन कराने से मधुमेह में आशातीत लाभ होता है। इसे मधुमेह पर रामबाण कहीं जाय तो विशेष उक्ति न होगी। अनेकों रोगियों पर परीक्षित है।

(३०) **मधुमेहान्तक अर्क**—काहू, खुरफा, गावजवां, ताजा गिलोय, जामुन की छाल, पोस्त के दाने, बरगद का फल, गुलबनफ्शा, मीठी लौकी का चूरा, सफेद कुम्हड़े के बीज, सफेद चन्दन का चूरा प्रत्येक ५०-५० ग्राम, कुमुद के फल १०० ग्राम, गूलर की छाल १५० ग्राम, अजवायन २०० ग्राम, नारङ्गी का रस, मीठे नीबू का रस, सफेद पेठे का रस तीनों ४००-४०० ग्राम, पालक की पत्ती का स्वरस १ किलो, लौकी का स्वरस १ किलो, बकरी का दूध ४ किलो।

विधि—कूटने योग्य चीजों को अधकुट करके फिर उसमें दूध, स्वरस आदि मिलावें और टैग में भरकर भबके से अर्क खींच लें।

मात्रा—२०-५० ग्राम तक दिन में ३-४ बार दें।

उपयोग—इससे मधुमेह, बहुमूत्र तथा पेशाब में शक्कर जाना आदि रोग शीघ्र ठीक हो जाते हैं।

(३१) **शिलाजीत वटी**—शुद्ध शिलाजीत ६ ग्राम, प्रवाल भस्म ४ ग्राम, उत्तम सिन्दूर ३ ग्राम, नाग भस्म १ ग्राम, गुडमार चूर्ण, बबूल की फली का चूर्ण, जामुन की मिगी का चूर्ण तीनों १५-१५ ग्राम।

विधि—सबको कूट-पीस छानकर रख लें। पश्चात् खरल में डालकर गुडमार क्वाथ की भावना देकर सुखा लें।

मात्रा—इसे २-२ रत्ती की मात्रा में गाय के दूध के साथ सुबह, शाम सेवन कराना चाहिए।

उपयोग—इससे मधुमेह में आश्चर्यजनक लाभ पहुँचता है। —वैद्य बांकेलाल द्वारा धन्वन्तरि गुप्त रोगांक से।

(३२) **मधुमेहारि**—वसन्त कुसुमाकर रस १० ग्राम, त्रिवङ्ग भस्म २० ग्राम, लोह भस्म ३० ग्राम, शिलाजीत सत्व ४० ग्राम, जामुन की गुठली ५० ग्राम, गुडमार बूटी ६० ग्राम, आमाहल्दी ७० ग्राम, बहेड़ा ८० ग्राम, हल्दी ९० ग्राम, करेला घनसत्व १०० ग्राम, बाकलक सत्व ११० ग्राम, नीम पुष्प १२० ग्राम, आम्र पुष्प १३० ग्राम, करञ्ज की गिरी, अभ्रक सत्व भस्म, महुआ

इसलिए नहीं आये। लेकिन मेरी शंका निर्मूल निकली, उन्हें दूसरे दिन ही काफी लाभ हुआ तथा इन्सुलिन की आवश्यकता नहीं पड़ी और ४-५ दिन में स्थिति बिल्कुल सामान्य हो गयी। उन्होंने लगभग ५० दिन तक औषधि सेवन की। अब उन्हें मधुमेह की कोई शिकायत नहीं रही, फिर भी वह समय-समय पर मूत्र का परीक्षण कराते रहे हैं।

अब २० रोगियों पर इसका परीक्षण किया गया है, जिनमें से ८ पूर्णतः ठीक है। ७ रोगियों को आंशिक लाभ हुआ है तथा ५ रोगी अभी कोई स्वास्थ्य लाभ नहीं कर रहे।

भस्म, वैक्रान्त भस्म, अग्निस्थायी ताल भस्म, अग्निस्थायी मनःशिल भस्म, अग्निस्थायी मल्ल भस्म प्रत्येक ३०-३० ग्राम ।

विधि—इन सबको खरल में एकत्र कर दृढ़ मर्दन करना चाहिए। मैंनों द्रव्यों के एकरस हो जाने पर चार गुना मेंडासिंगी का ताजा स्वरस डालकर भावना देवें। तदनन्तर इसी प्रकार से सौंफ तथा ताजा सोया का रस समभाग डालकर भावना देवें। तदनन्तर एक दृढ़ शराव सम्पुट में बन्द करके क्रमशः सात कपड़मिट्टी करें। ठीक प्रकार से सूखने पर दस उपलों की अग्नि देवें। स्वांग-शीतल होने पर निकालें और खरल में डालकर १ भावना आम्रहरिद्रा स्वरस की देवें तथा अन्त में १ भावना करेले के रस की देकर १ चावल मात्रा की बहुत छोटी गोली बना लें अथवा कैपसूल में भर लें।

मात्रा—प्रातः-सायं १-१ मात्रा ताजा जल के साथ दें।

उपयोग—इस प्रयोग से तीसरे दिन ही शक्कर का आना समाप्त हो जाता है और नियमित रूप से ४० दिन सेवन कराने पर पुराना मधुमेह भी अवश्य ठीक हो जाता है। इसका परीक्षण कई रोगियों पर किया जा चुका है। एक रक्त-शर्करा रोगी को कुछ दिन प्रयोग करने से रक्त-शर्करा सदैव के लिए ठीक हो गयी।

—कविराज बी० एस० प्रेमी द्वारा
धन्वन्तरि पुरुष रोगांक से।

(३३) बबूलासव [विशेष]—बबूल की फली ४ किलो उस समय लें, जब उसमें रस भर गया हो परन्तु बीज कड़ा न हुआ हो, जामुन की छाल २ किलो, बेल की छाल २ किलो तथा पानी २० किलो।

सब दवा अधकुटी करके पानी में डाल दें। इसमें लोहे का बुरादा आधा किलो, हरड़, बहेड़ा, आंवला, सोंठ, नागकेसर, नागरमोथा, जायफल, लौंग, काली मूसली, दखिनी सुपारी, पीपल की लाख, धनियां, जावित्री, जामुन की गुठली, हल्दी प्रत्येक १०-१० ग्राम, धाय के फूल १८० ग्राम कूटकर डाल दें और ५ किलो शहद डालकर आसव तैयार करें।

मात्रा—१०-२० ग्राम जल मिलाकर भोजनोपरान्त।

उपयोग—मधुमेह में बहुत उपयोगी आसव है। अन्य मधुमेहनाशक औषधियों के साथ इसका भी प्रयोग कराया जा सकता है।

—वैद्य शंकरलाल द्वारा
प्राणाचार्य प्रमेह रोगांक से।

(३४) मधुमेह नाशक स्वानुभूत अद्भुत सिद्ध प्रयोग—हरड़, गुड़मार, लकड़ी विजयसार तीनों २००-२०० ग्राम, बेलपत्र नहसूड़ा, नीमपत्र, जामुन की गुठली, हरमल के बीज प्रत्येक १००-१०० ग्राम। इन सब वस्तुओं का घन [Extract] बना लें। यह घन प्रायः ७५० ग्राम तैयार होगा। इसमें निम्नलिखित भस्में तथा औषधियां डालनी हैं—

सप्तधातु भस्म ३० ग्राम, कज्जली योग १० ग्राम, शंकरलोह भस्म ३० ग्राम, चांदी भस्म १० ग्राम, स्वर्ण भस्म १० ग्राम, शुद्ध कुचला ३० ग्राम, अफीम १० ग्राम, शिलाजीत ८० ग्राम, ऐलुआ सत्व ३० ग्राम, गुड़मार की छाल ८० ग्राम, हरड़ का छिलका ८० ग्राम।

विधि—सबको मिलाकर २-२ रत्ती की गोलियां बना लें।

मात्रा—दोनों समय भोजन के पश्चात् १-१ गोली दूध के साथ [जिसमें मीठा न डाला हो] खावें।

इसमें चांदी भस्म और शंकरलोह भस्म साधारण विधि से तैयार कर लें। परन्तु जो भस्में विशेष हैं, उनकी निर्माण विधि इस प्रकार है—

सप्तधातु भस्म विधि—बंग, सीसा, जस्त प्रत्येक १०-१० ग्राम लेकर कुठाली में डाल आग पर रखें। जब पिघल जाये, तो २५ ग्राम पारा शुद्ध मिलाकर झटपट उतार कर रगड़ दें, चूर्ण बन जायेगा। इसमें मूंगा १० ग्राम, मोती सीप १० ग्राम बारीक करके मिला दें और घृतकुमारी के रस में एक दिन खरल करके टिकिया बना सुखाकर प्याले में बन्द करके १५ किलो उपलों की अग्नि में फूंक दें। स्वांगशीतल होने पर फिर खरल में डालें और सबको हरताल १० ग्राम मिलाकर घृतकुमारी के रस में खरल करके टिकिया बना एक बार और अग्नि दे दें। दवाई तैयार है, जो कि सब प्रकार के धातु-विकार को दूर करती है और मेहों में लाभदायक है।

स्वर्ण भस्म विधि—यह स्वर्ण भस्म मधुमेह में गुणकारी होने के साथ दूसरे अनेक रोगों जैसे—आमवात, अर्दित वात, पक्षाघात, गृध्रसी, नपुंसकता, हृदय, मस्तिष्क, गुर्दे, मूत्राशय की निर्बलता आदि में हितकारी है। स्वर्ण का चूर्ण या स्वर्ण के वर्क ६ ग्राम लेकर, उनको निम्नलिखित रसों में खरल करें। प्रत्येक का ५० ग्राम रस समाप्त होना चाहिए। अदरक का रस नितरा हुआ, अर्क दुग्ध, घृत कुमारी का पतला रस (जो चीरने से बह जावे), पान का रस। सब रस समाप्त होने के पश्चात् टिकिया बनाकर सुखा लें और १०० ग्राम पान की लुगदी में रखकर कपरोटी करके १५ किलो उपलों की अग्नि दें। आवश्यकता हो तो पान की लुगदी में एक अग्नि और दे दें। मात्रा २ चावल भर (जब अकेली देनी हो)।

कज्जली योग विधि—शुद्ध पारा और शुद्ध गन्धक १०-१० ग्राम की साधारण विधि से कज्जली करें। इसको १४ दिन तक खुश्क खरल करें। फिर इसमें संखिया का जौहर १॥ ग्राम, रसकपूर शुद्ध १॥ ग्राम डालकर नीबू के रस में सात दिन और खरल करें, बस औषधि तैयार है।

उपयोग—इस औषधि को विधिपूर्वक बनाकर मधुमेह पर प्रयोग करें, फिर देखें कैसे यह रोग नहीं जाता है। कितना ही मधु निकलता हो, शीघ्र बन्द हो जाता है। किसी-किसी के एक-आध प्रतिशत ठहर जाता है, परन्तु कुछ कष्ट नहीं देता।

—वैद्य ठाकुरदत्त शर्मा अमृतधारा द्वारा
प्राणाचार्य प्रमेह रोगांक से।

(३५) मधुप्रमेहारि वटी—सिद्ध मकरध्वज १ ग्राम, कुक्कुटाण्डत्वक् भस्म ३ ग्राम, मुक्तापिष्टी १ ग्राम, शुद्ध शिलाजीत १० ग्राम, वङ्ग भस्म ३ ग्राम, शुद्ध अफीम ३ ग्राम, स्वर्ण वङ्ग ६ ग्राम, शुद्ध कुचला ३ ग्राम, शुद्ध भांग १२ ग्राम।

विधि—भांग, अफीम, शिलाजीत छोड़कर बाकी सब चीजें खरल कर एक पुड़िया में रखें। बाद में निम्न वस्तुओं का क्वाथ कर उसमें इतना घोटें, कि गोली बनाने के काबिल हो जाय, फिर १-१ रत्ती की गोली बना लें।

मात्रा—१-१ गोली।

समय—प्रातः, सायं।

अनुपान—बेलगिरी के ३ ग्राम चूर्ण के साथ सुबह जल से, शाम को सोते समय फीके दूध से।

क्वाथ द्रव्य—गिलोय, गुड़मार, करेला पत्र, बिल्व पत्र, कन्दूरी पत्र, जामुन की गुठली प्रत्येक २५-२५ ग्राम, खुरासानी अजवायन २० ग्राम।

विधि—आठ गुने पानी में अग्नि पर रखें। चतुर्थांश जल शेष रहने पर इसमें उपरोक्त द्रव्यों की भावना देकर गोली बना लें। भोजनोपरान्त नारिवाद्यारिष्ट १५-१५ ग्राम बराबर जल मिलाकर प्रयोग करें।

मात्रा, पथ्यक्रम एवं उपयोग—जितना यह रोग कठिन है, उतनी ही इसकी चिकित्सा सरल है। क्योंकि मधुमेह का रोगी यह समझ ले कि प्रकृति ने मीठी वस्तु कोई बनाई ही नहीं। सुबह दवा खाने से आधा घण्टा बाद २५ ग्राम वजन लेना जरूरी है। उसमें सूजी बिना छने आटे की मठरी लें। दोपहर को हरा साग, मिस्सी ४ रोटी और १०० ग्राम दही, नमक, काली मरिच, जीरा भूनकर रोजाना ४ बजे टमाटर, खीरा, ककड़ी, नख नमकीन बनाकर लिया जाय। शाम को ८ बजे २ रोटी दही हरा साग, १० बजे सोते समय घी-दूध के साथ १ गोली लें। इस क्रम से न चलने पर दिल कमजोर हो जाता है। यह गोली हर तरह के प्रमेह तथा मधुमेह पर अति लाभप्रद है।

—डा० के० सी० गर्ग द्वारा
प्राणाचार्य प्रमेह रोगांक से।

(३६) मधुमेह संहार रस वटी—कान्तलौह भस्म १० ग्राम, अमृतासत्व १० ग्राम, विदारीकन्द १० ग्राम, छोटी इलायची के दाने २० ग्राम, काला हंसराज २५ ग्राम, केले की जड़ २० ग्राम, श्वेत मूसली १० ग्राम, कृष्ण मूसली १० ग्राम, जामुन की गुठली १०० ग्राम, शुद्ध असली शिलाजीत २० –, विजया ४॥ ग्राम, अहिफेन १॥ ग्राम, रजत भस्म १. ग्राम।

विधि—सबका वस्त्रपूत चूर्ण कर गुड़मार बूटी के १०० ग्राम स्वरस की भावना दें। सूखने पर पुनः भावना दें। इस प्रकार ७ भावना देने के पश्चात् जामुन की छाल के क्वाथ में ३ दिन घोटकर झड़बेर के समान गोलियां बना लें।

मात्रा—प्रातः, सायं १ से २ गोली तक गुड़मार बूटी के क्वाथ अथवा धारोष्ण दूध अथवा ताजा जल से दें। इसके सेवन से पूर्व अच्छा विरेचन दें। इसके सेवन काल में ४ गोली आरोग्यवर्धिनी वटी की रात्रि में रसांजन क्वाथ १ औंस के साथ देते रहना चाहिए। सेवन कराने से पूर्व मूत्र परीक्षा कर लेनी चाहिए कि कितनी शर्करा जा रही है।

पथ्य में जौ के आटे की रोटी और हरे साग देना चाहिए। —वैद्य आदित्य भाई पटेल द्वारा सुधानिधि पुष्प चिकित्सांक से।

(३७) मधु प्रमेहारि रसायन—२०० ग्राम अच्छे पके और सुपुष्ट भल्लातकों को तीन दिन तक गोमूत्र में तथा तीन दिन तक गाय के दूध में भिगोकर रखें। प्रतिदिन जल से धोकर दूसरे नये द्रव में भिगोयें। इसके बाद ऊपर की टोपी काटकर ईंट से रगड़कर ईंट की मुर्खी लें। फिर इसमें २५० ग्राम नारियल का तेल डालकर मन्द अग्नि पर पकावें। जब भिलावा पूरा तेल सोख ले और भर्जित बन जायं, तो उन्हें उतार कर शीतल होने दें। इसके बाद उनमें शुद्ध गुग्गुल १०० ग्राम डाल दें और दोनों को लोहे के इमामदस्ते में खूब कूट दें। जब गुग्गुल और भल्लातक कूटते-कूटते एक जीव और नर्म हो जायं, तो उसमें नागरमोथा, कबाबचीनी, गोक्षुर, श्वेत चन्दन, छोटी इलायची के बीज, दालचीनी, दारुहरिद्रा, आंवला, हरीतकी, बहेड़ा, बच वंशलोचन असली, मगरुआ पिप्पली, मेंथी का बीज, असली पापड़ी सभी २५-२५ ग्राम डालकर भली प्रकार कुटाई कर दें। मर्दन गुणवर्धन के अनुसार यह कुटाई जितनी होगी, उतनी ही औषधि प्रभावकारी बनेगी। इसके बाद पलाश पत्र १०० ग्राम और जम्बूक गिरि १०० ग्राम लेकर फिर एक हजार बार कुटाई कर दें और सभी का गोला बनाकर कपड़े में बांध ऊपर से गेहूं का आटा चढ़ा दें (गूंधकर)। इसे दस दिन तक जहां दोनों शाम खाना पकता हो, वहां ऊपर टांग दें। १० दिन के बाद इसे निकालकर ऊपर वाली आटे की गुंधनी हटाकर, कपड़े को खोल दें और खरल में सभी औषधियों को डालकर पलाश घनसत्व २५ ग्राम, उत्तम पारद भस्म (कनक पत्र भावित) १५ ग्राम, लौह (शतपुटी) गुड़मार सत्व १५-१५ ग्राम, नागभस्म ५० ग्राम, शोधित सूर्यतापी शिलाजीत १०० ग्राम, बंगभस्म एवं गिलोय सत्व १५-१५ ग्राम, स्वर्णभस्म १० ग्राम लेकर भली प्रकार मिलाकर उसे अच्छी तरह घुटाई करें। फिर पलाश पत्र, उदुम्बर पत्र, आमलकी, जम्बूक पत्र, तिलकोर पत्र, करेला पत्र, नागरबेल पान स्वरस की सात-सात भावनायें दें। प्रत्येक भावना के अन्त में अच्छी तरह घुटाई करें। अन्तिम घुटाई में १०० ग्राम कस्तूरी मिलाकर खूब घोट दें। इस प्रकार मधुमेह की एक अप्रतिम औषधि आपको प्राप्त हो जायगी।

मात्रा—इसकी मात्रा आधे से एक ग्राम तक की है। प्रातः सायं विषम भाग गो घृत एवं मधु के साथ दिया जाना चाहिए।

उपयोग—यह मधुमेह की प्रारम्भिक अवस्था से लेकर अत्यन्त घोर दारुणावस्था तक में मन्त्रवत् कार्य करता है। रक्तगत एवं मूत्रगत दोनों शर्कराओं को कुछ ही दिनों के सेवन से प्राकृतावस्था में ला देता है। कुछ ही दिनों के नियमित प्रयोग से शरीर में नवीन रक्त एवं स्फूर्ति का संचार होने लगता है। नपुंसक व्यक्ति भी इसके प्रयोग करने से नवयुवतियों का मान-मर्दन कर सकता है। हम इस दवा को कैपसूलों में भरकर रखते हैं और अपने रोगियों पर प्रयोग कराते हैं। प्रयोग में वर्णित समस्त द्रव्य एवं भस्में पूर्णतया विशुद्ध एवं प्रामाणिक होने चाहिये, तभी इच्छित फल प्राप्त किया जा सकता है। योग महंगा अवश्य है लेकिन पूर्ण विश्वस्त, सर्वांगीप्रभावकारी और अनुभवित है। इस प्रकार का योग मिलना दुर्लभ ही है। प्रयोग करें और लाभ उठायें।

—डा० जयनारायण गिरि "इन्दु" द्वारा, मधुमेह चिकित्सांक से।

विशेषांक के लिये प्रेषित विशेष प्रयोग—

(३८) मधुमेह हर वटी—निम्बपत्र (शुष्क) चूर्ण १० ग्राम, बिल्वपत्र (शुष्क) चूर्ण १० ग्राम, जामुन पत्र शुष्क २० ग्राम, किरात पत्र शुष्क चूर्ण २० ग्राम, रस-सिन्दूर १० ग्राम, शुद्ध अफीम १० ग्राम, भीमसेनी कपूर १० ग्राम, केशर १० ग्राम, लौहभस्म ५ ग्राम, प्रवाल-

भस्म ५ ग्राम, अभ्रकभस्म ५ ग्राम, त्रिवङ्गभस्म ५ ग्राम, शुद्ध शिलाजीत १५० ग्राम।

विधि—प्रथम रससिन्दूर खरल मे डाल २ घण्टे घोंटें फिर उसमें शिलाजीत, कर्पूर व केशर के अलावा अन्य भस्में खरल में डालकर फिर से घोंटें फिर उसमें मत्र चूर्ण मिलादें फिर निम्ब वृक्ष की गिलोय स्वरस की ३ भावना उसमें दें उसके बाद किरात, हरड़, बहेड़े तथा आंवले के क्वाथ की ३ भावनायें दें अन्त में शिलाजीत को गिलोय के स्वरस में घोटकर दवा में मिलाकर सबको एक साथ घुटाई करें। उसके बाद बकरी के दूध में केशर, अफीम तथा कर्पूर को अलग खरल में डालकर घोट लें फिर उसे पूर्व तैयार औषधि में मिलावें बाद में ३-३ रत्ती की गोली बनाकर सुखालें।

उपयोग—मधु प्रमेह रोग की यह अनुभूत एवं सफल औषधि है। प्रथम १ माह तक १-१ गोली सुबह-शाम २०० ग्राम फीके दूध के साथ सेवन करावें। १ माह के बाद यह गोली सुबह-शाम २-२ दूध से देवें इस प्रकार ५-६ माह के इलाज में इस हठीले रोग से छुटकारा मिल जाता है।

—वैद्य बल्देवप्रसाद एच० पनारा अहमदाबाद

(३९) हर्षुल मधुसूदन—कान्तलौह भस्म, वंग-भस्म, नागभस्म, स्वर्णभस्म सब १-१ तोला, प्रवाल-पंचामृत २ तोला, गुड़मार बूटी ४ तोला, विजयसार-त्वक् घनसत्व ४ तोला, जामुन की मिंगी का चूर्ण ४ तोला, आम की मिंगी का चूर्ण ४ तोला, शुद्ध सूर्यतापी शिलाजीत ४ तोला, वरियारीमूल चूर्ण ४ तोला, बीज-बन्द चूर्ण ४ तोला, चक्रमर्द की जड़ का चूर्ण ४ तोला, जामुन की छाल की भस्म ४ तोला, उदुम्बर घनसत्व ४ तोला सबको खरल में डालकर, अमृता स्वरस, करेला स्वरस बिल्वपत्र स्वरस की भावना देकर चार रत्ती की गोलियां बनाले।

मात्रा—१ से २ गोली।

समय—प्रातः-सायं।

अनुपान—बिल्वपत्र रस + मधु तथा गाय का दूध शर्करा रहित।

पथ्य—कोदों का चावल, यव की रोटी, गोघृत, चौलाई, परवल, करेला, कर्कटीफल (काटोल खेकसी) मूली की शाक।

कुपथ्य—शक्कर, मधुरफल, खटाई, मरिच, मिठाई इसके सेवन से १० दिन में पेशाब में शर्करा आना बन्द हो जाती है। और रक्त व शकर की मात्रा स्वाभाविक हो जाती है। पथ्यपूर्वक १२ माह इसे सेवन करने से मधुमेह (डायबिटीज) की बीमारी निःसन्देह स्थायी रूप से मिट जाती है।

(४०) मधुमेहगज केशरी—शिलाजत्वसत्व ४ ग्राम, त्रिवंगभस्म ३ ग्राम, चन्द्रप्रभा वटी २ ग्राम, आरोग्य-वर्धिनी वटी २ ग्राम, वसन्तकुसुमाकर रस १ ग्राम सम्पूर्ण योग १२ ग्राम।

विधि—उक्त द्रव्यों को आंवले के ताजे स्वरस की सात भावना तथा आंबाहल्दी के क्वाथ की तीन भावना देकर तीन-तीन रत्ती की गोलियां बनालें और छाया में सुखालें।

सेवन-विधि—प्रातः एक गोली गो मूत्र या त्रिफला के पानी से खावें। दोपहर के अनन्तर एक गोली करेला के क्वाथ या ताजे रस से खावें। रात को एक गोली साधारण गरम गो दुग्ध से खावें। भोजन में आर्द्रक या सोंठ के साथ कालीमरिच का चूर्ण दो रत्ती भर दोनों समय खावें। यदि कीकर की फलियों का आटा रोटी में प्रयोग किया जाये तो विशेष लाभ होता है। सौ दिन निरन्तर इस औषधि का सेवन करने से मधुमेह अवश्य नष्ट हो जाता है। —वैद्य वी० एस० प्रेमी

(४१) मधुमेहान्तक चूर्ण—चिरायता १०० ग्राम, कुटकी ४० ग्राम, आंवला १०० ग्राम, छाल बहेड़ा ४० ग्राम, पीली हरड़ की छाल ४० ग्राम, बेलपत्र की जड़ १०० ग्राम, मोंथा ४० ग्राम, गुडमार बूटी १०० ग्राम, जामुन की गुठली २०० ग्राम, बबूल की छाल ४० ग्राम, तालीसपत्र ४० ग्राम।

विधि—सभी का कपड़छन चूर्ण बना लें।

मात्रा—१-१ ग्राम सुबह, शाम जल से।

उपयोग—मधुमेह में अत्यन्त उपयोगी योग है।

[इसका वर्णन कल्प चिकित्सा के अन्तर्गत पृष्ठ संख्या १०२ पर देखें]।

—वैद्य गोपालशरण गर्ग
सम्पादक—"सुधानिधि"

[इ] प्रमुख शास्त्रीय योग

क्रमांक	कल्पना	औषधि नाम	ग्रन्थ सन्दर्भ	मात्रा एवं समय	अनुपान	विशेष
१	रस	वसन्तकुसुमाकर रस	र०यो०सा०	१२५–२५० मि० ग्रा० दिन में २ बार	गुड़मार क्वाथ	जीर्ण मधुमेह के उपद्रवों में उपयोगी।
२	,,	बृहत्सोमनाथ रस	भै० र०	,, ,,	उदुम्बर सत्व + गुडूची-स्वरस	मूत्रराशिवृद्धिहर।
३	,,	स्वर्ण राजवंगेश्वर	र०यो०सा०	,, ,,	एला चूर्ण + मधु	मूत्राविलत्वहर।
४	,,	हेमनाथ रस	भै० र०	१२५ मि०ग्रा० दिन में २ बार	त्रिफला क्वाथ	शर्करोत्पादन में कमी करने में उपयोगी।
५	,,	बसन्ततिलक रस	र० सा० सं०	,,	पनसक अन्त-स्त्वक् फाण्ट	,, ,,
६	,,	सर्वतोभद्र रस	र० रा० सु०	१२५–२५० मि० ग्रा० दिन में २ बार	हरिद्रा स्वरस + मधु	क्षुधा, मांसदौर्बल्य में।
७	,,	तारकेश्वर रस	भै० र०	,, ,,	जम्बूफल-मज्जा चूर्ण + मधु	मूत्राधिक्यहर, शर्करोत्पादक कार्य स्वल्प करने को।
८	,,	सर्वेश्वर रस	,,	,, ,,	कारवेल्लक-स्वरस + मधु	,, ,,
९	,,	प्रमेहगजकेशरी	र० सा० सं०	,, ,,	मेथी चूर्ण + गुडूची स्वरस	,, ,,
१०	,,	हरिशंकर रस	र० र० स०	,, ,,	विजयसार-क्वाथ	,, ,,
११	,,	महावातराज रस	र० त० सा०	६०–१२० मि० ग्रा० दिन में २ बार	[illegible]तरङ्गी-क्वाथ	,, ,,
१२	,,	मेघनाद रस	र० सा० सं०	५०० मि०ग्रा० दिन में २ बार	सालसारादि-गण क्वाथ	,, ,,
१३	,,	मेहमुद्गर रस	भै० र०	२५० मि०ग्रा० दिन में २ बार	आमलकी-स्वरस + मधु	,, ,,
१४	,,	सोमेश्वर रस	,,	,, ,,	निम्बपत्र-स्वरस + मधु	,, ,,
१५	,,	विद्यावागीश रस	र० सा० सं०	,, ,,	हरिद्रा स्वरस	,, ,,
१६	भस्म	स्वर्णमाक्षिक भस्म	र० त०	२५०–५०० मि० ग्रा० दिन में २ बार	गिलोय स्वरस + मधु	तिक्त, कषाय।

१७	भस्म	नाग भस्म	र० त०	१२५–२५० मि० ग्रा० दिन में २ बार	गिलोय स्वरस +मधु	बल्य, शर्करा स्वल्प करता है।
१८	,,	यशद भस्म	,,	,, ,,	,,	,, ,,
१९	,,	अभ्रक भस्म	,,	,, ,,	एला+मधु	योगवाही, बल्य।
२०	,,	वङ्ग भस्म	,,	,, ,,	गिलोय स्वरस +मधु	मूत्रसंस्थान विकृतिहर।
२१	,,	खर्पर रसायन	र० र० स०	२५० मि०ग्रा० दिन में २ बार	त्रिफला क्वाथ	,, ,,
२२	वटी	शिलाजित्वादि वटी	भै० र०	१–२ गोली दिन में २ बार	सालसारादि-गण क्वाथ	शर्करा स्वल्प करने हेतु।
२३	,,	चन्द्रप्रभा वटी	शा० सं०	२ गोली दिन में २ बार	कारवेल्लक स्वरस	,, ,,
२४	,,	शिवा गुटिका	च० द०	,, ,,	,,	,, ,,
२५	,,	इन्द्र वटी	भै० र०	,, ,,	,,	,, ,,
२६	,,	जातिफलादि वटी	,,	१ गोली दिन में २ बार	निम्बपत्र-स्वरस	अहिफेन मधुमेह में यकृत् को अंकुश में रखकर शर्करोत्पादक कार्य कम कराती है। यह योग अहिफेनयुक्त है।
२७	चूर्ण	न्यग्रोधादि चूर्ण	,,	३–४ ग्राम दिन में २ बार	त्रिफला क्वाथ	मूत्राविलत्वहर।
२८	,,	त्रिफला चूर्ण	चरक०	,, ,,	,,	,,
२९	,,	प्रमेह प्रहार चूर्ण	सि० भै० मणि०	२ ग्राम दिन में २ बार	,,	,,
३०	गुग्गुल	गोक्षुरादि गुग्गुल	भै० र०	२–४ गोली दिन में २-३ बार	,,	,, ,,
३१	,,	कैशोर गुग्गुल	,,	,, ,,	,,	पूयमेहजन्य।
३२	क्वाथ	सालसारादिगण क्वाथ	सुश्रुत	१०–२० ग्राम का क्वाथ कर दिन में २ बार	—	शर्करा स्वल्प करने को।
३३	,,	मूत्रसंग्रहणीयगण क्वाथ	चरक०	,, ,,	—	,, ,,
३४	,,	दार्व्यादि क्वाथ	च० द०	,, ,,	मधु मिलाकर	,, ,,
३५	आसव-अरिष्ट	अश्वगन्धारिष्ट	भै० र०	१५-२० मि०लि० भोजनोत्तर	समान जल मिलाकर	अंगमर्द, दौर्बल्य में।
३६	,,	लोध्रासव	,,	,, ,,	,,	मूत्राधिक्यहर।
३७	,,	कुमार्यासव	,,	,, ,,	,,	क्षुधामांद्यहर।
३८	,,	पलाश पुष्पासव	सि० भै० शा० सं०	,, ,,	,,	शर्करा स्वल्प करने हेतु।

३९	आसव—अरिष्ट	मधुमेहासव	वन्व० भै० क०	१५-२० मि० लि० भोजनोत्तर	समान जल मिलाकर	,,	,,
४०	लेह	सालसाराद्यावलेह	च० द०	५ ग्राम दिन में २ वार	त्रिफला क्वाथ		
४१	,,	राजावर्तावलेह	र० रा० सु०	,, ,,	,,	,,	,,
४२	घृत	शाल्मली घृत	भै० र०	,, ,,	,,	,,	,,
४३	,,	सिंहामृत घृत	यो० र०	,, ,,	,,	,,	,,

मधुमेह नाशक चिकित्सा उपक्रम

प्रमेह के समान ही मधुमेह के स्थूल तजा वलवान् रोगियों के लिये संशोधन चिकित्सा तथा कृष और दुर्वल रोगियों के लिये सन्तर्पण एवं बृंहण चिकित्सा वताई गयी है। स्थूल रोगियों के कफ वृद्धि होने से लक्षण तथा अपतर्पण चिकित्सा में व्यापार करना तथा प्राणशक्ति की हीनता को दूर करने के लिये वल प्रदान करने वाली औषधियों यथा—स्वर्ण, शिलाजीत, लौह, मुक्ता आदि का प्रयोग कराना चाहिये। मधुमेह के रोगी को मानसिक श्रम से वचना चाहिये। रूक्ष, शोषक गुण वाली औषधियां यथा विल्वपत्र, जामुन की गुठली, करेला, नीम या शालसारादिगण और न्यग्रोधादि वर्ग की औषधियों का प्रयोग मधुमेही के लिये विशेष उपयोगी होते हैं क्योंकि इनसे मूल में शर्करा की उत्पत्ति कम हो जाती है।

मधुमेह नाशक औषधि व्यवस्था-पत्र

[क] मूत्रगत शर्करा को कम करने के लिये—(१) वसन्तकुसुमाकर रस १२५ मि० ग्रा०, स्वर्णमाक्षिक भस्म २५० मि० ग्रा०, जम्बूफल मज्जा चूर्ण ३ ग्रा०, गुड़मार चूर्ण १ ग्रा०। १ मात्रा × निम्बपत्र स्वरस + भूआमलकी स्वरस से दिन में २ वार दें।

(२) शिलाजत्वादि वटी × २-३ गोली विजयसार के क्वाथ से प्रातः ६ वजे तथा मध्याह्न २ वजे दें।

(३) शिवागुटिका २ तथा शालसाराद्यावलेह ५ ग्राम × १ मात्रा। रात्रि को सोते समय कवोष्ण गोदुग्ध या त्रिफला क्वाथ से दें।

[ख] रक्तगत शर्करा को कम करने के लिये—(१) वहुमूत्रान्तक रस १२५ मि० ग्रा०, यशदभस्म २५० मि० ग्रा०, नागभस्म १२५ मि० ग्रा०। × १ मात्रा दिन में २ वार सालसारादिगण क्वाथ लें।

(२) ववूल की कच्ची कली का चूर्ण २ ग्राम, गूलर के भीतर की छाल २ ग्राम, निम्बपत्र चूर्ण २ ग्राम × १ मात्रा ६ वजे तथा मध्याह्न २ वजे विजयसार के हिम के साथ दें।

मधुमेह के उपद्रवों में सफल औषधि व्यवस्था-पत्र

[क] मधुमेह के कारण होने वाले दौर्बल्य के लिये—(१) सिद्ध मकरध्वज १२५ मि० ग्रा०, शिवागुटिका १ गोली, त्रिवङ्गभस्म २५० मि० ग्रा०, रौप्यमाक्षिक भस्म २५० मि० ग्रा०। ×१ मात्रा—बादाम की मीग १०+कालीमरिच १० ग्राम+चिलगोजा ३ ग्राम में घोटकर प्रातः-सायं दें।

[ख] मधमेह के कारण होने वाले वृक्क दौर्बल्य के लिये—(१) कान्तलोह भस्म २५ मि० ग्रा०, पन्नाभस्म ६० मि० ग्रा०, शिलाजीत १२५ मि० ग्रा०, वंशलोचन ५०० मि० ग्रा०। ×१ मात्रा। शहद या सुकुमार घृत के साथ प्रातः-सायं दें।

[ग] मधुमेह के कारण हृदय दौर्बल्य के लिये—(१) वसन्तकुसुमाकर रस २५० मि० ग्रा०, अकीक पिष्टी २५० मि० ग्रा०, त्रिजात चूर्ण (तेजपात, दालचीनी, छोटी इलायची) ३ ग्रा० × १ मात्रा। खमीरा गावजवां के साथ प्रातः-सायं दो बार दें।

(२) अर्जुनारिष्ट २० मि० लि० × १ मात्रा। भोजनोपरान्त बराबर जल मिलाकर दें।

[घ] मधुमेह के कारण उत्पन्न निर्जीवांगता (कौमा) के लिये—(१) स्वर्णसिन्दूर ६० मि० ग्रा०, प्रवालपञ्चामृत १२५ मि० ग्रा०, ताप्यादि लौह २५० मि० ग्रा०, × १ मात्रा। मधु में प्रातः सायं दें।

(२) अश्वगन्धारिष्ट २० मि० लि०, द्राक्षासव २० मि० लि० × १ मात्रा। भोजनोपरान्त बराबर जल मिलाकर दें।

[३] मधुमेह के कारण उत्पन्न नेत्र दौर्बल्य के लिये—(१) स्वर्णमाक्षिक भस्म २५० मि० ग्रा०, सप्तामृत लौह ५०० मि० ग्रा० १ मात्रा। त्रिफला घृत ५ से १० ग्राम प्रातः-सायं सेवन करावें।

(२) नेत्रों में बाह्य प्रयोगार्थ—त्रिफला १० ग्रा०, रसौत १० ग्रा०, कर्पूर ३ ग्रा०, फिटकरी १० ग्रा०, यशदपुष्प ५० ग्रा० लेकर नीबू के रस में घोटकर गोली बनाकर सुखालें। नेत्रों में घिसकर इस गोली का प्रयोग कराने से नेत्र ज्योति बढ़ जाती है।

[ङ] मधुमेह के कारण उत्पन्न प्रमेहपिडिका के लिये—(१) आरोग्यवर्धिनी वटी २५० मि० ग्रा०, न्यग्रोधादि चूर्ण ३ ग्रा० धन्वन्तरि घृत ५ ग्रा० × १ मात्रा। सालसारादिगण क्वाथ से प्रातः-सायं दें।

(२) वंगभस्म २५० मि० ग्रा०, शुण्ठि चूर्ण १ ग्रा०, जम्बास्थिमज्जा चूर्ण २ ग्रा० × १ मात्रा। फलत्रिकादि क्वाथ से प्रातः ६ बजे तथा मध्यान्ह २ बजे दें।

(३) सारवाद्यासव २० मि० लि० × १ मात्रा। भोजनोपरान्त बराबर जल मिलाकर दें।

(४) बाह्य प्रयोगार्थ—दशांग लेप + जात्यादि तैल मिलाकर प्रमेह पिडिकाओं पर लेप करें।

[च] मधुमेह के कारण उत्पन्न मेदोवृद्धि के लिये—(१) वृ० वंगेश्वर रस २५० मि० ग्रा०; विडंगादि लौह २५० मि० ग्रा०, नागभस्म १२५ मि० ग्रा०, स्वर्णमाक्षिक भस्म २५० मि० ग्रा० × १ मात्रा। सालसारादि गण क्वाथ से दें।

(२) न्यग्रोधादि चूर्ण ३ ग्रा०, २ मात्रा उदुम्बर पत्र स्वरस से दें।

[ई] प्रमुख पेटेण्ट आयुर्वेदीय योग

क्रमांक	योग का नाम	निर्माता कम्पनी	उपयोग विधि	विशेष
१.	जे० के० २२ टेवलेट (J, K. 22 Tab.)	चरक फार्मेस्यु०	२ गोली भोजनोपरान्त दिन में २ बार जल के साथ। जीर्ण रोगियों में सहयोगी औषधि के साथ २-२ गोली भोजनोपरान्त दें।	मधुमेह में बहुत लाभकारी है।
२	टाल बुटेक्स टेवलेट	मार्तण्ड	भोजनोपरान्त १-१ टेव० या ३-४ बार रोगी की दशा के अनुसार।	,, ,,
३	डाईविट टेवलेट	मोहता रसा०	१–२ गोली दिन में २-३ बार।	,, ,,
४	अंशुगरी टेवलेट	अमृतधारा फा०	३–४ गोली दिन में २ बार।	,, ,,
५	मधुमेहारि योग	वैद्यनाथ	,, ,,	,, ,,
६	मधुमेहान्तक कैंपसूल	गर्ग वनौषधि	१–१ कैंपसूल प्रातः-सायं जल के साथ।	,, ,,
७	उदुम्बर घनसत्व टेवलेट तथा कैंपसूल	गर्ग वनौषधि	२–२ गोली या १–१ कैंपसूल सुवह, शाम जल के साथ।	,, ,,
८	प्रमेहकेशरी कैंपसूल	जी० ए० मिश्रा	१–२ कैंपसूल प्रातः-सायं	,, ,,
९	गुडमार सूचीवेध	प्रताप फार्मा	२ मि०लि० मांसपेशी में रोग की अवस्थानुसार।	,, ,,
१०	पलाश सूचीवेध	जी० ए० मिश्रा	,, ,,	,, ,,
११	शिलाजीत सूचीवेध	बुन्देलखण्ड	,, ,,	,, ,,
१२	प्रमेहकेशरी सूचीवेध	बुन्देलखण्ड	,, ,,	,, ,,

[उ] प्रमुख पेटेण्ट एलोपैथिक योग

औषधि का नाम	निर्माता	मात्रा एवं व्यवहार-विधि	विशेष
१. इन्जेक्शन–			
१. प्रोटेमिन जिंक इन्सुलिन (Protamin Zinc Insulin)	Boots	१ मि०लि० का इन्जेक्शन रोज या प्रत्येक तीसरे दिन खाने से पहले चर्म में।	इन्जेक्शन देने के तुरन्त बाद भोजन देना चाहिए।
२. इन्सुलिन (Insulin)	Boots & Alembic	१ मि०लि० (४० यूनिट्स) की सुई रोज १ बार खाने से पहले चर्म में।	

३. इन्सुलिन आइसोफेन (N.D,H.) (Insulin Isophane)	Boots	४०–८० यूनिट्स का इन्जेक्शन रोज या १ दिन छोड़कर चर्म में।	
२. कैपसूल तथा टेबलेट–			
४. डी. बी. आई.–टी. डी. D. B. I. –T. D	USV & P.	सामान्यतः १ कैपसूल नाश्ते के साथ दें। आवश्यकता पर १ कैप० शाम को नाश्ते के साथ दें।	
५. डायबिनिज टेबलेट (Diabenese Tab.) १०० मि०ग्रा०, २५० मि०ग्रा०	Pfizer	२५०–५०० मि०ग्रा० नित्य दें। शक्कर की मात्रा सामान्य होने पर १०० मि०ग्रा० रोज नाश्ते के बाद दें।	I. D. P. L. को Diapomide इस के समकक्ष है।
६. डायोनिल (Dionil)	Hoechst	१ टेबलेट × १–४ बार अवस्थानुसार दें।	
७. रैस्टीनोन (Rastinon)	"	प्रथम ३–५ दिन तक १ ग्राम × २ बार, बाद में स्थिति सुधरने पर ½–१ ग्राम नित्य सुबह दें।	
८. बेटनेस (Betnase)	Cadila	¼–१ गोली आवश्यकतानुसार।	
९. इयुग्लोकोन (Euglucone)	B. Knoll	½ गोली से प्रारम्भ कर ४ गोली तक आवश्यकतानुसार दें।	

मलावरोध

[अ] एकौषध एवं साधारण प्रयोग

(१) अंजीर ६-७ नग लेकर उनका क्वाथ बना लें और रात्रि को पीकर सो जावें इस प्रकार सेवन करते रहने से कुछ दिनों में मलावरोध दूर हो जाता है। बिना क्वाथ किये वैसे ही अंजीर चबाकर गर्म दूध पीने से भी मलावरोध दूर हो जाता है।

(२) रात्रि को शयन करने से पूर्व मुनक्का चबाकर गर्म-गर्म दूध पीने से या मुनक्का को थोड़े घृत में भूनकर सेंधानमक मिलाकर गर्म दूध के साथ चबा-चबाकर खाने से मलावरोध दूर होता है।

(३) मुनक्का २० नग, अंजीर ५ नग, सौंफ, सनाय तथा अमलतास का गूदा तथा गुलाब के फूल ३-३ ग्राम लेकर इनका क्वाथ कर इसमें १० ग्राम गुलकन्द मिलाकर प्रातः पीने से कुछ दिनों में जटिल मलावरोध भी दूर होता है।

(४) अमलतास श्रेष्ठ मलावरोध हर माना गया है इसका गूदा ३० से ६० ग्राम लेकर जल में घोलकर इसमें ४० ग्राम बादाम की गिरी पीसकर मिलाकर पिलाने से मलावरोध दूर होता है तथा आंतों की खुश्की कम होती है।

(५) अमलतास का गूदा १० ग्राम तथा बड़ी हरड़ का बक्कुल ६ ग्राम दोनों को आधा किलो जल में अष्टमांश क्वाथ कर शक्कर मिलाकर सेवन कराने से मलावरोध दूर होता है।

(६) ज्वर की अवस्था में मलावरोध हो तो द्राक्षा-रस या गुलकन्द या दूध के साथ अमलतास का गूदा सेवन कराने से मलावरोध दूर होता है। ध्यान रहे यदि यकृत् का पित्त तेज हो और गुदा में जलन होती हो तो द्राक्षा के रस के साथ यदि मल शुष्क, गांठदार हो तो गुलकन्द के साथ और यदि पित्त बहुत तीव्र हो गया हो और उसे निकालना हो तो दूध के साथ इसका सेवन हितावह होता है।

(७) ज्वर के दूर हो जाने के बाद यदि मलावरोध हो तो अमलतास का गूदा निशोथ, सनाय पत्र, बड़ी हरड़ का बक्कुल, सूखे गुलाब के फूल २०-२० ग्राम और मुनक्का ५ नग और सब औषधियों से आधा गुलकन्द लें। इन आठ द्रव्यों में से अमलतास का गूदा, मुनक्का तथा गुलकन्द इन तीनों को छोड़कर शेष चीजों को कूट-कर चूर्ण करें फिर इन तीनों को भी मिलाकर कल्क करलें। इस कल्क में से लगभग २०-२५ ग्राम कल्क को २५० ग्राम जल में डालकर अधौट क्वाथ कर पीने से १-२ दस्त खुलकर हो जाते हैं।

(८) इन्द्रायण के फल के गूदे को पानी में औटाकर मल छानकर फिर आग पर गाढ़ा कर मरिच जैसी गोलियां बनाकर रख लें बलाबल विचार करते हुये सोते समय १ या २ गोली खाकर ऊपर से औटाकर शीतल किया हुआ दूध पीने से मलावरोध दूर होता है।

(९) इन्द्रायण के फल के भीतर कालीमरिच को भर-कर ऊपर कपड़ मिट्टी कर भूनल की राख में दबाकर रखें ऊपर की मिट्टी लाल हो जाने पर उसे निकाल कर मरिच को शुष्क कर शीशी में भरकर रख लें आवश्यकतानुसार १-२ मरिच खाने से मलावरोध दूर होता है।

(१०) इन्द्रायण के फल के रस में हरड़ के चूर्ण को ४-५ बार भिगोलें और सुखा लें। १ माह तक रात्रि को सोते समय १ ग्राम की मात्रा में जल के साथ लेते रहने से मलावरोध दूर होता है।

(११) इन्द्रवारुणी जड़ ६ ग्राम के साथ सममाग सोंठ तथा काला नमक मिलाकर महीन चूर्ण कर उसमें बीज निकाले हुये मुनक्का १० ग्राम मिलाकर गुलावजल से घोटकर १६ गोलियां बना लें इसमें से ८ गोली जल के साथ रात्रि को सोते समय लेते रहने से विना कष्ट के सुखपूर्वक दस्त होकर मलवद्धता दूर हो जाती है। इस प्रयोग को ताजा बनाकर ही प्रयोग कराना चाहिये अधिक दिन रखे रहने पर यह गोली गुणहीन हो जाती है।

(१२) ईसबगोल के बीज ३॥ ग्राम से ७ ग्राम तक लेकर ५० ग्राम जल में भिगोकर निचोड़ लेवें और उसमें २० ग्राम बादाम का तैल तथा थोड़ी शक्कर मिलाकर सेवन कराने से या रात्रि में १० ग्राम ईसबगोल को ५० ग्राम जल में भिगोकर प्रातः उसमें १२५ ग्राम दूध तथा २० ग्राम मिश्री मिलाकर सेवन कराने से मलावरोध दूर होता है।

(१३) अखरोट के तैल को २०-४० ग्राम तक की मात्रा में दूध के साथ प्रातःकाल सेवन कराने से कोठा मुलायम होकर साधारण अच्छा दस्त हो जाता है अथवा फल के छिलकों का क्वाथ बनाकर पिलाने से भी मलावरोध दूर हो जाता है। —वनौषधि विशेषांक भाग १ से।

(१४) करील के पुष्पों के साथ सममाग अमलतास का गूदा लेकर थूहर के दूध में मर्दन कर २-२ रत्ती की गोलियां बनालें इसे उष्ण जल के साथ लेने से २-३ दस्त होकर कोष्ठ शुद्ध हो जाता है।

(१५) कालादाना के बीजों का चूर्ण तथा सैन्धव-लवण २५-२५ ग्राम तथा सोंठ का चूर्ण ३ ग्राम एकत्र खरल करके रखलें। ३-५ ग्राम तक थोड़े गर्म जल के साथ सेवन करने से मलावरोध दूर हो जाता है।

(१६) काले दाने का भुना चूर्ण ७० ग्राम, तथा सममाग इमली का सत्व तथा ६ ग्राम सोंठ का चूर्ण एकत्र खरल कर ५ ग्राम के लगभग मात्रा में जल के साथ सेवन कराने से मलावरोध दूर हो जाता है।

(१७) काले दाने के २०० ग्राम चूर्ण को आधा किलो मिश्री की चाशनी में मिलाकर बर्फी जैसा पाक बनालें। रात्रि में सोते समय १-१ टुकड़ा गरम जल या दूध के साथ सेवन कराने से विबन्ध दूर हो जाता है।

(१८) कुटकी के ३ से ७ ग्राम तक चूर्ण को सममाग शक्कर मिलाकर गरम जल के साथ सेवन कराते रहने से मलावरोध दूर हो जाता है।

(१९) गुलाब फूल ६ ग्राम, पीपल, श्वेत जीरा, सोंठ, ३-३ ग्राम, सुहागा भुना १ ग्राम, तथा खाने का सोड़ा ४ ग्राम एकत्र महीन पीसकर मिश्री तथा गुलाब-जल १००-१०० ग्राम मिलाकर मन्दाग्नि पर पका अवलेह बनाकर १ ग्राम रात्रि में सेवन कराने से मलावरोध दूर हो जाता है। —वनौषधि विशेषांक भाग २ से।

(२०) जरदालु (प्रेनस आर्मीनिएका) के फलों की गुठली को हटाकर ऊपर का गूदा ४० ग्राम रात्रि के समय जल में उबाल व छानकर या फाण्ट विधि से तयार कर पीने से मल की शुद्धि हो जाती है। अर्श रोगी तथा ज्वरावस्था के मलावरोध पर यह फाण्ट विशेष हितकारी है।

(२१) यवक्षार ६ ग्राम, निशोथ, त्रिफला १५-१५ ग्राम, वायविडङ्ग, काली मरिच ६-६ ग्राम इन सबके मिश्रण में घृत, शक्कर या गुड़ मिलाकर उचित मात्रा में देने से मलावरोध दूर हो जाता है।

(२२) बालक या निर्बल व्यक्तियों को २५-५० ग्राम तक की मात्रा में देने से यह आंतों का स्नेहन करता है तथा साथ ही मृदुविरेचन प्रभाव भी करता है जिससे शुष्क मल मुलायम होकर बिना कष्ट के साफ निकल जाता है।

(२३) दालचीनी चूर्ण ४ ग्राम तथा हरड़ का चूर्ण १६ ग्राम इन दोनों को एकत्र कर १०० ग्राम पानी मिलाकर १० मिनट आग पर पका छानकर पिलाने से दस्त साफ होकर कोष्ठ शुद्ध हो जाता है।

—वनौषधि विशेषांक भाग ३ से।

(२४) निशोथ, दालचीनी, तेजपात तथा काली-मरिच सममाग चूर्ण बनाकर उचित मात्रा में खांड तथा शहद मिलाकर सेवन कराने से सुख पूर्वक विरेचन होता है। यह योग सुकुमार व्यक्तियों के लिये उत्तम है।

(२५) त्रिकटु, त्रिफला, इलायची, नागरमोथा, वायविडङ्ग तथा तेजपात १-१ भाग तथा लोंग सबके बराबर एवं निशोत सबसे दुगनी लेकर चूर्ण बनालें।

६ ग्राम तक उष्ण जल के साथ पीने से रेचन होकर उदर शुद्धि हो जाती है।

(२६) निशोथ २ भाग, पिप्पली ४ भाग, हरड़ ५ भाग तथा गुड़ ११ भाग लेकर इन्हें मिश्रित कर ६ ग्राम से १० ग्राम तक की गुटिकायें बनाकर सेवन कराने से रेचन होकर मलावरोध दूर हो जाता है।

(२७) निशोथ की जड़ की छाल थोड़े से पानी में पीसकर उसमें थोड़ी सोंठ तथा सेंन्धव नमक मिलाकर या शक्कर व काली मरिच मिलाकर सुखोष्ण पानी में मिला व छानकर देने से २-४ दस्त होकर मलावरोध दूर हो जाता है।

(२८) निशोथ (काली), पिप्पली, दन्तीमूल तथा नील की जड़ १-१ भाग, सेंधानमक २ भाग तथा उड़द का आटा १० भाग सबके चूर्ण को एकत्र कर वर्त्ति बनाने योग्य गुड़ मिला गोमूत्र से पीसकर अंगूठे के बराबर की मोटी वर्त्ति बनालें। इसमें से १ बत्ती को घी से चुपड़कर गुदा मार्ग में रखने से मलावरोध दूर होकर उदावर्त आदि विकार दूर होते हैं।

(२९) काली निशोथ की छाल तथा बड़ी हरड़ समभाग महीन चूर्ण कर थूहर के दूध में १२ घण्टे खरल कर १-१ रत्ती की गोलियां बना लें १-१ गोली थोड़े गरम जल से या दूध से यथा समय प्रयोग कराने से वायु की विपरीत गति दूर होकर मलावरोध तथा आध्मान दूर होता है। मलावरोध नाशक उत्तम प्रयोग है।

(३०) निशोत तथा जुलाफा हरड़ १-१ भाग चूर्ण करके बोतल में भरकर उसमें ७०-९० प्रतिशत वाली मद्य मिलाकर अच्छी तरह हिलाकर कार्क लगाकर रख दें। ७-१५ दिन बाद छानकर दूसरी बोतल में भरकर रखलें। १-८ ग्राम तक जल मिलाकर सेवन कराने से मलावरोध दूर होता है उदर में ऐंठन आदि नहीं होने पाती।

(३१) नीबू का रस १० ग्राम तथा जल १०० ग्राम के मिश्रण में १० ग्राम शक्कर मिलाकर प्रतिदिन रात्रि के समय पिलाते रहने से कुछ दिन में नियमित शौच शुद्धि होने लगती है।

(३२) देवदाली (बन्दाल) के पञ्चांग का चूर्ण ४ ग्राम, हरड़ ८ ग्राम का चूर्ण दोनों को २० ग्राम मुनक्का के साथ घोटकर शहद मिला गोली बनाकर अवस्थानुसार योग्य मात्रा में सेवन कर ऊपर से दुग्धपान कराने से आंतों में रुका हुआ मल निकलकर उदर शुद्धि हो जाती है।

(३३) देवदाली का फल, अमलतास का गूदा तथा गुड़ समभाग लेकर तीनों को खूब महीन पीस बत्ती बना लें। इसे गुदा में रखने से आम तथा मल निकालकर उदर शुद्धि हो जाती है। —वनौषधि विशेषांक भाग ४ से।

(३४) बादाम (मीठे) की छिली गिरी २१ दानों को तथा शुद्ध जायफल १० ग्राम को शीशी में मजबूत डाट लगाकर किसी गरम स्थान पर रख दें। ४ दिन पश्चात् १-२ गिरी चबाकर खाने से मलावरोध दूर होता हैं।

(३५) मीठे बादाम का शुद्ध तैल [बादाम रोगन] रात्रि के समय गरम दूध के साथ ३-६ ग्राम की मात्रा में सेवन कराने से मलावरोध दूर होता है। पहले ३ ग्राम से प्रारम्भ करें और ६ ग्राम तक ले जावें। यदि इस प्रकार दुध के साथ तैल पीने में उवाक [उल्टी] आये, तो इसके ६ ग्राम तैल को २५ ग्राम गुलाबजल (जिसमें गोंद बबूल ३ ग्राम महीन पिसा हुआ मिला हो] में मिश्रित कर उलट-पुलट करने से जो दूध की तरह श्वेत मिश्रण तैयार हो उसे २ बार पिलावें। यह मिश्रण प्रतिदिन ताजा ही बनाना चाहिए। मलावरोधनाशक उत्तम प्रयोग है।

(३६) विडङ्ग के चूर्ण में समभाग अजवायन का चूर्ण मिलाकर २-४ ग्राम तक सेवन कराने से मलावरोध [कृमिजन्य] दूर होता है।

(३७) बेल के गूदे को जल में मसल छानकर उसमें थोड़ी शक्कर मिलाकर सेवन कराने से कोष्ठबद्धता दूर होती है। कोष्ठबद्धता के निवारणार्थ सायंकाल के समय एक अच्छा पका हुआ बेलपत्र खाने से चाहे जैसा कठोर कोठा हो, मुलायम हो जाता है; लेकिन ध्यान रहे, वात-प्रकृति वाले रोगियों को इसका सेवन हितावह नहीं है, क्योंकि यह आंतों में रूक्षता प्रदान कर आध्मान उत्पन्न कर सकता है। —वनौषधि विशेषांक भाग ५ से।

(३८) सत्यानाशी के पत्ते अथवा शाखा ५० ग्राम तथा कालीमरिच ८ नग लेकर आधा किलो पानी में पीसकर तथा कपड़े से छानकर पिलाने से ५-७ दस्त होकर मलावरोध दूर होता है।

(३९) सनाय, गुलाव के फूल, मुनक्का, जवाहरड़ तथा अमलतास का गूदा यह पांचों चीज १०-१० ग्राम लेकर इसका क्वाथ तैयार कर पीने से मलावरोध दूर होता है तथा उदर शुद्धि होती है।

(४०) सनाय के पत्ते २५ ग्राम, जौकुट सोंठ ३ ग्राम, जौकुट लोंग ३ ग्राम इनको २५० ग्राम खोलते जल में १ घण्टा तक भिगोकर वाद में मल-छानकर रख लेना चाहिए। इस निर्यास में से ५० ग्राम की मात्रा में पिलाने से विना उपद्रव के उत्तम विरेचन होता है। वच्चों को चौथाई मात्रा देनी चाहिए।

(४१) सनाय १५० ग्राम, मुलहठी, सौंफ तथा शुद्ध आंवलासार गन्धक तीनों ५०-५० ग्राम, मिश्री ३०० ग्राम लेवें। सब वस्तुओं का अलग-अलग चूर्ण करें, फिर सनाय तथा गन्धक को मिलाकर खरल करें। पश्चात् मुलहठी तथा सौंफ मिलावें और सवके अन्त में मिश्री पिसी हुई मिलाकर वारीक चलनी में छान लेवें। ३-६ ग्राम निवाये जल के साथ रात्रि को सोते समय प्रयोग कराने से दस्त साफ होकर मलावरोध दूर होता है।

(४२) हरड़ का मोटा चूर्ण १५ ग्राम जल में मिलाकर मन्दाग्नि पर चतुर्थांश क्वाथ करें। फिर छानकर उसमें ४ रत्ती सोंठ तथा २ ग्राम सेंधव लवण मिलाकर सेवन कराने से ३-४ जुलाव साफ हो जाते हैं। इस जुलाव से उवाक नहीं आती और पेट में दर्द नहीं होता।

(४३) चन्द्रशूर के वीजों को ८ गुने पानी में भिगो दें। २-३ घण्टे में अच्छी तरह भीग जाने पर मसल-छान कर पिलाने से मलावरोध दूर होता है।

—वनौषधि विशेषांक भाग ६ से।

(४४) जमालगोटे के वीजों की २६ मिगी [लगभग १० ग्राम] को रात्रि में एक कलईदार पात्र के भीतर उवलते हुए २०० ग्राम जल में डालकर ढक दें। सुवह उसको हाथ से मसल गरम जल से धोकर अंकुर निकाल खरल में घोटें। अच्छी तरह पिस जाने पर इसमें सोंठ का कपड़छन चूर्ण २० ग्राम मिलाकर जल के साथ ३ घण्टे खरल करके २-२ रत्ती की गोली वना लें। १-१ गोली रात्रि को सोते समय शीतल जल से निगलने से सुबह विना कष्ट के एक दस्त साफ आ जाता है। क्रूर कोष्ठ होने पर २-३ गोलियां भी दी जा सकती हैं।

—पं० गोवरधन शर्मा छांगाणी द्वारा
रसतन्त्रसार प्रथम भाग से।

(४५) देवदाली के पके हुए सूखे ३ फल लेवें, भीतर से जाली तथा बीजों को निकाल लें। केवल कांटेदार टपर लेकर उनका चूर्ण करें। फिर लगभग १० ग्राम मुनक्का को धोकर भीतर से वीज निकाल डालें और उसे चटनी की तरह पीस लें। फिर देवदाली का चूर्ण मिलाकर १४ गोलियां वना लें। मुनक्का इतना मिलाना चाहिए कि गोली ४-४ रत्ती की वन जावें। १-१ गोली कच्चे गोदुग्ध के साथ प्रातःकाल तथा रात्रि को निगलने से मलावरोध दूर होता है। —वैद्यराज किशनलाल अग्रवाल द्वारा
रसतन्त्रसार द्वितीय भाग से।

(४६) मुलहठी, कूठ, हरड़, सेंधानमक, शुद्ध हिंगुल, सुहागे का फूला और शुद्ध जमालगोटा इन सात द्रव्यों को समभाग मिला ६ घण्टे कांजी में खरल करके १-१ रत्ती की गोलियां वना लें। १-१ गोली गुड़ के शर्वत के साथ सुवह, शाम सेवन कराने से २ दस्त साफ आ जाते हैं।

—रसतन्त्रसार द्वितीय भाग से।

(४७) सनाय की पत्ती ३० ग्राम, वड़ी हरड़ ३० ग्राम, काला नमक १० ग्राम लेकर इन तीनों का महीन चूर्ण कर कपड़े में छान लें और किसी स्वच्छ वोतल में रखकर कार्क लगा दें। रात्रि में भोजन के उपरान्त १० ग्राम चूर्ण सेवन कर २-४ घूंट गरम पानी पीवें, तो प्रातः एक दस्त साफ हो जाता है।

—डा० रामजी पाण्डेय द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक द्वितीय भाग से।

(४८) मुनक्का २५ ग्राम, जवाहरड़ १०० ग्राम, गुलकन्द १५० ग्राम, मजीठ ३० ग्राम, सौंफ ५० ग्राम लें। पहले मुनक्कों को धोकर वीज निकाल दें। फिर जवाहरड़, मजीठ तथा सौंफ का वारीक चूर्ण कर गुलकन्द और मुनक्का के साथ सिल पर घोटें। जव सव मिल जावें, तो

बेर के बराबर गोली बना लें। रात्रि को १-२ गोली जल के साथ सेवन कराने से मलावरोध दूर होता है।

—पं० बद्रीप्रसाद शर्मा द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक तृतीय भाग से।

(४९) असली हरड़ जुलाफा १॥ ग्राम से २ ग्राम तक शक्कर में मिलाकर जल से दें, तीन घण्टे में विरेचन प्रारम्भ हो जावेंगे। ३-४ दस्त आवेंगे और कुछ खाते ही दस्त बन्द हो जाते हैं। यदि किसी के पेट में गांठ पड़ गई हों और निकलने में दिक्कत करती हों, तो मेंहदी की जड़ की छाल २० ग्राम को २५० ग्राम दूध में क्षीरपाक विधि से दूध बनाकर पिलाने से गांठें निकल कर उदर शुद्ध हो जाता है। —पं० विश्वेश्वरदयाल जी द्वारा
सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(५०) निबौली की गिरी, हीरा हींग [भुनी], शुद्ध गुग्गुल, एलुआ तथा खुरासानी अजवायन पांचों समान भाग ले इमाम दस्ते में कूटते रहें। जब गोली बनाने योग्य हो जावे, तब ४-४ रत्ती की गोली बना लें। प्रातः, सायं १-१ गोली सेवन कराने से विबन्ध में लाभ होता है। अर्श में भी लाभकारी है। —पं० शिव शर्मा द्वारा
सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(५१) २५० ग्राम छोटी हरड़ को १२ घण्टे पानी में भिगोकर छाया में सुखा लेना चाहिए। इसके बाद एरण्ड का तैल गर्म करके उसमें इन हरड़ों को भून लेना चाहिए और पुनः उसे चूर्ण बनाकर रख लें। अब २५ ग्राम भांग लेकर उसे साफ कर लेना चाहिए। इसके बाद उसे पानी में हाथों से रगड़कर तब तक धोना चाहिए, जब तक धोने से पानी बिलकुल साफ न निकले। इस धुली भांग को छाया में सुखाकर पुनः कड़ाही में थोड़ा घी गर्म करके भांग को भून लेना चाहिए और चूर्ण बना लेना चाहिए। फिर उसमें ५० ग्राम काला नमक पीसकर उपरोक्त हरड़ के चूर्ण में मिला देना चाहिए। इस चूर्ण को सायंकाल ५-१० ग्राम ठण्डे जल के साथ सेवन कराना चाहिए। इस चूर्ण का प्रतिदिन सेवन कराने से स्थायी कब्जियत नष्ट होती है। —पं० दयाशंकर शुक्ल द्वारा
सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(५२) इन्द्रायण फल ३ नग, सोंठ, मिर्च, पीपल, जीरा सफेद, जीरा काला, अजवायन, इलायची बड़ी, नागरमोंथा, पीपरामूल, हींग भुनी सब २०-२० ग्राम तथा लहसुन ६० ग्राम, पांचों नमक १०० ग्राम। उपरोक्त समस्त औषधियों को कूट कपड़छन कर चूर्ण करें। फिर घीक्वार व नीबू के रस में लहसुन के साथ इस चूर्ण को घोंटें तथा ६-६ रत्ती की गोलियां बना लें। २ गोली सुबह तथा ३ गोली शाम को गरम जल के साथ सेवन करने से मलावरोध दूर होता है। उदरशूल के लिए भी उपयोगी है। —कविराज कमलेश्वर वशिष्ठ द्वारा
सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(५३) सनाय की पत्ती १ किलो, हरड़ १। किलो, शुण्ठी, सौंवर्चल नमक, सेंधव लवण, शतपुष्पा प्रत्येक ४००-४०० ग्राम लेकर चूर्ण बना लें। इसकी मात्रा ३ से ६ ग्राम तक की है। यह मात्रा रात को सोते समय गर्म पानी या दूध से लेनी चाहिए। इससे मलावरोध दूर होता है। —बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के
संग्रहीत प्रयोगों से।

(५४) सौंफ, सेंधव लवण, गुलाब के फूल प्रत्येक ५०-५० ग्राम, सनाय, जुलाफा हरड़ १००-१०० ग्राम, कालीमरिच ३० ग्राम, पिपरमैण्ट ३ ग्राम को कूट-पीसकर चूर्ण बना लें। ३ ग्राम गरम जल के साथ सेवन कराने से प्रातः दस्त साफ होकर मलावरोध दूर होता है।

(५५) अनारदाना, भुना हुआ स्याह तथा श्वेत जीरा, सोंठ, निशोथ, अम्लवेत तथा सेंधा नमक, सबको बराबर लेकर बारीक चूर्ण कर लें। १॥ ग्राम की मात्रा में प्रातः-सायं ठण्डे जल के साथ सेवन कराने से मलावरोध दूर होता है।

(५६) बड़ी हरड़ का छिलका, सूखा आंवला, सनाय, अनारदाना, स्याह जीरा [भुना], काला नमक प्रत्येक ४०-४० ग्राम, सेंधा नमक ६० ग्राम सबका चूर्ण बनालें। ६-१० ग्राम तक रात्रि को सोते समय गरम जल से लेने से मलावरोध दूर होता है।

—तत्काल फलप्रद प्रयोग संग्रह से।

(५७) शुद्ध जमालगोटा ३ ग्राम, आंवले का चूर्ण १० ग्राम, कागजी नीबू ३१ नग लेकर एक पत्थर के खरल में

जमालगोटे तथा आंवले का चूर्ण रखकर ऊपर से एक नीबू का रस निचोड़ लें और खरल करें। जब रस सूख जाय तब दूसरे नीबू का रस डालकर घोटें। इसी प्रकार ३१ नीबू का रस डाल-डालकर खरल करते और सुखाते जावें। खरल हो जाने पर चने के बराबर गोली बनाकर छाया में सुखा लें। जिस दिन दस्त कराने की जरूरत हो, उस दिन पहले गरम जल से रात्रि को एक गोली दे दें। प्रातःकाल ४-६ दस्त खुलकर हो जाते हैं।

(५८) हींग, लाहौरी नमक, मधु तीनों ३-३ ग्राम लें। तीनों को एक साथ मिलाकर अंगुली के पोर के बराबर एक बत्ती बना लें। इस बत्ती के ऊपर जरा-सा घी चुपड़ कर मल मार्ग के भीतर प्रवेश कराने से रुका हुआ मल बाहर निकल जाता है।

—प्रयोग रत्नावली से।

(५९) एलुआ ६० ग्राम, सुहागा भुना १० ग्राम, देशी अजवायन ४० ग्राम, कालीमरिच ३५ ग्राम। इन चारों दवाइयों को पृथक्-पृथक् बारीक पीस एकत्र खरल करें और फिर घृत कुमारी के रस में खरल करके चने के बराबर गोली बना लें। २ गोली रात्रि को सोते समय गरम पानी या गरम दूध के साथ लेने से मलावरोध दूर होता है।

(६०) इन्द्रायण फल का गूदा निर्बीज १ किलो, अजवायन देशी साफ २५० ग्राम, सेंधा नमक ६० ग्राम लेकर तीनों को चीनी के मर्तबान में भरकर रख दें। जब पड़े-पड़े शुष्क हो जाय, तब आवश्यकता के समय २-३ ग्राम इस अजवायन को सेवन करने से मलावरोध दूर होता है। —अनुभूत योग प्रकाश से।

(६१) बीज निकाले काले मुनक्के २५ नग, सनाय की पत्ती ३ ग्राम, दस बड़ी हरड़ के ऊपर के वक्कुल, उन्नाव ५ दाने, अन्जीर ३ दाने, गुलाब के फूल, सौंफ, की जड़, कासनी तथा कासनी की जड़ यह पांचों चीजें ३-३ ग्राम, छोटी इलायची ५ दाने तथा मिश्री ८ ग्राम लें। इन्हें अधकचरा कर ७५० ग्राम पानी में रात्रि को भीगने दें और सुबह क्वाथ बनावें। जब २५० ग्राम जल शेष रहे तब आग से नीचे उतार कर कपड़े से छान लें और पिला दें। इसके सेवन से गुल्मरोग के कारण उत्पन्न संचित मल इससे फूल जाता है और सुगमता से निकल जाता है। गुल्म के अलावा अन्य प्रकार के मलावरोध में भी लाभकारी है। —रसायनसार द्वितीय भाग से।

(६२) ग्वारपाठे का कल्क २० ग्राम तथा कालानमक २ रत्ती मिलाकर सुबह, खाली पेट सेवन कराने से और धीमे-धीमे ५० ग्राम तक सेवन कराने से चिरकालीन विबन्ध में लाभ हो जाता है। —वैद्य सहचर से।

(६३) मलावरोध के साथ यदि वायु सम्बन्धी कष्ट भी हो, तो मेंथी २०० ग्राम को भाड़ पर बालू में भुनवाकर चूर्ण कर लें, फिर इसमें हींग भूनकर ६ ग्राम, नमक काला १० ग्राम मिलाकर रख लें। इसमें से रात्रि को ६ ग्राम जल से लेकर ऊपर से २० ग्राम कुमारी आसव समान भाग जल मिलाकर सेवन कराने से वायु के विकार तथा मलावरोध दोनों दूर हो जाते हैं।

—वैद्य शिवकुमार शास्त्री द्वारा
धन्वन्तरि चिकित्सा अनुभवांक से।

(६४) स्वर्णपत्री के पत्र ३ ग्राम, गाय का दूध आधा किलो लें। पत्तों को एक पोटली में बांधकर दूध में लटका दें और दूध में २५० ग्राम जल मिला दें तथा दूध को पकावें। जब दूध का पानी जल जाय, तो पत्तों को निकालकर फेंक दें और दूध में बादामरोगन ६ ग्राम के लगभग डालकर थोड़ा मीठा मिला सेवन कराने से मल का अवरोध दूर हो जाता है।

—धन्वन्तरि मलावरोधांक से।

(६५) सत्यानाशी [स्वर्णक्षीरी] पर जब फल आ गया हो, तब जड़ सहित उखाड़कर मिट्टी आदि दूर करें और उसके छोटे-छोटे टुकड़े कर किसी कलईदार बर्तन में औषधि से चौगुना जल डालकर भिगो दें और तीन दिन भीगा रहने दें, फिर अग्नि पर चढ़ावें। जब तीन हिस्सा पानी जल जाय, तब उतार, मलकर छान लें। अब इस छने हुए द्रव को पुनः अग्नि पर चढ़ावें और गाढ़ा हो जाय तब उतारकर रख लें। ३-४ दिन में जब गोली बनाने योग्य हो जाय, तब मटर के बराबर गोली बना छाया में सुखाकर रख लें। १ से ४ गोली तक गरम जल के साथ रात्रि को निगल जाने से सुबह खुलकर दस्त हो जाता है। —प्राणाचार्य प्रयोग मणिमाला से।

(६६) मौसम में मिलने वाली सब प्रकार की शाक-सब्जी थोड़ी-थोड़ी लें, जैसे कि पत्तियों की सब्जी, ग्वार, चौलाई, मूली, टमाटर, अमरूद आदि मिलाकर आधा किलो पानी में पकावें। चौथाई पानी शेष रहने पर आग से नीचे उतार लें। फिर कपड़े से छानकर उसमें स्वाद के लिए कालीमरिच, भुना जीरा तथा सेंधव लवण डाल रात्रि में शयन के समय सेवन करें। इस प्रयोग से नया पुराना सब प्रकार का मलावरोध १-२ सप्ताह में दूर हो जाता है। —कब्ज रोग चिकित्सा से।

(६७) उसारे रेवन्द १० ग्राम, दालचीनी १० ग्राम को कूट पीस छानकर पानी में खरल करके २-२ रत्ती की गोली बना दें। १-४ गोली तक रोगी का बलाबल देखकर रात को गरम दूध या जल से सेवन कराने पर कोष्ठबद्धता दूर होती है। —डा० रामनरायण जी द्वारा प्रयोगांक से।

(६८) नीम के तेल का फाया गुदा में लगाने से थोड़ी देर में ही बच्चों को दस्त हो जाता है ग्लैसरीन सपोजैटरी से अधिक उपयोगी है।

(६९) रेवन्दचीनी का सत् १० ग्राम, मुसब्बर १० ग्राम, रूमीमस्तगी ६ ग्राम सबका चूर्ण कर महीन कपड़े में छानकर बाद में २-४ बूंद पानी डालकर खरल में डालकर घोटें बाद में हाथ में घी लगाकर मटर के बराबर गोली बना लें १ गोली रात को सोते समय दूध या गरम जल के सेवन कराने से मलावरोध दूर होता है।

—अनुभूत प्रयोगांक से।

(७०) भुनी हींग १० ग्राम, भुना सुहागा ६ ग्राम, रेवन्दचीनी का शीरा १० ग्राम, एलुवा १० ग्राम लेकर सबको मिलाकर अच्छी तरह पानी में पीसकर २-२ रत्ती की गोली बना लें। १-२ गोली उष्ण जल के साथ सेवन कराने से कोष्ठबद्धता, वायु, पेट में जमी हुई मल की गांठें निकालकर मृदु शोधन करता है।

—वैद्य चन्द्रशेखर ठक्कुर द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(७१) कबीला १०० ग्राम तथा स्वच्छ गोमूत्र १०० ग्राम लेकर खरल में घोटें तथा चने प्रमाण गोली बना ले और छाया में सुखा लें १-१ गोली सोते समय गरम पानी या गरम दूध से लेने से प्रातः मल साफ हो जाता है।

—पं० चन्द्रशेखर शर्मा द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(७२) मिलावे का तेल (स्वयं निकाला हुआ तो उत्तम) १ बूंद, बादाम तेल ६ ग्राम तथा दूध २५० ग्राम यह एक मात्रा है रात्रि को सोते समय तथा आवश्यकता होने पर सुबह भी सेवन करावें तो वर्षों पुराना मलावरोध कुछ दिनों में दूर होता है।

—वैद्य मुन्नालाल गुप्त द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(७३) अण्डी तेल २५ ग्राम, सनलाइट साबुन १५ ग्राम, महुए की मिंगी २५ ग्राम इन तीनों वस्तुओं को एक साथ मिश्रित कर पीस लेवें यह मलहम सा बन जायगा जब रोगी को मलावरोध हो तो इस मलहम को रुई पर अच्छी तरह लपेटकर इस रुई को गुदा में घुसा दें तो थोड़ी देर बाद ही मल की रुकी गांठें बाहर निकलकर खुलकर दस्त हो जाता है।

—श्री बाबूराम बाजपेयी द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(७४) शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, खर्पर शुद्ध, शुद्ध जयपाल सब बराबर लें पारद गन्धक की कज्जली कर शेष दोनों को खूब घोटें और एक कोरे सकोरे में रखें सकोरे के अन्दर इतना पानी भर दें कि औषधि २ अंगुल डूब जाय अब आग पर इस सकोरे को रखकर पानी सुखा लें और चने बराबर गोलियां बना लें २-४ गोली तक रात को सोते समय सेवन करने से मलावरोध दूर होता है। —बाबू सूरसिंह सोनी द्वारा
धन्वन्तरि अनुभूत प्रयोगांक से।

(७५) शुद्ध जमालगोटा, सफेद कत्था, छोटी इलायची ३०-३० ग्राम, काली मरिच १५ ग्राम सबको महीन पीसकर चने के बराबर पानी के संयोग से गोली बनावें। ४ गोली ठण्डे जल के साथ सेवन कराने से मलावरोध दूर हो जाता है। —चौधरी ईश्वरराम द्वारा
धन्वन्तरि अनुभूतांक से।

(७६) मुनक्का १५ ग्राम, अंजीर देशी, पिण्ड खजूर १०-१० ग्राम, मजीठ ८ ग्राम, सनाय ५ ग्राम कूट छानकर एक सकोरे में भिगो दें पुनः मल छानकर इस शीत कषाय को पिला दें तो १-२ दस्त खुलकर हो जाते हैं।

—श्री नन्दलाल वैद्य द्वारा
धन्वन्तरि अप्रेल १९४१ से।

(७७) बबूल की कोंपलें (मुलायम) २० ग्राम, बबूल की कोंपलें पकी हुई २० ग्राम (अर्थात् आधी कच्ची आधी पक्की) दोनों को जल के साथ बारीक पीसकर चना प्रमाण या उड़द प्रमाण गोलियां बना लें। सुबह-शाम २-४ गोली गाय के दूध के साथ सेवन कराने से उदरस्थ आम निकलकर पेट साफ हो जाता है। योग साधारण है लेकिन बहुत उत्तम है। —पं० श्रीकृष्ण शर्मा द्वारा

धन्वन्तरि अनुभवांक से।

विशेषांक के लिये प्रेषित विशेष योग—

(७८) मुलहठी चूर्ण १ भाग, हरीतकी चूर्ण १ भाग, शुद्ध गन्धक ½ भाग, सनाय चूर्ण २ भाग, ईसबगोल की भुसी ५ भाग सबका चूर्ण कर मिलाकर रख लें ५ ग्राम रात्रि को सोते समय ताजे जल से नियमित सेवन करने से स्थायी मलावरोध दूर होता है।

—गुरुचरण वर्णवाल आयुर्वेदाचार्य मेजरगंज
सुल्तानपुर।

[आ] अनुभूत एवं परीक्षित प्रयोग

(१) विरेचन चूर्ण—सनाय, गुलाब के फूल, हरड़, बहेड़ा, आंवला ३०-३० ग्राम, बादाम की गिरी तथा कुलफा के बीज १०-१० ग्राम तथा शुद्ध जमालगोटा ३ ग्राम लें सबको कूटकर बारीक चूर्ण करें।

मात्रा—१॥ ग्राम से २ ग्राम चूर्ण को ३ ग्राम मिश्री में मिलाकर रात्रि को सोते समय प्रयोग करावें।

उपयोग—यह चूर्ण नवीन तथा पुराने कब्ज को दूर करता है जिससे आंतें तथा आमाशय शुद्ध बन जाते हैं इसके द्वारा दस्तों से कमजोरी नहीं आती कोमल चित्त वाला भी ले सकता है १-२ दस्त खुलकर सुबह हो जाता है। —रसतन्त्रसार प्रथम भाग से।

(२) रेचक चटनी—बादाम की गिरियों का महीन चूर्ण तथा सीरखिस्त ५०-५० ग्राम, गुलाब के फूलों की पंखड़ियां और पुरानी सौंफ २५-२५ ग्राम, छोटी हरड़ १२ ग्राम, सोंठ ५ ग्राम, अंजीर की पीठी तथा बीज निकाले हुए मुनक्के की पीठी ७०-७० ग्राम, देशी कुंजा मिश्री ३०० ग्राम, बादाम का तैल ३६० ग्राम लें।

विधि—सूखी चीजों को कूट कपड़छन कर लें तथा गीली चीजों को सिल पर महीन पीस लें फिर सभी चीजों को १ घण्टे तक खरल में डालकर ऊपर से बादाम का तैल डालकर १ घण्टे तक खरल करके शीशे के पात्र में रख लें।

मात्रा—५-१० ग्राम तक सूर्योदय से कुछ पूर्व या रात्रि में सोते समय गरम दूध या जल से इसका सेवन कराना चाहिये।

उपयोग—यह मृदु विरेचक गुण से युक्त चटनी है जिससे मल, आम तथा पित्त मल-मार्ग से सुगमता से बाहर निकल जाते हैं। यह कोष्ठगत वायु का शमन करके बिना उबाक लाये साधारण रेचन कराने में सहायक है। —अनुभूत योग पंचम भाग से।

(३) रेचक वटी—शुद्ध जयपाल, सुहागा भुना, मुनक्का बीज निकाले हुये, हरड़ का बक्कुल, सकमोनिया, कुटकी, निशोत, अतीस कड़वी तथा इश्कपंजा के बीज प्रत्येक १०-१० ग्राम।

विधि—कूट-पीस तथा छानकर महीन चूर्ण कर फिर जल से घोट १-१ ग्राम की गोलियां बना लें।

मात्रा—निम्नलिखित मुंजिस का सेवन लगातार ६ दिन तक प्रयोग कराने के बाद यह १-२ गोली गर्म जल से रात्रि को सेवन करावें।

(४) मलावरोध मुंजिस—गुलबनपसा, गाउजवां, गुल गावजवां, खुब्बाजी, सनाय के पत्ते सभी ३-३ ग्राम, खतमी, कासनी, सौंफ की जड़, मकोय, सौंफ, फूल गुलाब तथा मुलहठी प्रत्येक ५-५ ग्राम, उन्नाव तथा मुनक्के ६-६ नग सबको जौकुट कर ½ किलो जल में रात्रि को

भिगोकर प्रातः अग्नि पर औटाकर आधा शेष रहने पर वस्त्र में छानकर इसमें २० ग्राम चीनी मिला दें।

मात्रा—यह १ मात्रा है दिन में १ बार यह मुंजिस लगातार ६ दिन तक प्रयोग करावें बाद में उपरोक्त रेचक वटी का सेवन करावें।

उपयोग—यह मलावरोधक मुंजिस मल को आंतों से फुलाने के लिये बहुत उत्तम योग है यह आंतों से चिपके मल को सुगमता से खुरचकर फुला देती है बाद में आंतों से इस मल को बाहर निकालने का काम ऊपर की रेचक वटी करती है इसलिये आंतों को स्वच्छ करने के लिये कुछ दिन बाद इन दोनों का प्रयोग कराना चाहिये।

(५) तीव्र मलावरोध हर क्वाथ—फूल गुलाब, गुलबनफसा, सफेद निशोथ, सौंफ, मकोय, जूफा तथा हरी गिलोय प्रत्येक ५-५ ग्राम, सनाय ६ ग्राम, इन्द्रायण के बीज, काबुली पीली हरड़ का बक्कुल तथा गारीकून प्रत्येक ६-६ ग्राम, असकन्द ३ ग्राम, अंजीर ५ नग, मुनक्का १३ नग सबको जौकुट कर रात्रि को आधा किलो पानी में भिगो दें। प्रातः अग्नि पर औटाकर तिहाई जल शेष रहने पर इसमें २५ ग्राम गुलकन्द मिला दें छानकर गुनगुना रहने पर प्रातः पिला देना चाहिये इससे २-३ घण्टे पश्चात् ५-६ दस्त खुलकर हो जाते हैं।

उपयोग—जब उपरोक्त रेचक वटी से मलावरोध दूर न हो तो इस क्वाथ का सेवन कराना चाहिये यह तीव्र होते हुये भी प्रायः सभी प्रकृति वालों को सेवन कराया जा सकता है। —वैद्य शिवकुमार शास्त्री द्वारा सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(६) कब्जारि तैल—गुलबनफसा १२० ग्राम लेकर रात्रि को किसी कलईदार बर्त्तन में १ किलो पानी डालकर भिगो दें और दूसरे दिन प्रातःकाल चूल्हे पर रखकर औटावें पकते-पकते जब आधा किलो पानी शेष रह जाय तब उसमें मीठे बादामों का तैल १२० ग्राम डालकर विधि पूर्वक सिद्ध कर लें तैल मात्र शेष रहने पर छानकर शीशी में भर लें।

सेवन विधि—३ ग्राम ईसबगोल जल में भिगोकर उसमें ६ ग्राम उपरोक्त तैल मिलाकर प्रातः-सायं सेवन करें। इस प्रकार सेवन करने से प्रारम्भ में ३-४ दिन कुरचन होने से कष्ट होता है।

उपयोग—इस तैल को उपरोक्त विधि से सेवन करने से जीर्ण कोष्ठबद्धता दूर होती है आंतों की श्लैष्मिक कला की विकृति दूर होकर आंतें बलवान् हो जाती हैं जिससे नियमित मल शुद्धि होने लगती है। बहुत अचूक और प्रभावकारी योग है।

(७) जीर्णबद्धकोष्ठहर माजून—मुनक्का निर्बीज ६०० ग्राम, गुलकन्द ६०० ग्राम, सनायपत्र ६५ ग्राम, हरीतकी गुठली रहित ६० ग्राम, उन्नाव बेर का छिलका २५ ग्राम, अन्जीर पीली २५ ग्राम, बादाम की गिरी ५० ग्राम।

निर्माण विधि—सनाय के तिनके चुनकर फेंक दें और स्वच्छ नवीन पत्तों को बारीक कूटकर कपड़छान कर लें इसी प्रकार हरीतकी छाल, उन्नाव बेर का छिलका पृथक्-पृथक् कूटकर कपड़छान करलें फिर बादाम तथा अंजीर जुदा-जुदा कूटकर बारीक करके मिला दें अन्त में मुनक्का गरम पानी से धोकर साफ करके खरल में रगड़ कर गुलकन्द मिला दें तत्पश्चात् शेष चीजें मिलाकर माजून बनाकर कांच के पात्र में रखें।

मात्रा—१२ ग्राम की लगभग रात्रि को सोते समय सेवन कराकर ऊपर से गरम दूध पिलाना चाहिये।

उपयोग—यह माजून हमारा सहस्रों रोगियों पर अनुभूत है इसके सेवन से ऐसे रोगी जिन्हें तीसरे चौथे दिन थोड़ा सा शुष्क मल आता हो उन्हें इसे नियमित सेवन कराने से आंतों में स्निग्धता आकर नियमित मल निष्कासन होने लगता है।

(८) अमलतासादि मिश्रण—अमलतास का गूदा २५-५० ग्राम तक जल में भिगोकर रख दें और ४ घण्टे बाद मलकर छान लें और नियारने के लिये रख दें ४ घण्टे के उपरान्त ऊपर से निथरा जल लेकर कपड़े में से छान लें और गाद फेंक दें। इसी प्रकार दूसरे पात्र में २० ग्राम सनाय, बड़ी हरड़ का छिलका ६ ग्राम, चित्रक ६ ग्राम, उन्नाव बेर ७ ग्राम, मुनक्का १५ दाने, सौंफ, सफेद चन्दन का चूरा, बनफ्सा प्रत्येक ६-६ ग्राम लेकर

जल में भिगो दें और उसी में अमलतास वाला पानी भी मिला दें। ३-४ घण्टे भिगोने के बाद उबालकर मसलकर छान लें। एक तीसरे पात्र में २५ ग्राम इमली तथा चौथे पात्र में तुरंजबीन २५ ग्राम, शीरखिस्त १२ ग्राम को पानी या गुलाबजल में पहले से भिगोकर रख दें इन दोनों को बिना उबाले ही मल छानकर सबको एक ही पात्र में मिला लेना चाहिये। इसमें २० ग्राम गुलकन्द मसलकर मिला दें और २-३ बादाम की गिरी पीसकर डाल दें और पिलादें।

उपयोग—इससे बिना किसी कष्ट के जुलाब होकर पेट साफ हो जाता है अतीव गुणकारी जुलाब है।

—अनुभूत योग प्रकाश से।

(९) मृदुरेचन मोदक—निशोथ, इन्द्रजौ, छोटी पिप्पली तथा सोंठ यह चारों चीजें १०-१० ग्राम तथा मुनक्का ४०-४० ग्राम ले।

निर्माण विधि—चारों काष्ठ औषधियों को कूट तथा कपड़छन कर रखें और ३२० ग्राम जल में मुनक्कों को पकावें ८० ग्राम जल शेष रहे तब छानकर उसे पुनः पाक करें। गाढ़ा होवे तो उसमें चूर्ण डालकर चूल्हे से पात्र को उतारकर मोदक बना लें सभी सोलह मोदक बना लेने चाहिये और कांच के पात्र में रखना चाहिये।

मात्रा—६ ग्राम से १० ग्राम तक ६ ग्राम मधु के साथ सूर्योदय से पूर्व प्रातःकाल १ मात्रा औषधि का सेवन बारह बजे दिन तक रेचन के निमित्त प्रतीक्षा करनी चाहिये रेचन हो जाने पर मूंग की दाल तथा पुराने चावल की खिचड़ी का पथ्य लेना चाहिये।

उपयोग—यह बिना कष्ट के मृदु विरेचन कराने में सक्षम मोदक हैं विशेषतः वर्षा ऋतु में जब रेचन औषधियों का उपयोग नही किया जाता हो उस समय के लिये यह विशेष योग है इसके सेवन से मिचली आदि की शंका नहीं रहती। एक मात्रा लेने से साधारणतः २-३ हल्की टट्टी हो जाती है।

—रसायनसार संग्रह द्वितीय भाग से।

(१०) अमलतास की चटनी—अमलतास, अमलतास की फली का गूदा निकालकर ४०० ग्राम लें और उसे १ किलो नीबू के रस में भिगो दें दिन भर भीगा रहने पर कपड़े में छानकर उसमें जीरा सफेद ६० ग्राम, सोंठ ५० ग्राम, कालीमरिच १०० ग्राम, पीपर छोटी ५० ग्राम, सेन्धानमक १०० ग्राम, बड़ी इलायची के बीज ४० ग्राम, नीबू का सत्व १० ग्राम, अनारदाना ५० ग्राम, धनियां ५० ग्राम, हींग भुनी १० ग्राम, दालचीनी २० ग्राम लेकर कूट कपड़छन कर मिला दें।

मात्रा—६-१० ग्राम रात्रि को सोते समय या आवश्यकता के समय चाटें।

उपयोग—जिनको कब्ज रहता है उनके लिये बहुत उपयोगी औषधि है। स्वादिष्ट है।

—वैद्य अब्दुलरहीम खां द्वारा प्रयोग मणिमालांक से।

(११) मलावरोध हर हरीतकी खण्ड—अजवायन, आंवला, कालीमरिच, कुलफा, तेजपात, दालचीनी, धनियां, नागरमोथा, पीपर छोटी, बड़ी इलायची, बहेड़ा, लौंग, सौंफ, सोंठ, हरड़ का बक्कुल सब वस्तु २५-२५ ग्राम, निशोथ ५० ग्राम, विधारा २०० ग्राम; सनाय ४०० ग्राम, हरड़ ७५० ग्राम, मिश्री ३। किलो।

विधि—मिश्री के अतिरिक्त सब वस्तुओं को कूटकर कपड़छन कर लें फिर मिश्री की चासनी करके उसमें मिलाकर कांच के वर्त्तन में रख लें।

मात्रा—रात्रि को सोते समय १० ग्राम की मात्रा में गर्म दूध के साथ सेवन करावें।

उपयोग—इसके सेवन से मलावरोध दूर हो जाता है किसी प्रकार की बेचैनी नहीं होती इसके नियमित सेवन से पुराना मलावरोध भी ठीक हो जाता है।

(१२) मलावरोधहर चूर्ण—सनाय, गुलाब के फूल, बड़ी हरड़ का बक्कुल, बहेड़े का बक्कुल, आमले बिना गुठली के प्रत्येक ३०-३० ग्राम, बादाम की मिंगी १० ग्राम, कुलफा के बीज १० ग्राम, शुद्ध जमालगोटा की मींग ३ ग्राम।

विधि—सबको कूटकर चूर्ण बना लें।

मात्रा—इस चूर्ण में से ३ ग्राम लेकर १० ग्राम गुलकन्द या २ ग्राम मिश्री मिलाकर रात को सोते समय गुनगुने दूध या गरम जल से सेवन कराना चाहिए।

उपयोग—इसके सेवन से प्रातःकाल एक दस्त साफ हो जाता है। मृदु कोष्ठ वालों को दो दस्त हो जाते हैं, उन्हें थोड़ी मात्रा सेवन करानी चाहिए। इसके नियमित सेवन से पुराना मलावरोध भी नष्ट हो जाता है।

(१३) मलावरोधनाशक अजवायन चूर्ण—हरड़ छोटी, अजवायन तथा कालानमक तीनों ५०-५० ग्राम, कालीमरिच ४० ग्राम, हींग भुनी ६ ग्राम लें।

विधि—एक गीले कपड़े में अजवायन को साफ करके लपेट दें और छोटी हरड़ों को पानी में भिगो दें। ३ घण्टे बाद जब अजवायन नम हो जाय, तब उसे निकाल हाथ से मसलकर छिलका उतार, मींग निकाल ले और छाया में सुखा लें। छोटी हरड़ों को पानी से निकालकर छाया में १ घण्टे रखी रहने दें और १ घण्टे बाद गाय के घी में भून लें। हरडों के बारीक टुकड़े कर लें और काला नमक, काली मरिच तथा हींग का कपड़छन चूर्ण करके और सब वस्तुयें आधा किलो नीबू के अर्क में डालकर धूप में रख दें। जब खुश्क हो जाय, तो उसे निकालकर और पीसकर शीशी में भर रख ले।

मात्रा—भोजन के बाद ३ ग्राम गुनगुने जल से दोनों समय सेवन करने से मलावरोध नष्ट होता है। जिन व्यक्तियों को वर्षों से मलावरोध की शिकायत रहती थी, उन्हें इसके ४-६ माह के प्रयोग से स्थायी लाभ हो गया। इससे क्षुधा बढ़ती है तथा पाचन होता है।

(१४) शर्बत स्वर्णपत्रिका—कासनी १४ ग्राम, फूल गुलाब १७ ग्राम, गावजवां १६ ग्राम, बनफसा १८ ग्राम, गिरी खरबूजा १० ग्राम, सनायपत्र ६० ग्राम, आलूबुखारा १५ नग, उन्नाव ३० नग, लसूड़ा ४० नग, तुरंजबीन बीज ४० ग्राम, खांड ६०० ग्राम।

विधि—खांड के अतिरिक्त सभी औषधियों को अर्धकुट कर २ किलो जल में २४ घण्टे भिगोना चाहिए। बाद में अग्नि पर क्वाथ करना चाहिए। आधा जल शेष रहने पर खूब चलाना चाहिए। पुन: छानकर उसमें खांड मिला देनी चाहिए। उस समय गिरी खरबूजा को जल में घोटकर मिला देनी चाहिए। जब अच्छी तरह पक जाय, तब बोतल में डालकर रखना चाहिए।

मात्रा—बलानुसार १०-१५ ग्राम तक की मात्रा में सेवन कराना चाहिए।

उपयोग—यह खुलासा दस्त लाने के लिए बहुत उत्तम शर्बत है। यह नम्र कोष्ठ वाले रोगियों के लिए उत्तम है। —वैद्यव्यासदत्त शर्मा द्वारा धन्वन्तरि प्रयोगांक से।

(१५) सुख-विरेचक लेह—गुलाब के फूल ३० ग्राम, सनाय २० ग्राम, आंवला २० ग्राम, हरड़ बड़ी २० ग्राम, हरड़ छोटी २० ग्राम, हरड़ जर्द २० ग्राम, पीपल २० ग्राम, सोंठ २० ग्राम, मिर्च २० ग्राम, निशोथ ३० ग्राम, शुद्ध जमालगोटा २० ग्राम, छोटी इलायची १० ग्राम, रेवन्द चीनी १० ग्राम, शहद १ किलो, मिश्री ½ किलो, अर्क गुलाब ६० ग्राम, केशर ३ ग्राम।

विधि—सब दवायें चूर्ण कर शहद में मिला आधा घण्टा तक घोटें, केशर को गुलाबजल में घोटकर मिलावें।

मात्रा—५ से १० ग्राम तक दूध के साथ।

उपयोग—कोष्ठ शुद्धि के लिए बहुत उत्तम औषधि है। अनेक बार इसकी परीक्षा की जा चुकी है।

—पं० हरिनारायण शर्मा द्वारा प्रयोगांक से।

(१६) आरग्वधावलेह—तज, शुण्ठी, कालीमरिच, छोटी पिप्पली, बड़ी इलायची, सेंधा नमक, काला नमक प्रत्येक २५-२५ ग्राम, भुना अनारदाना, भुना जीरा, अजमोद तथा मुलहठी प्रत्येक ५०-५० ग्राम, शक्कर २०० ग्राम, सनाय डोंडे २०० ग्राम, अमलतास ४०० ग्राम, काली द्राक्षा १०० ग्राम।

निर्माण विधि—१ किलो नीबू के रस में अमलतास का गुदा डालकर २४ घण्टे तक रख छोड़ें। बाद में आग पर आधा घण्टा तक गर्म करके हाथ से मसलकर छान ले, फिर ऊपर लिखे सब द्रव्यों का बारीक चूर्ण इसमें मिलावें। बाद में १०० ग्राम काली द्राक्षा को बारीक पीसकर इसमे मिला दें और कांच की बरनी में रख लें।

मात्रा तथा अनुपान—१-२ चम्मच गर्म दूध या गर्म पानी के साथ रात्रि को सोते समय सेवन कराना चाहिए।

उपयोग—यह विबन्ध को दूर करने के लिए उत्तम जुलाब है। इससे १ या २ दस्त आ जाते हैं। इसके

प्रयोग से अत्यन्त जीर्ण विबन्ध भी मिटकर सदैव के लिए दूर हो जाता है। सैकड़ों बार का परीक्षित योग है।

—कविराज आशानन्द पंचरत्न द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(१७) इन्द्रायण वटी—शुद्ध हिंगुल, जायफल, जायपत्री, वायविडङ्ग, अकरकरा, सोंठ, सनाय, दालचीनी, बड़ी इलायची, पत्रज, यवक्षार, पांचों नमक सब ५०-५० ग्राम।

विधि—सबको लेकर कूट-कपड़छान करें एवं इन्द्रायण के गूदे में १०-१५ बार मर्दन करें और २-२ रत्ती की गोली बनावें।

मात्रा—१ से ४ गोली तक अवस्थानुसार जल के साथ सेवन करावें।

उपयोग—इसके प्रयोग से मलावरोध, आध्मान तथा अर्श आदि विकारों मे लाभ होता है। इसके नियमित सेवन से उदर शुद्धि होती है एवं शरीर शोधन होकर रस रक्तादि धातुयें सबल होती हैं।

—वैद्य खेमराज शर्मा छांगाणी द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(१८) आयुर्वेदीय रेचन वटी—इच्छानुसार गुड़ तथा सेंधव लवण समान भाग लेकर एक तांबे की कटोरी में गुड़ रखकर आग पर रख दें। जब गुड़ पिघल जाय, तब खूब पिसा हुआ सेंधव लवण उसमें डाल दें और चम्मच आदि से उसे एक कर दें। जब दोनों खूब घुल-मिल जांय, तब उतार कर दूसरे बर्तन या लकड़ी के चकले पर डाल अंगुली के समान लम्बी बत्तियां बना लें। यदि बत्तियां बनाने में देर होगी तो दवा कड़ी होकर सख्त हो जायगी। बच्चों के लिए बत्तियां बनानी हों, तो कुछ पतली बनावें।

उपयोग—जब पेट फूल रहा हो, अफरा हो, अपान वायु मन्द हो, मलावरोध के कारण बेचैनी और उदरशूल हो तथा तुरन्त दस्त कराने की आवश्यकता हो, तो बत्ती को लेकर उस पर घी चुपड़कर गुदा में अन्दर तक घुसा दें और रोगी को उसे रोके रखकर थोड़ी देर सुला दें। बस कुछ समय बाद ही खुलकर दस्त हो जायगा। यह प्रयोग सैकड़ों बार का परीक्षित है। देखने में दोनों चीजें बहुत साधारण हैं, लेकिन बहुत उपयोगी हैं। एक बार इसका प्रयोग कराने के बाद ग्लिसरीन सपोजिटरी को आप भूल जावेंगे। —वैद्य नवनीतदास वैष्णव द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(१९) मलावरोधहर पिल्स—सकमोनिया २ औंस, जुलाफा चूर्ण १॥ औंस, रूमीमस्तङ्गी १ औंस, साबुन नर्म १ औंस, सत् सोंठ १ औंस कुमारी स्वरस में खरल करके ५-५ रत्ती की गोलियां बना लें।

मात्रा एवं व्यवहार विधि—१-२ गोली तक रात को सोते समय गर्म जल अथवा गर्म दूध के साथ सेवन करावें।

उपयोग—यह गोलियां मलावरोधहर बहुत उत्तम हैं किसी भी एलोपैथिक दस्तावर गोली से अधिक उपयोगी है। —वैद्य इन्द्रदत्त शर्मा द्वारा
धन्वन्तरि अनुभूत योगांक से।

(२०) विरेचन गुटिका—शुद्ध सुहागा, शुद्ध हिंगुल, शुद्ध गन्धक, सोंठ, गोंद कीकर (बबूल) कबीला, तरीबी सफेद, रेवन्द उशारा, जयपाल बीज शुद्ध प्रत्येक १०-१० ग्राम।

विधि—सौंफ के अर्क में खूब घोटकर १/२-१/२ रत्ती की गोली बना लें।

मात्रा—साधारण कब्ज में १ गोली रात को सोते समय दूध या गरम जल से सेवन करावें, यदि अधिक दस्त कराने हों तो ५-६ गोलियां गरम जल से सेवन करानी चाहिये।

उपयोग—मलावरोध के लिये उत्तम गोलियां हैं अनेक बार परीक्षित हैं। —बाबू वीरबान जौहरी द्वारा
अनुभूत योगांक से।

(२१) विरेचन क्वाथ—अञ्जीर २ नग, मुनक्का ५ नग, गुलबनफ्सा ३ ग्राम, गुलाब के फूल ६ ग्राम, सौंफ ६ ग्राम, निशोथ ६ ग्राम, हरड़ का बक्कुल १० ग्राम, सनाय पत्र १० ग्राम, इन्द्रायण की जड़ १० ग्राम, अमलतास का गूदा २० ग्राम, मिश्री २५ ग्राम।

विधि—यह सभी ११ चीजें ४०० ग्राम जल में औटावें। १०० ग्राम शेष रहने पर उतार छानकर पिला वें।

व्यवहार—यह अधिक दस्त नहीं लाता अतः आवश्यकतानुसार ३ दिन तक इसका प्रयोग कराया जा सकता है।

उपयोग—मलावरोधहर बहुत उत्तम क्वाथ है पेट में अधिक खुरचन नहीं करता।

—पं० शालिगराम वैद्यराज द्वारा
अनुभूत योगांक से।

(२२) मलावरोध हर चूर्ण—अजमोद, अजवायन, अनारदाना, अम्लवेंत, आंवला, इमली, कालीमरिच, जवाखार, तज, धनियां, नौसादर, पीपल छोटी, बड़ी इलायची, बहेड़ा, बायविडङ्ग, लवङ्ग, शीतलचीनी, सफेद जीरा, सौफ तथा हरड़ यह २० वस्तुएँ ५०-५० ग्राम, समुद्र नमक, सोंचर नमक, सांभर नमक १००-१०० ग्राम, सेंधवलवण २०० ग्राम, सनायपत्र ३०० ग्राम एवं ईख का सिरका आवश्यकतानुसार।

विधि—सभी २५ वस्तुएँ महीन कूटकर ईख के सिरके की भावना दें और धूप में सुखाकर कपड़े मे छान लें।

मात्रा—३-१० ग्राम तक रात्रि को सोते समय गरम जल के साथ।

उपयोग—इसके सेवन से मलावरोध दूर होता है साधारणतः रात्रि को एक बार लेने से १ दस्त सुबह आता है यदि अधिक दस्त लेने हों तो दिन में २-३ बार तक प्रयोग कराया जा सकता है। यह क्षुधा को भी बढ़ाता है तथा पाचनशक्ति ठीक रखता है।

—वैद्य महावीरप्रसाद मालवीय 'वीर' द्वारा
धन्वन्तरि अनुभूत योगांक से।

(२३) विबन्धहर पानक—गाउजवां २५ ग्राम, गुलबनपसा २० ग्राम, गुलाब फूल २० ग्राम, उन्नाव ३० दाने, लसूड़ा ६० दाने।

विधि—रात्रि को ७५० ग्राम पानी में भिगोकर रखें प्रातः क्वाथ करें और १५ ग्राम पानी शेष रखें। बीदाना ६ ग्राम तथा ईसबगोल २५ ग्राम २५० ग्राम जल में भिगोकर रखें प्रातः खूब मलकर कपड़े में से छान लें इस अवशिष्ट द्रव्य में पूर्वोक्त क्वाथ डाल मलकर पुनः छान लें सम्पूर्ण तरल को निथार कर उसमें उतना ही तुरंजबीन डालकर शर्बत बना लें।

मात्रा—२०-५० ग्राम तक अर्क सौंफ तथा अर्क गाउजवां ५०-५० ग्राम के साथ दें।

उपयोग—यह मलावरोध के लिये अत्युत्तम औषधि है आंतों की रूक्षता को दूर करता है तथा वायु का अनुलोमन होता है।

(२४) शर्बत सनाय—सनाय ७० ग्राम, उन्नाव ३० दाने, आलू बुखारे १५ दाने, गुलाबफूल, गुलबनफसा, गुलगाउजवां, नीलोफर सभी १७॥-१७॥ ग्राम, लसोड़े ६० दाने, कासनी १४ ग्राम, खीरे के बीज २१ ग्राम, तुरंजबीन ७५० ग्राम।

विधि—तुरंजबीन के अतिरिक्त सब द्रव्यों को कूटकर १ किलो जल में रात्रि को भिगो दें प्रातः क्वाथ करें ४०० ग्राम जल शेष रहने पर छानकर निथार लें। ७५० ग्राम तुरंजबीन डालकर गर्म करें और शर्बत तैयार कर लें।

मात्रा—२०-३० ग्राम तक जल, अर्क गाउजवां, अर्क सौफ के साथ।

उपयोग—यह अनुलोमक, सारक, मृदु गुण वाला है इससे कब्ज दूर होती है और इसके सेवन से सुद्दे बाहर निकल जाते हैं।

(२५) कब्जकुठार रस—शंखभस्म तथा नमक पांचों यह दोनों वस्तुएं १००-१०० ग्राम, आक के पत्ते सूखे २०० ग्राम, सज्जीखार सफेद ५० ग्राम इन सबको आक के रस द्वारा टीकरी बनाकर शरावसम्पुट कर गजपुट में अग्नि दें भस्म होने पर उसमें शुद्ध वत्सनाभ, शुद्ध कज्जली दोनों १५-१५ ग्राम, सोंठ, नौसादर पक्का २५-२५ ग्राम, अजवायन साफ २० ग्राम, शुद्ध हींग घृत द्वारा सेकी हुई १० ग्राम, टंकणक्षार, यवक्षार, पीपर छोटी तीनों १०-१० ग्राम, श्वेत मरिच ३० ग्राम, जीरा स्याह १५ ग्राम।

विधि—इन सबको नीबू रस की ४ भावना देकर २॥-२॥ रत्ती की गोलियां बना लें।

मात्रा—१ गोली जल के साथ भोजनोपरान्त या रात्रि को सोते समय दें।

उपयोग—मलावरोध नाशक है मन्दाग्नि, उदरशूल आदि विकारों में भी प्रशस्त है।

—धन्वन्तरि जोलाई १९४१ से।

विशेषांक के लिये प्रेषित विशेष योग—

(२६) हर्षुल रेचन वटी—शुद्ध जिह्वा रहित जयपाल बीजों को १० दिन तक तक्र में डुबोकर रखें, फिर उन्हें निकाल कर, खरल में महीन पीसकर कुम्हार के आवा से निकले हुए कबेलु (खपरों) पर लेप करके सुखावें सूख जाने पर उसे निकालकर औषधि निर्माणार्थ काम में लें। इस प्रकार की शुद्ध जयपाल पिष्टी १ तो०, सफेद जीरा चूर्ण १ तो०, इलायची चूर्ण १ तो०, कुकुम चूर्ण १ तो०, प्रवालपिष्टी १ तो०। समस्त द्रव्यों को खरल में डालकर खूब मर्दन करें, जब सब द्रव्य घुटकर महीन और एक रूप हो जायें तो गोघृत और शहद में सानकर २-२ रत्ती की गोलियां बना लें। बच्चों को चौथाई गोली से ½ गोली, बड़ों को १ गोली से २ गोली। रात को सोते समय ताज़े जल के साथ सेवन करें अथवा सवेरे सेवन करें। दो तीन घण्टे के बाद ही खुलकर मल विसर्जन होगा। इस गोली पर दो तीन घूंट से अधिक पानी नहीं पीना चाहिये। आवश्यकता से अधिक दस्त लगने लगें तो गरम जल, गरम दूध, व गरम चाय पी लेनी चाहिये, तुरन्त ही मल विसर्जन रुक जायगा।

(२७) हर्षुल सुखरेचनी वटी—अमलतास की कच्ची फलियों को कुचलकर तथा बारीक पीसकर छाया में सुखा दो। सूख जाने पर उसे लोहे के खरल में कूटकर कपड़छान कर लो। मृदु सूखा पिसा हुआ गूदा छन जायगा कड़े आवरण का चूरा नहीं छनेगा। उसे फेंक दो। इस प्रकार छाने हुए और बने हुए अमलतास के चूर्ण को शहद और घृत से सानकर १-१ माशे की गोलियां बना लो। रोज रात्रि में सोते समय गरम जल से सेवन करो सवेरे एक स्वाभाविक दस्त खुलकर होगा। कभी-कभी दो भी हो सकते हैं। इस सुखरेचनी को नित्य लेना हानिकर नहीं है प्रत्युत लाभकर है। यह योग अन्य सभी विरेचनों में सुखावह और श्रेष्ठ है।

(२८) मल निष्कासन चूर्ण—हरीतकी ८ भाग, सत्यानाशी पञ्चांग ४ भाग, अजमोद ३ भाग, सौंफ २ भाग, सैन्धव नमक १ भाग सभी औषधि द्रव्यों को एकत्रित करके चूर्ण बना लें।

मात्रा—२४ ग्राम तक गरम जल के साथ सेवन करावें।

उपयोग—यह चूर्ण जीर्ण मलावरोध को दूर करके वायु का अनुलोमन करता है एवं मलावरोधजन्य उदरशूल को दूर करता है।

—डा० भानुप्रताप आर० मिश्रा लोद्रा (महेसाणा)।

[इ] प्रमुख शास्त्रीय योग

क्रमांक	कल्पना	औषधि नाम	ग्रन्थ सन्दर्भ	मात्रा एवं समय	अनुपान	विशेष
१	रस	अश्वकंचुकी रस	र० रा० सु०	१२५–५०० मि० ग्रा० दिन में १ बार	द्राक्षापानक	सौम्य सारक।
२	,,	इच्छाभेदी रस	र० सा० सं०	१२५–२५० मि० ग्रा० दिन में १ बार	शीतल जल	तीव्र विरेचक, शूलघ्न, विषघ्न, कफवात शामक।
३	,,	नाराच रस	भै० र०	,, ,,	त्रिफला घृत	कोष्ठ शोधक।

४	रस	विश्वतापहरण	यो० र०	२५०–५०० मि० ग्रा० दिन में १ बार	अंगूरी शर्बत	कोष्ठ शोधक।
५	,,	रुक्मिश रस	र० सा० सं०	२५० मि०ग्रा० दिन में १ बार	पपीते का शर्बत	,,
६	,,	अग्निकुमार रस	र० र० स०	२५० मि०ग्रा० दिन में २ बार	जल	,,
७	,,	महामृत्युञ्जय रस	र० त० सा०	६० मि० ग्रा० दिन में २ बार	आर्द्रक स्वरस +मधु	वातप्रधानता में कफ, आम का शोषण कर मलशुद्धि करता है।
८	,,	मृद्विरेचन रस	र० चं०	१२५–२५० मि० ग्रा० दिन में २ बार	दुग्ध	मृदु विरेचन प्रयोग।
९	पर्पटी	विजय पर्पटी	,,	२५० मि०ग्रा० दिन में २ बार	मधु	आन्त्र बलदायक।
१०	,,	पंचामृत पर्पटी	र० चि०	,, ,,	आर्द्रक स्वरस +मधु	आन्त्रक्रियासुधारक।
११	वटी	आरोग्यवर्द्धिनी वटी	र० र० स०	१–३ गोली दिन में २ बार	उष्ण जल	दीपन, पाचन, मलशुद्धिकर श्रेष्ठ प्रयोग।
१२	,,	श्रेयसी वटी	सि० भै० मणि०	१–२ गोली दिन में २ बार	,,	,, ,,
१३	,,	अभया वटी	भै० र०	,, ,,	हरीतकी चूर्ण +तण्डुलोदक	,, ,,
१४	,,	मृद्वीकादि वटी	सि० भै० मणि०	२–३ गोली दिन में २ बार	कवोष्ण जल	मृदु विरेचन प्रयोग।
१५	,,	सुखविरेचनी वटी	सि०यो०सं०	१–२ गोली दिन में २ बार	,,	,, ,,
१६	,,	चित्रकादि वटी	चरक०	,, ,,	उष्ण जल	दीपन, पाचन।
१७	,,	शंख वटी	यो० र०	१–४ गोली दिन में २-३ बार	,,	आध्मान, अजीर्ण, विबन्धशूल-शामक।
१८	,,	अग्नितुण्डी वटी	शा० सं०	१–२ गोली दिन में २-३ बार	,,	आन्त्र पुनःसरण क्रिया को नियमित करती है।
१९	लौह	ताप्यादि लौह	च० द०	२५० मि०ग्रा० दिन में २ बार	एरण्डस्नेह	आन्त्र की निर्बलता में उपयोगी है।
२०	,,	नवायस लौह	,,	५०० मि०ग्रा० दिन में २ बार	,,	पाचक, शोधक।
२१	चूर्ण	त्रिफला चूर्ण	चरक०	३–६ ग्राम दिन में २-३ बार	उष्ण जल	कोष्ठशोधक।
२२	,,	पंचसम चूर्ण	शा० सं०	,, ,,	,,	,,
२३	,,	पंचसकार चूर्ण	सि० भै० मणि०	,, ,,	,,	,,
२४	,,	दीनदयालु चूर्ण	,,	,, ,,	,,	,,
२५	,,	तरुणीकुसुमाकर चूर्ण	,,	,, ,,	,,	,,
२६	,,	मंजिष्ठादि चूर्ण	सि०यो०सं०	,, ,,	,,	,,

२७	चूर्ण	अविपत्तिकर चूर्ण	भै० र०	३–६ ग्राम दिन में २-३ वार	उष्ण जल	कोष्ठशोधक ।
२८	,,	मधुकादि चूर्ण	सि०यो०सं०	,, ,,	,,	,,
२९	क्वाथ	तरुण्यादि क्वाथ	,,	१०–२० ग्राम का क्वाथ कर दिन में २ वार	—	,,
३०	,,	सनामुक्यादि क्वाथ	सि० भै० मञ्जू०	,, ,,	—	,,
३१	गुग्गुल	महायोगराज गुग्गुल	शा० सं०	१–२ गोली दिन में २ वार	मृद्वी का पायस	मलावरोधजन्य सैन्द्रिय विष-निवारक ।
३२	,,	सिंहनाद गुग्गुल	च० द०	२–३ गोली दिन में २ वार	अंजीरपायस	,, ,,
३३	,,	त्रिफलादि गुग्गुल	मा० प्र०	,, ,,	,,	,, ,,
३४	आसव–अरिष्ट	अभयारिष्ट	चरक०	१५-२० मि०लि० भोजनोत्तर	समान जल मिलाकर	कोष्ठ शोधन ।
३५	,,	द्राक्षारिष्ट	शा० सं०	,, ,,	,,	,,
३६	,,	कुमार्यासव	सि० भै० मणि०	,, ,,	,,	,,
३७	,,	आवर्तक्यासव	ग० नि०	,, ,,	,,	,,
३८	,,	अष्टशातोऽरिष्ट	चरक०	,, ,,	,,	,,
३९	घृत	कुमारी घृत	सि० भै० मणि०	१० ग्राम दिन में १-२ वार	दुग्ध	,,
४०	,,	विन्दु घृत	च० द०	२–३ बूंद दिन में १-२ वार	,,	,,
४१	,,	दशमूलषट्पल घृत	वृ० मा०	५–१० ग्राम दिन में १-२ वार	,,	,,
४२	,,	नाराच घृत	भै० र०	,, ,,	,,	,,
४३	,,	स्थिराद्य घृत	चरक०	१० ग्राम दिन में २ वार	शुण्ठी क्वाथ	वातशामक, शूलघ्न ।
४४	,,	महानाराच घृत	भै० र०	५–१० ग्राम दिन में २ वार	दुग्ध	तीव्र कोष्ठ शोधक ।
४५	,,	महाविन्दु घृत	,,	२–३ बूंद दिन में २ वार	,,	नाभि के नीचे लेप भी करें।
४६	पाक–लेह	दन्ती हरीतकी	भै० र०	५–१० ग्राम दिन में १-२ वार	जल	तीव्र कोष्ठ शोधक ।
४७	,,	कुंकुमाद्यवलेह	सि० भै० मणि०	१० ग्राम दिन में १-२ वार	कवोष्ण दुग्ध	सौम्य विरेचन ।
४८	,,	अभयादि मोदक	शा० सं०	१०–२० ग्राम दिन में १ वार	जल	चिरकालिक मलावरोध में।
४९	,,	मार्कण्डयादि मोदक	सि० भै० मणि०	१ मोदक सायं	उष्णोदक	

५०	पाक–लेह	त्रिवृतादि मोदक	च० द०	१–२ मोदक दिन में १-२ बार	उष्णोदक	श्लेष्म प्रधान विकृति में सुख-विरेचन।
५१	,,	त्रिवृतादि अवलेह	चरक०	५–६ ग्राम दिन में १-२ बार	,,	,, ,,
५२	वर्ति	त्रिकट्वादि गुदवर्ति	मैं० र०	१ वर्ति में घृत, तैल डालकर	गुदा में भी घृत तैल लगाकर प्रयुक्त करें	मलनिस्सारक, वातानुलोमन।
५३	,,	फलवर्ति	,,	,, ,,	,,	,, ,,

मलावरोध में सामान्य चिकित्सा उपक्रम

सामान्य मलावरोध में स्नेहन, स्वेदन कराने के पश्चात् शोधन कराना चाहिये। आमजन्य मलावरोध में वमन, लंघन तथा पाचन उपयुक्त क्रियायें हैं। जो मलावरोध आन्त्र की रूक्षताजन्य हो उस अवस्था में स्नेहयुक्त प्रयोगों का विशेष महत्व है। जो मलावरोध आन्त्र की मांस पेशियों की दुर्बलता, निस्क्रियताजन्य हो वहां उनमें शक्ति प्रदान करने वाली औषधियों की आवश्यकता होती है। निर्दिष्ट औषधियों के क्वाथ में यदि वाताधिक्य हो तो अम्ल द्रव्य, लवण तैल मिलाकर, यदि पित्ताधिक्य हो तो गोदुग्ध यदि कफाधिक्य हो तो गोमूत्र मिलाकर आस्थापन वस्ति का प्रयोग भी हितावह माना गया है।

मलावरोधनाशक सफल औषधि व्यवस्था-पत्र

(१) नाराच रस १२५ मि० ग्राम, शंखभस्म १२५ मि० ग्राम, अग्नितुण्डी वटी १ गोली। १ मात्रा × मधु से सुबह शाम।

(२) अभयारिष्ट १० मि० लि०, द्राक्षासव १० मि० लि०। दोनों बराबर।

(३) वात प्रकृति रोगी को १०-१५ मि० लि० एरण्डस्नेह कवोष्ण दुग्ध में, पित्त प्रकृति रोगी को २० मि० लि० घृत कवोष्ण दुग्ध में मिलाकर तथा श्लेष्म प्रकृति रोगी को त्रिवृदादि अवलेह ५ ग्राम, कवोष्ण दुग्ध से देना चाहिये।

[ई] प्रमुख पेटेण्ट आयुर्वेदीय योग

क्रमांक	योग का नाम	निर्माता कम्पनी	उपयोग विधि	विशेष
१	हर्बोलैक्स टेबलेट (Herbolex tab.) माइल्ड तथा स्ट्रांग	हिमालय ड्रग	वयस्क—१–३ टेबलेट सोते समय।	
२	रेगुलैक्स टेबलेट माइल्ड तथा स्ट्रांग	चरक	,, ,,	
३	अभयासन टेबलेट	झण्डू	२–४ टेबलेट रात्रि को सोते समय।	स्थायी मलावरोध नाशक हैं, कुछ दिनों तक नियमित प्रयोग कराना चाहिए।

४	जुलाविन टेबलेट	डाबर	२ गोली रात्रि को सोते समय जल से।	
५	कान्स्टीलैक्स (Constilax)	गैम्बर्स लैबो०	२–३ गोली रात्रि को सोते समय।	
६	विरेचनी टेबलेट	बैद्यनाथ	१–२ गोली रात्रि को सोते समय।	
७	तरुणी कुसुमाकर चूर्ण	भजनाश्रम	१–२ ग्राम रात्रि को सोते समय गर्म जल से।	
८	हैपीलैक्स टेबलेट	मोहता रसा०	१–२ गोली रात्रि को गर्म जल से।	
९	सरलभेदी वटी	धन्वन्तरि कार्यालय	,, ,,	
१०	कोष्टबद्धारि वटी	राजवैद्य शीतलप्रसाद	,, ,,	
११	विबन्धहारी कैपसूल	ज्वाला आयु०	१ कैप० रात्रि को सोते समय।	
१२	विरेचन कैपसूल	गर्ग वनौषधि	,, ,,	
१३	त्रिफलावलेह	गर्ग वनौषधि	२–५ ग्राम रात्रि को सोते समय दूध से।	
१४	सनाय सूचीवेध	बुन्देलखण्ड	१–२ मि०लि० आवश्यकतानुसार।	

[उ] प्रमुख पेटेण्ट एलोपैथिक योग

औषधि का नाम	निर्माता	मात्रा एवं व्यवहार-विधि	विशेष
१. टेबलेट			
१. ग्लैक्सीना टेबलेट (Glaxenna tab.)	Glaxo	१–२ टेबलेट × रात को सोते समय, बच्चों को आधी मात्रा।	
२. वैक्युलैक्स टेबलेट (Vaculax tab.)	Nicholas	,, ,,	
३. डल्कोलैक्स टेबलेट (Dulcolex tab.)	G. R.	,, ,,	
४. बॉइकोलेट्स टेबलेट (Bicholates tab)	Martin Haris	,, ,,	
५. जुलेक्स टेबलेट (Julex teb.)	T. C. F.	,, ,,	
६. परस्यूनिड इन टेबलेट (Pursennid in tab)	Sandoz	,, ,,	
७. सेनेड टेबलेट (Senade tab.)	Cipla	,, ,,	

८. डाक्सीडन टेबलेट (Doxidan tab.)	Hoechst	१–२टेबलेट × रात को सोते समय, बच्चों को आधी मात्रा।	
९. कार्बिण्डन स्ट्रॉंग (Carbindan strong)	Indo Pharma	" "	
पेय			
१०. एगारोल (Agarol)	Warner	वयस्क : ½–१ बड़ी चम्मच रात्रि को सोते समय। बच्चों को : ½ छोटी चम्मच सोते समय।	इसका Agarol M भी आता है जो गर्भावस्था में होने वाले मलावरोध में विशेष उपयोगी है।
११. क्रीमेफिन टेबलेट (Cremaffin tab.)	Boots	" "	
१२. फिलिप्स मिल्क आफ मैग्नेशिया (Philips Milk of Magnesia)	Dey's	" "	
१३. बी० आई० अगर ऑइल (B. I. Agar Oil)	B. I.	१ चम्मच × दिन में २ बार।	
१४. पेट्रो लेंगर (Petro langer)	John wyeth	" "	
१५. आइसोजेल ग्रेन्यूल्स (Iso-Gel)	Glaxo	१–२ चम्मच पानी में घोलकर खाना खाने के बाद दोनों समय।	
१७. एवाक्यूल ग्रेन्यूल्स (Evacuol Granules)	Griffon	" "	

मलेरिया (विषम ज्वर) (MALERIA)

[अ] एकौषधि एवं साधारण प्रयोग

(१) अतीस के ४ भाग चूर्ण में १ भाग कालीमरिच का चूर्ण मिलाकर पानी के साथ खूब खरल कर चना के बराबर गोली बना छाया में सुखा लें। ज्वर चढ़ने के २ घण्टे पूर्व आध-आध घण्टे से ३ गोलियां पानी के साथ खिला दें, विषमज्वर रुक जायगा। यदि ज्वर न रुके तो इसी प्रकार २-३ दिन और देवें। ज्वर हट जाने पर भी ८-१० दिन तक देने से ज्वरांश निकल जाता है।

(२) अतीस का चूर्ण तथा फिटकरी का फूला २५-२५ ग्राम तथा शुद्ध गेरू १० ग्राम तीनों का कपड़छन महीन चूर्ण कर लें। पारी से आने वाले ज्वर के ४ घण्टे पूर्व १-१ घण्टे से १।। ग्राम की मात्रा में गुनगुने जल से सेवन कराने से ज्वर नहीं आता।

(३) अरनी के पत्र १५ नग तथा कालीमरिच ९ नग दोनों को महीन पीस चने के बराबर गोलियां बनाकर १-१ गोली प्रातः, सायं उष्णोदक से ज्वर चढ़ने के पूर्व ४ बार देने से मलेरिया ज्वर ठीक हो जाता है।

(४) इन्द्रायण के पत्ते २ भाग के साथ नीमपत्र, तुलसीपत्र तथा करञ्जपत्र तीनों १-१ भाग लेकर इन सबको गूमापत्र या पञ्चाङ्ग के अर्क में पीस मटर जैसी गोलियां बना लें। विषम ज्वर से पूर्व १ से ३ गोली तक उष्ण जल के साथ देने में २-१ दिन में विषम ज्वर ठीक हो जाता है।

(५) ईसरमूल के ताजे पत्र ५० ग्राम, कालीमरिच, फिटकरी कच्ची २०-२० ग्राम तथा श्वेत जीरा १० ग्राम; सबके महीन चूर्ण को इसके स्वरस की भावना देकर चना जैसी गोलियां बना लें। विषम ज्वर के ३ घण्टा पूर्व १ गोली पानी के साथ सेवन करावें। इस प्रकार प्रत्येक १ घण्टे के बाद ३ गोली तक सेवन करावें, तो २-३ दिन में मलेरिया ज्वर नष्ट हो जाता है।

(६) विषम ज्वर के वेग के ६ घण्टे पूर्व २-२ घण्टे पर ईसरमूल तथा तगर का फाण्ट पिलाते रहने से लाभ हो जाता है। यदि ज्वर आ जाय, तो दूसरी पारी में चला जाता है। यह औषधि बढ़े हुये ज्वर में भी दी जा सकती है। यह क्विनीन के समान हानि नहीं करती।

(७) गोदन्ती हरताल ५० ग्राम को ईसरमूल लुगदी में रखकर कण्डों की आग में फूंक दें। स्वांगशीतल होने पर पुनः उसके स्वरस में घोटकर टिकिया बना पुनः ही ५ किलो उपलों में फूंक दें। इसी प्रकार २ और भावना देकर रख लें। यह उत्तम ज्वरहारी भस्म तैयार हो जाती है। इसकी १-३ रत्ती तक की मात्रा ज्वर आने से पूर्व २-३ बार देने से मलेरिया ज्वर चला जाता है।

—वनौषधि विशेषांक भाग १ से।

(८) कटकरञ्ज के बीजों की गिरी को धूप में सुखाकर महीन चूर्ण कर लें। फिर इसमें चौथाई भाग छोटी पीपल का चूर्ण मिला शहद के साथ खूब खरल कर ६-६ रत्ती की गोलियां बना लें। विषम ज्वर में दिन में २ या ३ बार जल के साथ सेवन कराने से लाभ हो जाता है। ज्वर के उतरने के बाद इसका प्रयोग कराना चाहिए, खाली पेट इसका प्रयोग नहीं कराना चाहिए।

(९) करञ्ज की गिरी तथा काली मरिच सममाग का चूर्ण ८-१५ रत्ती तक की मात्रा में दिन में २ बार जल के साथ सेवन कराने से पारी से आने वाला ज्वर दूर हो जाता है। साधारण ज्वर में भी लाभदायक है।

(१०) करञ्ज की गिरी भुनी हुई २० ग्राम के साथ छोटी पीपल २० ग्राम, जीरा ६ ग्राम तथा बबूल के कोमल पत्ते ६ ग्राम को खूब खरल कर थोड़ा शहद या जल मिला चने के बराबर गोलियां बना लें। ज्वर आने के १ घण्टा पूर्व २ गोली जल के साथ दिन में २-३ बार देने से ३-४ दिन में मलेरिया ज्वर ठीक हो जाता है।

(११) कनेर की जड़ की छाल का चूर्ण ½ रत्ती दिन में ३-४ बार सुखोष्ण जल के साथ देने से पारी से आने

वाला ज्वर रुक जाता है, चढ़े ज्वर को पसीना लाकर उतार देता है।

(१२) मलेरिया ज्वर में कालमेघ के घनसत्व में समभाग काली मरिच का चूर्ण मिला अच्छी तरह खरल कर २-२ रत्ती की गोलियां बना ज्वर के पूर्व देते रहने से लाभ हो जाता है।

(१३) कालमेघ की जड़ २५ ग्राम, काली मरिच १५ ग्राम तथा शुद्ध वच्छनाग ३ ग्राम; इनके महीन चूर्ण को कालमेघ के ही पत्ररस में या जड़ के क्वाथ से ५ घण्टे खरल कर १-१ रत्ती की गोलियां बना रख लें। २-४ गोली सुखोष्ण जल के साथ दिन में ३ बार सेवन कराने से विषम ज्वर में लाभ हो जाता है।

(१४) कालमेघ के पञ्चाङ्ग को कूटकर स्वरस निचोड़ अलग रखें। निचोड़ने पर जो छूंछा रह जाय, उसमें चार गुना जल मिलाकर चतुर्थांश क्वाथ सिद्ध कर छान लें। फिर इस क्वाथ में उक्त स्वरस मिला धीमी अग्नि पर पकावें। गाढ़ा होने पर उसमें ½ भाग काली मरिच चूर्ण मिलाकर चने जैसी गोलियां बना लें। १-२ गोली जल से ज्वर के पूर्व २-२ घण्टे से देने से विषम ज्वर में लाभ हो जाता है।

(१५) कालमेघ के पंचांग के साथ सप्तपर्ण की छाल तथा सुदर्शन चूर्ण समभाग लेकर अष्टगुण जल में अष्टमांश क्वाथ सिद्ध कर ठण्डा होने पर छानकर समभाग उत्तम शहद मिलाकर १५ दिन तक सन्धान कर रखें फिर छानकर काम में लावें। १०-३० बूंद तक ४० ग्राम जल के साथ ज्वर के पूर्व ४-४ घण्टे बाद दिन में ४-५ बार सेवन करने से हर प्रकार के विषमज्वर में लाभ हो जाता है।

(१६) कालीमरिच के ५ दाने, अजवायन १ ग्राम तथा हरी गिलोय १० ग्राम सबको १०० ग्राम पानी में पीस छानकर पिलाने से विषमज्वर में लाभ हो जाता है।

(१७) कुटकी के ६ ग्राम चूर्ण को ५० ग्राम उबलते हुये जल में मिलाकर २० मिनट बाद छानकर उसमें ६ ग्राम शक्कर मिलाकर दिन में २-३ बार पिलाने से ३-४ दिन में उदर-विकार सहित विषमज्वर ठीक हो जाता है।

(१८) कुटकी, गिलोय तथा श्वेत पुनर्नवा ४-४ ग्राम, दारुहरिद्रा १२ ग्राम आधा किलो पानी में औटाकर चतुर्थांश रहने पर ६ ग्राम मधु मिलाकर कुछ दिन तक नियमित देते रहने से जीर्ण विषमज्वर (जो कुनैन देने के बाद भी बना रहता है तथा प्लीहा बढ़ जाती है) में लाभ हो जाता है, जीर्णज्वर के कारण होने वाले अन्य विकारों यथा क्षुधानाश, पाण्डु, शोथ, मलावरोध आदि विकार भी दूर हो जाते हैं।

(१९) खजूर के बीजों के साथ अपामार्ग मूल को जल में खूब महीन पीसकर बीड़े के पान में चूने के स्थान पर इसे ४ रत्ती तक लगाकर कत्था, सुपारी, लौंग इलायची आदि डालकर ऐसे तीन बीड़े तैयार करें। शीतज्वर चढ़ने के पूर्व १-१ घण्टे से १-१ बीड़ा खिलावें। ऐसा २ दिन करने से विषमज्वर नष्ट हो जाता है।

(२०) पित्त प्रकोपजन्य या पित्त प्रधान प्रकृति वाले को होने वाले विषमज्वर पर जबकि क्विनाइन के प्रयोग से रक्तवृद्धि, निद्रानाश आदि उपद्रव पैदा हों तो गिलोयसत्व की ४-४ रत्ती की मात्रा बनफशा शर्बत या शहद के साथ दिन में ३ बार सेवन कराने से लाभ होता है इस प्रयोग में यदि मुक्तापिष्टी १ रत्ती तथा प्रवालपिष्टी २ रत्ती मिलाकर देने से विशेष प्रभाव देखने को मिलता है।

(२१) द्रोणपुष्पी (गूमा) के पत्ररस २०० ग्राम में पित्तपापड़ा तथा नागरमोथा चूर्ण १०-१० ग्राम तथा चिरायता चूर्ण २० ग्राम को एकत्र घोटकर १-१ ग्राम की गोलियां बनाकर रख लें। १-१ गोली ज्वर आने से पूर्व २-३ बार देने से मलेरिया में लाभ हो जाता है। ज्वरों में भी लाभदायक है।

(२२) गूमा के पत्र-स्वरस में फिटकरी का फूला ६ ग्राम व कालीमरिच १० ग्राम खरल कर चना जैसी गोलियां बनाकर १ से ३ गोली गरम जल के साथ देने से विषमज्वर में लाभ होता है।

(२३) गोरखइमली की छाल का चूर्ण २५ ग्राम को ७५० ग्राम जल में मिलाकर चतुर्थांश क्वाथ सिद्ध कर इसकी ३-३ मात्रायें बनाकर २-२ घण्टे से पिलाने से विषमज्वर में लाभ होता है।

(२४) चम्पा की छाल २५ ग्राम जौकुट कर १ किलो पानी में पकावें आधा शेष रहने पर छानकर इसे ज्वर के पूर्व ५०-७० ग्राम तक पिलावें इस प्रकार २-२ घण्टे से देने पर नियतकालिक मियादी ज्वर नष्ट हो जाता है।

(२५) विशेषतः प्लीहा एवं यकृत् की वृद्धि के कारण मलेरिया का प्रकोप बार-बार होता हो तो चित्रकमूल को त्रिकटु चूर्ण के साथ लगातार कुछ दिन तक सेवन कराने से लाभ हो जाता है।

(२६) जीर्ण विषमज्वर में जबकि अजीर्ण, अग्निमांद्य की विशेषता हो और ज्वर सदैव बना रहता हो तब चिरायते के फाण्ट का प्रयोग कराने से विशेष लाभ होता है इसका ज्वरघ्न गुण अति मृदु है इसलिये अधिक समय तक इसका प्रयोग कराना चाहिये।

(२७) विशेषतः सतत् विषमज्वर जिसमें ज्वर एक समान दिन रात बना रहता हो कई दिन तक रोगी ज्वर से सन्तप्त हो ज्वर कभी उतरता न हो तो सप्तपर्ण की छाल के साथ गिलोय, अडूसापत्र, पटोलपत्र, नागरमोथा, भोजपत्र, खैर की छाल तथा नीम की अन्तरछाल सममाग जौकुट कर ४० ग्राम जौकुट को ६४० ग्राम पानी में अष्टमांश क्वाथ सिद्ध कर छानकर प्रातःकाल पिलावें या इसकी ३ मात्रा कर दिन में २-३ बार पिलाने से शीघ्र ही ज्वर उतर जाता है अथवा इसकी छाल का क्वाथ या फाण्ट दिन में २-३ बार पिलाने से ज्वर शनैः-शनैः उतर जाता है। अन्येशुष्क आदि विषमज्वरों में भी यह लाभकारी है।

(२८) डीकामाली या नाड़ीहिंगु ½-१ ग्राम तक जल के साथ दिन में ३ बार ३-४ दिन तक बराबर देते रहने से अथवा इसका फाण्ट देने से नियतकालिक ज्वर में लाभ हो जाता है।

(२९) तुलसी के ताजे हरे पत्तों में उनकी तोल से अर्धभाग कालीमरिच का चूर्ण मिलाकर खूब खरल कर छोटे बेर जैसी गोलियां बनाकर छाया में सुखाकर २-२ गोलियां ३-३ घण्टे से देने पर मलेरिया ज्वर में लाभ हो जाता है।

(३०) तुलसी के छायाशुष्क पत्रों को मन्द अग्नि पर तवे पर थोड़ा भूनकर चूर्ण कर लें ३-६ ग्राम तक की मात्रा में छोटी इलायची के दाने, दालचीनी, लवङ्ग तथा मुलहठी का चूर्ण ३-३ रत्ती मिलाकर (यह १ मात्रा है) १०० ग्राम उबलते हुए पानी में छोड़कर २ मिनट बाद उतार कर ५ मिनट बाद छानकर उसमें दूध शक्कर मिलाकर पिलाने से मलेरिया तथा उसके उपद्रवों में लाभ हो जाता है।

(३१) यदि विषमज्वर में वात प्रधान हो और शीत या कम्प के साथ ज्वर का वेग हो तो काली तुलसी के पत्र ६० ग्राम, कालीमरिच, धत्तूरमूल की छाल तथा आक के मूल की छाल का चूर्ण १०-१० ग्राम। सबको एकत्र पानी के साथ पीसकर मटर जैसी गोलियां बना लें वय तथा अवस्था के अनुसार ज्वर के ३ घण्टे पूर्व १-१ घण्टे के अन्तर से देने पर लाभ हो जाता है।

(३२) दारुहल्दी की जड़ का जौकुट चूर्ण १५० ग्राम को १ किलो जल में अर्धावशिष्ट क्वाथ सिद्ध कर छानकर २५-५० ग्राम तक की मात्रा में देकर रोगी को ढांककर सुला देने से प्रस्वेद आकर ज्वर उतर जाता है ज्वर के पूर्व देने से ज्वर चढ़ने नहीं पाता। संतत या सतत ज्वर की अवस्था में इस क्वाथ के सेवन से ज्वर उतर-उतर कर आने लगता है। इसे २५ ग्राम की मात्रा में २-२ घण्टे के अन्तर से ज्वर की बारी के दिन देने से बहुत पसीना आकर ज्वर टूट जाता है।

(३३) विषमज्वर के प्रायः सर्व प्रकारों में रसोत की २-२ रत्ती की ४ गोलियां जल के साथ दिन में ३ बार देने से लाभ होता है।

(३४) दुद्धी ताजी ३० ग्राम, कालीमरिच व छोटी पीपल १०-१० ग्राम तीनों को महीन पीसकर दुद्धी के स्वरस में घोटकर मिर्च जैसी गोलियां बना लें। १ गोली ज्वर से २ घण्टा पूर्व जल या शहद से खिलावें फिर १ घण्टा बाद १ गोली और दें मलेरिया ज्वर निश्चित रूप से रुक जाता है।

(३५) धत्तूरपत्र को २ इञ्च तक चौकोर काटकर पान में रखकर खिला देने से मलेरिया में लाभ हो जाता है किन्तु जब तक पारी का समय न टल जाय रोगी को कुछ भी सेवन नहीं कराना चाहिये।

(३६) धत्तूर की २।। नग कोपलों को गुड़ में लपेट कर गोली बनाकर मलेरिया के रोगी को खिलाने से लाभ हो जाता है।

(३७) धत्तूरपत्र स्वरस जब घोटते-घोटते गोली बनाने लायक हो जाय तो ½-½ रत्ती की गोलियां बनाकर रख लें। ज्वर वेग के २ घण्टा पूर्व २ गोलियां पानी के साथ खिलावें यदि ज्वर आने से पूर्व १-१ घण्टे से १-१ गोली दी जाय तो सम्भव है प्रथम दिन ही ज्वर रुक जाय अन्यथा दूसरे दिन अवश्य रुक जाता है दूसरे दिन थोड़ा रेचन देकर गोलियों का सेवन कराना चाहिये।

(३८) धत्तूरपत्र २० ग्राम के साथ कालीमरिच का चूर्ण ८० ग्राम मिलाकर गोंदकतीरे के पानी से अच्छी तरह खरल करके ½-१ रत्ती तक की गोलियां बनाकर छायाशुष्क कर लें, दिन में तीन बार १-१ गोली ठण्डे जल से देने से जीर्ण विषमज्वर के रोगियों में भी लाभ हो जाता है।

(३९) धत्तूरपत्र तथा बंगलापान देशी १०-१० ग्राम तथा पिप्पली छोटी १० ग्राम सबको खूब खरल कर १-१ रत्ती की गोलियां बनाकर रख लें। ज्वरवेग से ६ घण्टा पूर्व १-१ गोली डेढ़-डेढ़ घण्टे के अन्तर से पानी के साथ देने से जाड़ा देकर होने वाला मलेरिया ज्वर निःसन्देह नष्ट हो जाता है।

(४०) धत्तूरबीज ६० ग्राम, रेवन्दचीनी ४० ग्राम, सोंठ २० ग्राम, बबूल गोंद २० ग्राम घोटकर मूंग जैसी गोलियां बना लें १-२ गोली ज्वर से २ घण्टा पूर्व देने से मलेरिया का वेग रुक जाता है।

(४१) आवश्यकतानुसार धतूरे के फलों को लेकर मटकी में रख शराव-सम्पुट एवं कपरौटी कर १०-१२ किलो उपलों की आग में जलावें। शीतल होने पर भस्म को पीसकर शीशी में भर लें। ज्वर वेग के १ घण्टा पूर्व २-३ रत्ती तक की मात्रा में आयु के अनुसार न्यूनाधिक पान में रखकर या पानी के घूंट के साथ सेवन करा दें, तो मलेरिया ज्वर रुक जायगा। यदि पहले दिन ज्वर न रुके, तो दूसरे दिन भी दें, ज्वर अवश्य रुक जावेगा।

—वनौषधि विशेषांक भाग २ से।

(४२) विषम ज्वर में ज्वर चढ़ने के ५-५ घण्टे पूर्व निर्गुण्डी के ५ ग्राम हरे ताजे पत्रों को हाथों से खूब मलकर कपड़े में बांध पोटली बना लें और रोगी को बार-बार इस पोटली को सुंघाने से तथा उसके रस की २-४ बूंद नाक में टपकाने से लाभ हो जाता है।

(४३) जाड़ा लगकर आने वाले शीत ज्वर में खाने का चूना १० ग्राम तथा जल २५ ग्राम शीशी में या किसी कांच के पात्र में डालकर ऊपर से एक नींबू का रस मिलावें। चूना नीचे बैठ जाने पर ऊपर का जल धीरे-धीरे निथार-छानकर ज्वर आने से १ घण्टा पूर्व यह मात्रा रोगी को पिलाने से लाभ हो जाता है।

(४४) मलेरिया ज्वर आने से १ या १।। घण्टा पूर्व एक नींबू चीर उसके एक टुकड़े पर काली मरिच, सैंधा नमक तथा फिटकरी का फूला समभाग मिला तीनों का चूर्ण लगभग ४-४ रत्ती बुरक आग पर थोड़ा गर्म करके चुसाने से तथा आधा घण्टे बाद दूसरे टुकड़े पर उक्त प्रकार से बुरक कर चुसाने से ज्वर उसी दिन निकल जाता है, अन्यथा दूसरे दिन फिर उसी प्रकार चुसावें। मलेरिया ज्वर के लिए बहुत गुणकारी औषधि है।

(४५) एक बड़े कागजी नींबू के ४-५ टुकड़े कर मिट्टी के पात्र में ३ गिलास पानी के साथ इन टुकड़ों को डाल मन्दाग्नि पर पकावें। एक गिलास पानी शेष रहने पर उतार-छान ठण्डा कर ज्वर आने के पूर्व पिलाने से मलेरिया ज्वर का वेग रुक जाता है, बहुत उत्तम योग है।

(४६) नीमपत्र १०० ग्राम, सोंठ, मरिच, पीपल, हरड़, बहेड़ा, आंवला, कालानमक, बिडनमक, सैंधवनमक प्रत्येक १०-१० ग्राम, यवक्षार २० ग्राम तथा अजवायन ५० ग्राम; इन सबका महीन चूर्ण करें। १ से ३ ग्राम तक जलादि अनुपान से लेने से इकतारा, तिजारी, चौथैया आदि नियम ज्वरों में लाभ हो जाता है। प्रतिदिन मलेरिया के दिनों में क्विनाइन की तरह १ मात्रा पानी के साथ लेने से ज्वर का निरोध होता है।

(४७) नीमपत्र तथा कचनार छाल का समभाग महीन चूर्ण कर ज्वर आने के पूर्व १ या २ ग्राम जल से लेने से ज्वर का वेग रुक जावेगा और उसकी कम्पन

रुक जायगी। २-३ बार के प्रयोग से यह योग मलेरिया ज्वर मे परम लाभदायक है।

(४८) नीम के कोमल पत्तों के साथ अर्धभाग फिटकरी भस्म मिला खरल कर ४-४ रत्ती की गोलियां बना रखें। १-१ गोली मिश्री के शर्वत के साथ लेने से मलेरिया ज्वर मे अति लाभ होता है।

(४९) २० ग्राम नीम की जड़ की अन्तर्छाल को जोकुट कर १६० ग्राम जल मिला मटकी में रातभर भिगोकर प्रातःकाल पकावें। ४० ग्राम जल शेष रहने पर छानकर सुखोष्ण पिलादें। इसी प्रकार रात्रि में एक बार और पिलावें या जड की अन्तर्छाल ५० ग्राम जोकुट कर ६०० ग्राम जल मे १८ मिनट तक उबालकर छान लें। मलेरिया ज्वर मे जब किसी औषधि से लाभ न हो तो इस फाण्ट को ४०-८० ग्राम तक ज्वर चढ़ने से पूर्व २-३ बार पिलाने से ज्वर रुक जाता है। जिन्हें क्विनीन अनुकूल नही पड़ती उन्हे यह प्रयोग लाभदायक है।

(५०) नीम की अन्तर्छाल, कुटकी या कालीमरिच तथा चिरायते समभाग के साथ बनाया हुआ फाण्ट विषम ज्वर की सभी अवस्थाओं में गुणकारी है। ज्वरवेग के पूर्व २-२ घण्टे के अन्तर से ३ बार देकर वेग का समय निकल जाने के बाद भी एक बार देना चाहिए।

(५१) महानिम्ब की छाल, धमासा दोनों १०-१० ग्राम तथा कासनी के बीज १० दाने सभी को एकत्र जोकुट कर ५०-१०० ग्राम तक पानी मे भिगोकर ज्वर में जाड़ा लगने के समय ही अच्छी तरह हाथ से खूब मसल-छान कर पिला देवें। यह ज्वर २ खुराक देने से बन्द हो जाता है।

(५२) वच तथा चिरायते का चूर्ण समभाग लेकर १-१॥ ग्राम तक की मात्रा मे दिन मे ३ बार शहद के साथ वच व हरड़ का चूर्ण घृत मे मिलाकर आग पर डाल रोगी को वस्त्रों को ओढ़ाकर धूप देने से मलेरिया में लाभ हो जाता है। —वनौषधि विशेषांक भाग ४ से।

(५३) गिलोय, कुटकी, नीम की छाल, धनियां, पटोलपत्र, पित्तपापड़ा, सनाय तथा बड़ी हरड़ प्रत्येक ४-४ ग्राम लेकर सबको एकत्र कूट आधा किलो जल में पकावें। जब १२५ ग्राम जल शेष रहे, तब उतारकर छान लें। इस क्वाथ को निवाया-निवाया २-२ घण्टे में ३ बार सेवन कराने से सब तरह के विषम ज्वर नष्ट हो जाते हैं।

(५४) फिटकरी को भूनकर उसके बराबर मिश्री मिला १-२ ग्राम तक खिलाने से तिजारी ज्वर चला जाता है।

(५५) अफीम १ ग्राम, कालीमरिच २ ग्राम तथा बबूल का कोयला ६ ग्राम इन सबको महीन पीसकर १ ग्राम या कम-अधिक चूर्ण ज्वर आने से १॥-२ घण्टे पूर्व खिलाने से तिजारी ज्वर दूर हो जाता है। दवा खाने से ६-७ घण्टे बाद खाने को देना चाहिए।

—चिकित्सा चन्द्रोदय भाग १ से।

(५६) करञ्ज बीज मज्जा २ ग्राम तथा रक्तमरिच त्वक् चूर्ण १ ग्राम ऐसी आठ मात्राएं बना लें। चातुर्थिक विषम ज्वर में जिस दिन ज्वर आया हो, उस दिन रात्रि को १ मात्रा सूर्यास्त के ३ घण्टे पश्चात्, रात को ६ से १० बजे तक १ मात्रा सूर्योदय से ३ घण्टे पूर्व यानी प्रातः ४-५ बजे तक जल से देवें। इसी प्रकार दूसरी, तीसरी तथा चौथी रात्रि को देवें। ४ दिन में ८ मात्राएं देने से हठीले से हठीला चातुर्थिक विषम ज्वर दूर हो जाता है।

—कविराज अभयचन्द्र सोरठी द्वारा धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(५७) गोदन्ती हरताल तथा हीराकसीस दोनों समभाग लेकर नीम तथा निम्बू के स्वरस में घोट ५ पुट दें। १-४ रत्ती तक शर्वत बनफ्सा से दें। यह योग विषम ज्वरों मे रामबाण का काम करता है। इसे दिन में ४-५ बार हर तीन घण्टे बाद प्रयोग करावें। औषधि प्रयोग से पहले गुलकन्द आदि का प्रयोग कराकर पेट साफ कर लेना चाहिए। —पं० प्रकाशचन्द्र जी वैद्य द्वारा धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(५८) सप्तपर्ण त्वक्, करञ्ज, हुलहुल तथा गिलोय प्रत्येक समभाग लें। सबसे चौगुने जल में २ दिन तक भिगोकर रखें। पश्चात् खूब मलकर औषधि फेंक दें और महीन वस्त्र में छानकर एक पहर पड़ा रहने दें। पश्चात् निथरा हुआ पानी धीरे-धीरे गिरा दें, नीचे श्वेत सत्व मिलता है, इसे यत्नपूर्वक रख लें। १ ग्राम जल से यह

सेवन कराने से मलेरिया में लाभ हो जाता है। क्विनीन के समान गुणकारी है।

—छत्रधारीलाल वैद्य-विशारद द्वारा धन्वन्तरि सिद्ध योगांक से।

(५९) करेले का अर्क १० ग्राम, निबौली की मिंगी २० ग्राम, कालीमरिच ८ ग्राम तथा मनःशिला शुद्ध ४ ग्राम, सबको पीसकर चना बराबर गोलियां बना लें। ज्वर जिस समय आता हो, उससे ३ घण्टा पहले गर्म जल के साथ १ गोली २ घण्टा पहले और १ गोली १ घण्टा पहले, इस प्रकार घण्टे-घण्टे भर बाद गोलियां ज्वर आने से पहले तक ही दे दें तो मलेरिया ज्वर चला जाता है।

—वैद्य श्री तलफीचन्द बाबूराम जी जैन द्वारा धन्वन्तरि जून १९३३ से।

(६०) बीज धतूरा १० ग्राम, सोंठ १० ग्राम, कीकर गोंद १० ग्राम, रेवन्द चीनी १० ग्राम को जल में बारीक पीसकर १-१ रत्ती की गोलियां बना लें। १ गोली ज्वर आने से ३ घण्टे पहले, १ गोली २ घण्टे पहले तथा १ घण्टे पहले जल के साथ देने से मलेरिया ज्वर से छुटकारा मिल जाता है। —पं० शालिगराम जी द्वारा धन्वन्तरि जौलाई १९३१ से।

(६१) सप्तपर्ण की छाल कूटकर चौगुने पानी में औटावें। जब चतुर्थांश जल जावे, तब उसे उतार छानकर फिर पकावें। जब गाढ़ा हो जावे, तब उसे उतार कर सुखा लें और २-२ रत्ती की गोलियां बना लें। ज्वर आने के ३ घण्टे पहले १ गोली, २ घण्टे पहले १ गोली तथा १ घण्टे पहले १ गोली दूध के साथ देने से मलेरिया में लाभ हो जाता है। —कविराज बालकराम शुक्ल द्वारा अनुभूत योगांक से।

(६२) गिलोयसत्व, वंशलोचन, इलायची दाना, कांजा मिंगी, इन्द्र जौ प्रत्येक ५०-५० ग्राम, सैकरीन ११। ग्राम, सबको कूट महीन छानकर गूमा के रस तथा तुलसी स्वरस की २ भावना दें और ४-४ रत्ती की गोलियां बना लें। रोगी को १ गोली से ४ गोली तक बलाबल तथा आयु के अनुसार जल से देने से मलेरिया ज्वर में लाभ हो जाता है।

(६३) कटेरी, सोंठ, धनियां, गिलोय, चिरायता, नागरमोथा, पद्माख, लाल चन्दन, पटोलपत्र, पुष्करमूल, पित्तपापड़ा, नीम की छाल का समभाग क्वाथ ज्वर आने से १-२ घण्टा पूर्व पीने से मलेरिया ज्वर नहीं आता। जीर्ण ज्वर में भी लाभदायक योग है।

(६४) मीठे तेलिया की भस्म १० ग्राम, पीपल का चूर्ण १० ग्राम, इन दोनों को चौगुने आर्द्रक के रस में घोटकर मोंठ के बराबर गोली बना लें। १-३ गोली तक ठण्डे जल या अन्य किसी अनुपान से दे सकते हैं। इससे सब प्रकार के जाड़े के ज्वर १-६ दिन के भीतर जड़ से निर्मूल हो जाते हैं। —पं० सत्येश्वरानन्द जी शर्मा द्वारा धन्वन्तरि अनुभूत योगांक से।

(६५) काली तुलसी के पत्तों का रस ६ ग्राम, मधु १० ग्राम, दुग्ध ३० ग्राम, दही ३० ग्राम, कालीमरिच का चूर्ण ३ रत्ती, सबको मिलाकर ज्वर आने के पूर्व से १-१ घण्टे पर ३ मात्रा देने से शीतज्वर (मलेरिया) दूर हो जाता है। —श्रीमती राजवैद्या गंगादेवी द्वारा धन्वन्तरि अक्टूबर १९३१ से।

(६६) सैंधा नमक लेकर लोहे के बर्तन में तब तक भूनें, जब तक लाल हो जाय। ठण्डा होने पर ½ किलो जल में एक चम्मच यह नमक घोलें। यह एक मात्रा है, ज्वर आने से पहले ३ मात्रा दें, ज्वर रुक जावेगा। लेकिन रोगी को २ दिन तक भोजन न दिया जाय, केवल दूध मात्र ही दें। —कविराज पं० रामाधार द्विवेदी द्वारा गुप्त सिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(६७) कुटकी ५० ग्राम, लाल फिटकरी का फूला १० ग्राम, काले मुनक्का बीजरहित १०० ग्राम लेकर; पहले कुटकी को पृथक् कूट-पीसकर कपड़े में छान लें और खरल में फिटकरी को पीसकर उसमें कुटकी का चूर्ण मिला दें। फिर बीज निकाला मुनक्का मिलाकर एक दिन कूटें और झड़बेरी के बराबर गोली बना छाया में सुखा लें। २-४ गोली तक दिन में ३ बार जल के साथ सेवन कराने से मलेरिया ज्वर के विभिन्न प्रकारों में लाभ हो जाता है। —पं० सुन्दरलाल जैन द्वारा गुप्त सिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(६८) कालमेघ स्वरस ४०० ग्राम, मधु ६०० ग्राम, पिप्पली चूर्ण २५ ग्राम, मरिच चूर्ण २५ ग्राम लें। पहले कालमेघ का स्वरस निकाल छानकर अन्य चीजें मिला कर रख लें। १ औंस की मात्रा बराबर पानी मिला दिन में २ बार लेने से नवीन तथा पुरातन मलेरिया में लाभ हो जाता है। —पं० नागरदत्त शर्मा द्वारा

गुप्त सिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(६९) नौसादर देशी २०० ग्राम को पहले केले के रस की १ भावना दें। फिर सूखने पर मकोय के रस तथा गिलोय के रस की १-१ भावना दें। तत्पश्चात् टिकिया बनाकर डमरू यन्त्र से इसका जौहर उड़ा लें। विषम ज्वर का जब वेग हो, बुखार १०३ या १०४ या इसके ऊपर हो जावे, तो १-१ घण्टे के अन्तर से २ मात्रा दे देवें। ज्वर तुरन्त कम हो जाता है और रोगी को चैन पड़ जाता है। वैद्य महानुभावों को चाहिए कि इस योग को विषम ज्वर में ही बरतें, अन्य ज्वरों में नहीं।

—पं० विद्याधर शर्मा द्वारा

गुप्त सिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(७०) सुदर्शन चूर्ण की सम्पूर्ण ओषधियां १०-१० ग्राम, कड़वा चिरायता कुल औषधियों का आधा ले लें और दोनों को मिला यवकुट कर लें। कुल के आधे भाग को ४ किलो जल में भिगो दें और दूसरे दिन अष्टावशेष क्वाथ बना लें। इसे छानकर पृथक् रख दें। अब दूसरे उपर्युक्त भाग को बारीक चूर्ण कर लें तथा उक्त क्वाथ की ३ भावनायें दें। गोदन्ती हरताल भस्म २५ ग्राम इसी में मिलाकर घोटें तथा १-१ ग्राम की गोलियां बना लें। ज्वर चढ़ने के ५-६ घण्टे पूर्व से ही १-१ गोली शीतल जल के साथ २-२ घण्टे के अन्तर से २ गोलियां दें। ज्वर का वेग न होने पर भी ४-५ दिन प्रातः-सायंकाल १-१ गोली शीतल जल से सेवन कराने से १-२ दिन में ही मलेरिया का वेग रुक जाता है तथा ४-५ दिन और लेने से ज्वरांश भी निकल जाता है तथा पुनरागमन का भय नहीं रहता। —डा० देवेन्द्रकुमार जी द्वारा

गुप्त सिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(७१) करंज की गिरी सफेद २०० ग्राम, छोटी पीपल ५० ग्राम, दालचीनी १० ग्राम, लाहौरी नमक २० ग्राम, लाल गेरू ६ ग्राम का चूर्ण बनाकर पानी के साथ पीस मटर के बराबर गोली बना लें। बड़ों के लिए २ गोली छोटों को १ गोली गरम जल के साथ सेवन कराने से मलेरिया तथा उसके विभिन्न लक्षणों में लाभ होता है।

—वैद्य पं० भोवरेलाल द्वारा

गु० सि० प्र० प्रथम भाग से।

(७२) सफेद संखिया १५ ग्राम तथा लाल फिटकरी २५० ग्राम लें। पहले फिटकरी को कपड़छन कर एक मिट्टी के सकोरे में फिटकरी का आधा चूर्ण भरकर उसे अंगुलियों से दाब-दाबकर गाढ़ा कर दें, फिर संखिया को रख ऊपर से आधी फिटकरी रख और पूर्ववत् दाब-दाब कर कड़ा करके पीछे दूसरा शराव लगा कपड़मिट्टी कर १॥ किलो अरने उपलों में फूंक दें। स्वांगशीतल होने पर दवा को निकाल २ रत्ती की मात्रा में पान के साथ सेवन करावें, तो मलेरिया निर्मूल हो जाता है।

गुप्त सिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(७३) चिरायता, सोंठ, कालमेघ, कण्टकारी की जड़, हरी गिलोय, कूठ, पटोलपत्र, अडूसा पंचाङ्ग प्रत्येक ६०-६० ग्राम। इन सब औषधियों को अधकचरा कर लें, फिर ७ किलो जल में क्वाथ करें। जब चतुर्थांश शेष रह जाय, तब कपड़े से छानकर कांच की बोतल में भर लें और उसमें ६ ग्राम रैक्टीफाइड स्प्रिट डाल दें, जिससे क्वाथ बहुत दिन तक स्थिर बना रहे। सुबह, शाम १०-१० ग्राम दवा ६ ग्राम जल के साथ सेवन करावें। यह मलेरिया नाशक बहुत उत्तम योग है।

—पं० राजकुमार अवस्थी द्वारा

धन्वन्तरि जनवरी १९४८ से।

(७४) सफेद संखिया १० ग्राम, समुद्रफेन ६० ग्राम, फिटकरी सफेद १२५ ग्राम लें। पहले मिट्टी के सकोरे में स्फटिका पीसकर डाल लें। उसके ऊपर आधा समुद्रफेन पीसकर डालें, फिर संखिया की डली रख दें। पश्चात् उस पर पहले समुद्रफेन तथा बाद में स्फटिका पीसकर रख दें और ऊपर दूसरा सकोरा लगाकर दोनों का मुंह बन्द करके बेरी की लकड़ी की आग १ घण्टे तक दें। अन्त में ५ मिनट को आग तेज कर दें। अब नीचे जो कोयले

भाग के जमा हों, वह ऊपर रख दें तथा नीचे से आग देना बन्द कर दें। ठण्डा होने पर सम्पुट को खोलकर बारीक पीस शीशी में सुरक्षित रखें। १-२ ग्राम तक सेवन कराने से नित्यप्रति आने वाला अथवा दूसरे दिन, तीसरे दिन आने वाला ज्वर जाता रहता है। यह दवा क्विनीन से भी अधिक लाभप्रद है। —कविराज हरिशंकर टण्डन द्वारा धन्वन्तरि अक्टूबर १९४६ से।

(७५) करंज की मिंगी ५० ग्राम, छोटी पीपल २५ ग्राम, द्रोणपुष्पी के फूल २५ ग्राम, कालीमरिच १५ ग्राम, लाल फिटकरी की भस्म २५ ग्राम, सबको मिला तुलसी स्वरस की ३ भावनायें देकर चने के बराबर गोलियां बना लें। मलेरिया आने से पूर्व १-१ घण्टे के अन्तर से ३ बार १-२ गोली गरम जल के साथ लेने से लाभ हो जाता है। —पं० हरिप्रसाद चतुर्वेदी द्वारा गुप्त सिद्ध प्रयोगांक द्वितीय भाग से।

(७६) हारसिंगार (शेफालिका) पत्र १०० ग्राम तथा जल १६० ग्राम का क्वाथ करें। २०० ग्राम शेष रहने पर इसमें १० ग्राम शहद मिलाकर कुछ दिनों तक सेवन कराने से जीर्ण विषम ज्वर में भी लाभ हो जाता है। विषम ज्वर के अनेक रोगी केवल इस योग से ठीक हो गये, जो क्विनीन तथा मल्ल के योग सेवन करने पर भी निरोग नहीं हुए थे। —अपर्णादेवी वैद्या द्वारा गुप्त सिद्ध प्रयोगांक द्वितीय भाग से।

(७७) तुलसी के पत्ते, कालीमरिच २०-२० ग्राम, करेले के पत्ते ४० ग्राम, कुटकी ८० ग्राम। सबको कूट-कपड़छान कर तुलसी के पत्ते या करेले के पत्ते के रस में घोट मटर के बराबर गोली बना लें। २-२ गोली दिन में ३ बार सेवन कराने से सब तरह के शीत ज्वर, तृतीयक, चातुर्थिक आदि में लाभ हो जाता है। —डा० रामविलास जी चौरसिया द्वारा गुप्त सिद्ध प्रयोगांक द्वितीय भाग से।

(७८) चिरायता, पित्तपापड़ा, करंजबीज, अमलतास का गूदा, कुटकी, छोटी हरड़, गिलोय, नीम की अन्तर्छाल इन सब चीजों को समभाग ले जौकूट करें तथा २६ गुने जल में डालकर एक दिन फूलने दें। बाद में २० ग्राम क्वाथ में थोड़ा-सा शहद मिलाकर सुबह-शाम कुछ दिन पीने से कैसा भी विषम ज्वर हो ठीक हो जाता है, मलावरोध भी दूर होता है। —पं० छेदीलाल जी शर्मा द्वारा गुप्त सिद्ध प्रयोगांक द्वितीय भाग से।

(७९) अर्कमूल त्वक् [आक की जड़ का वक्कल], कनक [धतूर] मूलत्वक्, करंज की जड़ का वक्कुल या फल की मींग समभाग ले, तुलसी स्वरस की भावना देकर चने के प्रमाण की गोलियां बना लें। दुग्ध, सौंफ अर्क, गुलाब अर्क के साथ १-२ गोली ज्वर उतरने के बाद सेवन कराने से मलेरिया में लाभ हो जाता है। —वैद्य पं० जानकीवल्लभ शर्मा द्वारा गुप्त सिद्ध प्रयोगांक द्वितीय भाग से।

(८०) फाल्गुन या चैत्र में वर्रे (ततैया) अपने छत्ते छोड़कर उड़ जाती हैं, उन छत्तों को लाकर भस्म कर लें। इसमें से १ रत्ती भस्म पारी वाले दिन ज्वर आने से १ घण्टे पूर्व शहद के साथ व्यवहार कराने से प्रायः एक ही दिन में अन्यथा २-३ दिन में ज्वर अवश्य जाता रहता है। —वैद्य गणपतलाल सेदूराम द्वारा गुप्त सिद्ध प्रयोगांक द्वितीय भाग से।

(८१) हुलहुल के पञ्चाङ्ग का स्वरस ५ ग्राम की मात्रा में दिन में ३ बार सेवन कराने से विषम ज्वर में लाभ हो जाता है।● —वैद्य घनानन्द पन्त द्वारा गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(८२) अजवायन खुरासानी, फिटकरी का फूला, सुहागे का लावा, सेंधव नमक सब समान भाग ले सूक्ष्म चूर्ण करें। तदनन्तर धतूरे के पत्तों के स्वरस की भावना

● धन्वन्तरि के गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग में श्री घनानन्द जी पन्त का "विषम ज्वर में सूर्यावर्त (हुलहुल) पर मेरा अनुभव" लेख प्रकाशित हुआ है। विषम ज्वर पर हुलहुल का प्रभाव बताते हुए निम्न विवरण दिया है, जो पाठकों के लाभार्थ यहां प्रस्तुत है—

आठ, नौ वर्ष पूर्व मेरे पास एक रोगी जो कि शीतज्वर की अनेक चिकित्सकों को वर्तमानकाल में प्रचलित चिकित्सा करा चुका था, अन्त में देहली स्थित मलेरिया इन्स्टीट्यूट का भी इलाज किया। ज्वर कुछ दिन

देकर चने के प्रमाण की गोली बना लें। ज्वर आने से २-४ घण्टे पूर्व २ गोली जल के साथ देने से पहले ही दिन ज्वर रुक जाता है, नहीं तो दूसरे या तीसरे दिन अवश्य ही रुक जाता है।

—श्री गंगाशरन शर्मा आयुर्वेदाचार्य द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(८३) मकड़ी के जाले (जो श्वेत रंग का दीवारों के साथ लगा होता है) में थोड़ा-सा गुड़ मिलाकर ज्वर आने से २ घण्टा पूर्व जल से दें। यह गोलियां पारी के ज्वरों को एक ही दिन में रोक देती है।

—हकीम बैजनाथ अग्रवाल द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(८४) द्रोणपुष्पी स्वरस, सहदेवी स्वरस, देवमंजरी स्वरस तथा नागबूटी स्वरस प्रत्येक २०-२० ग्राम। सबको कांच के पात्र में मिलावें, फिर उसमें फिटकरी का लावा २५ ग्राम मिलाकर २ दिन पश्चात् ऊपर का साफ निथरा अर्क शीशियों मे भरकर रख लिया जाय तथा ज्वर आने से पहले १० ग्राम अर्क, २० ग्राम ताजा पानी मिलाकर पीने को दिया जाय तो मलेरिया निश्चित रूप से दूर हो जाता है।

—पं० खूबचन्द्र मिश्र द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(८५) मृत्युञ्जय रस २ गोली, कच्चे श्वेत जीरे का चूर्ण १-१॥ ग्राम, गुड़ ३ साल पुराना १ ग्राम। जिस रोगी को ३-४ पारी ज्वर आ चुका हो, साथ में मलबद्धता भी हो तो ज्वर न रहने पर सोते समय कोई हल्का रेचक चूर्ण आदि दें। पारी के पूर्व की संध्या को दूध, मिश्री या ग्लूकोज मिलाकर दिया जाय। यह शीत ज्वर को तुरन्त रोक देता है। यह क्विनीन से बढ़कर कार्य करता है। गुड़ ३ साल पुराना आवश्यक है। ज्वर रुक जाने पर यह प्रयोग १-२ दिन प्रातः-सायं और दे दिया जाय तो उत्तम है।

—पं० ओंकारनाथ शर्मा द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(८६) अर्क दुग्ध १६५ ग्राम तथा चीनी १॥ किलो दोनों को खूब खरल करके मूंग के समान गोली बना लें। ज्वर चढ़ने से पूर्व ३-४ बार जल के साथ सेवन करावे से मलेरिया में लाभ हो जाता है।

बाद पुनः-पुनः लौट आता था। मैंने उक्त रोगी को लघु भोजन, फल, पथ्य दिया। प्रतिदिन पेट साफ रखा, विश्राम कराया। दवा केवल हुलहुल के पञ्चाङ्ग का स्वरस ५ ग्राम दिन में ३ बार दिया। ३-४ दिन बाद ज्वर ठीक हो गया।

मेरे निकट में एक पेंशनर डाक्टर कैप्टिन रहते थे। उनके पिता वैद्य थे, इसलिए उन्हें भी आयुर्वेदिक चिकित्सा में अनुराग था। अनेक समय मेरे पास आकर सम्मति लेने, अपने भी अनेक अनुभव बतलाया करते थे। वे विषम ज्वर के लिए केवल तृतीयक में हुलहुल के पत्तों को पीसकर दाहिने हाथ की कलाई में मेंहदी की तरह रखकर ऊपर से एक डबल तांबे का रख ज्वर आने से पहले पट्टी से बांध दिया करते थे। जब ज्वर का समय निकल जाया करता, तब दवा हटाकर दवा के स्थान पर छाला हो, तो उस पर मक्खन लगा दिया करते थे। मैंने ज्वर के रोगियों को उपरोक्त विधि से ३ बार स्वरस पिलाना आरम्भ किया, तो देखा कि क्रमशः ज्वर के उपसर्ग कम होते जाते हैं। ज्वर भी पहले दिन से दूसरे दिन कम, तीसरे दिन और कम, अन्य उपसर्ग भी क्रमशः कम। प्रायः ६२ घण्टे में ज्वर ठीक हो गया। ऐसे ७५ रोगियों में से ७० का विवरण मेरे पास है, जिनका कि मैं सुबह-शाम तापमान देख लिया करता था। १०५° ज्वर में ही प्रयोग किया है। पांच रोगियों को लाभ नहीं हुआ। उन दिनों २-३ वर्ष मलेरिया के दिनों में विषम ज्वर के लिए मैंने हुलहुल के स्वरस के अतिरिक्त अन्य कोई औषधि व्यवहार नहीं की। कुछ रोगी ऐसे भी थे, जो अन्यत्र खून की जांच होने के बाद लाभ न होने पर मेरे पास आये, वे भी अच्छे हुए। मेरा ऐसा विचार है कि इसके सेवन के बाद पुनः ज्वर नहीं लौटता।

(८७) करंज की गिरी २० ग्राम, पीपल २० ग्राम, जीरा सफेद १० ग्राम, बबूल की पत्ती १० ग्राम, तुलसी के पत्ते १० ग्राम। सबको पीसकर चने के समान गोलियां बना लें। २-२ गोली सुबह, दोपहर, शाम को जल के साथ सेवन कराने से मलेरिया में लाभ हो जाता है।

—डा० अर्जुनसिंह वर्मा द्वारा धन्वन्तरि दिसम्बर १९५८ से।

(८८) करंज की मिंगी ५० ग्राम, कुटकी ६० ग्राम, गोदन्ती भस्म ५० ग्राम, कर्पूर २० ग्राम, कालीमरिच ५० ग्राम। सबको कूट-छानकर तुलसी स्वरस तथा गूमा स्वरस की भावना देकर झरबेरी के समान वटी बनाकर ज्वर आने से ३ घण्टा पहले १ वटी व १ वटी १ घण्टा पूर्व गर्म जल के साथ सेवन कराने से मलेरिया ज्वर २-३ दिन में निश्चित रूप से रुक जाता है।

—पं० लक्ष्मीनारायण शर्मा द्वारा प्राणाचार्य प्रयोग मणिमाला से।

(८९) शुद्ध कुचला ८० ग्राम, गिलोय ८० ग्राम; छोटी पीपल १० ग्राम, धत्तूर बीज १० ग्राम, सेंधव लवण १० ग्राम; करंजबीज की मिंगी १० ग्राम। सबको कूट-छानकर पत्थर के खरल में डालें और कालमेघ का रस डालकर एक दिन मर्दन करें, दूसरे दिन धत्तूर के रस में मर्दन करें, तीसरे दिन बेलपत्र के रस में मर्दन कर ६-६ रत्ती की गोलियां बना लें। ३-४ बार १-१ गोली जल के साथ सेवन कराने से मलेरिया रुक जाता है।

—वैद्य नारायणदत्त वेहेरा द्वारा प्रयोग मणि० से।

(९०) दुधी २० ग्राम, काली मरिच का चूर्ण १ ग्राम मिलाकर लगातार ३ दिन तक प्रातःकाल सेवन कराने से मलेरिया में लाभ हो जाता है।

—डा० नारायण शिवनाथ द्वारा प्रयोग मणि० से।

(९१) कैथ का गूदा, काली मरिच तथा नमक सम-भाग मिलाकर अथवा बिना नमक, मरिच मिलाये ही तृप्ति भर खिलाना चाहिए। जितनी भी इच्छा हो खिलाते जावें। जब रोगी इच्छा न रहे अर्थात् अतृप्ति हो जाय, तब मलेरिया से छुटकारा मिल जाता है।

—पं० विश्वेश्वरदयाल द्वारा प्रयोग मणिमाला से।

(९२) दुलहुल का सत्व तथा गिलोय सत्व १०-१० ग्राम ले, अच्छी तरह घोटकर खरल कर लें। ६ रत्ती से १ ग्राम तक ज्वर चढ़ने से ३ घण्टे पूर्व १-१ घण्टा के अन्तर से ३ मात्रायें सेवन करावें। इससे मलेरिया ज्वर अवश्य नष्ट हो जाता है।

—पं० महेन्द्रनाथ अग्निहोत्री द्वारा प्रयोग मणिमाला से।

(९३) महासुदर्शन चूर्ण १०० ग्राम, सोडा-बाई-कार्ब (सज्जी खार) २५ ग्राम, एरण्ड तैल में भुने हुए शुद्ध कुचले का चूर्ण ५ ग्राम, फिटकरी का फूला १५ ग्राम ले सबको मिलाकर खरल कर लें। ३-३ ग्राम दिन में २-६ बार जल के साथ सेवन कराने से विषम ज्वर में लाभ हो जाता है। —पं० यादव जी त्रिकम जी द्वारा रसतन्त्रसार से।

(९४) खूबकलां असली २० ग्राम तथा हिंगुल और कपूर १०-१० ग्राम। तीनों को बिना पानी के पीसने से गोली बनाने योग्य चटनी सी बन जाती है। इसी चटनी को गोली बनाने लायक होने पर चने बराबर गोली बनाकर रख लें। १-२ गोली तक ज्वर आने से पहले गर्म जल या अमृतारिष्ट के साथ सेवन कराने से शीतपूर्वक आने वाला मलेरिया रुक जाता है।

—वैद्य शिवकुमार शास्त्री द्वारा धन्वन्तरि अनुभवांक से।

[आ] अनुभूत एवं परीक्षित प्रयोग

(१) **विषमज्वरहर सुदर्शनासव**—कुटा हुआ सुदर्शन चूर्ण ५ किलो, मुनक्का ११ किलो, पानी ४० किलो लेकर औटावें। १० किलो अवशिष्ट रहने पर उसमें वासामूलत्वक् २०० ग्राम, यवतिक्ता चूर्ण २०० ग्राम, मधु २ किलो, खांड ४ किलो, पुराना गुड़ ४ किलो लेकर किसी पात्र में डालकर सन्धान करें। १ माह पश्चात् छानकर बोतलों में भर लें।

मात्रा—१५-२० मि० लि०। कुनाइन मिक्चर की तरह १-१ मात्रा ज्वर आने से पहले २-२ घण्टे पर देनी चाहिये।

उपयोग—इसके पहले दिन प्रयोग से ही कंपकंपी आना बन्द हो जायगी दूसरे दिन ज्वर नहीं होगा यदि हुआ भी तो बहुत कमी के साथ होगा, ३ दिन के प्रयोग से बिलकुल ज्वर नहीं रहता। यह योग जीर्णज्वर के लिये भी बहुत रामबाण प्रमाणित हुआ है। गर्भिणी स्त्रियों तथा बच्चों को भी इसका प्रयोग कराया जा सकता है। —पं० भगवानदत्त शर्मा वैद्य द्वारा धन्वन्तरि मई १९४१ से।

(२) मलेरियाहर क्वाथ—नागरमोंथा, पटोलपत्र, देवदारु, इन्द्रजौ, बड़ी हरड़, बहेड़ा, आंवला, निशोथ, गिलोय, गुलाबफूल, मुलहठी ६-६ ग्राम, मुनक्का १५ दाने।

विधि—सभी वस्तुयें लेकर ३ मात्रायें बना लें। पहली मात्रा में १० ग्राम अमलतास डालकर २०० ग्राम, पानी में औटावें ७० ग्राम पानी शेष रहने पर छानकर २० ग्राम मिश्री मिलाकर रोगी को पिलाना चाहिये इस दवा से अगर पेट से शुद्दे न निकले तो शाम को इसी दवा के छूंछे में १० ग्राम अमलतास डालकर और दे दें। बाकी बची १ मात्रा दूसरे दिन सुबह दें शाम को उसको छुड़ा दें।

उपयोग—मलेरिया ज्वर इन मात्राओं के प्रयोग से चला जाता है। अन्य ज्वरों में भी लाभदायक है।

—वैद्य कुंवरप्रसाद मित्तल द्वारा धन्वन्तरि सितम्बर १९४१ से।

(३) विषमज्वरारि—शुद्ध मल्ल, शुद्ध गन्धक, शुद्ध अमृत, सोंठ, मरिच, शुद्ध तबकिया हरताल, शुद्ध पारद, पीपल प्रत्येक १०-१० ग्राम।

विधि—सोंठ, मरिच, पीपर को पहले कूट कपड़छन कर लें। हरताल को खरल करें फिर कज्जली तथा अमृत डालकर जल से घुटाई कर लें कुटी हुयी चीजें डालकर तब तक मर्दन करें जब तक हरताल की चमक रहे चमक न रहने पर बाजरे के समान गोली बना लें।

मात्रा—ज्वर आने से पहले २-२ घण्टे के अन्तर से २-२ गोली तीन बार दें।

उपयोग—विषमज्वर में तो रामबाण औषधि है ही किन्तु अन्य ज्वरों में भी लाभदायक है।

—पं० बृजमोहन जी शर्मा द्वारा धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(४) मलेरिया ज्वर केशरी वटी—श्वेत फिटकरी फूली हुयी, फिटकरी लाल फूली हुयी, गिलोयसत्व, करजुवें की गिरी प्रत्येक १००-१०० ग्राम, कालीमरिच, नीम के पुष्प १०-१० ग्राम, गेरू, गोंद बबूल २०-२० ग्राम।

विधि—इन्हें कूट-पीसकर तुलसीपत्र स्वरस की भावना देकर चने प्रमाण की गोलियां बना लें।

मात्रा—२ गोली प्रातः दोपहर तथा सायंकाल जल से सेवन करनी चाहिये।

उपयोग—मलेरिया ज्वर की बहुत अच्छी औषधि है १-२ दिन के प्रयोग से मलेरिया निश्चित ठीक हो जाता है। —डा० वेदव्यासदत्त शर्मा द्वारा धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(५) मलेरियानाशक शंकरवटी—जायपत्री, सोंठ, मरिच, पीपल, लौंग, हरड़, शुद्ध धतूर बीज, पित्तपापड़ा, कुटकी, गिलोयसत्व, जायफल, कड़वी अतीस प्रत्येक २०-२० ग्राम, चिरायता ४० ग्राम, करंज की मिंगी १०० ग्राम, इन्द्रायन की जड़ १० ग्राम, कुनैन ३० ग्राम।

विधि—सब औषधि नवीन लाकर कूट-पीस कपड़छन कर नीम की छाल अथवा पत्र के क्वाथ की १ भावना देकर मटर समान गोली बनाकर रखें, फिर छाया में सूखने को रख दें।

मात्रा—बलानुसार १-२ गोली जल या क्षुद्रादि क्वाथ से ज्वर का वेग न रहने पर प्रातः-सायं दें।

उपयोग—मलेरियानाशक उत्तम योग है। ज्वर के कारण होने वाली दुर्बलता भी इससे दूर हो जाती है उदरशुद्धि होती है जीर्ण ज्वर में लाभदायक योग है। बिना क्विनीन के भी बना सकते हैं।

—पं० घेवरचन्द्र वैद्य शास्त्री द्वारा धन्वन्तरि अनुभूत चिकित्सांक से।

(६) मलेरियानाशक अमृत चूर्ण—अमृतक्षार (नौसादर) को फिटकरी के साथ रखकर डमरूयन्त्र में

डालें तत्पश्चात् ऊपर लगे अमूलक्षार को लेकर उसमें थोड़ा सा अपामार्गक्षार, अर्कक्षार डाल दें यदि इसे अधिक तीव्र बनाना हो तो इसमें कृष्ण तुलसी का क्षार, सप्तपर्ण क्षार, हारसिंगार का क्षार और मिला सकते हैं फिर इसमें १ भावना कृष्ण तुलसी की तथा १ भावना अर्कपत्र की देकर चूर्ण बनाकर रख लें।

मात्रा तथा सेवन विधि—इस चूर्ण की मात्रा केवल २ रत्ती से ३ रत्ती तक की है। इसे दिन में ३-४ बार उष्ण जल, दूध अथवा चाय के साथ सेवन कराना चाहिये। अन्य खाने को न दें फल, दूध, चाय का यथेष्ट सेवन किया जा सकता है।

उपयोग—यह मलेरियानाशक हमारा बहु-परीक्षित योग है इसकी सफलता असंदिग्ध है। केवल कोष्ठशुद्धि के लिये पंचसकार त्रिफला आदि से उदर का शोधन कराना आवश्यक है।[1] —प्रो० महानन्द जी सिद्धालंकार द्वारा धन्वन्तरि अनुभूत चिकित्सांक से।

(७) जूड़ी ज्वरहर चूर्ण—गोंधा की भस्म, गेरू शुद्ध ८०-८० ग्राम, चूना कलई का, आक (मदार) के फूल, नीम के रस में भावना दी हुयी पीपल छोटी, सोंठ, कालीमरिच, गिलोयसत्व ४०-४० ग्राम, धतूर के बीज तथा भांग ४०-४० ग्राम, यदि प्रभावशाली बनाना हो तो क्विनेन की ४० गोली भी पीसकर इसमें मिला दें।

विधि—नीम तथा धतूरे के रस से ३-३ बार भावना दें।

मात्रा—४-४ रत्ती चूर्ण दिन में ३-४ बार पारी न आने वाले दिन शीतल जल से दें।

उपयोग—मलेरिया के हर प्रकार में लाभदायक योग है। पित्तज्वर को छोड़कर अन्य ज्वरों में भी लाभदायक है। —पं० प्रद्युम्नकुमार त्रिपाठी द्वारा धन्वन्तरि सिद्ध योगांक से।

(८) मलेरियाहर पिल्स—बहेड़े की छाल, हरड़ की छाल, आंवला, सोंठ, छोटी पीपल, कालीमरिच, सेंधानमक, सांभरनमक, समुद्रनमक, प्रत्येक ६-६ ग्राम, सज्जीक्षार, यवक्षार, द्रोणपुष्पी तीनों १०-१० ग्राम, नीम की पत्ती ५० ग्राम, अजवायन २५ ग्राम।

विधि—इन सब चीजों को कपड़छन करें फिर तुलसी के रस की १ भावना, गूमा के रस की १ भावना दें और मटर जैसी गोलियां बना लें।

मात्रा—१ से ४ गोली ताजे जल के साथ पारी न आने के समय सेवन करावें।

उपयोग—मलेरिया नाशक उत्तम गोलियां हैं। —पं० लक्ष्मीनारायन दुबे द्वारा धन्वन्तरि सिद्ध योगांक से।

(९) ज्वरनाशक अनुभूत योग—हरताल गोदन्ती भस्म १॥ ग्राम, करंजुवा की गिरी ५० ग्राम, नीम के पत्ते १० ग्राम चिरायता ४० ग्राम, पीपल छोटी ३० ग्राम, हरड़ छोटी २० ग्राम, फिटकरी भुनी १५ ग्राम, जीरा १५ ग्राम, नागरमोंथा, पित्तपापड़ा, कुटकी यह १०-१० ग्राम इन सबका चूर्ण बनाकर तुलसी के पत्तों के स्वरस से वटी बनावें।

मात्रा—½-१ ग्राम रोगी की आयु के अनुसार जल से देवें।

उपयोग—विषमज्वर के विभिन्न प्रकारों में लाभदायक योग है। जीर्ण ज्वर के रोगियों को भी लाभ हो जाता है। —वैद्य श्री मुन्नालाल गुप्त द्वारा धन्वन्तरि प्रयोगांक से।

(१०) आयुर्वेदिक कुनैन—गिलोयहरी ५ किलो, चिरायता पंचाङ्ग हरा ५ किलो, तुलसी हरी ५ किलो, नीम की अन्तरछाल हरी ५ किलो, करंजपत्र हरा ५ किलो।

विधि—सब वस्तुओं को किसी पत्थर की कुण्डी में खूब कूटकर चतुर्गुण पानी में डालकर मिट्टी की किसी बड़ी नांद या हौज में डाल दें। ८ दिन भीगे रहने के बाद ९वें दिन हाथों से खूब घोटें और मसलें ताकि पानी में सब औषधियों का सत्व घुल जाय फिर ऐसे ही छोड़ दें तीसरे दिन फिर घोटें तथा छोड़ दें तीन दिन पश्चात्

१—उपर्युक्त योग के साथ लेखक ने ७०१ रोगियों पर इस योग का प्रभाव दिखाते हुये विवरण दिया है और इस योग को ९०% सफल पाया है। पाठकों से अनुरोध है कि वह इस योग की परीक्षा करें। —सम्पादक।

ऊपर-ऊपर का नितरा हुआ पानी किसी दूसरी नांद में उतार लें इसी प्रकार हर २४ घण्टे पर ७ वार इसी प्रकार नितरा हुआ पानी उतारते रहें सातवीं वार के पानी को नांद में ही धूप द्वारा सूख जाने दें विलकुल सफेद रङ्ग का सत्व नांद में जम जावेगा उसको एकत्र कर व्यवहार में लावें। उत्तम तरह से बनाने पर विलकुल क्विनीन जैसा सत्व प्राप्त होता है।

मात्रा—बालकों को १ ग्रेन से २ ग्रेन तथा युवा को ५-१७ ग्रेन तक है। यह जल या दूध से ली जा सकती है।

उपयोग—यह क्विनेन के समान गुणकारी औषधि है लेकिन क्विनेन की तरह के अवगुण इसमें नहीं हैं। मलेरिया ज्वर में निश्चित प्रभावकारी योग है।

—राजवैद्य इन्द्रदत्त शर्मा द्वारा
धन्वन्तरि अनुभूत योगांक से।

(११) विषमज्वरादि वटिका—गिरी करंज १० ग्राम, गूगल शुद्ध २० ग्राम, कालीमरिच ३० ग्राम, तुलसीपत्र ४० ग्राम, भांग ६ ग्राम, अफीम ६ ग्राम, द्रोणपुष्पी ५० ग्राम तथा ३ वर्ष का पुराना गुड़ ३० ग्राम।

विधि—भांगरे के रस में ७ भावना देकर गोली बना लें।

मात्रा—ज्वर आने के ३ घण्टे पहले से हर घण्टे पर २-२ गोली (कुल ६ गोली) ताजे पानी से देनी चाहिये।

उपयोग—मलेरिया ज्वर को रोकने के लिये अति उत्तम गोलियां हैं।

—बाबू शिखरचन्द्र जैन द्वारा
धन्वन्तरि अनुभूत योगांक से।

(१२) मलेरिया पिल्स—करंज की मिंगी, गिलोयसत्व, पित्तपापड़ा, कटु परवल के फल, चिरायता, कुटकी, अतीस यह सब ५०-५० ग्राम।

विधि—कूट कपड़छन कर भांगरे के रस में अच्छी तरह घोटकर २-२ रत्ती की गोलियां बनालें।

मात्रा—रोगी को ज्वर न रहे तब उस हालत में १-४ गोली तक रोगी के बलाबल के अनुसार दें।

उपयोग—मलेरिया के विभिन्न भेदों में बहुत प्रभावशाली औषधि है।

—पं० रामगोपाल जी मिश्र द्वारा
धन्वन्तरि अनुभूत योगांक से।

(१३) मलेरिया वटी—लोहभस्म $\frac{1}{2}$ ग्रेन, पीपल चूर्ण १ ग्रेन, अतीस चूर्ण २ ग्रेन, करंज चूर्ण १ ग्रेन, छतिवन चूर्ण $\frac{1}{2}$ ग्रेन, शोधित संखिया $\frac{1}{8}$ ग्रेन, कज्जली (सममाग) $\frac{1}{4}$ ग्रेन, पीली कन्नेर की छाल का चूर्ण $\frac{1}{8}$ ग्रेन, सर्पगन्धा चूर्ण $\frac{1}{4}$ ग्रेन, चिरायता, कुटकी, नीमछाल, कटेरी, बांसा, गिलोय, महानिया (Anerogoaphis paniculate) प्रत्येक १०-१० ग्राम। १० से १६ तक की सातों चीजों को १ किलो पानी में उबालें और जब १२५ ग्राम रह जाय, तब १-९ तक की वस्तुओं को इस क्वाथ में भावित करें तदुपरान्त ८-१० ग्रेन तक की गोलियां बना लें।

मात्रा—जब तापक्रम बढ़ना प्रारम्भ हो जाय तो ३-४ गोली १ दिन में सेवन करा दें रोग का आक्रमण समाप्त होने पर ५-५ या ७-७ दिन बीच में देकर इस औषधि का प्रयोग कुछ समय तक कराना चाहिये।

उपयोग—मलेरिया के लिये बहुत उपयोगी गोलियां हैं।

—श्री विजयकाली भट्टाचार्य द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(१४) मलेरियाशमन वटी—गोदन्ती भस्म, करंज मींग, गेरू, श्वेत फिटकरी का फूला, चूना बुझा हुआ लेकर तुलसी स्वरस तथा गिलोय स्वरस में चना प्रमाण की गोली बनाकर रख लें।

मात्रा एवं सेवन विधि—ज्वर से ३-४ घण्टे पूर्व १-१ घण्टे के अन्तर से २-२ गोली गर्म जल के साथ देनी चाहिए। यदि ज्वर का कोई निश्चित समय न हो, तो ४-४ घण्टे के अन्तर से ४ बार सेवन करानी चाहिए। जिस दिन ज्वर की वारी न हो उस दिन भी इसी प्रकार लेनी चाहिए। यह पूर्ण मात्रा है। दुर्बल रोगी को व १० वर्ष से १६ वर्ष वाले को १-१ गोली देनी चाहिए। इससे कम आयु वाले को आधी गोली पर्याप्त है।

उपयोग—मलेरिया के विभिन्न प्रकारों में उपयोगी गोलियाँ हैं।

—वैद्यराज इन्द्रमणि जैन द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(१५) विषमज्वरान्तक वटी—क्वाथ द्रव्य—सतौना की छाल ४०० ग्राम, चिरायता १ किलो, गिलोय २ किलो,

नीम की छाल २ किलो, अडूसा १॥ किलो, क्वाथ के लिए जल ३२ किलो।

प्रक्षेप—गोदन्ती भस्म, शुद्ध स्फटिका भस्म, करंज बीज प्रत्येक ५०-५० ग्राम, वंशलोचन, कालीमरिच, गिलोय सत्व, छोटी पीपल प्रत्येक २५-२५ ग्राम।

विधि—उपरोक्त क्वाथ द्रव्यों का क्वाथ करें। फिर चतुर्थांश रहने पर उसे छान लें। पुनः उस क्वाथ को अग्नि पर चढ़ाकर उसका घन तैयार करना चाहिए। घन तैयार हो जाने पर ठण्डा होने पर प्रक्षेप की सभी औषधियां कपड़छन की हुयी इस घन में मिलाकर मटर के बराबर गोलियां बना लें।

मात्रा—३-३ गोली दिन में ३ बार पारी न आने वाले दिन दें। बाद में १-१ गोली सुबह, शाम कुछ दिनों तक जल के साथ सेवन करावें।

उपयोग—इससे मलेरिया में विशेष लाभ होता है। क्विनीन के समान गुणकारी है, पर क्विनीन के समान इसमें अवगुण नहीं हैं। —पं० यमुनाप्रसाद द्वारा

गुप्त सिद्ध प्रयोगांक द्वितीय भाग से।

(१६) शीतज्वर संहार वटी—सतोने की ताजी छाल, नीम की अन्तर्छाल, गिलोय ताजी, कुटकी, सुदर्शन चूर्ण, हरड़ का वक्कुल; नाय ताजी प्रत्येक १-१ किलो। इनको कूटकर आठ गुने जल में उबाल अर्धावशेष क्वाथ करें। फिर नीचे उतार मसल-छानकर कलईदार वर्तन में पकाकर घन बना सुखा लें। जब रबडी जैसा हो जाय तो इसमें से ६०० ग्राम लेकर उसमें शुद्ध करंज बीजों का चूर्ण १५० ग्राम, कुटकी; अतीस १००-१०० ग्राम, शुद्ध कुचला ५० ग्राम, कालमेघ १०० ग्राम, दालचीनी ५० ग्राम, शुद्ध स्फटिका १५० ग्राम मिलावें।

विधि—सबको मिलाकर हारसिंगार के रस में खरल करें तथा २-२ रत्ती की गोलियां बना लें।

मात्रा—१-२ गोली जाड़ा आने से १२ घण्टे पूर्व या आवश्यकतानुसार ४ घण्टे पूर्व १ घण्टा के अन्तर से प्रयोग कराना चाहिए।

अनुपान—ताजा जल या दूध।

उपयोग—हर प्रकार के विषम ज्वरों में यह औषधि पहले से देने पर ज्वर के आगमन को रोक देती है। क्विनीन की तरह इससे भी ज्वर शीघ्र रुक जाता है, किन्तु कोई उपद्रव नहीं सताते। आधी गोली की मात्रा में दूध के साथ प्रयोग कराने पर ज्वर की निर्बलता को दूर करता है। मलेरिया के ज्वर के दिनों में १ गोली नित्य सेवन करने से मलेरिया आने का भय नहीं रहता।

—वैद्य हरीराम बराटे द्वारा

गुप्त सिद्ध प्रयोगांक तृतीय भाग से।

(१७) विषम ज्वरारि वटी—कुटकी, चिरायता, पित्तपापड़ा, सप्तपर्ण, त्रायमाण, करंज, सारिवा, मोथा, गिलोय, पेशावरी, पनीर डोंडा प्रत्येक ४००-४०० ग्राम।

विधि—इन सबको मिलाकर घनसार बनावें। इस घनसार को पतला ही रखें। इसमें क्विनीन-वाई-सल्फ या क्विनीन-वाई-हाइड्रोक्लोर २०० ग्राम तथा त्रिफला से भावित लौह भस्म १०० ग्राम एवं शुद्ध सोमल १० ग्राम डालकर विधिवत् मर्दन कर ३-३ रत्ती की गोलियां बनावें।

मात्रा व उपयोग—आरम्भ में ज्वरकाल में २-२ गोली दिन में ४ बार पानी के साथ दें। ३-४ दिन के प्रयोग से ज्वर का वेग रुक जायगा। तत्पश्चात् इस औषधि की ६-६ गोली प्रातः प्रतिदिन ११ दिन तक दें। अर्थात् प्रारम्भ से कुल १५ दिन तक दें। तत्पश्चात् २-२ गोली प्रातः प्रतिदिन २५ दिन तक दें। इस प्रकार कुल ४० दिन तक देने से विषम ज्वर समूल नष्ट हो जाता है। यह औषधि सर्वथा हानिरहित है। न इसका कोई विष प्रभाव है, न उपद्रव। असफलता की भी शंका नहीं है। जीर्णज्वर जिसमें प्लीहावृद्धि हो, उसमें भी यह वटी लाभकर है। —श्री आशानन्द पञ्चरत्न द्वारा

गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(१८) लालगुड़ा—सोंठ, पीपल, कालीमरिच, हरड़, बहेड़ा, आंवला, लाल चन्दन, नीम की छाल, पीली सरसों, कूठ, हिंगुल, कुटकी सभी ३-३ ग्राम, रससिन्दूर ३० ग्राम।

मात्रा तथा उपयोग—सबके चूर्ण को एकसाथ मिलाकर २ से ८ रत्ती तक की मात्रा में हारसिंगार के पत्तों का रस २० ग्राम के साथ देने से ज्वर ३ दिन में अवश्य

बन्द हो जाता है। मलेरिया ज्वर में यह योग क्विनीन से भी अधिक लाभकर है।

—श्रीमती वेलारानी देवी द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक द्वितीय भाग से।

(१९) मलेरिया शमन वटी—करंज गिरी, श्वेत स्फटिका, शुद्ध आमलासार गन्धक, नृसार, अभ्रक भस्म (श्वेत) प्रत्येक १०-१० ग्राम, श्वेता (मिश्री), अतीस, कौड़ी भस्म तीनों २०-२० ग्राम, कलमी शोरा ४० ग्राम।

निर्माण विधि—श्वेता तथा शोरा दोनों को छोड़, प्रथम सबको खूब पीसकर एक दिन मूली स्वरस में एवं तीन दिन घृतकुमारी के रस में मर्दन करें। पश्चात् श्वेता तथा कलमी शोरा भी पीसकर मिलावें और चने प्रमाण की वटी बनावें।

मात्रा—प्रातः, सायं एवं आवश्यकता के समय दोपहर को भी १ गोली सादा जल या अर्क गुलाब के साथ दें।

उपयोग—विषम ज्वर (मलेरिया) की अव्यर्थ औषधि है।

—वैद्य खेमराज शर्मा छांगाणी द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(२०) विषमारि वटी—करंज चूर्ण २०० ग्राम, गोदन्ती भस्म (निम्ब स्वरस से भावित), सौभाग्य भस्म, स्फटिका भस्म प्रत्येक ५०-५० ग्राम को कूट-पीसकर करंज पत्र मूल, तुलसी, निम्ब, सप्तपर्ण, द्रोणपुष्पी, हारसिंगार के क्वाथ में अलग-अलग ७-७ बार खरल कर झरबेर के बराबर गोली बना छाया में सुखाकर रख लें।

सेवन विधि—ज्वर आने से ४ घण्टे पूर्व २-२ घण्टे पर १-१ गोली जल के साथ निगलवावें।

उपयोग—नूतन विषम ज्वर में उपयोगी गोली हैं।

—श्री मोहन जी भट्ट द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(२१) ज्वरान्तक रक्त वटी—सिंगरफ रूमी १० ग्राम को खरल में बारीक पीस लें ओर उसमें एक काली मरिच डालकर पीसें और फिर एक पत्ता तुलसी का डालकर पीसें। इसी प्रकार बारी-बारी से काली मरिच तथा तुलसीपत्र डालकर खरल करते जावें, जब तक कि ३०० काली मरिच और ३०० तुलसीपत्र न पड़ जाय। फिर चना प्रमाण की गोलियां बना लें तथा सूखने पर कार्य में लावें।

सेवन विधि तथा उपयोग—ज्वर आने से १ घण्टा पहले १ गोली बेरी के २ पत्तों में लपेटकर खिला दें, परन्तु पहले पेट को जुलाब देकर साफ कर लें। जिस दिन गोली दी जावेगी, उसी दिन ज्वर रुक जावेगा। यदि ज्वर शेष रहे तो दूसरे दिन भी इसी प्रकार १ वटी खिला दें। रोजाना, एकान्तरा, तिजारी, चौथइया सभी ज्वरों में समान रूप से गुणकारी है।

—पं० विष्णुदत्त शर्मा द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(२२) मलेरियाहर मिश्रण—गोदन्ती हरताल भस्म ५० ग्राम, शंख भस्म २५ ग्राम, फिटकरी १०० ग्राम, नौसादर ५० ग्राम, सोरा कलमी ५० ग्राम, कुटकी २० ग्राम, चिरायता क्षार, अर्क क्षार, धतूरा क्षार तथा रूम बूटी का क्षार• प्रत्येक १०-१० ग्राम।

विधि—सबको खरल करके शीशी में रख लें।

मात्रा—२ रत्ती ताजे जल से दिन में ३-४ बार सेवन करावें।

उपयोग—यह दवा क्विनीन की तरह न तो कड़वी है और न गर्मी करती है। ज्वर आने से १ घण्टा पहले देने से ज्वर रुक जाता है। ज्वर में घबराहट, बेचैनी, प्यास को तुरन्त रोकती है।

—वैद्य गुरुचरणलाल कुशवाह द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(२३) मलेरिया बूटी—शुद्ध वर्किया हरताल, गोदन्ती भस्म, गिलोयसत्व, वंशलोचन, शीतल चीनी, छोटी इलायची प्रत्येक १०-१० ग्राम, लाल फिटकरी का

• **रूम बूटी**—वर्षात में सब जगह बागों में मिलती है। इसका क्षुप १।।-३ फीट तक ऊंचा होता है। इसकी पत्ती बकायन की पत्ती जैसी होती है और इन पर सफेद रोंये होते हैं। वर्षात में उन्हें लेकर जलावें और क्षार बना लें।

फूला ३० ग्राम, सफेद फिटकरी २० ग्राम, करंज की गिरी २० ग्राम, गेरु ६ ग्राम, क्विनाइन-बाई-हाइड्रोक्लोराइड ८ ग्राम (इसके बिना भी योग उपयोगी है)।

विधि—इन्हें कूट-पीसकर मिला लें। पश्चात् सहदेवी, नीम, तुलसी, करंज की हरी पत्तियों का स्वरस निकाल कर उसमें १२ घण्टे खरल कर चने के बराबर गोलियां बना लें।

सेवन विधि—पारी के ज्वर में १ गोली ज्वर आने के ४ घण्टे पहले तथा १ गोली २ घण्टे पहले शक्कर के साथ दें।

उपयोग—यह वटी सभी प्रकार के विषम ज्वर जिसमें दाह तथा ठण्ड रहती हो, एकाहिक, द्वितीयक, तृतीयक या चातुर्थिक आदि सभी ज्वरों को नष्ट करती हैं, प्लीहावृद्धि को न्यून करती है।

—डा० वेदव्यासदत्त शास्त्री द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(२४) सप्तपर्णघन वटी—सप्तपर्ण (सतौना) की ताजी छाल लाकर उसको कूटकर अष्टगुण जल में क्वाथ करें जब चतुर्थांश क्वाथ रहे तब छानकर उसको मन्दाग्नि पर पुनः पचाकर लेह जैसा गाढ़ा कर लें जब यह घन १ पौण्ड हो जाय तो उसमें अतिविषा का चूर्ण ५० ग्राम तथा कालीमरिच का चूर्ण ५० ग्राम मिलाकर चने प्रमाण गोली बना लें।

मात्रा—२ २ गोली ३-४ घण्टे के अन्तर से जल से दें।

उपयोग—विषमज्वर में अत्यन्त लाभकर योग है जिसकी अनेक बार परीक्षा की जा चुकी है।

—पं० यादव जी त्रिकम जी द्वारा
धन्वन्तरि गुप्तसिद्ध चतुर्थ भाग से।

(२५) विषमज्वरनाशक अर्क—अजवायन देशी २५ ग्राम, मुण्डी बूटी २५ ग्राम, चिरायता २५ ग्राम, पित्तपापड़ा २५ ग्राम, सम्पूर्ण औषधियों को २ किलो पानी में सम्पूर्ण रात कलई के वर्तन में भिगो दें और प्रातःकाल आग पर रखकर पकावें जब पानी ७५० ग्राम रह जाय तो उतारकर उसमें नौसादर १० ग्राम बारीक करके मिला दें। घुलने पर कपड़े में छानकर शीशी में डालकर २५ बूंद गन्धक का तेजाब मिलाकर रखें।

मात्रा—चढ़े हुये ज्वर में ३-३ घण्टे के अन्तर से २०-२० ग्राम पिला दें।

उपयोग—इससे एक ही दिन में ज्वर उतर जाता है तथा विषमज्वर के कीटाणुओं को एक ही दिन में नष्ट कर देता है।

(२६) ज्वर प्रहार—करंजुआ की मींग १० ग्राम, धतूरे के बीज १० ग्राम, सोंठ १० ग्राम, कीकर का गोंद १० ग्राम, फिटकरी की भस्म १० ग्राम, गोदन्ती हरताल भस्म १० ग्राम, गिलोयसत्व १० ग्राम, रेवन्दचीनी १० ग्राम, कालीमरिच १० ग्राम, पीपर १० ग्राम, तुलसी के पत्ते ४० ग्राम सबको कूट-पीस छानकर गोलियां बना लें।

मात्रा—१-१ गोली ज्वर चढ़ने के ३-४ घण्टे पहले से ३-४ बार पानी के साथ सेवन करावें।

उपयोग—रोजाना, इकतरा तिजारी चौथैया आदि विषमज्वर के सभी भेदों में परीक्षित दवा है।

—डा० अर्जुनसिंह वर्मा द्वारा
धन्वन्तरि दिसम्बर १९५८ से।

(२७) विषमज्वरनाशक भरता—त्रिकुटा, त्रिफला, मोथा, वायविडङ्ग, चित्रक, सौंफ, अजमोद, अजवायन, कासनी, जीरा सफेद, धनियां, गजपीपल, गिलोय, पित्तपापड़ा, सैन्धानमक, छोटी हरड़, करंज की मिंगी, पटोलपत्र, निशोथ, चव्य, चिरायता, हरड़ का बक्कल इन सबको बराबर-बराबर लें और जौकुट कर लें।

मात्रा सेवन विधि—इसमें से ४ ग्राम तक एक मिट्टी के वर्तन में १२५ ग्राम एक दिन रात पर्यन्त भिगोकर रखें। सुबह उसे पीसकर छानकर एक मिट्टी के वर्तन को अच्छी तरह गर्म करके उससे उसे छौंक दें और ठण्डा करके पीवें।

उपयोग—इसके २-३ बार प्रयोग करने से ही विषमज्वर (मलेरिया) में लाभ हो जाता है। अनेक बार का अनुभूत योग है।

—राधावल्लभ वैद्यराज द्वारा
धन्वन्तरि सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(२८) मलेरिया नाशक अपूर्व योग—असली गोदन्ती ५० ग्राम, घोंगा (घुक्ला) ५० ग्राम, फिटकरी

गुलाबी ५० ग्राम, संखिया श्वेत १० ग्राम, हरताल तवकी १० ग्राम।

विधि—सबको साफ और शुद्ध कर पृथक्-पृथक् कूट कपड़ा में छान लें तथा छना हुआ चूर्ण ही ऊपर लिखे प्रमाण में तोलकर अलग-अलग पुड़ियों में रख लें। फिर चूल्हे पर एक लोहे का तवा रख अग्नि दें। जब यह गरम हो जाय, तब उस पर फिटकरी डाल दें। जब फिटकरी पिघल जाय, तब संखिया डाल दें और जब संखिया भी कुछ गले, तब हरताल डाल दें तथा सबको लोहे की कलछी से चलावें। सूखकर रंग बदलने पर उतार लें। फिर एक बड़ा सरवा या एक छोटी सी हांडी लेकर आधी गोदन्ती तथा आधा घोंगा डाल ऊपर वाली दवा रख ऊपर से फिर आधा घोंगा और आधी गोदन्ती जो शेष रह गयी है, डाल हांडी का मुख बन्द कर गजपुट में फूंक दें। स्वांगशीतल होने पर निकाल पीस-छानकर शीशी में भर रख लें।

सेवन विधि—मलेरिया के वेग से १ घण्टा और ३ घण्टा पहले १-१ रत्ती शर्बत गावजवां अथवा वनफ्सा में चटावें। अगर शर्बत न मिल सके, तो गरम जल के साथ फंका दें। पहले तो ज्वर वेग होगा ही नहीं, यदि न हो तब आधी खुराक फिर चटावें। यदि ज्वर हो जाय तब फिर दवा न दें और ज्वर रहे, तब एक खुराक दवा दे दें। फिर दूसरे दिन इस प्रकार ही दें। आशा है कि ३ दिन में मलेरिया शान्त हो जायगा। उसके बाद ३-४ दिन प्रातः, सायं सेवन कराने से मलेरिया होगा ही नहीं।

मात्रा—१ रत्ती से २ रत्ती तक की पूरी खुराक है। बालकों को, वृद्धों को तथा निर्बलों को कम दें। गर्भवती स्त्रियों को नहीं दें। यह क्विनीन के समान उपद्रव भी नहीं करता और उससे जल्दी मलेरिया के कीटाणुओं को नष्ट कर देता है। अन्य ज्वरों में भी ज्वर के वेग को रोकने में अति लाभदायक है।

—डा० परसादीलाल झा द्वारा
प्राणाचार्य प्रयोग मणिमाला से।

(२९) मलेरियानाशक पेय—शुद्धमल्ल २ रत्ती, शुद्ध हरितकशीश ८० रत्ती, शुद्ध स्फटिका चूर्ण २० ग्राम, शुद्ध नवसादर २० ग्राम, जल (डिस्टिल्ड) २२ औंस।

विधि—१ बोतल में जल डालकर शेष औषधियों को कपड़छन कर डाल दें और खूब हिलावें। १-२ दिन रख दें जब सब औषधियां जल में मिल जावें तब रख लें।

मात्रा तथा उपयोग—३ औंस की शीशी लेकर उसमें १ औंस यह अर्क और २ औंस पानी मिलाकर ३ मात्रा बना लें (तीन निशान लगा दें) रोगी को जब ज्वर न रहे तब ज्वर चढ़ने से पूर्व १-१ मात्रा ३-३ घण्टे बाद पिलावें। ज्वर आने पर न दें। तीन दिन देने से सब प्रकार का मलेरिया जैसे अन्येद्युष्क, तृतीयक, चातुर्थिक ज्वर नष्ट हो जाता है।

—कवि० आशुतोष मजुमदार द्वारा
प्रयोग मणिमाला से।

(३०) मलेरियारिपु वटी—पीपल छोटी २ भाग, अतीस कड़वी ४ भाग, श्वेत-वच ४ भाग, संखिया शुद्ध ¼ भाग, अभ्रकभस्म शतपुटी ½ भाग, रसपर्पटी ½ भाग, लोहभस्म शतपुटी ½ भाग, करंज बीज २ भाग।

विधि—सब औषधियों को कूट कपड़छन कर सप्तपर्णी, निम्ब, गिलोय, भूनिम्ब के स्वरस में घोटकर मूंग के बराबर गोली बनाकर छाया में सुखाकर रख लें।

मात्रा तथा सेवन विधि—प्रथम २-३ दिन कोष्ठ शुद्धि कराकर ज्वर के वेग से ३ घण्टे पहले एक गोली, २ घण्टे पहले १ गोली तथा १ घण्टे पहले १ गोली कुल ३ गोली जल से सेवन करावें। ज्वर का वेग शान्त होने पर प्रातः-सायं १-२ गोली २-४ दिन तक सेवन करावें।

उपयोग—मलेरियानाशक उत्तम गोलियां हैं।

—पं० विजयकाली भट्टाचार्य द्वारा
प्रयोग मणिमाला से।

(३१) किरातारिष्ट—चिरायता, यवतिक्ता, कुटकी, नागरमोंथा, स्वर्णपत्री, गिलोय, नीम की छाल सभी १-१ किलो।

विधि—सातों औषधियां लेकर जौकुट कर लें। इन्हें ५६ किलो जल में औटावें। जब १४ किलो जल शेष रहे तब छानकर उसमें १०० ग्राम करंज बीज तथा १०० ग्राम अतीस कड़वी कूट कपड़छन करके मिला दें तथा ५ किलो मिश्री मिलाकर मिट्टी के पात्र में भरकर जमीन

में गाड़ दें। जब १५ दिन हो जावें तब निकाल छानकर बोतल में भरकर रख लें।

व्यवहार विधि—१५-२० ग्राम तक जल मिलाकर प्रातः-सायं सेवन करावें।

उपयोग—यह विषमज्वर तथा जीर्णज्वर के लिये उत्तम अरिष्ट है। ऐसे रोगी जिनके शरीर में मन्दज्वर बना रहता है तथा क्विनैन से कोई लाभ नहीं होता उन्हें इस योग से लाभ हो जाता है।

—वैद्य प्रदीपनारायण द्वारा
प्रयोग मणिमाला से।

(३२) विषमज्वरहर वटी—करंज की मींग ५० ग्राम, जीरा सफेद किञ्चित् भुना हुआ २५ ग्राम, बबूल की ताजी पत्ती (डण्ठल रहित) २५ ग्राम, पीपरामूल ५० ग्राम, मेंहदी के बीज ५० ग्राम, चक्रमर्द के बीज ५० ग्राम, गोदन्तीहरताल भस्म २५ ग्राम।

विधि—सब औषधियों को कूट छानकर गोदन्ती मिलाकर सत्यानाशी के स्वरस की ३ भावना देकर चना प्रमाण की गोलियां बना लें।

मात्रा एवं व्यवहार विधि—१-४ गोली तक गरम जल के साथ ज्वर के पूर्व सेवन करावें। बाद में ज्वर उतरने पर १-२ गोली सुबह शाम २-४ दिन तक प्रयोग करावें।

उपयोग—विषमज्वर के लिये उत्तम गोलियां हैं। अनेक बार अन्य औषधियों के निष्फल होने पर इनका आश्चर्यजनक लाभ देखने को मिला है।

—पं० क्षेमचन्द जैन द्वारा
प्राणा० प्रयोग मणिमाला से।

(३३) विषमज्वरहर वटी—कालमेघ घनसत्व, चिरायता घनसत्व, गिलोय घनसत्व, अभ्रकभस्म, लाल फिटकरी का फूला, लोहभस्म, करंज मींग प्रत्येक १०-१० ग्राम, शुद्ध मीठा तेलिया ६ ग्राम, रससिन्दूर ६ ग्राम, तुलसीपत्र ५० ग्राम।

विधि—सब औषधियों को अच्छी तरह खरल करके नीम के पत्र रस में घोटें तथा चना बराबर गोली बना लें।

मात्रा—१-१ गोली ३ बार जल या सुदर्शन अर्क के साथ सेवन करावें।

उपयोग—मलेरिया ज्वर में उपयोगी गोलियां हैं। बार-बार मलेरिया आने से प्लीहावृद्धि होने पर भी लाभकारी है। —प० रामस्वरूप शर्मा द्वारा
प्रयोग मणिमाला से।

(३४) जीर्णविषमज्वरनाशनी वटी—सोंठ, अतीस, कालीमरिच, पिपरामूल, छोटी पीपर, तुलसी के पत्र, बड़ी हरड़ का बक्कल, कुटकी, शुद्ध कुचला, इन्द्रायण की जड़, पारद गन्धक की कज्जली, वनपमा, पित्तपापड़ा, चिरायता प्रत्येक २५-२५ ग्राम, अमृतादिघनसत्व,[१] गोदन्ती हरताल भस्म, शुद्ध फिटकरी ५०-५० ग्राम, शुद्ध करंजगिरी १५० ग्राम।

विधि—काष्ठादि औषधियों का सूक्ष्म चूर्ण कर कज्जली तथा भस्मादि समस्त औषधियों को खरल में डालकर जल के योग से भली प्रकार खरल कर लें अनन्तर ३-३ रत्ती की गोली बना लें।

मात्रा—मलेरिया ज्वर में ज्वर आने से पहले १-१ घण्टे के अन्तर से २-२ गोलियां कुल ६ गोली जल के साथ दे दें। अनन्तर ज्वर उतरने के बाद १-१ गोली प्रातः-सायं सेवन करा दें।

उपयोग—मलेरिया के कीटाणु उपर्युक्त मात्रानुसार देने से २ दिन में ही नष्ट हो जाते हैं। बार-बार लौटकर

१—**अमृतादि घनसत्व की निर्माण विधि**—हरी गिलोय २॥ किलो, सप्तपर्ण की छाल २॥ किलो, नीम की अन्तर छाल २॥ किलो, चिरायता १॥ किलो, कुटकी १ किलो, जल ४० किलो।

विधि—सभी को जवकुट कर जल में डालकर ५ दिन तक भिगोवें प्रतिदिन १ बार हाथों से मसलते रहें। ५ दिन तक भीगने के बाद पात्र को अग्नि पर रखकर मन्दाग्नि से क्वाथ सिद्ध करें। २० किलो शेष रहने पर किसी दूसरे पात्र में छानकर रख लें। अब इसे पुनः अग्नि पर चढ़ाकर धीमे-धीमे गाढ़ा कर लें। अवलेह सा होने पर उतार कर सुखा लें तथा पात्र से खुरचकर निकालकर काम में लावें। यही अमृतादि घनसत्व है।

—लेखक द्वारा।

आने वाले मलेरिया के लिये अति उत्तम योग है यह जीर्णज्वर तथा उसमें होने वाली दुर्बलता के लिये रामबाण योग है।

—पं० गयाप्रसाद शास्त्री द्वारा प्राणा० प्रयोग मणिमाला से।

(३५) सर्वज्वरहर अर्क—करंज के पत्ते, निम्बवृक्ष की अन्तर छाल, चिरायता हरा, चित्रक हरा, धनियां, गिलोय पंचांग हरा, आंवला प्रत्येक २००-२०० ग्राम, जल १२ किलो।

विधि—इन सब औषधियों को जौकुट कर जल में १ दिन भिगो दें तथा दूसरे दिन भवका से ७ बोतल अर्क खींच लें। और उस अर्क में फिटकरी की खील, सुहागे की खील, गोदन्ती हरताल भस्म, चूना, नीबू का रस ६-६ ग्राम, मर्दन कर मिला दें। यह गुलाबी रङ्ग का अर्क बन जावेगा।

मात्रा—१० से २५ ग्राम तक ज्वर आने से पूर्व १-२ बार में पिला दें। बाद में ज्वर उतरने पर दूसरे दिन भी १-२ मात्रा और दे दें।

उपयोग—विषमज्वर में उपयोगी अर्क है। अन्य ज्वरों में भी लाभदायक है। कुछ दिन के प्रयोग से जीर्णज्वर को समूल नष्ट कर देता है।

—पं० श्रीपतिप्रसाद द्वारा प्रयोग मणिमाला से।

(३६) मलेरियासंहार वटी—कल्पनाथ (कालमेघ) सत्व १० ग्राम, सप्तपर्णत्वक् सत्व १० ग्राम, कुटकी सत्व १० ग्राम, कुचलात्वक् सत्व १० ग्राम, शुद्ध करंज बीज चूर्ण ४० ग्राम, लाल फिटकरी ४० ग्राम।

विधि—सबको मिलाकर पानी के साथ ३-३ रत्ती की गोली बनाकर छाया में सुखा लें।

मात्रा—१-२ गोली ज्वर आने से पूर्व या आवश्यकता के समय ४ घण्टे पूर्व १ घण्टे के अन्तर से प्रयोग करनी चाहिये।

अनुपान—ताजा जल या दूध के साथ सेवन करावें।

उपयोग—यह क्विनीन की तरह नाशकारी निरापद महौषधि है। क्विनीन की तरह ज्वर इससे शीघ्र रुक जाता है किन्तु कोई उपद्रव खुश्की, कान से सुनाई न देना वमन इत्यादि नहीं होते हर प्रकार के विषमज्वरों में यह औषधि पहले से देने पर ज्वर के आगमन को रोक देती है यकृत् तथा प्लीहा को सहायता देकर रक्तकण नाश होने से बचाती है साधारण ज्वरों में भी लाभकारी है। ज्वर आने से पूर्व ६ गोली रोगी को अवश्य दे देनी चाहिये। १०१° डिग्री से ऊपर यदि ज्वर हो तो इसका उपयोग नहीं कराना चाहिये ज्वर उतरने पर इसका प्रयोग कराना चाहिये। मलेरिया के प्रतिषेध के लिये घर के अन्य सदस्यों को १ गोली नित्य कुछ दिन तक प्रयोग करानी चाहिये। इसी प्रकार मलेरिया से बार-बार ग्रसित होने वाले रोगियों को भी इसका कुछ दिन तक लगातार प्रयोग कराने से लाभ हो जाता है।[1]

—वैद्यराज विश्वनाथ द्विवेदी द्वारा वैद्य सहचर से।

(३७) विषमज्वर नाशक अर्क—हजार दाना १½ किलो, पित्तपापड़ा १ किलो, काली अनन्तमूल ½ किलो, ताजा गूमा १½ किलो, काली तुलसी ½ किलो, खूबकलां २५० ग्राम, मुलहठी ४०० ग्राम तथा बरबरी (ममरी) ४०० ग्राम, इसके अतिरिक्त ८० किलो जल पृथक् ग्रहण करें।

विधि—सूखी वस्तुओं को पहले कुचलकर यवकुट करें फिर गूमा तथा तुलसी की पत्तियों को भी कुचल दें इन सबको कलईदार पात्र में डालकर ऊपर से जल डाल दें। गर्मियों के दिन में २४ घण्टे तथा शीतकाल में तीन दिन तक भिगोकर प्रातःकाल अर्क खींच लें।

मात्रा—इसकी पूर्ण मात्रा एक बार में २० ग्राम है बच्चों को आधी मात्रा देनी चाहिये।

१—"मलेरियासंहार वटी" मलेरियानाशक दिव्य औषधि है। यह ललितहरि आयुर्वेदिक कालेज पीलीभीत के अनुसन्धान विभाग की आविष्कृत औषधि है और भारतवर्ष के प्रत्येक प्रान्त से इसकी सफलता के सन्देश मिले हैं। धन्वन्तरि कार्यालय द्वारा भी ग्राहकों की सुविधा के लिये इसका निर्माण किया जाता है जो वैद्यगण इसका निर्माण स्वयं न कर सकें वह धन्वन्तरि कार्यालय से मंगा सकते हैं। —सम्पादक।

समय—यदि ज्वर का वेग मन्द तथा दोषों का विकृति के लक्षण साधारण हों तो सुबह शाम को १-१ मात्रा दें। ज्वर तथा दोष बढ़े हों तो सुबह दोपहर शाम तथा सोते समय नित्य ५-५ मात्रायें दें।

अनुपान—केवल अर्क को बिना कुछ मिलाये पिलाना चाहिये।

उपयोग—इस अर्क के व्यवहार से सभी प्रकार के विषमज्वर का निवारण होता है। जीर्णज्वर तथा पित्त-ज्वर में भी बहुत लाभकारी है। यकृत्प्लीहावृद्धि में भी लाभ करता है जो रोगी अनेक औषधि लेने के बाद भी ज्वर मुक्त न हुये वह इस अर्क से ठीक हो गये।

—अनुभूत योग पंचम भाग से।

(३८) ज्वर वटी—हल्दी, दारुहल्दी, कालीमरिच, आंवला, सोंठ, बड़ी हरड़, चित्रक, कूट, छोटी पीपर, सेंन्धानमक, नीम की पत्तियां, नीम गिलोय १०-१० ग्राम, नागरमोंथा ४० ग्राम तथा नीम गिलोय का जल १०० ग्राम।[1]

विधि—सेंन्धवलवण तथा गिलोय को छोड़कर सभी औषधियों को इमामदस्ते में कूटें सब औषधियां जब अध-कचरी हो जावें तब उनमें कच्ची गिलोय को मिलाकर कूटें तथा अधकचरी अवस्था में ही सभी औषधियों को धूप में सूखने के लिये रख दें जब सूख जावें तब कूटकर कपड़छन कर लें फिर सेंन्धवलवण मिला लें और पत्थर के खरल में डालकर ऊपर से गिलोय के जल के साथ घोटें। घुट जाने पर मटर के बराबर गोलियां बनाकर सुखा लें।

मात्रा—१-३ गोली तक जल या दार्व्यादिक्वाथ के साथ सेवन करावें।

उपयोग—इससे पारी से आने वाला ज्वर तथा सभी प्रकार के ज्वर नष्ट हो जाते हैं।

—अनुभूत योग प्रथम भाग से।

(३९) जूड़ीनाशक अर्क—गूमा का पंचांग, नीम की अन्तर्छाल, तुलसी काली, पारिजात (हारसिंगार) के मुलायम पत्ते, करंज की मिंगी, कुटकी, छतिवन की छाल, गिलोय, शिवलिंगी का पंचांग तथा इन्द्रजो इनको ५०-५० ग्राम लें।

विधि—ऊपर लिखी औषधियों को जौकुट कर ५ किलो जल में भिगो दें। तीन दिन भीगने के बाद भबके द्वारा अर्क खींच लें।

मात्रा—१०-२० ग्राम तक बिना जल मिलाये ही सेवन कराया जा सकता है।

उपयोग—इस अर्क के सेवन से एकादिक, द्वितीयक, तृतीयक, चातुर्थिक तथा वेग से आने वाले शीत ज्वर समूल नष्ट हो जाते हैं। यदि ज्वर पुरातन हो साथ में यकृत्प्लीहा वृद्धि भी हो तो भी इस योग के प्रयोग से लाभ हो जाता है। —रसायनसार द्वितीय भाग से।

(४०) विषमज्वर नाशक पावडर—आक का दूध २५० ग्राम, शक्कर १ किलो, शुद्ध गेरू १०० ग्राम, शुद्ध फिटकरी १०० ग्राम।

विधि—पहले एक पत्थर के खरल में आक का दूध एकत्रित करके उसमें १ किलो शक्कर मिलाकर घोटें जब ३ घण्टा घुटाई हो जाय तब उसमें गेरू तथा फिटकरी भी मिला दें और पुनः घोटें जब अच्छी तरह सभी चीजें घट जावें तो निकालकर सुखा लें यह एक सफेद पावडर जैसा बन जाता है।

मात्रा तथा अनुपान—१॥ ग्राम की मात्रा में यह पावडर ५ बजे ठण्डे जल से, फिर १ घण्टे बाद ६ बजे १॥ ग्राम और इसी तरह ७ बजे १॥ ग्राम कुल तीन मात्रायें दे दें फिर दिन भर कोई मात्रा न दें। यह मात्रा वयस्कों के लिये है। ५ वर्ष तक की आयु के बच्चों को केवल २ मात्रायें देनी चाहिये। इस तरह तीन दिन तक लगातार यह मात्रा देना चाहिये।

१—**गिलोय का जल बनाने की विधि**—रात को मिट्टी या पत्थर के बर्तन में १२५ ग्राम जल डालकर उसमें १२५ ग्राम गिलोय मिलाकर डाल दें और रात भर भीगने दें प्रातःकाल उसको पानी से निकालकर सिल पर भांग की तरह घोटें और उनके बचे हुये जल में ठंडाई की तरह छान लें यही गिलोय का जल उपरोक्त ज्वर वटी में काम आता है। —सम्पादक।

उपयोग—इसके सेवन से पहले दिन से ही लाभ होने लगेगा ज्वर की पारी पहले दिन ही कम वेग से आवेगी। तीन दिन में मलेरिया बिलकुल चला जावेगा और वापस नहीं लौटेगा। साथ ही यकृत्प्लीहा वृद्धि नही होगी। सुलभ, निरापद, मीठा, सरल तथा बहु-परीक्षित योग है। गर्भवती स्त्रियों को भी इसका प्रयोग कराया जा सकता है। —वैद्य रेवाशंकर शर्मा द्वारा धन्वन्तरि चिकित्सा अनुभवांक भाग २ से।

विशेषांक के लिये प्रेषित विशेष योग—

(४१) शीतांशु सुदर्शन योग—शुद्ध मनःशिला १५ ग्राम, शुद्ध हरताल १५ ग्राम, सोंठ १० ग्राम, कालीमरिच १० ग्राम, छोटी पीपल १० ग्राम, महासुदर्शन चूर्ण ३०० ग्राम।

भावना—निम्बू रस, द्रोणपुष्पी रस।

निर्माण विधि—प्रथम शुद्ध मनःशिला व शुद्ध हरताल को एक जगह मिलाकर घुटाई करें। फिर निम्बू के रस से इतना तर कर दें, कि रबड़ी के समान हो जावे। फिर अच्छी प्रकार घुटाई करके सुखा दें। अच्छी प्रकार सूख जाने पर सोंठ, कालीमरिच; छोटी पीपल, इनको कूट-छानकर किया हुआ चूर्ण व महासुदर्शन चूर्ण मिलाकर ३ घण्टे घुटाई करके द्रोणपुष्पी (गूमा) का रस मिला रबड़ी के समान पतला करके इतनी घुटाई करें, कि सब रस सूखकर नमीरहित पाउडर बन जावे तब ½-½ ग्राम के कैपसूल भरकर सुरक्षित रखें। या चूर्ण रूप में ही रख कर प्रयोग करे। या ½-½ ग्राम की गोली या टेबलेट बनाकर प्रयोग में लावें।

मात्रा—१-१ कैपसूल दिन में २ या ३ बार गर्म पानी के साथ दें।

औषधि कैपसूल के रूप में प्रयोग की जावे या गोली, टेबलेट बनाकर अथवा चूर्ण रूप में प्रयोग की जावे। पूर्ण आयु के व्यक्ति के लिये एक बार की मात्रा ½ ग्राम की है, यह पूर्ण मात्रा है। कम आयु वालों को आयु के अनुसार कम मात्रा में दी जानी चाहिए।

उपयोग—शीतांशु सुदर्शन सब प्रकार के शीत लगकर आने वाले मलेरिया ज्वरों को दूर करने के लिए उपयोगी औषधि है। प्रायः २ या ३ दिन में मलेरिया चला जाता है। एकातरा, तृतीयक, चातुर्थिक, सन्तत, सतत् आदि सभी प्रकार के विषम ज्वरों में इसका प्रयोग लाभदायक है। पारी के ज्वरों में ज्वर चढ़ने के समय से ६ घण्टे पूर्व १ मात्रा तथा ज्वर चढ़ने से २ घण्टे पूर्व दूसरी मात्रा का प्रयोग करने से प्रायः ज्वर की पारी रुक जाती है। फिर भी २ या ३ दिन प्रातः-सायं दिन में १ मात्रा देते रहना चाहिए, जिससे दोबारा जल्दी ज्वर न लौट सके। साधारणतया इस औषधि की प्रतिदिन २ मात्रा (१ मात्रा प्रातः व १ मात्रा शाम को) देना काफी रहता है, परन्तु हम अधिकतर दिन भर में ३ मात्रा ६-६ घण्टे बाद प्रयोग में लाते है। ज्वर की पारी टूटने पर प्रातः व सायं २ मात्रा प्रतिदिन प्रयोग कराते हैं।

जो रोगी हमारे पास आने से पूर्व क्विनीन, क्लोरोक्वीन, एमिडोक्वीन आदि का अधिक प्रयोग कर चुके हैं, लेकिन मलेरिया ज्वर उनका पीछा नहीं छोड़ता; उन रोगियों को प्रातः व शाम को कुल २ मात्रा प्रतिदिन सेवन कराने से अच्छा आराम मिलता है।

अधिकतर शीतांशु सुदर्शन का उपयोग बुखार के उतर जाने पर तथा चढ़ने से पूर्व होता है। परन्तु हठीले प्रकार के ऐसे विषम ज्वर पर जो चढ़कर २ या ३ दिन उतरना नही चाहता, तब हम चढ़े-उतरे का ख्याल नहीं करते और बराबर उपयोग करना होता है।

अनुभव—हमारे अपने अनुभव के अनुसार यह औषधि विषम ज्वर (मलेरिया) के लिए बहुत प्रभावशाली रही है। क्विनीन, क्लोरोक्वीन, प्रीमाक्वीन आदि के समान लाभ के हानि भी हो, ऐसी इससे कोई सम्भावना नहीं है। इससे जीवनीय शक्ति निर्बल नहीं होने पाती। गर्भवती स्त्रियों व छोटे बच्चों पर भी इसका प्रयोग मात्रानुसार हम करते है, कोई हानि नहीं हुई।

विषम ज्वरों के अलावा साधारण कफज्वरों व अजीर्णजन्य ज्वर, कृमिजन्य ज्वरों पर भी इसका प्रयोग लाभदायक है।

मलेरिया फैलने के समय में प्रति सप्ताह या प्रति २ सप्ताह पर प्रातः ही नास्ते के बाद १ मात्रा का प्रयोग

करते रहने पर मलेरिया से बचाव रहता है, मलेरिया आता ही नहीं। कदाचित आ ही गया, तो मामूली ढंग पर साधारण ही रहेगा।

कृतज्ञता—शीतांशु सुदर्शन का योग माननीय डा० लक्ष्मीपति जी द्वारा अनुभव किया हुआ है तथा रसतन्त्र-सार व सिद्ध प्रयोग संग्रह द्वितीय खण्ड, तृतीय संस्करण के ज्वराधिकार पृष्ठ ५६ पर "शीतांशु रस" नाम से उल्लखित है। इसी शीतांशु रस में सुदर्शन चूर्ण को उचित मात्रा में सम्मिलित करके तथा संशोधन करके प्रयोग की सहूलियत के अनुसार "शीतांशु सुदर्शन" नाम दिया गया है। अतः मूल योग के अनुभवकर्त्ता माननीय डा० लक्ष्मी-पति जी तथा प्रकाशक कृष्णगोपाल आयुर्वेद भवन कालेड़ा, अजमेर के कृतज्ञ हैं।

—विमला देवी वर्मा, प्रकाश आयुर्वेदिक फार्मेसी, गुनियाजुड्डी, दूधली; मुजफ्फर नगर।

(४२) मलेरिया वटी—निम्बोली की मींग (गिरी) १०० ग्राम, लौंग (देवकुसुम) १० ग्राम, गन्धक २० ग्राम, सौंचर (सुवर्चलम्) नमक १० ग्राम, काली मरिच १० ग्राम।

विधि—ऊपर के सभी द्रव्यों का चूर्ण बना लें। फिर उसे तुलसीपत्र के स्वरस की ३ भावनायें देकर चने के बराबर गोलियां बना लें।

उपयोग—यह हमारा खानदानी नुस्खा है जो शीत-ज्वर, जीर्णज्वर व मलेरिया में आशातीत लाभदायी सिद्ध हुआ है। जब मलेरिया का वातावरण चल रहा हो, तब हर रोज यह गोली लेने से प्रतिरक्षा होती है। बुखार चढ़ने पर लेने से भी आराम देती है। २-२ गोली २ या ३ बार उबले (पके) पानी से लेनी चाहिए।

—वैद्य बल्देवप्रसाद एच० पनारा अनिल मार्ग, मु० अहमदाबाद—२५।

[इ] प्रमुख शास्त्रीय योग

क्रमांक	कल्पना	औषधि नाम	ग्रन्थ सन्दर्भ	मात्रा एवं समय	अनुपान	विशेष
१	रस	शंखविषोदय रस	र० त०	१२५ मि०ग्रा० दिन में २ बार	मधु	एकाहिक, तृतीयक में उपयोगी।
२	,,	तुल्यकोदय रसायन	,,	२५० मि०ग्रा० दिन में २ बार	ताम्बूलपत्र-स्वरस	,, ,,
३	,,	महाज्वरांकुश रस	यो० र०	१२५–५०० मि० ग्रा० दिन में २ बार	तुलसीपत्र-स्वरस + मधु	वेदनाशामक, ज्वरघ्न।
४	,,	शीतभंजी रस	र० रा० सु०	१२५–२५० मि० ग्रा० दिन में २ बार	तुलसीपत्र-स्वरस	सतत ज्वर में।
५	,,	अचिन्त्यशक्ति रस	,,	३७५ मि०ग्रा० प्रथम दिन २५० मि०ग्रा० दूसरे दिन १२५ मि०ग्रा० तीसरे दिन	,,	,,
६	,,	जयमंगल रस	,,	१२५ मि०ग्रा० दिन में २ बार	जीरक + मधु	सब प्रकार के विषम ज्वरों में।

७	रस	मृत्युञ्जय रस	भै० र०	१२५ मि०ग्रा० दिन में १ बार	भृष्टकलविङ्का + गुड़	सब प्रकार के विषम ज्वरों में।
८	,,	लक्ष्मीनारायण रस	यो० र०	,, ,,	आर्द्रक स्वरस + मधु	ज्वर के तीव्र वेग में उपयोगी।
९	,,	नारायण ज्वरांकुश रस	यो० र०	,, ,,	,,	वेदनाशामक, ज्वरघ्न, पाचक।
१०	,,	वातेभकेसरी रस	मि० भै० मञ्जू०	,, ,,	गुड़ मिलाकर	एकाहिक, तृतीयक, चातुर्थक में उपयोगी।
११	,,	भूतभैरव रस	र० त० सा०	,, ,,	शर्करा	,,
१२	,,	गदमुरारी रस	नि० र०	६० मि०ग्रा० दिन में २ बार	तुलसीपत्रस्वरस + मधु	,,
१३	,,	उमाप्रसादन रस	र० र० स०	१२५–२५० मि० ग्रा० दिन में २ बार	,,	चातुर्थक ज्वरहर।
१४	,,	लक्ष्मीविलास रस	र०यो०सा०	,, ,,	,,	अति शीत में।
१५	,,	स्वर्णमालिनी वसन्त	यो० र०	,, ,,	पिप्पली + मधु	जीर्ण, विषम ज्वर में।
१६	भस्म	हरताल भस्म	र० त०	६०–१२५ मि० ग्रा० दिन में १ बार	गोदुग्ध	शीत ज्वर में उपयोगी।
१७	,,	शम्बूक भस्म	र०त०सा०	१२५–३७५ मि० ग्रा० दिन में २ बार	तुलसी-स्वरस + मधु	सभी विषम ज्वरों में उपयोगी।
१८	,,	कासीस भस्म	र० त०	,, ,,	पिप्पली + मधु	रक्तक्षय में उपयोगी।
१९	,,	गोदन्ती भस्म	,,	२५०–७५० मि० ग्रा० दिन में २ बार	सिता + सुदर्शन क्वाथ	शीत ज्वर में उपयोगी।
२०	,,	शुभ्रा भस्म	,,	,, ,,	शर्करा	,, ,,
२१	लौह	चन्दनादि लौह	र० रा० सु०	२५० मि०ग्रा० दिन में २-३ बार	मधु से चाटकर मुस्तक चबायें	जीर्ण विषम ज्वर में
२२	,,	विषमज्वरान्तक लौह	भै० र०	१२५–२५० मि० ग्रा० दिन में २ बार	मधु	,, ,,
२३	,,	पुटपक्व विषमज्वरान्तक लौह	,,	१२५ मि०ग्रा० दिन में २ बार	,,	,, ,,
२४	,,	सर्वज्वरहर लौह	,,	१२५–२५० मि० ग्रा० दिन में २ बार	,,	,, ,,
२५	,,	बृहत् सर्वज्वरहर लौह	,,	१२५ मि०ग्रा० दिन में २ बार	,,	,, ,,

२६	लौह	ताप्यादि लौह	च० द०	१२५–२५० मि० ग्रा० दिन में २ बार	मधु	विषमज्वरजन्य पाण्डु में।
२७	,,	कालमेघ नवायस लौह	सि०यो०सं०	३७५ मि०ग्रा० दिन मे २ बार	,,	शीत ज्वर मे उपयोगी।
२८	वटी	संजीवनी वटी	शा० सं०	२ गोली दिन में २-३ बार	गु०तुल्य, ताल शुक्ति संस्कारित जल से	,, ,,
२९	,,	अमृत वटी	सि० भै० मञ्जू०	१–२ गोली दिन में २ बार	निम्बुक नीर	,, ,,
३०	,,	हरीतक्यादि वटी	सि० भै० मणि०	,, ,,	उष्ण जल	,, ,,
३१	,,	अमरसुन्दरी वटी	नि० र०	,, ,,	,,	वातप्रकोप में उपयोगी।
३२	,,	सौभाग्य वटी	भै० र०	,, ,,	,,	अभिन्यास मे उपयोगी।
३३	,,	ज्वरकेसरी वटी	,,	,, ,,	जल	शीतज्वर मे उपयोगी।
३४	,,	मल्लसिंदूर वटी	आ० नि० मा०	,, ,,	,,	तृतीयक, चातुर्थक में उपयोगी।
३५	चूर्ण	निम्बादि चूर्ण	भा० प्र०	३ ग्राम दिन में २ बार	गुडूची क्वाथ	सभी प्रकार के विषम ज्वरों में।
३६	,,	लघु सुदर्शन चूर्ण	यो० र०	३–४ ग्राम दिन मे २ बार	कवोष्ण जल	,, ,,
३७	,,	महा सुदर्शन चूर्ण	शा० सं०	२–४ ग्राम दिन में २ बार	४ ग्राम चूर्ण का ही फाण्ट	,, ,,
३८	,,	अमृत चूर्ण	र० त० मा०	२५०–३७५ मि० ग्रा० दिन में २ बार	दुग्ध	सतत, सन्तत ज्वर मे।
३९	आसव–अरिष्ट	अमृतारिष्ट	भै० र०	१५-२० मि०लि० भोजनोत्तर	समान जल मिलाकर	सभी विषम ज्वरों में।
४०	,,	लोहासव	,,	,, ,,	,,	जीर्ण विषम ज्वरों मे।
४१	कल्क	रसोन कल्प	च० द०	१–३ ग्राम प्रातः	—	,, ,,
४२	तैल	महालाक्षादि तैल	भै० र०	यथेष्ट प्रातः	अभ्यङ्गार्थ	ज्वरशामक, बल्य।
४३	,,	भूम्बादि तैल	,,	,, ,,	,,	,,
४४	,,	अङ्गारक तैल	शा० सं०	,, ,,	,,	शीत लगने पर उपयोगी।
४५	,,	अगुर्वादि तैल	चरक०	,, ,,	,,	,,
४६	क्वाथ	मुस्तादि क्वाथ	च० द०	१०–२० ग्राम का क्वाथ २ बार	पिप्पली चूर्ण + मधु डाले	सभी विषम ज्वरो मे।
४७	,,	महौषधि क्वाथ	,,	,, ,,	सिता + मधु	तृतीयक मे उपयोगी।
४८	,,	वासादि क्वाथ	,,	,, ,,	,,	चातुर्थक मे उपयोगी।
४९	,,	पटोलादि क्वाथ	,,	,, ,,	,,	सतत मे उपयोगी।
५०	,,	निम्बादि क्वाथ	,,	,, ,,	,,	अन्येद्युष्क मे उपयोगी।

५१	क्वाथ	किरातादि क्वाथ	च० द०	१०–२० ग्राम	सिता+मधु	तृतीयक में उपयोगी ।
५२	,,	गुडूच्यादि क्वाथ	,,	का क्वाथ २ बार		
५३	,,	त्रिवृतादि क्वाथ	,,	,, ,,	,,	चातुर्थक में उपयोगी ।
५४	,,	कलिङ्गकादि क्वाथ	,,	,, ,,	,,	,,
५५	अञ्जन	सैन्धवादि अञ्जन	,,	,, ,,	अञ्जनार्थ	—

मलेरिया (विषम ज्वर) में सामान्य चिकित्सा उपक्रम

वातप्रधान विषमज्वर में वातघ्न द्रव्यों से सिद्ध घृत, आस्थापन, अनुवासन वस्ति तथा स्निग्धोष्ण अन्नपान देवें। पित्तप्रधान में विरेचन, क्षीर प्रयोग तथा पित्तघ्न द्रव्यों से साधित गोघृत, तिक्तरस, शीतवीर्य औषधि अन्नपान देवें। कफप्रधान में वमन, पाचन, लंघन उपक्रम करें तथा कषायरस उष्णवीर्य रूक्ष औषधि का अन्नपान देवें।

मलेरिया में मलावरोध विशेष रूप से हो जाता है अतः रात्रि को किसी मलावरोधक औषधि का प्रयोग अवश्य कराना चाहिये। जीवाणुजन्य विषमज्वर में वस्ति या विरेचन देने से रोग का वेग कम हो जाता है।

मलेरिया में सफल औषधि व्यवस्था-पत्र

(१) महाज्वरांकुश रस २५० मि० ग्रा०, गोदन्ती भस्म ५०० मि० ग्रा०, चन्दनादि लौह २५० मि० ग्रा०, करंजबीज चूर्ण १ ग्राम। ×१ मात्रा तुलसी पत्र स्वरस से दिन में २ बार।

(२) सुदर्शन चूर्ण–३ ग्राम ×१ मात्रा १० बजे तथा ३ बजे मुस्तकादि क्वाथ से।

(३) अमृतारिष्ट–१५ मि० लि०, लोहासव–१० मि० लि०। × बराबर मिलाकर भोजनोपरान्त दोनों समय।

[ई] प्रमुख पेटेण्ट आयुर्वेदीय योग

क्रमांक	योग का नाम	निर्माता कम्पनी	उपयोग विधि	विशेष
१	क्यूरिल टेवलेट (Curil tab.)	चरक फार्मेस्यु०	१–२ गोली २ या ३ बार दूध से ज्वर उतरने पर	विषमज्वर के भेदों तथा अन्य ज्वरों में।
२	मलेरिया वटी	वैद्यनाथ	,, ,,	,, ,,
३	मलेरिया टेवलेट	डावर	,, ,,	,, ,,
४	करंजादि वटी	धन्वन्तरि कार्यालय	,, ,,	,, ,,
५	मलेरिया संहार वटी	धन्वन्तरि तथा अन्य फार्मेसी	,, ,,	विषमज्वर की सभी अवस्थाओं में उपयोगी।

६	सुदर्शन घनसत्व वटी	गर्ग वनौषधि	२–४ गोली दिन में २-३ बार।	विषमज्वर की सभी अवस्थाओं में उपयोगी।
७	विषम ज्वरान्तक कैपसूल	"	१–२ कैपसूल ज्वर उतरने पर।	
८	मलेरियाहर कैपसूल	ज्वाला आयु०	" "	
९	ज्वरसंहार कैपसूल	जी० ए० मिश्रा	" "	
१०	ज्वरारि	धन्वन्तरि कार्यालय	१–२ चम्मच ज्वर उतरने पर २-३ बार दें। ठीक होने पर भी दिन में १-२ बार जल में मिलाकर दें।	
११	प्राणदा	वैद्यनाथ	" "	
१२	जूड़ी-ताप	डाबर	" "	
१३	ज्वरहारी	ज्वाला आयु०	" "	
१४	हरित ज्वरारि	मोहता रसा०	" "	
१५	नाय सूचीवेध	सिद्धि फार्मेसी	२ मि० लि० आवश्यकता के समय मांस में।	
१६	मलेरिया सूचीवेध	"	" "	
१७	ज्वरसंहार सूचीवेध	"	" "	जीर्ण विषमज्वर में उपयोगी।
१८	गिलोय सूचीवेध	प्रताप फार्मा	" "	

[३] प्रमुख पेटेण्ट एलोपैथिक योग

औषधि का नाम	निर्माता	मात्रा एवं व्यवहार-विधि	विशेष
१. इञ्जेक्शन १. रिसोचिन (Resochin)	Bayer	२–५ मि० लि० गहरे मांस में नित्य या आवश्यकतानुसार।	इञ्जेक्शन शरीर में गर्मी अधिक न करे, इसलिये इसमें रिडाक्सोन (Redoxon) इञ्जेक्शन (विटामिन सी) को आवश्यक मात्रा में मिलाकर लगा सकते हैं। बी-कम्पलैक्स के इञ्जेक्शन पालीवियोन (Polyvion) भी मिलाकर लगाया जा सकता है।

२. सिपलाक्वीन (Ciplaquine)	Cipla	,, ,,	,,
३. निवाक्वीन (Nivaquine)	M. & B.	,, ,,	,,
४. लेरिगो (Lariago)	IPCA	,, ,,	,,
२. टेबलेट			
१. रिसोचिन (Resochin)	Bayer	वयस्क—पहले दिन पहली मात्रा एक साथ ४ गोली की दें। बाद में ६-६ घन्टे से १-२ गोली तक दें। पूर्ण लाभ के लिये दूसरे दिन तथा तीसरे दिन भी २-२ गोली दिन में १ बार दें। बच्चों को—वय के अनुसार मात्रा कम करके दें।	
२. निवाक्वीन (Nivaquine)	May & Baker	,, ,,	
३. केमाक्वीन (Camoquine)	Parke Davis	,, ,,	
४. लेरिगो (Lariago)	IPCA	,, ,,	
५. मैल्यूब्रिन (Melubrin)	Ranbaxy	,, ,,	सुगरकोटेड होने से बच्चे भी ले सकते हैं।
६. डेराप्रिम (Daraprim)	Burroughs Wellcome	वयस्क तथा १० वर्ष से बड़े बच्चों को १ गोली प्रति सप्ताह दें। छोटे बच्चों को ¼–½ गोली प्रति सप्ताह दें।	मलेरिया के प्रतिषेध तथा पुनरागमन रोकने के लिए प्रयोग करावें।
७. मेटाकेल्फिन (Metakelfin)	Walter Bushnell	वयस्क—२ टेबलेट एक साथ एक बार में दें। आवश्यकता हो तो १ सप्ताह बाद ऐसी मात्रा पुनः दें। संक्रमण रोकने हेतु सप्ताह में २ गोली देवें।	मलेरिया फैल्सीफेरम में भी उपयोगी है।
३. पेय			
१. लेरिगो (Lariago)	IPCA	०–१ वर्ष तक १२½ मि० लि०; १–३ तक २५ मि० लि० (५ चम्मच) सिर्फ १ बार या २ बराबर भागों में बांटकर २४ घन्टे में केवल २ बार।	
२. बिपीक्वीन (Bipiquine)	B. P. L	,, ,,	

मूत्रकृच्छ्रता-मूत्राघात-मूत्रावरोध
[RETENSION OF URINE]

[अ] एकौषध एवं साधारण प्रयोग

(१) मुनक्का १० ग्राम, पाषाणभेद, धमासा, पुनर्नवा तथा अमलतास का गूदा ६-६ ग्राम सब को यव-कुट कर आधा किलो जल में अष्टमांश क्वाथ सिद्ध कर पिलाने से मूत्रकृच्छ्र में लाभ होता है।

(२) मुनक्का ४० ग्राम जल २ किलो एकत्र कर रात्रि में भिगोकर प्रातः पीस छानकर थोड़ा जीरे का चूर्ण तथा शक्कर मिलाकर पिलाने से मूत्रकृच्छ्र दूर होता है।

(३) एक अंजीर को ३ ग्राम कलमी शोरा के साथ सेवन कराने से मूत्रकृच्छ्र में लाभ होता है।

(४) अडूसे के पत्तो को सममाग खरबूजे के बीजों के साथ पीस-छानकर पीने से पेशाब खूब खुलकर आने लगता है और मूत्र सम्बन्धी बीमारियों में लाभ होता है।

(५) अडूसे के पत्तों के साथ कलमीशोरा तथा कासनी ६-६ ग्राम मिलाकर घोट छानकर पिलाने से मूत्र खुलकर आता है।

(६) अनन्तमूल २० ग्राम, गिलोय ताजी १० ग्राम तथा जीरा भुना हुआ तथा मंजीठ ६-६ ग्राम इनके जौकुट चूर्ण को १०० ग्राम खौलते जल में डालकर एक घण्टा ढककर रखें फिर इस फाण्ट को छानकर दिन में २-३ बार पीने से मूत्र साफ होकर तत्सम्बन्धित विकार दूर होते हैं।

(७) अनार के रस में छोटी इलायची के बीज तथा सोंठ का चूर्ण मिलाकर पिलाने से मूत्रावरोध दूर होता है। अथवा अनारपत्र १० ग्राम तथा हरा गोखरू १० ग्राम दोनों को २०० ग्राम जल में पीस छानकर पिलाने से मूत्रावरोध दूर होता है।

(८) आंवला स्वरस २० ग्राम में समभाग मिश्री मिलाकर दिन में २ बार पिलाने से अथवा आंवला में थोड़ा शहद मिलाकर पिलाने से अथवा आंवला स्वरस २० ग्राम में इलायची चूर्ण बुरककर पिलाने से थोड़ा मूत्र होना, बूंद-बूंद उतरना तथा मूत्रदाह आदि विकार दूर होते हैं।

(९) अत्यन्त कष्ट से रक्त मिश्रित मूत्र त्याग होता हो तो आंवला स्वरस में ईख का रस सममाग मिलाकर थोड़ा शहद मिलाकर सेवन कराने से लाभ होता है।

(१०) यदि मामूली सुजाकजन्य मूत्रकृच्छ्रता हो तो आंवले का चूर्ण जल के साथ घोट छानकर पीने तथा उसी जल की इन्द्री में पिचकारी देने से जलन की शान्ति होती है तथा व्रणों का रोपण होकर पूय व रुधिर आना धीरे-धीरे बन्द हो जाता है।

(११) आंवला, गोखरू, धनियां तथा शक्कर का शर्बत बनाकर दिन में ४-६ बार पिलाने से मूत्र साफ आकर मूत्राघात आदि विकार दूर होते हैं।

(१२) शुष्क आंवला १० ग्राम भिगोकर तथा उसके साथ १ ग्राम कलमीशोरा पीसकर नाभि पर लेप करने से विसूचिका में रुका हुआ पेशाब खुल जाता है।

(१३) इलायची के बीजों का चूर्ण २ ग्राम तक दूध तथा शक्कर के मिश्रण में मिलाकर लस्सी जैसा तैयार कर सेवन करने से मूत्रवह स्रोतसों पर इसका शामक कार्य होकर मूत्र का प्रमाण बढ़ता है, मूत्र साफ आता है और वस्ति स्थान की वेदना मिटती है।

(१४) इलायची, पाषाणभेद तथा पीपल के चूर्ण को चावलों के पानी के साथ थोड़ा शिलाजीत मिलाकर पिलाने से मूत्रकृच्छ्र दूर होता है।

(१५) इलायची के बीज ३० ग्राम के साथ समभाग वंशलोचन मिला कपड़छन चूर्ण कर चन्दन के तैल में खरल कर १४ गोलियां बनावें, प्रातः-सायं १-१ गोली ५० ग्राम जल के साथ सेवन कराने से मूत्रकृच्छ्र तथा मूत्राघात में लाभ होता है।

(१६) छिलके सहित इलायची ५ नग तथा तरबूज के बीज २१ नग दोनों को कूट-पीसकर तथा जल और दूध २५०-२५० ग्राम मिला धीमी आग पर पकावें दूध मात्र शेष रहने पर छानकर ठण्डा हो जाने पर सेवन कराने से मूत्रदाह मूत्रावरोध में लाभ होता है।

(१७) इलायची २ भाग, धमासा, रेडीमूल, हरड़ तथा पाषाणभेद १-१ भाग लेकर जौकुट कर चतुर्थांश क्वाथ सिद्ध करें और उसमें गोखरू, ककड़ी के बीज तथा इन्द्रजौ का चूर्ण मिलाकर सेवन कराने से मूत्रावरोध दूर होता है।

(१८) छिलकों के सहित बड़ी इलायची १० नग लेकर जौकुट कर २५० ग्राम दूध तथा २५० ग्राम जल के साथ पकावें दूध मात्र शेष रहने पर छानकर उसमें थोड़ी मिश्री मिलाकर दिन में ४ बार पिलाने से मूत्र की रुकावट तथा जलन ठीक हो जाती है।

(१९) ईसबगोल की भुसी ८ ग्राम लेकर ४०० ग्राम जल में मिला ढांककर १० मिनट तक आग पर रखें फिर उसे छानकर निचोड़कर इस जल को लगभग ५० ग्राम की मात्रा में ३-४ बार पिलाने से वस्ति तथा वृक्क के दाहजन्य या उपदंशजन्य मूत्रकृच्छ्र में परम लाभ होता है। —वनौ० वि० भाग १ से।

(२०) ककड़ी का रस २० ग्राम में जीरा चूर्ण ४ ग्राम तथा थोड़ा नीबू रस तथा मिश्री या शक्कर मिलाकर पिलाने से या ककड़ी के बीजों के साथ गोखरू, पाषाणभेद, इलायची, केशर तथा सैन्धवलवण समभाग पीसकर महीन चूर्ण बनालें। ४-६ ग्राम चूर्ण को चावल के धोवन के साथ सेवन करने से घोर असाध्य मूत्रकृच्छ्र में लाभ हो जाता है।

(२१) ककड़ी के बीजों की गिरी ४ भाग में दारुहल्दी तथा मुलहठी १-१ भाग मिला महीन चूर्ण कर चावलों के यवागू के साथ पिलाने से मूत्रकृच्छ्र में लाभ हो जाता है।

(२२) ककड़ी के बीज ३ ग्राम तथा सेंधानमक १॥ ग्राम, दोनों को एकत्र खूब महीन पीसकर आधा किलो दूध तथा पानी मे मिलाकर लस्सी बना खड़े होकर एकदम पी जावें और घूमते रहें इस क्रिया से रुका हुआ मूत्र अधिक प्रमाण में निकलकर मूत्राशय की उष्णता दूर होकर मूत्रकृच्छ्र, मलावरोध विकार दूर होते हैं।

(२३) कूष्माण्ड के २० ग्राम रस को ८ रत्ती यवक्षार तथा ६ ग्राम खांड या गुड़ के साथ सेवन करते रहने से मूत्रकृच्छ्र में लाभ हो जाता है।

(२४) चीनिया कर्पूर को पीस महीन कपड़े में लपेट कर बत्ती बनाकर अथवा महीन कपड़े की बत्ती बनाकर पुरुष के शिश्न मुख में और स्त्री के मूत्रमार्ग में धारण कराने से रुका हुआ मूत्र खुलकर हो जाता है।

(२५) कालीमरिच के ५-१० दाने लेकर खूब महीन चूर्ण कर आधी रत्ती के प्रमाण में इस चूर्ण को पतले किये हुये किञ्चित् घृत में मिला शिश्न के मुख को ऊपर की ओर कर मुख द्वार में इसकी १-२ बूंद टपका देने से शीघ्र ही मूत्रस्राव होने लगता है कभी-कभी यह क्रिया २-४ बार तक करनी पड़ती है। मूत्र के साफ होने पर यदि इन्द्रिय में जलन हो तो केवल घृत को ही बार-बार उसमें टपकावें।

(२६) कुलिंजन का चूर्ण १-१॥ ग्राम तक नारियल जल के साथ प्रातःकाल सेवन कराने से मूत्रावरोध दूर होता है।

(२७) केशर को १० ग्राम लेकर पत्थर के खरल में गुलाबजल के साथ अच्छी प्रकार घोटकर उसमें १० ग्राम शहद तथा २० ग्राम जल मिलाकर कलईदार या कांच आदि के किसी बर्त्तन में भरकर ढककर रात्रि को रख देवें। प्रातः शौचादि से निवृत्त होकर मुख शुद्धि कर इसे पी लेने से मूत्रावरोध में लाभ होता है।

(२८) खस के साथ ईख की जड़, कुश की जड़ तथा रक्तचन्दन मिला क्वाथ या फाण्ट बनाकर पिलाने से मूत्रावरोध या मूत्रकृच्छ्र में लाभ होता है।

(२९) गोखरू के पंचाङ्ग का चूर्ण १५ ग्राम तथा हरड़ व चांगेरी का चूर्ण कर १०-१० ग्राम इन तीनों को खूब महीन खरल कर २-४ ग्राम दिन में ३ बार जल के साथ सेवन कराने से मूत्रकृच्छ्र या मूत्राघात में लाभ होता है।

(३०) गोखरू के २० ग्राम चूर्ण को जल मिश्रित दूध १६० ग्राम में मिलाकर दुग्धावशिष्ट क्वाथ कर शक्कर मिला ठण्डा होने पर पिलाने से मूत्रावरोध में लाभ होता है।

(३१) गोखरू की जड़ या पंचाङ्ग के साथ समभाग धमासा, पाषाणभेद, अमलतास का गूदा, हरड़ व बबूल की छाल मिश्रण कर कूटकर क्वाथ या फाण्ट तैयार कर दिन में तीन बार पिलाने से दारुण मूत्रकृच्छ्र में भी लाभ हो जाता है।

(३२) गोरखमुण्डी के फल का चूर्ण २० ग्राम तथा गोखरू छोटा, शोरा कलमी, इलायची छोटी के दाने, पाषाणभेद चूर्ण १०-१० ग्राम तथा मिश्री ५० ग्राम सबको एकत्र खरल कर चावल के धोवन के साथ सेवन कराने से मूत्रकृच्छ्र तथा मूत्र के साथ होने वाले रक्तस्राव में लाभ होता है।

—वनौ० वि० भाग २ से।

(३३) छोंकर के पत्तों को पीसकर लुगदी बनाकर किञ्चित् गर्म कर नाभि स्थान पर बांधने से मूत्र प्रवृत्त हो जाता है।

(३४) निर्विसी [जदवार] के मोटे चूर्ण को गोखरू, मकोय, ककड़ी तथा खरबूजों के बीजों के मोटे चूर्ण के साथ रातभर पानी में भिगोकर प्रातः मल छान कर पिलाने से मूत्रकृच्छ्र तथा मूत्रावरोध दूर होता है।

(३५) यवक्षार १॥ ग्राम लेकर समभाग मिश्री मिलाकर दही के पानी के साथ या ४० ग्राम पेठे के स्वरस के साथ १० ग्राम शक्कर मिलाकर पीने से मूत्रकृच्छ्र में लाभ होता है।

(३६) पलाश [ढाक] के बीजों को उबालकर गरम-गरम बस्ति-प्रदेश पर बांधने से मूत्रावरोध दूर होता है। यदि फूलों को बिना उबाले पानी के साथ पीसकर नाभि के चारों ओर लेप कर दिया जाय, तो भी शीघ्र मूत्र की रुकावट दूर होकर मूत्र खुलकर आ जाता है।

(३७) पलाश के फूल तथा श्वेत जीरा ३०-३० ग्राम, चने की दाल २० ग्राम लेकर १ किलो पानी के साथ मिट्टी के पात्र में लगभग ८ प्रहर तक भिगोकर प्रातः इसमें से १००-१०० ग्राम पानी छानकर पीने से मूत्रकृच्छ्र में लाभ होता है।

(३८) पलाश के शुष्क पुष्प १०० ग्राम लेकर उसमें थोड़ा पानी एक कलईदार पात्र या मटकी में डाल ऊपर से एक कटोरा ढंक कर मन्द अग्नि पर रखें। भाप निकलने तक पकावें। फिर नीचे उतार कर उसमें से २५० ग्राम तक छान उसमें ३ ग्राम कलमीशोरा मिलाकर पिलावें और निचोड़े हुए फूलों को मिला रोगी के पेड़ू पर रखें, तो मूत्रकृच्छ्र में लाभ होता है।

(३९) तरबूज के बीज १० ग्राम पीसकर ठण्डाई की तरह आधा किलो जल में घोल-छानकर मिश्री मिला पिलाते रहने से मूत्रकृच्छ्र में लाभ होता है।

(४०) तिल के क्षार को दूध या शहद के साथ देने से मूत्र की जलन कम होती है तथा मूत्र खुलकर आने लगता है।

(४१) दारुहल्दी के चूर्ण के साथ ककड़ी के बीज तथा मुलहठी का चूर्ण ३ ग्राम की मात्रा में चावल के धोवन के साथ पीने से अथवा इसी के चूर्ण को आंवले के रस में मिला उसमें शहद डालकर पीने से पित्तज मूत्रकृच्छ्र में लाभ होता है।

(४२) श्वेत दूर्वा की जड़ ८० ग्राम जौकुट कर २ किलो जल में चतुर्थांश क्वाथ सिद्ध करें। क्वाथ को छान कुछ ठण्डा हो जाने पर उसमें शहद या मिश्री मिला सेवन करने से मूत्र खुलकर हो जाता है और मूत्रकृच्छ्र दूर हो जाता है।

(४३) धनियां ६ ग्राम घोट-छानकर उसमें मिश्री तथा बकरी का दूध मिला पेटभर पिलाने से २-३ दिन में ही पेशाब की जलन, दाह आदि विकार दूर होते हैं।

(४४) धमासा, पाषाणभेद, हरड़, कटेरी छोटी, मुलहठी तथा धनियां, इनके समभाग क्वाथ में मिश्री मिलाकर सेवन कराने से मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, मूत्रदाह तथा शूल अतिशीघ्र नष्ट हो जाते हैं।

—वनौषधि विशेषांक भाग ३ से।

(४५) नल, कुश, काश, ईख इन चारों की जड़ के क्वाथ को ठण्डा कर उसमें क्वाथ का आठवां भाग मिश्री

मिलाकर प्रातः पिलाने से वेदनायुक्त मूत्राघात दूर हो जाता है।

(४६) निर्मली के ४ बीजों को पानी में घिसकर मिश्री मिला पिलाने से मूत्र की जलन दूर होती है तथा पेशाब साफ आता है। ७ दिन के सेवन से मूत्र खुलकर आने लगता है अथवा इसके ४ बीजों को पानी में पीस-कर दही मिला चीनी के पात्र में रखें और उसके मुख पर कपड़ा बांध रातभर ओस में पड़ा रहने दें। प्रातः इसे सेवन कराने से मूत्रकृच्छ्र में लाभ होता है।

(४७) नीबू के रस में यवक्षार मिलाकर पिलाने से मूत्रकृच्छ्र में लाभ होता है तथा मूत्रगत अम्लता कम होती है। मूत्रावरोध हो, तो नीबू के दो भाग कर भीतर के बीजों को निकाल, उसमें कलमीशोरा भरकर कोयलों की आग पर रख दे। जब उसमें उबाल-सा आ जावे तब गरम-गरम नाभि के आस-पास मलने से मूत्रावरोध दूर होता है।

(४८) १॥-१॥ ग्राम यवक्षार की २ पुड़ियां तथा १००-१०० ग्राम कच्चे दूध के २ गिलास अपने पास रख-कर प्रथम आधा नीबू दूध में निचोड़कर और यवक्षार की एक पुड़िया मुख में डाल तत्काल पीवें, फिर दूसरी पुड़िया मुख में डालकर शेष आधे नीबू को दूध में निचोड़-कर पीवें। इस प्रकार ३ दिन प्रयोग करने से मूत्रकृच्छ्र में लाभ होता है।

(४९) पाषाणभेद, अमलतास, धमासा, हरड़ तथा गोखरू के क्वाथ में शहद मिलाकर पीने से पीड़ा, दाह-युक्त मूत्रकृच्छ्र शीघ्र नष्ट हो जाता है।

(५०) पुनर्नवा की जड़ तथा श्वेत चन्दन दोनों को समभाग एकत्र जौकुट कर २० ग्राम चूर्ण को ४०० ग्राम जल में चतुर्थांश क्वाथ कर उसमें ८-१० रत्ती कलमी-शोरा मिलाकर पिलाने से मूत्रकृच्छ्र में लाभ होता है।

(५१) मूत्रकृच्छ्र की अवस्था में जब बूंद-बूंद करके पेशाब आता है, तब प्याज को भूभल में सेंक चीरकर मूत्राशय के ऊपर सुखोष्ण रख उस पर ढीला-ढीला बांधने से रुका हुआ पेशाब उतर आता है। यह योग विशेषरूप से बच्चों में उपयोगी है। बड़ों को इस उपचार के साथ-साथ १ प्याज को चीर ४०० ग्राम पानी में पकावें। २०० ग्राम पानी शेष रहने पर छान लें तथा ठण्डा होने पर पिलाने से दाहयुक्त मूत्रकृच्छ्र दूर हो जाता है।

(५२) फालसा की जड़ या उसकी छाल जौकुट कर १४ ग्राम चूर्ण को २०० ग्राम जल में रात्रि के समय भिगोकर पिलाते रहने से ७ दिन में मूत्रकृच्छ्र नष्ट हो जाता है। —वनौषधि विशेषांक भाग ४ से।

(५३) बांस की राख १-२ ग्राम में समभाग शक्कर या मिश्री मिलाकर पिलाने से मूत्रशुद्धि होती है।

(५४) बेंत की लकड़ी को ६ ग्राम तक घिसकर चावलों के धोवन या जल के साथ पिलाने से मूत्र साफ आता है अथवा इसकी लकड़ी के ६ इन्च टुकड़े को जला कर बीड़ी के समान धूम्रपान कराने से पेशाब तुरन्त उतरने लग जाता है।

(५५) बेल के ताजे फल के गूदे को दूध के साथ पीस-छानकर उसमें थोड़ा शीतलचीनी का चूरा बुरक ३-३ घण्टे के अन्तर से पिलाते रहने से मूत्र के परिमाण में वृद्धि होती है तथा मूत्रकृच्छ्र में लाभ होता है। इस योग में किंचित् यवक्षार और मिला दिया जाय, तो लाभ और अधिक होता है।

(५६) बेल की जड़ को कूटकर रात्रि के समय जल में भिगों दें। प्रातः मसल-छानकर मिश्री मिला पिलाने से कष्टपूर्वक पेशाब होना, मूत्र में जलन, चिनग आदि विकार शान्त हो जाते हैं।

(५७) ब्राह्मी का रस अथवा क्वाथ थोड़ी मात्रा में थोड़ी मिश्री या शक्कर मिलाकर पिलाने से मूत्रावरोध दूर होता है।

(५८) भुई आंवला के स्वरस २० ग्राम को २० ग्राम गोघृत के साथ मिलाकर प्रातः-सायं पिलाने से मूत्रशुद्धि होती है तथा मूत्रदाह शमन होता है।

(५९) मूली के पत्तों के रस में कलमीशोरा मिला-कर पिलाने से मूत्र साफ आता है तथा मूत्रावरोध दूर हो जाता है। —वनौषधि विशेषांक भाग ५ से।

(६०) रेवन्दचीनी, शोरा, शीतल मरिच, इलायची छोटी के दाने प्रत्येक समभाग मिलाकर चूर्ण बना लें। ६-७ ग्राम की मात्रा में यह चूर्ण दूध की लस्सी के साथ

सेवन कराने से मूत्रशुद्धि होकर मूत्रकृच्छ्र तथा मूत्रदाह में लाभ होता है।

(६१) लज्जालु मूल या पञ्चाङ्ग का क्वाथ पिलाते रहने से मूत्रावरोध दूर होता है तथा मूत्रनलिका शोथ हो तो वह भी दूर हो जाता है।

(६२) शतावरी मूल, गोखरू मूल तथा भूमि आंवला तीनों का स्वरस मिलाकर ४०-४० ग्राम २-२ घण्टे पर दिन में २-३ बार लेने से भयंकर मूत्रकृच्छ्र भी ठीक हो जाता है।

(६३) सत्यानाशी का रस २५ ग्राम लेकर इसे लोहे की कड़ाही में डालकर अग्नि पर रखें। इसमें कलमी-शोरा मात्र रह जाय, तब नीचे उतार कर शीतल होने दें। अब यह पका हुआ कलमीशोरा २ ग्राम, मिश्री १० ग्राम तथा नीबू का रस ५ ग्राम, तीनों को ४० ग्राम पानी मिलाकर पीने से कैसा भी मूत्रकृच्छ्र क्यों न हो, १ सप्ताह में ठीक हो जाता है।

(६४) मूत्रमार्ग में शोथ होने से कभी-कभी मूत्रत्याग में बहुत कष्ट होता है, उस अवस्था में हरमल का फाण्ट या हरमल का चूर्ण २-३ ग्राम २-२ घण्टे पर या २-३ बार शहद के साथ देने से मार्ग साफ हो जाता है और वेदना शान्त हो जाती है।

(६५) वायु उत्पन्न होकर मूत्रावरोध होने पर हींग २ रत्ती तथा छोटी इलायची १ ग्राम का चूर्ण १-१ घण्टे पर जल के साथ ३-४ बार देने से मूत्रावरोध दूर होकर कष्ट निवारण हो जाता हैं।

(६६) हंसराज के पञ्चाङ्ग को ठण्डाई के समान पीस-छानकर पिलाने से तथा वस्ति स्थान पर हंसराज का तिवाया लेप करने से पेशाब साफ हो जाता है।

—वनौषधि विशेषांक भाग ६ से।

(६७) शुद्ध शिलाजीत, गोखरू, पाषाणभेद, इलायची, केशर, ककड़ी के बीज तथा सेंधव लवण इन सबको सममाग लेकर पीस-छान लें। इसमें से ४-६ ग्राम चूर्ण चावलों के धोवन के साथ देने से घोर असाध्य मूत्रकृच्छ्र भी ठीक हो जाता है।

(६८) आंवले, मुनक्के, विदारीकन्द, मुलहठी तथा गोखरू प्रत्येक २०-२० ग्राम ले जौकुट करके ४०० ग्राम जल में औटावें। जब चौथाई पानी शेष रह जाय, तब छान लें और शीतल कर २० ग्राम मिश्री मिला पीने से मूत्रकृच्छ्र में लाभ हो जाता है।

(६९) भुनी फिटकरी २० ग्राम, गेरू २ ग्राम तथा मिश्री ६ ग्राम; इन तीनों को पीस-छान लें। यह एक मात्रा है, इसे खाकर ऊपर से कच्चा धारोष्ण दूध पीने से १५-२० दिन में सुजाक तथा मूत्रकृच्छ्र में लाभ हो जाता है।

(७०) शुद्ध आंवलासार गन्धक ४ ग्राम, यवक्षार ४ ग्राम तथा मिश्री १० ग्राम मिला २५० ग्राम तक्र के साथ सेवन करने से असाध्य मूत्रकृच्छ्र नष्ट हो जाता है।

(७१) गोखरू, एरण्ड की जड़ तथा शतावर को दूध में औटाकर पीने से मूत्रकृच्छ्र तथा मूत्राघात में लाभ हो जाता है।

(७२) बुहारी का जीरा रात को भिगो दें तथा सुबह मल-छानकर मिश्री मिला पीने से पेशाब की रुकावट दूर होकर मूत्रकृच्छ्र में लाभ हो जाता है।

—चिकित्सा चन्द्रोदय से।

(७३) पुराने घृत में केशर को पीसकर पिलाने से मूत्राघात तथा मूत्रशर्करा मिटती है।

(७४) कुलिंजन को पानी के साथ पीस-छानकर पिलाने से मूत्र की रुकावट दूर होती है।

(७५) खस के चूर्ण को मिश्री मिलाकर देने से पेशाब की वृद्धि होकर मूत्रावरोध दूर होता है।

(७६) भांग तथा खीरा, ककड़ी के मग्ज की ठण्डाई पीस घोट-छानकर पीने से मूत्रकृच्छ्र में लाभ होता है।

(७७) गोरख, इमली की छाल के क्वाथ में यवक्षार डालकर पिलाने से मूत्र की रुकावट दूर होकर मूत्र अधिक प्रमाण में आने लगता है।

(७८) वड़ [बरगद] का दूध बतासे में भरकर ३ दिन तक प्रातःकाल सेवन कराने से मूत्रकृच्छ्र में लाभ होता है। अथवा वड़ की कोंपलों को छाया में सुखाकर उनको पीस उनमें समान भाग मिश्री मिला दूध की लस्सी के साथ देने से मूत्रकृच्छ्र में लाभ होता है।

(७९) बबूल की कोंपल १० ग्राम तथा १० ग्राम गोखरू का रस निकाल कर पिलाने से मूत्रकृच्छ्र में विशेष लाभ होता है।

(८०) मागवान के फल को पीसकर पुल्टिस बना पेड़ू पर बांधने से मूत्रावरोध दूर होकर मूत्र उतरने लगता है।

(८१) सिरस के बीजों के तैल को दूध की लस्सी में डालकर पीने से मूत्रकृच्छ्र में लाभ होता है तथा इसके पत्तों की लुगदी को पानी में छानकर मिश्री मिला पीने से मूत्रकृच्छ्र में लाभ होता है।

(८२) ७ ग्राम नीलाथोथा तथा ७०० ग्राम त्रिफला को कूटकर रातभर पानी में भिगो प्रातःकाल पिचकारी देने से मूत्रकृच्छ्र मिटता है।

(८३) दूब की ७-८ ग्राम जड़ को महीन पीसकर दही के साथ मिलाकर चटाने से पुराना मूत्रकृच्छ्र नष्ट होता है। —वनौषधि चन्द्रोदय से।

(८४) मकई के रेशे १० ग्राम को ३२० ग्राम जल में चतुर्थांश क्वाथ करें। फिर इसे छान लें और ३ भाग करके २-२ घण्टे पर १-१ भाग देने से रुका हुआ पेशाब साफ हो जाता है और मूत्रकृच्छ्रजन्य पीड़ा दूर हो जाती है। —रसतन्त्रसार द्वितीय भाग से।

(८५) अमलतास का काला मग्ज ६ ग्राम, फिटकरी [बिना भुनी] २० ग्राम को आधा किलो गाय का दूध और २ किलो पानी में मिलाकर खूब फेंट लें। तदनन्तर जितना रोगी पी सके, उसे पिला दें तथा बचा हुआ १-१ घण्टे के अन्तर से पिलाते रहें। इससे मूत्रकृच्छ्र दूर होता है तथा मूत्राशय और मूत्रप्रणाली स्वच्छ होकर लाभ हो जाता है। —माधवाचार्य कवले द्वारा धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(८६) पेड़ू पर एक कांसे का कटोरा रखकर उसमें ऊपर से शीतल जल की धारा छोड़ें। कटोरा भर जाने पर पानी फेंक दें, तत्पश्चात् पुनः धारा छोड़ें और फिर फेंक दें। ३-४ बार ऐसा करने से पेशाब उतरने लगता है तथा मूत्रकृच्छ्र में लाभ होता है।

—पं० हरिनारायण शर्मा द्वारा सिद्ध प्रयोगांक से।

(८७) सन के बीजों को तवे पर भूनकर पीस बराबर मिश्री मिलावें। इसमें से ६ ग्राम खिलाकर ३-४ घूंट जल पिला दें। १-२ घण्टे बाद मूत्र साफ आने लगता है।

(८८) आमे के पत्तों का स्वरस २ ग्राम, मिश्री उत्तम कूंजे की २ ग्राम मिलाकर पिला दें। यह एक मात्रा है, इसके सेवन से मूत्र कुछ समय में साफ आने लगता है।

—पं० श्रीकृष्णाचार्य द्वारा अनुभूत योगांक से।

(८९) कलमी शोरा, यवक्षार, जीरा सफेद, रेवन्द चीनी प्रत्येक १०-१० ग्राम, मिश्री ४० ग्राम ले सब औषधियों को कूट-छानकर रुग्ण के बलाबल के अनुसार १ से ३ ग्राम तक १-२ घण्टे पर दूध तथा पानी की लस्सी के साथ देने से मूत्रकृच्छ्र दूर होकर मूत्र खुलकर आने लगता है। —पं० रामदत्त शर्मा द्वारा गुप्त सिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(९०) पुराने एरण्ड की जड़ को पानी के साथ साफ पत्थर पर घिसकर उसमें कलमी शोरा १॥ ग्राम मिलाकर पिलावें और कुछ नाभि पर लेप कर दें। इससे रुका हुआ पेशाब खुलकर आने लगता है।

—वासुदेव यदुवंशी द्वारा गुप्त सिद्ध प्रयोगांक द्वितीय भाग से।

(९१) शंख भस्म ३ रत्ती तथा तिलों का क्षार ४ रत्ती दोनों को मिलाकर शहद में चटाने या पानी में घोलकर पिला देने से पेशाब भली प्रकार से उतर जाता है। —वैद्य ईश्वरीप्रसाद जी वर्मा द्वारा गुप्त सिद्ध प्रयोगांक द्वितीय भाग से।

(९२) लोह भस्म वारितर १० ग्राम तथा शिलाजीत सूर्यतापी २० ग्राम मिलाकर २-२ रत्ती की गोलियां बना लें। मूत्राघात की अवस्था में गोखरू, कालीमिर्च के क्वाथ के साथ देने से लाभ होता है।

—वैद्य पन्नालाल जैन "सरल" द्वारा गुप्त सिद्ध प्रयोगांक तृतीय भाग से।

(९३) शतावरी, कुशमूल, काशमूल, सरालकन्द रस, इक्षुमूल, शालिमूल, केशू प्रत्येक सममाग लेकर क्वाथ

करें और मधु, चीनी दोनों को मिलाकर देने से मूत्रकृच्छ्र में लाभ होता है। —श्री अत्रिदेव गुप्त द्वारा गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(९४) कलमी शोरा ३० ग्राम, ढाक के फूल १० ग्राम, चूहे की मेंगनी १० ग्राम पानी के साथ पीसकर पेडू पर लेप करने से थोड़ी देर में मूत्र अवश्य आ जाता है। मूत्रकृच्छ्र में लाभप्रद योग है। —सफल सिद्ध प्रयो० से।

(९५) गुड ५० ग्राम, रसौन स्वरस २५ ग्राम, कटेरी स्वरस २५ ग्राम, घृतकुमारी रस २५ ग्राम, ताजे फटे दूध का जल २५ ग्राम; सबका मिश्रण कर अच्छा घोल तैयार कर लें। इसे नित्य सेवन कराने से मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात में लाभ होता है।

(९६) कचरिया की ताजी जड़ २५ ग्राम को बासे पानी में महीन पीसकर पीने से ७२ घण्टे में अश्मरीजन्य मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात दूर होकर मूत्रविसर्जन होता है।

(९७) वरुण की छाल, गोखरू, सोंठ, मूसली, कुल्थी प्रत्येक १०-१० ग्राम, तृणपंचमूल ५० ग्राम। सबका चूर्ण कर १६ गुने जल में क्वाथ विधि से क्वाथ तैयार करें। इसका ४० ग्राम मात्रा में यवक्षार ६ ग्राम तथा शक्कर १० ग्राम मिलाकर नित्य प्रातः पीना चाहिए। इसके प्रयोग से मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात में लाभ होता है।

(९८) हरड़त्वक् चूर्ण २० ग्राम, अमलतास का गूदा २० ग्राम, यवासा चूर्ण २० ग्राम, गोखरू चूर्ण २० ग्राम, पाषाणभेद चूर्ण २० ग्राम; समस्त द्रव्यों को १६ गुने जल में डालकर क्वाथ करें। जल अष्टमांश क्वाथ शेष रह जाने पर छानकर २५-५० ग्राम तक की मात्रा में नित्य पीने से मूत्रकृच्छ्र तथा मूत्राघात में लाभ होता है। —पं० हर्षुल मिश्र द्वारा जटिल रोग चिकित्सांक से।

(९९) बरगद [वट] के चार पके पत्तों को पानी में खूब उबाल पत्ता निकालकर फेंक दें और मूत्रावरोध के रोगी को यह पानी पिला दें। ५-१० मिनट में मूत्र खुलकर आने लगता है। एक साधू द्वारा दिया हुआ प्रयोग है, जिसकी अनेक बार परीक्षा की जा चुकी है। —वैद्य भानुप्रताप आर० मिश्रा द्वारा स्वास्थ्य अनुभवांक से।

[आ] अनुभूत एवं परीक्षित प्रयोग

(१) मूत्र विरेचन चूर्ण—शीतलचीनी, रेवन्द-चीनी, छोटी इलायची तथा जीरा १०-१० ग्राम, कलमी शोरा २० ग्राम तथा मिश्री ४० ग्राम मिलाकर कूट कपड़छन करलें।

मात्रा—३ ग्राम दूध जल की लस्सी के साथ दिन में ३-४ बार २-२ घण्टे पर देना चाहिये।

उपयोग—यह चूर्ण मूत्रोत्पत्ति को खूब बढ़ाता है। इस चूर्ण को ३ दिन सेवन करने से मूत्रमार्ग साफ हो जाता है। —रसतन्त्रसार द्वितीय भाग से।

(२) सूर्यावर्त क्षार—२॥ किलो जल जिसमें आ जाय उतनी बड़ी १ मिट्टी की हांडी लेकर उसके आधे भाग में हाथी दांत का चूर्ण दबाकर भरदें। फिर उस पर आधा किलो कलमीशोरा रखें पश्चात् उसके ऊपर हाथी दांत का चूर्ण भरकर ढक्कन लगाकर खुले मैदान में जलती हुई अंगीठी पर रखें शनैः-शनैः हाथी दांत जलने लगेगा जिसमें से दुर्गन्धयुक्त धुंआ निकलने लगेगा साथ-साथ शोरा फूटने लगता है जिससे जोर-जोर से आवाज होती है और ऐसा प्रतीत होता है कि हांडी फूट गयी है किन्तु हांडी नहीं फूटती और शोरा भी नहीं उड़ता इस तरह हाथी दांत पूर्ण रूप से जल जाने पर धुंआ निकलना बन्द हो जाता है फिर हांडी को उतार लेवें ऊपर से हाथी दांत की भस्म को अलग करलें और तले में बैठे हुये शोरे को निकाल कर पीसलें।

मात्रा—२-४ रत्ती तक जल के साथ।

उपयोग—यह क्षार मूत्रदाह को दूर करता है। इस क्षार को ताजी गोभी के पत्ते २० ग्राम स्वरस में मिलाकर पिलाने से मूत्रकृच्छ्रता दूर हो जाती है। —रसतन्त्रसार द्वितीय भाग से।

(३) मूत्रावरोधहर पर्पटी—शोरा १ किलो, फिटकरी २५० ग्राम, नौसादर १२५ ग्राम, अपामार्ग

की जड़ की छाल ४० ग्राम । इन सबको बारीक पीसकर तथा कड़ाही में पिघलाकर कदलीपत्र पर डालकर पर्पटी तैयार करलें ।

मात्रा—६-६ ग्राम हर घण्टे पर पानी के साथ ।

उपयोग—इससे मूत्रेन्द्रिय की शुद्धि होती है और मूत्रावरोध में लाभ हो जाता है ।

—पं० चन्द्रशेखर जैन द्वारा
धन्वन्तरि अनुभवांक से ।

(४) कृच्छ्रकपाल चूर्ण—इन्द्रजौ मीठे, कलमीशोरा, बहरोजे का सत्व, शीतलचीनी, हजरत जहूर इन पांचों को समानभाग लेकर रखलें ।

मात्रा—इसमें से १२ ग्राम की मात्रा में लेकर दूध की लस्सी के साथ प्रातः-सायं पिलावें ।

उपयोग—यह मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, मूत्र जलन, आदि में उपयोगी योग है । अनेक बार का परीक्षित है ।

विशेष—(१) शोरा जो उपरोक्त प्रयोग में डाला जाता है उसके लिये शोरा लेकर उससे पांच गुने जल में छोड़दें और गल जाने पर पानी छानलें और ठण्डा होने दें उसमें नीचे जो साफ शोरा मिलेगा वही शोरा लें ।

(२) बहरोजे को आम की पत्ती, सिन्दूर, गिलोय तीनों के क्वाथ में दोलायन्त्र में पोटली डालकर पकावें बहरोजा डालकर क्वाथ में गिर जायगा वही व्यवहार में लावें ।

(३) गाय का दूध २५० ग्राम, जल २५० ग्राम, मिश्री ५० ग्राम मिलाकर खूब उलटें पलटें झाग उठने पर पीलें यही सर्वोत्तम लस्सी है ।

—पं० गिरजादत्त जी पाठक द्वारा
धन्वन्तरि अनुभूत योगांक से ।

(५) मूत्रकारक लेप—चौकिया सुहागा, सांभर नमक, नीलाथोथा [भुना] कलमीशोरा, विषखपरे की जड़, कर्पूर देशी, इली का हरा रङ्ग प्रत्येक १०-१० ग्राम लेकर केला के रस में पीसकर पेड़ू पर लेप करना चाहिये ।

उपयोग—किसी भी विकार से मूत्र की रुकावट हो तो इसके लेप से खुलकर मूत्र आने लगता है ।

—पं० रूपेन्द्रनाथ द्विवेदी द्वारा
धन्वन्तरि अनुभूत योगांक से ।

(६) आचार्य गुग्गुल—शुद्ध गूगल ५० ग्राम, बबूल का गोंद, कतीरा, गोखरु का चूर्ण, छोटी इलायची के बीज प्रत्येक १०-१० ग्राम, हरीतकी के छिलके का चूर्ण १० ग्राम, सफेद चन्दन का चूरा १० ग्राम, शुद्ध फिटकरी ३ ग्राम, चन्दन का इत्र आवश्यकतानुसार ।

निर्माण विधि—समस्त औषधियों के चूर्ण में चन्दन का इत्र मिलाकर खरल में मर्दन करें जब गोली बनाने लायक हो जाय तब १-१ ग्राम की गोली बनालें ।

प्रयोग विधि—दिन में रोगी की आवश्यकतानुसार २-२ घण्टे के अन्तर से दूध की लस्सी, जल अथवा नारियल के पानी के साथ देना चाहिये ।

उपयोग—इसका प्रयोग मूत्रकृच्छ्र में लाभदायक है इसके सेवन से मूत्र त्याग करते समय की दाह शान्त हो जाती है । पेशाब खुलकर आता है ।

—डा० बी० एस० थापर द्वारा
धन्वन्तरि गुप्तसिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से ।

(७) मूत्रावरोधहर मिश्रण—ब्राण्डी २० ग्राम, तारपीन का तैल ३० ग्राम, गुलरोगन १५ ग्राम, अफीम २ ग्राम, लोहवान कौड़िया २ ग्राम, अमृतधारा ४ ग्राम ।

विधि—प्रथम ब्राण्डी को अफीम तथा लोहवान कौड़िया को मिलावें फिर तारपीन के तेल में अमृतधारा तथा अन्य औषधियों को एकत्र कर शीशी को हिलावें । तरल औषधि मिश्रण तैयार होगा ।

प्रयोग विधि—इसे रोगी की नाभि के चारों ओर थोड़ा डालकर हलके हाथ से थोड़ी देर तक मलना चाहिये ।

उपयोग—इससे रुका हुआ पेशाब उतरने लगता है अफारा भी दूर होता है ।

—वैद्य बाबूलाल अग्रवाल द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से ।

(८) मूत्रकृच्छ्रहर वटी—माजूफल, छोटी इलायची के दाने, वंशलोचन असली, शीतलचीनी, सत बैरोजा, कत्था पपड़ी प्रत्येक ६-६ ग्राम ।

विधि—इन सबको कपड़छन कर रखलें और असली मैसूर के सन्दल में २-२ रत्ती की गोली बनालें यदि

गोली न बनती हो तो थोड़ा सा जल मिलाकर गोली बनालें।

मात्रा—जल में सुबह दोपहर शाम १-१ गोली सेवन करावें।

उपयोग—यह मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात एवं पूयमेह में लाभदायक योग है। —पं० कालीशंकर बाजपेई द्वारा गुप्तसिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(६) मूत्ररोधान्तक वटी—हजरत यहूद भस्म ४० ग्राम, स्फटिका भस्म ४० ग्राम, यवक्षार ४० ग्राम, अपामार्ग क्षार ४० ग्राम, तिलनार क्षार ४० ग्राम, कण्टकारी क्षार ४० ग्राम, वरुणा का घनसत्व ४० ग्राम, गोपालकर्कटी मूल चूर्ण ४० ग्राम, कलमीशोरा ४० ग्राम, नौसादर २० ग्राम, कघी की जड़ का चूर्ण २० ग्राम, बेर की मिंगी का चूर्ण २० ग्राम, तृणपंचमूल चूर्ण २० ग्राम, पाषाणभेद चूर्ण २० ग्राम, पुनर्नवा की जड़ का चूर्ण २० ग्राम, गोखरू घनसत्व २० ग्राम, आंवला घनसत्व २० ग्राम, इलायची बीज २० ग्राम, सत्व शिलाजीत २० ग्राम, कान्तलौह भस्म, शृङ्गभस्म, नाग भस्म, मुक्ताशुक्ति भस्म, मण्डूक भस्म प्रत्येक १०-१० ग्राम।

निर्माण विधि—समस्त द्रव्यों को खरल में कूट-पीसकर छोटी कटेरी के रस की सात भावना देकर ४-६ रत्ती की गोलिया बनालें फिर छाया में सुखाले।

मात्रा—५-१० वर्ष के बच्चा को १ गोली, वयस्क स्त्री पुरुषों को नित्य २ गोली से ४ गोली ताजे जल से निगलावें अथवा गोखरू क्वाथ से सेवन करावे।

उपयोग—मूत्रकृच्छ्र, मूत्रघात में परम उपयोगी गोलियां है। नियमित सेवन से अश्मरी भी बाहर निकल जाती है। —श्री हर्षुल मिश्र द्वारा सुधानिधि जटिलरोग चिकित्सांक से।

[इ] प्रमुख शास्त्रीय योग

क्रमांक	कल्पना	औषधि नाम	ग्रन्थ सन्दर्भ	मात्रा एवं समय	अनुपान	विशेष
१	रस	चन्द्रकला रस	र० र० स०	२५० मि०ग्रा० दिन में २ बार	हरीतक्यादि क्वाथ+मधु	सर्वपित्त गदध्वंसी।
२	,,	त्रिनेत्र रस	र० रा० सु०	,, ,,	मधु	शुक्रनिरोधज में उपयोगी।
३	,,	मूत्रकृच्छ्रान्तक रस	र० त० सा०	,, ,,	गोक्षुरचूर्ण +मधु	वात-कफज में उपयोगी।
४	,,	तारकेश्वर रस	,,	,, ,,	उदुम्बर चूर्ण +मधु	मूत्राघात में उपयोगी।
५	,,	कामदुधा रस	र०यो०सा०	१२५–२५० मि० ग्रा० दिन में २ बार	सिता+शर्करा	पित्तजन्य में उपयोगी।
६	,,	वृ० वंगेश्वर रस	र० सा० सं०	,, ,,	गोदुग्ध	मूत्राशय की निर्बलता में उपयोगी
७	,,	प्रवाल पञ्चामृत	यो० र०	,, ,,	,,	समस्त मूत्राघात में उपयोगी।
८	,,	अश्विनीकुमार रस	र० त० सा०	,, ,,	जीरक क्वाथ	,, ,,
९	,,	शुद्ध शिलाजतु	र० त०	२५० मि०ग्रा–१ ग्रा० दिन में २-३ बार	वरुणादिगण क्वाथ	समस्त मूत्राघात में उपयोगी।
१०	लौह	वरुणाद्य लौह	र० त० सा०	१२५ मि०ग्रा० दिन में २ बार	गोक्षुरक्वाथ	,, ,,

११	भस्म	अभ्रक भस्म	र० त०	१२५ मि०ग्रा० दिन मे २ बार	भूम्यामलकी + सिता + दुग्ध	मूत्राशय की निर्बलता मे उपयोगी ।
१२	,,	खर्पर भस्म	,,	,, ,,	गोक्षुर क्वाथ	,, ,,
१३	,,	वंग भस्म	,,	,, ,,	गिलोयसत्व + सिता + मधु	मूत्राघात मे उपयोगी ।
१४	,,	मौक्तिक पिष्टी	,,	६० मि०ग्रा० दिन में २ बार	मधु + हरीतक्यादि क्वाथ	पित्तज मूत्रकृच्छ्र मे ।
१५	,,	मंगयहूद भस्म	र०त०मा०	१२५–५०० मि० ग्रा० दिन मे २ बार	वीरतर्वादि क्वाथ	मूत्राघात मे उपयोगी ।
१६	,,	प्रवाल भस्म	र० त०	१२५–२५० मि० ग्रा० दिन में २ बार	मधु + तण्डुलोदक	कफज मूत्रकृच्छ्र मे ।
१७	वटी	चन्द्रप्रभा वटी	शा० सं०	२–४ गोली दिन में १-२ बार	शीतलमिर्च + गोक्षुरादि क्वाथ	वात, पित्तजन्य विकारों में ।
१८	,,	सौराजाज्यादि वटी	सि० भै० मणि०	१ वटी प्रातः	धारोष्ण गोदुग्ध	पित्तज मूत्रकृच्छ्र में ।
१९	चूर्ण	एवरुबीजादि चूर्ण	चरक०	३ ग्राम दिन में २-३ बार	आमलकी-स्वरस	,, ,,
२०	,,	उशीरादि चूर्ण	यो० र०	,, ,,	खरबूज पानक	मूत्राघात में उपयोगी ।
२१	,,	व्योषादि चूर्ण	,,	,, ,,	गोमूत्र + मधु	कफज मूत्रकृच्छ्र मे ।
२२	,,	खर्जूरादि चूर्ण	,,	,, ,,	मधु + तण्डुलोदक जल	शुक्रनिरोधज मूत्रकृच्छ्र में उपयोगी ।
२३	योग	शतावर्यादि योग	,,	५ ग्राम दिन में १-२ बार		मूत्राघात में उपयोगी ।
२४	,,	यवक्षारक योग	सि० भै० मणि०	२५० मि०ग्रा० दिन में १-२ बार	शीतलचीनी + जल	समस्त मूत्रकृच्छ्र में ।
२५	,,	एलादि योग	च० द०	२ ग्राम दिन में १-२ बार	अतिवलामूल क्वाथ	शुक्रनिरोधज मे ।
२६	,,	इक्षुरसादि योग	यो० र०	५ ग्राम दिन में १-२ बार	इक्षुरस	रक्तज मे उपयोगी ।
२७	,,	कुटजादि योग	,,	१० ग्राम दिन में १-२ बार	अजादुग्ध	,, ,,
२८	,,	रसादि योग	र० सा० सं०	१ ग्राम दिन में २ बार	शर्करा + तक्र	कफजन्य मूत्रकृच्छ्र में ।
२९	,,	दाडिमादि योग	यो० र०	१० ग्राम	,,	,,
३०	,,	नारिकेलादि योग	,,	दिन में १-२ बार	—	पित्तज मूत्रकृच्छ्र मे ।

३१	गुग्गुल	गोक्षुरादि गुग्गुल	शा० सं०	१–३ गोली दिन में २-३ बार	गोदुग्ध	वातज मूत्रकृच्छ्र में।
३२	क्वाथ	त्रिकण्टकादि क्वाथ	भै० र०	४० ग्राम का क्वाथ दिन में २-३ बार	मधु	,, ,,
३३	,,	वीरतर्वादि क्वाथ	सुश्रुत	२० ग्राम का क्वाथ दिन में २-३ बार	२५०मि०ग्रा० शिलाजीत मिलाकर	,, ,,
३४	,,	अमृतादि क्वाथ	भै० र०	,, ,,	—	वातज में।
३५	,,	यवादि क्वाथ	यो० र०	,, ,,	—	,,
३६	,,	हरीतक्यादि क्वाथ	भै० र०	,, ,,	मधु मिलाकर	पित्तज में, विबन्धहर।
३७	,,	शतावर्यादि क्वाथ	,,	,, ,,	,,	,, ,,
३८	,,	नलादि क्वाथ	,,	,, ,,	शर्करा मिला	मूत्राघात में।
३९	,,	श्यामादिगण क्वाथ	अ० हृ०	,, ,,	,,	,, ,,
४०	,,	मूत्रविरेचनीय दशक क्वाथ	चरक०	,, ,,	,,	,, ,,
४१	,,	तृणपंचमूल क्वाथ	भै० र०	,, ,,	मधु	पित्तज में।
४२	,,	दुरालभादि क्वाथ	ग० नि०	,, ,,	—	वात, पित्तज मूत्रकृच्छ्र में उपयोगी।
४३	आसव-अरिष्ट	उशीरासव	शा० सं०	१५-२० मि० लि० भोजनोत्तर	समान जल मिलाकर	पित्तज मूत्रकृच्छ्र में।
४४	,,	चन्दनासव	भै० र०	,, ,,	,,	,, ,,
४५	,,	देवदार्वाद्यरिष्ट	शा० सं०	,, ,,	,,	उपदंशजन्य में।
४६	,,	पलाशपुष्पासव	भै०सा०सं०	१५-३० मि०लि० भोजनोत्तर	,,	मूत्राघात में।
४७	घृत	त्रिकण्टकाद्य घृत	भै० र०	१०–२० ग्राम दिन में १-२ बार	सिता + कदोष्ण दुग्ध	वातज मूत्रकृच्छ्र में।
४८	,,	शतवर्यादि घृत	च० द०	,, ,,	सिता + गोदुग्ध	पित्तज में।
४९	,,	सुकुमारकुमार घृत	,,	,, ,,	,,	मूत्राघात में।
५०	,,	चित्रकादि घृत	वृ० मा०	,, ,,	,,	,, ,,
५१	,,	चांगेरी घृत	यो० र०	,, ,,	,,	,, ,,
५२	,,	कुशावलेह	भै० र०	१० ग्राम दिन में १-२ बार	दुग्ध	मूत्राघात में, मूत्रकृच्छ्र में।
५३	,,	गोक्षुरादि अवलेह	,,	२० ग्राम प्रातः	,,	,, ,,
५४	क्षार	शीतल पर्पटी	सि० भै० मणि०	२–३ ग्राम दिन में १-२ बार	भृष्ट जीरक चूर्ण + जल	,, ,,
५५	,,	यवक्षार	र० त०	३–१० ग्राम दिन में १-२ बार	तिल क्षार + निम्बुक स्वरस	,, ,,

५६	लेप	व्यदष्ट्रादि लेप	यो० र०	यथेष्ट प्रातः	कांजी में पीस कर लेप करें (मूत्राशय पर)	मूत्रकृच्छ्रनाहर।
५७	,,	सोरक	र० त०	३ ग्राम प्रातः	वटपत्र कल्क में पीसकर मूत्राशय पर लेप करें	

मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात, मूत्रावरोध में सामान्य चिकित्सा उपक्रम

वातज मूत्रकृच्छ्र में अभ्यङ्ग, स्नेहपान, अनुवासन, आस्थापन वस्ति, स्वेदन, उष्ण उपनाह, उत्तर वस्ति और परिषेक लाभप्रद है। पित्तज में शीत परिषेक, अवगाहन, लेप, वस्तिकर्म, विरेचन, ग्रीष्मऋतुचर्या, दुग्ध, मुनक्का, विदारीकन्द, इक्षुरस एवं घृत लाभप्रद है। कफज में क्षार उष्ण, तीक्ष्ण और कटु अन्नपान, स्वेदन, वमन, निरूहण वस्ति, तक्र, यव, तिक्त रस औषधियों से सिद्ध तैल का अभ्यङ्ग एवं पान लाभप्रद है। समत्रिदोषजन्य में, प्रथमतः वायु की फिर पित्त की तत्पश्चात् कफ की चिकित्सा करनी चाहिए। किन्तु वैषम्य में कफ उल्वण होने पर वमन, पित्त उल्वण होने पर पहिले विरेचन और वात उल्वण होने पर पहिले वस्तिकर्म करना चाहिए। इसी शुक्रनिरोधज मूत्रकृच्छ्र में व दोषों की उल्वणता के अनुसार चिकित्सा करनी चाहिए।

वेदनायुक्त मूत्राघात में स्नेहन, स्वेदन, स्निग्ध विरेचन, आस्थापन, अनुवासन, विशेषतः उत्तरवस्ति उपयुक्त है। मूत्रकृच्छ्र निर्दिष्ट उपचार को अधिक प्रभावशाली बनाकर मूत्राघात में प्रयुक्त करना चाहिए।

मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात एवं मूत्रावरोध में सफल औषधि व्यवस्था-पत्र

वातज मूत्रकृच्छ्र में—(१) मूत्रकृच्छ्रान्तक रस ४ रत्ती × १ मात्रा प्रातः-सायं मधु के साथ चटाकर ऊपर से अपामार्ग की जड़ ५ ग्राम को तक्र के साथ पीसकर कल्क बना पीवें।

(२) अमृतादि क्वाथ ५० ग्राम की मात्रा में प्रातः ८ बजे दें।

(३) गोक्षुरादि चूर्ण १-१ ग्राम भोजनोपरान्त जल से दें।

(४) श्वेत पर्पटी २ ग्राम × १ मात्रा चीनी के शर्बत के साथ दिन में ४ बजे और रात में सोते समय।

पित्तज मूत्रकृच्छ्र में—(१) चन्द्रकला रस ४ रत्ती × १ मात्रा प्रातः-सायं आंवला स्वरस के साथ दें।

(२) हरीतक्यादि क्वाथ ५० ग्राम की मात्रा में प्रातः ८ बजे दें।

(३) गोक्षुरादि चूर्ण १-१ ग्राम भोजनोपरान्त जल से दें।

(४) श्वेत पर्पटी ६ ग्राम × १ मात्रा चीनी के शर्बत के साथ दिन में ४ बजे तथा रात में सोते समय।

कफज मूत्रकृच्छ्र में—(१) मूत्रकृच्छ्रान्तक रस ४ रत्ती × १ मात्रा अपामार्ग मूल को तक्र में पीस-छानकर उसके साथ प्रातः-सायं दें।

(२) व्योषादि चूर्ण ६ ग्राम × १ मात्रा जल के साथ प्रातः ८ बजे।

(३) श्वेत पर्पटी २ ग्राम × १ मात्रा, २ ग्राम चीनी के साथ फांककर एक घूट गरम जल के साथ ४ बजे दोपहर तथा रात्रि में सोते समय।

अश्मरीजन्य मूत्रकृच्छ्र में—(१) पाषाणवज्र रस १ रत्ती + प्रवाल भस्म २ रत्ती + हजरतजहूर भस्म ४ रत्ती × मिलाकर १ मात्रा मधु से चटाकर ऊपर से वरुणादि क्वाथ पिलावें।

(२) श्वेत पर्पटी १ ग्राम + यवक्षार २ रत्ती × मिलाकर १ मात्रा शीतल जल या गोक्षुरादि क्वाथ से सुबह १० बजे तथा शाम को ४ बजे।

(३) त्रिकण्टकाद्य घृत १० ग्राम × १ मात्रा मिश्री तथा गोदुग्ध के साथ रात्रि को सोते समय।

शुक्रनिरोधज मूत्रकृच्छ्र में—(१) मूत्रकृच्छ्रान्तक रस १ रत्ती + वंग भस्म १ रत्ती + लोह भस्म १ रत्ती × १ मात्रा विदारीकन्द चूर्ण १ ग्राम, शीतलचीनी चूर्ण १ ग्राम, गोखरू चूर्ण १ ग्राम तथा मधु मिलाकर प्रातः-सायं दें।

(२) वरुणादि कषाय (वरुण छाल, गोखरू, कुलथी सममाग) ५० ग्राम की मात्रा में प्रातः १० बजे।

(३) गोक्षुरादि अवलेह १ ग्राम × १ मात्रा प्रातः ८ बजे तथा सायं ४ बजे जल या दूध के साथ।

पूयजन्य मूत्रकृच्छ्र में—(१) शिलाजीत ½ ग्राम × १ मात्रा दूध में घोलकर प्रातः ८ बजे तथा सायं ४ बजे।

(२) गोक्षुरादि गुग्गुल २ गोली × १ मात्रा सुबह, दोपहर तथा शाम को जल से।

(३) दारुहल्दी चूर्ण १ ग्राम × १ मात्रा भोजनोपरान्त जल के साथ।

(४) कुशावलेह ३ ग्राम × १ मात्रा रात्रि को सोते समय दूध से।

[ई] प्रमुख पेटेण्ट आयुर्वेदीय योग

क्रमांक	योग का नाम	निर्माता कम्पनी	उपयोग विधि	विशेष
१	सिस्टोन टैबलेट (Cystone tablet)	हिमालय ड्रग	२-२ गोली दिन में २-३ बार जल से।	यह अश्मरी जन्य मूत्रकृच्छ्र के लिये उपयोगी प्रमाणित हुयी है। अन्य कारणों से उत्पन्न मूत्रकृच्छ्र, मूत्राघात में भी उपयोगी है।
२	कैलकुरी टैबलेट (Calcuri tab.)	चरक	,, ,,	,, ,,
३	औरीक्लिन टैबलेट	,,	१-२ गोली दिन में ३-४ बार।	यह मूत्रमार्ग के समस्त रोगों में लाभकारी है, मूत्र खुलकर लाती है।
४	स्टोन सोल	मार्तण्ड	,, ,,	अश्मरीजन्य मूत्रावरोध में उपयोगी है।
५	वंगशिल	अलारसिन	,, ,,	मूत्रकृच्छ्र, दाहयुक्त एवं कष्टयुक्त पुनः-पुनः मूत्र प्रवृत्ति में उपयोगी। मूत्राशय, शोथजन्य मूत्रावरोध में भी लाभप्रद।
६	मूत्रल पाउडर	वैद्यनाथ	अवस्थानुसार।	यह मूत्र खुलासा लाने के लिये उत्तम पाउडर है। अश्मरीजन्य मूत्रावरोध को दूर कर मूत्र को शान्त करता है।
७	के० बी० पिल्स (कैल्सीलैक्स डी)	गैम्बर्स	२-२ गोली तीन बार जल से।	अश्मरीजन्य मूत्रावरोध में उपयोगी है।

८	उष्णवातघ्न कैपसूल	गर्ग वनौषधि	१-१ कैपसूल प्रातः दोपहर शाम जल या चन्दनासव से।	पूयजन्य मूत्रकृच्छ्र में विशेष उपयोगी।
९	गोनादि कैपसूल	ज्वाला आयु०	,, ,,	,, ,,
१०	वैनो मिक्सचर	झण्डु	२-४ मि० लि० दिन में ३-४ बार।	मूत्रावरोध तथा मूत्रकृच्छ्रता में उपयोगी।
११	मूत्रकृच्छ्रान्तक सूचीवेध	जी० ए० मिश्रा	१-२ मि० लि० मांसपेशी में।	,, ,,
१२	अपामार्ग सूचीवेध	बुन्देलखण्ड	,, ,,	,, ,,
१३	गोक्षुर सूचीवेध	बुन्देलखण्ड, जी० ए० मिश्रा	,, ,, ,, ,,	,, ,, ,, ,,
१४	उसवा सूचीवेध	बुन्देलखण्ड	,, ,,	,, ,,
१५	वरुण सूचीवेध	ए० बी० एम०	,, ,,	,, ,,
१६	कण्टकारी सूचीवेध	बुन्देलखण्ड	,, ,,	,, ,,
१७	श्वेतचन्दन सूचीवेध	जी० ए० मिश्रा	,, ,,	,, ,,
१८	पुनर्नवा सूचीवेध	मार्तण्ड	,, ,,	,, ,,

[३] प्रमुख पेटेण्ट एलोपैथिक योग

औषधि का नाम	निर्माता	मात्रा एवं व्यवहार विधि	विशेष
मूत्रकृच्छ्रता			
१. इन्जेक्शन—			
१. एण्टीबायोटिक (टेरामाइसीन, कम्बायोटिक, बेन्जाइल पेनिसिलीन इत्यादि)		निर्देशित मात्रानुसार	
२. डायूरेटिक (Diuretic), लैसिक्स (Lasix)	Hoechst	२ मि०लि० आवश्यकतानुसार १-२ बार मांस या नस में।	
३. दर्द निवारक (Analgesic)—बारालगन (Baralgan)	,,	३–४ मि० लि० आवश्यकतानुसार मांस या नस में।	
२. कैपसूल—			
१. एण्टीबायोटिक कोई भी कैपसूल			
२. क्लोरम्फाइसीन (Chloramphycin)	B. Knoll	१–१ कैपसूल ४–४ घण्टे बाद दें।	
३. इण्टेरोफ्युराण्टीन (Enterofurantin)	Dey's		इसमें नाइट्रोफ्युरांसन मिला है।

३. टेबलेट—			
१. पाइरीडेसिल या पाइरीडेमीड एन० एफ० टी० (Pyridacll or Pyridacid–N. F. T)	Ethnor	१ टेब० × ४ बार रोगानुसार दें।	इसकी विशेष चिकित्सा कैथेटर-इंजेशन (Catheterisation) यानी कैथेटर लगाकर मूत्र निकालना या शल्यक्रिया (Opration) करना है।
२. फ्युराडैण्टीन (Furadantin)	S. K F	५–८ मि० ग्रा० प्रति कि० ग्रा० वजन के अनुसार कई खुराकों में बांटकर दें	
३. डायुरेटिण्डन (Diuretindon)	Indo Pharma	१ टेब० नित्य सुबह दें।	
४. पेय—			
१. अल्कासाइट्रन (Alkacitron)	Gluconate	१–२ चम्मच दवा × ३ बार थोड़े से पानी में घोलकर।	
२. साइट्राल्का (Citralka)	Parke Davis	,, ,,	
मूत्राघात			
१. इन्जेक्शन—			
१ सोडियम लैक्टेट (मोलार ⅙) (Sodium Lactet (Molar ⅙)	Duphar व अन्य	१–३ बोतल आवश्यकतानुसार ड्रिप मेथड से शिरा में दें।	
२. डैक्स्ट्रोज ५% (Dextrose 5%)	,,	,, ,, किन्तु इसकी मात्रा बढ़ायी भी जा सकती है।	
३. फ्रुक्टोडेक्स १०% इन वाटर (Fructodex 10% in water)	Raptakos	,, ,,	
४. रिडॉक्सन (Redoxon)	Roche	१–२ ऐम्पुल शिरा में या ड्रिप विधि द्वारा।	
आवश्यकतानुसार लैसिक्स भी मास, शिरा या ड्रिप मेथड से दें।			

२. पेय—

मूत्रावरोध			
१. इञ्जेक्शन—			
१. कार्बाकोल (Carbachol)	B. W.	१ ऐम्पुल १–२ बार चर्म या मास में।	
२. पिट्युटरी (Pitutry)	B. I.	,, ,,	विशेष चिकित्सा में कैथेटर डालकर मूत्र निकाल दें।
३. प्रोस्टीग्मीन (Prostigmin)	Roche	१ ऐम्पुल चर्म या मांस में ६–६ घण्टे पर।	
२. टेबलेट—			
१. कैल्शियम डायूरेटीन (Calcium Diuretin tab.)	B. Knol	१–२ टेब० × २–३ बार।	
२. डायुरेटिण्डन (Diuretindon)	Indo Pharma	१ टेब० × १ बार।	
३. लैसिक्स (Lasix tab.) (इसके इञ्जेक्शन भी प्रयोग किये जा सकते हैं)	Hoechst	१ टेब० × १–२ बार।	
३. पेय—			
"मूत्राघात" देखें।			

यक्ष्मा [TUBERCULOSIS]

[अ] एकौषध एवं साधारण प्रयोग

(१) मुनक्का या किशमिश उत्तम घृत तथा शहद १-१ भाग लेकर काच के पात्र में भर मुखमुद्रा कर धान के खेत में १५ दिन तक दबाकर रखें फिर निकालकर ६ ग्राम प्रातः और ६ ग्राम शाम को सेवन कराने से क्षय तथा क्षयजन्य कास मे लाभ होता है।

(२) अडूसा के फूलों मे द्विगुण मिश्री या शक्कर मिलाकर किसी कांच या घन के चिकने मृत्पात्र में रखकर १ मास तक बराबर धूप मे रख उसकी ३ मात्रायें दिन में ४ बार, प्रति बार ४ ग्राम शहद मिलाकर सेवन कराने से विकृतिजन्य राजयक्ष्मा मे लाभ होता है।

(३) उत्तम स्वादिष्ट अनार के २०० ग्राम रस में पीपल, श्वेत जीरा, सोंठ तथा दालचीनी का चूर्ण ४०-४० ग्राम, उत्तम केशर १० ग्राम तथा पुराना गुड़ २०० ग्राम मिलाकर मन्दाग्नि पर पकावें। वटी बनाने योग्य गाढ़ा हो जाने पर नीचे उतारकर उसमें १० ग्राम छोटी इलायची का चूर्ण मिलाकर ६-६ ग्राम की गोली बना लें प्रातः-सायं १-१ गोली खाकर ऊपर से २५० ग्राम गाय या बकरी का दूध पीने से राजयक्ष्मा में लाभ होता है।

(४) अर्जुन की छाल के महीन चूर्ण में अडूसा पत्र रस की ७ भावनायें देकर शीशी में भरकर रखें। १ ग्राम तक शहद मिश्री तथा गोघृत मिलाकर सेवन कराने से यक्ष्मा तथा उरःक्षत मे लाभ होता है।

(५) क्षयरोग की बढ़ी हुई अवस्था मे उरःक्षत होकर फैफड़ों से रक्तस्राव प्रारम्भ हो जाता है ऐसी अवस्था में पेठे का ताजी रस मुक्तामस्म के साथ दिन में ३ बार देने से क्षयजन्य रक्तस्राव मे लाभ हो जाता है।

(६) प्रतिदिन केले के काण्ड को मंगवाकर ताजा रस निकालकर २-२ घण्टे पर २५-२५ ग्राम रस समभाग दूध मिलाकर पिलाने से तीन दिन में भयंकर क्षयग्रस्त रोगी जो खांसी से ग्रस्त, रक्त मिश्रित कफ स्राव, रात्रि प्रस्वेद, तीव्र ज्वर, पतले दस्त, भोजन में अरुचि आदि लक्षण दूर हो जाते हैं खांसी तथा कफ में कमी हो जाती है दो मास तक यही प्रयोग बराबर चालू रखने से रोगी को सम्पूर्ण लाभ हो जाता है यह स्वरस प्रतिदिन ताजा निकालकर पिलाना चाहिये। पित्त प्रकृति वाले रोगी को यह प्रयोग अति प्रशस्त है।

(७) भरेंटी की मूल का कल्क १ भाग, घृत ४ भाग तथा गोदुग्ध २० भाग एकत्र मिश्रण को मन्दाग्नि पर पकाकर घृत सिद्ध करलें इसके सेवन से क्षयजन्य उरःक्षत, दाह कफ प्रकोप में लाभ होता है।

(८) २०-२५ ग्राम गिलोय का शीत निर्यास छोटी पीपर के चूर्ण के साथ नित्य प्रातः पीने से क्षय रोगी के ज्वर का वेग घटता है पाचनक्रिया सुधरती तथा क्षुधा प्रदीप्त होती है।

(९) गिलोयसत्व ४ रत्ती से २ ग्राम तक तथा सुवर्ण भस्म १/२ रत्ती से १/६ रत्ती तक सितोपलादि चूर्ण २ ग्राम एकत्र मिलाकर शहद से प्रातः-सायं चाटकर ऊपर से मिश्री मिलाकर दूध पिलाने से क्षय के कीटाणु नष्ट होते है तथा ज्वर में रुकावट आती है।

(१०) गोक्षुर के चूर्ण के साथ समभाग असगन्ध चूर्ण मिलाकर २-४ ग्राम की मात्रा में शहद मिलाकर देने से तथा ऊपर से दूध पिलाते रहने से शुक्र के दुरुपयोग से उत्पन्न यक्ष्मा मे लाभ होता है।

—वनौषधि विशेषांक भाग २ से।

(११) कतरान १ भाग, नक्कर १०० भाग तथा मद्यार्क १॥ भाग तथा पानी २०० भाग लेकर पृथक् शक्कर को पानी मे मिलाकर शर्बत की चाशनी कर उसमें कतरान मिलादे फिर शीतल होने पर मद्यार्क मिलावें।

१-२।। ड्राम सेवन कराने से शीतकालीन कास, क्षय की खांसी तथा विरेकारी कफ विकारों में लाभ होता है।

—वनौषधि विशेषांक भाग ३ से।

(१२) यक्ष्मा में जब अत्यधिक कफ निकलता हो तो नीम के तेल के उपयोग से इसका शोषण होता है इसके कीटाणु नाशक, पूतिहर, तथा कफनाशक गुण के कारण पैनिसलीन की अपेक्षा इससे अधिक एवं स्थायी लाभ होता है जीर्णयक्ष्मा के रोगी जो अस्थिपंजर मात्र रह गये थे उन्हें भी इससे लाभ हुआ है। इसकी ४-४ बूंदें कैपसूल में भरकर दिन में ३ बार सेवन कराना चाहिये इससे २-३ दिन में ही कफ की मात्रा कम होने लगती है ज्वर का वेग घट जाता है खांसी का वेग कम हो जाता है स्थायी लाभ के लिये लम्बे समय तक प्रयोग कराना चाहिये।

(१३) पिप्पली के महीन चूर्ण में नागरपान (ताम्बूल) के रस की ७ या २१ भावना देकर सुखा लेवें प्रातः-सायं ५ अडूसे के पत्तों का रस तथा ३ ग्राम शहद के साथ १ ग्राम इस चूर्ण को सेवन करने से ६१ दिन में क्षयरोग नष्ट हो जाता हैं इसमें १-१ रत्ती मकरध्वज चन्द्रोदय या मुक्ताभस्म मिलाकर सेवन करने से विशेष लाभ होता है। इसके अतिरिक्त प्रातः-सायं उक्त चूर्ण का सेवन कर रात्रि में सोते समय ६ ग्राम सितोपलादि चूर्ण और २ रत्ती स्वर्णभस्म शहद के साथ व्यवहार कराना भी विशेष लाभदायक रहता है। —वनौ० वि० भाग ४ से।

(१४) वंशलोचन को स्वर्णभस्म, अभ्रकभस्म तथा मृगश्रृङ्ग के साथ यथोचित प्रमाण एवं अनुपान के साथ कई माह तक प्रयोग कराने से क्षय में विशेष लाभ देखने को मिलता है।

(१५) विडङ्ग के २५ दाने, लहसुन की १ पुती, नारियल की गिरी ६ ग्राम इनको दूध में पकाकर मिश्री मिलाकर छानकर पिलाते हैं तथा हर पांचवें दिन विडङ्ग के २५ दाने तथा १ पुती लहसुन बढ़ाते हैं। लहसुन ५ पुती से अधिक तथा विडङ्ग के दाने २०० तक इसको बढ़ाते हुये सेवन करावें और बाद में इसी क्रम से घटाना चाहिये इससे उपद्रव सहित यक्ष्मा ठीक हो जाता है।

(१६) क्षय में सामान्यतः शरीर का पोषक रस धातु दूषित हो जाता है तथा रसवाहक स्रोतों का अवरोध सा हो जाता है इन कारणों को दूर करने के लिये बेल की मूल को उत्तम पाया गया है यक्ष्मा की अवस्था में बेल की जड़ २५ ग्राम, अडूसा पत्र १५ ग्राम, नागफनी थूहर के पके फल २० ग्राम, सोंठ, कालीमरिच तथा पिप्पली २-२ ग्राम सबको कूटकर आधा किलो जल में अष्टमांश क्वाथ सिद्ध कर प्रातः-सायं शहद मिलाकर सेवन कराने से शीघ्र लाभ होता है।

(१७) रुदन्तीफलों के चूर्ण को २-२ रत्ती से प्रारम्भ कर ८-१० रत्ती तक सुबह दोपहर शाम शहद के साथ सेवन कराने से यक्ष्मा में लाभ होता है। अथवा रुदन्ती-फल चूर्ण को वासापत्र चूर्ण के साथ बराबर की मात्रा में सेवन कराने से यक्ष्मा तथा यक्ष्माजन्य कास में लाभ होता है।[1] —वनौ० वि० भाग ६ से।

(१८) महासुदर्शन चूर्ण तथा गिलोय १०-१० ग्राम, कालीद्राक्षा तथा मुलहठी ६-६ ग्राम तथा वासापत्र २०

१—**यक्ष्मा तथा रुदन्ती**—इस औषधि की आयुर्वेद जगत् में पर्याप्त धूम मच चुकी है अनेक अन्वेषणों से यह प्रमाणित हो चुका है कि इस औषधि में यक्ष्मा के कीटाणुओं को नष्ट करने की अद्भुत शक्ति छिपी है। रुदन्ती-फल के गुणों तथा प्रभाव के सम्बन्ध में अनेक विवरण अनेक स्थानों पर मिलते हैं लेकिन पाठकों की सुविधा के लिये सुधानिधि के आदि सम्पादक वैद्यराज देवीशरण जी गर्ग के एक लेख का कुछ अंश यहां दे रहे हैं जिसे पढ़कर रुदन्तीफल के व्यवहार के सम्बन्ध में पाठकों को विशेष जानकारी मिल सकेगी—

रुदन्ती के विषय में, श्रीयुत पं० विश्वेश्वरदयालु जी शर्मा वैद्यराज सम्पादक अनुभूत योगमाला का लेख सन् ६० में अनुभूत योगमाला में प्रकाशित हुआ था। इस लेख से प्रभावित होकर हमने भी अपने चिकित्सालय में आगत क्षय रोगियों पर इसका प्रयोग प्रारम्भ किया और इनके चमत्कारी प्रभाव को देखकर आश्चर्य चकित रह गये। फुफ्फुस में हुए क्षतों को ठीक करके फुफ्फुस को सामान्यावस्था में लाने के लिए इसका प्रयोग बहुत

नग लें इनको १६ गुने जल में मिलाकर क्वाथ करें चतुर्थांश रहने पर छान लेवें इसके तीन भाग कर दिन में ३ बार पिलाने से यक्ष्मा में ज्वर, कास, कफ, रक्तस्राव मलावरोध आदि विकारों में लाभ होता है।

—वैद्य कान्तीलाल जी द्वारा
रसतन्त्रसार द्वितीय भाग से।

(१९) लहसुन गोतक्र में भिगोकर सुखा लें यह रसोन १० ग्राम तथा गोला कसा हुआ २० ग्राम अजादुग्ध में पका लें। १-२ उबाल आने पर मिश्री २० ग्राम डालकर प्रातःकाल रोगी को कुछ दिन तक पिलाने से यक्ष्मा में लाभ होने लगता है यह अति प्रभावशाली योग है जिसकी प्रशंसा एक लन्दन के डाक्टर "वेन" ने भी की थी।

—कविराज मनोहरलाल जी वैद्य द्वारा
धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(२०) गीले वस्त्र से पोंछे हुये तथा बीज निकाले हुये द्राक्षा २० ग्राम, भिगोकर छिलका दूर किये हुये बादाम

ही उत्तम रहा। ऐसे-ऐसे रोगी जो महीनों सेनोटोरियम में रह कर और स्ट्रेप्टोमाइसिन आदि के सैकड़ों इन्जेक्शन लगवाकर स्वस्थ नहीं हुये थे इसके प्रयोग से स्वस्थ हो गये। क्षय की भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में जिन भिन्न-भिन्न औषधियों का मिश्रण करके इसका प्रयोग कराया गया उसका विवरण नीचे दिया जा रहा है। आशा है पाठक हमारे अनुभव से लाभ उठायेंगे।

१—ऐसे रोगी जो अत्यन्त निर्बल हों जिनके फेफड़ों में केवेटी (क्षत) स्पष्ट हों, कास हो, भूख न लगती हो, ज्वर रहता हो उन्हें दुग्ध कल्प कराते हुये, वर्धमान क्रम से रुदन्ती का निम्न प्रकार प्रयोग करावें।

प्रथम सप्ताह में—रुदन्ती चूर्ण २-२ रत्ती, स्वर्णवसन्तमालती आधी रत्ती का मिश्रण दिन में चार बार गो-दुग्ध से व्यवहार करावें। चार बार में यदि रोगी व्यवहार न कर सके तो १ किलो गोदुग्ध मिश्री मिलाकर दें। यदि रोगी चार बार में १ किलो दूध का सेवन न कर सके तो जितना दूध वह व्यवहार कर सके चार बार में विभक्त करके दें, यदि रोगी की शक्ति १ किलो दूध से अधिक लेने की हो तो १ किलो दूध दें और थोड़ा-थोड़ा सुपाच्य भोजन दो बार में दें। धीरे-धीरे दूध की मात्रा बढ़ावें। इन औषधियों के व्यवहार से धीरे-धीरे ज्वर और कास की अधिकता कम होती जायगी और दूध की मात्रा बढ़ती जायगी।

दूसरे सप्ताह में—रुदन्ती चूर्ण ३-३ रत्ती, स्वर्णवसन्तमालती आधी रत्ती, और प्रवालभस्म १ रत्ती का मिश्रण उक्त प्रकार से दें। दुग्ध की मात्रा धीरे-धीरे बढ़ाते जांय और अन्न की मात्रा कम करते जांय।

तीसरे सप्ताह में—रुदन्ती चूर्ण ४ रत्ती, स्वर्णवसन्तमालती १ रत्ती, प्रवालभस्म के स्थान में प्रवाल पंचामृत रस १ रत्ती मिलाकर व्यवहार करावें। रोगी को अब केवल दुग्ध पर रखें। अन्य कोई आहार न दें और जल भी न दें। यदि रोगी को प्यास अधिक लगे तो मौसमी या अनार का रस व्यवहार करावें। अब कल्प आरम्भ हो गया। अत्यन्त जीर्ण रोगी को ५१ दिन, अन्यथा ४१ दिन या कम से कम ३१ दिन केवल दूध पर रखें। बीच-बीच में एक्स-रे लेकर रोगी की वक्ष परीक्षा कराकर स्थिति देखते रहें, जब तक फुफ्फुस सामान्यावस्था में न आ जाय, कल्प चलते रहने दें। जब कल्प पूरा हो जाय तो रोगी को लौकी, तोरई या परवल के साग का या मूंग की दाल का पथ्य दे दें। जिस क्रम से दूध और रुदन्ती आदि औषधियों की वृद्धि की है उसी क्रम से कम करते जांय और कल्प समाप्त कर दें। इस कल्प के द्वारा अनेक असाध्य कहे जाने वाले रोगी स्वस्थ हुये हैं। ऊपर जो औषधियां लिखी गई हैं, सामान्यावस्था के रोगी के लिये हैं, चिकित्सक रोग की अवस्था देखकर, अन्य औषधियों का मिश्रण कर सकते हैं।

जो रोगी एलोपैथिक चिकित्सा कराते-कराते और इन्जेक्शन लगवाते-लगवाते स्वस्थ नहीं हुए थे इस चिकित्सा से पूर्णतः स्वस्थ हुए हैं। इसका एकमात्र कारण यह है कि रुदन्ती में जिस प्रकार फुफ्फुसीय क्षतों को ठीक करने की क्षमता है उसी प्रकार आन्त्रिक विकारों को नष्ट करने का भी गुण है। अधिकांश क्षय रोगियों में प्रायः आन्त्रिक विकृति भी होती है जो एलोपैथिक औषधियों के प्रयोग से ठीक नहीं होती। उक्त कल्प के द्वारा आंतों की विकृति भी ठीक हो जाती है। —वैद्य देवीशरण गर्ग द्वारा सुधानिधि दिसम्बर १९७२ से।

२० ग्राम तथा लहसुन की छिली तथा नुकी हुई साफ कली ३ ग्राम लें। सबको लेकर पानी के संयोग से सिल पर पीसकर चटनी सी बना लें अब इसे एक कड़ाही में डालकर थोड़ा घी डालकर गरम करें जब खुश्क हो जाय तब इसमें १० ग्राम मिश्री डालकर हलुवा गाढ़ा होने पर इसमें सिद्ध मकरध्वज ४ चावल के बराबर मिलाकर प्रातः नाश्ते के समय यक्ष्मा के रोगी को चटाने से उनकी अशक्ति दूर होती है थोड़ी मात्रा में प्रवालभस्म और सितोपलादि मिलाकर [illegible] से काम ज्वर में भी लाभ होता है। —[illegible] वैद्य शास्त्री द्वारा

[illegible] गुप्तसिद्ध प्रथम भाग से।

(२१) [illegible] को तीन पीस काटकर दूध मे बराबर जल मिलाकर सिद्ध कर दूध छानकर [illegible] मिलाकर पीने से ४० दिन में यक्ष्मा रोगी को लाभ होने लगता है। रोगी को केवल दूध पर ही रखें।

—पं० बिरंजीलाल आयुर्वेदाचार्य द्वारा

गुप्तसिद्ध प्रथम भाग से।

(२२) गोखरु पहाड़ी का चूर्ण, पुराना गुड़, देशी शक्कर प्रत्येक २५०-२५० ग्राम इन सबको १ किलो जल में घोल करके किसी पत्थर के वर्तन में रखकर धूप में ३ दिन तक पकावें फिर छानकर बोतल में भरकर रख लें। २० ग्राम नियमित इसके सेवन से नवीन यक्ष्मा से पीड़ित रोगी की दशा में परिवर्तन होने लगता है और कास, रक्त वमन, दुर्बलता आदि लक्षण शनैः-शनैः कम दूर होने लगते हैं। —पं० रामचरन शर्मा द्वारा

धन्वन्तरि नवम्बर १९४७ से।

(२३) बकरी का मूत्र, घृत, दूध तथा दही ३-३ ग्राम तथा बकरी की मेंगनी ६ ग्राम सबको मिलाकर शहद के साथ रोगी को अवस्थानुसार सेवन कराने तथा दोपहर के बाद ६ ग्राम से १० ग्राम तक द्राक्षासव पिलाने से तथा रात्रि को दूध मे पीपल औटाकर उसमें ६ रत्ती शिलाजीत डालकर सेवन कराने से यक्ष्मा रोगी को लाभ हो जाता है। —पं० धर्मेन्द्रनाथ द्वारा

धन्वन्तरि अनुभूत चिकित्सांक से।

(२४) चन्द्रप्रभा वटी १ गोली, सितोपलादि २ ग्राम, गिलोयसत्व १ रत्ती तथा प्रवालभस्म १ रत्ती इन सबको एक में मिलाकर ताजी हल्दी का स्वरस १० ग्राम, आंवला रस १० ग्राम तथा मधु ६० ग्राम मिला करके दिन में २ बार सेवन करने से प्रमेहजन्य प्रतिलोम क्षय में लाभ हो जाता है। —बालकराम शुक्ल द्वारा

धन्वन्तरि अनुभूत चिकित्सांक से।

(२५) नीम के पत्ते, कालीमरिच ६ नग साबुत तथा पानी ५ किलो उबालकर जब १२५ ग्राम रहे तब छानकर सुबह व इसी प्रकार रात को सिर्फ १४ दिन तक देने से यक्ष्मा के रोगी को लाभ होने लगता है। रोग व रोगी की अवस्थानुसार इसे अधिक दिन भी दिया जा सकता है और इसके साथ कोई भी अन्य औषधि दी जा सकती है।[1]

—कविराज सीताराम अजमेरा द्वारा

धन्वन्तरि सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(२६) काकजंघा का घनसत्व २-२ ग्राम प्रातः-सायं २५० ग्राम बकरी के दूध के साथ कुछ दिनों तक नियमित सेवन कराते रहने से यक्ष्मा में लाभ होने लगता है। इसी के साथ-साथ काकजंघा का स्वरस २५ ग्राम तथा रैक्टीफाइड स्प्रिट १०० ग्राम को एक अच्छी कार्कदार शीशी में वन्द कर धूप में रख दें बाद में निर्वात स्थान पर ३ दिन तक रखा रहने दें बाद में फिल्टर में छानकर इन्जेक्शन की शीशी में भर कर रख लें। इसमें से २ सी० सी मांस में १ दिन छोड़कर देने से यक्ष्मा में आशातीत लाभ देखने को मिलता है।

—पं० छेत्रपाल शर्मा द्वारा

प्रयोग मणिमाला से।

(२७) बाबलीघास घनसत्व २ रत्ती, नागकेशर चूर्ण २ रत्ती, लाक्षा चूर्ण २ रत्ती, रक्त पित्तान्तक रस १ रत्ती,

१—ऐसा ही एक प्रयोग हमारे एक परिचित स्वामी जी यक्ष्मा रोगियों को कराते है वह ७ नीम के पत्ते तथा कालीमरिच ६ नग लेकर सिल पर चटनी सी बनाकर प्रातःकाल सेवन कराते हैं कुछ दिनों मे यक्ष्मा रोगी को आशातीत लाभ देखने को मिलता है।

—सम्पादक।

कामदुधा रस १ रत्ती तथा जयमंगल रस ½ रत्ती सबको खरल कर चौलाई स्वरस ३ ग्राम या दूर्वा रस ३० बूंद में ३० बूंद मधु मिलाकर उसी में १ पुड़िया सुबह-शाम चटाने से रक्त-कासयुक्त यक्ष्मा में लाभ हो जाता है।

—श्री जगदम्बाप्रसाद श्रीवास्तव द्वारा सुधा० जटिलरोग चिकित्सांक से।

(२८) बलामूल या बला पंचांग ४ ग्राम, कटेरी ४ ग्राम, अडूसा मूल ४ ग्राम, किशमिश ४ ग्राम सबको कूटकर मोटे-मोटे टुकड़े आधा किलो पानी में पकावें १०० ग्राम शेष रहने पर छानकर रख लें। १०-२० ग्राम मधु मिलाकर दिन में २ बार प्रयोग कराने से क्षयजन्य कास, पित्तज कास रक्तयुक्त कास में लाभ होता है।

—श्री जगदम्बाप्रसाद श्रीवास्तव द्वारा स्वास्थ्य मार्च १९७९ से।

विशेषांक के लिये प्रेषित विशेष योग—

(२९) क्षयरोगहर लहसुन कल्प—एक बार एक वृक्ष के नीचे पड़े रहने वाले सन्यासी को वहां के रामकृष्ण मिशन के अस्पताल में भर्ती कराया गया। ऐक्स-रे में पता लगा कि दोनों फेंफड़े छलनी हो गये हैं। डाक्टरों ने उसे यह कहकर अस्पताल से निकाल दिया कि वह कठिनाई से दो सप्ताह जी सकेगा। वह लोगों की रोटी खाता था। पथ्य कर नहीं सकता था, किन्तु राजी हो गया कि टमाटर या खटाई पड़ी दाल सब्जी नहीं खायेगा। उसे लहसुन भी मंगाकर देना पड़ा। लहसुन प्रयोग में खटाई सर्वथा वर्जित है।

एक दाना आज दो दाने कल इस प्रकार प्रतिदिन एक दाना बढ़ाते जाना था। निगलना नहीं था, जरा चबाकर दाने कुचलकर निगलना था। वह तो सौ दाने तक बढ़ा ले गया, फिर एक-एक दाना घटाता गया। अन्त में दो दाने सप्ताह भर चलाता रहा। लेकिन प्रथमावस्था में २० दाने तक, द्वितीयावस्था में ४० और तृतीयावस्था में ६० दाने तक बढ़ाना पर्याप्त है। वह स्वस्थ हो गया। ५-७ वर्ष हो गये जीवित है। एक्स-रे में फेंफड़े स्वस्थ आये। यदि केवल बकरीका दूध पीकर रह पाता तो ४० दाने बढ़ाने से ही स्वस्थ हो जाता।

—श्री सुदर्शनसिंह "चक्र" सम्पादक "श्रीकृष्ण सन्देश" श्रीकृष्ण जन्म भूमि मथुरा।

[आ] अनुभूत एवं परीक्षित प्रयोग

(१) यक्ष्मानाशक शाही चूर्ण—वंशलोचन, छोटी पीपर तथा छोटी इलायची के दाने तीनों १०-१० ग्राम, दालचीनी, गिलोयसत्व तथा शीरखिस्त तीनों ६-६ ग्राम, मोतीपिष्टी, प्रवालपिष्टी, पन्नापिष्टी, माणिक्यपिष्टी, नीलमणिपिष्टी, पुखराजपिष्टी, तृणकान्तिमणिपिष्टी, अकीकपिष्टी, अभ्रकभस्म ३-३ ग्राम, स्वर्णभस्म या वर्क १॥ ग्राम, रौप्यभस्म या चांदी के वर्क १॥ ग्राम लेवें।

विधि—काष्ठादि औषधियों का कपड़छन चूर्ण करें सबको अच्छी तरह मिलाकर खरल कर लें।

मात्रा—२-४ रत्ती दिन में ३ बार।

अनुपान—वनफसादि शर्बत या रोगानुसार अनुपान के साथ दें। वात प्रकृति वाले को १॥ ग्राम वनफसादि शर्बत के साथ देवें: पित्त प्रकृति वाले को यह चूर्ण देकर ऊपर से चार गुना जल मिला हुआ शर्बत पिलावें। कफ प्रकृति वाले को २-३ बूंदें अदरक के रस तथा २-३ बूंदें नागरबेल के पान के रस का शर्बत मिलाकर देवें।

उपयोग—यह शाही चूर्ण राजयक्ष्मा को दूर करता है। इसका प्रयोग सब अवस्थाओं में किया जाता है यदि प्रथमावस्था में इसका प्रयोग किया जाय तो रोग शीघ्र ठीक हो जाता है यह प्रयोग वैद्यराज मुरलीधर जी का वंशानुगत है तथा १०० से अधिक वर्षों का सफल अनुभूत प्रयोग है।

(२) वनफसादि शर्बत—गुलबनफ्सा तथा अंजीर २०-२० ग्राम, नीलोफर, गावजबां, मुलहठी, गिलोय, उन्नाब, लेसवा, सौंफ, छोटी इलायची के दाने, कालीमरिच, दालचीनी, बिहीदाना, काला मुनक्का, बासापत्र यह औषधियां १०-१० ग्राम लेवें।

विधि—सबको मिलाकर यवकुट कर रात्रि में २ किलो जल में भिगो दें। सुबह चतुर्थांश क्वाथ करें फिर मन्थन कर लुआब को छान लेवें इसमें १ किलो मिश्री मिलाकर शर्बत बना लेवें।

मात्रा—२५-२५ ग्राम तक ५०-१०० ग्राम जल में मिलाकर दिन में २-३ बार सुबह दोपहर तथा रात्रि को पिलावें।

उपयोग—राजयक्ष्मा में कफ को बाहर निकालने के लिये तथा उत्पत्ति को रोकने के लिये इसका प्रयोग कराना चाहिये। अन्य यक्ष्मा नाशक योगों के साथ अनुपान रूप में इसका प्रयोग विशेष लाभदायक है। जीर्ण-काम मे भी बहुत लाभदायक है।

—रसतन्त्रसार द्वितीय भाग से।

(३) **हिमांशु**—शुद्ध स्वर्णगैरिक, गिलोयसत्व, वंशलोचन, प्रवालभस्म, यशदभस्म, मुक्ताभस्म, रौप्यभस्म, स्वर्णमाक्षिक भस्म, स्वर्णवंग, चन्द्रोदय सब १०-१० ग्राम।

विधि—समस्त द्रव्यों को खरल करने के अनन्तर तीन भावनायें आंवले के स्वरस की तथा ३ भावनायें गुलाबजल की देकर औषधि को सुखाकर शीशी में रख लेना चाहिये।

मात्रा—१-३ रत्ती तक प्रातः-सायं शर्बत, शहद, मक्खन या आंवले के मुरब्बे के साथ चटावें।

उपयोग—यह राजयक्ष्मानाशक अत्यन्त उपयोगी योग है। कास, रक्तपित्त तथा दुर्बलता को शनैः-शनैः दूर करता है। अपूर्व शक्ति प्रदान करता है।

(४) **जीवन सुधा अर्क**—असगन्ध, खरैटी, शतावरी, गगरन, मुलहठी, काकड़ासिंगी, छोटी पीपर, मुनक्का, उन्नाव, खूबकलां, खस प्रत्येक २००-२०० ग्राम, कासनी के पत्र, तुलसीपत्र, तालीसपत्र, तेजपात, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, आंवले का बक्कुल, हरड़ का बक्कुल, बहेड़े का बक्कुल, कुलफा के बीज, धनियां, सौंफ, नागकेशर, गावजवां, बनफ्सा, गुलाब के फूल १००-१०० ग्राम, दालचीनी, छोटी इलायची ५०-५० ग्राम, वासा पंचांग, गिलोय १-१ किलो छिले हुये पेठे के टुकड़े बीज समेत २॥ किलो, सफेद कद्दू (लौकी) के टुकड़े बीज आदि सहित ५ किलो, शुद्ध जल १५ किलो, गाय या बकरी का ताजा दूध १५ किलो।

विधि—समस्त काष्ठौषधियों को यवकुट कर १५ किलो जल में २४ घण्टा भिगोकर रखना चाहिये। दूसरे दिन जल समेत भीगी हुयी औषधि, पेठे के टुकड़े, लौकी के टुकड़े और दूध सभी द्रव्यों को भबका यन्त्र में भरकर अर्क खींचने की विधि से २०० बोतल अर्क खींच लेवें। अर्क की नलिका के अगले हिस्से में जहां से अर्क गिरता है छोटी इलायची के बीजों का चूर्ण सफेद चन्दन का चूर्ण तथा केशर की पोटली बाध देने से अत्यन्त सुगन्धित केसरिया रङ्ग का अर्क निकलता है यही जीवन सुधा अर्क है।

मात्रा—२५-५० ग्राम तक प्रातः-सायं अथवा दिन में ३ बार।

उपयोग—यह अर्क यक्ष्मा, क्षय, काम, रक्तपित्त, ज्वर आदि विकारों के लिये अत्यन्त प्रभावकारी योग है। क्षयरोग की अवस्था में जब स्वर्णपर्पटी कल्प कराया जाता है और जल आदि का सेवन बन्द कर दिया जाता है उस समय जीवन सुधा अर्क का प्रयोग कराया जाता है।

(५) **जीवन सुधा शर्बत**—उपरोक्त जीवन सुधा अर्क ४ बोतल, अर्क केवड़ा १ बोतल, अर्क गुलाब उत्तम १ बोतल, केशर का चूर्ण ३ ग्राम, मिश्री ३ किलो।

विधि—किसी साफ कलईदार बर्त्तन में सब चीजों को अग्नि पर चढ़ाकर शर्बत की विधि से २ तार की चासनी बनाकर एवं छानकर बोतलों में भरकर रख लें।

मात्रा—१०-३० ग्राम तक गाय या बकरी के दूध से प्रातः-सायं दिन में ३ बार।

उपयोग—यह भी यक्ष्मानाशक उत्तम योग है। अर्क की तरह ही उपयोगी है। क्षयनाशक अन्य औषधियों के साथ इसका अनुपान भेद से प्रयोग करने से आश्चर्यजनक लाभ देखने को मिलता है।

—पं० गयाप्रसाद शास्त्री द्वारा धन्वन्तरि-अनुभवांक से।

(६) **यक्ष्मारिपु शर्बत**—भांगरे का रस १० ग्राम, चिरायता १० ग्राम, छोटी पीपर ५ ग्राम, सोंठ ६ ग्राम, गिलोयसत्व १० ग्राम, असगन्ध २० ग्राम, भूमि आंवला

१० ग्राम, मुलहठी १० ग्राम, अडूसा १० ग्राम, तुलसीपत्र १० ग्राम, कौड़ीभस्म ६ ग्राम, कमरकस १० ग्राम, ताजा पेठा २० ग्राम, वंशलोचन १० ग्राम, अर्जुनवृक्ष की छाल २० ग्राम, वेल की जड़ २० ग्राम, गोखरू १० ग्राम, भटकटाई की जड़ १० ग्राम, नागरमोंथा १० ग्राम, दालचीनी १० ग्राम, अंगूर २५० ग्राम, चोवचीनी २० ग्राम, इन्द्रयव १० ग्राम, इलायची १० ग्राम, निम्बछाल २० ग्राम, पिस्ता २० ग्राम, किशमिश २० ग्राम, जीरा सफेद १० ग्राम, शहद २५० ग्राम जल आवश्यकतानुसार।

विधि—भांगरा, भूमि आंवला, अडूसा, तुलसीपत्र, अर्जुन, वेल की जड़, भटकटाई, निम्बछाल कुचलकर उनका रस निकाल लेना चाहिये। कूटने छानने वाली औषधियों का बारीक चूर्ण कर लेना चाहिये। पिस्ता तथा किशमिश को कुचल लें। अंगूर को कुचलकर किसी कलई के वर्तन में मन्द अग्नि में चढा दें और उसमें जल मिला दें उसमें बाकी दवाइयों का रस तथा चूर्ण भी मिला दें जब जल आधा रह जाय तब उस वर्तन को चूल्हे से उतार लें और मलकर छान लें बाद में इस छने जल में शहद मिलाकर दुबारा अग्नि पर चढ़ा दें और शर्बत जैसा पतला होने तक अग्नि देवे। बाद में छानकर बोतल में भरकर रखना चाहिये।

मात्रा—१०-२० ग्राम तक प्रातः-सायं मात्रा बलाबल देखकर देनी चाहिये।

उपयोग—यह यक्ष्मा के लिये अति उपयोगी योग है ३० दिन के प्रयोग में यक्ष्मा के रोगी में शक्ति का संचार होने लगता है भूख खुलने लगती है तथा खांसी में लाभ होने लगता है। —पं० सूरजप्रसाद द्वारा

धन्वन्तरि जौलाई १९४१ से।

(७) यक्ष्मानाशक मिश्रण-१—मुक्ता पंचामृत (योगरत्नाकर) १० ग्राम, अभ्रकभस्म १० ग्राम, लोहभस्म १० ग्राम, वंशलोचन १० ग्राम, छोटी इलायची के दाने १० ग्राम, गिलोयसत्व १० ग्राम, अकीकपिष्टी (गुलाव जल में घुटी) १० ग्राम।

विधि—सबको खरल में डालकर गुलाबजल में ३ दिन तक घोटकर शीशी में भरकर रख लें।

मात्रा—२-३ रत्ती प्रातः-सायं रोगी को गर्मी के दूध के साथ।

उपयोग—यक्ष्मा में कुछ दिन तक प्रयोग कराने से विशेष लाभ होता है। —पं० रामस्वरूप शर्मा द्वारा

गुप्तसिद्ध प्रथम भाग से।

(८) राजयक्ष्मानाशक मिश्रण-२—(क) ताम्रभस्म ३ ग्राम, तुगाक्षीरी चूर्ण ६० ग्राम, सूक्ष्मएला चूर्ण ६० ग्राम, कमल के बीज का चूर्ण ६० ग्राम, प्रवालभस्म, शंखभस्म, शृङ्गभस्म, मुक्ताशुक्ति भस्म, जहरमोहरा-खताई, स्वर्णमाक्षिक भस्म १०-१० ग्राम सबको कूट-पीसकर मिला लें तथा शीशी में रख ले बाद में २५० ग्राम शर्करा मिला दें।

(ख) अतिवला २५० ग्राम, वासा श्वेत २५० ग्राम, पुनर्नवामूल (श्वेत) २५० ग्राम, कण्टकारी पंचाङ्ग २५० ग्राम, उन्नाव २५० ग्राम, मुलहठी २५० ग्राम, चूने का पानी ६ किलो। बकरी का दूध ६ किलो।

विधि—अर्क निकालने के यन्त्र से ६ बोतल अर्क निकाल लेवें।

मात्रा—३ ग्राम (क) तथा ६० ग्राम (ख) के साथ ४ घण्टे पीछे दिन भर में ३-४ वार सेवन करावें। मात्रा आयु तथा बल के अनुसार घटाई बढ़ाई जा सकती है।

उपयोग—यक्ष्मा के रोगियों को इन दोनों योगों को साथ में देने से उनका ज्वर, कास, दौर्बल्य आदि लक्षण शीघ्र शान्त होने लगते हैं। असाध्य रोगियों को छोड़कर अन्य रोगियों को इस योग से लाभ हो जाता है।

—कविराज डा० प्रेमलाल जी द्वारा

धन्वन्तरि गुप्तसिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(९) राजयक्ष्मा पर शिवा अर्क—अडूसा १० किलो, छोटी कटेरी की जड़, झरबेरी की जड़, बबूल की अन्तरछाल प्रत्येक १-१ किलो, मुनक्का २॥ किलो, भारंगी, काकड़ासिंगी, कूठ कड़ुवा, जायफल, गूवकलां, पित्तपापड़ा, नागरमोंथा, धनियां, पोहकर मूल, पृष्णपर्णी, तालीसपत्र, रूमीमस्तङ्गी, पटोलपत्र, लाल चन्दन, लता कस्तूरी, मुलहठी, कचूर, देवदारु प्रत्येक २५-२५ ग्राम, अकरकरा, केसर, जादिर्वा, वंशलोचन, प्रियंगु ये पांचों

१०-१० ग्राम, मीठा चिरायता, छोटी इलायची, गिलोय तीनों ५०-५० ग्राम, बहेड़े का वक्कुल, अनार का छिलका, त्रिफला, त्रिकुटा सभी १००-१०० ग्राम, धाय के फूल २० ग्राम।

विधि—इन औषधियों को यवकुट कर ३० किलो पानी में मिलावें, मुनक्का पीसकर मिला देवें। बर्तन मिट्टी, कलई या चीनी का होना चाहिए। बर्तन का मुंह बन्द कर कपड़मिट्टी से सन्धि बन्द कर दें। गर्मियों में १२ दिन, वर्षा में २० दिन तथा जाड़ों में १ माह रखा रहने दें। बाद में छानकर भबके से अर्क निकाल लें। अर्क खींचते समय केशर तथा रूमीमस्तङ्गी की पोटली बनाकर इस प्रकार लटका दें, कि परिस्रुत बूंद पोटली पर होती हुई बोतल में गिरे।

मात्रा—आयु तथा बलानुसार १०-२५ ग्राम तक।

उपयोग—यक्ष्मा तथा यक्ष्मा के उपद्रवों के लिए उत्तम अर्क है। कास, जीर्णज्वर, दौर्बल्य मे विशेष लाभ करता है। —पं० शिवचरण जी तिवारी द्वारा गुप्त सिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(१०) क्षयरोगहर आसव—भांगरे का स्वरस ३ किलो, गुड़ २ किलो, हरड़ ८० ग्राम लेकर एक ऐसे मिट्टी के घड़े में भर दें, जिसके अन्दर चारों ओर घी पोतकर लगा दिया हो तथा चन्दन, कपूर, अगर की धूनी दे दी गयी हो। बाद में इसके ऊपर मिट्टी का सकोरा रखकर सन्धि बन्द कर दें। फिर किसी एकान्त स्थान में कम्बल लपेटकर भुसा में रख दें। १५ दिन बाद उसे छानकर उसी घड़े मे पुनः भर दें और इसमें पीपल, जायफल, लोंग, दालचीनी, छोटी इलायची, नागकेशर, तेजपात प्रत्येक २०-२० ग्राम का सूक्ष्म चूर्ण और मिला दें तथा पहले की तरह मुख बन्द करके १५ दिन के लिए निर्वात स्थान में रख दें। बाद में छानकर बोतलों में भर रख लें।

मात्रा—१०-१५ ग्राम।

उपयोग—यह क्षय वाले रोगी के लिए अति उत्तम आसव है। धातुक्षीण वाले रोगी को कुछ दिनों तक सेवन कराने से कास, अरुचि, ज्वर आदि लक्षण शीघ्र दूर हो जाते हैं। —डा० रामजी पाण्डेय द्वारा गुप्त सिद्ध प्रयोगांक द्वितीय भाग से।

(११) राजयक्ष्मा गजसिंह क्वाथ—अनार की छाल, वासामूल, गूलर की छाल, गूलर का फल, परवल की जड़, नीम की सीकों की छाल, पित्तपापड़ा, मोथा, ईख (गन्ना) मूल, हल्दी, पान मूल, अमरूद की छाल, गुलाब वृक्ष की छाल, दालचीनी, आक के फूल, अमरलता, लिसोड़ा, बड़ी इलायची, छोटी इलायची, चिरायते की डण्डी, चिरायते की पत्ती, लौंग प्रत्येक १०-१० ग्राम।

विधि—इन सबको कूटकर ४॥ किलो जल में औटावें। शेष आधा किलो जल रहने पर उतार छानकर बोतलों में रख लें। इसमें मृतसंजीवनी सुरा आधा औंस मिला दें।

मात्रा—आधा औंस सुबह, दोपहर, शाम तथा रात्रि को दिन में ४ बार पिलावें। दवा सेवन के ५ मिनट बाद थोड़ा अदरक सेंधव नमक के साथ खाकर बांयी करवट से थोड़ी देर तक आराम करें। भूख लगने पर बकरी के दूध से भात बनाकर सेवन करावें।

उपयोग—इसके सेवन से उपद्रव सहित यक्ष्मा दूर हो जाती है। अनेक बार का परीक्षित योग है।

—श्री जगन्नाथप्रसाद केशरी द्वारा गुप्त सिद्ध प्रयोगांक तृतीय भाग से।

(१२) क्षयरोग नाशक पञ्चाङ्ग मिश्रण—नीम का पञ्चाङ्ग, अपामार्ग का पञ्चाङ्ग, गुड़मार पञ्चाङ्ग तीनों ४००-४०० ग्राम, तुलसी पञ्चाङ्ग २०० ग्राम, विषखपरा पञ्चाङ्ग २०० ग्राम, पत्थरचटा पञ्चाङ्ग १०० ग्राम।

विधि—सभी पञ्चाङ्ग ताजे होने चाहिए। सभी को साफ करके एक मिट्टी के बर्तन में रखें तथा उसमें छींका बनाकर (दोलायन्त्र की तरह) एक चीनी का कटोरा लटका दें। ऊपर से एक मिट्टी का बर्तन सीधा रखकर सन्धिबन्धन कर दें तथा ऊपर के पात्र में ४ किलो जल भरकर आग पर चढ़ा दें। दो प्रहर तक अग्नि देकर उतार लें और सावधानी से कटोरे को निकाल लेवें। उसमें जो अर्क हो उसे शीशी में भर लें।

मात्रा—१-२ ग्राम तक प्रातः दें।

उपयोग—५ दिन तक रोजाना क्षय के रोगी को मात्रानुसार इस मिश्रण अर्क का सेवन कराने से यक्ष्मा के कीटाणु नष्ट होते हैं तथा कास, ज्वर, कफ आदि विकार शान्त होते हैं। दवा तीव्र है, अतः २ ग्राम से अधिक सेवन न करावें।

अपथ्य—२७ दिन तक गेहूँ का आटा, सफेद चीनी तथा गाय का शुद्ध घृत के अतिरिक्त कोई चीज सेवन न करें। —पं० चतुर्भुज शर्मा द्वारा

गुप्त सिद्ध प्रयोगांक तृतीय भाग से।

(१३) क्षयनाशक वटी—गिलोय घनसत्व १० ग्राम, पीपल वृक्ष की छाल का घनसत्व १० ग्राम, वंशलोचन नीली झांई का, अभ्रक भस्म, लोह भस्म, प्रवाल भस्म, पीपल छोटी के दाने प्रत्येक १०-१० ग्राम, यशद भस्म, मकरध्वज (चन्द्रोदय) दोनों ६-६ ग्राम, हरिताल पत्रज निर्धूम श्वेत भस्म ३ ग्राम, स्वर्ण भस्म, मुक्तापिष्टी तीनों ३-३ ग्राम।

विधि—इन सबको पंचतिक्त क्वाथ में सात दिन घोटकर १-१ रत्ती की गोली बना लें।

मात्रा—१-२ गोली तक प्रातः-सायं शहद में चटाकर अर्क सुदर्शन में मधु मिला पिलावें।

उपयोग—इससे क्षय की प्रारम्भिक अवस्था तथा जीर्ण ज्वर में विशेष लाभ होता है।

—पं० रामस्वरूप शर्मा द्वारा

गुप्त सिद्ध प्रयोगांक तृतीय भाग से।

(१४) राजयक्ष्मा पर अर्क दुग्ध—गिलोय १ किलो, उशारे रेवन्द २५० ग्राम, फूल गुलाब ३० ग्राम, गावजवां के पत्ते १२५ ग्राम, श्वेत चन्दन का चूर्ण ३० ग्राम, कासनी के बीज २५० ग्राम, खीरा-ककड़ी के बीज २५० ग्राम, बीज कुलफा १८० ग्राम, धनियां नया १८० ग्राम, नीलकमल २५० ग्राम, लौकी के बीज २५० ग्राम, बेदसादा के पत्ते, बीह के पत्ते, सेव काश्मीरी, पालक के पत्ते प्रत्येक १-१ किलो, वासा २५० ग्राम, बेदमुश्क का अर्क १ बोतल।

विधि—इन सब वनौषधियों को रात्रि के समय भवके में १६ गुने जल में भिगो दें। प्रातः १५ किलो बकरी का दूध भवके में डाल देवें और १५ बोतल अर्क निकाल लेवें।

मात्रा—रोगी का बलाबल तथा आयु का विचार कर ५-१० ग्राम सुबह, शाम सेवन कराना चाहिए।

उपयोग—इसके सेवन से राजयक्ष्मा के रोगी में रक्त का संचार होता है, साथ ही शुष्क कास, उरःक्षत आदि फुफ्फुस सम्बन्धी विकार शीघ्र ठीक होते हैं।

—पं० चन्द्रशेखर शर्मा द्वारा

गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(१५) नवजीवन कल्प—कूष्माण्ड स्वरस ४ किलो, वासामूल क्वाथ १ किलो, बबूलत्वक् क्वाथ १ किलो, मधुयष्टी क्वाथ १ किलो, कण्टकारी क्वाथ १ किलो।

विधि—इसे वाष्पस्वेदन यन्त्र द्वारा घन बना लेना चाहिए। उसमें गोघृत ७५० ग्राम मिला उसी यन्त्र द्वारा तब तक स्वेदन करना चाहिए, जब तक जलीय भाग पूरा सूख न जाय। घृत के साथ इसे बराबर चलाते रहना चाहिए। फिर उसे उतारकर मधु १ किलो, वंशलोचन २५० ग्राम, छोटी इलायची बीज का चूर्ण ५० ग्राम डाल अच्छी तरह घोटना चाहिए।

मात्रा—१०-२० ग्राम तक।

उपयोग—यह योग कास, यक्ष्मा, दुर्बलता आदि विकारों में लाभकारी है। यक्ष्मा रोग में इसकी पूरी सफलता देखी गयी है। —पं० शचीन्द्र पाठक शास्त्री द्वारा.

गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(१६) यक्ष्मानाशक वटी—बसरे के सच्चे मोती १८ ग्राम लेकर १८० ग्राम बढ़िया अर्क गुलाब में खरल करें और शुष्क कर लें। इसके पश्चात् असली मलियागिरी चन्दन को पत्थर पर रगड़कर ६० ग्राम घिसें तथा इसे भी खरल में मिला मोतियों के साथ खूब घोट लें। जब उपरोक्त दोनों औषधियां ठीक हो जायं, तब उसमें धनिये के चावल, बीहदाना, असली वंशलोचन, मगज कद्दू प्रत्येक १८-१८ ग्राम, गोंद बबूल ३ ग्राम, भीमसैनी कपूर ६ ग्राम, चिन्तामणि रस १८ ग्राम।

विधि—इन सबको मिला अर्क केवड़ा में खरल कर १८० गोलियां बना लें।

मात्रा—यक्ष्मा के रोगी को प्रातः-सायं १-१ गोली बकरी के दुग्ध के साथ सेवन करावे।

उपयोग—इसके सेवन से यक्ष्मा रोगी दिन-प्रतिदिन स्वस्थ, बलवान, कान्तिवान होने लगता है।

उपरोक्त चिकित्सा के साथ-साथ नवनीत १ किलो लेकर उसको १०० बार शीतल जल से धुलवावें। उसमें भीमसैनी कपूर ६ ग्राम, गेरू शुद्ध १० ग्राम अच्छी तरह मर्दन कर मिला लें तथा यक्ष्मा रोगी के सर्वाङ्ग पर नित्य मालिश करनी चाहिए। —डा० रघुवंशलाल शर्मा द्वारा गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(१७) क्षयामृत—अकीक, शंखनाभि, प्रवाल, कौड़ी, सेलखड़ी, धान्याभ्रक, अभ्रक सफेद, यशद (पत्थर हरा), जहरमोहरा खताई प्रत्येक २०-२० ग्राम।

विधि—सभी वस्तुओं को कूटकर कपड़छन कर लेवें फिर अजवायन स्वरस, अडूसा स्वरस, हरी गिलोय का स्वरस, कंजा के पत्तो का स्वरस, घीकुवारी का स्वरस, दारुहल्दी क्वाथ, दूध गदही, दूध बकरी प्रत्येक १००-१०० ग्राम में बारी-बारी से ३-३ दिन घोटकर टिकिया बना शराव सम्पुट कर १२ किलो उपलो की अग्नि में फूंक दें। अर्थात् उपरोक्त ११ चीजो के स्वरस मे ३-३ दिन घुटाई होगी और फिर ११ बार शराव सम्पुट कर ११ बार अग्नि लगाई जावेगी। ११ बार अग्नि लग जाने पर उत्तम भस्म तैयार हो जावेगी फिर इस भस्म मे १० ग्राम मुक्तापिष्टी शामिल करके ३ दिन अर्क केवड़ा में घोटकर शीशी मे रख ले।

सेवन विधि—१-२ रत्ती तक वर्धमान रीति से बढ़ाकर सुबह शाम दोनों समय शहद तथा मक्खन के साथ चटानी चाहिये या रोगी की दशा देखकर और भी अनुपान निश्चित करना चाहिये।

उपयोग—क्षयरोग मे प्रथम तथा द्वितीय अवस्था मे इस प्रयोग से अवश्य लाभ होता है।

—वैद्यराज साधुसिंह कछवाहा द्वारा गुप्तसिद्ध चतुर्थ भाग से।

(१८) क्षयकेशरि रस—शुद्ध हरताल तबकी १० ग्राम, शुद्ध नीलाथोथा १० ग्राम, शुद्ध शंख १० ग्राम, वर्क सोना १० ग्राम।

विधि—अडूसे के स्वरस में पीसकर सुखा लें पश्चात् सत्यानाशी के रस में पीसकर टिकिया बनाकर सम्पुट करके १० किलो उपलो की अग्नि दें इस प्रकार २ बार अग्नि और दे पश्चात् निकालकर घोटकर उसमें कज्जली १० ग्राम, मोती ६ ग्राम, रससिन्दूर ३ ग्राम, कालीमरिच १० ग्राम, सोंठ ६ ग्राम, पीपल ६ ग्राम डालकर तुलसी के स्वरस में घोटकर १-१ रत्ती की गोली बना लें।

मात्रा—बिना मीठा डाले दुग्ध से तीन समय दिन में १-१ गोली सेवन करावे।

उपयोग—इससे पुराना ज्वर, कास, क्षय नष्ट होता है। —डा० वेदव्यासदत्त शर्मा द्वारा अनुभूत योगांक से।

(१९) बसन्तमालिनी रस (विशेष)—उत्तम स्वर्ण वर्क ६ ग्राम, मोती शुद्ध १० ग्राम, शुद्ध रूमी सिंगरफ १५ ग्राम, श्वेतमरिच २० ग्राम, उत्तम जस्ताभस्म ४० ग्राम, प्रवालभस्म (अमृतामूल मे भस्म की हुयी) १० ग्राम, शंखभस्म ६ ग्राम, रौप्यभस्म ६ ग्राम।

विधि—इन आठों को एकत्रित करके ३० ग्राम मक्खन डालकर १ दिन घोटें फिर नीबू अर्क मे जब तक चिकनाई न जाय खरल करते रहे पुनः ३-३ भावना गिलोय स्वरस तुलसीपत्र स्वरस, कनकपत्र स्वरस की देकर टिकिया बनाकर कार्य में लावें।

मात्रा—१ रत्ती की मात्रा में सुबह दोपहर शाम शहद के साथ चटावें।

उपयोग—यह यक्ष्मा, जीर्ण ज्वर, निर्बलता, कास आदि रोग मे अति परीक्षित योग है।

—पं० अनन्तदेव शर्मा द्वारा धन्वन्तरि अनुभूत चिकित्सांक से।

(२०) राजयक्ष्मारि वटी—संगजराहत, सफेद कत्था, जहरमोहरा, गोंद कीकर, कतीरा, निशास्ता, सफेद खसखस, तुख्मखतमी, सोना गेरू सब ६-६ ग्राम, अफीम, कर्पूर १-१ ग्राम, स्वर्णभस्म, अभ्रकभस्म, लोहभस्म, प्रवालपिष्टी, मकरध्वज ३-३ ग्राम।

विधि—इन दवाओ को पीसकर जल मे २ रत्ती की गोलियां बना ले।

मात्रा—१-२ गोली प्रातः-सायं बकरी के दूध के साथ सेवन करानी चाहिये।

उपयोग—यह सब प्रकार के राजयक्ष्मा में लाभदायक योग है। यक्ष्मा से जो रोगी अत्यन्त दुर्बल मृत प्राय. हो गये हों उन्हें यह प्रयोग बहुत लाभदायक है।

—श्री वेदव्यासदत्त द्वारा
अनुभूत चिकित्सांक से।

(२१) राजयक्ष्मानाशक दिव्य योग—काकजंघा सर्वाङ्ग ५० ग्राम, कृष्णतुलसी पत्र ५० ग्राम, कृष्णतुलसी बीज २५ ग्राम, वासक पत्र चूर्ण ५० ग्राम, रुदन्तीफल चूर्ण ५० ग्राम, लहसुन छिली हुई २५ ग्राम, असली वंशलोचन १२ ग्राम, स्वर्णवसन्त मालती ६ ग्राम।

निर्माण विधि—सर्वप्रथम काष्ठौषधियों का अलग-अलग कपड़छन चूर्ण कर अलग-अलग तोलकर रख ले पश्चात् एक खरल में असली वंशलोचन को खूब रगड़कर सूक्ष्मीकृत बना लें और इसमें छिली हुई लहसुन डालकर भली तरह खरल करें। तब इसे अलग पात्र में रखकर स्वर्णवसन्तमालती को खरल में डालकर दृढ़ हाथों से ६ घण्टे-तक खरल करें अब इसमें सभी औषधियों को मिलाकर पुनः दृढ़ हाथों से खरल करें पश्चात् इसकी २-२ रत्ती की गोलियां बनाकर उस पर खांड की पालिश चढ़ा दें यदि इच्छा हो तो पालिश में कोई आकर्षक रङ्ग भी मिला सकते है।

मात्रा—½-१ गोली तथा विशेष आवश्यकता पड़ने पर २ गोली तक गर्म दूध बकरी के से या गर्म जल से ४ बार पहले सप्ताह ३ बार दूसरे सप्ताह तथा पूरा लाभ पर २ बार प्रतिदिन सेवन करावें जब तक क्षय के कीटाणुओं का पूर्ण नाश होकर ऐक्स-रे का चित्र लेने पर फुफ्फुस विकार रहित सिद्ध न हो जाय तब तक दवा २ बार प्रतिदिन करके सेवन करानी चाहिये।

उपयोग—हर प्रकार के क्षय रोग जैसे फुफ्फुस क्षय, अस्थिक्षय, आन्त्रक्षय आदि ग्रन्थि से उत्पन्न क्षयजन्य शोथ में लाभकारी योग है। यह ज्वर, अरुचि, काम, वजन घटना आदि विकारों मे विशेष लाभकर है।

—श्री महेश्वरप्रसाद उमाशंकर द्वारा
धन्व० सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(२२) यक्ष्मानाशक अनुभूत मिश्रण—दालचीनी १० ग्राम, इलायची के दाने २० ग्राम, छोटी पीपर ४० ग्राम, वंशलोचन ८० ग्राम, मिश्री १६० ग्राम, रससिन्दूर १० ग्राम, टंकण शुद्ध १० ग्राम, मुक्ताशुक्ति भस्म २० ग्राम, यशदभस्म २० ग्राम, शृङ्गभस्म २५ ग्राम, वासा घनसत्व २५ ग्राम, गिलोयसत्व ५० ग्राम।

मात्रा—१-३ ग्राम तक प्रातः-सायं शहद, मक्खन या अन्य किसी उचित अनुपान से।

उपयोग—क्षय, खांसी, जीर्ण ज्वर, धातुगत ज्वर, निर्बलता, मन्दाग्नि, अरुचि आदि विकारों में लाभदायक योग है। यह प्रयोग स्वास्थ्य में प्रकाशित हुआ था उसमें कुछ परिवर्तन करके और उपयोगी बनाया गया है।

—वैद्य अशोककुमार मिश्रा द्वारा
धन्वन्तरि सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(२३) यक्ष्माहर मिश्रण—स्वर्णभस्म ६ ग्राम, मुक्ताभस्म ६ ग्राम, गिलोय सत्व ६ ग्राम, वंशलोचन असली ६ ग्राम, छोटी इलायची के बीज ६ ग्राम, पित्तपापड़ा ६ ग्राम, निबौली का गूदा ६ ग्राम, अजवायन ६ ग्राम, चिरायता ६ ग्राम।

विधि—वनौषधियों को पृथक्-पृथक् कूट-कपड़छन कर लेना चाहिये सबको खरल में डाल मर्दन कर २१ रत्ती तुलसी दल तथा २० ग्राम मिश्री मिलाकर खूब मर्दन कर रख लेना चाहिये।

सेवन विधि तथा मात्रा—प्रातः-सायं ३-३ ग्राम औषधि लाल बकरी के दूध के साथ फांकना चाहिये।

उपयोग—१५ दिन में ही इस प्रयोग से यक्ष्मा रोगी को लाभ होने लगता है धीरे-धीरे रोग निर्मूल हो जाता है।

—वैद्य जुगलकिशोर जी शास्त्री द्वारा
प्राणा० प्रयोग मणिमाला से।

(२४) क्षयरोग हर गोलियां—शृङ्गभस्म, जहरमोहरापिष्टी. कहरवापिष्टी, अकीकपिष्टी, प्रवालपिष्टी, अभ्रकभस्म, गोदन्तीहरताल भस्म, आयडोफार्म (अभाव मे गुनावी फिटकरी का फूला) सब समान भाग ले।

विधि—अर्क दुग्ध में घोटकर चने बराबर गोलियां बनाकर सुखाकर रख लें।

मात्रा—सुबह दोपहर शाम १-१ गोली बकरी के दूध के साथ देनी चाहिये। पथ्य में अन्न बिलकुल बन्द कर दें गोली लेने के आध घण्टे बाद तुलसी पत्र, मधु, मक्खन, मिश्री, सफेदमरिच ३ नग मिलाकर देनी चाहिये।

उपयोग—यह यक्ष्मा के लिये उपयोगी गोलियां हैं। १ मास तक प्रयोग करने से आशातीत लाभ देखने को मिल जाता है। —वैद्य अम्बाप्रसाद जी बारोट द्वारा प्रयोग मणिमाला से।

(२५) यक्ष्मानाशक अनुभूत मिश्रण—मुक्ता पंचामृत [यो० र०] २० ग्राम, स्वर्ण भस्म ३ ग्राम, रससिंदूर [षड्गुणबलि जारित] १० ग्राम, लोह भस्म ६ ग्राम, अभ्रक भस्म सहस्रपुटी १० ग्राम, रौप्य भस्म ६ ग्राम, छिलका कुक्कुटाण्डत्वक् भस्म ६ ग्राम, खर्पर भस्म ६ ग्राम, प्रवाल भस्म १० ग्राम, शृङ्ग भस्म ६ ग्राम।

विधि—सबको खूब खरल कर केकड़ा के मांसरस, शतावर के रस अथवा गिलोय स्वरस में ३-३ दिन तक मर्दन कर रख ले।

मात्रा—१ रत्ती दूध के साथ दिन में ३ बार सेवन करावें।

उपयोग—क्षय की प्रथम तथा द्वितीय अवस्था में अति लाभदायक योग है।

—पं० रामस्वरूप जी शर्मा द्वारा प्रयोग मणिमाला से।

(२५) एकादश सितोपलादि चूर्ण—मिश्री १६० ग्राम, वासामूल छाल १६० ग्राम, वंशलोचन ८० ग्राम, गिलोयसत्व ८० ग्राम, छोटी पीपल ४० ग्राम, रुदन्तीफल चूर्ण ४० ग्राम, इलायची २० ग्राम, प्रवालपिष्टी २० ग्राम, तेजपात १० ग्राम, लाक्षा २० ग्राम तथा मण्डूर भस्म २० ग्राम।

विधि—उक्त ११ दवाओं को खरल करके महीन पीसकर रख लें।

मात्रा—६-१२ रत्ती उपरोक्त मिश्रण में मधु १ ग्राम, नवनीत ३ ग्राम, बताशे ३ ग्राम मिलाकर सुबह, दोपहर शाम सेवन करावें।

उपयोग—इसके सेवन से सर्व लक्षणोंयुक्त क्षय, उरःक्षत, क्षयज कास, जीर्णज्वर, रक्तपित्त, दौर्बल्यता आदि विकारों में आशातीत लाभ होता है।•

—वैद्य जगदम्बाप्रसाद श्रीवास्तव द्वारा स्वास्थ्य मार्च १९७९ से।

विशेषांक के लिये प्रेषित विशेष प्रयोग—

(२७) हर्षुल क्षय रुकन्तक वटी—महालोकनाथ रस [शार्ङ्गधरोक्त] १० ग्राम, अर्क दुग्ध भावित स्फटिका भस्म १० ग्राम, मुक्तापिष्टी १० ग्राम, स्वर्ण भस्म १० ग्राम, हिंगुल योगेन जारित लोह भस्म १० ग्राम।

विधि—सबको कटेरी स्वरस, वासा स्वरस तथा अमृता स्वरस की क्रमशः भावना देकर २-२ रत्ती की गोलियां बना लें।

मात्रा—वयस्को को २ गोली ताजा मक्खन तथा मधु से प्रातः-सायं सेवन करावें। यदि रक्तष्ठीवन भी हो, तो इसमें २ रत्ती शुद्ध लाक्षा तथा स्फटिका भस्म २ रत्ती और मिला लेना चाहिए।

• उपरोक्त प्रयोग का अनुभव हमने अनेक यक्ष्मा के रोगियों पर किया है तथा सफल पाया है। हमने इस प्रयोग मे अनुभव से कुछ परिवर्तन किया है। उपरोक्त योग में हम रुदन्तीफल चूर्ण ४० ग्राम की जगह तिगुना १२० ग्राम डालते हैं तथा शृङ्गभस्म २० ग्राम एवं मृगांकपोटली रस या स्वर्ण वसन्तमालती १० ग्राम मिलवाते है। इस प्रकार यह योग यक्ष्मा के रोगियों के लिए रामबाण बन जाता है। जो रोगी स्ट्रेप्टोमाइसिन के सैकड़ों सूचीवेध लगवाकर निराश थे, उन्हें हमने इस योग से निरोग किया है। इसका प्रयोग हम च्यवनप्राश २० ग्राम मे बकरी का दूध मिलवाकर प्रातः, दोपहर, शाम को करवाते है। पाठकों से अनुरोध है, कि इस प्रयोग को अपनी चिकित्सा मे उपयोग में लावें और यक्ष्मा रोगियों को नवजीवन प्रदान करें।

—गोपालशरण गर्ग "सम्पादक"।

उपयोग—यक्ष्मा की किसी भी अवस्था में इसका प्रयोग लाभदायक है। रोगी की क्षीणशक्ति वापस आने लगती है तथा यक्ष्मा के सभी लक्षणों में क्रमशः सुधार होने लगता है। —श्री हर्षुल मिश्र, रायपुर (म०प्र०)।

(२८) यक्ष्मानाशक नागवला कल्प—

पिबेन्नागवलामूलमर्धकर्षं विवर्धितम्।
पलं क्षीरयुतं मासं क्षीरवृत्तिरनन्न भुक्॥
एष प्रयोगः पुष्ट्यायुर्बलरोग्यकरः परः।

भावार्थ—नागवला के मूल की छाल को स्वच्छ कर सूक्ष्म चूर्ण करें। इसमें से प्रथम दिन ६ ग्राम चूर्ण सेवन करें और २-२ दिन के पश्चात् ६-६ ग्राम बढ़ाते हुए ४८ ग्राम तक गोदुग्ध से सेवन करें। पुनः ६-६ ग्राम घटाते हुए ६ ग्राम की मात्रा तक ले आयें। इस प्रकार इसका प्रयोग एक मास तक करना चाहिए।

इस कल्प के सेवन काल में रोगी को केवल गोदुग्ध पर ही रखना चाहिए। तृष्णा लगने पर भी दुग्ध ही दें। अन्न तो बिलकुल न दें।

४८ ग्राम चूर्ण एक बार में लेना कुछ अखरता है। अतः इस ४८ ग्राम चूर्ण को सुविधानुसार दिन में कई बार में विभाजित कर सेवन करना चाहिए।

नागबला क्या बला है

नागबला ने संदिग्धता का कवच पहन रखा है। परन्तु नागबला संदिग्ध वनौषधि नहीं है। मेरे मत से नागबला "गंगेरन" है। हमने गंगेरन का ही प्रयोग कराया है, परिणाम उत्तम प्राप्त हुआ है। आचार्य चक्रपाणि लिखते हैं—

"मूलं नागबलायास्तु चूर्णं दुग्धेन पाययेत्।"

नागवला के मूल की छाल के चूर्ण को गोदुग्ध के साथ दें।

नागबला सेवन विधि

दिन	चूर्ण की मात्रा	छागलाद्य घृत	मधु की मात्रा
१	६ ग्राम	१० ग्राम	५ ग्राम
२	६ ,,	१० ,,	५ ,,
३	१२ ,,	१२ ,,	६ ,,
४	१२ ,,	१२ ,,	६ ,,
५	१८ ,,	१४ ,,	७ ,,
६	१८ ,,	१४ ,,	७ ,,
७	२४ ,,	१६ ,,	८ ,,
८	२४ ,,	१६ ,,	८ ,,
९	३० ,,	१८ ,,	९ ,,
१०	३० ,,	१८ ,,	९ ,,
११	३६ ,,	२० ,,	१० ,,
१२	३६ ,,	२० ,,	१० ,,
१३	४२ ,,	२२ ,,	११ ,,
१४	४२ ,,	२२ ,,	११ ,,
१५	४८ ,,	२४ ,,	१२ ,,
१६	४८ ,,	२४ ,,	१२ ,,

विशेष वचन—पन्द्रहवें दिन को ही ले लीजिये; ४८ ग्राम चूर्ण एक बार में लेना कुछ अखरता है। अतः इस ४८ ग्राम को ४ बार में लें। चूर्ण, घृत एवं मधु को मिलाकर एक कांच के पात्र में रख लें। इसमें से यथावश्यक रुच्यानुसार लें। ऊपर रसोनक्षीर रुचि के अनुसार पीवें।

रसोन क्षीर—अच्छा पुष्प लहसुन का लाकर उसका छिलका निकाल दे। २०० दाने अच्छे वायविडङ्ग के लेकर उनको थोड़ा दरदरा-सा कूट लें, फिर दोनों को १५० मि० लि० गाय के दूध तथा २५० मि० लि० जल में डालकर मन्द अग्नि पर पकावें। जब सब पानी जल जाये तथा दूध बाकी रहे, तब नीचे उतार कपड़े से छान उसमें चीनी और छोटी इलायची के बीजों का चूर्ण यथा रुचि डालकर पीने को दें। रोगी इस प्रयोग को जैसे-जैसे सहन करता जाये, वैसे-वैसे लहसुन की कली तथा वायविडङ्ग की मात्रा बढ़ाते जांय। लहसुन की १५ कली तथा ५०० दाने वायविडङ्ग की मात्रा तक बढ़ावें।

—वैद्य मोहरसिंह आर्य, मिसरी (हरियाणा)।

[इ] प्रमुख शास्त्रीय योग

क्रमांक	कल्पना	औषधि नाम	ग्रन्थ सन्दर्भ	मात्रा एवं समय	अनुपान	विशेष
१	रस	कुमुदेश्वर रस	र० सा० सं०	१२५ मि०ग्रा० दिन में २-३ बार	मरिच+घृत	पित्तप्रकोप पर।
२	"	हेमगर्भपोटली रस	भै० र०	६०-१२० मि० ग्रा० दिन में २ बार	"	अत्यधिक दौर्बल्य में।
३	"	लोकेश्वरपोटली रस	यो० र०	" "	"	" "
४	"	मुक्ता पंचामृत	"	१२५-२५० मि० ग्रा० दिन में २ बार	पिप्पली चूर्ण +गोदुग्ध	दाह, अरति में।
५	"	महा लक्ष्मीविलास रस (अष्टम)	र०यो०सा०	१२५ मि०ग्रा० दिन में २ बार	आर्द्रक स्वरस +मधु	प्रतिश्याय विशेष में।
६	"	रजत रसायन	"	२५०-५०० मि० ग्रा० दिन में २ बार	अजादुग्ध	वृद्ध यक्ष्मी को।
७	"	वसन्तकुसुमाकर रस	"	१२५-२५० मि० ग्रा० दिन में २ बार	मरिच+मधु	मधुमेहजन्य यक्ष्मा में।
८	"	लवंगादि ताल-सिन्दूर	आ० नि० मा०	" "	घृत+दुग्ध	कास श्वास में।
९	"	मृगांक रस	भै० र०	१२५ मि०ग्रा० दिन में १-२ बार	वासाप्रपानक	क्षय की सब अवस्थाओं में।
१०	"	कांचनाभ्र रस	"	" "	मधुयष्टि+ मधु+गोघृत	प्रतिश्याय विशेष में।
११	"	बृहत् कांचनाभ्र रस	"	" "	"	" "
१२	"	स्वर्ण वसन्तमालती	सि० भै० मणि०	" "	मधु+ पिप्पली	ज्वरहर, बल्य।
१३	"	राजमृगाङ्क रस	भै० र०	६०-१२० मि० ग्रा० दिन में २ बार	मरिच+मधु	क्षय की सब अवस्थाओं में।
१४	"	महामृगाङ्क रस	"	" "	मधु+ पिप्पली	" "
१५	"	रत्नगर्भपोटली रस	"	" "	मरिच+घृत +मधु	कफाधिक्य में।
१६	"	चूडामणि रस	"	" "	बल्याद्य घृत	वाताधिक्य में।
१७	"	वसन्ततिलक रस	र० सा० सं०	" "	मधुयष्टि+ मधु	विशेषतः शुष्क कास में।
१८	"	बृहत् क्षयकेसरी रस	"	" "	पिप्पली+ मधु	क्षय की सब अवस्थाओं में।

१९	रस	महाराज नृपति-वल्लभ रस	भै० र०	६०–१२५ मि० ग्रा० दिन में २ बार	कुटजारिष्ट	अतीसार में उपयोगी।
२०	,,	त्रैलोक्य चिन्तामणि रस	यो० र०	,, ,,	शुण्ठी क्वाथ + गुड़	अनिद्रा में।
२१	,,	चिन्तामणि चतुर्भुज रस	,,	,, ,,	पञ्चपञ्च-मूलाद्य घृत	पार्श्व शिरोरुजा में।
२२	,,	बृहत् शृङ्गाराभ्र रस	,,	,, ,,	आर्द्रक स्वरस + मधु	विशेषतः कास में।
२३	,,	बृहत् चन्द्रामृत रस	,,	,, ,,	वासावलेह	,, ,,
२४	,,	किन्नरकंठ रस	,,	,, ,,	बलादि क्षीर + मधु	स्वरभेद में।
२५	,,	स्वर्णभूपति रस	यो० र०	१२५–५०० मि० ग्रा० दिन में २ बार	आर्द्रक स्वरस + मधु	यक्ष्मा की दूसरी अवस्था में उपयोगी।
२६	,,	सर्वाङ्गसुन्दर रस	र० सा० सं०	६०–१२५ मि० ग्रा० दिन में २ बार	मधु	अतीसार में।
२७	,,	स्वयमग्नि रस	शा० सं०	१२५ मि०ग्रा० दिन में २ बार	आर्द्रक स्वरस + मधु	विशेषतः कास में।
२८	,,	हेमाभ्र रससिन्दूर	यो० र०	,, ,,	पिप्पली + मधु	यक्ष्मा की दूसरी अवस्था में।
२९	,,	पूर्णचन्द्रोदय रस	र० त० सा०	१२५–२५० मि० ग्रा० दिन में १-२ बार	शीतलचीनी + मधु + नवनीत	शुक्रक्षय जन्य में।
३०	,,	प्रवाल पंचामृत	यो० र०	१२५–२५० मि० ग्रा० दिन में २ बार	मधु	मन्दाग्नि अन्नदाह में।
३१	,,	पञ्चानन रस	भै० र०	१२५ मि०ग्रा० दिन में २ बार	शेफालीपत्र-स्वरस + मधु	तीव्र ज्वर होने पर।
३२	भस्म	स्वर्ण भस्म	सि०यो०सं०	६० मि०ग्रा० दिन में २ बार	सिता + मधु + नवनीत	जन्तुघ्न, ज्वरघ्न प्रतिविषोत्पादक
३३	,,	हीरक भस्म	र० त०	२–४ मि०ग्रा० दिन में २ बार	पूर्णचन्द्रोदय + मधु	यक्ष्मा द्वितीय, तृतीय अवस्था में।
३४	,,	माणिक्य भस्म	,,	६० मि०ग्रा० दिन में २ बार	स्वर्णदल + मधु	धातुक्षय में।
३५	,,	गोमेदमणि भस्म	,,	,, ,,	मन्तानिका मधु	पित्त प्रकोप में।
३६	,,	पुष्पराग भस्म	,,	६०–१२५ मि० ग्रा० दिन में २ बार		दाह, धातुशोष में।
३७	,,	वैक्रान्त भस्म	,,	३०–६० मि० ग्रा० दिन में २ बार	,,	हीरकवत्।

३८	भस्म	अभ्रक भस्म	र० त०	१२५–२५० मि० ग्रा० दिन में २ बार	च्यवनप्राश	क्षय की प्रथमावस्था में।
३९	,,	प्रवाल भस्म	र० त० सा०	,, ,,	घृत+मधु	दाह, अग्निसाद में।
४०	,,	रौप्य भस्म	र० त०	६० मि० ग्रा० दिन में २ बार	त्रिकटु+मधु	प्रतिमक्षलोयज वात प्रकोपहर।
४१	,,	शृङ्ग भस्म	,,	१२५–३७५ मि० ग्रा० दिन में २ बार	गिलोय सत्व +मधु	प्रतिश्याय, पार्श्वशूल में।
४२	,,	लौह भस्म	,,	१२५–२५० मि० ग्रा० दिन में २ बार	पिप्पली+मधु	बल मांसक्षय में।
४३	,,	कासीस भस्म	,,	१२५–३७५ मि० ग्रा० दिन में २ बार	,,	रक्तक्षय में।
४४	,,	मौक्तिक पिष्टी	,,	६०–१२५ मि० ग्रा० दिन में २ बार	च्यवनप्राश	दाह, अरति में।
४५	,,	वंग भस्म	,,	१२५–२५० मि० ग्रा० दिन में २ बार	मधु+नवनीत	शुक्रक्षय में।
४६	,,	स्वर्णमाक्षिक भस्म	,,	१२५–३७५ मि० ग्रा० दिन में २ बार	शुण्ठी क्वाथ	निद्रानाश में।
४७	,,	यशद भस्म	सि०यो०सं०	६०–१२० मि० ग्रा० दिन में २ बार	मधु	प्रातः स्वेद, बल मांसक्षय में।
४८	,,	नाग भस्म	,,	१२५–२५० मि० ग्रा० दिन में २ बार	सिता+नवनीत	धातुक्षय में।
४९	,,	राजावर्त भस्म	र० र० स०	,, ,,	नवनीत	पित्तप्रकोप में।
५०	,,	शंख भस्म	र० त०	१२५–५०० मि० ग्रा० दिन में २ बार	निम्बक स्वरस +सिता	शूल, अजीर्ण में।
५१	,,	वराटिका भस्म	,,	२५०–५०० मि० ग्रा० दिन में २ बार	घृत+सिता	रक्तपित्त, क्षतक्षय में।
५२	,,	संगजराहत भस्म	र० त० सा०	१२५–५०० मि० ग्रा० दिन में २ बार	अजादुग्ध	रक्तपित्त में।
५३	पर्पटी	विजय पर्पटी	सि०यो०सं०	१२५–३७५ मि० ग्रा० दिन में २ बार	मधु	क्षय की प्रथमावस्था।

५४	पर्पटी	प्राणदा पर्पटी	यो० र०	१२५–३७५ मि० ग्रा० दिन में २ बार	पिप्पली + मधु	ज्वरातीसार में।
५५	,,	अभ्र पर्पटी	सि०यो०सं०	,, ,,	त्रिकटु + मधु	कास, अतीसार में।
५६	,,	बोल पर्पटी	यो० र०	,, ,,	कूष्माण्ड स्वरस	रक्तपित्त विशेष में।
५७	,,	स्वर्ण पर्पटी	र० सा० सं०	,, ,,	जीरक + मधु	अतीसार विशेष में।
५८	,,	पंचामृत पर्पटी	,,	,, ,,	,,	,, ,,
५९	लौह	यक्ष्मारि लौह	भै० र०	१२५ मि०ग्रा० दिन में २ बार	पिप्पली + मधु	ज्वर विशेष में।
६०	,,	शिलाजित्वादि लौह	र० सा० सं०	,, ,,	,,	प्रतिलोम क्षय में।
६१	,,	समशर्कर लौह	भै० र०	२५० मि०ग्रा० दिन में २ बार	कूष्माण्ड-स्वरस + मधु	रक्तपित्त विशेष पर।
६२	,,	ताप्यादि लौह	च० द०	१२५–२५० मि० ग्रा० दिन में २ बार	मधु	रक्तक्षय में।
६३	,,	पुटपक्व विषम-ज्वरान्तक लौह	भै० र०	६०–१२० मि० ग्रा० दिन में २ बार	पिप्पली + मधु	ज्वर व वर्णोगद विशेष पर।
६४	,,	महाश्वासारि लौह	,,	१२५–२५० मि० ग्रा० दिन में २ बार	आर्द्रक स्वरस + मधु	श्वास विशेष पर।
६५	,,	पिप्पल्यादि लौह	,,	२५० मि०ग्रा० दिन में २ बार	,,	,,
६६	,,	राजतादि लौह	र० सा० सं०	,, ,,	आज्य घृत	प्रतिलोम क्षय में।
६७	,,	नवायस लौह (बृहत्)	यो० र०	,, ,,	भृष्टलवङ्ग + मधु	रक्तक्षय में।
६८	,,	विन्ध्यवासी योग	च० द०	२५०–५०० मि० ग्रा० दिन में २ बार	वासा स्वरस + मधु	अनुलोम क्षय में। कास विशेष में उपयोगी।
६९	वटी	नागोत्तर वटी	भै० र०	१–२ गोली दिन में २ बार	कासह्रासकर क्वाथ	
७०	,,	सिंहास्यादि वटी	,,	,, ,,	,,	,, ,,
७१	,,	एलादि वटी	,,	२–३ गोली दिन में ४-५ बार	चूसते रहें	कास, रक्तपित्त में।
७२	,,	वृ० शशिप्रभा वटी	,,	१–२ गोली दिन में २ बार	वासा स्वरस + मधु	कास विशेष में।
७३	,,	लशुनादि वटी	वै० जी०	२ गोली दिन में २-३ बार	जल	अरुचि में।
७४	,,	महाशंख वटी	भै० र०	१–२ गोली दिन में २ बार	,,	अग्नि, शूल में।

७५	वटी	चन्द्रप्रभा वटी	शा० सं०	१–२ गोली दिन में १-२ बार	गोक्षुरक्वाथ	मूत्रसंस्थान विकृति में।
७६	,,	वृहत् रसेन्द्र वटी	भै० र०	,, ,,	जीवनीय क्षीरपाक	क्षय की प्रथमावस्था में।
७७	,,	शिलाजित्वादिवटी	,,	,, ,,	,,	मूत्र व संजनन संस्थान विकृति में।
७८	,,	शिवा गुटिका	च० द०	,, ,,	,,	,, ,,
७९	चूर्ण	सितोपलादि चूर्ण	,,	१ ग्राम दिन में २ बार	बलाद्य घृत	कास श्वास में।
८०	,,	तालीसादि चूर्ण	यो० र०	१–२ ग्राम दिन में २ बार	,,	,, ,,
८१	,,	लवंगादि चूर्ण	,,	,, ,,	मधु+घृत	,, ,,
८२	,,	वृहदग्निमुख चूर्ण	भै० र०	,, ,,	जल	अरुचि विशेष में।
८३	,,	जीरकाद्य चूर्ण	,,	२–३ ग्राम दिन में २ बार	,,	अतीसार, विशेष में।
८४	,,	अश्वगन्धादि चूर्ण	यो० र०	,, ,,	दुग्ध	धातुक्षय में।
८५	,,	द्राक्षादि चूर्ण	,,	,, ,,	मधु	कफ प्रसेक में।
८६	,,	एलाद्य चूर्ण	भै० र०	,, ,,	चूसते हुये खायें	कास, श्वास, स्वरभेद में।
८७	,,	कट्फलादि चूर्ण	शा० सं०	,, ,,	मधु+आर्द्रक-स्वरस	,, ,,
८८	,,	यवानीखाण्डव चूर्ण	चरक०	५ ग्राम भोजन से पूर्व	चूसते हुये खायें	अरुचि में।
८९	आसव–अरिष्ट	चित्तचन्दिरासव	सि० भै० मणि०	१५-२० मि०लि० भोजनोत्तर	समान जल मिलाकर	यक्ष्मा की द्वितीयावस्था में।
९०	,,	द्राक्षासव	भै० र०	१५-३० मि०लि० भोजनोत्तर	,,	मन्दाग्नि, विबन्ध में।
९१	,,	कनकासव	,,	१०-१५ मि०लि० भोजनोत्तर	,,	श्वास विशेष में।
९२	,,	उशीरासव	शा० सं०	१५-२० मि०लि० भोजनोत्तर	,,	रक्तपित्त विशेष मे।
९३	,,	अहिफेनासव	र० त०	५–१० बूंद भोजनोत्तर	पर्याप्त जल मिलाकर	अतीसार विशेष मे।
९४	,,	सारस्वतारिष्ट	भै० र०	१०-१५ मि०लि० भोजनोत्तर	समान जल मिलाकर	अनिद्रा विशेष में।
९५	,,	चन्दनासव	,,	,, ,,	,,	मूत्रसंस्थान विकृति में।
९६	,,	देवदार्व्यारिष्ट	,,	,, ,,	,,	,, ,,
९७	,,	पिप्पल्यासव	शा० सं०	,, ,,	,,	कास विशेष मे।
९८	,,	बब्बूलारिष्ट	,,	,, ,,	,,	,,
९९	पाक–लेह	एलादि मन्थ	वृ० मा०	५–१५ ग्राम दिन में १-२ बार	दुग्ध	बलक्षय मे।

१००	पाक-लेह	कल्याणावलेह	भै० र०	५–१० ग्राम दिन में १-२ बार	जीवनीयक्षीर-पाक+मधु	स्वरभेद में।
१०१	,,	बृहत् वासावलेह	,,	,, ,,	गोदुग्ध	रक्तपित्त, कास में।
१०२	,,	च्यवनप्राश	शा० सं०	१०–२० ग्राम दिन में २-३ बार	अजादुग्ध	यक्ष्मा की सब अवस्थाओं में।
१०३	,,	अमृतप्राशावले	चरक०	५–१० ग्राम दिन में २ बार	,,	,, ,,
१०४	,,	सितोपलादि अवलेह	भै० र०	३–५ ग्राम दिन में २ बार	,,	कास, श्वास में। —
१०५	,,	वासावलेह	यो० र०	५–१० ग्राम दिन में २ बार	,,	कास, रक्तपित्त में।
१०६	,,	गुडूच्यादि मोदक	,,	१५–३० ग्राम दिन में २ बार	,,	रक्तपित्त में।
१०७	,,	सर्पि गुड	च० द०	५ ग्राम दिन में २ बार	,,	क्षय की द्वितीय अवस्था में।
१०८	,,	खण्डपिप्पल्यावलेह	यो० र०	,, ,,	,,	कफप्रमेह में।
१०९	घृत	ब्राह्मी घृत	चरक०	५–१० ग्राम दिन में १-२ बार	,,	मानस विकृति में।
११०	,,	बलाद्य घृत	यो० र०	,, ,,	,,	क्षयजन्य वातप्रकोप में
१११	,,	गोक्षुराद्य घृत	,,	,, ,,	,,	मूत्रसंस्थान विकृति में।
११२	,,	जीवन्त्यादि घृत	च० म०	५–१० ग्राम दिन में २ बार	,,	क्षय की तृतीय अवस्था में।
११३	,,	[illegible]कुमाद्य घृत	भै० र०	५ ग्राम दिन में २ बार	,,	,, ,,
११४	,,	नागबला घृत	च० द०	३–६ ग्राम दिन में २ बार	,,	,, ,,
११५	,,	रास्नादि घृत	चरक०	५–१० ग्राम दिन में २ बार	,,	,, ,,
११६	,,	पञ्चकोलादि घृत	,,	,, ,,	,,	अरुचि, दाह में।
११७	,,	पञ्चपञ्चमूलाद्य घृत	,,	१० ग्राम दिन में १-२ बार	,,	शिरःपार्श्व शूल में।
११८	,,	खर्जुराद्य घृत	,,	१० ग्राम भोजन से पूर्व, पश्चात्	—	स्वरभेद कास श्वास में।
११९	तैल	महाचन्दनादि तैल	भै० र०	यथेष्ट प्रातः	अभ्यङ्गार्थ	ज्वर, दाह में।
१२०	,,	वासाचन्दनादि तैल	,,	,, ,,	,,	,,
१२१	,,	चन्दनादि तैल	यो० र०	,, ,,	,,	दौर्बल्य, ताप में।
१२२	,,	लाक्षादि तैल	,,	,, ,,	,,	,,
१२३	,,	महालाक्षादि तैल	,,	,, ,,	,,	ज्वर, दाह में।
१२४	,,	चन्दनबलालाक्षादि	,,	,, ,,	,,	वातवृद्धि में।
१२५	,,	महानारायण तैल	च० द०	,, ,,	,,	,,
१२६	,,	अश्वगन्धादि तैल	यो० र०	,, ,,	,,	दौर्बल्य में।
१२७	,,	लक्ष्मीविलास तैल	,,	,, ,,	,,	प्रतिश्याय, वक्षशूल में।
१२८	,,	श्रीविष्णु तैल	भै० र०	,, ,,	,,	

यक्ष्मा में सामान्य चिकित्सा उपक्रम

संदिग्ध, रक्तादि धातुओं के क्षय तथा धातुऊष्मा के अपचय इन तीन कारणों से यक्ष्मा उत्पन्न होता है। यक्ष्मा में जो अन्न खाता है उससे ओज कम बनता है और मल अधिक बन जाता है अतः यक्ष्मा रोगी की चिकित्सा में उसके मल का संरक्षण आवश्यक है। अतः यदि रोगी बलवान व बहुत मल वाला हो तब स्वेदन करके स्निग्ध एवं तर्पक औषधियों से मृदु वमन और विरेचन देकर शोधन करना चाहिये। कोष्ठ के शुद्ध हो जाने पर दीपन एवं बृंहण चिकित्सा करें। रोगी क्षीण व दुर्बल हो तो उसका शोधन कदापि न करावें क्योंकि यक्ष्मी का जीवन मल के अधीन है अतः यक्ष्मा में इन दोनों की रक्षा करना नितान्त आवश्यक है।

यक्ष्मा एक त्रिदोषज व्याधि है। दोषों का बलाबल देखकर जो दोष प्रबल हों उन्हें सावधानी से शान्त करें। यक्ष्मा के विभिन्न उपद्रवों को शान्त करने के लिये समुचित योगों का प्रयोग कराना चाहिए। ज्वर की तीव्रावस्था में स्वर्ण योगों से तथा अधिक औषधियां देने से लाभ नहीं होगा उस समय रोगी को पूर्ण विश्राम, लघु बल्य पथ्य तथा प्रवाल, मुक्ता, शृङ्ग आदि मृदु औषधियों का प्रयोग कराके ज्वर शान्त कराना चाहिये। ज्वर के शान्त या कम हो जाने पर स्वर्ण योग तथा च्यवनप्राश, द्राक्षारिष्ट आदि बड़ी मात्रा वाली औषधियां देनी चाहिये

यक्ष्मा में सामान्य औषधि व्यवस्था-पत्र

(१) स्वर्णवसन्तमालती १२० मि० ग्रा०, शृङ्गाराभ्र २५० मि०, प्रवालपंचामृत २५० मि० ग्रा०, सितोपलादि १ ग्राम। १ मात्रा × प्रातः दोपहर तथा शाम को मधु से

(२) द्राक्षारिष्ट २० मि० लि० × समानभाग समभाग जल से भोजनोत्तर।

(३) मृगशृङ्गभस्म १२० मि० ग्रा०, प्रवालभस्म १२० मि० ग्रा०, च्यवनप्राश १२ ग्राम। १ मात्रा × प्रातः तथा रात्रि को सोते समय बकरी के दूध से दें।

(४) महाचन्दनादि तैल—मालिश के लिये।

एक अन्य व्यवस्था-पत्र

(१) मृगांकरस १२५ मि० ग्रा०, प्रवालपञ्चामृत २५० मि० ग्रा०, यक्ष्मादिलौह १२५ मि० ग्रा०, शृङ्गभस्म १२५ मि० ग्रा०; गुडूचीसत्व ३७५ मि० ग्रा०, च्यवनप्राश १५ ग्राम। १ मात्रा × बकरी के दूध से प्रातः तथा रात्रि को दे।

(२) हेमाभ्र रससिन्दूर ६० मि० ग्रा०, कुमुदेश्वर रस १२५ मि० ग्रा०, मुक्तापञ्चामृत १२५ मि० ग्रा०। १ मात्रा × शेफालीपत्र (हारसिंगार) स्वरस + मधु मिलाकर ६ बजे तथा मध्यान्ह २ बजे दें।

(३) द्राक्षारिष्ट २० मि० लि० + अश्वगन्धारिष्ट २० मि० लि० × १ मात्रा समभाग जल मिलाकर भोजनोपरान्त दें।

(४) वसन्तमालती १२५ मि० ग्रा०, शिलाजत्वादि लौह १२५ मि० ग्रा०, मधुयष्टि चूर्ण ३ ग्राम। १ मात्रा × गोदुग्ध ६ ग्राम + मधु १० ग्राम के साथ रात्रि में सोते समय दें।

(५) बृ० चन्द्रामृत रस ५०० मि० ग्रा०, सितोपलादि चूर्ण ५ ग्राम, कालीमरिच ११ नग, वासास्वरस २५ ग्राम। मिलाकर रख ले। दिन में कई बार चाटे।

(६) चन्दनलाक्षादि तैल शरीर पर, श्री विष्णुतैल वक्ष पर तथा महानारायन तैल को सिर पर अभ्यङ्ग करावे।

यक्ष्मा की विशेष अवस्थाओं में औषधि व्यवस्था-पत्र

ज्वर की तीव्रता की अवस्था में—(१) मुक्ता पञ्चामृत १२० मि० ग्रा०, पंचानन रस १२० मि० ग्रा०, अमृतासत्व २४० मि० ग्रा० । १ मात्रा × प्रातः-सायं मधु से दें।

(२) अमृतारिष्ट २० मि० लि० + शुद्ध नरसार ½ ग्राम × १ मात्रा भोजनोपरान्त समान जल से दें।

(३) चन्द्रामृत १ ग्राम + सितोपलादि १२ ग्राम × वासा पानक या शहद में मिलाकर दिन में थोड़ा-थोड़ा कई बार चटावें।

रक्तष्ठीवन की अवस्था में—(१) वसन्तमालती १२० मि० ग्रा०, रक्तपित्त कुलकण्डन रस १२० मि० ग्रा०, लाक्षादि चूर्ण १ ग्राम, सितोपलादि १ ग्राम। १ मात्रा × प्रातः दोपहर सायं वासा स्वरस या मधु से दें।

(२) शुद्ध स्वर्णगैरिक २४० मि० ग्रा०, दुग्धपाषाण १ ग्राम। × १ मात्रा भोजनोपरान्त उशीरासव २० मि० लि० में बराबर जल मिलाकर दें।

(३) एलादिवटी—मुंह में डालकर ३-४ बार चुसावें।

(४) चन्दनबलालाक्षादि तैल—अभ्यङ्ग हेतु प्रयोग करावें।

यक्ष्मा के अन्य प्रकारों में औषधि व्यवस्था-पत्र

[क] आन्त्र क्षय—(१) स्वर्णपर्पटी १२० मि० ग्रा० × १ मात्रा भुना जीरा ½ ग्राम + भुनी हींग ६० मि० ग्राम व मधु से प्रातः-सायं दें।

(२) अग्निकुमार १२० मि० ग्रा० + रामवाण रस २४० मि० ग्रा० + महागन्धक योग २४० मि० ग्रा०। × १ मात्रा १० बजे तथा सायं ४ बजे मधु से दें।

(३) पिप्पल्यासव—२० मि० लि० × १ मात्रा भोजनोपरान्त समान जल मिलाकर दें।

(४) ग्रहणीमिहिर तैल—मालिश के लिये।

[ख] अस्थि क्षय—(१) वसन्तमालती १२० मि० ग्रा०, शिलाजत्वादि लोह ½ ग्राम, प्रवालपिष्टी ½ ग्राम, शृङ्गभस्म ½ ग्राम, सितोपलादि १ ग्राम। × १ मात्रा प्रातः दोपहर शाम मधु व घृत से दें।

(२) जीवन्त्यादि घृत २० मि० लि० × १ मात्रा प्रातः दूध में मिलाकर दें।

(३) अश्वगन्धारिष्ट २० मि० लि० × १ मात्रा भोजनोत्तर समान जल से दें।

(४) वृ० योगराज गूगल ½ ग्राम × १ मात्रा रात में गरम दूध से दें।

[ग] क्षयज ग्रन्थि वृद्धि (अपची)—(१) वसन्तमालती १२० मि० ग्रा० × मृगशृङ्गभस्म २४० मि० ग्रा० + गुडुच्यादिलोह २४० मि० ग्रा० काञ्चनार गूगल ½ ग्राम × १ मात्रा प्रातः दोपहर शाम कांचनार की छाल के क्वाथ से दें।

(२) सारिवाद्यासव—२० मि० लि० × १ मात्रा भोजनोपरान्त समान जल मिलाकर दें।

(३) रसमाणिक्य ६० मि० ग्रा० × प्रवालपिष्टी १२० मि० ग्रा० + शुद्ध गन्धक १२० मि० ग्रा० × १ मात्रा रात्रि में मक्खन या मधु में मिलाकर दें।

क्षयहर पर्पटी कल्प—क्षय रोग अपनी आरम्भिक दशा में तो बिना कल्प के भी साध्य है। किन्तु कष्टसाध्य दशा में तो पर्पटीकल्प के अतिरिक्त और कोई भी उपचार इतना अधिक लाभप्रद नहीं है। कल्प-

चिकित्सा की मर्यादा प्राचीन वैद्य परम्परा के अनुसार एक मण्डल अर्थात् ४८ दिन की है। किन्तु कुछ एक कल्प-चिकित्सा विशेषज्ञ विद्वान् देश, काल तथा रोगी की सहन-शक्ति को लक्ष्य में रखकर ४० दिन का ही मण्डल मानकर कल्प कराते हैं। ४० दिन से कम दिनों का कल्प/अपेक्षित लाभ नहीं करता है। पर्पटी की मात्रा के सम्बन्ध में भी इसी प्रकार का मतभेद है। प्राचीन आचार्यों ने ३ रत्ती की मात्रा से वृद्धि और ह्रास का क्रम रखा है किन्तु आजकल के अल्प प्राण व्यक्तियों के लिये यह मात्रा अधिक है। अतः १ रत्ती की मात्रा से ही वृद्धि तथा ह्रास का क्रम रखना अधिक युक्तिसंगत है। पर्पटी कल्प में यकायक अन्न-जल बन्द करना भी अनुचित है। अन्न-जल बन्द करने का क्रम निम्न प्रकार है। जिस दिन से पर्पटीकल्प आरम्भ किया जाय उसी दिन से भोजन की मात्रा में कमी करके शनैः-शनैः दुग्ध की मात्रा बढ़ाई जाय और ३ दिन के बाद एक समय अर्थात् संध्या समय का भोजन बन्द कर दिया जाय। अनन्तर मध्याह्न समय के भोजन की मात्रा शनैः-शनैः कम करते हुये ७ दिन के बाद मध्याह्न काल का भोजन भी बन्द कर दिया जाय। जल को भी इसी क्रम से बन्द करना चाहिये। ७ दिन के बाद बकरी का दूध ही एक मात्र आधार रहेगा। जिस बकरी या गाय का दूध दिया जाय वह स्वस्थ तथा जवान हो। दुग्ध देने वाले पशु के खाद्य पदार्थों की व्यवस्था भी अत्युत्तम होनी चाहिये। दुग्ध केवल एक ही उफान का फीका, अथवा थोड़ी सी शक्कर या जीवनसुधा शर्बत मिलाकर समशीतोष्ण देना चाहिये। दूध एक बार में अधिक न देकर थोड़ा-थोड़ा कई बार में देना उचित है। पर्पटी के प्रभाव से दूध की मात्रा जितनी बढ़ती जाय, उतनी क्रमशः बढ़ाते जाना चाहिये। क्षय रोगी के लिये "कल्प" की व्यवस्था नगरों के दूषित वायु मण्डल से दूर किसी स्वास्थ्यप्रद, सुन्दर तथा पवित्र उद्यान आदि में करानी चाहिए। कल्प चिकित्सा के समय चिकित्सक को स्वयं रोगी के पास रहना चाहिये अथवा अपने किसी विश्वासपात्र सहकारी वैद्य के पूर्ण निरीक्षण में कल्प कराना चाहिये; अन्यथा अपयश की सम्भावना है। "कल्प" किसी शुभमुहूर्त में हवन, ब्राह्मण भोजन तथा यथाशक्ति पुण्य-दान के अनन्तर आरम्भ कराना चाहिये। पुण्य-दान का यह क्रम यदि आरोग्य लाभ या "कल्प चिकित्सा" पर्यन्त चलता रहे तो अधिक उत्तम है, कारण, क्षय जैसा दारुण रोग दैव-दुर्विपाक के बिना नहीं होता है और उसके निराकरण के लिये पुण्य-दान से बढ़कर और कोई साधन नहीं है।

पर्पटी प्रयोग विधि—वंशलोचन पिसा हुआ ४ रत्ती, शोधित छोटी पीपल का चूर्ण २ रत्ती, स्वर्ण पर्पटी १ रत्ती, शहद ३ माशा—इस प्रकार की एक मात्रा प्रातःकाल शहद के साथ देनी चाहिये।

वृद्धि ह्रासक्रम स्वर्णपर्पटी की मात्रा प्रतिदिन १ रत्ती की क्रमवृद्धि के अनुसार १२ रत्ती करना। अनन्तर २४ दिन तक १२ रत्ती की मात्रा में प्रतिदिन प्रातःकाल स्वर्णपर्पटी देना। कल्प प्रयोग में यह पर्पटी का स्थिर काल है। इस प्रकार १२ और २४ दिन के योग से ३६ दिन होते हैं। ३७वें दिन से क्रमशः पर्पटी की मात्रा प्रतिदिन १ रत्ती कम करने से ४८वें दिन केवल १ रत्ती मात्रा रह जायगी। यह पर्पटी का ह्रासकाल है। शहद आदि अनुपान की मात्रा इच्छानुसार घटाई-बढ़ाई जा सकती है। औषधि का यह प्रयोग केवल प्रातःकाल के लिये है।

मध्याह्न में २ रत्ती "हिमांशु" जीवनसुधा शर्बत, शहद या मक्खन के साथ देना चाहिये। सायंकाल के समय पुनः १ रत्ती लोहपर्पटी शहद के साथ इस विधि से प्रातः, मध्याह्न तथा सायंकाल तीन समय औषधियों का प्रयोग करना चाहिए।

पर्पटी काल में दुग्ध की मात्रा क्रमशः बढ़ाना चाहिये। पर्पटी के प्रभाव से कई बार रोगी १५-२० किलो तक दूध पीने लग जाता है। दुग्ध की मात्रा रोगी की इच्छा के ऊपर निर्भर रहती है। रोगी प्रसन्नता के साथ जितना दूध पीना चाहे, उतना ही पिलाना चाहिये। यदि ऊष्मा अधिक प्रतीत हो और रोगी पानी के बिना

न रह सके तो बीच-बीच में जीवनसुधा अर्क अथवा मसम्मी, सोंतरी अनार एवं सेव आदि फलों का रस नियमित मात्रा में दिया जा सकता है। इन सब फलों के रस में तथा दूध में उचित मात्रा में "जीवनसुधा दर्शत" भी मिलाकर दिया जा सकता है। किन्तु "कल्प चिकित्सा" के बीच में अन्न कभी भी नहीं देना चाहिए। निर्विघ्न कल्प की समाप्ति के अनन्तर पुनः यथाशक्ति पुण्य-दान करके पकी मूंग या चना के रस से क्रमशः अन्न की मात्रा की वृद्धि करना चाहिये।

कल्प चिकित्सा में रोगी के लिये पथ्यापथ्य—कल्प चिकित्सा के समय रोगी के चारों ओर का वायु मण्डल अत्यन्त शुद्ध तथा पवित्र होना चाहिये। दुग्ध तथा फलों के रस का आहार, महालक्ष्मी विलास, महाचन्दनादि तथा लाक्षादि तैल आदि बलवर्धक तैलों की मालिश, ऋतु तथा प्रकृति के अनुसार शुद्ध वायु में यथाशक्ति भ्रमण, निर्मल जल में स्नान या वस्त्र प्रोक्षण, धार्मिक ग्रन्थों (गीता, पुराण, महात्माओं के पवित्र जीवन चरित्र) का सुनना, प्रसन्न चित्त, निर्भीक तथा सच्चरित्र मित्रों एवं प्रियजनों के साथ वार्तालाप और सब प्रकार से स्वयं निश्चिन्त रहना आदि पथ्य हैं।

चिकित्सक तथा घर वालों को चकमा देकर अन्न के बने हुए पदार्थों का सेवन, स्त्री सहवास, कामोत्तेजक या हृदय के ऊपर प्रतिकूल प्रभाव डालने वाले उपन्यास आदि का पढ़ना, आवश्यकता से अधिक व्यायाम तथा किसी प्रकार का भी परिश्रम करना, चिन्ता, शोक, क्रोध, लोभ, मोह तथा ईर्ष्या द्वेष की अग्नि में जलते रहना एवं जीवन से निराशा आदि सभी बातें अपथ्य हैं।

"कल्प चिकित्सा" के द्वारा क्षयरोग की पहली तथा दूसरी स्टेज तक के रोगी तो निश्चित रूप से नवजीवन लाभ करते हैं किन्तु यदि "कल्प" में किसी प्रकार का विघ्न न हो तो तीसरी स्टेज अर्थात् अन्य सभी प्रकार की चिकित्साओं से असाध्य क्षय रोगी भी "कल्प चिकित्सा" के द्वारा आरोग्य और जीवन का लाभ कर सकते हैं। जब तक गुरु परम्परा के अनुसार चिकित्सक को स्वयं "कल्प चिकित्सा" का पूरा अनुभव न हो, साथ ही रोगी भी श्रद्धालु, वैद्य भक्त, उदार दानशील तथा सभी प्रकार से साधन सम्पन्न न हो तब तक कल्प नहीं करना चाहिये, किन्तु क्षयरोग में "कल्प" ही एक अव्यर्थ चिकित्सा है। जो लोग कल्प के द्वारा चिकित्सा कराने में असमर्थ हैं, वे भी आयुर्वेद रत्नाकर के अन्यान्य प्रयोग रत्नों के द्वारा आरोग्य लाभ कर सकते हैं।

[ई] प्रमुख पेटेण्ट आयुर्वेदीय योग

क्रमांक	योग का नाम	निर्माता कम्पनी	उपयोग विधि	विशेष
१	कैपाइना प्लेन टेबलेट	हिमालय ड्रग	१-२ गोली दिन में ३ बार।	फुफ्फुसीय यक्ष्मा में परम उपयोगी सिद्ध हुई है।
२	कैपाइना कम्पाउण्ड टेब०	"	२-२ गोली दिन में ३ बार।	उपरोक्त से अधिक प्रभावशाली। लसिका ग्रन्थिज यक्ष्मा में भी उपयोगी है।
३	करटिनो टेबलेट	चरक	१-२ गोली दिन में ३ बार।	यक्ष्मा की प्रारम्भिक अवस्था में उपयोगी। क्षुधा तथा बल बढ़ाती है।
४	बकेरो टेबलेट	डाण्डू	२-२ गोली दिन में ३ बार।	लसिका ग्रन्थिज यक्ष्मा में विशेष उपयोगी है।

५	यक्ष्मान्तक कैपसूल [स्वर्णमालती युक्त]	गर्ग वनौषधि	१-१ कैपसूल प्रातः-सायं गाय के दूध से।	यक्ष्मा, पुरानी खांसी और जीर्ण-ज्वर में लाभप्रद।
६	यक्ष्मान्तक कैपसूल [साधारण]	,,	२-२ कैपसूल प्रातः-सायं।	उपरोक्त से कम प्रभावशाली।
७	यक्ष्मान्ती कैपसूल [स्वर्णमालती युक्त]	ज्वाला आयु०	१-१ कैपसूल प्रातः-सायं।	यक्ष्मान्तक के समान गुणकारी।
८	त्रिकैल्शी कैपसूल	पंकज फार्मा	१-१ कैपसूल दिन में ३ बार।	क्षयरोग से पीड़ित रोगियों का वजन बढता है।
९	ड्रिकोनिल लिक्विड	चरक	१-२ चम्मच समभाग जल मिलाकर।	यक्ष्मा की प्रारम्भिक अवस्था में उपयोगी।
१०	द्राक्षोविन स्पेशल	धूतपापेश्वर	,, ,,	यक्ष्मा की अन्य औषधियों के साथ सेवन के लिए उपयोगी।
११	यक्ष्मारि सूचीवेध	जी० ए० मिश्रा	१-२ मि० लि० मांसपेशी में।	यक्ष्मा के विभिन्न लक्षणों में उपयोगी।
१२	वसन्तमालती सूचीवेध	सिद्धि फार्मेसी	,, ,,	,, ,,
१३	स्पेशल क्षय सूचीवेध	ए० बी० एम० बुन्देलखण्ड	,, ,,	यक्ष्मा की प्रत्येक अवस्था में उपयोगी।

[३] प्रमुख पेटेण्ट एलोपैथिक योग

औषधि का नाम	निर्माता	मात्रा एवं व्यवहार-विधि	विशेष
१. इन्जेक्शन—			
१. एम्ब्रिस्ट्रिन (Ambistryns)	Sarabhai	१ ग्राम नित्य मांस मे, बाद में एक दिन छोड़कर पूर्ण लाभ होने तक दें।	प्रतिक्रिया टैस्ट करके लगावें। साथ में १ ग्राम वाइल में २ c. c. मैकाल्विट (Mecalvit) मिलाकर देने से अधिक लाभकारी रहता है। इसके समकक्ष स्ट्रेप्टोनेक्स (Streptonex) फाइजर कम्पनी का, स्ट्रेप्टोमाइसिन सल्फेट (Streptomycin Sulphate) ग्लै० कम्पनी का भी १ ग्राम की वाइल में उपलब्ध है।

२. कैपसूल, टेबलेट एवं पाउडर—

१. माइको बूटाल (Myco Butol) २००, ४००, ६००, ८०० कैपसूल	Cadila	रोगी की अवस्थानुसार मात्रा निर्धारित करें। सामान्य अवस्था में— २५ मि०ग्रा०/१ किलो शरीर वजन के हिसाब से विभाजित मात्रा में दें।	इसी के समकक्ष एतीनोल (Etinol) सारामाई कं० का, कोम्बूटोल (Combutol) लुपिन कं० का, लाइब्यूटोल (Lybutol) लाइका कं० का, मैटाब्यूटोल (Metabutol) बाम्बे ड्रग कं० का, थेमीब्यूटोल (Themibutol) थेमिस कं० का—२००, ४००, मि०ग्रा० के कैपसूल भी मिलते हैं।
२. रिफामाइसिन (Rifamycin) १५० मि०ग्रा० एवं ३०० मि०ग्रा० कैपसूल	Bidchem	४००–६०० मि०ग्रा० की (१०मि० ग्रा०/१ किलो शरीरभार के अनुपात में) केवल एक मात्रा सुबह नाश्ते से १/२ घन्टा पहले दें।	इसके समकक्ष रिफाम (Refam) मरकरी कं० का, रेलीसिन (Relycin) अल्फिन कं० का, रिफाकैप्स (Rifacaps) दोनों कं० का, रिम्पेसिन (Rimpacin) पैडीला कं० का। सभी १५० मि०ग्रा० कैपसूल में प्राप्त होते हैं। रिम्पिन (Rimpin) लाइका कं० का १५० तथा ३०० मि०ग्रा० में भी मिलता है।
३. आइसोनैक्स (Isonex) एवं आइसोनैक्स फोर्ट (Isonex Forte)	Pfizer	३–५ मि०ग्रा०/१ किलो शरीरभार के अनुपात में दिन में १ बार या २-३ बार तक में विभाजित करें।	यक्ष्मा की प्रतिरोधक [illegible] अन्य [illegible] [illegible] प्रकार [illegible] पाया [illegible] है। इसके [illegible]

			जाइड (Nydrazid) साराभाई कं० की भी उपलव्व है ।
४. आइसोकिन टी० एफ० (Isokin T. F.)	Warner	दिन में १ गोली एक वार ।	फोफ्फुसीय तथा अन्य स्थानों के क्षयरोग में उपयोगी है ।
५. आइसोपार (Isopar)	Cadila	१०–२० मि०ग्रा०/१ किलो शरीर-भार के अनुपात से विभाजित मात्रा में ।	,,
६. आइनापास (Inapas)	Neo Pharma	१२ गोली तक एक दिन मे विभाजित मात्रा में दें ।	यक्ष्मा की सहायक औषधि के रूप में प्रयोग करें ।
७. पास (Pas)	Pfizer	१४–१६ ग्राम तक ३–५ विभाजित मात्रा में दें ।	,,
८. पासोनैक्स (Pasonex–S)	,,	,, ,,	,,
९. सोडियम पास (Sodium Pas)	,,	१७–१९ ग्राम तक ४–५ विभाजित मात्रा में दें ।	,,
१०. यूनीथीबेन (Unithiben) एव यूनीथीवीन वी० एफ० (Unithiben V. F.)	Unichem	४ गोली तक आवश्यकतानुसार रात्रि को सोते समय सेवन करावे ।	,,
११. कोवाडेक्स (Cobadex)	Glaxo	१ कैपसूल नित्य नाश्ते के साथ ।	यक्ष्मा की अन्य औषधियों के साथ शक्ति देने के लिये दें ।
१२. वीकोसूल्स (Becosules)	Pfizer	,, ,,	,,

धन्वन्तरि
पायरिया मंजन
पायरिया तथा अन्य दन्त रोग नाशक मंजन
निर्माता—धन्वन्तरि कार्यालय, विजयगढ़ [अलीगढ़]

रक्तपित्त

[अ] एकौषधि एवं साधारण प्रयोग

(१) मुनक्का, मुलहठी, गिलोय तीनों १०-१० ग्राम ले जौकुट कर आधा किलो जल में अष्टमांश क्वाथ सिद्ध कर सेवन कराने से रक्तपित्त में लाभ होता है।

(२) मुनक्का १० ग्राम के साथ गूलर की जड़ १० ग्राम या धमासा १० ग्राम ले आधा किलो जल में अष्टमांश क्वाथ सिद्ध कर सेवन कराने से रक्तपित्त, दाह आदि में लाभ होता है।

(३) अंजीर का स्वरस २० ग्राम तथा हरी दूबघास का स्वरस २० ग्राम दिन में ३ बार पीने से रक्तपित्त में विशेष लाभ होता है।

(४) अंजीर २ नग, मिश्री १० ग्राम, दोनों को १०० ग्राम जल में पीसकर प्रातः-सायं पीने से तथा सिर पर धनियां और खस जल में पीसकर लेप करने से रक्तपित्त-जन्य नकसीर में लाभ होता है।

(५) अंजुवार की जड़ ५० ग्राम, मीठे अनार का बक्कुल तथा मंजिष्ठ २०-२० ग्राम और श्वेत चन्दन का बुरादा १५ ग्राम, सबको कूटकर रात्रि के समय १ किलो जल में भिगो दें तथा प्रातः पकावें। जब आधा जल शेष रहे, तब छानकर बबूल की पत्ती का स्वरस १०० ग्राम डाल दें और आधा किलो मिश्री मिलाकर शर्बत बना लेवें। यह शर्बत २-२ घण्टे के अन्तर से १०-१० ग्राम पिलाने से भयंकर रक्तपित्त में लाभ होता है।

(६) खट्टे-मीठे अनारदाने के रस १०० ग्राम में मिश्री मिला रोज दोपहर को पीने से गर्मी के दिनों में होने वाले रक्तपित्त (नकसीर) में लाभ होता है।

(७) अनार के हरे पत्ते १० ग्राम में १ ग्राम काली-मरिच मिला १०० ग्राम पानी में पीस-छानकर सुबह, शाम पिलाने से रक्तपित्त में विशेष लाभ होता है।

(८) अरहर के पत्तों का रस १० ग्राम तथा गोघृत १० ग्राम, दोनों को एकत्र अच्छी तरह मिश्रण कर १०-२० ग्राम सुबह, शाम पिलाने से रक्तपित्त में लाभ होता है।

(९) अर्जुन की छाल के महीन चूर्ण में समभाग लाल चन्दन का महीन बुरादा, शक्कर तथा तन्दुलोदक मिला सेवन कराने से ऊर्ध्वगत रक्तपित्त में विशेष लाभ होता है। इस प्रयोग को हिम, कल्क या फाण्ट के रूप में भी प्रयोग करा सकते हैं।

(१०) अलसी के फूल २ भाग तथा मंजीठ, वट के अंकुर, कुश आदि पंचतृण १-१ भाग अथवा सबको सम-भाग लेकर यथाविधि क्वाथ बना पीने और पथ्य में मूंग का यूष सेवन कराने से रक्तपित्त में लाभ होता है।

(११) आम वृक्ष की छाल १०-२० ग्राम कुचलकर १००-१५० ग्राम पानी में रात्रि को भिगो दें और ओस में रख दें। प्रातः मल-छानकर उसमें २-६ ग्राम शहद मिला पिलाने से रक्तपित्तजन्य मुंह, दस्त, मूत्र आदि मार्गों से आने वाला रक्त शीघ्र रुक जाता है।

(१२) रक्तपित्त के कारण यदि नाक, मुख, गुदा आदि से रक्तस्राव होता हो, तो आमला चूर्ण ६-६ ग्राम घृत तथा शक्कर के साथ मिलाकर सेवन कराने से कुछ दिनों में लाभ हो जाता है।

(१३) रक्तपित्त के कारण यदि नाक से तीव्र रक्त-स्राव हो, तो आंवला स्वरस का सेवन कराने से तथा निचुड़े हुए आंवला स्वरस का नस्य देने से विशेष लाभ होता है। साथ ही साथ आंवलों को घी में भूनकर कांजी या मट्ठे में पीस मस्तिष्क पर मोटा-मोटा लेप करने से भी लाभ होता है।

(१४) यदि रक्तपित्त की अवस्था में बार-बार मुख से रक्तस्राव हो, तो आंवला, आम तथा बेर वृक्ष की छालों को एकत्र जौकुट कर अष्टमांश क्वाथ सिद्ध करें। उसमें मिश्री मिलाकर पिलाने से विशेष लाभ होता है।

(१५) उड़द का आटा तथा लाल रेशमी वस्त्र की राख दोनों को जल में मिला गाढ़ा लेप बनाकर मस्तक पर लेप करने से रक्तपित्त तथा नकसीर में लाभ होता है।

—वनौषधि विशेषांक भाग १ से।

(१६) कठगूलर की जड़ की छाल का महीन चूर्ण कर उसमें इसी के पञ्चाङ्ग स्वरस की तीन भावनायें देकर सुरक्षित रखें। १-२ ग्राम तक शहद तथा घृत के साथ सेवन कराने से रक्तपित्त में विशेष लाभ होता है।

(१७) कमल की नाल को या जड़ को जौकुट कर जल तथा दूध समभाग में मिला पकावें। दूध मात्र शेष रहने पर छानकर थोड़ी मिश्री मिला पिलाने से रक्तपित्त में लाभ होता है।

(१८) करंज के बीजों की गिरी का चूर्ण [ताजा बनाया हुआ] २ या ३ ग्राम लेकर उसमें शहद तथा शक्कर मिला प्रातः-सायं चटाने से कफप्रधान ऊर्ध्व रक्त-पित्त में लाभ होता है।

(१९) कुमुद के शुष्क पुष्प [नीलोफर] के साथ खांड, मुनक्का, कमल केशर समभाग के मिश्रित चूर्ण को ३-४ ग्राम की मात्रा में चावल के धोवन के साथ सेवन कराने से रक्तपित्त में विशेष लाभ होता है।

(२०) कुश, काश, शर, दाम तथा ईख की जड़ और मुलहठी समभाग मिश्रित कर चूर्ण बना लें। इस चूर्ण को २० ग्राम की मात्रा में लेकर गाय का दूध १६० ग्राम तथा पानी ८० ग्राम के साथ में पकावें। दुग्धमात्र शेष रहने पर छानकर सेवन कराने से रक्तपित्त में विशेष लाभ होता है।

(२१) बकरी के पके हुए दूध में केशर का महीन चूर्ण मिला [या दूध में इसे ४ रत्ती से १ ग्राम तक अच्छी तरह खरल करें] पिलाने से ऊर्ध्वगत रक्तपित्त में विशेष लाभ होता है। रोगी को पथ्य में बकरी का दूध या भात सेवन कराना चाहिए।

(२२) खजूर के फल का चूर्ण शहद के साथ १-२ ग्राम दिन में २ बार सेवन कराने से रक्तपित्त में विशेष लाभ होता है।

(२३) खरैंटी की जड़ के साथ गोखरू, आमला, मुनक्का, महुआ की छाल तथा मुलहठी समभाग ले जौकुट कर ५० ग्राम लें। इसे १ किलो दूध तथा ४ किलो पानी में मिलाकर मन्दाग्नि पर औटावें। दुग्धावशेष रहने तक पाक करें। इस दूध को कुछ दिनों तक सेवन कराने से रक्तपित्त में विशेष लाभ होता है।

(२४) यदि मस्तिष्कशूल के कारण नाक से रक्तस्राव हो, तो गूलर के पके फलों में शक्कर भरकर घृत में तल लें और इलायची तथा काली मिरच चूर्ण ४-४ ग्राम के साथ नित्य प्रातः सेवन कराने से विशेष लाभ होता है।

(२५) उदुम्बर पत्र स्वरस के साथ पीपल वृक्ष की लाख का चूर्ण तथा मिश्री समभाग मिलाकर ६ ग्राम से १० ग्राम तक सेवन कराने से ऊर्ध्वगत रक्तपित्त में लाभ होता है।

(२६) मुण्डीपत्र रस के साथ अडूसापत्र स्वरस १-२ ग्राम तक सुबह, शाम सेवन कराने से रक्तपित्त में विशेष लाभ होता है। —वनौषधि विशेषांक भाग १ से।

(२७) रक्तचन्दन तथा कमलपुष्प के चूर्ण का शीत कषाय बनावें और उसमें मिट्टी का ढेला खूब तपाकर बुझावें। ठण्डा होने पर उसमें मिश्री तथा शहद मिलाकर पिलाने से रक्तपित्त में लाभ होता है।

(२८) रक्तचन्दन, खस, नागरमोथा, धान की खील, मूंग, पीपल तथा इन्द्र जौ समभाग मिश्रित २० ग्राम को जौकुट कर रात्रि के समय खरैंटी के क्वाथ में भिगो दें। प्रातःकाल पिलाने से रक्तपित्त अवश्य नष्ट हो जाता है।

(२९) चिरायता चूर्ण ३ ग्राम को ५० ग्राम पानी में भिगो दें। प्रातः छानकर उसमें घिसा हुआ चन्दन ३ ग्राम मिला पिला दें। इसी प्रकार प्रातः भिगोकर रात्रि को पिला दें तो रक्तपित्त में लाभ होता है।

(३०) चौलाई के पत्तों का रस, कल्क, हिम, फाण्ट, क्वाथ या शाक इनमें से किसी एक की योजना शहद में मिलाकर प्रातः-सायं करने से मुख, नाक, गुदा आदि से निकलने वाला रक्त बन्द हो जाता है।

(३१) जलपिप्पली के पञ्चाङ्ग के चूर्ण १० ग्राम को या ताजी बूटी को दूध के साथ घोट-छानकर शक्कर मिला पिलाने से रक्तपित्त में लाभ होता है।

(३२) दूब तथा आंवला दोनों को ताजा लेकर पानी में धोकर उसका रस निकाले। इस रस में थोड़ा शहद मिला

शीशी में भरकर रख लें। २० ग्राम की मात्रा में दिन में ३-४ बार सेवन कराने से रक्तपित्त, दाह आदि पित्त-विकारों में लाभ होता है।

(३३) धनियां, दाख तथा बिहीदाना सममाग एकत्र कूटकर रात के समय पानी में भिगो दें। प्रातः इस हिम में शक्कर मिला दिन में ३ बार देते रहने से सब प्रकार के रक्तपित्त में लाभ होता है। —वनौ० विशे० भाग ३ से।

(३४) तीन बड़े कागजी नीबू के रस में गुड़हल के ७ फूल १२ घण्टे तक भिगो दें। फिर उसमें गुलाब तथा केवड़ा का अर्क १००-१०० ग्राम, मिश्री ८० ग्राम कांच की बोतलों में भर मजबूती से डाट बन्द कर मुख तक जल में रख दें। ३ दिन के बाद पानी से निकाल लें तथा छानकर शीशियों में भर लें। १०-१० ग्राम की मात्रा में दिन में ३ बार सेवन कराने से विशेष लाभ होता है।

(३५) नीमपत्र रस तथा अडूसापत्र रस २०-२० ग्राम एकत्र मिला उसमें थोड़ा-सा मधु डालकर दिन में २ बार सेवन कराने से रक्तपित्त में विशेष लाभ होता है।

(३६) पालक २०० ग्राम को जल में धोकर शुद्ध करें तथा एक देगची में ५० ग्राम गोघृत में ६ ग्राम जीरा भूनकर पालक को उसमें छोंक दें। ऊपर से थोड़ा अदरक काटकर डाल दें, फिर नमक ३ ग्राम मिला पात्र के मुख पर जल भरा दूसरा पात्र रख देवें। जब शाक पक जाय तो उसमें अनारदाने का रस २० ग्राम मिला रक्तपित्त के रोगी को सेवन कराने से विशेष लाभ होता है।

(३७) पित्तपापड़ा तथा अनार का छिलका १०-१० ग्राम, श्वेत जीरा ६ ग्राम, जौकुट चूर्ण कर ६०० ग्राम जल में पकावें। चतुर्थांश शेष रहने पर उसमें १० ग्राम मिश्री मिला ३ मात्रा कर दिन में ४-४ घण्टे पर १-१ मात्रा देने से ऊर्ध्व रक्तपित्त में लाभ होता है।

(३८) पीपल के पत्र स्वरस १ भाग, हीराबोल ६ भाग तथा मधु २ भाग एकत्र कर उचित मात्रा में पिलाने से ऊर्ध्व रक्तपित्त में लाभ होता है।

(३९) बबूल की कोंपल या पत्तों को १०-१० ग्राम तक पीसकर लुगदी में शहद व शक्कर मिला सेवन कराने से रक्तपित्त में लाभ होता है।

—वनौषधि विशेषांक भाग ४ से।

(४०) वंशलोचन के ६ ग्राम चूर्ण को अडूसे के रस १० ग्राम में मिला सेवन कराने अथवा उसके चूर्ण को शहद तथा मिश्री के साथ सेवन कराने से रक्तपित्त में लाभ होता है।

(४१) बांकेरी मूल के कन्द को शीत जल या गोदुग्ध के साथ पीस-छानकर उसमें मिश्री मिला सेवन कराने से ऊर्ध्व तथा अधोमार्ग से होने वाला रक्तस्राव बन्द हो जाता है।

(४२) विजयसार की लकड़ी को जलाकर क्षार बना इसे १ ग्राम की मात्रा में घृत के साथ प्रातः-सायं सेवन कराने से मुख, नाक, गुदा तथा मूत्रेन्द्रिय से होने वाला रक्तपित्तजन्य रक्तस्राव बन्द हो जाता है।

—वनौषधि विशेषांक भाग ५ से।

(४३) लोध्रत्वक् चूर्ण, श्वेत चन्दन चूर्ण ३-३ ग्राम लेकर चावल के धोवन में शक्कर मिला उस के साथ दिन में ३-४ बार सेवन कराने से रक्तपित्त में लाभ होता है।

(४४) शतावरी का कल्क २५ ग्राम, जल ४०० ग्राम तथा दूध ४०० ग्राम में मिला दुग्धावशेष क्वाथ कर प्रातः सायं पिलाने से रक्तपित्त में लाभ होता है।

(४५) शतावरी, मुलहठी, खरैटी, कुश तथा बड़े गोखरू को सममाग मिला २५ ग्राम का क्वाथ करें। शीतल होने पर गुड़, मधु या शक्कर मिला सेवन कराते रहने से रक्तपित्त में लाभ होता है।

(४६) शतावर का चूर्ण ६ ग्राम, बबूल के कोमल कांटे १२ नग, नीम की सींकों का पिछला हिस्सा १२ नग, गिलोय ताजा ३ ग्राम को औटाकर चतुर्थांश जल शेष रहने पर शहद मिलाकर ३ मात्रा बना लें। इन्हें दिन में ३ बार सेवन करावें, तो रक्तपित्त में ३-४ दिन में ही लाभ होने लगता है।

(४७) सुपारी का चूर्ण चन्दन के अर्क या आंवलों के हिम के साथ सेवन कराने से नाक, कान आदि से होने वाले ऊर्ध्व रक्तपित्त में विशेष लाभ होता है।

—वनौषधि विशेषांक भाग ५ से।

(४८) दूब का रस, अनार के फूलों का रस, गोबर या घोड़े की लीद का रस नासिका में टपकाने से खून गिरना बन्द हो जाता है।

(४९) अडूसे के पत्तों का रस, गूलर के फलों का रस तथा लाख का भिगोया पानी मिलाकर पीने से खून का गिरना वन्द हो जाता है।

(५०) लाल चन्दन, वेलगिरी, अतीस, कुडे की छाल तथा ववूल का गोंद २० ग्राम सव सममाग मिलाकर उसमें से २० ग्राम ले लें। वकरी का दूध १६० ग्राम तथा पानी १ किलो में डालकर औटावें। जब दूध मात्र रह जाय, तव छानकर रोगी को पिला दें, तो रक्तपित्त में विशेष लाभ देखने को मिलता है।

(५१) किशमिश, लाल चन्दन, लोध्र तथा प्रियंगु इन सबका चूर्ण अडूसे के पत्तों के रस तथा शहद के साथ पीने से नाक, मुंह गुदा, योनि, लिंग आदि से रक्तपित्त-जन्य रक्तस्राव में लाभ होता है।

(५२) गन्ने की गांठ, नील कमल का कन्द, सफेद कमल की केशर, मोचरस, मुलहठी, पद्माक, वड़ के अंकुर, दाख तथा खर्जूर सममाग में कुल ५० ग्राम लेकर क्वाथ वना लें। इसमें शहद तथा मिश्री डालकर पिलाने से रक्त-पित्त में लाभ होता है।

(५३) शुद्ध सीपी, धनियां, शुद्ध मूंगा, मुलहठी, सोना-गेरू तथा मिश्री सममाग ले कूट-पीसकर छान लें। इसमें से ३-३ ग्राम चूर्ण सुवह, शाम अडूसे के स्वरस के साथ या कच्चे दूध के साथ देने से रक्तपित्त में लाभ होता है।

(५४) शतावर १० ग्राम, दशमूल ६ गाम, छोटी पीपल २ दाने तथा मुनक्के ५ दाने, इनको जौकुट करके आधा किलो दूध तथा आधा किलो पानी में औटावें। जब दूधमात्र शेष रह जाय, तव छानकर २-३ बार पिलावें; तो ऊर्ध्व रक्तपित्तजन्य रक्तष्ठीवन में लाभ होता है।

(५५) मुलहठी को सिल पर पानी के साथ पीसकर तथा शहद मिलाकर पीने से रक्तपित्त में लाभ होता है।

(५६) सुगन्धवाला, नील कमल, खस की जड़, अडूसा, गिलोय, मुलहठी, नागरमोंथा, लाल चन्दन तथा पुराना धनियां सममाग में से कुल २० ग्राम लेकर क्वाथ वना लें। शीतल होने पर शहद तथा मिश्री के साथ पिलाने से ऊर्ध्व एवं अधोरक्त पित्त में लाभ होता है।

—चिकित्सा चन्द्रोदय से।

(५७) दम्वुल अखवैन २-३ ग्राम तक की मात्रा में सुवह, शाम शीतल जल के साथ सेवन कराने से रक्तपित्त आदि के कारण से जाने वाला रक्त वन्द हो जाता है।

—धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(५८) दूर्वा पञ्चाङ्ग १० ग्राम, गूलर की पत्ती १० ग्राम को पीसकर मिश्री मिला शर्वत वना लें। इसे प्रातः, सायं देने से उर्ध्व रक्तपित्त में लाभ होता है।

(५९) गुलावी फिटकरी में थोड़ा-थोड़ा मूली का स्वरस डालकर भस्म तैयार करलें। यह भस्म २ रत्ती की मात्रा में शर्वत सन्दल के साथ देने से रक्तपित्तजन्य नक्सीर में विशेष लाभ होता है।

(६०) कतीरा गोंद, गोंद कीकर, वेलगिरी, तलूडिया, वीदाना, रूमीमस्तङ्गी, ईसवगोल विना कुटा हुआ प्रत्येक १०-१० ग्राम, मुलतानी मिट्टी ५० ग्राम लेकर चूर्ण कर लें। सुबह, शाम १-१ ग्राम चूर्ण जल के साथ सेवन कराने से रक्तपित्त में विशेष लाभ होता है।

—धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(६१) रक्त पुनर्नवा की जड़ तथा शुण्ठी चूर्ण पानी के साथ सेवन कराने से १-२ दिन में ही ऊर्ध्व रक्तपित्त में लाभ हो जाता है। —कवि० चिरंजीलाल शर्मा द्वारा धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(६२) अडूसे के १ किलो पत्तों को साफ करके ४ किलो जल में मन्दाग्नि पर पकावें। जब १ किलो जल शेष रहे, तव मलकर क्वाथ को वस्त्र से छान लें। फिर उसमें १ किलो शक्कर मिला शर्वत तैयार कर लें। चासनी ठीक होने पर पुनः वस्त्र से छानकर वोतलों में भर लें। १०-२० ग्राम तक यह शर्वत १२५ ग्राम पानी में मिला-कर सुवह, शाम सेवन कराने से रक्तपित्त में लाभ होता है।

—कवि० ब्रह्मानन्द चन्द्रवंशी द्वारा धन्वन्तरि प्रयोगांक से।

(६३) अनार की पत्ती २५ ग्राम, काली मरिच ७ नग, पीपल की लाख १० ग्राम, गुलावी फिटकरी १॥ ग्राम सवको पानी में पीसकर २५० ग्राम जल में छान लें और २५ ग्राम मिश्री मिलाकर रोगी को पिला दें, तो रक्तपित्त के कारण होने वाली रक्तवमन में लाभ होता है।

—धन्वन्तरि सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

मजवायन खुरासानी, बबूल का गोंद ३-३ ग्राम। सबको पीसकर ईसबगोल के लुआब में मिलाकर घूण लें और गोली बना लें। ३ ग्राम की मात्रा में सुबह, शाम गावजवां के साथ सेवन कराने से रक्तपित्त में लाभ होता है।

—धन्वन्तरि चिकित्सा विशेषांक द्वितीय भाग से।

(७४) बारहसिंगा के सींग ६ ग्राम को ठण्डे पानी में पत्थर पर चन्दन की तरह घिसकर उसमें गाय का कच्चा घी (लौनी) १॥ ग्राम की मात्रा में मिलाकर रोगी को चटाने से एक दिन में ही रक्तपित्त शान्त हो जाता है।

(७५) अनार की कली का रस ३ ग्राम तथा कपूर असली १ रत्ती दोनों को मिलाकर नस्य देने मे नाक से कैसा भी धाराप्रवाह रक्त हो रुक जाता है। अनेक उपचारों से बन्द न हुआ रक्त इसके १-२ बार के डालने मात्र से ही रुक जाता है। —राजवैद्य सैयद कासम नाई द्वारा प्राणाचार्य मणिमालांक से।

(७६) मलियागिरी चन्दन का उत्तम बुरादा, कुमुदिनी का फल, दाव तथा लोध्र प्रत्येक समभाग ले कपड़छन करके रख लें। १॥ से ३ ग्राम तक अडूसा (वासा) के पत्तों के ६ ग्राम रस तथा मधु ३ ग्राम में मिलाकर सेवन कराने से कैसे भी रक्तपित्तजन्य रक्तस्राव में लाभ हो जाता है। विशेष रूप से स्त्रियों के मूत्रमार्ग से जाने वाले रक्तस्राव में विशेष लाभदायक योग है।

—वैद्यराज प्रयागदत्त जी शर्मा द्वारा गुप्त सिद्ध प्रयोगांक द्वितीय भाग से।

(७७) कुकरौंधा का स्वरस १ किलो, काली मरिच, संगजराहत २०-२० ग्राम लें। पहले कुकरौंधे के स्वरस को कलईदार बर्तन में रख मन्द अग्नि से औटावें। औटाते समय लकड़ी से बराबर चलाते रहें। जब घनसत्व की तरह गाढ़ा हो जाये, तब उतारकर शीतल होने पर काली मरिच तथा संगजराहत का कपड़छन चूर्ण मिलाकर खूब घोटें। इस तरह ७ दिन घुटाई करने पर ३-३ ग्राम की गोली बना लें। १-१ गोली आवश्यकतानुसार दिन में कई बार प्रयोग कराने से रक्तपित्त एवं अन्य रक्तस्रावों में शीघ्र लाभ हो जाता है।

—श्री सियाप्रसाद अष्ठाना द्वारा गुप्त सिद्ध प्रयोगांक द्वितीय भाग से।

(७८) दालचीनी, काली मरिच, मुलहठी, छोटी इलायची के दाने, अकरकरा प्रत्येक ५०-५० ग्राम, अदरक ८० ग्राम ले। सभी औषधियों को जल के साथ सिल पर पीस लें और १२५ ग्राम जल में घोलकर कपड़े से छान लें। यह ३ मात्रायें है, १-१ मात्रा प्रातः, मध्याह्न एवं सायंकाल सेवन कराने से ऊर्ध्व रक्तपित्त में शीघ्र लाभ हो जाता है। —प्रयोग रत्नावली से।

(७९) आम, जामुन तथा अर्जुन इन वृक्षों की सूखी छाल १५ ग्राम तथा जल २४० ग्राम लेवें। तीनों चीजों को कूटकर चूर्ण बना लें और रात्रि के समय किसी मिट्टी के पात्र मे डालकर रात्रि को भिगो दें। प्रातःकाल कपड़े में मसल-छानकर रोगी को पिला दें, तो रक्तपित्त में शीघ्र लाभ हो जाता है। —अनुभूत योग से।

(८०) नीम के २५० ग्राम पत्तों की लुगदी में ६० ग्राम फिटकरी की भावित डली सराव सम्पुट करके १५ किलो उपलों की अग्नि दें शीतल होने पर सूक्ष्म पीसकर सुरक्षित रखें। आवश्यकता पड़ने पर १-२ रत्ती दवा या आवश्यकतानुसार पानी में घोलकर नाक में टपका दें। परनाले की तरह बहता हुआ रक्त तत्काल बन्द हो जाता है।

(८१) फिटकरी का फूला, कण्डों की राख, कागज की भस्म इन सबको बारीक पीसकर मिलाकर एक जान करके कपड़छन कर लें और शीशी मे भरकर रखें। इसकी १-२ चुटकी सुंघाने मात्र से ही नाक से बहने वाला रक्त बन्द हो जाता है। —अनुभूत योग प्रकाश से।

(८२) गाय के दूध में स्वेदित करने के बाद संगजराहत का कपड़छन चूर्ण तैयार करके रख लें। स्वेदित करने का अर्थ यह है कि उबलते हुये दूध में तीन घण्टे तक दुग्ध पाषाण को लटकाये रखा जाय इस प्रकार तैयार किये गये चूर्ण में गुलाबजल की १-२ भावना और दे दी जाय तो विशेष उत्तम रहता है। यह चूर्ण ४ रत्ती से १ ग्राम तक की मात्रा में चावल के मांड अथवा बड़ या गूलर की कोपल के क्वाथ से दिन में ३-४ बार दिया जाना चाहिये। इसके सेवन से रक्तपित्तजन्य कैसा भी रक्तस्राव हो बन्द हो जाता है। —बनारस विश्वविद्यालय की परीक्षित प्रयोग पुस्तक से।

[अ] अनुभूत एवं परीक्षित प्रयोग

(१) रक्तपित्त नाशक विशिष्ट चूर्ण—तमालपत्र ६ ग्राम, तज १० ग्राम, इलायची १५ ग्राम, तगर २० ग्राम, श्वेत चन्दन २५ ग्राम, अनन्तमूल ३० ग्राम, शुण्ठी ३५ ग्राम, मुलहठी ४० ग्राम, कमलककड़ी ४५ ग्राम, आंवला ५० ग्राम, अडूसा ५५ ग्राम, खांड ३३० ग्राम।

विधि—इन नव चीजों को कूट-पीसकर सूक्ष्म चूर्ण कर लें।

मात्रा—३-६ ग्राम तक दिन मे ३ बार जल अथवा रोगानुसार।

उपयोग—रक्तपित्त, दाह, रक्तवमन आदि रोगों में बहुत उपयोगी योग है। —पं० श्रीकृष्ण शर्मा द्वारा

धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(२) चन्दनादि चूर्ण—सफेद चन्दन, नीलोफर, गुलाब के फूल २०-२० ग्राम, कासनी, काहू, धनियां, खस, मुलहठी १०-१० ग्राम।

विधि—इन सबको कूटकर कपड़छन करें तथा चूर्ण के समानभाग मिश्री मिलाकर शीशी मे रखें।

मात्रा—६-६ ग्राम शीतल जल के साथ दें।

उपयोग—रक्तपित्त, दाह, हाथ-पैरों की जलन आदि में विशेष उपयोगी है।

(३) एलादि चूर्ण—छोटी इलायची के दाने, तज कलमी, पत्रज, कमलगट्टा की गिरी, पीपल छोटी शुद्ध, वंशलोचन, गिलोयसत्व, मुलहठी, किशमिश, छुहारा बीज रहित, केशर असली प्रत्येक १०-१० ग्राम, चांदी के वर्क १० नग।

विधि—सभी वस्तुएं कूट-पीसकर शीशी मे रख लें।

मात्रा—४ ग्राम शहद के साथ प्रातः-सायं चाटें।

उपयोग—रक्तपित्त, रक्तवमन, आदि मे बहुत उपयोगी योग है। —कामेश्वरदीन शर्मा द्वारा

धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(४) रक्तपित्तनाशक मिश्रण—बोलपर्पटी १० ग्राम, मौक्तिकपिष्टी ३ ग्राम, मुक्तापिष्टी ३ ग्राम, प्रवाल-पिष्टी ३ ग्राम, मधुभस्म २ ग्राम, स्वर्णभस्म . ग्राम, शुद्ध स्वर्णगैरिक ६ ग्राम, नागपुष्प ३० ग्राम, कहरवा पिष्टी ६ ग्राम।

विधि—सबको खरल मे मिलाकर २४ घण्टा लगातार घोटकर शीशी मे डाट लगाकर रख लें।

मात्रा—२-३ ग्राम तक प्रारम्भ में ४-४ घण्टे मे बाद मे ६-६ घण्टे से १-१ मात्रा दें।

अनुपान—शर्बत अंजबार या शर्बत गुलाब के साथ दें।

उपयोग—रक्तपित्त की सभी अवस्थाओं में लाभप्रद योग है। रक्तप्रदर में भी लाभदायक है।

—पं० सुदेवचन्द्र पाराशरी द्वारा

गुप्तसिद्ध चतुर्थ भाग से।

(५) रक्तपित्तहर चूर्ण—नागकेशर, वंशलोचन, छोटी इलायची, स्वर्णगैरिक, दम्बुल अखवैन, मजीठ, गिले अरमनी प्रत्येक समानभाग।

विधि—सब औषधियों का सूक्ष्म चूर्ण तैयार करें तथा बोतल मे बन्द करके रख दें।

मात्रा—३ ग्राम से ६ ग्राम तक शीतल जल के साथ दें।

उपयोग—रक्तपित्त के कारण आने वाले किसी भी प्रकार के रक्तस्राव में विशेष लाभ होता है। यक्ष्मारोग के कारण फेफड़ों से जाने वाले रक्तस्राव मे विशेष लाभकारी है। —पं० गंगाचरण शर्मा द्वारा

धन्वन्तरि गुप्तसिद्ध चतुर्थ भाग से।

(६) रक्तावरोधक चूर्ण—गेरू, राल सफेद, संगजराहत, दम्बुल अखवैन, अजवार की जड़, वंशलोचन, कहरवा शमई, दाने इलायची प्रत्येक समानभाग लेकर चूर्ण बनालें।

मात्रा—६-६ ग्राम जल के साथ प्रातः ४-४ घण्टे से खिलावे।

उपयोग—रक्तपित्त, रक्तार्श, रक्तप्रदर आदि में बहुत उपयोगी योग है। अनेक बार का परीक्षित योग है।

—वैद्य किशोरीलाल गुप्त द्वारा

गुप्तसिद्ध चतुर्थ भाग से।

(७) रक्तावरोधक चूर्ण—अनार के फूल, कमल केशर, नागकेशर, पाषाणभेद, सफेद कत्था, सफेद राल, मोचरस, माजूफल, पीपल की लाख, खूनखराबा, बबूल की पत्ती, छोटी इलायची दाने, वंशलोचन, चन्द्ररस, कहरवा, शुद्ध स्वर्णगैरिक, संगजराहत भस्म, शुद्ध स्फटिका, कपर्दभस्म, मुक्ताशुक्ति भस्म, यशद भस्म, प्रवालपिष्टी यह औषधियां सभी समभाग १०-१० ग्राम लें, चांदी के वर्क १०० नग तथा पिसी छनी मिश्री २० ग्राम।

विधि—काष्ठौषधियों को कूट-पीसकर छानकर चूर्ण बनाकर वंशलोचन पृथक् पीसकर रखलें। अनन्तर काष्ठादि औषधियों का चूर्ण पिसा हुआ वंशलोचन, मिश्री तथा चांदी के वर्क आदि सभी वस्तुओं को खरल मे डालकर एकरूप कर लेना चाहिये।

मात्रा—१-३ ग्राम तक प्रातः-सायं आवश्यकतानुसार दूध की लस्सी, गर्म करके ठण्ठा किया हुआ दूध, शीतल जल के साथ दें।

उपयोग—सभी प्रकार के रक्तपित्त, रक्तप्रदर, रक्तार्श आदि में बहुत लाभदायक योग है।

—श्री इन्दिरादेवी शास्त्री द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रथम भाग से।

(८) रक्तपित्तशामक रसायन—अभ्रकभस्म, लोहभस्म, रससिन्दूर, लाख, खूनखराबा पांचों १०-१० ग्राम, सेलखड़ी ६ ग्राम, गेरिक ६ ग्राम, मुक्ताशुक्ति पिष्टी १० ग्राम, अकीकभस्म १॥ ग्राम।

विधि—इन सब दवाओं को बबूल के पत्तों के रस में घुटाई करें तथा गोली बनालें।

अनुपान—दूब के रस के साथ १-२ गोली सेवन करावें।

उपयोग—रक्तपित्तजन्य रक्तस्राव में बहुत लाभदायक योग है। —प० विद्याधर शर्मा द्वारा
धन्वन्तरि गुप्तसिद्ध प्रथम भाग से।

(९) रक्तस्तम्भनकारी योग—शुद्ध हिंगुल ६ ग्राम, शुद्ध अहिफेन ६ ग्राम, जायफल १ ग्राम, खोपड़ा १ ग्राम, बीजबन्द, पद्माक, कर्पूर तीनों १०-१० ग्राम।

विधि—सबको यथा सम्भव कूट-पीसकर कर्पूर तथा अफीम मिलावें तथा खरल में डालकर बबूलपत्र स्वरस की १ भावना देकर १-१ रत्ती की गोली बनालें।

मात्रा—१-२ गोली २-४ घण्टे तक आवश्यकतानुसार दें।

उपयोग—रक्तपित्त, रक्तार्श, आदि में विशेष लाभकारी योग है। —वैद्य ब्रह्मदत्तशर्मा द्वारा
धन्वन्तरि जनवरी १९४८ से।

(१०) रक्तपित्तान्तक सिद्ध योग—शुद्ध गोघृत २०० ग्राम, हरी दूब का रस १०० ग्राम, गेंदे के फूल तथा पत्ते का रस १०० ग्राम, अनार के पत्तों तथा फूलों का स्वरस १०० ग्राम मिलाकर मन्दाग्नि से पकावें तीन दिन में परिपाक पूर्ण होना चाहिये। इस अमृत बिन्दु को नीले या हरे रङ्ग की शीशी में भरकर रखलें।

प्रयोग विधि—३-६ बूंद तक नासिका छिद्रों के अन्दर सूंतें तथा साथ ही मस्तिष्क और कपाल नासिका तथा नाभि पर भी मलें।

उपयोग—इसके प्रयोग से नासागत रक्तपित्त में विशेष लाभ होता है।

(११) अमृतकला निधि—तृणकान्तमणि (कहरवा शमई) २०० ग्राम को सूक्ष्म चूर्ण करके सर्वोत्तम अर्क केवड़ा तथा अर्क गुलाब की ७-७ भावनायें देकर सुखाले नीले या हरे कांच की शीशी में भरकर रखलें।

विधि—४ रत्ती से १ ग्राम तक दिन में २-४ बार तक अनार के रस के साथ सेवन करानी चाहिये। बालकों को १ रत्ती से ४ रत्ती तक सेवन करानी चाहिये।

उपयोग—यह योग रक्तपित्तनाशक अचूक योग है इसके प्रयोग से कोई उपद्रव नहीं होता तथा रोगी शीघ्र स्वस्थ हो जाता है। —श्रीमती सावित्री शास्त्री वैद्या द्वारा
सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(१२) रक्तपित्तान्तक वटी—प्रवालपिष्टी, मुक्ताशुक्तिपिष्टी, तृणकान्तपिष्टी, स्फटिका भस्म, रक्तबोल, शुद्ध गैरिक, जहरमोहरा खताई घनसत्व समभाग लेकर आंवला, वासा तथा नागकेशर के क्वाथ की पृथक्-पृथक् ७ भावना देकर ४-४ रत्ती की गोली बनाले।

मात्रा—२-४ गोली दिन में २-३ बार शर्बत अनार के साथ चटावें।

उपयोग—रक्तपित्तशामक बहुत उपयोगी गोलियां हैं। अनेक बार की परीक्षित दवा है।

—डा० धर्मपाल मित्तल द्वारा
सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(१३) रक्तपित्तहर मिश्रण—केला वृक्ष की जड़ १० ग्राम, श्वेतदूर्वा १० ग्राम, जल में खूब भीगा हुआ साठी चावल १० ग्राम, देशी बूरा १० ग्राम।

विधि—सबको खूब महीन सिलबट्टे से पीस लें तथा १०० ग्राम पानी में घोलकर ठण्डाई भी बना लें फिर सब घोल की ४ मात्रायें बना लें।

सेवन विधि—१-१ मात्रा सुबह दोपहर तीसरे पहर तथा शाम को रोगी को पिलानी चाहिये।

उपयोग—रक्तपित्तजन्य शरीर से किसी मार्ग द्वारा होने वाला रक्तस्राव इस प्रयोग के सेवन से तत्काल रुक जाता है सैकड़ों बार का परीक्षित योग है। यह औषधि कम आयु के रोगियों को कम मात्रा में देनी चाहिये।

—गंगाप्रसाद गौड़ नाहर द्वारा
सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(१४) रक्तस्रावान्तक—वंशलोचन १ भाग, छोटी इलायची के दाने १ भाग, गिलोयसत्व २ भाग, दम्मुल अखवेन १ भाग, नागकेशर असली पत्ती ४ भाग, प्रवाल-भस्म १ भाग, अकीकपिष्टी १ भाग, शुद्ध लाल पीपल की १ भाग।

विधि—सबको एक जीव कर सूरणकन्द तथा काकजंघा के रस की १-१ भावना देकर घोटें तथा सूखा चूर्ण करके भरकर रख लें।

मात्रा तथा अनुपान—१-२ ग्राम की मात्रा में काकजंघा के रस के साथ प्रातः-सायं सेवन कराना चाहिये।

उपयोग—इसके प्रयोग से ऊर्ध्व तथा अधः रक्तपित्त-जन्य रक्तस्राव शीघ्र रुक जाता है। रोग की पुनरावृत्ति न हो इसलिये १ सप्ताह तक प्रयोग कराना चाहिये। सहस्रों बार का परीक्षित योग है और कभी निष्फल नहीं जाता।

—ईश्वरीदत्त शर्मा द्वारा
सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(१५) रक्तपित्तहर शर्बत—अंजुवार ४० ग्राम, अनार का छिलका २० ग्राम, हब्बुलास २० ग्राम, सफेद चन्दन चूरा १५ ग्राम, बबूल के पत्ते २० ग्राम, लाल पीपल की २० ग्राम।

विधि—उपरोक्त सब चीजों को यवकुट करके १ किलो जल में १२ घण्टे भिगोकर मन्दाग्नि से औटावें जब २५० ग्राम जल शेष रहे तब उतारकर छान लें और उसी पानी में आधा किलो मिश्री डालकर पकावें जब १ तार की चाशनी बन जाय तब उतार कर छान लें और बोतलों में भरकर रखलें।

मात्रा—२०-२० ग्राम शर्बत आवश्यकतानुसार दिन में ४ बार सेवन कराना चाहिये।

उपयोग—इसके सेवन से रक्तपित्त या किसी स्थान से रक्तस्राव का होना तुरन्त बन्द हो जाता है।

—पं० लक्ष्मीनारायन शर्मा द्वारा
प्राणाचार्य प्रयोग मणिमाला से।

(१६) जीर्ण रक्तपित्तहर रसायन—लाक्षा चूर्ण २ रत्ती, अभ्रकभस्म १/१० रत्ती, स्वर्णमाक्षिक भस्म १ रत्ती, बंगभस्म १/१० रत्ती, मृगशृङ्ग भस्म १/१० रत्ती, प्रवाल भस्म १ रत्ती, अमृतासत्व २ रत्ती, स्वर्णभस्म १/२० रत्ती।

विधि—इन सबको एक खरल में घोटकर दो खुराक बना लें।

मात्रा—सुबह शाम १-१ मात्रा आंवले के मुरब्बे के साथ चटावें।

उपयोग—जीर्ण रक्तपित्त के रोगी जिन्हें बलगम के साथ वर्षों से रुक-रुक कर खून आता हो उन्हें इस प्रयोग से विशेष लाभ होता है। यक्ष्मा में भी लाभदायक योग है।

—पं० लक्ष्मीनारायन शर्मा द्वारा
प्रयोग मणिमाला से।

(१७) रक्तरोधक योग—नौसादर, पीपल की लाख, माजू, चन्दन सफेद, कमलगट्टे की गिरी, गुलहठी, अंजुबार, गोंद बबूल, मोचरस, लोध्र, धाय के फूल, खूनखराबा, शुद्ध गेरू, गोंद पलाश, ईसबगोल की भूसी, माई, नागकेसर के फूल, बड़ी माई, सिंघाड़ा, उन्नाव, बिहीदाना, कुन्दुर गोंद, गोखरू, कहरवापिष्टी,

बबूने के फूल, कल्बुलहज्र, फिटकरी का फूला प्रत्येक १०-१० ग्राम।

विधि—सबको कूट पीस कपड़छन करके उसके समभाग मिश्री मिला लें।

मात्रा—१॥ से ३ ग्राम तक शर्बत अंजुवार या तन्दुल जल के साथ सेवन करावें।

उपयोग—ऊर्ध्व तथा अधोमार्ग जनित रक्तस्राव को रोकने के लिये बहुत उत्तम प्रयोग है अनेक बार इसकी परीक्षा की जा चुकी है।

—श्रीमान मुन्नालाल पाटनी द्वारा प्राणा० प्रयोग मणिमाला से।

(१८) रक्तपित्तहर अवलेह—आंवले का मुरब्बा, बड़ी हरड़ का मुरब्बा, सेब का मुरब्बा, गुलकन्द २००-२०० ग्राम, वंशलोचन असली, छोटी इलायची के दाने, मुलहठी का सत्व १०-१० ग्राम, मुक्तापिष्टी ६ ग्राम, सोने के वर्क २५ नग, चांदी के वर्क १०० नग, फिटकरी का फूला ६ ग्राम, शहद ४०० ग्राम।

विधि—सभी काष्ठौषधियों को कूट कपड़छन कर लें तथा मुरब्बा सिललोड़ी से पीस लें और काष्ठादि दवा मिला दें फिर मुक्तापिष्टी, चांदी सोने के वर्क तथा शहद मिलाकर रख लें।

मात्रा—६-६ ग्राम प्रातः-सायं चटाना चाहिये।

उपयोग—रक्तपित्त, तथा पित्तजन्य विकारों में बहुत उपयोगी योग है। यक्ष्मा तथा उसके कारण होने वाले रक्तनिष्ठीवन में विशेष लाभ करता है।

—पं० रामेश्वरप्रसाद जी द्वारा प्रयोग मणिमाला से।

(१९) रक्तरोधक अवलेह—ईसबगोल के दाने ६० ग्राम, पोस्त के दाने ६०० ग्राम ले। जल ३ किलो चीनी या मिश्री १½ किलो लें। पोस्त के दाने तथा बबूल के गोंद का चूर्ण यह दोनों वस्तुयें १२०-१२० ग्राम पृथक् रखें।

विधि—दोनों चीजों को कुचलकर रात्रि में जल के साथ भिगो दें बर्तन कलईदार होना चाहिये। प्रातःकाल क्वाथ पकावें। चौथाई शेष रहने पर मोटे कपड़े में छानकर क्वाथ को अच्छी तरह निचोड़ ले और उसमें चीनी मिलाकर पुनः आग पर पाक करें। रबड़ी की तरह हो जाने पर पोस्त के दाने तथा बबूल के गोंद का छना चूर्ण डालकर उतार लें।

मात्रा—१०-१० ग्राम प्रातः-सायं बकरी के दूध के साथ चटाना चाहिये।

उपयोग—इसके सेवन से रक्तपित्त, यक्ष्मा आदि कारणों से मुख द्वारा निकलने वाला रक्त शीघ्र रुक जाता है। यदि अर्श तथा प्रदर रोग से पीड़ित रोगी को भी इसका सेवन कराया जाय तो अधोमार्ग से निकलने वाला रक्त भी रुक जाता है। —अनुभूत योग से।

(२०) रक्तरोधक वटी—प्रवालपिष्टी २० ग्राम, रसौत, गिलोयसत्व, स्वर्णमाक्षिक भस्म, बकायन के ताजे पान तथा नीम के कोमल पत्र १०-१० ग्राम तथा कपूर ३ ग्राम लें।

विधि—सबको मिलाकर घीग्वार के रस में खरल कर १-१ रत्ती की गोलियां बना सोनागेरू के चूर्ण में डालते जावें।

मात्रा—१-२ गोली दिन में २-३ बार जल के साथ देवें।

उपयोग—रक्तपित्त, रक्तप्रदर आदि रोगों में रक्त प्रवाह को रोकने के लिये यह वटी निर्भयतापूर्वक प्रयोग की जाती है। —रसतन्त्रसार से।

विशेषांक के लिये प्रेषित विशेष योग—

(२१) रक्तरोध—रससिन्दूर १ भाग, शुभ्रा, संगजराहत भस्म, प्रवालपिष्टी, यशदभस्म, रक्तबोल प्रत्येक २-२ भाग को एकत्र कर मोचरस क्वाथ में मर्दन करके १-१ रत्ती की गोली बनावे।

मात्रा—२-२ गोली, आंवला, दूर्वा, वासापत्र में से उपलब्ध किसी के २५ ग्राम स्वरस के साथ प्रयोग करें दिन में तीन बार आवश्यकतानुसार प्रति २-२ या ३-३ घण्टे में भी प्रयोग कर सकते है, वासापत्र स्वरस, एवं पेठा स्वरस आदि में यथोचित प्रयोग करने पर ऊर्ध्व, अधः दोनों प्रकार के रक्तपित्त अथवा किसी अङ्ग से खून आने पर परम गुणकारी सिद्ध हुआ है।

—वैद्य मोहनलाल शर्मा गुना (म० प्र०)।

[इ] प्रमुख शास्त्रीय योग

क्र०	[illegible]	औषधि का नाम	[illegible]	मात्रा एवं समय	अनुपान	विशेष
१	रस	[illegible] रस	[illegible]	[illegible] मि०ग्रा० दिन में ३ बार	[illegible]	[illegible]
२	,,	[illegible] रस	[illegible]	,, ,,	[illegible]	,, ,,
३	,,	[illegible] रस	[illegible]	[illegible] मि०ग्रा० दिन में २ बार	[illegible]	,, ,,
४	,,	[illegible] रस	[illegible]	[illegible] मि०ग्रा० दिन में ३ बार	[illegible]	,, ,,
५	,,	[illegible] रस	[illegible]	[illegible] मि० ग्रा० दिन में ३ बार	[illegible]	[illegible]
६	,,	[illegible] रस	[illegible]	,, ,,	[illegible]	[illegible]
७	,,	[illegible] रस	,,	[illegible] मि०ग्रा० दिन में ३ बार	[illegible]	
८	,,	[illegible] रस	[illegible]	[illegible] मि०ग्रा० दिन में ३ बार	[illegible]	,,
९	,,	[illegible]	[illegible]	[illegible] मि०ग्रा० दिन में ३ बार	[illegible]	,,
१०	,,	[illegible]	[illegible]	[illegible] मि०ग्रा० दिन में ३ बार	[illegible]	,,
११	[illegible]	[illegible]	,,	,, ,,	[illegible]	,,
१२	,,	[illegible]	,,	,, ,,	,,	,,
१३	[illegible]	[illegible]	[illegible]	,,	,,	,,
१४	,,	[illegible]	[illegible]	[illegible] दिन में ३ बार		
१५	,,	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	,,
१६	,,	[illegible]		[illegible]	[illegible]	[illegible]
१७	,,	[illegible]	,,	[illegible] दिन में ३ बार		

१८	भस्म–पिष्टी	स्वर्ण भस्म	र० त०	३० मि०ग्रा० दिन में २ वार	वासा स्वरस +मधु	सर्वविध में।
१९	,,	संगजराहत भस्म	र० त० सा०	१२५ मि०ग्रा० दिन में २ वार	स्वर्णगैरिक + हिमकषाय	,,
२०	,,	तृणकान्तमणि पिष्टी	सि० भै० मणि०	१२५–२५० मि० ग्रा० दिन में २ वार	लघु पञ्चमूल सिद्ध अजादुग्ध	अधोग रक्तपित्त में।
२१	वटी	एलादि वटी	चरक०	१–२ गोली दिन में २-३ वार	चूसते रहें	ऊर्ध्वग में।
२२	,,	सारिवादि वटी	भै० र०	,, ,,	मंजिष्ठा हिम कषाय	उभयविध में।
२३	,,	त्रिवृतादि मोदक	,,	३ ग्राम दिन में २-३ वार	जल	,,
२४	,,	रसेन्द्रादि गुटिका	,,	१ गोली दिन में २-३ वार	दुग्ध	,,
२५	चूर्ण	चन्दनादि चूर्ण	यो० र०	२ ग्राम दिन में २-३ वार	तण्डुलोदक + मधु	अधोग में।
२६	,,	सितोपलादि चूर्ण	च० द०	१–२ ग्राम दिन में २-३ वार	,,	उर्ध्वग में।
२७	,,	उशीरादि चूर्ण	भै० र०	,, ,,	,,	उभयविध में।
२८	,,	प्रियङ्ग्वादि चूर्ण	यो० र०	,, ,,	,,	,,
२९	क्वाथ	पर्पटादि क्वाथ	शा० सं०	१० ग्राम का क्वाथ कर दिन में २ वार	—	सर्वविध में।
३०	,,	ह्रीबेरादि क्वाथ	भै० र०	,, ,,	—	,,
३१	आसव–अरिष्ट	उशीरासव	शा० सं०	१०-१५ मि०लि० भोजनोत्तर	समान जल मिलाकर	,,
३२	,,	अशोकारिष्ट	भै० र०	,, ,,	,,	,,
३३	,,	द्राक्षासव	,,	,, ,,	,,	,,
३४	,,	लोध्रासव	,,	,, ,,	,,	,,
३५	,,	वासारिष्ट	,,	,, ,,	,,	,,
३६	,,	कनकासव	,,	,, ,,	,,	,,
३७	लेह–पाक	वासावलेह	,,	५–१० ग्राम दिन में २-३ वार	अजादुग्ध	,,
३८	,,	कूष्माण्डावलेह	शा० सं०	१०–१५ ग्राम दिन में २ वार	,,	,,
३९	,,	सर्पि गुड	च० द०	,, ,,	,,	,,
४०	,,	एलादि रसायन	अ०, सं०	५–१० ग्राम दिन में २ वार	,,	,,

४१	लेह–पाक	अमृतप्राशावलेह	अ० हृ०	५–१० ग्राम दिन में २ बार	अजादुग्ध	सर्वविध में।
४२	,,	च्यवनप्राश	च०सं०	१०–२० ग्राम दिन में २ बार	,,	,,
४३	,,	वासाखण्ड-कूष्माण्डक	भै० र०	,, ,,	,,	,,
४४	घृत	शतावरी घृत	च० द०	५–१० ग्राम दिन में २ बार	,,	,,
४५	,,	द्राक्षाद्य घृत	यो० र०	,, ,,	,,	,,
४६	,,	वासा घृत	भै० र०	,, ,,	,,	,,
४७	,,	दूर्वाद्य घृत	,,	,, ,,	,,	,,
४८	,,	सप्तप्रस्थ घृत	,,	,, ,,	,,	,,
४९	तैल	ह्रीवेरादि घृत	,,	—	अभ्यङ्गार्थ	सारे शरीर पर करें।

रक्तपित्त में सामान्य चिकित्सा उपक्रम

यदि रक्तपित्त का रोगी बलवान् है तो उसके निकलते हुए रक्त का स्तम्भन न किया जावे। यदि साम दोष हो या कफ का अनुबन्ध हो तो लंघन और यदि वायु का अनुबन्ध हो तो तर्पण उपयुक्त है। ऊर्ध्वग रक्तपित्त में वातानुलोमनार्थ विरेचन एवं अधोग रक्तपित्त में वायु के वेग को विपरीत करने हेतु वमन कराना उपयुक्त है। किन्तु जो रोगी क्षीण मांस वाला, निर्बल, बालक, वृद्ध या यक्ष्मा के अनुबन्ध वाला हो उसे वमन विरेचन न कराके प्रारम्भ से ही औषधि का प्रयोग कराना चाहिये।

रक्तपित्त में सफल औषधि व्यवस्था-पत्र

ऊर्ध्वग रक्तपित्त में—(१) रक्तपित्तान्तक लोह २५० मि० ग्रा०, बोलपर्पटी २५० मि० ग्रा०, कूष्माण्डावलेह १५ ग्राम। १ मात्रा × मधु में मिलाकर सेवन करायें प्रातः-सायं।

(२) चन्द्रकला रस १२५ मि० ग्रा०, प्रवालपिष्टी २५० मि० ग्रा०, शुद्ध स्वर्णगैरिक १ ग्राम। १ मात्रा × ९ बजे तथा २ बजे वासा स्वरस या दूर्वा स्वरस तथा मधु मिलाकर दें।

(३) उशीरासव १५ मि० लि०, वासारिष्ट १५ मि० लि०। १ मात्रा × समभाग जल मिलाकर भोजनोपरान्त दें।

(४) लाक्षा चूर्ण ३ ग्राम, शतावरी घृत ६ ग्राम, मधु ५ ग्राम। १ मात्रा × रात्रि के समय दें।

अधोग रक्तपित्त में—(१) रक्तपित्त कुलकण्डन रस १२५ मि० ग्राम, बोलपर्पटी २५० मि० ग्रा०, तृणकान्तमणि पिष्टी २५० मि० ग्रा०, गोदन्ती १ ग्रा०। १ मात्रा × बकरी के दूध से प्रातः-सायं दें।

(२) चन्दनादि चूर्ण ३ ग्राम, शुद्ध स्वर्णगैरिक १५ ग्राम। १ मात्रा × तण्डुलोदक + मिश्री + मधु में मिलाकर प्रातः ९ बजे तथा मध्याह्न २ बजे दें।

(३) लोध्रासव २० मि० × १ मात्रा समान जल मिलाकर भोजन के उपरान्त दें।

रक्तपित्तज दौर्बल्य में—(१) मुक्तापिष्टी १२५ मि० ग्रा०, स्वर्णभस्म ५० मि० ग्रा०। १ मात्रा × प्रातः-सायं मलाई में मिश्री मिलाकर चटायें।

(२) शतावरी घृत २० ग्राम × दिन में १० बजे तथा रात्रि को सोते समय दें।

[ई] प्रमुख पेटेण्ट आयुर्वेदीय योग

क्रमाङ्क	योग का नाम	निर्माता कम्पनी	उपयोग विधि	विशेष
१	स्टिपलोन टेब०	हिमालय ड्रग	२–३ गोली दिन में ३ बार २–४ दिन तक, पश्चात् औषधि की मात्रा घटाकर १–२ गोली दिन में २ बार।	विभिन्न प्रकार के रक्तपित्त में उपयोगी।
२	पोसेक्स (साधारण) टेब०	चरक	२–३ टेब० ३–४ बार प्रतिदिन।	,, ,,
३	पोसेक्स (साधारण) फोर्ट	,,	,, ,,	साधारण से अधिक उपयोगी।
४	सेनीलाइन ड्राप्स	डाबर	५ मि०लि० (१ चम्मच) या अधिक आवश्कतानुसार।	रक्तस्राव बन्द करने की अनुभूत एवं उत्तम औषधि है।
५	बाबलीघास घनसत्व टेब०	गर्ग वनौषधि	२–४ गोली दिन में ३ बार।	,, ,,
६	स्फटिक सूचीवेध	सी० ए० मिश्रा	१–२ मि०लि० मांस में।	रक्तपित्त में उपयोगी।
७	प्रवाल सूचीवेध	मार्तण्ड, सिद्धि	,, ,,	,, ,,
८	वासा सूचीवेध	बुन्देलखण्ड	,, ,,	,, ,,

[उ] प्रमुख पेटेण्ट एलोपैथिक योग

औषधि का नाम	निर्माता	मात्रा एवं व्यवहार-विधि	विशेष
१. इन्जेक्शन—			
१. कैपिलिन (Kapelin)	Glaxo	१ सी० सी० मांस में या नस में आवश्यकतानुसार दें।	किसी भी प्रकार के तीव्र रक्तस्राव में लाभप्रद है।
२. क्लोडेन (Clauden)	Neo Pharma	१० सी० सी० का इन्जेक्शन नस में धीरे-धीरे आवश्यकतानुसार २-३ बार दिन में दें।	,, ,,

३. स्टिप्टोवियोन (Styptobion)	E. Merk	१–२ एम्पुल मांस में या धीरे-धीरे नस में आवश्यकतानुसार।	किसी भी प्रकार के तीव्र रक्तस्राव में लाभप्रद है।
४. स्टिप्टोक्रोम (Styptochrome)	Dolphin	,, ,,	,, ,,
५. कैल्शियम ग्लूकोनेट (Calciam Gluconate)	B. I.	१० सी० सी० का एम्पुल धीमे-धीमे नस में दें।	,, ,,
२. टेबलेट—			
१. कैपिलिन (Kapilin tab.)	Glaxo	१–२ टैब० दिन में ३–४ बार आवश्यकतानुसार।	,, ,, इसके समकक्ष रोशे कम्पनी की सिरोसिट भी उपलब्ध है।
२. स्टिप्टोविट (Styptovit tab.)	Dolphin	,, ,,	सभी प्रकार के रक्तस्राव में लाभप्रद।
३. क्लोडेन (Clauden tab.)	Neo Pharma	,, ,,	,, ,,
४. स्टिप्टोवियोन (Styptobion)	E. Merk	,, ,,	,, ,,
५. कैल्शियम–डी रिडोक्सोन (Calciam–D Redoxon)	Róche	,, ,,	,, ,,

सुधानिधि का यह विशेषांक आपको कैसा लगा

पत्र द्वारा सूचित करें!

व्रण-विद्रधि, फोड़े-फुन्सियाँ

[अ] एकौषध एवं साधारण प्रयोग

(१) अम्बाहुली के ताजे या छायाशुष्क पत्तों को पीसकर पुल्टिस जैसी बनाकर गरम-गरम पक्व ग्रन्थि या व्रण पर बाधने से व्रण फूट जाते हैं। अपरिपक्व शीघ्र पककर फूटते हैं और बिलकुल कच्चा व्रण इनके बांधने से बैठ जाता है।

(२) हथेली या अंगुलि, अंगूठे में होने वाला अत्यन्त पीड़ायुक्त व्रण (बिटनो) की अवस्था मे अपराजिता के पत्तों की लुगदी को बांधकर ऊपर से शीतल जल सिंचन करते रहने से शीघ्र लाभ हो जाता है।

(३) अरहर के पत्ते बगैर पानी के पीसकर बांधने से कटे हुये जख्म शीघ्र ठीक हो जाते हैं।

(४) जिन व्रणों में दुर्गन्ध आती हो राध या पीव चलती हो तो अखरोट को थोड़े जल में घोलकर आग पर गरम कर लेही के समान पुल्टिस बनाकर बांधने से शीघ्र लाभ हो जाता है।

(५) अर्जुन की छाल को जौकुट कर क्वाथ बनावें इस क्वाथ से व्रणों का प्रक्षालन करने से व्रण में कृमि नहीं पड़ते और वह शीघ्र भर जाते है। व्रणों का प्रक्षालन कर अर्जुन की छाल का महीन चूर्ण उसमे भरकर बाधने से व्रणों की रोपण क्रिया बहुत शीघ्र हो जाती है।

(६) अलसी के चूर्ण को दूध या जल में मिलाकर उसमें थोड़ा हल्दी का चूर्ण डालकर खूब पकावें और जहां तक सहन हो सके गरम-गरम ही वद या ग्रन्थि पर इसकी पुल्टिस रखकर ऊपर से पान का पत्ता रखकर बाध दे। इस प्रकार कुल ५-६ बार बांधने से व्रण परिपक्व होकर फूट जाता है। अन्तर की जलन, टीस, पीड़ा आदि दूर हो जाती है। यह बड़ी-बड़ी अन्तर विद्रधियों को भी फोड़कर ठीक कर देती है।

(७) अर्कपत्र का रस १ किलो तथा कच्ची हल्दी का रस आधा किलो तथा तिल तैल २५० ग्राम एकत्र मिलाकर पका लें, तैल मात्र शेष रहने पर छानकर रख ले यदि मरहम बनानी हो तो थोड़ा मोम डालकर गाढ़ा कर लें। इस मरहम या तैल को व्रणों पर लगाने से व्रण शीघ्र भरने लगते हैं। उपदंशज व्रणों में भी लाभ होता है।

(८) आक की जड़ की छाल का महीन चूर्ण अत्यन्त जीवाणुनाशक तथा व्रणरोपक है जिस व्रण से पूय निकलता हो, अन्दर सड़ान होने से दुर्गन्ध आती हो उस पर इसे बुरकने से लाभ होता है। इससे २-८ दिन में ही सड़ा मांस निकलकर वह शुद्ध हो जाता है। फिर कर्पूर, राल तथा सिन्दूर का मलहम लगाने से वह शीघ्र भर जाता है।

(९) अर्कदुग्ध तथा गोघृत सममाग मिश्रण कर दिन में २-३ बार लगाने से भी व्रणों में लाभ होता है।

(१०) आक के पत्तों का रस १ किलो १६० ग्राम, सरसों तैल १६० ग्राम तथा गोघृत ८० ग्राम एकत्र कर कलईदार कढ़ाही में मन्दाग्नि पर पकावें तैल और घृत शेष रहने पर छानकर उसमें आक के सूखे पत्तों का कपड़छन चूर्ण ४० ग्राम, पारद तथा गन्धक की कज्जली १० ग्राम तथा सिन्दूर, हरताल, मैनसिल, हल्दी तथा सोनागेरु ५-५ ग्राम सब महीन पीसकर अच्छी तरह मिला दें इस मलहम के प्रयोग से पुराना व्रण तथा नाड़ीव्रण भी ठीक हो जाता है।

(११) आक की टहनी को पीसकर उसमें अलसी का तैल तथा जरा सा सुहागा मिला और पकाकर उसकी टिकिया बाधने से कच्चे व्रण, फोड़ा, फुंसी आदि शीघ्र पक जाते है।

(१२) यदि पका हुआ फोड़ा फोड़ना हो तो आक के दूध मे थोड़ी सज्जी तथा चूना मिलाकर प्रलेप करने से वह बिना शस्त्रकर्म के फूटकर बहने लग जाता है।

(१३) शुद्ध रसांजन लेकर उसमे आक के दूध की ६ भावनाये तथा थूहर के दूध की ३ भावनाये देकर

शीघ्र बैठ जाती है या पक जाती है इसी प्रकार अपक्व या पच्यमान विद्रधि पर भी यह पुल्टिस काम करती है।

(२८) जो व्रण या घाव चिरकाल से रोपण न होते हों, न भरते हों उनमे कठगूलर की जड़ का महीन चूर्ण दबाकर बांधने से तथा इसके क्वाथ से उसे धोते रहने से वे शीघ्र भर जाते हैं।

(२९) भयंकर विस्फोटक भगन्दर, नासूर आदि दूषित व्रणों पर कठगूलर की जड़ को जलाकर की हुई राख में इसके पंचांग की ही ४ भावनायें देकर शुष्क हो जाने पर उसमे १०० बार धोये हुये घृत को मिलाकर मलहम बनानी चाहिये। पश्चात् उसमें सेही नाम के एक छोटे से जंगली जानवर के कांटों की भस्म उक्त मलहम के वजन से आधी मिलाकर तथा अच्छी तरह घोटकर मिला लें। इसके लगाते रहने से उक्त प्रकार के दूषित व्रण शीघ्र भरने लगते हैं।

(३०) कटुतुम्बी के पत्तों को लोध के साथ पीसकर लेप करने से या इसके फल का रस २०० ग्राम, भेड़ की ऊन की राख १० ग्राम तथा सरसों का तैल ५० ग्राम इन सबको मन्दाग्नि पर पकावें तैल मात्र शेष रहने पर छानकर शीशी मे रख लें इसे रुई में भिगोकर दुष्ट व्रण या नासूर में भरने से शीघ्र लाभ होता है।

(३१) कटुतुम्बी के बीज तथा सोंठ सममाग जल के साथ पीसकर लुगदी बनाकर तैल सिद्ध कर लें यह तैल घोर व्रण एवं सड़े गले लिंग मांस को अच्छा कर देता है।

(३२) कदमपत्र के क्वाथ से व्रणों को धोने से तथा उसके कोमल पत्तों को बंसलोचन के साथ पीसकर पलस्तर लगाने तथा कोमल पत्तों से ही आच्छादित कर बांध देते हैं इससे वे शीघ्र परिपाक होकर ठीक हो जाते हैं।

(३३) कपास के पत्तों की पुल्टिस बनाकर बांधने से ग्रन्थि या व्रण शीघ्र पककर फूट जाते है पश्चात् व्रण-रोपणार्थ देवकपास के कोमलपत्र तथा पान्डी के पत्र दोनों को पीसकर बांधते हे। व्रण या क्षत से रक्तस्राव विशेष होता है तो देवकपास के छायाशुष्क पत्तों का महीन चूर्ण बुरकने से लाभ होता है।

(३४) कर्पूर को पीसकर छिड़कते रहने से विकृत व्रण शीघ्र भरने लगते हैं। छिड़कने या बुरकने के लिये कर्पूर को खरल में घोटते समय थोड़े से रैक्टिफाइड स्प्रिट से आर्द्र कर लेने से चूर्ण बन जाता है खरल में चिपकता नहीं है।

(३५) कर्पूर चूर्ण १२ ग्राम लेकर शुद्ध घृत ५० ग्राम में पीसकर चाकू, तलवार आदि के घाव या क्षत में इसे भरकर ऊपर से पट्टी बांध देने से यह व्रण शीघ्र भर जाता है इससे न तो पीड़ा होती है और न वह पकता ही है।

(३६) कर्पूर के सममाग श्वेत राल, मुर्दासङ्ग, मोम तथा वैसलीन या घृत ५ भाग लेकर प्रथम वैसलीन या घृत गरम कर उसमें मोम मिला दें फिर उसे नीचे उतार-कर जब थोड़ा गरम रहे तब उसमें कर्पूर, राल तथा मुर्दा-सङ्ग का चूर्ण मिला लें। फिर इस मिश्रण को थाली में डालकर १०-२० बार शीतल जल में धोकर चौड़े मुख की शीशी में भरकर रख लें। यह घाव या फोड़ों के लिये विशेष लाभकारी है। सड़े हुये घावों को भी शोधित कर शीघ्र भर देता है।

(३७) कपूर कचरी की भस्म तिल तैल में मिलाकर लगाते रहने से कृमियुक्त सिर के व्रण शीघ्र भर जाते हैं।

(३८) कबीला को सममाग या दुगने कडुवे तैल में खरल कर उसमें फाहा भिगोकर बांधते रहने से व्रण का रोपण शीघ्र होने लगता है।

(३९) कबीला ५० ग्राम, शुद्ध मेंहदीपत्र, नीमपत्र, बेर की जड़ १-१ ग्राम, गन्धक ६ ग्राम, नीलाथोथा ३ ग्राम सबको महीन कर शतधौत घृत या सरसों के तैल में मिलाकर रख लें इसे वर्षा के कारण उत्पन्न फुंसियों, व्रण, खुजली, कर्णपाक पर लगाने से विशेष लाभ होता है।

(४०) करंज के पत्तों की पुल्टिस बनाकर बांधते रहने से अथवा इसके कोमल पत्र स्वरस के साथ निर्गुंडी या नीमपत्र रस को मिलाकर उसमें कपास का फाया तर कर व्रण पर बार-बार रखते रहने से लाभ होता है।

(४१) कहरुआ (चन्द्रस) के निर्यास या तैल तथा राल ५०-५० ग्राम, मोम २० ग्राम तथा तिल तैल ८०

ग्राम सबको गरम कर अच्छी तरह घोटकर मलहम जैसा बन जाने पर लगाने से व्रणों में शीघ्र लाभ हो जाता है।

(४२) अपक्व व्रण एवं शोथयुक्त व्रणों पर इसकी कोमल पत्तियों को महीन पीसकर लुगदी की टिकिया व्रण या ग्रन्थि पर रखकर उस पर कपड़े की एक मोटी पट्टी रखकर शीतल जल से सींचते रहने से वेदना, जलन आदि दूर होकर वह शीघ्र पककर फूट जाती है यह प्रयोग दिन-रात में ३-४ बार करना चाहिये प्रत्येक बार लुगदी तथा पट्टी बदल देनी चाहिये। फूटे हुये व्रणों पर केवल कोमल पत्तों को रखकर बांधते रहने से वे शीघ्र पूरित हो जाते हैं।

(४३) काकजंघा के पंचांग की राख को धोये हुये घी, तैल या वैसलीन में मिलाकर लगाते रहनेसेव्र ण का शोधन होकर रोपण हो जाता है, इस मलहम की पट्टी घोड़े तथा बैल के कन्धे पर भी व्रण होने पर लगायी जाती है।

(४४) काकजंघा के पंचांग का रस १ किलो तथा तिल तैल २०० ग्राम मिलाकर मन्दाग्नि पर पकावें, तैल मात्र शेष रहने पर नीचे उतारकर छान लें। फिर उसमें मोंम तथा सफेदा ५०-५० ग्राम मिलाकर मलहम बना लें। इसकी पट्टी लगाते रहने से या इसके पत्तों की पुल्टिस बांधने से व्रण भरने लगते है गहरा घाव भी ३ दिन में भरने लगता है।

(४५) कायफल के चूर्ण के साथ अनार की छाल, हल्दी, फूल प्रियंगु, त्रिफला तथा धाय के चूर्ण समभाग को अच्छी तरह खरलकर आंवले के रस में पीसकर लेप करने से व्रण भरने लगते हैं।

(४६) कायफल के क्वाथ से प्रक्षालन कर इसके महीन चूर्ण को ऊपर से बुरकते रहने से या इसे तैल में पकाकर उस तैल को लगाते रहने से लाभ होता है।

(४७) व्रण या घाव जिसमें कृमि पड़ गये हों या फिरङ्ग, उपदंश के घावों पर इसके रस के घन क्वाथ को गरम दूध के साथ मिलाकर लगाने से अथवा इसके पत्तों के स्वरस को लगाते रहने से कृमि मरकर घाव धीरे-धीरे ठीक हो जाते हैं अथवा इसके ताजे पत्तों को पीसकर पुल्टिस बनाकर बांधने से लाभ होता है। पशुओं के घावों पर भी यह उपचार किया जाता है।

(४८) कूठ का लेप करने से व्रण शुद्ध होकर शीघ्र भर जाते हैं दुष्ट व्रणों पर इसकी धूनी देने से व्रणों का रोपण होने लगता है।

(४९) शिर की क्लेदयुक्त फुंसियों पर इसके चूर्ण को खपरैल में भूनकर तैल मिलाकर शिर पर लगाते रहने से कृमि नष्ट होकर व्रण, फुंसियां, दाह, क्लेदयुक्त स्राव आदि दूर हो जाता है।

(५०) कौंवाच के पत्तों को पीसकर बांधने से साधारण व्रण शीघ्र भर जाते है और ठीक हो जाते है। कौंवाच के पत्तों को महीन पीसकर टिकिया बनाकर लगाने से नाड़ी व्रण का मुख चौड़ा होकर अन्दर की राध निकल जाती है। फिर पत्तों का महीन चूर्ण तथा भैंस के सींग की राख इन दोनों को घृत में घोटकर मलहम बनाकर लगाते रहने से नाड़ी व्रण ठीक हो जाता है।

(५१) गिलोय के ताजे हरे पत्तों को कूट-पीसकर रस निचोड़ लें यदि यह रस ४०० ग्राम हो, इसमें १०० ग्राम तिल तैल मिलाकर पकायें तैल मात्र शेष रहने पर भुना नीलाथोथा १ ग्राम तथा संगजराहत १० ग्राम मिलाकर अच्छी तरह खरल कर उसमें ६ ग्राम मोंम मिलाकर मलहम तैयार कर लें इसे फोड़ा-फुंसी व्रण आदि पर लगाने से लाभ होता है।

(५२) लाल गुंजा बीज, इमली बीज तथा गेरू इन तीनों को पानी में पीसकर लेप करने तथा लेप के सूखने पर पुनः लेप करते रहने से बद, गांठ, अपक्व व्रण में लाभ होता है।

(५३) वर्षा की प्रारम्भिक अवस्था में गुग्गुल के गरम लेप करने से फोड़े बैठ जाते है। चिरकालीन सड़ने वाले दूषित व्रणों पर गूगल के महीन चूर्ण को जम्भीरी नीबू के रस में या नारियल तैल मे घोटकर प्लास्टर सा बनाकर लगाते रहने से या उक्त रस अथवा तैल में इसका घोल सा बनाकर प्रलेप करते रहने से अथवा इसके चूर्ण को घृत में अच्छी तरह खरलकर मलहम बनाकर लगाते रहने से लाभ होता है।

(५४) गूलर के पत्तों का क्वाथ कर उससे सिद्ध किये हुये घृत को लगाते रहने से भयंकर सड़े हुये व्रण ठीक हो जाते है साधारण व्रणों पर कोमल पत्तों को पत्थर पर पीसकर लुगदी बांधते रहने से उनका शोधन एवं रोपण होकर सूख जाते है।

(५५) ग्वारपाठे के गूदे को गरम कर बांधने और बदलते रहने से अपक्व व्रण या विद्रधि बैठ जाती है। यदि वह पकने पर हो तो शीघ्र पककर फूट जाता है तथा फूट जाने पर गूदे में हल्दी मिलाकर बांधने से उसका शोधन होकर शीघ्र अच्छा हो जाता है। यदि व्रण को पकाना हो तो सज्जीखार या थोड़ी सी हल्दी भी उसमें मिला दें।

(५६) घिया तोरई के पत्र स्वरस में गुड़, सिन्दूर तथा चूना मिलाकर गरम कर लेप करने से गांठ बैठ जाती है।

(५७) घिया तोरई के कोमल पत्तों को कूट-पीसकर लगभग १ किलो स्वरस निकाल लें, उसमें पुराना गोघृत ½ किलो मिलाकर पाक कर लें। घृत मात्र शेष रहने पर उसमें शुद्ध मोंम ५० ग्राम मिलावें। मोंम अच्छी तरह घृत में मिल जाने पर एक परात में शीतल जल में छानते हुए छोड़ देवें। १-२ घण्टे बाद जल पर जो जमा हुआ घृत मिले उसे निकालकर चौघड़ी किये हुए मोटे वस्त्र पर डाल उसके ऊपर वैसा ही दूसरा वस्त्र रखकर हलके हाथों से धीरे-धीरे दबायें, जिससे सभी जलांश निकल जावेगा। फिर इस मलहम को डिब्बे में भर रखें। उसे व्रणों पर लगाने से वे शीघ्र भर जाते हैं।

—वनौषधि विशेषांक भाग २ से।

(५८) सफेद चम्पा के पत्तों को पीसकर पुल्टिस बना बांधने से या कड़े व्रण शोथ पर इसके पत्तों को बांधने या लेप करने से वह पककर बैठ जाता है।

(५९) चांगेरी के पञ्चांग को पीसकर पुल्टिस जैसी बनाकर बांधने से व्रण की पीड़ा, जलन तथा शोथ दूर होता है।

(६०) चावलों का महीन आटा खूब अच्छी तरह बुरक देने से चेचक के व्रणों तथा साधारण व्रणों में विशेष लाभ होता है। दाह, जलन मिट जाती है और वह शीघ्र भरने लगते हैं।

(६१) चित्रक की छाल को पीसकर लेप करने से फोड़े आदि शीघ्र पक कर फूट जाते हैं। परिपक्व व्रणों पर लेप करने से वे अच्छी तरह फूट जाते हैं तथा फूटकर वह जाते हैं।

(६२) चित्रक के २०० ग्राम पंचांग को यवकुट कर अठगुने जल में पकावें। चतुर्थांश शेष रहने पर उतारकर मल-छान लें, फिर कलईदार कढ़ाही में मन्दाग्नि पर पकावें। जब गाढ़ा होने लगे, तब उसमें राल, सफेदा मुर्दासंग, सिन्दूर तथा पारे-गन्धक की कज्जली प्रत्येक ६-६ ग्राम मिला अच्छी तरह घोटकर रख लें। घोटते समय इसमें १०० ग्राम उत्तम मोंम मिला लेना चाहिए। यह मलहम व्रणों को शीघ्र अच्छा कर देती है।

(६३) कच्चे फोड़े, गांठ तथा वद में जब तक शूलवत् वेदना न हो, पाक न होने लगा हो, तब तक पूतिकरंज (पापरी) के पत्तों पर घृत लगा आग पर कुछ गर्म कर बांध देने से उसका पाक होकर फूट जाता है।

(६४) गन्ध-विरोजा (अशुद्ध), गूगल, अगरू तथा राल की धूप देने से कोमल व्रण कठोर होकर उनका स्राव तथा वेदना दूर हो जाती है।

(६५) विरोजा ४०० ग्राम मन्दाग्नि पर गरम करें। मलहम के योग्य बनने पर कपड़े में छानकर उसमें जंगाल, साबुन, पत्थर का कोयला तीनों २०-२० ग्राम तथा पापड़खार ३० ग्राम, इनका महीन चूर्ण मिलाकर मलहम शीतल होने तक हिलाते रहें। यह मलहम व्रणों का शोधक और रोपक है तथा फोड़ों को पकाकर फोड़ने वाला है। यदि व्रणशोथ पक जाने पर भी न फूटता हो, तो इसकी पट्टी बांधने से शीघ्र फूट जाता है।

(६६) शुद्ध चूना (थिराकर और पानी बहाकर चूने को सुखा लें) १० ग्राम, मुर्दासंग ६ ग्राम, चोबचीनी २० ग्राम, मेंहदी के फूल ४० ग्राम। इन सबके महीन चूर्ण को ८० ग्राम जैतून के तैल से खूब खरल कर रखें। इसे व्रणों, नासूर, क्षत आदि पर लगाने से उनका रोपण होने लगता है।

(६७) चोबचीनी चूर्ण २० ग्राम, तूतिया, मुर्दासंग तथा सफेदा तीनों १०-१० ग्राम। इन सबके सूक्ष्म चूर्ण

को मोम २० ग्राम तथा बादाम तैल ३० ग्राम में मिलाकर मलहम बना लें। त्रिफला तथा नीम की पत्ती के क्वाथ से घावों को धो-पोंछकर मलहम की पट्टी बांधते रहने से व्रण, नासूर आदि ठीक हो जाते हैं। आतशक के व्रणों के लिए विशेष उपयोगी है।

(६८) चौलाई के पत्तों की पुल्टिस बांधने से गांठ या विद्रधि पककर शीघ्र फूट जाती है तथा शोथ पर इसके पत्तों का लेप गरम-गरम करने से वह बिखर जाती है।

(६९) तिल तैल ६० ग्राम तथा मोम १० ग्राम दोनों को गरम कर छान लें। पश्चात् इसमें जदवार (निर्विषी) का चूर्ण १० ग्राम तथा गन्ध-बिरोजा ४० ग्राम का चूर्ण मिलाकर मलहम बना लें। बद, प्लेग, कण्ठमाला, कठोर व्रण आदि पर इस मलहम की पट्टी बांधने से रक्त बिखर कर गांठ बैठ जाती है। यदि पकने पर हो, तो शीघ्र पककर फूट जाती है। फूटे हुए फोड़े पर इसे लगाने से व्रण शीघ्र भर जाते हैं।

(७०) ज्वार (जुआर) के कच्चे भुट्टे का हरा, ताजा तथा दूधिया रस लगाते रहने से तथा उसकी बत्ती बना घावों में भरने से व्रणों का रोपण होने लगता है। जो फोड़ा पकता या फूटता न हो, उस पर ज्वार के दानों को पकाकर तथा धतूरा रस मिलाकर पुल्टिस बना लगाने से लाभ हो जाता है।

(७१) शरीर पर कहीं भी व्रणशोथ हो, तो पलाश के पत्तों को पीस गरम करके प्रलेप करने या पुल्टिस बनाकर बांधने से लाभ होता है। इसके शुष्क पत्तों की राख १० ग्राम को ४० ग्राम घृत में मिलाकर लगाने से सब प्रकार के घाव ठीक हो जाते हैं।

(७२) ग्रन्थि शोथ, साधारण शोथ एवं व्रणों पर पान के पत्तों को गरम करके बांधने से शोथ व वेदना में लाभ होता है।

(७३) तेजपात की छाल को पानी में पीस लें। जब खूब लुआबदार हो जाय, तब मोटा लेप करने या उसे लगाकर ऊपर से पट्टी बांधने से ग्रन्थि या व्रण जो पकता न हो, पक जाता है। यदि गांठ पक्व हो या फूट गयी हो तो इसका प्रलेप व्रण के निम्न भाग पर चारों ओर करने से उसके मुख द्वारा राध (पीप) बहकर गांठ बैठ जाती है। इस प्रकार पाक, अपक्व व अर्धपक्व चाहे जैसा शोथ हो या ग्रन्थि हो, यह प्रलेप उत्तम लाभकारी है।

(७४) नवीन तथा पुराने कठिन व्रणों पर थूहर के पत्तों को उबाल पीसकर लेप करते रहने से वे ५-६ दिन में नष्ट हो जाते हैं।

(७५) थूहर (तिधारा) की शाखाओं को आग पर भूनकर तथा महीन चूर्ण कर जीर्ण व्रणों पर बुरकने से व्रणों का शीघ्र रोपण होने लगता है। अंगुली या नख में होने वाला व्रण (बिटलो) हो, तो इसकी शाखा को नीम गरम कर पुल्टिस जैसा बांध देने से अंगुली या नाखून का वह भाग मुलायम पड़कर तथा धीरे-धीरे फूटकर अन्दर का दूषित द्रव बहने लग जाता है और व्रण ठीक हो जाता है। इस थूहर में गोंद या राल जैसा जो पदार्थ पाया जाता है, उसे तैल में पकाकर गण्डमाला या अन्य दुष्ट व्रणों पर लगाने से लाभ होता है।

(७६) ग्रन्थि विद्रधि जो न तो पकती हो और न ही फूटती हो, तो नागफनी के पत्तों का गूदा निकाल उसमें हल्दी चूर्ण एवं थोड़ा नमक मिला एकत्र पीसकर मोटा-मोटा लेप चढ़ाकर ऊपर से रेंडी या बड़ के पत्ते रखकर कपड़े से बांध दें तथा ऊपर से सेंक करें। यदि ग्रन्थि नई उठी होगी, तो बैठ जावेगी और पुरानी होगी, तो कुछ दिनों के उपचार से फूटकर बह जावेगी।

(७७) दन्ती के पत्तों पर रेंडी का तैल चुपड़ लें और गरम कर बांधने से व्रण या विद्रधि पककर फूट जाती है।

(७८) यदि किसी भी व्रण, फोड़े या विद्रधि के प्रारम्भिक काल में धतूरे के पत्तों को गरम करके बांधने से वह शीघ्र ही बैठ जाता है। यदि फोड़ा उठ आया हो तो इसी प्रकार पत्तों को बांधने से वह शीघ्र पक कर फूट जाता है।

(७९) धतूरे के ताजे पत्तों को पीसकर लगभग २०० ग्राम कल्क को १ किलो चर्बी में मिलाकर मन्दाग्नि पर गरम करें तथा पतला हो जाने पर छान लें। इस मलहम के लगाने से कारबंकल तथा अन्य व्रणों पर लाभ होता है।

(८०) कांख या बगल में उठने वाली ग्रन्थि पर धतूरे के पत्तों पर तिल तैल चुपड़ लें और गरम करके बांधने से यदि गाठ बैठने लायक होती है तो बैठ जाती है और पकने योग्य हो, तो पककर फूट जाती है।

(८१) व्रण ठीक हो जाने पर जो भद्दे चिह्न हो जाते हैं, उन पर धतूरे के पत्ररस को वैसलीन या किसी उत्तम क्रीम मे मिलाकर चिह्न के स्थान पर मालिश करते रहने से वे कुछ ही दिनों में मिट जाते हैं।

(८२) दूब का स्वरस तथा जल सममाग के साथ घृत चतुर्थांश मिलाकर मन्दाग्नि पर पकावें और घृतमात्र शेष रहने पर छानकर सुरक्षित रखें। इसे लगाने से व्रणों का शीघ्र रोपण होने लगता है।

—वनौषधि विशेषांक भाग ३ से।

(८३) नागदमनी के पत्रों को घृत से चुपड़कर और थोड़ा गरम करके बांधने से नये उठते हुए व्रण बैठने लगते हैं। किन्तु यह उपचार व्रण के प्रारम्भ में ही करने से लाभ होता है, बाद में इसका प्रभाव नही होता। व्रण को पकाने के लिए नागदमनी के पत्र या जड़ को पीसकर उसमें रेहु मिला गरम करके दिन में २-३ बार लेप करने से लाभ होता है।

(८४) नागदमनी के पत्र ५० ग्राम लेकर पीस लें। उसमें ५० ग्राम अलसी का तैल मिलाकर मन्दाग्नि पर पकावें। जब दवा जलकर काली हो जाय, तब उसे नीचे उतार कर घोट लेवें या। मोम ४ ग्राम डालकर मलहम बना लें। व्रणों को इसी के पत्रों के क्वाथ से प्रक्षालन कर उस पर उपरोक्त मलहम लगाने से व्रण भरने लगते हैं।

(८५) निर्गुण्डी की ताजी जड़ तथा ताजे पत्तों को कूटकर निकाला हुआ स्वरस ३ किलो तथा तिल तैल ६०० ग्राम मिलाकर मन्दाग्नि पर पकावें और सिद्ध हो जाने पर उतार कर छान लें। यह तैल सभी प्रकार के व्रणों पर लगाने से विशेष लाभ होता है।

(८६) नीम के पत्र ५० ग्राम, फिटकरी १० ग्राम, जल १ किलो एकत्र कर पकावें। आधा भाग शेष रहने पर बोतल में भर लें। इससे व्रणों का प्रक्षालन करने से वह शीघ्र भरने लगते हैं।

(८७) नीमपत्रों को हल्दी, आमाहल्दी, तिल, सेंधव लवण, मुलहठी व निशोथ के साथ सिल पर पीसकर उसमें घृत मिलाकर लेप करने से व्रणों की शुद्धि एवं रोपण होता है।

(८८) नीमपत्र २० ग्राम, हल्दी १० ग्राम को २० ग्राम घृत में भून लें और जलने से पहले ही उतार कर खरल में पीस उसमें फिटकरी १० ग्राम मिलाकर रखें। इसे लगाने से व्रणों का रोपण होने लगता है।

(८९) नीम के पत्तों को पानी में पीसकर तथा कपड़े पर फैलाकर व्रणों पर बांधने से विशेष लाभ होता है। जिन व्रणों से मवाद अधिक मात्रा में जाता हो, उन पर नीम की छाल की राख बुरकने से विशेष लाभ होता है।

(९०) शरीर के किसी भी भाग में चोट, चाकू, छुरी आदि से होने वाले क्षत, घाव से अत्यन्त रक्तस्राव हो रहा हो, उस पर पर्णबीज के पत्ररस का सिंचन करने से रक्तस्राव तुरन्त बन्द हो जाता है। फिर प्रतिदिन इसके रस में कपास का फाया तर कर लगाते रहने से कुछ दिनों में जख्म भर जाता है। यदि क्षत मे मिट्टी आदि चली गयी हो, तो उसे प्रथम साफ कर लेना चाहिए। कभी एक अंगुली आदि शरीरांग ऐसा कुचल जाता है कि उसे डाक्टर लोग काटकर फैंके बिना दुरुस्त होना कठिन मानते हैं। ऐसे कुचले हुए अङ्गावयव पर इसके पत्तों की लुगदी रखकर कपड़े की पट्टी से ठीक संभाल कर बांध देने से तुरन्त खून बन्द होकर कुचला हुआ भाग सुधरकर पूर्ववत् ठीक हो जाता है। प्रतिदिन इसके पत्र प्राप्त न हो सकें, तो निम्न विधि से इसका तैल बनाकर काम में लेना चाहिए—

इसके पत्ररस १ भाग में चौथाई भाग तिल तैल मिलाकर कलईदार पात्र में मन्दाग्नि पर पकावें। तैल मात्र शेष रहने पर छानकर कांच की बोतल में भरकर रख लें।

प्रथम क्षत या व्रण के रक्तस्राव को इसके पत्ररस का सिंचन कर बन्द कर देवें। फिर इस तैल में साफ रुई का फाया भिगोकर रखें। यदि घाव गहरा हो गया हो, तो स्वच्छ रुई की बत्ती बना उक्त तैल में भिगोकर चांदी की या कांच की सलाई से उक्त तैल में भिगोकर ऐसी रीति

ते डालें, कि जिससे घाव से अधिक रक्तस्राव न होने पावे। पश्चात् उस पर उक्त तैल का एक फाया रख दें। फिर रुई का दूसरा फाया सूखा ही रखकर स्वच्छ श्वेत कपड़े की पट्टी बांध दें। इसी प्रकार रोज करें, जब तक घाव पूर्णतया भरकर सूख न जाय।

ज्यों-ज्यों घाव भरता जावे बत्ती भी वैसी ही कम कर दें, फाया भी छोटा करते जावें। बत्ती या फाये से घाव पूरी तरह भरें, पोला न रखें। यदि घाव में कदाचित पीव (राध) दिखाई दे, तो घाव को गरम जल से या नीम के क्वाथ से या फिटकरी मिले गरम जल से धीरे-धीरे धोकर मुलायम कपड़े से पोंछ साफ कर सुखा लिया जाय।

(९१) रक्त पुनर्नवा की जड़ को बकरी के दूध से धोकर स्वच्छ कर बकरी के दूध से ही पीसें। उसमें ३-४ दाने काली मरिच के भी डाल खूब रगड़कर किंचित गरम करके सुखोष्ण लेप करने से व्रण का अपक्व शोथ १-२ दिन के लेप से अवश्य शान्त हो जाता है। लेप सूख जावे तभी पुनः दूसरा लेप करना चाहिए। इसका बार-बार लेप करने से व्रणों के पूर्वरूप में जो शोथ होता है, उस पर विशेष लाभकारी है।

(९२) श्वेत पुनर्नवा के पत्तों को या पंचांग को अच्छी तरह स्वच्छ कर कूटकर मैथिलेटिड स्प्रिट में डाल दें तथा पात्र का मुख बन्द कर रख देवें। उसमें सड़ान होने पर कपड़े से छानकर छाने हुए पानी को वाष्पयन्त्र द्वारा शोषित कर लें। जो शुष्क चूर्ण रहे, उसे शीशी में भरकर रखें। इसे व्रण या घाव पर छिड़कने से घाव भरने लगते हैं। इसी चूर्ण का १ भाग, ८ भाग मैथिलेटिड स्प्रिट के साथ मिलाकर नासूर, घाव, फोड़ों पर लगाने लायक उत्तम टिंचर तैयार हो जाता है।

(९३) प्रियंगु, धाय के फूल, मुलहठी तथा लाख सम-भाग का महीन चूर्ण बना लें। इसे व्रण या घाव पर बुरकने से वह शीघ्र भर जाते हैं।

(९४) फोगला के ताजे पत्तों को कुचलकर पुल्टिस बना बांधने से व्रण की गन्दगी दूर होकर उसका रोपण होने लगता है। व्रण के कृमि नाशार्थ इसके ताजे पत्तों को हाथों में मसलते हुए उसका रस व्रण पर टपकाने से तथा शेष लुगदी को उस पर रखकर बांधने से शीघ्र ही कृमि नष्ट हो जाते हैं।

(९५) यदि व्रण में कीड़े पड़ गये हों, तो देवदाली के स्वरस में रुई का फाया भिगोकर रखने से उसके कृमि नष्ट हो जाते हैं। व्रणों पर देवदाली के फलों को पीसकर बांधने से वह फूट जाते हैं।

(९६) वच में बड़े से बड़े व्रणों को भरने की शक्ति है। यदि व्रण या जख्म कई दिनों का हो गया हो, कीड़े पड़ गये हों, दुर्गन्ध आती हो, तो वच का महीन चूर्ण तथा कपूर समभाग एकत्र कर उसमें भर दें, तो सब कृमि नष्ट होकर व्रण शीघ्र भरने लगता है।

(९७) वनगोभी की ५० ग्राम पत्तियों को पीसकर टिकिया बना १०० ग्राम अलसी के तैल या नीम के तैल में पकाकर जला देवें। फिर उसमें १० ग्राम कपूर मिला घोटकर रख लेवें। इसमें रुई तर करके व्रण या घाव पर रखने से वह शीघ्र भर जाता है।

(९८) बरगद की कोंपलों तथा कोमल पत्तों को पीस-कर जल में छान लें। इस जल में समभाग तिल तैल मिलाकर पकावें। तैल मात्र शेष रहने पर छानकर रख लें। दिन में २-३ बार इस तैल को लगाते रहने से विभिन्न प्रकार के व्रण, नाड़ीव्रण में लाभ होता है।

(९९) बरगद की नवीन कोमल जटा के साथ या जड़ की छाल के साथ केले वृक्ष के स्तम्भ का मध्य भाग तथा कमलकन्द को एकत्र पीसकर शतधौत घृत को मिला विसर्पजन्य व्रण पर लेप करने से तुरन्त लाभ हो जाता है। इस लेप से शोथयुक्त ग्रन्थि भी बैठ जाती है।

(१००) यदि व्रण में कृमि हो गये हों, दुर्गन्ध आती हो तो बरगद की छाल के क्वाथ से नित्य प्रक्षालन करने से और उसके दूध की कुछ बूंदें दिन में २-३ बार डालने से कृमि नष्ट होकर उसका तुरन्त रोपण होने लगता है।

(१०१) बरगद की छाल के साथ गूलर, पीपल, पाकर तथा बेन की छाल का मिश्रित महीन चूर्ण घृत में मिलाकर लेप करने से व्रण की सूजन दूर होती है।

(१०२) बबूल पत्र २०० ग्राम तथा हल्दी ५० ग्राम दोनों का महीन चूर्ण बना लें। इस चूर्ण को करंज के तैल में मिलाकर लगाने से दुष्ट व्रण भी नष्ट हो जाते हैं। किसी भी वस्तु से कट जाने पर जख्म हो जाय तो इसके छायाशुष्क पत्रों का चूर्ण तथा कौड़िया लोबान समभाग दोनों का महीन चूर्ण बना लें। व्रण पर थोड़ा नारियल या तिल तैल लगाकर ऊपर से इस चूर्ण को बुरकते रहने से जल्दी लाभ होता है। जख्म में पीब या राध नहीं होने पाती।

(१०३) बरगद की कोंपलों को दही में भिगोकर मिट्टी के कूंजे में भर कपड़मिट्टी करके गजपुट में फूंककर भस्म को घावों में भर देने से अथवा इसके पके हुए पत्तों को जलाकर उसकी भस्म में मोम तथा घृत मिला मलहम जैसा बनाकर घावों में लगाने से शीघ्र लाभ होता है।

यदि कोई घाव ऐसा हो कि जिसमें टांके लगाने की आवश्यकता हो, तो उस घाव का मुख मिलाकर जिससे कि खाल के दोनों सिरे निकट आ जावें, इसके पत्ते गरम करके उसके ऊपर रख वस्त्र की पट्टी को इस प्रकार बांध देवें कि पट्टी खिसके नहीं। ३ दिन के बाद पट्टी खोलकर देखने पर घाव बिना टांके लगाये ही भरा हुआ मिलेगा।

(१०४) बरगद के पत्तों को गरम कर बांधने से अध पके व्रण जल्दी पक कर फूट जाते है। पीवदार फोड़ों पर पत्तों की पुल्टिस बनाकर बांधने से जब वे पककर पीले पड़ जावें, तब इसके पत्तों को चावलों के साथ औटाकर बाध देने से वे फूटकर जल्दी अच्छे हो जाते हैं। अथवा उक्त प्रकार से गजपुट में की हुयी भस्म को घृत में मिलाकर लगाने से फोड़े-फुंसियों का शमन हो जाता है।

—वनौषधि विशेषांक भाग ४ से।

(१०५) ग्रन्थि विसर्प जिसमें शरीर पर छोटी मोटी अनेक ग्रन्थियां (गांठें) निकल आती हैं और इनमें भयंकर वेदना का अनुभव होता है। इन ग्रन्थियों पर बहेड़े के चूर्ण का मोटा लेप कर या उसकी पुल्टिस बांधने से विशेष लाभ होता है। साथ में उदर सेवनार्थ हरड़ या चिरायते का क्वाथ या अन्य औषधि देने से भी लाभ होता है।

(१०६) बहेड़े की गिरी को थोड़े जल के साथ घिसकर ग्रन्थि पर लेप करने से उनका शोथ, पीड़ा दाह आदि शान्त होते हैं।

(१०७) बेल के पत्तों को बिना जल के पीसकर टिकिया बनाकर व्रणों पर बांधने में विशेष लाभ होता है। गहरे से गहरा घाव भी बिना पके ठीक हो जाता है अथवा बेल के पत्तों को पीस गरम कर पुल्टिस जैसा बना व्रण या फोड़ों पर बांधने से वे शीघ्र ठीक हो जाते हैं अथवा पत्तों को पानी में पकाकर उस पानी से व्रणों का प्रक्षालन करने से वे शीघ्र शुद्ध होकर भर जाते हैं। कार्बकल जैसे भयंकर जहरीले व्रणों के सुधार के लिये भी उक्त पुल्टिस विशेष उपयोगी पायी गयी है। साथ में इसका पत्र रस २०-२५ ग्राम नित्य पिलाने से भी लाभ होता है।

(१०८) शरीर के किसी स्थान पर सुई, कीलादि घुस गयी हो और बाहर न निकलती हो तो बेल के डण्ठल रहित पत्तों को पीसकर पुल्टिस बनाकर कुछ दिन बांधते रहने से वह शल्य भीतर ही गल जाता है इसे नित्य २-३ बार बांधना चाहिये। एक बार बांधने के बाद लगभग २ घण्टे तक बंधी रहनी चाहिये फिर उसे हटाकर २ घण्टे बाद पुनः बांधनी चाहिये।

(१०९) ब्राह्मीपत्र स्वरस की ६० बूंदें शतधौत घृत में खूब फेंटकर मलहम सा बना लें इस मलहम को व्रणों, फोड़े-फुंसियों पर लगाने से विशेष लाभ होता है साथ में इसके पत्तों का यथोचित मात्रा में आभ्यन्तरिक प्रयोग भी कराना चाहिये। इसके पत्र चूर्ण की पुल्टिस व्रणों पर बांधने से भी लाभ होता है।

(११०) सद्योव्रण में भांग का चूर्ण भर देने से धनुस्तम्भ का भय नहीं रहता शोथ नहीं होता तथा वेदना बन्द होकर व्रण शीघ्र भरने लगता है।

(१११) दूषित या दुष्ट व्रणों पर भांगरा स्वरस का व्रणपट्ट (बैण्डेज) बांधने से उनका उत्तम शोधन व रोपण होकर वे शीघ्र सुधर जाते हैं व्रण का रोपण हो जाने पर इसी के रस का लेप करते रहने से उसका दूषित दाग नहीं रहने पाता।

(११२) हाथ, अंगूठे या उंगली में जो व्रण होता है जिसे देहात में बलाय या घिनरी कहते हैं उस पर भागरे को पीसकर मोटा लेप करने से दाह, पीड़ा आदि दूर होती है तथा वह फूटकर गाठ निकलकर भरने लगती है।

(११३) ५ भाग भिलावा कूटकर १२५ ग्राम कडुवे तैल में मिलाकर जला दें जब बिलकुल जल जावें तब उसमें ३ ग्राम मोंम, ६ ग्राम संगजराहत मिलाकर खूब महीन पीसकर रख छोड़े। आवश्यकता के अनुसार व्रणों पर लगाने से विशेष लाभ होता है। होने वाले रक्तस्राव को तुरन्त बन्द कर देता है।

(११४) महुआ को पीसकर आटा बना लें इसमें नमक, घी तथा शहद डालकर सान लें इसको फोड़े के ऊपर बांधने से वह शीघ्र पककर फूट जाता है।

(११५) शस्त्रजनित घाव होने पर माजूफल, अनार की छाल तथा कर्पूर का चूर्ण लगाने से छोटी-छोटी रक्तवाहिनियों के मुख बन्द होकर रक्तस्राव बन्द हो जाता है। —वनौ० वि० भाग ५ से।

(११६) व्रण में यदि कीड़े पड़ गये हों तो सब कीड़ों को निकालकर उसे शुद्ध करने के लिये राई के चूर्ण को घी शहद में मिलाकर लेप कर देने से कृमि मर जाते हैं और रोपण होने लगता है।

(११७) राल ४ भाग, मोंम ४ भाग, तिल का तैल ४ भाग तथा घी ३ भाग इन सब चीजों को मिलाकर गरम करके घोटने से राल का मलहम तैयार हो जाता है यह मलहम उत्तम व्रणशोधक तथा व्रणरोपक होता है।

(११८) राल, सफेद कत्था तथा तिलों का तैल ५०-५० ग्राम, फिटकरी का फूला १२ ग्राम, नीलाथोथा १२ ग्राम, तथा पानी ५० ग्राम ले। प्रथम सब सूखी औषधियों को बारीक पीस लें और तैल पानी दोनों को अगुली से मिलाकर छाछ जैसा बना लें फिर चूर्ण मिलाकर २-३ मिनट अग्नि पर रखकर हिलाकर मलहम तैयार कर लेवें। व्रण के शोधन तथा रोपण दोनों कार्यों के लिये यह उपयोगी मलहम है। यदि व्रण फूट गया हो तो एक कपड़े का फाहा या पट्टी बनाकर बीच में छेदकर उस पर मलहम लगाकर घाव पर लगा दें यदि फोड़ा नहीं फूटा हो तो कपड़े के फाहे में छेद नहीं करना चाहिए इस प्रकार उपयोग करने से सब प्रकार के नये पुराने व्रण ठीक हो जाते हैं।

(११९) राल १०० ग्राम, सफेद कत्था ४० ग्राम, मुर्दासंग २० ग्राम लेकर सबको अलग-अलग पीस लें फिर २५ ग्राम सरसों का तैल और राल मिलाकर सिल पर रगड़ें। लेप छोड़ दे तब पानी मिलाकर धोवें मक्खन जैसा हो जाय तब शेष औषधियों को मिलाकर खूब रगड़ें एक जीव होने पर चीनी के बर्तन में भर ले। यह मलहम फुंसी, फोड़ा व्रण आदि के लिये बहुत उत्तम है।

(१२०) राल ५० ग्राम, तिल का तैल १०० ग्राम, मोंम ३० ग्राम तथा भिलावा २०० ग्राम ले पहले भिलावे को तैल में भूनकर तैल को छान लें फिर तैल कड़ाही में डालकर मन्दाग्नि पर रखें तैल गरम होने पर मोंम डालें। मोंम पिघल जाने पर राल का चूर्ण डालकर हिलाने से मलहम बन जाता है यह मलहम सब प्रकार के व्रणों के रोपण के लिये सर्वोत्तम है।

(१२१) लहसुन को चटनी की तरह पीसकर व्रण पर लगा देने से थोड़े ही समय में उसके कृमि मरकर निकल जाते हैं और घाव शुद्ध हो जाता है। शुद्ध घाव में जब पाक होने का भय हो तब लहसुन लगा देने से पाक नहीं होता है और घाव मिट जाता है।

(१२२) शतावरी के पत्तों का कल्क कर दूने घृत में तलें फिर अच्छी तरह पीसकर उसकी पट्टी लगाते रहने से जीर्णव्रण भी भर जाता है।

(१२३) आघात होने से बाहरी व्रण होकर रक्त का प्रवाह हो जाता है तो तत्काल [illegible] का चूर्ण ४-५ ग्राम ले ले और उसमें स्फटिका चूर्ण १-२ ग्राम मिलावें और रुई को पानी में भिगोकर ऊपर पट्टी बांध दें तुरन्त ही रक्तस्राव बन्द हो जायेगा और व्रण [illegible] पाक नहीं होगा।

(१२४) मधु के साथ [illegible] का [illegible] लेप करने से और साथ ही शहद के साथ सेवन कराने से दुष्ट व्रणों का रोपण होने लगता है। [illegible] को [illegible] में बारीक पीसकर मधु मिलाकर [illegible] से व्रण का नाश हो जाता है।

(१२५) सत्यानाशी का रस या तैल व्रण, विविध क्षतों, सड़े-गले घावों आदि के रोपण के लिये बहुत लाभकर है। फूटे हुये व्रणों पर सत्यानाशी का दूध लगाने से व्रण जल्दी भर जाते हैं और उनका विषैला प्रभाव दूर हो जाता है।

(१२६) हरड़ का चूर्ण व्रण में डालते रहने से अथवा गोमूत्र में घिसकर दिन में ४-६ बार लेप करते रहने से पूयोत्पत्ति कम हो जाती है फिर व्रण शुद्ध होकर जल्दी भर जाता है। बाह्य उपचार के साथ हरड़, वायविडङ्ग, सोंठ, निशोथ तथा सेंन्धव का चूर्ण गोमूत्र के साथ रोज सेवन कराते रहने से रक्तप्रसादन तथा उदरशुद्धि होकर व्रण में पूय की उत्पत्ति रुक जाती है।

(१२७) हल्दी तथा कत्थे को पीसकर फूटे हुये व्रणों पर बुरकते रहने से उनका रोपण शीघ्र होने लगता है।

—व्रणो० वि० भाग ६ से।

(१२८) फूटे हुये व्रणों को अर्जुन के क्वाथ से धोते रहने पर कीटाणु नष्ट हो जाते हैं जिससे सामान्य व्रणनाशक मलहम भी जल्दी लाभ पहुँचा सकता है।

(१२९) जिस व्रण या फोड़े में से पूय निकलता रहता हो भीतर का मांस सड़ जाने से दुर्गन्ध आती रहती हो उसको शुद्ध बनाने के लिये आक के मूल का अन्तरछाल का चूर्ण डालते रहने से २-४ दिन में सड़ा हुआ मांस निकलकर व्रण.स्थान लाल शुद्ध बन जाता है फिर कर्पूर, राल, सिन्दूर या अन्य औषधि का मलहम लगाते रहने से घाव जल्दी भर जाता है।

(१३०) सफेद कत्था तथा उशारेरेवन्द को समभाग लेकर आक के दूध में घिसकर लेप करने से कच्ची गांठ बैठने लगती है यह लेप दिन में ३-४ बार करना चाहिये यह प्रयोग गांठ की प्रथमावस्था में किया जाता है।

(१३१) विद्रधि में दाह कम करने के लिये कांटेदार चौलाई के पत्तों को पीसकर पुल्टिस बांधने से विशेष लाभ होता है। बद और विद्रधि को पकाने के लिये इसके मूल की पुल्टिस बांधने से लाभ होता है।

(१३२) शोथ पर कालीमरिच को जल में घिसकर निवाया कर लेप करने से व्रण शोथ और छोटे जन्तु के काटने से आया हुआ शोथ दूर हो जाता है।

(१३३) फूटे हुये व्रण तथा फिरङ्ग के घाव पर कुचला के घन को गरम दूध के साथ मिलाकर लगाने से विशेष लाभ होता है पशुओं के घाव लगकर कीड़े पड़ जाने पर इसके ताजे पत्तों की पुल्टिस बांधने से कीड़े मर जाते हैं एवं मनुष्यों अथवा पशुओं के व्रणों में कीड़े पड़ने पर कीडामार के पत्तों का स्वरस घाव में निचोड़ने पर कीड़े मर जाते हैं।

(१३४) कोई व्रण जल्दी न पकता हो कष्ट होता हो तो उस पर कुचिला तथा समुद्रफल को घिसकर लेप करते रहने से वह बहुत शीघ्र पक जाता है और जल्दी ठीक हो जाता है।

(१३५) फोड़े के भीतर मांस सड़ने पर घाव जल्दी नहीं भरने पाता ऐसी अवस्था में उस पर कपास की रुई को जरा काली राख बनाकर बार-बार डालते रहने से घाव का शोधन तथा रोपण सरलता से हो जाता है।

(१३६) चोट लगना, गांठ तथा अन्य प्रकार के व्रणों पर पर्णबीज के पत्तों को गरम कर बांधने से शोथ लालिमा तथा वेदना कम हो जाती है और व्रण का रोपण जल्द हो जाता है। नवीन व्रण के लिये इसके समान उपयोगी अन्य कोई औषधि नहीं है इससे घाव का रोपण जल्दी होता है एवं उसका चिह्न भी सहसा दृष्टिगोचर नहीं होता यदि घाव गहरा हो गया हो तो पहले पर्णबीज का स्वरस लगाकर रक्तस्राव बन्द करना चाहिये फिर ऊपर से पर्णबीज के तैल का फोहा रखकर पट्टी बांध देवें दूसरे दिन खोलकर पहले वाले फाहे को निकालकर नया फाहा रखकर पट्टी बांध देवें इस तरह करने से २-४ दिन में घाव भर जाता है।

(१३७) अपामार्ग की श्वेत राख को शहद या घी में मिलाकर लेप करने से दुर्गन्धयुक्त व्रण भरने लगते हैं।[१]

—गांवों में औषधिरत्न प्रथम भाग से।

१—अपामार्ग पृथ्वी पर अमृत के समान गुणकारी औषधि है। हमने इसके अनेक अद्भुत गुणों का अनुभव विभिन्न रोगों में किया है। व्रणरोपण के कार्य में भी अपामार्ग का अपना विशिष्ट स्थान है। जो प्रयोग "गांवों में औषधिरत्न" के प्रथम भाग में दिया गया है, उसी के अनुरूप हम अपामार्ग के पंचाग की राख करके और

(१३८) अंजीर को चटनी की तरह पीस गरम कर पुल्टिस बना २-२ घण्टे पर बदलकर बांधते रहने से अपक्व व्रण की वेदना दूर होती है तथा पकने वाला व्रण पक जाता है और बैठने वाला व्रण बैठ जाता है।

(१३९) असगन्ध की ताजी जड़ को गोमूत्र या जल में पीस गरम कर लेप करने से सूजन दूर हो जाती है और गांठ बिखर जाती है। जिस फोड़े का पाक हो रहा हो, वह पककर सरलता से फूट जाता है। प्लेग की गांठ पर इसका उपयोग बहुत उपयोगी पाया गया है। प्लेग की गांठ पर जितने भाग में सूजन या लालिमा हो उतने भाग पर असगन्ध का लेप करें। लेप सूखने पर गांठ ऊपर को उठ जाती है, वहां खिंचाव होता है, जिससे रक्त बीच में आ जाता है और रोगी की पीड़ा कम हो जाती है। अन्त में गांठ पककर सरलता से फूट जाती है। पश्चात् गांठ के चारों ओर इसका लेप करते रहने और गांठ के फूटे हुए मुंह पर गेहूं के आटे की पुल्टिस बांधते रहने से सब पूय बाहर निकल जाता है और व्रण शुद्ध हो जाता है।[२]

(१४०) कठगूलर के फलों को जल के साथ पीसकर एक भगौना में भरें और ऊपर ढक्कन ढकें। फिर उसे दूसरे बड़े भगौने में ३ ईंट के टुकड़ों पर रख चारों ओर पानी भरकर ऊपर से ढक्कन ढकें और उसे चूल्हे पर रखकर गरम करें। १५-२० मिनट में गरम हो जाने पर उसमें से फल के कल्क को निकाल पुल्टिस सदृश्य बनाकर कपड़े पर रख गुनगुना ही बद या गांठ (अपक्व) व्रण पर बांधें। बांधने के पहले बद पर घी का हाथ लगा लेना चाहिए। इस तरह २-२ घण्टे पर पुल्टिस बांधते रहने से वेदना शमन होकर बद बैठ जाती है या जल्दी पक जाती है। यह पुल्टिस बद के समान अपक्व और पच्यमान विद्रधि शोथ पर भी बांधी जाती है।

(१४१) कपूर कचरी को जलाकर कोयला कर तैल में मिला लगाते रहने से सिर के फोड़े ठीक हो जाते हैं, कण्डू दूर होती है, कृमि नष्ट होते हैं और घाव भर जाता है।

(१४२) कच्चे फोड़े, गांठ, बद में जब तक शूल की तरह वेदना न होती हो और पाक न होने लगा हो, तब तक पूतिकरंज या बिनबिल के पत्तों को घी लगाकर गुनगुना ही बांधने से उस स्थान से रक्त बिखर जाता है और छोटी-छोटी फुंसियां हो जाती हैं, जो सरलता से दूर हो जाती हैं। यदि भीतर पाक होना प्रारम्भ हो गया हो तो इसके पत्र या छाल बांधने से सरलता से पाक होकर व्रण फूट जाता है।

(१४३) तलवार, छुरी आदि से घाव हो जाने पर नागबला के मूल का स्वरस घाव में भर देने से रक्तस्राव तुरन्त बन्द हो जाता है। आवश्यकता के समय नागबला के पत्रों को पीस पुल्टिस बनाकर बांधने से घाव बिल्कुल जुड़ जाता है।

(१४४) शस्त्र लगकर होने वाले रक्तस्राव में सूखे गुलाब के फूलों को पीसकर चूर्ण रूप में बुरकने से रक्तस्राव बन्द हो जाता है और व्रण जल्दी भर जाता है।

(१४५) अंगुली पाक (विटनो) की अवस्था में जब अंगुली में कील की तरह वेदना तथा सूजन हो तो नागदमनी के पत्तों को पीसकर एरण्ड तैल में मिला गुनगुना बांध देने से वेदना दूर होती है और पककर सरलता से कील निकल जाती है।

(१४६) गांठ या फोड़ा कच्चा हो और उसमें पाक हो रहा हो तो उसे जल्दी पकाने के लिए नीम के पत्रों को उबाल गुड़ मिला पीसकर लेप करना चाहिए और

बारीक छानकर रख लेते हैं। इसमें थोड़ा-सा गाय का घी मिलाकर मलहम-सा बना लेते हैं। इस मलहम को कैसे भी सड़े-गले दूषित घावों पर लगाने से उनका रोपण होने लगता है। हमारे एक परिचित दिल्ली में अपामार्ग का तैल बनाकर मनों की तादाद में मुफ्त बांट देते हैं। उनके अनुसार विभिन्न प्रकार के कटे-जले घावों के लिए इससे अच्छी कोई औषधि नहीं है। —गोपालशरण गर्ग "सम्पादक"।

२—असगन्ध के पत्ते भी अपक्व व्रण को पकाने के लिए गरम कर बांधने से लाभ होता है। —सम्पादक।

यदि पाक हो गया हो तो नीम के पत्तों को बिना गुड़ मिलाये पुल्टिस करके बांधनी चाहिए।

(१४७) चोट लगने से या जन्तु के काटने से यदि शोथ हो गया हो, तो पीपल की छाल का चूर्ण घी में मिलाकर लेप करने में लाभ होता है।

(१४८) बेर के पत्तों को पीसकर गरम करें और पुल्टिस बनाकर बांधने से पकने वाला फोड़ा जल्दी पक कर फूट जाता है।

(१४९) भिलावा, लहसुन, प्याज तथा अजवायन इन सबको ५०-५० ग्राम लेकर ४०० ग्राम तिल के तैल में भून लें। फिर कड़ाही को नीचे उतार कर दूसरे वर्तन में तैल निकाल लें। यह तैल छुरी आदि से होने वाले आगन्तुक जख्म में से होने वाले रक्तस्राव को तुरन्त बन्द कर देता है। साधारण घाव पर इसका फाया बांधने से लाभ होता है तथा घाव पकता नहीं है और २-३ दिन में व्रण भर जाता है।

(१५०) शरीर के किसी भाग में लसिका ग्रन्थि बढ़ने पर गांठ हो जाती है। फिर वह शनैः-शनैः नीबू तथा कभी आम के आकार की बड़ी हो जाती है। जब यह अधिक न बढ़ पायी हो, उस अवस्था में गांठ के बीच में भिलावे के तैल का चिह्न "=" आकार का बना दें। कभी-कभी २-२ दिन छोड़कर उस चिह्न के पास नया चिह्न करना चाहिए। जब भिलावे की विषक्रिया होकर जलस्राव होने लगे, तब तैल लगाना बन्द कर दें, अन्यथा बाजू में दूसरी नई गांठ होने की सम्भावना रहती है। यह स्राव कुछ दिनों तक चालू रहता है तथा गांठ कम हो जाती है। जब किंचित् गीलापन होने लगे तब उस पर शहद दिन में ३-४ बार लगाते रहने से वह स्थान बिल्कुल स्वस्थ हो जाता है।

(१५१) कांख या बगल में जो गांठ (खगारी) हो जाती है, वह न तो जल्दी बैठती है और न जल्दी पकती है। कई दिनों तक कष्ट देती रहती है। उसे बिखेरने या पच्यमान अवस्था में सत्वर पकाने के लिए गुड़, गूगल तथा राई को मिलाकर कपड़े की पट्टी पर लगा निवाया करके चिपकाना चाहिए। यदि वह पक गयी हो तो फोड़ने के लिए राई तथा लहसुन को पीस पुल्टिस बनावें, फिर खगारी पर एरण्ड तैल या घी का हाथ लगाकर पुल्टिस बांध देने से जल्दी फूट जाती है।

(१५२) किसी भी स्थान की गांठ बढ़ रही हो, तो उस पर राई तथा काली मरिच के चूर्ण को घी में मिलाकर लेप करने से वृद्धि रुक जाती है। ग्रन्थियों और अर्बुदों की वृद्धि रोकने में भी राई का अच्छा उपयोग है।

(१५३) त्वचा के अन्दर कांटा, कांच या धातुकण घुस गये हों और सरलता से न निकलते हों, तो उस पर राई को घी, शहद में मिला लेप कर देने से विजातीय द्रव्य ऊपर आ जाते है तथा स्पष्ट दृष्टिगोचर हो जाते हैं।

(१५४) फोड़ा या विद्रधि को पकाने के लिए विधारा के रुयेंदार पत्ते पर एरण्ड तैल या घी चुपड़ कर बांधने से वह पककर फूट जाता है तथा २-३ दिन में सब पूय निकलकर शुद्ध हो जाता है। फिर पान का चिकना सीधा पृष्ठ बांधते रहने से व्रण भर जाता है।

(१५५) घाव में कृमि पड़ गये हों, अति दुर्गन्ध उत्पन्न हो गयी हो, उसे शुद्ध कर नीम के ताजे पत्र २० ग्राम तथा १ ग्राम हींग मिला घी के साथ पीसकर पुल्टिस बनावें। इसे बांधने से सब कीड़े मर जाते हैं तथा दुष्ट सड़ा हुआ मांस दूर हो जाता है, फिर घाव शुद्ध हो जाता है। कभी-कभी यह पुल्टिस ४-६ बार बांधनी पड़ती है।

—गांवों में औषधिरत्न तृतीय भाग से।

(१५६) कछुये के सर की भस्म १० ग्राम, आदमी की हड्डी की भस्म १० ग्राम, सफेदा काशगिरी २० ग्राम, कपूर देशी ५० ग्राम, मोम २० ग्राम, गाय का घृत ५० ग्राम लें। कपूर रहित सभी वस्तुओं का बारीक कपड़छन चूर्ण करें। घी को कटोरी में गर्म कर उसमें मोम डाल पिघला लें। मोम तथा घी के मिल जाने पर शेष तीनों चीजों के चूर्ण को डाल दें तथा बाद में कपूर भी बारीक करके डाल दें। कुछ देर गर्म कर मलहम को आग से नीचे उतार ठण्डा कर शीशी में रख लें। इस मलहम को फाहे पर लगाकर व्रण पर लगाने से विशेष लाभ होता है।

(१५७) कुचला बीज बिना शुद्ध किये, अहिफेन, बनजीरा, मदनफल, साबर शृङ्ग, मरोड़फली सब चीजें समान मात्रा में लें, अफीम चौथाई भाग ले। सब औष-

धियों को सेंहुण्ड के पत्तों के रस में बारीक घोट कुछ गर्म कर लेप करने से व्रण की लालिमा, पीड़ा, शोथ आदि गर्मी विकार शान्त हो जाते है। यदि फोड़ा पक गया हो, तो इस लेप को लगाने से फूटकर बह जाता है।

(१५८) गूगल, अतीस, गौ के दन्त का चूर्ण, सत्यानाशी के बीज, कबूतर की बीट समभाग लेकर लेप करने से कठोर व्रण भी जल्दी पककर फूट जाते हैं।

(१५९) असली गूगल, सेंहुण्ड का दूध, मुर्गे की बीट, पलाश क्षार, सत्यानाशी, दन्ती इन सब औषधियों का पक्व शोथ पर लेप करने से नाक हो जाता है।

(१६०) व्रणशोथ में कपोत विष्ठा, साबुन, सुहागा एवं हरिद्रा को समभाग एकत्र मिला प्रलेप करने से व्रण शोथ एवं विस्फोट का परिपाक होकर पूय बहिर्गत हो जाता है।

(१६१) भैंस का ताजा गोबर गरम करके २-२½ अंगुल मोटा लेप चोट के स्थान पर चढ़ाकर बांध देने से चोटजन्य पीड़ा तुरन्त घटने लगती है और भीतरी चोट जिसमें घाव न हो और हड्डियां टूटी हों, तो यह ३-४ दिन में पीड़ा दूर करके आराम कर देता है। यदि नसें हट गयीं हों, तो उनको यथास्थान करके लेप को लगाने से अच्छा लाभ होता है।

(१६२) काले सर्प की कैंचुली १० ग्राम को बारीक कैंची से काटकर महीन चूर्ण बना लें। पश्चात् १० ग्राम वंशलोचन, १० ग्राम गन्धक मिलाकर नीम के पत्तों के रस में ३ दिन तक खरल करें। एकजीव हो जाने पर २-२ रत्ती की गोलियां बनाकर रख लें। १-२ गोली दिन में २-३ बार पानी के साथ निगलवा दें। यह गोलियां व्रण, विद्रधि, अन्त:विद्रधि, कर्णपाक, कर्ण से पूय आना आदि विकारों में बहुत लाभदायक हैं। जिन रोगों में पैन्सिलीन की आवश्यकता होती है, वहां पर इसका प्रयोग प्रशस्त है।

(१६३) रेण्डी के बीज २०० ग्राम लेकर उन्हें अग्नि में जलावें। जब वह जल जावें तब खरल में डालकर पीस लें और अच्छी तरह पिसकर बारीक हो जाने पर उसमें एक चने बराबर तुत्थ, दांतजीरा बारीक पिसा हुआ १० ग्राम, मोम २० ग्राम मिलाकर घोटें। अच्छी प्रकार से एकदिल हो जाने पर शीशी में भर लें। इस मलहम को कपड़े की पट्टी पर लगाकर फोड़े पर चिपका दें। यह हर प्रकार के व्रणों को तत्काल अच्छा करता है।

—राधाकृष्ण शर्मा द्वारा धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(१६४) श्वेत राल, चौकिया सुहागा, गन्धक तीनों १०-१० ग्राम, कबीला ४० ग्राम। उक्त औषधियों को जल, भांगरे के रस में घोटकर गोलियां तैयार कर लें। आवश्यकतानुसार १-२ गोली पानी में घोलकर जहां-जहां व्रण हों, वहां पर लगाने से व्रण तथा घावों में लाभ होता है। —वैद्य रामचन्द्र प्रफुल्ल द्वारा धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(१६५) चूना बुझा तथा सज्जीखार समभाग लेकर पीसें। जो व्रण पक गया हो और कड़ा होने के कारण फूटता न हो, तो उस अवस्था में उपरोक्त औषधि पानी में घोलकर १ या २ चावल भर व्रण के उतने ही स्थान पर लगावें, जितना कि फोड़े का मुंह करना उचित होवे। आधे घण्टे में ही फोड़ा स्वयं रिसने लगेगा। जब तक फोड़ा फूटे नहीं, तब तक ऊपर लगी हुयी दवाई को पानी से गीला रखना चाहिए। —सन्तबसन्त सिंह द्वारा धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(१६६) जस्ता का फूला २० ग्राम, कर्पूर १० ग्राम, धुला हुआ घी या मक्खन ३० ग्राम लें। पहले जस्ता का फूला मक्खन में मिलाकर कर्पूर पीसकर मिला दें। बच्चों के फोड़ा, फुंसी आदि पर विशेष लाभकर है।

—वैद्य रामकृष्ण द्वारा धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(१६७) ऊंट की मेंगनी को रगड़कर गुड़ के साथ मिलाकर जिस फोड़े को फोड़ना हो उस पर ३-४ बार बांधने से वह फूटकर बहने लगता है।

—पं० चन्द्रशेखर जैन द्वारा धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(१६८) अदरक तथा श्वेत कनेर की जड़ का छिलका २० ग्राम लेकर सिल पर पीसकर गरम कर दिन में ३-४ बार लेप करने से अंगुलि के नखों के भीतर व आस-पास होने वाला अत्यन्त दुखदाई व्रण ठीक हो जाता है। —वैद्य महावीरप्रसाद जी मालवीय द्वारा धन्वन्तरि जून १९३३ से।

(१६९) आधी कच्ची अलसी तथा आधी पक्की अलसी लेकर जल में खूब बारीक पीस लें फिर आग पर रांधकर गुनगुना फोड़े पर बांध दें। १२ घण्टे के अन्दर कैसा ही कच्चा फोड़ा हो पककर फूट जाता है।

—पं० नर्मदाप्रसाद गौतम द्वारा
धन्वन्तरि दिसम्बर ३३ से।

(१७०) मसूर की दाल के कोयले कर लें उन्हें अत्यन्त महीन पीसकर कड़वे तैल में घोटकर मलहम बनाकर लगाने से व्रण ठीक हो जाते हैं।

—भागीरथ शास्त्री द्वारा
धन्वन्तरि सिद्ध प्रयोगांक से।

(१७१) गन्धा बैरोजा २॥ किलो लेकर एक हांडी में गरम करें बाद में उसमें तूतिया तथा जगालका ५०-५० ग्राम तथा ६ हरी चूड़ियों का चूर्ण और १५ ग्राम घी भी उसमें मिला दें। मलहम तैयार है घाव के बराबर कपड़ा कतर कर उसके बीच में छोटा सा छिद्र कर लें। छेद से पीप निकलता रहेगा नित्य मलहम बदलें २-३ बार में ही पूर्णलाभ हो जाता है।

—देवकरण वाजपेयी द्वारा
धन्वन्तरि सिद्ध प्रयोगांक से।

(१७२) ज्योतिष्मती के गीले या सूखे पत्ते तथा कालीमरिच ३ नग बारीक पीसकर फोड़े पर लगाने से अनेक प्रकार के घाव भरने लगते हैं।

—हरदयाल वैद्य वाचस्पति द्वारा
धन्वन्तरि अनुभूत प्रयोगांक से।

(१७३) लाल फिटकरी की भस्म तथा कुचले की भस्म समभाग लेकर कड़वा तैल ६० ग्राम में डालकर चूल्हे पर चढ़ाकर उनके खूब जल जाने पर लोहे के मूसले से खूब रगड़कर तैल को किसी चौड़े मुंह की शीशी में भर-कर रख लेना चाहिये। घाव को नीम के पानी से धोकर इस तैल में रुई की बत्ती भिगोकर घाव के भीतर लगा दें और ऊपर से थोड़ी सी रुई की गद्दी रखकर पट्टी बांधनी चाहिये इस तैल के व्यवहार से भयंकर गम्भीर व्रण नाड़ी व्रण आदि ठीक हो जाते हैं।

—पं० सत्येश्वरानन्द शर्मा द्वारा
धन्वन्तरि अनुभूत प्रयोगांक से।

(१७४) गूलर वृक्ष के कच्चे फलों या छाल के स्वरस को मन्दाग्नि पर पकाकर गाढ़ा कर लें यह घनसत्व उदुम्बरसार कहलाता है। सड़े से सड़े गले घाव पर उदुम्बरसार जल में घोलकर कपड़ा भिगोकर पट्टी की तरह रखने से न सूखने वाले घाव भी सूखने लगते हैं।

—गंगाधर राव वैद्य शास्त्री द्वारा
धन्वन्तरि अनुभूत प्रयोगांक से।

(१७५) तिल तैल ५० ग्राम, नीम की कोंपल १० ग्राम, कत्था १० ग्राम अग्नि पर पकाकर तैल छानकर रख लें उसमें देशी मोंम १० ग्राम मिलाकर पुनः पिघला लें और किसी पात्र में जल रखकर उसमें इन सबको छोड़ दें मलहम तैयार है। इस मलहम के प्रयोग से व्रणों में विशेष लाभ होता है।

—श्री रोशनलाल जैन द्वारा
धन्वन्तरि अनुभूत प्रयोगांक से।

(१७६) रसांजन, हरिद्रा १०-१० ग्राम, अर्क गुलाब ५० ग्राम लें। रसांजन एवं हल्दी को बारीक पीसकर अर्क गुलाब में डाल दें और ७ दिन पर्यन्त रखा रहने दें। बीच-बीच में हिला दें। फिर उस पानी को उबाल-छानकर व्रण को साफ कर दें और उपर्युक्त औषधि का फोहा व्रण पर रखकर पट्टी बांध दें तत्काल लाभ हो जाता है।

—देवेन्द्रदत्त कौशिक द्वारा
धन्वन्तरि गुप्तसिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(१७७) मुलहठी, जौ, गेहूं, मूंग, उड़द प्रत्येक १०-१० ग्राम सब औषधियों को पीसकर रख लें। व्यवहार के समय मिली हुई औषधि १० ग्राम थोड़े जल के साथ चटनी जैसी पीसकर कुछ गर्म कर विद्रधि पर लेप कर दें यदि विद्रधि पैदा होते ही यह लेप लगाया जाता है तो यह विद्रधि बैठ जाती है और दाह शान्त हो जाता है।

—पं० सोमदेव शर्मा द्वारा
धन्वन्तरि गुप्तसिद्ध प्रयोगांक से।

(१७८) रसकपूर, कत्था, मुरदासङ्ग, कबीला प्रत्येक ६-६ ग्राम, गाय का घी १०० ग्राम कांसे की थाली में घी को धोकर उक्त वस्त्रपूत चूर्ण घी में मिलाकर कांसे की कटोरी से १ घण्टा तक रगड़कर रख लें और काम में लावें। यदि पावडर रूप रखने की जरूरत हो तो कुछ सूखा

भी रखकर व्रणों पर छिड़क दें कुछ दिन के प्रयोग से व्रण ठीक हो जाते हैं। —धन्वन्तरि मार्च १९४८ से।

(१७९) सिन्दूर ५० ग्राम, तिल तैल १०० ग्राम इन दोनों चीजों को किसी कलई के या लोहे के बर्तन में डालकर आग पर मन्द-मन्द अग्नि देकर पकावें। कुछ गाढ़ा होने पर उतार लें। ठण्डा होने पर और भी गाढ़ा हो जावेगा इस प्रकार लाल रङ्ग का मलहम तैयार हो जावेगा इसको सुरक्षित रख लें। फोड़ा, फुन्सी के ऊपर कपड़े के टुकड़े पर लगाकर इस मलहम को चिपकावें। यदि घाव कुछ गहरा हो तो नीम के उबले पानी से साफ करके मलहम में भिगोकर घाव के अन्दर, या ऊपर रख दें और पट्टी बांध दें। सभी प्रकार के व्रण इसके प्रयोग से जल्द भरने लगते हैं। यदि फैलने वाली फुड़ियां हों तो मलहम तैयार होने पर ठण्डा कर उसमें ५० ग्राम शुद्ध गन्धक मिला दें।

—पं० रामकृष्ण शर्मा द्वारा
धन्वन्तरि गुप्तसिद्ध प्रयोगांक द्वितीय भाग से।

(१८०) राल, सुहागा, आवलासार गन्धक तीनों समभाग। इन तीनों चीजों को बारीक पीसकर कपड़छन करके किसी बर्तन में रखकर इन तीनों चीजों के बराबर घृत मिलाकर चूल्हे पर मन्द-मन्द अग्नि देकर सेकें। ठण्डा होने पर पानी ऊपर ही रह जावेगा उसे फेंक दें। इस मलहम को तर कर खुजली फोड़े फुन्सी और कुछ दिन के दाद पर भी लगाने से जल्द लाभ होता है।

—श्री सूरजमल दोषी द्वारा
धन्वन्तरि गुप्तसिद्ध प्रयोगांक द्वितीय भाग से।

(१८१) एक मोटी मूली के पत्ते अलगकर उसे खोखला कर लें उसमें १ भाग मोम तथा ३ भाग चमेली का तैल भरकर मूली का ही ढक्कन सा बनाकर उस खोखले भाग के मुंह पर लगाकर धागे से बन्द कर दें और इस मूली को भूभल की आग में सीधी दाब दें। ठण्डी होने पर उस मूली को निकालकर ढक्कन खोलकर मोम और तैल का मिश्रण निकालकर चौड़े मुंह की शीशी में भरकर रख लें। यह मिश्रण बिवाई तथा नियाजिस्म व्रणों पर लगाने से विशेष लाभ करता है। सर्दियों में हाथ पांव फटने पर भी इसका प्रयोग करने से लाभ होता है। —डा० परमानन्द सिंह श्रीवास्तव द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक द्वितीय भाग से।

(१८२) कत्था, राल, सींगाशोंगा, कबीला, मुर्दासङ्ग, गन्धाविरोजा, मोम, प्रत्येक १०-१० ग्राम, तिल तैल २० ग्राम लें। प्रथम तैल को गर्म कर उसमें मोम, विरोजा, राल पीसकर डाल दें। सबके मिल जाने पर अन्य चीजें भी कपड़छन करके मिला दें। इस मलहम को कपड़े पर लगाकर उपयोग में लेने से यह हर प्रकार के व्रण को स्वच्छ कर घाव को भर देती है।

—स्वामी ईश्वरदास शास्त्री द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक द्वितीय भाग से।

(१८३) २५० ग्राम कडुआ तैल लेकर कड़ाही में गर्म करे बाद में उसमें ६० ग्राम स्नुही (थूहर) की सफेद मज्जा को टुकड़े-टुकड़े कर काटकर पकावें। जब मज्जा लाल हो जाय तब तैल को उतार कर ठण्डा होने पर छान लें। इस तैल को भयंकर असाध्य व्रण, नाड़ी व्रण, भगन्दर, कच्चा या पक्का व्रण पर लगाने से निश्चित लाभ होता है व्रण पर पानी नहीं पड़ना चाहिये अन्यथा वह बढ़ जाता है। —वैद्य दरोगा मिश्र द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(१८४) जब अंगुली या अंगुष्ठ के नीचे आस-पास पकाव होता है और उसमें काफी दर्द होता है तो उसे अंगुलि या अंगुष्ठ विद्रधि (बिटनी) कहते हैं। उसके लिये एक मुर्गी के अण्डे में मुंह करके उसमें सिन्दूर अच्छी तरह घोलकर घुमाकर रख दें और २४ घण्टे रहने दें और बांध दें इससे वह पूरा पकाव लेकर फूट जाता है यदि पूरा पकाव नहीं हो तो दुबारा २४ घण्टे इसी तरह रखने से वह फूट जाती है और दर्द शान्त हो जाता है बाद में कोई व्रण-रोपक मलहम लगाना चाहिये।

—श्री दरोगा मिश्र द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(१८५) स्प्रिट ४०० ग्राम, लहसुन स्वरस १०० ग्राम, हल्दी कुटी १० ग्राम, सबको मिलाकर एक शीशी में भर दें और सात दिन बाद छानकर उपयोग में लें। यह सभी प्रकार के व्रणों में [illegible] [illegible] स्थान

पर काम देता है क्योंकि यह कृमिघ्न, रोपण एवं पूय-नाशक है।

—चौधरी चन्द्रसिंह द्वारा गुप्तसिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(१८६) राल पिसी हुई, तुत्थ पिसा हुआ, वैसलीन ५०-५० ग्राम, जिंकआक्साइड, बोरिकएसिड तथा सल्फामाइड पावडर तीनों ३-३ ओंस लेकर सभी को मिलाकर शीशी में भरकर रख लें। इस मलहम को व्रण, साधारण फोड़े-फुन्सी, नाड़ीव्रण आदि पर प्रयोग कराने में विशेष लाभ देखने को मिलता है।

—वैद्य प्रहलाददत्त शर्मा द्वारा गुप्तसिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(१८७) सेव (सेहिया)[1] के शूलों की भस्म कर लें और उसमें शतधौत घृत मिला दें और मलहम जैसी बना लें। यह मलहम ग्रन्थिव्रण, गम्भीर व्रण, विद्रधि, अपची, नाड़ीव्रण तथा विभिन्न प्रकार के व्रणों को जड़ से नष्ट कर देती है।

प्रयोग विधि—व्रण पर इस मलहम का मोरपंख द्वारा लेप कर दें लेकिन यह ध्यान रहे कि यह मलहम व्रण की लाली पर्यन्त लगा दें और स्वस्थ जगह पर न लगावें इसके लगाने से व्रण आसानी से फूट जावेगा जिस व्रण का मुख अन्दर की ओर होगा वह भी बाहर की ओर होकर फूट जावेगा और अधिक से अधिक एक सप्ताह के प्रयोग करने पर आप से आप व्रण छूट जावेगा और खुरण्ट लेकर जड़ से नष्ट हो जावेगा।

(१८८) १०० ग्राम राल को महीन पीस कपड़छान कर ५ ग्राम पारे को २५ ग्राम नूनिया के साथ घोटकर राल में मिला लें फिर घी डालकर पत्थर की सिल पर ६ घण्टे घोटें। घी इतना डालें कि मलहम गीली रहे। इसे गोल कपड़े के फाहे पर लगाकर फोड़े पर चिपका दें अगर फोड़ा पका है तो फूट जावेगा कच्चा होगा तो बैठ जावेगा।

—पं० बिहारीलाल शर्मा द्वारा गुप्तसिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से

व्रण पर स्वानुभव—मुझे सौभाग्यवश नेपाल की तराई के एक ग्राम में जाने का अवसर मिला। वहां मैंने देखा कि एक व्यक्ति पैर के घाव से पीड़ित है। उसके घुटने और एड़ी के बीच वाला पैर का भाग घाव से अति आक्रान्त था। देखने में बहुत बुरा संक्रामक ऐसा लग रहा था। उसका दुःख नहीं गया, तो मैंने उसे अपने पास बुलाया और उससे चिकित्सा के विषय में पूंछा। उसने कहा कि सरकार मैं इसकी चिकित्सा कर रहा हूँ और आशातीत लाभ उठा रहा हूँ। इसके बाद उसने मेरे समक्ष जो चिकित्सा प्रणाली रखी उसे सुनकर मैं दंग रह गया। उसने तुरन्त अपने घर से दही मंगाया और उस दही को अपने आक्रान्त स्थान पर चुपड़ दिया, फिर कुत्ते को पुकारा। कुत्ता आ गया और दही समझकर उसे चाटने लगा। दही के साथ-साथ उस कुत्ते ने उसके घाव को भी चाटा। उसका कहना था कि इस क्रिया से मेरे घाव अच्छे हो रहे हैं। मैंने भी वहां ठहरने का आयोजन कर लिया और देखने लगा कि इस रोगी को कहां तक सफलता मिलती है। चलते समय फिर मैंने उसके घाव देखे, उक्त क्रिया के द्वारा इतना परिवर्तन देखा कि जिसका हिसाब न था। मैं तो चला आया। पुनः जब वहां मुझे जाने का अवसर मिला, तो मैंने उससे भेंट की और समाचार पूंछा। उसने बतलाया कि वही क्रिया मेरे दुष्ट व्रण को जड़ से भगाने का कारण बनी। उस दिन से मैंने भी उसी क्रिया का सहारा लिया और आज तक अनेकों रोगियों पर आशातीत लाभ प्राप्त किया। सुधानिधि के पाठकों से प्रार्थना है कि इस प्रयोग को घाव पर अवश्य परीक्षा करने की कृपा करें, यह आशुफलप्रद है।

१—सेव या सेहया नामक एक मोटे शशक की बनावट का जंगली जानवर होता है, उसके पीछे के भाग (पूंछ के भाग) पर पत्तों के समान बहुत से चर्खे के ताकू के आकार के एक से डेढ़ बालिस्त तक लम्बे सूवे या सूले होते हैं। यह जानवर खेतों के आस-पास जमीन खोदकर गुफा-सी बना लेते हैं, जो कि १० हाथ से लेकर २५ हाथ तक गहरी होती है। यह खेतों में बड़ा नुकसान करता है। अतः किसान जब इसे मारने दौड़ते हैं, तो वह इस बिल में घुस जाता है। प्रायः इस बिल के पास ही इसके सूले पड़े हुए मिल जाते हैं। इन्हीं सूलों का इस प्रयोग में उपयोग होता है।

(१८६) कुचला पिसा हुआ १० ग्राम, अलसी पिसी हुयी ३ ग्राम, राई पिसी ३ ग्राम इन तीनों को शराब मे पीसकर बद्ध गांठ पर लेप करदें ऊपर से थोड़ा-थोड़ा सेक भी करवाते रहे। १५ मिनट के पश्चात् ही रोगी की पीड़ा में आराम होगा इस प्रकार के २-३ लेप मे ही कैसी भी गाँठ हो बैठ जायगी।

—पं० रामचरण शुक्ल द्वारा

गुप्तसिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(१९०) लाल बिसखपरा (रक्त पुनर्नवा) की जड़ बकरी के दूध मे धोकर स्वच्छ कर फिर बकरी के दूध में पीसें उसमें ३-४ दाने कालीमरिच को डालकर उसको खूब रगड़ें उसके पश्चात् किंचित् गर्म करके सुहाता-सुहाता व्रण पर लेप कर दें। ऐसा करने से तत्काल के व्रण की अपक्व शोथ १-२ दिन में अवश्य शान्त हो जाती है। कम से कम दिन में २ बार लेप करें, इससे अवश्य लाभ होगा।

—पं० राममूर्ति शर्मा द्वारा

गुप्तसिद्ध प्रयोगांक से।

(१९१) सफेद सरसों का तैल २५० ग्राम, नीम की पत्ती ५० ग्राम, स्वर्णक्षीरी १० ग्राम लें। पहले तैल को गरम कर लें और उसमें नीम की पत्ती तथा स्वर्णक्षीरी को डालकर तैल पाक कर लें बाद में उसमें २५ ग्राम मोम डाल दें। सुबह बासी पानी से १०० बार उसे पानी में डालकर धो डालें। धोने के बाद उस मलहम को डिब्बी में रख लें। घाव को स्वच्छ कर उस पर उक्त मलहम लगाने से विशेष लाभ देखने को मिलता है।

—महन्त साधुशरणदास द्वारा

गुप्तसिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(१९२) थूहर का दूध २५० ग्राम, तिलों का तैल २५० ग्राम, जल ? किलो लेकर तैल विधि से तैल पाक कर ले और छानकर सुरक्षित रख ले। इस तैल का फाहा घाव साफ करके बांधने से असाध्य पूयगुक्त व्रण ठीक हो जाते हैं।

—श्री बालकृष्ण बड़ोला द्वारा

गुप्तसिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(१९३) कर्पूर में इतना गोघृत मिलावें और घोटें कि मरहम जैसी बन जाए इस मरहम को घाव के अन्दर अच्छी तरह से भरकर ऊपर एक मुलायम [illegible] रखकर बांध दें। घाव में कुछ कष्ट न हो तो दुबारा दवा लगाने की आवश्यकता नहीं है। घाव में पीव पड़ गया हो तो अवस्था के अनुसार १-२ दिन बाद इसी दवा को पुनः लगाना चाहिये,

—श्री उपेन्द्रनाथदास द्वारा

गुप्तसिद्ध चतुर्थ भाग से।

(१९४) गोदन्ती, कत्था, जिंकआक्साइड, स्वर्णगैरिक प्रत्येक ४०-४० ग्राम लेकर कपड़छन कर बोतल में कार्क लगाकर रख लेवें ध्यान रहे जितना बारीक चूर्ण होगा उतना ही लाभदायक रहेगा। किसी प्रकार के घाव से से रक्त निकलता हो, चोट लगने से रक्त निकलता हो तब इस चूर्ण को उस स्थान पर रखकर हाथ से दबावें फिर रुई रखकर पट्टी बांध दें रक्त तुरन्त बन्द हो जावेगा। इसी चूर्ण में १५ ग्राम गन्धक खूब बारीक पिसा हुआ करंज तैल में मिलाकर लगाने से खाज, खुजली फोड़ा आदि में तुरन्त लाभ होता है।

—वैद्य साईं शंकर एम० द्वारा

गुप्तसिद्ध चतुर्थ भाग से।

(१९५) ताजे वटवृक्ष की फुनगियां (कोंपलें) जिसको साधारण बोल-चाल मे बट अंकुर कहते हैं जो लाल रंग का होता है। १८-२० तक की संख्या में लेकर १२५ ग्राम तैल करंज के अभाव में शुद्ध सरसों का तैल लेकर किसी कटोरी में गर्म करें। तैल गर्म होने पर इन फुनगियों को तैल मे डाल दें और जब देखें कि फुनगियों का रंग जलकर बिलकुल काला हो जाय तब आग से तैल को नीचे उतार लें फिर उसमें असोधित नीलाथोथा ३ ग्राम, महीन पीसकर कुछ गर्म रहते हुये उसी तैल मे मिलाकर खूब अच्छी तरह से उन जली हुयी फुनगियों के सहित किसी चीज से घोट ले। जिससे जली हुयी फुनगियां नीलाथोथा के सहित उसी तैल मे अच्छी प्रकार मिल जाय। यह तैल सभी प्रकार के फोड़ा-फुंसी खाज-खुजली आदि पर लाभदायक है।

—वैद्य महावीरप्रसाद अग्रवाल द्वारा

प्रयोग मणिमाला से।

(१९६) त्रिफला, कपास की जड़, मुलहठी [illegible] प्रत्येक ३०-३० ग्राम, लेकर गोदुग्ध [illegible] पर जला दें।

जलने पर खरल कर समानभाग मुर्दासन मिलाकर शीशी मे भरकर रख ले। घावों को स्वच्छ कर इस मलहम को लगाने से घाव जल्द भर जाते है। उपदंश के व्रणों में भी उपयोगी है। —वैद्य शास्त्री श्रावण सातपुते द्वारा प्रयोग मणिमाला से।

(१९७) कपूर देशी २५ ग्राम, सफेद कत्था ५० ग्राम, जयपुर का सफेदा ५० ग्राम लें पहले सफेदे को कपड़े मे छान लें और कत्था पीसकर पृथक् छान ले पश्चात् एक खरल में कपूर डालकर घोटे और थोड़ा-थोड़ा करके सफेदा तथा कत्था छना हुआ डालते जावें जब सब मिलकर एक हो जावें तो शीशी मे भरकर रख ले। जब आवश्यक हो शतधौत घृत ४० ग्राम लें और उसमे १० ग्राम औषधि मिलाकर प्रलेप बना लें और व्रण को नीम के जल से धोकर कपड़े पर प्रलेप लगाकर चुपका दें और कपड़ा से बांध दे यदि घाव गहरा हो तब जालीदार कपडा लेप से सानकर भर दें और ऊपर से कपड़ा, बांध दें। घाव भर जाता है। उपदंश के घावों में भी उपयोगी है। साधारण व्रणों में तो घृत चुपड़कर इसे बुरक देने से लाभ हो जाता है। —श्री भंवरलाल शर्मा द्वारा प्रयोग मणिमालांक से।

(१९८) किसी भी प्रकार के दुष्टव्रण को जहां गहरे से गहरा घाव हो उसे नीम पत्र के क्वाथ से प्रक्षालन कर शरपुंखा पंचांग का बारीक कपड़छान चूर्ण करके शहद में घोटकर लेप सा बना लें इसे गाज की रुई से तर करके जख्म पर बांध दे तो जल्द आराम हो जाता है।

—कविराज सीताराम अजमेरा द्वारा सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(१९९) आमाहल्दी १ भाग, मैदा लकड़ी १ भाग, रसौत १ भाग, हरड़ छोटी १ भाग, फिटकरी ½ भाग, एलुआ ½ भाग; सभी को पृथक्-पृथक् इमामदस्ते मे कूटकर चूर्ण बनावें और जल मे मिलाकर सुपारी के बराबर बड़ी गोलियां बना ले इन्हें सुखाकर शीशी मे भरकर रख लें व्रणशोथ, चोटजन्यशोथ आदि की अवस्था मे इस गोली को जल मे घिसकर अग्नि पर कुछ गर्म कर के लेप करने से लाभ होता है। —राजेन्द्रप्रकाश भटनागर द्वारा सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(२००) तिल तैल में इतनी घुटाई करे कि एकदम लाल रङ्ग हो जावे मलहम तैयार है किसी प्रकार का व्रण हो इस मलहम के प्रयोग से ठीक हो जाता है।

—पं० चिरंजीलाल द्वारा सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(२०१) एक स्वच्छ कांच की बोतल में १ पौण्ड रैक्टीफाइड स्प्रिट लेकर उसमें १०० ग्राम लहसुन कुचलकर डाल दें। पश्चात् उसमे २५ ग्राम पिसी हुयी हल्दी मिलाकर अच्छी तरह से हिलाकर उसकी कार्क बन्द कर एक सप्ताह के लिये रख दें बाद में प्रयोग में लावें। किसी भी प्रकार के घाव, फोड़े, कटे आदि में बहुत उपयोगी प्रयोग है। बोतल के द्रव से रुई का फाहा भिगोकर व्रण के ऊपर लगाना चाहिये इनसे जल्द व्रणरोपण हो जाता है। टिंचर आयोडीन के स्थान पर इसका प्रयोग बहुत लाभदायक पाया गया है।

(२०२) एक स्वच्छ कांच की बोतल में १ पौण्ड रैक्टीफाइड स्प्रिट लेकर उसमें ५० ग्राम शुद्ध लाक्षा चूर्ण मिलाकर रख ले और एक सप्ताह पश्चात् काम में लावें। जिन व्रणों, घावों या फोड़ों को पकाना हो उनके ऊपर उक्त द्रव में रुई का फोहा भिगोकर बांध देवें। बारह घण्टे पश्चात् पुनः दूसरा फोहा रखें। इस प्रकार २४ घण्टे में व्रण परिपाक होकर पूय निर्माण हो जाता है। टिंचर बेंजाइन के स्थान पर इसका प्रयोग आशुकारी एवं लाभदायक है। —श्री राजकुमार जैन द्वारा धन्वन्तरि सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(२०३) संगजराहत, दूधिया खैर (कत्था), आवा हल्दी प्रत्येक समानभाग लेकर एक स्वच्छ सिल पर महीन पीसकर पावडर बनाकर रख लें किसी प्रकार की चोट से उत्पन्न घाव को स्वच्छ करके उस पावडर को बुरक दें तो तुरन्त रक्तस्राव रुक जावेगा और व्रण भरने लगेगा व्रण में इसे बुरकने से चिरचिराहट होती है, इसलिये बुरकने के बाद एक कपड़े को नारियल के तैल मे भिगोकर ऊपर से रख दे तो व्रण जल्द भर जाता है।

—वैद्य रामशंकर पाठक द्वारा गुप्तसिद्ध प्रयोगांक से।

(२०४) बोरिक पावडर, सल्फानिलामाइड पावडर, गोदन्ती भस्म, टंकणभस्म, अशुद्ध गन्धक १००-१००

ग्राम, मैनशिल ५० ग्राम, फिटकरी भस्म २५ ग्राम, कबीला बारीक पिसा हुआ ५० ग्राम, वैसलीन १½ किलो, सिन्दूर बढ़िया ३०० ग्राम। उपरोक्त सभी औषधियों को बारीक पीस खरल में घोट वस्त्र से छानकर वैसलीन में मिलाकर रख लेवें। सभी प्रकार के घाव फोड़ा, फुंसी दाद में रामबाण है सैकड़ों बार की परीक्षित औषधि है।

—वैद्य दीपचन्द्र शर्मा द्वारा
सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(२०५) गूलर की कोमल पत्ती २ किलो कूट-पीस-कर ४ किलो जल मिलाकर कड़ाही में आग पर चढ़ा देवें बीच-बीच में करछली से चलाते जावें जब कुछ गाढ़ा होने को आवे तब किसी दूसरे पात्र में छान लेवें खूब निचोड़कर छूछा फेंक दें। इस धुले हुये जल को फिर उसी कड़ाही में डालकर १० ग्राम राल तथा १० ग्राम मोंम उसी में मिलाकर आग पर चढ़ा देवें। मन्दाग्नि से पकावें जब खूब गाढ़ा हो जावे तब निकालकर शीशी में भरकर रख लें। यह काले रङ्ग का मलहम घाव, चोट, मोच आदि के लिये बहुत लाभदायक है।

—पं० कृष्णप्रसाद त्रिवेदी द्वारा
धन्वन्तरि प्रयोगांक से।

(२०६) मनुष्य की खोपड़ी की भस्म का चूर्ण वस्त्र-पूत १० ग्राम, पारा गन्धक की कज्जली ६ ग्राम, तिल तैल ४० ग्राम, मोंम १० ग्राम लेकर मलहम बना लें यह मलहम सभी प्रकार के व्रणों पर लगाने से लाभ करता है।

—पं० विश्वेश्वरदयाल द्वारा
धन्वन्तरि प्रयोगांक से।

(२०७) सिरस के बीज, मैनफल, जंगाल, रेवन्द-चीनी, प्याज तथा नीम के पत्ते प्रत्येक १०-१० ग्राम, एलुआ, गूगल, अलसी, मेथी ६-६ ग्राम सबको मिलाकर बारीक चूर्ण करें फिर तेज शराब या गर्म पानी में मिला-कर गरम कर लेप करने से भयंकर पीड़ा तथा शोथयुक्त कठिन फोड़ा पककर जल्दी फूट जाता है।

(२०८) साबुन, रेवन्दचीनी, चूना तथा मैनफल को पीसकर कपड़े की पट्टी बनाकर गरम कर बांधने से व्रण फट जाता है।

(२०९) नीलेथोथे का फूला, पत्थर का कोयला, सज्जीखार, हल्दी, सैंन्धानमक, १०-१० ग्राम तथा साबुन २० ग्राम लें। सबको घृतकुमारी के रस में मिलाकर गरम करके लेप कर दें इसे फोड़े के मुह पर लगाने से वह जल्दी फूट जाता है लेप लगाकर ऊपर से पट्टी बांध देवें।

—रसतन्त्रसार प्रथम भाग से।

(२१०) कपूर १० ग्राम, सफेद मोंम ५० ग्राम, सफेदा १०० ग्राम, मीठा तैल १०० ग्राम लें। पहले तैल तथा मोंम गरम करें थोड़ा ठण्डा होने पर सफेदा मिला लें। फिर कपूर मिलाकर मलहम बना लें। यह मलहम दुष्ट व्रणों को भरने के लिये बहुत उत्तम है।

(२११) चूना ५० ग्राम, अरण्डी का तैल ३० ग्राम, रुई ६ रत्ती मिलाकर मलहम बना लें। यह मलहम व्रण का शोधन करके घाव भर देता है। सड़े हुये घावों के दोषों को निकालकर व्रण को स्वच्छ कर देता है। इस मलहम का विशेषतः उपयोग अति पूयमय दूषित व्रणों के शोधनार्थ होता है।

(२१२) नीलेथोथे का फूला, कबीला, सफेद कत्था, गेरू तथा शोरा १०-१० ग्राम, मुर्दासङ्ग, कालीमरिच, मेंहदी के पत्ते २०-२० ग्राम, सरसों का तैल १८० ग्राम, देशी मोंम २० ग्राम लें। पहले तैल में मेंहदी के पत्ते पकावें जल जाने पर नीचे उतार कर मोंम डालें ठण्डा होने पर और वस्तुओं का कपड़छन चूर्ण मिलाकर मलहम बना लें। इस मलहम के उपयोग से विभिन्न प्रकार के व्रण, विशेषकर सिर की फुंसियां अरुंषिका आदि में लाभ होता है।

(२१३) पारद, गन्धक, नीले थोथे का फूला, जमाल-गोटा प्रत्येक ६०-६० ग्राम लें। पारद, गन्धक की कज्जली करके नीलाथोथा मिलावें। फिर जमालगोटे को मिलाकर ६ घण्टे तक अच्छी तरह खरल करें। पश्चात् १ किलो धोये हुए गोघृत या सफेद वैसलीन में मिला खरल करके शीशी में भर लेवें। यह मलहम अति गहराई तक पहुँचे घाव को शुद्ध करने में तथा उसका रोपण करने में अति उत्तम है।

—रसतन्त्रसार प्रथम भाग से।

आगन्तुक व्रण नाशक कुछ योग--

(२१४) अपामार्ग के पत्तों का स्वरस निकाल, उसमें क्षत स्थान को डुबोने से अथवा उस स्वरस में रुई या कपड़े को भिगोकर क्षत स्थान पर रख देने से रक्तस्राव बन्द हो जाता है।

(२१५) रक्त बन्द हो जाने पर क्षत में मुलहठी का कपड़छन चूर्ण भर देवें। फिर कर्पूर को गोघृत में मिलाकर क्षत के चारों ओर लगा देवें और ऊपर से नागरबेल का पान रखकर कपड़ा बांध देने से घाव सत्वर भर जाता है।

(२१६) बबूल के निर्धूम, अर्ध जले हुए कोयलों को पीसकर तिल तैल में मिला लें। उस तैल में रुई डुबो क्षत स्थान पर उसको रखकर पट्टी बांधने से घाव भर जाता है और पकने नहीं पाता। छूरी, चाकू, शस्त्रों के घाव के लिए यह सरल तथा निर्भय प्रयोग है।

(२१७) कभी-कभी वर्षा ऋतु में गले हुए कांटे पैर में चुभ जाते हैं तथा निकालने पर टूट जाते हैं, पूरे नहीं निकल पाते। उसके लिए अपामार्ग के ३ पत्ते ३ ग्राम गुड़ मिलाकर ३ दिन तक सुबह खा लेने से चुभे हुए काटे गल जाते हैं तथा पीड़ा दूर हो जाती है।

(२१८) कांटा मांस में घुस जाता है और फिर कुछ अंश टूटकर भीतर रह जाता है। उसके लिए घाव के मुख पर आक का दूध लगाने से दूसरे दिन कांटा सरलता से बाहर निकल आता है।

(२१९) शिरीष [सिरस] वृक्ष के मूल में १ मीटर गहरा गड्ढा खोदने पर मूल पर से रुई जैसी मृदु छाल निकलता है। उसे निकाल, सुखा कपड़छान चूर्ण करके बोतलों में भर लें। तलवार, छुरी आदि के लगने पर घाव से रुधिर स्राव हो रहा हो, तब इस चूर्ण को बुरकने से रक्तस्राव बन्द हो जाता है। फिर पट्टी बांध देने से घाव भर जाता है।

(२२०) प्याज तथा थोड़ी-सी हल्दी को लेकर पत्थर पर पीस पोटली बांध लें। फिर एक कटोरी में थोड़ा सरसों का तैल गरम करें तथा उसमें पोटली डुबोकर सहन हो सके उतनी गरम रहने पर इससे सेंक करें। शीतल होने पर बार-बार तैल में डुबोते रहें तथा सेंक करते रहें। इस तरह आधे घण्टे तक सेंक कर फिर प्याज के कल्क को बांध देने से आघात जनित पीड़ा दूर होती है।

(२२१) हल्दी तथा नमक को सत्यानाशी में मिला गरम कर सूजन पर लगा देने से सूजन और वेदना दोनों दूर होती हैं।

(२२२) छोटी हरड़ तथा आंवले का कपड़छन चूर्ण १-१ किलो, कलमी शोरा २०० ग्राम एवं नीलाथोथा १०० ग्राम लें। हरड़, आंवले तथा शोरे को मिला उसमें नीलेथोथे का जल डालकर गोला बना एक दिन रखा रहने दें, फिर कूटकर शिखराकार गोलियां बना लें। आवश्यकतानुसार इन गोलियों को जल में घिसकर २-४ बार लेप करने से आगन्तुक शोथ, चोट, मुड़ने, टूटने, जन्तुओं के दंश आदि से उत्पन्न शोथ दूर होता है।

(२२३) लोहवान ५० ग्राम, रसौत ५० ग्राम, मेथिलेटिड स्प्रिट ६०० ग्राम को मिला बोतलों में भरकर रख दें तथा दिन में २-३ बार बोतल को हिलाते रहें। ८वें दिन कपड़े से छानकर बोतल में भर लें। किसी भी स्थान पर चाकू आदि से कट जाने पर इस अर्क में पट्टी भिगोकर बांधने से रक्तस्राव बन्द हो जाता है तथा वेदना शान्त हो जाती है। घाव पकता नहीं तथा थोड़े समय में ही घाव अच्छी तरह मिल जाता है।

—रसतन्त्रसार सिद्ध योग संग्रह द्वितीय भाग से।

(२२४) आक की जड़ का छिलका सूखा हुआ १० ग्राम, कत्था ३० ग्राम, राल सफेद ३ ग्राम, नीलाथोथा ५ ग्राम, तिल तैल, निम्ब क्वाथ ४०-४० ग्राम। निम्ब क्वाथ व तैल को किसी कांसे की कटोरी में मिलाकर अंगुली से घोटें। कुछ देर घोंटने से सफेद रंग का घृत-सा गाढ़ा हो जावेगा, फिर इसमें बाकी की समस्त औषधियां खूब सूक्ष्म पीस कपड़छन करके मिला दें तथा शीशी में सुरक्षित रख लें। आवश्यकता के समय स्वच्छ कपड़े पर लगाकर घाव पर लगाने से वह शीघ्र ही भरने लगता है।

(२२५) मेंहदी १२ ग्राम, नीलाथोथा फूला ३ ग्राम, मुल्तानी मिट्टी १२ ग्राम, कबीला, कत्था सफेद ६-६ ग्राम,

राल सफेद १२ ग्राम, रस कर्पूर ६ ग्राम, सरसों का तैल २४ ग्राम, मोम ३६ ग्राम, निम्बपत्र २४ ग्राम। मोम, तैल को छोड़ शेष सभी चीजों को सूक्ष्म पीस कपड़छन कर लें। फिर मोम को तैल में जरा उष्ण करके मिला लें, तत्पश्चात् उपरोक्त पिसी औषधियां डाल घोटकर मलहम बना लें। फोड़े, फुंसियां, घाव आदि के लिए अनुपम मलहम है।

(२२६) पुराने मकान का चूना ८० ग्राम, काली मरिच, कत्था, नीलाथोथा प्रत्येक १०-१० ग्राम। सबको बारीक कूट-पीस कपड़छन करके शीशी में सुरक्षित रखें। आवश्यकता के समय थोड़ी-सी दवा लेकर उसमें १-२ बूंद असली गाय का घी मिलाकर घोट लें, मलहम जैसी बन जावेगी। उसे फोड़े, फुन्सी, क्षत पर लगाने से इनका रोपण शीघ्र होने लगता है।

(२२७) निम्ब पत्र, पुनर्नवा पत्र, जवांसा के पत्ते, शमी वृक्ष के पत्ते, कंघी बूटी के पत्ते, शीशम के पत्ते, बेरी के पत्ते प्रत्येक ५०-५० ग्राम। उपरोक्त सभी ताजे, हरे पत्ते ले, घोटकर इनका रस निकालें और इस रस को अग्नि पर चढ़ावें। पकते-पकते जब शहद की तरह गाढ़ा हो जावे, तब उसे उतार कर समभाग शहद मिला सुरक्षित रखें। एक लट्ठे के टुकड़े पर इसको लगाकर हर प्रकार के क्षतों तथा फुंसियों पर लगाने से उन्हें शीघ्र ही भर देता है। —अनुभूत योग प्रकाश से।

(२२८) गुग्गुल १० ग्राम, शुद्ध पारद १० ग्राम, रसौत २० ग्राम, तीनों को जल के साथ पीसकर लेप करने से दूषित व्रण भी भरने लगते हैं।

—सिद्ध भैषज्य मणिमाला से।

(२२९) कैसा ही फोड़ा उठा हो या बन्द घाव हो, तो समुद्रशोष का पत्ता सीधा रखकर बांध देने से २४ घण्टे में फोड़ देता है तथा फूट जाने के बाद उसी समुद्रशोष के पत्ते को उल्टी तरफ से रखकर बांध देने से पीव (मवाद) को चूस लेता है और उस स्थान पर नई त्वचा आ जाती है।

(२३०) कुचला अशुद्ध १० ग्राम, राई ३ ग्राम, अलसी के बीज ३ ग्राम; इन तीनों को शराब में सूक्ष्म पीसकर बद की गांठ पर लेप कर दें तथा ऊपर से थोड़ा सेंक भी करते रहें। १५ मिनट बाद ही रोगी को पीड़ा में लाभ पहुंचता है। इस प्रकार ३ बार के लेप से चाहे कितनी ही उभरी गांठ क्यों न हो गायब हो जाती है तथा रोगी ठीक हो जाता है। —गुप्त योग रत्नावली से।

(२३१) पुराना घी ८० ग्राम, धतूरे का रस २० ग्राम, मदार का रस १० ग्राम, सेहुण्ड का रस १० ग्राम; सबको मिलाकर मलहम-सी बना लें। किसी चोट के कारण उत्पन्न शोथ पर इस मलहम का प्रलेप करने से शूल तथा शोथ में लाभ होता है।

—काशी विश्वविद्यालय के प्रयोग संग्रह से।

(२३२) अफीम, कालीजीरी, हालिम बीज, असगन्ध प्रत्येक १०-१० ग्राम लेकर कपड़छन चूर्ण-सा कर लें। पहले अफीम को खरल में अदरक का रस डालकर घोट लें। घुट जाने पर उपरोक्त चूर्ण तथा शेष अदरक का रस डाल खरल करें। जब खूब चिकना तथा गाढ़ा लेप तैयार हो जाय, तब एक कटोरी में रख लें। इस लेप को घाव पर लेप करने से वह उसी दिन फूट जावेगा तथा पीव आदि बाहर निकल जावेंगे एवं दर्द में आराम हो जावेगा।

—प्रयोग रत्नावली से।

[अ] एकौषध एवं साधारण प्रयोग

(१) व्रणहर मलहम—गन्धक अशुद्ध ४० ग्राम, कबीला, कत्था, राल, सिन्दूर प्रत्येक २०-२० ग्राम, पंवाड़ बीज १० ग्राम, मैनसिल अशुद्ध, सुहागे की भस्म, स्फटिका भस्म, मुरदासंग, नीलाथोथा प्रत्येक ६-६ ग्राम, हरताल अशुद्ध, जस्ता का फूला, संखिया कच्ची, कासीस प्रत्येक ३-३ ग्राम।

विधि—इन सबको खूब सूक्ष्म चूर्णित कर द्विगुण शतधौत घृत या मक्खन में मिला शीशी में भरकर रख लेनी चाहिए।

प्रयोग विधि—जिन अङ्गों पर पट्टी बंध सकती हो, वहां इस मलहम को पट्टी पर लगाकर ऊपर से रुई रख बांधनी चाहिए। पैरों तथा हाथों के व्रणों पर एक पट्टी

२-३ दिन तक लगी रहनी चाहिए। जब पट्टी खोली जाती है, तो नीचे व्रण शुद्ध मिलता है। व्रण गहरा हो तो मलहम में बत्ती लपेटकर व्रण में भरनी चाहिए। सामान्य व्रणों में बिना पट्टी बांधे अंगुली से ही मलहम लगानी चाहिए।

उपयोग—यह सभी प्रकार के व्रणों में विशेषतः अभिघातज व्रण, उपदंशज व्रण, कण्डूयुक्त व्रण, गन्दे सड़े हुए व्रण, नाड़ी व्रण आदि में लाभकर है।

—कवि० दीनानाथ शर्मा वैद्य वाचस्पति द्वारा
धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(२) व्रणनाशक चमत्कारिक मलहम—पीपल-पत्र, गुड़हल पत्र, बड़ पत्र, आम के पत्ते, नीम के पत्ते, भृङ्गराज, सेम के पत्ते, इमली के पत्ते, जामुन के पत्ते, अनार के पत्ते, गेंदे के पत्ते, गुलाबांस के पत्ते, गुलाब के पत्ते, चमेली के पत्ते, बेल पत्र प्रत्येक ५०-५० ग्राम, बबूल पत्र, मेंहदी पत्र दोनों ७५-७५ ग्राम।

विधि—सबको एकत्र कर इसमें चौगुना पानी डाल चतुर्थांशावशेष होने तक औटावें तथा १ किलो सिरस का तैल डाल तैल सिद्ध करलें। इसमें १०० ग्राम मोंम डाल दें और तपाकर मोंम को पिघला लें, तदनन्तर सुरक्षित रखें।

प्रयोग विधि—त्रिफला तथा कटु निम्बपत्र क्वाथ से व्रणों का प्रक्षालन कर दिन में ३-४ बार मलहम लगानी चाहिए।

उपयोग—यह सभी प्रकार के व्रण रोपण में अनुभूत मलहम है। ऐसे व्रण जो अनेक औषधियों के प्रयोग से भी न ठीक हुये, वे इस मलहम के प्रयोग से ठीक हुए हैं।

—वैद्य विष्णुदुला पाटील द्वारा
धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(३) व्रणारि मलहम—सरसों का तैल ५० ग्राम, मोंम २५ ग्राम, कबीला, विरोजा, सिन्दूर, कलमी शोरा, मुर्दासंग सभी १०-१० ग्राम।

विधि—पीसने वाली सभी वस्तुओं को पीस लें। बाद में एक पीतल की कटोरी में सभी वस्तुयें रख आग पर गर्म करके रख लें, इस प्रकार मलहम बन जावेगा।

प्रयोग विधि—साफ कपड़े की पट्टी पर इस मलहम को लगाकर चिपका देनी चाहिए।

उपयोग—यह मलहम सभी प्रकार के व्रणों पर लाभदायक है। इसके लगाने से बैठने वाला व्रण बैठ जाता है तथा पकने वाला व्रण पक कर फूट जाता है। यह उपदंश के व्रणों पर लगाने से भी उन्हें ठीक करता है।

—पं० हरिनारायण शर्मा द्वारा
धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(४) व्रणारि घृत—४ किलो गाय के घृत को मूर्च्छा देकर उसमें ६० ग्राम हल्दी का रस डाल दें। बाद में चमेली पत्र, नीम पत्र, पटोल पत्र, कुटकी, दारुहल्दी, हल्दी, अनन्तमूल, मंजीठ, हरड़, मोंम, तुत्थ, मुलहठी, करंज की गिरी प्रत्येक ६०-६० ग्राम को थोड़ा मोटा कूट कर डाल दें और १० किलो पानी भी डाल दें। पानी का तृतीयांश रहने पर उस रोज ढंक कर रख दें। तीसरे दिन पूरी तरह पाक कर छान रख लें।

प्रयोग विधि तथा उपयोग—यह घृत सभी प्रकार के व्रणों पर लगाने से उन्हें ठीक करता है। जिस क्षत का मुंह छोटा हो, उसमें एक रुई की बत्ती बनाकर उस पर घृत लगा क्षत में प्रवेश करके ऊपर से पट्टी बांध दें। अग्निदग्धजन्य व्रणों पर भी इस घृत को लगाने से विशेष लाभ देखने को मिलता है।

—कवि० आशुतोष मजुमदार द्वारा
धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(५) व्रणहर मलहम—रसकपूर, गिले अरमनी, कत्था सफेद, इलायची छोटी, नीलाथोथा, मुरदासंग, राल, हिंगुल प्रत्येक ३-३ ग्राम, गौ की नवनीत २० ग्राम।

विधि—लौनी को १०१ बार जल से धोकर उक्त चीजों का कपड़छन चूर्ण उसी में मिलाकर रखें, यही व्रणहर मलहम है।

उपयोग—यह दुष्ट घाव जो अनेक औषधियों के प्रयोग के बाद भी न भरता हो, इसके प्रयोग से ठीक हो जाता है।

—कु० परसुरामसिंह वैद्यभूषण द्वारा
धन्वन्तरि सिद्ध योगांक से।

(६) **विवाई-व्रणनाशक मलहम**—राल, कत्था, काली मरिच तीनों ६-६ ग्राम, गोघृत १० ग्राम, तैल चमेली २० ग्राम।

विधि—राल, कत्था तथा काली मरिच को कपड़छन करके रख लें। फिर चमेली का तैल गरम कर उसमें गोघृत डालें। पश्चात् तीनों चीजों को मिला दें और उतार कर रख दें।

उपयोग—इस मलहम के प्रयोग से फोड़ा, फुंसी मिटते हैं तथा जिसके हाथ-पैर में विवाई हो या शरद् ऋतु में एड़ी फट जाती हों, उनके लिए यह मलहम जादू का सा काम करता है। —डा० बाबूराम जैन द्वारा धन्वन्तरि सिद्ध योगांक से।

(७) **व्रणामृत मलहम**—बहरोजा १०० ग्राम, मोम देशी १०० ग्राम, सफेद धूप १०० ग्राम, अलसी का तैल २०० ग्राम।

विधि—सफेद धूप का चूर्ण कर लें। फिर चारो चीजें कड़ाही में डाल तवे से ढंक कर अत्यन्त मन्द अग्नि से गलावें। जब सब पिघल जाय, तो नीचे उतार कर वस्त्र से छान लें और शीतल होने पर खरल में घोटकर रख लें।

उपयोग—हर प्रकार के खुले घाव सुखाने में श्रेष्ठ है। इससे उपदंश का घाव भी शीघ्र ठीक हो जाता है। —वैद्य महावीरप्रसाद मालवीय द्वारा धन्वन्तरि अनुभूत योगांक से।

(८) **व्रणादि मलहम**—पारद, गन्धक, मुरदासंग, श्वेत राल, मस्तङ्गी, सिन्दूर, गन्धाविरोजा, श्वेत कत्था प्रत्येक १०-१० ग्राम, मोम ४० ग्राम, गोघृत १०० ग्राम, नीलाथोथा ६ ग्राम।

विधि—प्रथम निम्ब पत्र के कल्क से घृत सिद्ध कर उसमें मोम पिघला दें। फिर सब औषधियों का महीन चूर्ण मिलाकर मलहम बना लें।

प्रयोग विधि—कपड़े की पट्टी पर इस मलहम को लगाकर व्रण पर नित्य लगावें।

उपयोग—कैसा भी सड़ा-गला घाव हो, इसके प्रयोग से भर जाता है। —पं० भवानी शंकर शर्मा द्वारा धन्वन्तरि अनुभूत योगांक से।

(९) **व्रण संहार मलहम**—नीलाथोथा ५ ग्राम, गांठ की जड़ की छाल का चूर्ण ५ ग्राम, निबौली का चूर्ण ५० ग्राम, सफेदा ५० ग्राम, सोहागे का फूला २० ग्राम, खपरिया २० ग्राम, मोम १०० ग्राम, सरसों का तैल २५० ग्राम, तारपीन का तैल २५ ग्राम।

विधि—ऊपर की ६ चीजों को कपड़छन कर लें। बाद को दोनों चीजें पिघलाकर उसमें सब चीजें मिला हिला दें और अन्त में तारपीन का तैल मिलाकर ठण्ड में रख दें। यह एक प्रकार का मलहम बनकर तैयार हो जायेगा।

उपयोग—यह मलहम घाव, व्रण आदि में विशेष लाभ करता है। —रामजीवन त्रिपाठी द्वारा धन्वन्तरि अनुभूत योगांक से।

(१०) **व्रण रोगान्तक तैल**—सफेद सरसो, नारज की गिरी, हल्दी, दारुहल्दी, रसौत, कुड़ा की छाल, पन-वाड़ के बीज, इन्द्रायण, पीपल की राल, रास, अर्क मूल, थूहर मूल, सिरस की छाल, कड़ुवी तुम्बी, इन्द्र जौ, भिलावा, वच, कूठ कड़ुवा, वायविडङ्ग, मंजीठ, सत्या-नाशी, चित्रक, गन्धक, मूली के बीज, सेंधा नमक, कनेर मूल, धमासा, सींगिया विष, कबीला, सिन्दूर, नीलाथोथा, धतूरा मूल, हरताल पीली तबकी, कसीस, मनःशिल, नीम की छाल प्रत्येक २०-२० ग्राम, गोमूत्र २ किलो।

विधि—सब चीजों को सिल पर खूब पीस कल्क करें। फिर तैल चालमोंगरा १ किलो, तैल करंजुवा १ किलो, तैल सरसों १ किलो, निम्बपत्र स्वरस १ किलो मिला दें। पश्चात् मन्द अग्नि पर पका कर तैल सिद्ध कर लें तथा छानकर सुरक्षित रख लें।

उपयोग—सब प्रकार के व्रण, नाड़ी व्रण, दुष्ट व्रण, गण्डमाला के व्रण, भगन्दर के व्रण आदि पर लाभ-कारी है। —राजवैद्य डा० इन्द्रदत्त शर्मा द्वारा धन्वन्तरि अनुभूत योगांक से।

(११) **व्रणपूरक देशी आयडोफार्म**—कबीला ५० ग्राम, गन्धक २० ग्राम, मुरदासंग १० ग्राम, कपूर ६ ग्राम, नीलाथोथा ६ ग्राम, दारचिकना ३ ग्राम, सिंगरफ २० ग्राम, सुहागा भीन ३० ग्राम।

विधि—सब वस्तुओं को खूब कपड़छन चूर्ण करके निम्बपत्र स्वरस में २४ घण्टे खरल कर सुरमे के समान बारीक पीस रख लें।

उपयोग—व्रण रोपण के लिए बहुत उपयोगी औषधि है। अंग्रेजी आयडोफार्म के समान उपयोगी है।

—डा० इन्द्रदत्त शर्मा द्वारा
धन्वन्तरि अनुभूत योगाक से।

(१२) सर्व व्रणनाशकलेप—तैल मीठा ४०० ग्राम, सफेदा कासगरी २०० ग्राम।

निर्माण विधि—पहिले केवल तैल को लोहे की कड़ाही में पकावे। जब तैल खूब अच्छी तरह पक जावे, तब उसमें सफेदा कासगरी डाल दें और एक नीम के सोटे से कढ़ाही की दवा को खूब घोटते रहना चाहिए। अग्नि जहां तक हो मन्द रखनी चाहिए। जब घोटते-घोटते दवा की एक तार की चाशनी आ जाय, तब ही कढ़ाही को आग से नीचे उतार दें। यह आग पर पतली रहती है, लेकिन उतार कर ठण्डी होने पर मलहम की तरह बन जाती है।

उपयोग—इसको कपड़े के फाहे पर छुरी से लगाकर जरा दियासलाई से गरम कर व्रण पर चिपका दें। पके व्रण को फोड़कर सब मवाद को निकाल २-३ फाहों में ही सुखा देगी। बिगड़े, सड़े तथा पुराने जख्मों को नीम के जल से धोकर गॉज या कपड़े को मलहम में सानकर व्रण में आहिस्ता-आहिस्ता अन्दर भर दे। इसी प्रकार अगर बहुत बिगड़ा हुआ व्रण हो तो दिन में दो बार बांधना चाहिए, अन्यथा २४ घण्टे में केवल एक बार ही पर्याप्त है।

(१३) व्रणारि मलहम [१]—गोंद कुन्दरू ३½ ग्राम, जंगाल ३½ ग्राम, गन्धा विरोजा २५० ग्राम।

निर्माण विधि—गन्धे विरोजे को एक कढ़ाही में डाल अग्नि पर रखे। जब वह पिघल जाय, तब छान लें। बाद में फिर कढ़ाही में डालकर पिघलावें और उसी में गोंद कुन्दरू और जंगाल का चूर्ण महीन पिसा हुआ छानकर डाल खूब मिला देवें, यही व्रणादि मलहम है।

प्रयोग विधि—एक पतले कपड़े पर लगाकर घाव, फोड़े और फुंसी पर लगावें।

उपयोग—इसके उपयोग से कैसा भी घाव क्यों न हो, शीघ्र अच्छा हो जाता है।

(१४) व्रणारि मलहम [२]—सफेद कत्था, राल सफेद, तिल तैल, मीठा पानी प्रत्येक १०-१० ग्राम, फिटकरी ३ ग्राम।

निर्माण विधि—कांच या चीनी के पात्र में १० ग्राम जल में १ ग्राम शक्कर मिलावें। उसी में तैल भी मिला दें और फेंटें। जब वह घी के समान हो जाय, तब कत्था आदि का कपड़छन चूर्ण मिलाकर सुरक्षित रख लें।

प्रयोग विधि—घाव व फोड़े को नीम के जल से धोकर महीन कपड़े पर मलहम लगा गर्म कर लगावें।

उपयोग—यह सब प्रकार के घाव और फोड़ों को शोधने तथा भरने के लिए चमत्कारिक योग है।

—वैद्य मुन्नालाल गुप्त द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(१५) व्रणरोपक मलहम राल—सफेद राल २० ग्राम, तूतिया ६ ग्राम, छोटी इलायची के दाने ३ ग्राम। इन सबका चूर्ण कर कपड़े में छान लें। उसमें शुद्ध पारद १० ग्राम, कडुवा तैल १०० ग्राम को पीतल की थाली में हाथ से मलता रहे और उपर्युक्त चूर्ण भी इसी में डाल दें। थोड़ा-थोड़ा पानी डालते जांय और रगड़ता जावे। थोड़ी देर में मलहम जल के ऊपर तैरने लगता है। इसे किसी कांच या चीनी के पात्र में रख उसके ऊपर थोड़ा पानी भर दे।

प्रयोग विधि—इस मलहम को कपड़े पर लगाकर घाव पर रख दें।

उपयोग—घाव कैसा भी हो जले का हो या फोड़ा, फुंसी का इस मलहम से अवश्य ठीक होता है।

—ठाकुर लक्ष्मीनारायण सिंह द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(१६) व्रणारि मलहम—नीलाथोथा ४ रत्ती, कुकरोंदे का रस २० ग्राम, नीम की पत्ती का रस २० ग्राम, सिन्दूर १ ग्राम, नीम का तेल ७० ग्राम, कबीला, गन्दा विरोजा, संगजराहत तीनों २-२ ग्राम।

उपयोग—कपड़े के फाहे पर मलहम को फैलाकर फोड़ा पर लगाने से दर्द में कमी रहती है। फोड़ा फूट जाता है और जल्द भर जाता है।

—धन्वन्तरि सितम्बर १९४७ से।

(१७) लाल व्रणारि मलहम—तेल कडुवा १ किलो, मोम ½ किलो, कबीला २०० ग्राम, मुरदासङ्ग १०० ग्राम, सुहागा ५० ग्राम, तुत्थ ३० ग्राम, सिन्दूर ५० ग्राम।

विधि—प्रथम कूटने की चीजों को कूटकर महीन चूर्ण बना लें फिर मोम को पिघलाकर कडुआ तेल डाल दें और कूटा हुआ द्रव्य भी डाल दें और अग्नि से उतार-कर ठण्डा होने तक हिलाते जावें मलहम के रूप में होने पर व्यवहार में लावें।

उपयोग—यह मलहम हर प्रकार के फोडे को चाहे कैसा भी दुष्ट व्रण क्यों न हो ठीक कर देता है अनेक बार इसका प्रयोग कर लाभ उठाया जा चुका है।

—पं० दामोदरलाल शर्मा द्वारा
धन्वन्तरि गुप्तसिद्ध प्रयोगांक तृतीय भाग से।

(१८) दुष्टव्रणहर मलहम—सर्प की कांचुली २० ग्राम लेकर गाय के घृत में डालकर तल लेवें पश्चात् निम्नलिखित औषधियां उस घृत में डालें।

पारद ३ ग्राम, आमलासार गन्धक ३ ग्राम, मेंहदी ३ ग्राम, भुनी फिटकरी ६ ग्राम, नीलाथोथा ६ ग्राम।

निर्माण विधि—नीलाथोथा को महीन पीसकर अग्नि पर गरम कर लें। पारद तथा गन्धक की पृथक् कज्जली बनाकर बाद में मेंहदी आदि सम्पूर्ण औषधियां महीन पीसकर घृत में मिला दें। यदि घृत कम पड़े तो फिर डालकर मलहम जैसा बनाकर रख दें।

उपयोग—इस मलहम के लगाने से दुष्ट व्रण, नाड़ी व्रण आदि में विशेष लाभ होता है।

—श्री नाथूराम जी शास्त्री द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक तृतीय भाग से।

(१९) दुष्ट व्रणारि मलहम—सिन्दूर, काशनकारी सफेदा, पपरिया कत्था, मुर्दासंग, मजुफल, सफेद इलायची के दाने, शीतलचीनी।

विधि—उपरोक्त सातों चीजों का समभाग कपड़छन चूर्ण सौ बार धुले हुये गाय के नवनीत में मिलाकर मल-हम बना ले।

प्रयोग विधि—मलहम लगाने से पहले त्रिफला, नीम, भांगरा इनका क्वाथ किये हुये पानी से अथवा फाटाग से घावों को धो लेना चाहिये।

—श्रीयुत रामचन्द्रसिंह वर्मा द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक तृतीय भाग से।

(२०) व्रणहर मलहम—राल ३० ग्राम, कत्था ३० ग्राम, तिल का तैल १०० ग्राम, नीलाथोथा १० ग्राम, फिटकरी १० ग्राम, पानी १०० ग्राम।

निर्माण विधि—जब मलहम तैयार करना हो तब १२५ ग्राम जल तथा १२५ ग्राम तिल का तेल मिलाकर घोटें। घोटते-घोटते जब यह दूध की तरह हो जाय तब शेष वस्तुओं का चूर्ण डालकर मिश्रित कर रख लें और आवश्यकतानुसार काम में लावें।

उपयोग—सभी प्रकार के व्रणों में उपयोगी मलहम है।

—पूर्णानन्द व्यास द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक तृतीय भाग से।

(२१) स्वदेशी आइडोफार्म—गुड़ ६० ग्राम, इमली की छाल की श्वेत भस्म २५ ग्राम, हल्दी पिसी हुयी ½ किलो, जामुन छाल स्वरस का घनसत्व २० ग्राम, औदुम्बर छाल स्वरस का घनसत्व २० ग्राम, गन्धक आंवलासार १० ग्राम।

विधि—प्रथम गुड़ को कड़ाही में डालकर पकावें। जब गुड़ पकते-पकते जलने लगे और काला पड़कर कड़ा हो जावे उतार लें और सुखाकर रख लें। फिर गन्धक को कड़ाही में पिघलावें जब गन्धक गुर्ग लाल रङ्ग का हो जाय और स्याही समान होने लगे तुरन्त उतारकर ठण्डा कर ले। हल्दी भी मामूली भून लें पश्चात् सबको अलग-अलग खूब खरल करें फिर सबको एकत्र कर इतना घोटें कि घोंटते-घोंटते इतना सूक्ष्म हो जाय कि उँगली में हवा उड़ने लगे। इसे शीशी में भरकर रख लें।

प्रयोग विधि तथा उपयोग—घाव पर एलोपैथिक आयडोफार्म के स्थान पर इस पावडर का उपयोग घाव को स्वच्छ कर करना चाहिये।

—कुंवर रणवीरसिंह वर्मा द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक तृतीय भाग से।

(२२) व्रणरोपण मलहम—तिल तैल १ किलो, राल १०० ग्राम, मोंम २०० ग्राम, बैरोजा १०० ग्राम, गन्धक १०० ग्राम, शुद्ध मोर तुत्थ २५ ग्राम, सुहागा १०० ग्राम, स्वर्णक्षीरी के पंचांग का स्वरस २॥ किलो।

विधि—सबको एकत्र कर आग पर रखें और हिलाते हुये चलाते रहें जब इसका सम्पूर्ण जल जल जावे तब नीचे उतारकर कढ़ाई में कुछ काल तक घोटें। जब गन्धक ठण्डा हो जाय और घुट घुटकर एकजीव हो जाय तो उसको पात्र में भरकर रख लें।

उपयोग—यह मलहम अत्यन्त अनुभूत है इसको किसी भी व्रण को स्वच्छ कर लगाने से व्रण जल्द नष्ट हो जाता है विषैले व्रण भी इसके प्रयोग से ठीक हुये हैं।

—पं० नन्दकिशोर जोशी द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक तृतीय भाग से।

(२३) व्रण एवं व्रणशोथनाशक अद्भुत योग—विष तिन्दुक (कुचिला) बीज बिना शुद्ध, अहिफेन अशुद्ध, वनजीरक, मदनफल, सांवर, शृङ्ग, मरोड़फली सभी समान लें, अहिफेन चौथाई भाग लें।

विधि—सब औषधियों को सेंहुड के पत्तों के रस से बारीक घोटकर लेप सा बना लें।

प्रयोग विधि एवं उपयोग—व्रण की लालिमा, सूजन पीड़ा इस लेप के लगाते-लगाते कम होने लगती है। यदि व्रण पक गया हो तो वह इस लेप के २-३ बार लगाने से फूटकर बहने लगता है। सन्निपात के भयंकर कर्णमूल शोथ में भी यह रामबाण का सा काम करता है।

—पं० भगवानदास शुक्ल द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक द्वितीय भाग से।

(२४) ग्रन्थि [गांठ] नाशक लेप—कनक गुग्गुल २० ग्राम, सिर के बाल ३ ग्राम, उत्तम हींग २ ग्राम, शुद्ध विष ४ रत्ती, हल्दी खाने की १ ग्राम, जल आवश्यकतानुसार।

विधि—सर्वप्रथम स्वच्छ पत्थर पर बालों को खूब पीस डालिये। पीसते समय थोड़ा-थोड़ा पानी डालते रहें पश्चात् गुग्गुल, हींग आदि वस्तुयें डालकर खूब पीसते जावें और आवश्यकतानुसार जल मिलाते जावें जब यह लेह जैसा बन जावे तो लट्ठे की पट्टी पर लगावें।

प्रयोग विधि तथा उपयोग—कपड़े पर लगे हुये लेप को किसी भी गांठ पर लगाने पर यदि वह बैठने वाली होती है तो बैठ जाती है और पकने वाली हो तो पक जाती है। बिना बैठने वाली गांठ पर बिना छेद वाली और फूटने वाली गांठ पर छेद वाली पट्टी चुपकानी चाहिये। अपची, गण्डमाला तथा बच्चों के निकलने वाली गांठों को भी यह बैठा देती है।

—वैद्य बालमुकन्द त्रिपाठी द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक द्वितीय भाग से।

(२५) अद्वितीय व्रणनाशक मलहम—नीम का स्वरस २०० ग्राम, सेम की पत्ती का स्वरस २०० ग्राम, बबूल की पत्ती का स्वरस ३०० ग्राम, भांगरे का स्वरस ६०० ग्राम, मेंहदी की पत्ती का रस ३०० ग्राम, असली सरसों का तैल २ किलो।

विधि—तैल लेकर पाक विधि से अग्नि पर तैल सिद्ध कर लें फिर उसमें २०० ग्राम मोंम मिलाकर घोटकर रख लें। उसके बाद घाव को नीम के पानी अथवा डिटोल से धोकर सुबह शाम पट्टी पर लगाकर चिपका दें।

उपयोग—यह प्रयोग सभी प्रकार के व्रणों में बहुत लाभदायक है।

—पं० बाबूराम बाजपेयी द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक तृतीय भाग से।

(२६) व्रणहर मलहम—नीम का तैल २५० ग्राम, मोंम १० ग्राम, रसकर्पूर ३ ग्राम।

विधि—नीम के तैल को कड़ाही में अग्नि पर रखकर पकावें तैल फेन रहित होने पर जब धुआं निकलने लगे तब मोंम डालदें और रसकर्पूर डाल दें। मोंम पिघल जाने के बाद में पीतल के बड़े कटोरे में बासी पानी देकर उसमें उस तैल को डाल दें तैल जम जायगा।

जल को फेंककर जमे हुये मलहम को किसी कांच के पात्र में रख दें।

उपयोग—सभी प्रकार के व्रण, नाड़ीव्रण, अग्निदग्ध-जन्य व्रण, आघातजन्य व्रणशोथ आदि की महौषधि है। यह व्रण में अंकुर पैदा कर मांस को पूरा कर देता है पूय निकालकर व्रण को शुद्ध करता है। यह सभी प्रकार के व्रणों के लिये शतशोऽनुभूत है। उपदंशज व्रणों के लिये विशेष उपयोगी है। —पं० कामेश्वर शुक्ल द्वारा गुप्तसिद्ध प्रयोगांक द्वितीय भाग से।

(२७) अभिघात नाशक शिलाजत्वादि मलहम— हरड़ छाल, बहेड़ा छाल, आंवला, गूगल, राल, शिलाजीत, गन्धाविरोजा, मोंम, कपूर प्रत्येक ५०-५० ग्राम, नीम के पत्र ३०० ग्राम, निर्गुण्डी पत्र (संभालू पत्र) १५० ग्राम कार्बोलिक एसिड २५ ग्राम, तिल तैल १ किलो, जल ५ किलो।

निर्माण विधि—पहले त्रिफला, नीमपत्र और संभालू के पत्रों को ५ किलो जल में भिगोकर उबाल लें। चौथा हिस्सा जल शेष रहने पर उतारकर छान लें। फिर इस जल में १ किलो तिल का तैल, गूगल, राल, शिलाजीत, गन्धाबिरोजा, मोंम उपरोक्त मान के अनुसार डालकर मन्दाग्नि से पाक करें। जब पाक सिद्ध हो जाय, तो उतार कर छान लें। तत्पश्चात् २५ ग्राम कार्बोलिक एसिड और ५० ग्राम कपूर को जल के रूप में कर लें। यदि दोनों को बोतल में डालकर रख दिया जावे, तो वे कुछ समय में ही तरल रूप में मिलेंगे। इसे छाने हुए उपरोक्त तैल में मिलाकर बोतलों में भर दें।

यह तैल अधिक शीतल होने पर कुछ मलहम सदृश गाढ़ा भी हो जाता है। यदि इसकी प्रवाही रूप में आवश्यकता पड़े, तो इसे किंचिदुष्ण करके ही कार्य में लेना चाहिए।

उपयोग—यह तैल चोट लगने पर मांस कुचल जाना, चोट लगकर रक्तस्राव होना, मांस फटकर घाव हो जाना, पूय निकलना, व्रण रोपण न होना, जले हुए भाग में पूयोत्पत्ति हो जाना, तलवार आदि तीक्ष्ण शस्त्र एवं यन्त्रादिजन्य रक्तस्राव आदि आगन्तुक व्याधियों पर आश्चर्यजनक लाभ करता है।

यह तैल रक्त प्रवाह को तत्काल बन्द करने और व्रण शुद्धि के लिए प्रयोग करने से उसकी दुर्गन्ध को नष्ट करता हुआ शीघ्र ही नये मांस की उत्पत्ति करके व्रणरोपण कर्म सम्पादन कर देता है।

यदि इसे जले हुए रोगी के शरीर पर लगाया जाये तो यह बर्फ की तरह शीतलता उत्पन्न कर १५-२० मिनट में ही जलन को शान्त कर देता है। इसके प्रयोग से त्वचा और मांस आदि कोथजन्य पूयोत्पत्ति भी नहीं होती।

बालकों के सिर पर या देह पर प्रायः ग्रीष्म ऋतु में छोटे-छोटे फोड़े होकर पक जाते हैं। फिर उनमें से पूय-स्राव होने लगता है। यदि उस अवस्था में इस तैल का प्रयोग किया जाये, तो ३-४ दिन में ही इसके लगाने से फोड़े सूख जाते हैं। नये उत्पन्न नहीं होते, त्वचा स्वच्छ हो जाती है।

यदि कर्णपाक होकर पूयस्राव हो, तो इसकी २-३ बूंद गरम-गरम कान में डालते रहें। ५ घंटे बाद कर्ण की शुद्धि हाइड्रोजन से करते रहने से कर्णस्राव में अत्यन्त हितकारी है।

शल्यकर्म की प्रायः सब अवस्थाओं में जब व्रण शोधन एवं सेलन तथा रोपण की आवश्यकता पड़े, तो इस तैल का निर्भय प्रयोग कर सकते हैं। क्योंकि केवल इससे ही सब संशोधन रोपणादि कर्म सिद्ध हो जाते हैं। यह तैल व्रणरोगियों के लिए शतशोऽनुभूत एवं ईश्वरप्रदत्त विभूति है। —आचार्य डा० श्री अमरनाथ शास्त्री द्वारा गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(२८) व्रणरोपक मलहम— दारुहल्दी चूर्ण, मुलहठी चूर्ण, निम्बपत्र चूर्ण, काले तिलों का चूर्ण प्रत्येक समान भाग लें।

विधि—थोड़े गोघृत में ३ दिन घोंटें। फिर उचित मात्रा में गोघृत और घोटकर मलहम बना लें।

व्यवहार विधि—घाव को नीम की पत्ती १० ग्राम को २०० ग्राम पानी में पका छानकर धोवें। घाव सुखाकर कपड़े पर मलहम लगा चिपका दें।

उपयोग—यह एक सप्ताह में घाव भर देता है। अनेक व्रणनाशक मलहमों से उपयोगी मलहम है। अनेक असाध्य, दूषित व्रणों पर इस मलहम के प्रयोग से लाभ हो जाता है। —पं० विश्वेश्वर दयाल द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(२९) सुधाकर मलहम—वंशलोचन, मांजूफल, इलायची के दाने, शीतल चीनी, मुरदासंग, सेलखड़ी, सिन्दूर, मेंहदी पिसी, सफेदा कास्तकारी प्रत्येक १०-१० ग्राम, रसकर्पूर ६ ग्राम।

विधि—सबको कूट-पीस छानकर रसकर्पूर मिलाना चाहिए। बाद मे मक्खन, लोनी या वैसलीन में मिलाकर लगाना चाहिए।

उपयोग—इस मलहम के वाह्य प्रयोग से सिर से लेकर पैर तक के हर प्रकार के जख्म, फोड़ा, फुंसी, दाद, खाज, उपदंशज व्रण तथा चर्म के अन्य विकार दूर होते हैं।
—श्री पं० चन्द्रशेखर शर्मा द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(३०) क्षत [व्रण] निसूदन—गोला का तैल ४०० ग्राम, जैतून का तैल २० ग्राम, सौंफ का तैल २० बूंद, सिन्दूर पीली १ ग्राम, नैफ्थलीन की गोली १ नग।

विधि—सबको मन्दाग्नि पर पिघलाकर एकजीव कर लें और मलहम जैसी बन जाने पर उतार कर रख लें।

प्रयोग विधि—त्रिफला के गुनगुने क्वाथ से पीड़ित स्थान को धोकर इस मलहम का प्रयोग कराना चाहिए।

उपयोग—साधारणतः २-४ दिनों के प्रयोग से ही दूषित व्रण भी रोपित हो जाते हैं।

(३१) घाव का मलहम—शुद्ध तिल का तैल १०० ग्राम, चन्दन का तैल २५ ग्राम, जंगी हरीतकी का वारीक चूर्ण ५० ग्राम, हिंगुल पिष्टी ५ ग्राम, सुहागे का फूला ५ ग्राम, जल २५० ग्राम।

विधि—पहले हरीतकी चूर्ण जल में औटाकर क्वाथ बना लें। क्वाथ को छानकर उसमें अवशिष्ट सभी वस्तु डाल मलहम बना लें।

उपयोग—यह मलहम हर प्रकार की फुंसियों, व्रण, घाव शीघ्र भरने के लिए विलक्षण कार्य करता है। अनेक बार का परीक्षित प्रयोग है।
—श्री श्यामदास प्रपन्नाश्रमी द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(३२) चर्मरोग नाशक मलहम—गन्धक, तूतिया, कमलागुण्डी, मुरदासंग, मैनसिल, धूना, गन्धाविरोजा, कपूर प्रत्येक १०-१० ग्राम, मोंम देशी १०० ग्राम।

विधि—नारियल (गरी) के तैल १०० ग्राम में मोंम पिघलाकर गरम करें और उसमें धूना तथा गन्धाविरोजा डाल देवें। जब मोंम में दोनों घुल-मिल जावें, तब दोनों दवाओं को भी मिला एक बड़े बर्तन में जल भरकर उसी में इन मिश्रित दवाओं को भी डाल दें और पानी वाले बर्तन की दवा को एक चम्मच या लकड़ी से खूब चलाते जावें। जब मक्खन की तरह सभी दवायें पानी के संयोग से दीखने लगें, तब उनको सावधानी से निकालकर डिब्बे में रख लें।

उपयोग—यह मलहम सभी प्रकार के व्रणों, एक्जिमा, खुजली आदि में उपयोगी है।
—श्री कमलापति शास्त्री द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(३३) विशाली [अंगुलि पाक] हर लेप—पान, घृत, सिन्दूर, काली मरिच, कपूर, इलायची प्रत्येक समान भाग लें।

विधि एवं उपयोग—काली मरिच, कपूर तथा इलायची को कूट-पीसकर बारीक कर लें। पान पर घृत लगाकर उपरोक्त अन्य वस्तुओं का चूर्ण डाल मामूली तरीके से पानी के छींटे दवायुक्त पान पर देकर तर कर लेवें। बाद में यह पान विशाली पर लगाकर कपड़े की पट्टी बांध देवें। १२ घण्टे बांधने से अंगुली पक कर उससे मवाद बहने लगता है। किसी-किसी को २ बार भी पान बांधना पड़ता है, अन्यथा १ बार में ही ठीक हो जाता है। मवाद निकलने पर घी का फाहा बांधने से घाव भर जाता है। —वैद्यराज सूरजमल जोशी द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(३४) जख्म नाशक मलहम—कछुये के सिर की भस्म १० ग्राम, आदमी की हड्डी की भस्म १० ग्राम, सफेदा काशगरी २० ग्राम, कपूर देशी २० ग्राम, मोम २० ग्राम, गाय या भैंस का घी ५० ग्राम।

विधि—कपूर रहित सब वस्तुओं का बारीक कपड़छन चूर्ण करें। घी को कटोरी में गरम कर उसमें मोम डाल पिघलावें। मोम तथा घी के मिल जाने पर शेष तीनों चीजों को डाल दें तथा बाद में कपूर भी बारीक कर डालें। कुछ देर गरम कर मलहम को आग से उतार ठण्डा कर शीशी में सुरक्षित रखें। ध्यान रहे अग्नि तीव्र न हो और आग लगकर सब द्रव जल न जावें।

उपयोग—इस मलहम को फाहे पर लगाकर जख्म पर लगाने से उसे शीघ्र ठीक कर देता है।

—वैद्य बचानसिंह द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(३५) फोड़े-फुंसी नाशक लेह—अशुद्ध पारद, नौनिया गन्धक, मुर्दासंग, कुचला जला हुआ, इन्द्र जौ, खुरासानी अजवायन, सुपारी जली का निर्धूम कोयला, कबीला प्रत्येक ५०-५० ग्राम, तूतिया १० ग्राम।

विधि—उपरोक्त सब चीजों को कूटकर कपड़े में छानकर असली सरसों के तैल में घोटकर न बहुत पतला न बहुत गाढ़ा लेह सा बनाकर रखें।

सेवन विधि—फोड़ों को कार्बोलिक साबुन या नीम के पानी से भली प्रकार साफ करके तथा पानी शुष्क करके इस दवा को लगावें।

उपयोग—इस दवा के प्रयोग से जो फोड़े-फुंसियां निकल-निकल कर फूट जाती हैं तथा उनका मवाद दूसरे स्थान पर लग जाने से और फुंसियां निकल आती हैं। वे फोड़े सिर, पीठ या शरीर में कहीं भी हों सभी को आराम हो जाता है।

(३६) घाव का मलहम—मुर्दासंग, कबीला, सुहागा, मार का धुंआ (घन), मेंहदी शुष्क, कत्था पपरिया प्रत्येक १०-१० ग्राम, नीलाथोथा ६ ग्राम, कलई चूना ३ ग्राम।

विधि—सबको कूट-छानकर चूर्ण बना लें। फिर १०० ग्राम घृत को गर्म करके देशी मोम ६ ग्राम मिलावें। मोम गल जाने पर उसी में सब दवाओं का चूर्ण मिला घोटकर मलहम जैसा बना लें।

उपयोग—घाव को स्वच्छ करके फाहे पर इस मलहम को लगाकर घाव पर ३-४ बार लगाने से कैसा भी सड़ा-गला, पुराना बिगड़ा घाव हो, ठीक हो जाता है।

—पं० रामस्वरूप गौड़ द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(३७) व्रणहर पुल्टिस—गधियारी की जड़ १ भाग, पक्की रेह ½ भाग, नमक ¼ भाग, सेमल की छाल १ भाग, वरुण की छाल १ भाग।

विधि—सबको जल के साथ पीसकर लुगदी बना गरम करके बांध दें।

उपयोग—घाव कितना ही भयंकर हो और पकने की आशा हो या न हो, उसे उसी समय लगावें जब पकाना हो। २-३ दिन में घाव पक जाता है। मुख का पता न हो, तो बीच में हल्दी की राख तथा चूना की टिकिया बनाकर रख दें और उसके ऊपर पुल्टिस रखकर बांध दें। टिकिया के बीच में छेद होकर मवाद बह जावेगा।

—श्री विभूतिराम त्रिपाठी द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(३८) विद्रधिहर पुल्टिस—सनई के बीज ४ नग, अलसी बीज १० ग्राम, प्याज १ पुती, सोंठ ३ ग्राम, बड़ी इलायची ३ ग्राम, मैंदा (गेहूं) १० ग्राम, कालीजीरी १० ग्राम, बबूल की पत्ती १० ग्राम, अफीम १½ ग्राम, नमक, बालू, बकरी का दूध आवश्यकतानुसार।

निर्माण विधि—उपरोक्त औषधियों को कूट-पीसकर बकरी के दूध में पुल्टिस की तरह बनाकर गरम-गरम विद्रधि पर लेप करें।

उपयोग—विद्रधि यदि अपक्व है, तो बैठ जावेगी, अन्यथा पक कर विदीर्ण हो जावेगी।

—श्री देवानन्द शुक्ल साहित्याचार्य द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(३९) **व्रणापहारि वटी**—शुद्ध पारद १० ग्राम, शुद्ध गन्धक २० ग्राम, शुद्ध मन.शिल २० ग्राम, रसमाणिक्य २० ग्राम, त्रिफला घनसत्व २० ग्राम, शुद्ध गुग्गुल ६० ग्राम।

विधि—पहले पारद, गन्धक की कज्जली कर लें तथा गुग्गुल को निम्ब बीज का तैल डालकर खूब कूटें। फिर कज्जली में शुद्ध मनःशिल, रसमाणिक्य को मिलाकर खरल करें और गुग्गुल के साथ कूटकर मिलावें। पश्चात् त्रिफला क्वाथ से ३ दिन खरल कर १-१ रत्ती की गोलियां बना लें।

मात्रा—१-२ गोली मंजिष्ठादि क्वाथ से दिन में २ बार दें।

उपयोग—व्रणों की अवस्था में अन्तः सेवन के लिए यह गोलियां बहुत उपयोगी है।[1]

—डा० टिकाराम सोना द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(४०) **समस्त व्रणनाशक मलहम**—सफेद कत्था ६ ग्राम, आमलासार गन्धक ६ ग्राम, गन्धा विरोजा १० ग्राम, फिटकरी ६ ग्राम, रसकर्पूर ३ ग्राम, गेरू ६ ग्राम, शीतलचीनी ६ ग्राम, सिन्दूर ६ ग्राम, घृत ६० ग्राम।

विधि—पिसने वाली औषधियों को महीन पीस कपड़छानकर घी में मोंम गलाकर उक्त पिसी वस्तुयें डाल दें बस मलहम तैयार है।

उपयोग—इससे फोड़े, फुंसी, घाव, चकत्ते, उपदंश या गरमी के घाव, फफोले, चेचक के घाव तथा विसर्प भी ठीक हो जाते हैं। —पं० बिहारीलाल शर्मा द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(४१) **नाड़ीव्रणनाशक अनुभूत योग**—तिल तैल १ किलो, जंगाल १० ग्राम, कर्पूर २० ग्राम।

विधि—पहले तैल को कड़ाही में गर्म करलें जब झाग मिट जावें तब जगाल का बारीक चूर्ण करके तैल में डालें इससे कुछ झाग आवेंगे। झाग मिटते ही कर्पूर का चूर्ण इसमें डालदें और कड़ाही को उतारकर थोड़ी देर कलछी से घोटें ठण्डा होने पर ऊपर जो नीले रङ्ग का स्वच्छ तैल मिलेगा उसे काम में लावें।

प्रयोग विधि—नासूर बहुत मोटा हो तो इस तैल में गांज भिगोकर शलाका से नासूर के अन्दर भर दें अन्यथा पिचकारी द्वारा तैल नासूर में प्रवेश करें यदि घाव मे पीव अधिक हो तो ३-४ बार लगावें नहीं तो सुबह, शाम २ बार लगावें।

उपयोग—डाक्टर लोग नाड़ीव्रण (नासूर) की चिकित्सा करने के लिये पहले चीरा लगाकर व्रण फैला देते है तब शोधन औषधि से ड्रेसिंग करते हैं अथवा प्रोब में औषधि लगाकर नाड़ीव्रण के अन्दर औषधि भर देते हैं। किन्तु यह दोनों विधियां अति कष्टदायक देर से लाभ करने वाली तथा अधिक व्यय साध्य हैं उसके लिये उपरोक्त योग बहुत लाभदायक है जिससे बिना कष्ट के नाड़ीव्रण ठीक हो जाता है। दुष्टव्रण, विद्रधि में भी इस तैल को लगाने से लाभ होता है। साधारण व्रणों पर रुई में इस तैल को भिगोकर घाव पर रख देना चाहिये। इस तैल का प्रयोग करते समय पानी नहीं लगाना चाहिये।

(४२) **निर्गुण्डी तैल**—निर्गुण्डी (सम्भालू) मूल पत्रादि (अथवा केवल पत्ते) का स्वरस २ किलो निकाल

१—**व्रणापहारि वटी पर अनुभव**—इस प्रयोग को हमने अपनी चिकित्सा में बहुत प्रयोग किया है तथा बहुत उपयोगी पाया है। जो वैद्य केवल आयुर्वेदिक योगों के प्रयोग पर ही बल देते हैं, उनके लिए व्रणनाशक किसी एण्टीबायोटिक्स योग से अधिक उपयोगी यह योग है। हम इसकी १-१ गोली ६-६ घंटे पर जल या मंजिष्ठादि क्वाथ से दिलवाते हैं, तो २-३ दिन में ही यह व्रण को सुखाने लगती है और व्रण का तुरन्त रोपण हो जाता है। पेशाब में पूय (Pus cells) आने पर यह अद्वितीय कार्य करती है। शरीर के अन्दर के अवयवों के शोथ जैसे—आन्त्र शोथ, आन्त्र विद्रधि, मूत्राशय शोथ, वृक्क शोथ आदि में संहजने की छाल के रस के साथ प्रयोग करने से लाभ करता है। पाठकों से अनुरोध है, कि इस प्रयोग को अपने चिकित्सालय में बनाकर रखें और अपने रोगियों पर प्रयोग करावें।

—गोपालशरण गर्ग।

लें। १ किलो तिल तैल को तब तक गर्म करना चाहिये जब तक वह फेन रहित हो जावे इस निष्फेन तैल को शीतल कर निर्गुण्डी स्वरस उसमें डालकर मन्दाग्नि से पकाना चाहिये पकाते समय खूब घोटना चाहिये कि कड़ाही से न लग जावे तब तैल मात्र शेष रह जावे तो छानकर बोतलों में भर लें।

उपयोग—यह निर्गुण्डी तैल नाड़ीव्रण की चिकित्सा में अति उपयोगी तैल है। निर्माण विधि से मालूम होता है कि तैल साधारण है लेकिन इसके गुण असाधारण हैं। किसी भी स्थान का नाड़ीव्रण इस तैल के उपयोग से ठीक हो जाता है। यदि नाड़ीव्रण को खोलना हो तो उसमें चीरा न लगाकर निम्न क्षार का प्रयोग कराना चाहिये इससे नाड़ीव्रण खुल जाता है। उसके बाद उपरोक्त दोनों में से किसी योग का प्रयोग करना चाहिये।

(४३) ग्रन्थिभेदन क्षार—अनबुझा चूना, सज्जीक्षार दोनों १-१ किलो। इन दोनों को एक खुले मुख वाले मिट्टी के बर्तन में २० किलो पानी में छोड़कर ऐसे स्थान पर रखना चाहिये कि सारे दिन धूप लगे और रात्रि में चन्द्रमा की शीतल किरणें लगती रहें। नित्य प्रति एक लकड़ी के डण्डे से एक बार हिला देना चाहिए। (हाथ डालने से हाथ जल जायगा) ऊपर के नितरे हुए जल को १५-२० दिन बाद एक कड़ाही में लेकर धीरे-धीरे पकाना चाहिये। जब कुछ गाढ़ा होना प्रारम्भ हो तब रसोन (लहसुन) का रस २५० ग्राम डालकर ऐसा पकावें कि न तो पतला रहे और न अधिक कठोर हो जावे। इसको शीशी में बन्द करके रखना चाहिए। कभी इससे हाथ नहीं लगाना चाहिये यह क्षार पके हुए फोड़े को २-३ मिनट में फोड़ देता है। सड़े हुए घाव में लगाने से जल्द ही व्रण की शुद्धि हो जाती है। व्रण के शुद्ध स्थान में इसे नहीं लगाना चाहिये। शरीर में कहीं भी मस्सा या विकट दाद हो तो इससे घाव होकर अच्छा हो जाता है। कुछ देर तक जलन होती है उसे सहन कर लें।

(४४) बैरोजे का मलहम—गन्धा बैरोजा गीला ४०० ग्राम, जंगाल ५ ग्राम, सैन्धानमक २० ग्राम, तूतिया भुना ४ रत्ती, हल्दी चूर्ण भुना ४ ग्राम, सफेदा काशगरी १० ग्राम, राल, मुरदासङ्ग, सिन्दूर प्रत्येक १० ग्राम।

निर्माण विधि—गन्धा बैरोजा को गर्म कर कपड़े में छान लें और अन्य सब द्रव्य महीन मिलाकर पांच मिनट बाद आग से उतार लें और मलहम जैसा बना लें।

उपयोग—फोड़े फुंसी में मवाद न आया हो तो वह बैठ जावेगा यदि मवाद पैदा हो गया हो तो वह फूटकर ठीक हो जावेगा। —वैद्य ताराचन्द लोढ़ा द्वारा

सुप्रसिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(४५) श्री रामबाण तैल—नीम की छाल (छाया शुष्क), आंवला, भल्लातक बीज, काबुली हरड़, बहेड़ा की छाल, पांचों ५०-५० ग्राम, जल १ किलो।

विधि—पहले इन सब द्रव्यों को चतुर्थांश क्वाथ बना उतारकर छान लें फिर इस क्वाथ में १ किलो शुद्ध तिल तैल मिलाकर मन्दाग्नि पाक कर लें और निम्न द्रव्य उपरोक्त सिद्ध तैल में मिलाकर हल कर दें।

राल, देशी मोम, शुद्ध गुग्गुल प्रत्येक ५०-५० ग्राम, कार्बोलिकएसिड ½ औंस, इन सबको उपरोक्त तैल में मिलाकर शीशियों में भरकर सुरक्षित रख लें।

उपयोग—इस तैल के प्रयोग से फोड़ा, फुंसी, शरीर के किसी भाग में शोथ, अग्निदग्ध, दुर्घटनाजन्य चोट मोच, कर्णस्राव, कर्ण विद्रधि में लाभ होता है।

—वैद्य गोवरधन चागलानी द्वारा

सुप्रसिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(४६) फादर आफ पैनसिलिन—काले सांप की कैंचुली १० ग्राम को बारीक-बारीक कैंची से कतरकर महीन चूर्ण बना लें पश्चात् १० ग्राम वंशलोचन, १० ग्राम गन्धक मिलाकर नीम के पत्तों के रस में ३ दिन तक खरल करें एक जीव हो जाने पर २-२ रत्ती की गोली बना लें।

मात्रा—१-२ गोली दिन में २-३ बार पानी के साथ निगलवा दें।

उपयोग—यह औषधि व्रण, विद्रधि, अन्तःविद्रधि, नाड़ीव्रण आदि की अवस्था में बहुत उपयोगी है। पैनसिलिन की जगह वैद्य लोग इसका प्रयोग कर सकते हैं।

—पं० नानगोलाल पुरोहित द्वारा

सुप्रसिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(४७) व्रणनाशक मलहम—शुद्ध कुचला ६ ग्राम, ऊंट की मेंगनी ६ ग्राम, बबूल के बीज ६ ग्राम, सिन्दूर ६ ग्राम, बुझाया हुआ कलई का चूना २० ग्राम, एरण्ड तैल १ किलो, सेंमर की गीली छाल २० ग्राम, मुरदासङ्ग ६ ग्राम, कबीला, जंगाल, कपूर, चौटनी सफेद, सिंगरफ, इलायची दाने प्रत्येक ६-६ ग्राम, पानी १ किलो।

विधि—उपरोक्त औषधियों को कूट-पीसकर पानी और एरण्ड तैल में पकावें। पानी के जल जाने पर अग्नि से उतार लें और इस मलहम को शरीर के किसी भी व्रण पर प्रयोग करें। यदि गाढा करना हो तो थोड़ा मोंम मिला दें।

उपयोग—सभी प्रकार के व्रणों मे उपयोगी मलहम है। —पं० रघुवरदयाल शर्मा द्वारा प्रयोग मणिमाला से।

(४८) व्रणरोपक मलहम—देशी मोंम २० ग्राम, उत्तम घृत भैंस का ४० ग्राम, एकत्र करें फिर इसे छानकर कड़ाही में छोड़े पश्चात् मन्दाग्नि पर रखकर उसमें कौड़िया लोहवान का महीन चूर्ण १२० ग्राम, कालाबोल (हीराबोल) ३० ग्राम, शुद्ध हिंगुल ३० ग्राम।

विधि—खूब महीन कर मिला वे तथा लौहदण्ड से खूब घोटकर रख लेवें। इस मलहम को लगाकर ऊपर से शुद्ध कपास का फाहा बनाकर रखें और पट्टी बांध देवें।

उपयोग—हमने इस प्रयोग का कई बार अनुभव किया है यह राध को निकाल कर जल्द ही शोपणक्रिया करता है यदि किसी को शस्त्र का घाव लग जाय, वह कितना भी गहरा हो, प्रथम जख्म को टंकण के घोल से धोकर या त्रिफला तथा नीम की छाल समभाग कूटकर १६ गुना जल मिलाकर अष्टमांश क्वाथ पकाकर शीतल हो जाने पर इसी क्वाथ से धोना चाहिये। रोगी को इससे बहुत लाभ प्रतीत होता है पश्चात् उस पर उक्त मलहम का प्रयोग कराना चाहिये। ७ दिन के अन्दर घाव ठीक हो जाता है। —वैद्यराज कृष्णप्रसाद त्रिवेदी द्वारा गुप्तसिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(४९) व्रण प्रक्षालनार्थ द्रव—नीम की छाल, बबूल की छाल, पीपल की छाल, गूलर की छाल, बेरी की जड़ की छाल, रत्तजोत, सफेद फिटकरी, रसौत, सत्यानाशी की जड़ प्रत्येक ४०-४० ग्राम, बढ़िया देशी शराब ५० ग्राम।

विधि—सभी दवाओं को कूट-पीसकर किसी कांच के बर्तन में डालकर ऊपर से शराब छोड़ दें। बर्तन का मुंह बन्द कर धूप में रख दें। १ सप्ताह तक पड़ा रहने के बाद छानकर बोतलों में भर लें।

उपयोग—व्रणों को साफ करने के लिये यह द्रव बहुत उत्तम कार्य करता है इसके लगाने से घाव का खून बहना, जलन आदि बन्द हो जाती है।

—डा० अर्जुनसिंह वर्मा द्वारा प्रयोग मणिमालांक से।

(५०) पंचगुण तैल—शिलारस, बैरोजा, राल, गुग्गुल, मोंम, हरीतकी, विभीतक, आमलकी, कर्पूर प्रत्येक १२५-१२५ ग्राम, निम्बपत्र, निर्गुण्डी पत्र ४५०-४५० ग्राम, जल १० किलो, तिल तैल २½ किलो।

विधि—कर्पूर को छोड़कर शेष द्रव्यों से तैल पाक करें तैल सिद्ध होने पर छानकर कर्पूर मिला दें कर्पूर मिलाते समय तैल थोड़ा ऊष्ण कर लें।

उपयोग—व्रणों पर ड्रेसिंग के लिये उपयोगी तैल है इस तैल का पिचु रखकर शुद्ध वस्त्रों की पट्टी बांध दें अल्प समय में ही व्रण का शोधन एवं रोपण हो जाता है। —कविराज प्रतापसिंह द्वारा सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(५१) व्रणरोपक मलहम—बेर, बबूल, खैर, गूलर, पीपल, वट, छोकर, आम, जामुन की पत्तियां १०-१० ग्राम लेकर स्वच्छ पत्थर पर बारीक पीसकर लुगदी बना लें। बाद मे लगभग २ किलो स्वच्छ जल में इस लुगदी को घोलकर किसी बड़े बर्तन में छान लें। इसके बाद तिल का तैल २५० ग्राम लेकर गरम करें और उसमें २० ग्राम मोंम डाल दे। जब मोम पिघलकर तैल में घुल जाय, तब उस पत्तियों के छने हुए पानी में इस पिघले हुए मोंमयुक्त तैल को गरम ही कपड़े से छानकर डाल दें। थोड़ी देर बाद उस पानी पर जमे हुये पदार्थ को किसी चौड़े मुख की शीशी में भर ले, बस मलहम तैयार है। इसे अच्छी तरह मथकर जलरहित कर लें।

प्रयोग विधि—एक साफ कपड़ा लेकर घाव के बराबर चिकती बना लें। उसे पानी में भिगा दबाकर निचोड़ लें तथा किसी साफ पत्थर पर या बर्तन पर उसे फैलाकर उस पर उक्त मलहम लगा दें और व्रण, फोड़े को स्वच्छ करके उस पर चिपका दें।

उपयोग—फोड़े, फुंसी के घाव, चाकू-छुरी आदि से कटे हुए घाव, पत्थर आदि की चोट से उत्पन्न घावों को शीघ्र भर देता है। —पं० नवनीतदास वार्ष्णेय द्वारा धन्वन्तरि सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(५२) अपामार्ग तैल—जिस दिन तैल सिद्ध करना इष्ट हो, उसके एक दिन पहिले (मैं शनिवार की शाम को ही उपयुक्त समझता हूं) अपामार्ग के पौधे को जो कीड़े-मकोड़ों द्वारा कटा-पिटा न हो। पत्ते, डन्ठल, जीरा आदि ठीक लगे हों, देखकर चारों ओर पानी सिञ्चित कर न्योता व संकल्प कर आवें। दूसरे दिन (रविवार को) प्रातः खोदकर पौधे को ले आवें। जल से मिट्टी आदि एवं तिनकों को साफ कर छोटे-छोटे टुकड़ों में काट किसी पात्र, या कड़ाही में इतना जल डालें कि औषधि डूब जाय, फिर आग पर चढ़ा देवें। आधा घंटा पकने पर जब औषधि नरम पड़ जाय, तब उतार कर सिल पर अपामार्ग के टुकड़े पीसकर (छाल पिस जाय) उसे औटावें। जल से धुले तिली के तैल को समभाग या कम-बढ़ औषधि जल के साथ आग पर (मन्द आग पर) चढ़ा दें और चलाते रहें। जब करछुल से चलाते-चलाते भाप निकलता बन्द हो जाय (छनन-छनन शब्द आना बन्द हो जाय) तो उतार ठण्डा करके तैल को छान शीशी में बन्द कर रख लें। इच्छा हो तो कपूर और अन्य सुगन्धि भी मिलाई जा सकती है। यही आपका सिद्ध साबित अपामार्ग का तैल है।

गुण—यह तैल आंख, नाक, कान, मुख के छाले, घाव, पीड़ा आदि में लगाना लाभकारी है। खांसी में दावकर में दो-तीन बूंद डाल रस चूसना (लेकिन इसके बाद पानी न पिया जाय, यह ध्यान रखना चाहिए) लाभकारी है।

घाव, चोट का घाव, फोड़े-फुंसी का घाव, आग से जल जाने का घाव या किसी प्रकार का घाव हो, इस तैल के लेप से या फाहा बांधने से तुरन्त ही अच्छा हो जाता है। जलन, आग से जलने की जलन, विषाक्त कीड़े-मकोड़ों के काटने या डंक मारने की जलन, विषाक्त फोड़ों की जलन, खुजली, ददोरे पड़ना एवं शीतपित्ती की जलन, बिच्छू एवं कांतर की दंशित जलन पर लेप करने से पीड़ा और घाव शान्त होते हैं। यह अचूक योग है और पिछले कई वर्षों से अनुभव कर रहा हूं।

—वैद्य विशम्भर दयाल गोयल द्वारा धन्वन्तरि सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(५३) व्रणनाशक लेप—नीम का पत्र स्वरस १ भाग, पत्थरचूर का पत्र स्वरस १ भाग, निर्गुण्डी पत्र स्वरस १ भाग, बंगला पान का पत्र स्वरस ½ भाग, कार्बोलिक एसिड $\frac{1}{32}$ भाग।

निर्माण विधि—सर्वप्रथम चारों पत्र स्वरसों को मिलाकर उसका दुगुना नारियल तैल विशुद्ध मिलाकर कलईदार पीतल की कड़ाही में डाल मन्द-मन्द आग पर पकावें। जब तैल मात्र शेष रह जाय और पानी का अंश पूर्णतः जल जाय, तो इसमें कार्बोलिक एसिड मिलाकर गरम-गरम छान लें। पश्चात् इसे आग पर चढ़ा इतना बढ़िया मोम (सफेद मोमबत्ती वाला) डालें कि केवल लेप या मलहम के समान बन जाय। अधिक ठोस या पतला न बनने पावे। इसकी जांच यह है, कि गरम अवस्था में ही २-४ बूंद लेप की ठण्डी जमीन पर डालें तथा तर्जनी अंगुली से उठाकर अनुभव करें कि वह लेप ठीक रूप से बना है या नहीं। फिर इसे गरम ही तरल दशा में मुद्रित अल्युमिनियम कोलैप्सेबुल ट्यूब मलहम की शीशी या लेप की डिब्बी में डालकर ठण्डा होने को छोड़ दें। थोड़ी देर बाद देखेंगे कि हरे रङ्ग का सुन्दर लाभकारी मलहम तैयार हो गया।

तैल सिद्ध होने की जांच—जब मन्द-मन्द आग से तैल पकाया जा रहा हो तो अन्त में उसे देखें कि पकाने पर वह फेनाता तो नहीं है तथा उस तैल में एक सूखी लकड़ी डुबोकर आग की ज्वाला में प्रवेश करें, जब लकड़ी दहकते हुए जलने लगे, किन्तु पड़-पड़ाने की आवाज न हो, सिद्ध तैल (जल रहित) समझें।

गुण एवं प्रयोग विधि—कटे, फटे, चोट लगे, जले और ऑपरेशन के घाव पर इस लेप को लगाने से चाहे कैसा भी घाव हो, जल्दी आराम होता है। कपड़े के गॉज पर इस लेप को लगा रुई रख पट्टी बांध देते हैं। नासूर के अन्दर गॉज में भिगो इसे डालने से काफी लाभ होता है। —डा० महेश्वरप्रसाद उमाशंकर द्वारा धन्वन्तरि सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(५४) व्रणहर लेप—कपिला (कवीला) चूर्ण ५० ग्राम, महामरिच्यादि तेल १०० ग्राम, गन्धक चूर्ण ५० ग्राम, बोरिक पाउडर १० ग्राम, शुक्ति भस्म १० ग्राम, कत्था चूर्ण २० ग्राम।

विधि—उपरोक्त सब औषधियों को खरल में डालकर लगभग २ या ३ घंटे तक घोटें। घोटने पर गाढ़ी लेप करने योग्य औषधि तैयार हो जायेगी। परन्तु औषधि अधिक गाढ़ी भी न हो तथा न अधिक द्रव ही, इसके लिए महामरिच्यादि तैल की मात्रा घटा-बढ़ा सकते हैं।

गुण व प्रयोग—औषधि तङ्ग (छोटे) मुंह वाले फोड़े या घाव पर थोड़ी-सी रुई या कपड़े की बत्ती बनाकर उस पर औषधि का लेप चढ़ा फोड़े के भीतर घुसा दो। भीतर का पीप सूखाकर व्रण भरना आरम्भ हो जायगा। यदि फोड़ा खुला हुआ हो तो औषधि को ऊपर से ही लेप करके खुला ही छोड़ दें। फोड़े का पीप सूखकर तुरन्त ही अच्छा हो जायगा। औषधि का प्रयोग दिन में २ बार करें। प्रयोग करने से पहले नमक या लाल दवा (पुटाश) के पानी से धो लें। यह सस्ता एवं अत्यन्त गुणकारक प्रयोग तथा हमारे औषधालय का अनुभूत योग हैं।

—वैद्य कृष्णचन्द गुप्त द्वारा सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(५५) कष्टहरण तैल—लाल मरिच के डण्ठल ५०० ग्राम, काले धतूरे के बीज ५०० ग्राम, जटामांसी ५०० ग्राम, कुचला २५० ग्राम, खुरासानी अजवायन २५० ग्राम, कौड़ी कांधा (जंगली प्याज) २ किलो, असगन्ध ५०० ग्राम, नागरमोंथा १०० ग्राम, बच्छनाग १०० ग्राम, हल्दी ३०० ग्राम, लोध्र १०० ग्राम, सतावर १०० ग्राम, त्रिफला ३०० ग्राम, रतनजोत २०० ग्राम, तारपीन तैल १ किलो, अण्डी तैल १ किलो, सरसों का तैल १ किलो, तिली तैल १ किलो, अलसी तैल १ किलो, महुआ तैल १ किलो।

निर्माण विधि—रतनजोत को छोड़कर शेष चीजें जौकुट करके २४ घंटे पानी में भीगने दें। पानी की मात्रा उपरोक्त दवाइयों के अनुसार ३६ किलो होनी चाहिए। धीमी आंच पर उक्त दवाइयों का काढ़ा करें। ९ किलो पानी शेष रहने पर उतार कर गरम-गरम ही छान लें और ठण्डा होने दें। २४ घंटे भीगने के बाद नियार कर इस काढ़े को उक्त ६ किलो तैल में मन्द-मन्द अग्नि देकर पकावें। इसी में रतनजोत की पोटली बनाकर डाल दें। सावधानी इस बात की रखनी है कि कढ़ाही जिसमें तैल सिद्ध करें, वह बड़ी इतनी हो कि उफान आने पर बाहर तैल न निकले। यदि एक बूंद भी बाहर निकल गयी तो आग लगने का डर रहता है। आंच बहुत ही मन्द होनी चाहिए। जब तैल मात्र शेष रह जाय, तब ठण्डा होने पर छान लें और इस तैल को बोतलों में भरकर रख लें।

उपयोग—मोच तथा चोट लगने पर तैल मालिश करके सिकाई करें, आराम मिलेगा। घाव होने पर रुई को पानी में भिगोकर पानी को निचोड़ लें और बाद में तैल में पकावें। इस रुई के फाहे को बांधने से घाव जल्दी भरता हैं। —पं० रामकृष्ण दुबे द्वारा धन्वन्तरि सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(५६) प्रतिसारिणीय क्षार—१ किलो लोटिया सज्जी तथा २ किलो चूना बिना बुझा मिलाकर एक हांडी में भरें और ४० किलो पानी मिलाकर लकड़ी के डण्डे से खूब चला हांडी को ५ दिन तक खुले मैदान में रहने दें और दिन में १-२ बार डण्डे से खूब चला दें। फिर छठवें दिन ऊपर से स्वच्छ पानी लोहे की कढ़ाही में निकालकर आग पर चढ़ावें। आधा किलो जल शेष रहने पर कढ़ाही को नीचे उतार लें और क्षार को शीशी में भर लें।

उपयोग—यह क्षार पके तथा अधपके फोड़े-पकाकर फोड़ देता है। सड़े हुए घाव पर से उसके दोष को जला देता है।

(५७) **कर्पूरादि मलहम**—पारद, गन्धक, कुन्दरु, गूलर, गूगल, लोहवान सब सममाग और सबके समान कर्पूर लें। पहले कर्पूर को खरल में डालकर तेज घूप में घुटाई करें। थोड़े समय बाद कुन्दरु, गूगल, गूलर, लोहबान क्रम से मिलाते जावें अन्त में पारद गन्धक की कज्जली मिलावें जब खरल करते-करते नरम होकर मलहम बन जाय तब डिब्बी में भरकर रखलें। इस मलहम को कड़क हो जाने पर निम्ब तैल के साथ मिला गरम कर लें जिससे लगाने लायक मुलायम बन जाय।

उपयोग—विद्रधि, गलगण्ड, नाड़ीव्रण, दुष्टव्रण आदि रोगों पर सफलतापूर्वक कार्य करता है।

(५८) **व्रणामृत मलहम**—गन्धा बैरोजा, देशी मोंम, राल का चूर्ण प्रत्येक १००-१०० ग्राम, अलसी का तैल २०० ग्राम लें। चारों चीजें कढ़ाही में डाल ढककर अत्यन्त मन्द अग्नि से गलावें जब पिघलकर एक रस हो जावे तब नीचे उतार कर तुरन्त वस्त्र से छान लें। शीतल होने पर खरल में घोटकर रख लें।

उपयोग—यह मलहम हर प्रकार के खुले घाव को सुखाने में श्रेष्ठ है दुष्टव्रण जिनका जहर चारों ओर फैल गया हो और जो अनेक प्रकार के मलहमों से ठीक न होता हो तो इस मलहम के प्रयोग से ठीक हो जाता है।

(५९) **पारद मलहम**—बिलायती मोंम १ किलो, तिली का तैल ½ किलो, शुद्ध पारद १५० ग्राम, निम्ब की अन्दर छाल का रस २५ ग्राम, भृङ्गराज रस २५ ग्राम, सिन्दूर ६ ग्राम।

विधि—पहले कढ़ाही में तिल का तैल गरम करें फिर मोंम थोड़ा-थोड़ा डालते जावें और चलाते जावें। दोनो मिल जाने पर लोहे के खरल में डाल देवें पश्चात् पारद मिलाकर मर्दन करना प्रारम्भ करें। करीब ४ घण्टे में पारद अणु-अणु में मिल जावेगा और पारद की प्रतीति नहीं हो सकेगी। फिर सिन्दूर, निम्ब रस, भृङ्गराज रस मिलाकर पुनः २ घण्टे खरल कर बोतलों में भर लें।

उपयोग—यह पारद मलहम छोटे बड़े घाव, सड़े गले घाव, नाड़ीव्रण, दुष्टव्रण इन सभी पर बहुत उत्तम कार्य करता है। सड़े हुये घाव पर मलहम लगाना हो तो निम्ब जल या खदिर छाल के क्वाथ में धोवें फिर पोंछकर मलहम लगा वें।

(६०) **निम्बादि मलहम**—निम्ब के पत्तों का स्वरस ४०० ग्राम, गोघृत १०० ग्राम, रसकर्पूर १० ग्राम तथा मोंम २० ग्राम लें। पहले निम्ब के पत्तों के रस को घी में मन्दाग्नि से जला वें पश्चात् मोंम मिलाकर घी को छान लें निवाया रहने पर रसकर्पूर मिलाकर मलहम बना लें।

उपयोग—यह मलहम नये तथा पुराने घावों को शुद्ध करके भर देता है जिन घावों से जहरी पानी निकलता हो वह पानी जहां लगने पर नया व्रण बना देता हो उसके विष को नष्ट करके व्रण को भरने का यह मलहम अद्वितीय तथा सत्वर काम करता है।

—रसतन्त्रसार प्रथम भाग से।

(६१) **दशांग उपनाह**—दशांग लेप का चूर्ण १० ग्राम, घी १० ग्राम, शहद १० ग्राम, बुझा चूना (बुझाया हुआ) १० ग्राम, कुटी हुयी अलसी ५० ग्राम।

विधि—पहले दशांग लेप में घी तथा शहद मिला दें फिर कुटी हुयी अलसी मिलाकर जल डालकर रबड़ी जैसा प्रवाही कर मन्दाग्नि पर पका दें उनको पकाने के समय चम्मच से चलाते जावें। नीचे उतारकर उष्णता थोड़ी कम होने पर चूना मिला देवें। तत्पश्चात् एक तख्ते पर साफ कपड़ा बिछाकर उस पर चम्मच से इसे बिछा दें। व्रणशोथ पर भी वाला हाथ लगाकर सहन हो सके उतना गरम होने पर बांध देवें।

उपयोग—यह पुल्टिस पकने वाले फोड़े को जल्दी पकाकर फोड़ देती है यदि शोथ से पाक की क्रिया प्रारम्भ न हुयी हो तो उसे यह बैठा देती है जिस व्रणशोथ में सूई चुभाने के समान पीड़ा होती रहती है वह भी इससे पक जाती है। ऐसे पकने वाले फोड़े पर पुल्टिस २-२ घण्टे पर बदलनी चाहिये। व्रण फूट जाने पर जब पूय निकलता रहे तब तक इन पुल्टिस को बांधने से व्रण जल्दी शुद्ध हो जाता है।

(६२) **क्षारादि उपनाह**—सांभर नमक ३ ग्राम, सोडियम सज्जी ३ ग्राम, हल्दी १ ग्राम, घी ६ ग्राम, कुटी हुयी अलसी या बाजरे का आटा २० ग्राम लें।

विधि—सबको जल मिलाकर पतला कर लें फिर मन्दाग्नि पर पकाकर, कपड़े पर फैलाकर पुल्टिस बना लेवें। पके फोड़े पर सहन हो सके उतना गरम बांध दें।

उपयोग—पकने वाले फोड़े को जल्द फोड़ने के लिये बहुत उपयोगी पुल्टिस है ½-१ घण्टे में फोड़े को फोड़ देती है। इस पुल्टिस का प्रयोग कच्चे फोड़े पर नहीं करना चाहिये।

(५३) व्रणशोधन तैल—कड़वे निम्ब के पत्ते साफ किये हुये १ किलो, हल्दी तथा निसोत की छाल ½-½ किलो लें। फिर इन्हें ६० किलो जल में मिलाकर चतुर्थांश क्वाथ करें और छानकर पुनः आग पर चढ़ावें। इसमें तिल का कल्क ½ किलो तथा तिल का तैल ३ किलो मिलाकर मन्दाग्नि से तैल सिद्ध करें।

उपयोग—इस तैल के प्रयोग से व्रणों का जल्दी शोधन होता है। सामान्य व्रण, सड़े हुये दुष्टव्रण, नाड़ी-व्रण, भयंकर वेदना युक्त व्रण इन सबका शोधन कर पूय को बाहर खींच लेने के लिये इस तैल का फोहा इनमें रखा जाता है। पहले नीम के पत्ते तथा त्रिफला के उबाले हुये जल से व्रण को धोकर फिर इस तैल का फाहा उस पर रखकर उसके ऊपर शहद की पट्टी रखें और व्रण पर पट्टी बांधें। इस तरह पट्टी बांधते रहने से अति गहरे व्रण भी थोड़े ही दिनों में भरने लगते हैं।

(५४) लाल मलहम—गन्धा बैरोजा ४०० ग्राम, हिंगुल १० ग्राम लें। पहले गन्धक बैरोजा को कढ़ाही में डालकर मन्दाग्नि देकर पिघलावें। बीच-बीच में १-२ बूंद दारू से निकालकर जल पर डालें और अंगुलियों से दबाकर देखें कि मलहम का पाक हो गया है कि नहीं। पाक हो जाने पर कढ़ाही को उतार कर तुरन्त कपड़े से द्रव को छान लें इसमें हिंगुल थोड़ा-थोड़ा करके डाल दें और मलहम शीतल न हो तब तक किसी वस्तु से चलाते रहें यदि चलाया नहीं जायगा तो हिंगुल भारी होने से तल में बैठ जावेगा।

उपयोग—मलहम व्रणों का शोधन करने वाला, व्रणों का रोपण करने वाला एवं वेदनाहर है।

(५५) हरा मलहम—गन्धा बैरोजा ४०० ग्राम, जंगाल, साबुन तथा पत्थर के कोयले २०-२० ग्राम पापड़ खार ३० ग्राम लें।

विधि—पहले गन्धा बैरोजा को मन्दाग्नि पर गरम करें मलहम के योग्य बनने पर कपड़े से छानकर शेष द्रव्यों का कपड़छन चूर्ण मिला लें। मलहम शीतल होने तक उसको हिलाते रहें।

उपयोग—यह मलहम व्रणों का शोधन करने वाला, भरने वाला, फोड़ों को पकाकर फोड़ने वाला है। यदि व्रणशोथ पक जाने पर भी न फूटता हो तो इसकी पट्टी बांधने से वह जल्दी फूट जाता है।

(५६) काला मलहम—तिल तैल १ किलो को एक कढ़ाही में डालकर चूल्हे पर चढ़ावें। तैल गरम होने पर आधा किलो सिन्दूर डालकर लोहे की कलछी से चलाते जावें। सिन्दूर का पाक मन्दाग्नि से करें सिन्दूर का रङ्ग काला होने पर कढ़ाही को नीचे उतारकर मलहम की २-४ बूंदें जल में डालकर देखें कि गोली बनती है या नहीं यदि मलहम फैल जाता है तो मलहम कच्चा समझना चाहिये और मलहम पानी में डूब जाय तो मलहम कड़क माना जावेगा। खरपाक हो जाने पर मलहम लाभदायक नहीं रहता। योग्य पाक होने पर ही मलहम लाभ पहुँचाता है इस मलहम को पुनः मन्दाग्नि पर चढ़ाकर, प्रवाही कर उसमें सूखा गन्धा बैरोजा ४ किलो थोड़ा-थोड़ा करके डालकर अच्छी तरह चलाते रहें। सब बैरोजा अच्छी तरह मिल जाने पर कढ़ाही को नीचे उतारकर, उष्णता कुछ कम होने पर १०० ग्राम कर्पूर मिला लेवें।

उपयोग—इस मलहम की पट्टी लगाने से सब प्रकार के व्रण, विद्रधि, दूर हो जाते हैं यह मलहम उत्तम व्रण-शोधक और व्रणरोपक है। पुराने तथा नये सब प्रकार के व्रणों पर लाभदायक है।

(५७) जन्तुघ्न मलहम—सत्यानाशी पंचांग का रस ४ किलो, निम्बपत्र का रस ४ किलो, जल मिलाकर बनाया हुआ शमीपत्र का क्वाथ ४ किलो और इन तीनों का कल्क ४०० ग्राम तथा करंज का तैल ४ किलो लें।

विधि—सबको मिलाकर मन्दाग्नि पर तैल सिद्ध करें। फिर मोम २०० ग्राम मिलाकर छान लेवें। पश्चात् ५० ग्राम कर्पूर मिला देवें।

उपयोग—इस मलहम का उपयोग जहरी फोड़े और जन्तुओं के विष से अधिक फैलने वाले फोड़े तथा नाड़ीव्रण पर विशेष रूप से होता है यह कीटाणुओं का नाश करता है तथा व्रण को शुद्ध कर जल्दी भर देता है।

(६८) उदुम्बरपत्र सार—गूलर की ताजी पत्ती अच्छी साफ की हुयी १० किलो लेवें और उसे जल से धोकर ऊखल मूसल से कूटकर ४० किलो जल मे मिला कलईदार बर्त्तन में डालकर मन्दाग्नि पर पकावें। चतुर्थांश जल शेष रहने पर उसे छान लेवें फिर ५० ग्राम सुहागे का फूला मिलाकर मन्दाग्नि पर पकावें और गूलर के डण्डे से चलाते रहें चलाते-चलाते जब डण्डे पर रस चिपकने लगे तब कढाही को उतारकर सार को कलईदार थाल में डालकर उस पर मलमल का टुकड़ा बांधकर धूप में सुखा लें लेहू जैसा बनने पर अमृतवान में भर लें।

उपयोग—यह सार उत्तम शोथ विम्लापन (कच्चे व्रणशोथ को बैठाने वाला) व्रण रोपण तथा रक्तस्राव रोधक है। व्रणशोथ की प्रारम्भावस्था में इस सार को चौगुने जल में मिलाकर कपड़ा भिगोकर बांधने और थोड़े-थोड़े समय समय पर उस जल को डालकर पट्टी को तर रखने से वेदना दूर हो जाती है और शोथ का शमन हो जाता है। दुष्टव्रण और न भरने वाले व्रणों पर भी यह उत्तम कार्य करता है। पूय वाले व्रणो को धोने के लिये उबलते हुये जल में सार मिलाकर उपयोग किया जाता है।

(६९) व्रणकुठार मिश्रण—वाष्पोदक (उड़ा हुआ पानी) ६०० ग्राम को एक बोतल मे भरके उसमें ६ रत्ती उत्तम कर्पूर डालकर, मजबूत डाट लगाकर, लकड़ी के तख्ते पर एक सप्ताह तक खुले स्थान में रखदें ताकि दिन में कड़ी धूप तथा रात्रि में चन्द्रमा का प्रकाश उस पर पड़ता रहे। कर्पूर गल जाता है यदि कुछ कण रह जावें तो कोई हानि नही बाद मे पिसी फिटकरी १२० ग्राम डालें और उत्तम नीलाथोथा २५ ग्राम जो सफेद न हुआ हो उपरोक्त कर्पूरोदक मे डालकर २४ घण्टे पड़ा रहें और अच्छे शुद्ध वस्त्र से छानकर बोतल में भर दें।

उपयोग—जो व्रण ऊपर से सफेद हों लेखन क्रिया की आवश्यकता हो, दुर्गन्धयुक्त पूयस्राव होना हो उनको नीम के पत्ते तथा गूलर की छाल के सुखोष्ण क्वाथ के जल से धोकर उसका फोहा भरकर उस पर चुपड़ दें। इसके द्वारा हाइड्रोजन परक्लोराइड से भी अधिक उग्र जन्तुघ्न एवं लेखन क्रिया होती है एवं थोड़े समय में ही व्रण की सफेदी मिटकर वहां पर लाल अंकुरोद्भव हो जाता है फिर इस क्रिया की आवश्यकता नही रहती इसके बाद अन्य व्रणरोपण मलहम लगा सकते हैं।

(७०) व्रणकुठार तेल—ताजी स्वर्णक्षीरी के पंचांग को विशुद्ध जल से धो, कूट निचोड़कर उसका रस निकाल लें। उस स्वरस में चतुर्थांश सरसों का उत्तम तैल मिलाकर मन्दाग्नि से पकावें। तैल मात्र शेष रहने पर छान, नितार कर बोतल में भर लें।

उपयोग—इस तैल के प्रयोग से साधारण एवं गम्भीर व्रण, नाड़ी व्रण, क्षयजन्य व्रण तथा अस्थि पर्यन्त व्रण नष्ट होते है। यह हमारा सर्वशोऽनुभूत [illegible] है। व्रण का मुख यदि बहुत छोटा हो और तैल नहीं जा सकता हो, तो गरम जल में उबाली हुयी इन्जेक्शन की पिचकारी की हुयी सुई और पिचकारी द्वारा व्रण की अन्तिम परिधि तक तैल पहुँचाने की कोशिश करनी चाहिए। क्षयजन्य व्रण जो अस्थि पर्यन्त पहुँच जाता है और जिससे अस्थि की झिल्ली एवं हड्डी के ऊपर का भाग गलकर उसके टुकड़े-टुकड़े बाहर निकल जाते हैं, उस पर इस तैल का प्रयोग करने से चिरस्थायी लाभ हो जाता है।

(७१) दन्ती मूलादि लेप—दन्ती मूल, चित्रक मूल की छाल, सेहुण्ड का दूध, आक का दूध, गुड़, भिलावे की मज्जा, कासीस, सेंधा नमक यह आठ औषधियां समभाग ले।

विधि—शुष्क औषधियों के कपड़छन चूर्ण के साथ आक तथा सेहुण्ड का दूध मिलाकर खरल करें और फिर गुड़ मिला गरम कर लेप बना लें।

उपयोग—इसके १-२ लेप लगाने से ही ४-६ घंटे में पकी विद्रधि फूट जाती है। किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होता और सत्वर कार्य हो जाता है। देह के किसी भी स्थान की पक्व विद्रधि पर इस प्रयोग में ला सकते हैं। —रसतन्त्रसार सिद्ध योग संग्रह द्वितीय भाग से।

(७२) अनुपम मलहम—सममाग पारद-गन्धक की कज्जली १० ग्राम, मुर्दासिंग ५ ग्राम, जंगार २ ग्राम, वर्किया हरताल, सिन्दूर, बोरिक एसिड, ब्लीचिंग पावडर, रसौत साफ, कपूर प्रत्येक ३-३ ग्राम, राल सफेद १० ग्राम, काडलीवर आइल ४० ग्राम, तिल तैल ८० ग्राम, मौंम सफेद ४० ग्राम।

विधि—प्रथम कज्जली के अलावा बाकी सब औषधियों को सूक्ष्म पीस कपड़छन करके कज्जली में मिलावें, फिर तिल तैल, काडलीवर आइल और मौंम को अग्नि पर समोष्ण करके मिलावें। मिल जाने पर नीचे उतार कर उपरोक्त चूर्ण मिला सुरक्षित रखें, मलहम तैयार है।

उपयोग—हर प्रकार के फोड़े, फुंसी, कण्डू, कारबंकल तथा अन्य प्रकार के क्षतों पर लगाने के लिए यह श्रेष्ठ मलहम है। —अनुभूत योग प्रकाश से।

(७३) चित्रकादि लेप—चित्रक की जड़ की छाल, संखिया, लहसुन की गिरी, काली मकोय का पंचांग तथा मदार की जड़ की छाल प्रत्येक १०-१० ग्राम।

विधि—पांचों औषधियों को कुचलकर कुछ देर तक थोड़े से जल में भिगो दें। फिर सिल पर पीसकर महीन लेप बना लें।

व्यवहार विधि—लेप में थोड़ा पानी डाल पतला कर लें और आग पर गरम कर सुहाता-सुहाता गांठ पर थोड़ा मोटा लेप चढ़ाकर या पतले कपड़े को ऊपर से चिपका दें। जहां तक लेप लगा हो उसी नाप का कपड़ा कैंची से कतर लें और चिपका दें।

उपयोग—न फूटने वाली गांठ को फोड़ने के लिए उत्तम लेप है। प्लेग की गांठ को भी फोड़ देता है। संखिया तीव्र विष है; अतएव सिल, कटोरी और अपने हाथ सभी को गोबर-मिट्टी से अच्छी तरह साफ कर लेना चाहिए।

(७४) करवीरादि मलहम—कनेर, नीम तथा मकोय की ताजी पत्तियों का रस तीनों ६०-६० ग्राम, तिल तैल ६० ग्राम, पीला मौंम २५० ग्राम।

विधि—एक छोटी कढ़ाही में तैल तथा पत्तियों का रस पकावें। जब केवल तैल शेष रहे, तब उसमें मौंम डाल दें। एकदिल होते ही आग पर से कढ़ाही उतारकर थोड़ा ठण्डा होने दें। फिर कपड़े से छानकर बड़े मुंह के पात्र में भरकर ढक्कन लगा दें।

उपयोग—इस मलहम के प्रयोग से गहरा तथा पुराना घाव भर जाता है।

(७५) व्रणरोपक तैल—तिल का तैल ४ किलो, जल १६ किलो, कबीला, वायविडङ्ग, इन्द्र जौ, आंवला; हरड़, बहेड़ा, बरियार की जड़, परवल की पत्ती, नीम की पत्ती, लोध्र, नागरमोंथा, प्रियंगु, वाय के फूल तथा राल, छोटी इलायची, अगर, चन्दन इन सभी को ४०-४० ग्राम लें।

विधि—सभी काष्ठ औषधियों को कुचलकर इतने जल में भिगोवें, जितने में वे अच्छी तरह डूब जावें। रात भर भीगने के बाद प्रातःकाल सिल पर महीन पीसकर कल्क तैयार कर लें। तैल को कढ़ाही में रख मन्द अग्नि पर तप्त करें। जब तैल में धुंआ निकलने लगे और तैल को तप्त हुआ समझें, तो अग्नि हटा दें। तैल के शीतल होने पर कल्क तथा जल डाल पाक कर लें। जल के समाप्त होने पर तैल को नीचे उतार शीतल कर छान लें।

उपयोग—जिस पुराने घाव में शीघ्र मांस न भर रहा हो, उस घाव में इस तैल के व्यवहार से मांस तुरन्त आ जाता है। यह अत्यन्त रोपण वाला तैल है।

(७६) घाव का मलहम—अलसी का तैल १ कि०, पीला मोंम २५० ग्राम, राल १२५ ग्राम, तूतिया ५० ग्राम, चमेली की ताजी पत्तियां, नीम की ताजी पत्तियां, मेंहदी की ताजी पत्तियां, कनेर की हरी पत्तियां, कुकरौंधे के पत्ते प्रत्येक ५०-५० ग्राम।

विधि—पांचों पत्तियों को एक में मिलाकर सिल पर पीसें और छोटी-छोटी टिकिया बना लें। तैल को चूल्हे पर रखकर अग्नि दें। जब तैल से धुंआ निकलने लगे,

तब एक एक टिकिया उसमें डालकर तलें। टिकिये का रङ्ग जब काला पड़ जाय, तब उसे निकालकर पृथक् कर दें और दूसरी टिकिया तलें। इसी क्रम से सभी टिकियों को तल पृथक् कर देने के बाद पिसा हुआ तूतिया, पिसी हुयी राल और अन्त में मोम डालकर कुछ देर तक पाक होने दें। फिर कढ़ाही को नीचे उतार शीतल करें। कुछ गरम रहे तब मोटे कपड़े से छानकर पात्र में रखें।

उपयोग—इसके व्यवहार से साधारण मौसमी, बदबूदार पुराने घाव, नासूर, जहरीला फोड़ा, विस्फोट के घाव आदि तुरन्त ठीक हो जाते हैं।

—रसायनसार द्वितीय भाग से।

(७७) फोड़ा-फुंसी का मलहम—नीलाथोथा २० ग्राम, कज्जली (सम गन्धक, पारद) ४० ग्राम, अजवायन खुरासानी, कबीला, इन्द्र जौ, सुपारी की राख, कुचला की राख प्रत्येक ६०-६० ग्राम, सरसों का तेल ५०० ग्राम।

विधि—अजवायन, नीलाथोथा, कबीला, इन्द्र जौ इन सबको बारीक कपड़छन कर लें। सुपारी दखिनी जलाकर निर्धूम होने पर किसी बर्त्तन से ढंक दें, ठण्डा होने पर इसमें से ६० ग्राम लें। इसी प्रकार कुचला अशुद्ध की राख ६० ग्राम लें। दोनों राखों का कपड़छन चूर्ण तथा कज्जली आदि मिलाकर सरसों के तेल में अच्छी प्रकार मिलावें।

उपयोग—इस मलहम का फोड़े, फुंसियों पर ३-४ दिन लेप करने से लाभ हो जाता है। हमारा अनेक बार का परीक्षित प्रयोग है। —धन्वन्तरि मई ५३ से।

(७८) पंचामृत तैल—बावची, बिल्व त्वक्, सम्भालू पत्र, चिरायता, रक्त चन्दन, वांसापत्र, हल्दी, दारुहल्दी, तीनों कनेरमूल छाल, पोस्त डोडा प्रत्येक सम-भाग, त्रिफला ६० ग्राम, निम्बपत्र स्वरस आवश्यकतानुसार, तिल तैल १॥ कि०, निम्बपत्र क्वाथ ६ कि०।

प्रक्षेप द्रव्य—गुग्गुल, श्वेत राल, गन्धाबिरोजा प्रत्येक ५०-५० ग्राम।

सिद्ध तैल मे मिलाने वाले द्रव्य—कपूर, कार्बोलिक एसिड, नीलगिरी का तैल प्रत्येक १०-१० ग्राम।

निर्माण विधि—निम्बपत्र स्वरस मे कल्क द्रव्य पीस चटनी सदृश बनाकर निम्ब क्वाथ तथा तैल के साथ अग्नि पर चढ़ा दें। अग्नि देने पर जब आधा पानी जल जावे, तब उसमे प्रक्षेप द्रव्य डालकर एकजीव कर लें। जब तैल ही अवशिष्ट रह जावे, तो कपूर आदि द्रव्य मिलाकर छान लें और डाटदार शीशी मे बन्द कर रखें। यदि इस तैल को शीशी मे बन्द करके धान के अन्दर एक-माह तक गाड दें, तो विशेष लाभदायक रहता है।

उपयोग—आघातजन्य चोट, मोच, व्रण, नाड़ीव्रण आदि मे अत्यन्त उपयोगी तैल है।

—अनुभूत योगमाला के अनुभव सिद्ध प्रयोगांक से।

(७९) विद्रधि शामक यवादि प्रलेप—जौ, गेहूं, मूंग सब समान भाग लें।

विधि—उपर्युक्त वस्तुओं को पीसकर चूर्ण कर लें. फिर पानी म पीसकर कल्क बनावे और उसमें ¼ भाग घृत मिला थोडा गरम करके अपक्व वातज विद्रधि पर गाढ़ा लेप करें। दिन मे २-३ बार लेप करना चाहिए।

गुण—इस यवादि लेप प्रयोग के २-३ दिन लेप करने से विद्रधि बैठ जाती है। विद्रधि की पीड़ा तथा दाह पहिले दो लेपों में ही दूर हो जाती है।

विवेचन—यह प्रयोग हमारा वंश परम्परागत (खान-दानी) अनुभूत प्रयोग है। हमारे स्वर्गीय पिता जी (श्री पं० रघुनन्दन शर्मा, मवीगढ, जिला-अलीगढ यू० पी०) ने इसके प्रयोग से कई बार भयंकर विद्रधि के रोगियों को आश्चर्यजनक लाभ दिलाया था। देखने में यह साधारण घरेलू प्रयोग है और इसकी औषधियां भी गांव के प्रत्येक घर मे हर समय मिल जाती हैं, किन्तु गुणों की दृष्टि से यह असाधारण (विशिष्ट) प्रयोग है।

लगभग ३१ वर्ष पश्चात् शल्यतन्त्र मे वर्णित विद्रधि रोग की चिकित्सा पढ़ाते समय हमको यह प्रयोग वृन्द माधव (सिद्ध योग) में दृष्टिगोचर हुआ, तब हमारा इसकी ओर विशेष रूप से ध्यान आकृष्ट हुआ। वृन्द माधव ग्रन्थ में इस प्रयोग का पाठ निम्नलिखित प्रकार से है—

यवगोधूममुद्गैश्च सिद्धपिष्टैः प्रलेपयेत्।
विलीयते क्षणेनैवमपक्वश्चैव विद्रधिः॥

—वृन्द माधव, विद्रधिधिकार ४०/८।

पीछे के चक्रदत्त, भावप्रकाश और योगरत्नाकर नाम के चिकित्सा के संग्रह ग्रन्थों में भी यह प्रयोग मिलता है।

चक्रदत्त के प्रसिद्ध टीकाकार आचार्य शिवदास ने इस प्रयोग की औषधियों (जो, गेहूं, मूंग) को जल में पका, गलने पर पीसकर विद्रधि पर लगाने का निर्देश दिया है और भावप्रकाश के रचयिता आचार्य भावमिश्र ने उक्त औषधियों को पीसकर घृत मिला तथा थोड़ा गर्म कर विद्रधि पर लगाने का निर्देश किया है।

आचार्य शार्ङ्गधर रचित शार्ङ्गधर संहिता में भी यह प्रयोग है, किन्तु उक्त ३ औषधियों के अतिरिक्त संहजन, निर्गुण्डी और एरण्ड, ये ३ औषधियां और अधिक हैं। इस प्रकार उसमें संहजन, निर्गुण्डी, एरण्ड, जौ, गेहूं, मूंग यह ६ औषधियां हैं।

चरक, सुश्रुत आदि आचार्यों के मत में "विद्रधि" की रक्तज रोगों में गणना की गयी है, क्योंकि इसमें रक्त-धातु अधिकता से दूषित होती है, इसीलिए इसमें विशेष दाह हुआ करता है। दूषित रक्तधातु के प्रकोप को शान्त कर दूर करने का गुण "जौ" में मुख्यतया विद्यमान है, जो कि इस यवादि प्रलेप में विद्यमान है। इसी कारण यह "यवादि प्रलेप" विद्रधि रोग में विशेष रूप से लाभ पहुंचाता है। —पं० सोमदेव शर्मा द्वारा स्वास्थ्य मार्च ६७ से।

विशेषांक के लिए प्रेषित विशेष प्रयोग—

(८०) व्रण अथवा बड़े व देर से पकने वाले फोड़ों पर तथा विद्रधि पर—किसी स्नेह को धतूर-पत्र पर लगा हल्की आंच से सेंक-सेंक कर (गरम करके) ८-१० पत्र फोड़े, विद्रधि आदि पर लगाकर पट्टी बांध दें। २-५ दिन में विद्रधि को बैठा देता है अथवा फोड़े को पकाकर फोड़ देता है और वही घाव का "शोधन" भी कर देता है। लगातार बांधने से वही "पूरण" भी कर देता है तथा किसी प्रकार के संक्रमण का भय नहीं रहता। निरापद, लाभकारी, अनेक बार का अनुभूत है।

—पं० मोहनलाल शर्मा गौतम, गुना (म० प्र०)।

[इ] प्रमुख शास्त्रीय योग

(अन्तः परिमार्जन प्रयोग)

क्रमांक	कल्पना	औषधि नाम	ग्रन्थ सन्दर्भ	मात्रा एवं समय	अनुपान	विशेष
१	रस	सर्वेश्वर पर्पटी रस	र० र० स०	१२५ मि०ग्रा० दिन में २ बार	आर्द्र मरिच +मधु	विद्रधिहर।
२	,,	कज्जली	र० त०	२५० मि०ग्रा० दिन में २ बार	वरुणादिगण क्वाथ	,,
३	,,	चतुर्मुख रस	र० चि०	,, ,,	त्रिफला चूर्ण +मधु	,,
४	,,	लोकनाथ रस	र० रा० सु०	,, ,,	,,	अन्तर्विद्रधिहर।
५	,,	रसमाणिक्य	र० चि०	६०–१२५ मि० ग्रा० दिन में २ बार	,,	व्रण-विद्रधिहर।
६	,,	गन्धक रसायन	यो० र०	१–२ ग्राम दिन में २ बार	मंजिष्ठादि क्वाथ	व्रण-विद्रधिहर।

७	रस	त्रैलोक्य चिन्तामणि रस	यो० र०	६०–१२५ मि० ग्रा० दिन मे २ बार	शुण्ठी क्वाथ + मधु	विद्रधिहर।
८	,,	महामृगाङ्क रस	भै० र०	,, ,,	,,	,,
९	भस्म	ताम्र भस्म	र० त०	६० मि०ग्रा० दिन में २ बार	मधु	,,
१०	,,	यशद भस्म	,,	१२५–२५० मि० ग्रा० दिन में २ बार	,,	व्रण-विद्रधिहर।
११	,,	वंग भस्म	,,	,, ,,	,,	पूयहर।
१२	,,	नाग भस्म	,,	,, ,,	,,	,,
१३	,,	कासीस भस्म	,,	,, ,,	,,	,,
१४	गुग्गुल	कैशोर गुग्गुल	भै० र०	२–४ गोली दिन में २-३ बार	जल	व्रण-विद्रधिहर।
१५	,,	त्रिफला गुग्गुल	यो० र०	,, ,,	,,	,,
१६	,,	पथ्यादि गुग्गुल	भा० प्र०	,, ,,	,,	,,
१७	,,	विडङ्गादि गुग्गुल	भ० र०	,, ,,	,,	,,
१८	,,	अमृतादि गुग्गुल	,,	,, ,,	न्यग्रोधादिगण क्वाथ	,,
१९	वटी	अमृतनाम वटी	र० रा० सु०	१–२ गोली दिन में २ बार	त्रिफला क्वाथ	,,
२०	,,	आरोग्यवर्द्धिनी वटी	र० र० स०	,, ,,	,,	,,
२१	चूर्ण	त्रिफला चूर्ण	चरक०	३–५ ग्राम दिन में २ बार	निशोथ + घृत	पित्तज-विद्रधिहर।
२२	,,	मंजिष्ठादि चूर्ण	र० त० मा०	,, ,,	सारिवादि हिम	व्रण-विद्रधिहर।
२३	आसव-अरिष्ट	खदिरारिष्ट	भै० र०	१५-२० मि०लि० भोजनोत्तर	समान जल मिलाकर	,,
२४	,,	सारिवाद्यासव	,,	,, ,,	,,	,,
२५	,,	मंजिष्ठाद्यरिष्ट	,,	,, ,,	,,	,,

(बहिः परिमार्जन प्रयोग)

२६	लेप	दशाङ्ग लेप	च० द०	यथेष्ट, यथासमय	घृत में मिलाकर	व्रणशमनार्थ।
२७	,,	शणफलादि लेप	शा० सं०	,, ,,	जल में पीसकर	व्रणदारणार्थ।
२८	,,	दन्त्यादि लेप	,,	,, ,,	,,	,,
२९	,,	स्वर्जिकायावशूक लेप	,,	,, ,,	,,	,,
३०	,,	स्वर्णक्षीरी लेप	,,	,, ,,	,,	,,

३१	लेप	शिग्रवादि लेप	शा० सं०	यथेष्ट,	यथासमय	उष्ण जल में पीसकर	वातज विद्रधि पर।
३२	„	लाजादि लेप	„	„	„	घृत में पीसकर	पित्तज विद्रधि पर।
३३	„	इष्टिकादि लेप	„	„	„	गोमूत्र में पीसकर	कफज विद्रधि पर।
३४	„	रक्तचन्दनादि लेप	„	„	„	घृत में पीसकर	आगन्तुक विद्रधि पर।
३५	क्वाथ	त्रिफला क्वाथ	व० रा०	„	„	—	व्रणशोधनार्थ।
३६	„	दशमूल क्वाथ	सुश्रुत	„	„	—	वातज-व्रणशोधनार्थ।
३७	„	न्यग्रोधादिगण क्वाथ	„	„	„	—	पित्तज-व्रणशोधनार्थ।
३८	„	आरग्वधादि क्वाथ	यो० र०	„	„	—	कफज-व्रणशोधनार्थ।
३९	„	अर्कादिगण क्वाथ	सुश्रुत	„	„	—	„
४०	„	सुरसादिगण क्वाथ	„	„	„	—	सर्व-व्रणविशोधनार्थ।
४१	„	सारिवामूल क्वाथ	व० रा०	„	„	—	„
४२	तैल	अंकोल तैल	व० नि०	„	„	तैल प्लावित-प्लोत रखकर बन्धन करें	व्रणरोपणार्थ।
४३	„	जात्यादि तैल	यो० र०	„	„	„	„
४४	„	दूर्वादि तैल	व० रा०	„	„	„	„
४५	„	समङ्गादि तैल	सुश्रुत	„	„	„	„
४६	„	तालीसादि तैल	„	„	„	„	„
४७	„	निम्बादि तैल	शा० सं०	„	„	„	व्रणरोपणार्थ, व्रणशोधनार्थ।
४८	„	कोषातक्यादि तैल	„	„	„	„	„
४९	घृत	जात्यादि घृत	र० र० स०	„	„	घृत प्लावित-प्लोत रखकर बन्धन करें	„
५०	„	मंजिष्ठादि घृत	च० द०	„	„	„	„
५१	मलहर	टङ्कणामृत मलहर	र० त०	„	„	मलहर लगाकर बन्धन करें	„
५२	„	तुत्थकाद्य मलहर	„	„	„	„	„
५३	„	सिन्दुवाद्य मलहर	„	„	„	„	„
५४	„	मृद्दारश्रृंङ्गाद्य मलहर	„	„	„	„	„
५५	„	मलहर राज	सि०भै०मणि०	„	„	„	„
५६	„	कृष्ण मलहर	सि०यो०सं०	„	„	„	व्रणपाचन, शोधन, रोपणार्थ।
५७	„	रक्त मलहर	„	„	„	„	„
५८	„	हरित मलहर	„	„	„	„	„
५९	„	श्वेत मलहर	„	„	„	„	व्रणरोपणार्थ

व्रण, विद्रधि में सामान्य चिकित्सा उपक्रम

व्रण शोथ में सबसे पहले स्वेद, लेप, परिषेक आदि द्वारा मार्दव लाना चाहिए। फिर विरेचन तथा रक्तमोक्षण करना, उपनाह बांधना, व्रण के फोड़ने का उपाय करना चाहिए। उसके बाद व्रण के शोधन का उपाय करना चाहिए तथा व्रण भरने का उपाय मलहम आदि के द्वारा करना और अन्त में व्रणचिह्न को त्वचा के समान वर्ण वाला करने का उपाय करना चाहिए।

व्रण, विद्रधि में सफल औषधि व्यवस्था-पत्र

अन्तः प्रयोगार्थ—

(१) रसमाणिक्य ६० मि० ग्रा०, गन्धक रसायन १ ग्राम, आरोग्यवर्धिनी २ गोली। १ मात्रा × दिन में २ बार मंजिष्ठादि क्वाथ द्वारा।

(२) किशोर गुग्गुल २ गोली × जल या न्यग्रोधादिगण क्वाथ के साथ दिन में ८ बजे तथा मध्याह्न २ बजे दें।

(३) खदिरारिष्ट १५ मि० लि०, सारिवाद्यासव १५ मि० लि०। १ मात्रा × समान जल मिलाकर भोजनोपरान्त दोनों समय दें।

(४) मंजिष्ठादि चूर्ण ३ ग्राम × १ मात्रा रात्रि को सोते समय दें।

बाह्य प्रयोगार्थ—

(१) व्रण रोपणार्थ—कृष्ण मलहम।

(२) व्रण दारुणार्थ—स्वर्जिकायावशूक लेप।

(३) व्रण शोधनार्थ—सारिवामूल क्वाथ।

(४) व्रण रोपणार्थ—जात्यादि घृत।

[ई] प्रमुख पेटेण्ट आयुर्वेदीय योग

क्रम	योग का नाम	निर्माता कम्पनी	उपयोग विधि	विशेष
१	केपाइना प्लेन टेब० (Capyna Plain tab.)	हिमालय ड्रग	२–३ गोली ३ बार।	व्रण (Ulcers) विसंक्रमित घाव (Infected Wounds) फोड़ों का समूह (Carbuncles) आदि में उपयोगी।
२	वकेरी टेबलेट (Vakeri tab.)	झण्डू	४ गोली जीरक तथा शक्कर के साथ।	उत्तम घाव भरने वाली औषधि है। न भरने वाले नैष्ठिक घावों में भी उपयोगी है।
३	करामाती टिकिया	राजवैद्य शीतलप्रसाद	१–२ गोली दिन में ३ बार।	,, ,,
४	उदुम्बर घनसत्व टेब०	गर्ग बनौषधि	३–४ गोली दिन में ३ बार।	सभी प्रकार के व्रणों के रोपण के लिये प्रयोग करें।

५	भद्र मलहम	पंकज फार्मा	आवश्यकतानुसार।	सभी प्रकार के व्रणों के रोपण के लिये प्रयोग करें।
६	वैद्यनाथ घाव मलहम	वैद्यनाथ	,, ,,	,, ,,
७	जात्यादि तैल	,,	,, ,,	,, ,,
८	हीलिक मलहम	,,	,, ,,	,, ,,
९	निम्बादि मलहम	धन्वन्तरि कार्यालय	,, ,,	,, ,,
१०	करामाती मलहम	राजवैद्य शीतलप्रसाद	,, ,,	,, ,,
११	आयोडाइज्ड सालसा	डाबर	१–२ चम्मच प्रातः, सायं समान जल से।	रक्तशोधक औषधि है, फोड़ा-फुन्सी आदि में लाभ करती है।
१२	सालसा परेला	धन्वन्तरि कार्यालय	,, ,,	,, ,,
१३	चर्मरोगान्तक कैप०	गर्ग वनौषधि	१–२ कैपसूल २-३ बार।	,, ,,
१४	रक्तको कैप०	,,	,, ,,	,, ,,
१५	दुग्धप्रोटीन सूची०	मार्तण्ड	२ मि०लि० मांसपेशी में।	,, ,,
१६	विषसार सूचीवेध	बुन्देलखण्ड	,, ,,	,, ,,
१७	रसमाणिक्य	,,	,, ,,	,, ,,
१८	स्वर्णक्षीरी	,,	,, ,,	,, ,,
१९	हल्दी सूचीवेध	,,	,, ,,	,, ,,

[३] प्रमुख पेटेण्ट एलोपैथिक योग

औषधि का नाम	निर्माता	मात्रा एवं व्यवहार-विधि	विशेष
१. इन्जेक्शन—			
१. पैथीडीन (Pethidin) 100 mg.	Dey's Alembic	१०० मि० ग्रा० की एक एम्पुल १-२ बार मांस में।	व्रण, विद्रधि की तीव्र पीड़ा में प्रयोग करावें।
२. नोवल्जीन (Novalgin)	Hoechst	२-५ मि०ग्रा० मांस या नस में दें।	,, ,,
३. ए० टी० एस० (A. T. S.) 750 I. U. & 1500 I. U.	B. W., B. I., B. E.	सेन्सीटीविटी टैस्ट करके आवश्यकतानुसार मांस में।	टिटनेस से बचने के लिए लगावें।
४. डाइक्रिस्टीसिन–एस १/२ ग्राम (Dicrysticin–S 1/2 gm)	Sarabhai	सेन्सीटिविटी टैस्ट करके डि० वाटर में घोलकर दिन में १-२ बार लगावें।	संक्रमक शामक एवं घाव को सुखाने के लिए प्रयोग करें। इसके समतुल्य विस्ट्रेपेन (*Bestrepen*) एलेम्बिक कं० का तथा कम्बायोटिक

			(Combiotic) फा० कं० का भी उपलब्ध है।
५. प्रोकेन पेंसिलिन (Procaine Pencillin)	Glaxo	सेन्सीटीविटी टेस्ट करके डि० वाटर में घोलकर दिन में १-२ बार लगावें।	घाव को सुखाने के लिए उपयोगी।
६. गैरामाइसिन (Garamycin)	Fulford	२० मि०ग्रा० से ८० मि०ग्रा० तक मांस या नस में आवश्यकतानुसार।	संक्रमण नाशक एवं घाव को सुखाने के लिए।
७. पेनीड्यूर एल० ए० ६, एल० ए० १२, एल० ए० २४ (Penidure L. A. 6, L. A. 12, L. A. 24)	Wyeth	सेन्सीटिविटी टेस्ट करके डिस्टिल वाटर में घोलकर संक्रमण की तीव्रता के अनुरूप चिकित्सक की सलाह से।	तीव्र संक्रमण में प्रयोग करावें।
८. टेरामाइसिन (Terramycin)	Pfizer	बच्चों में १०-२० मि० ग्रा० प्रति कि० शरीर भार के अनुपात से तथा वयस्कों में २५०-५०० मि० ग्रा० १२ घण्टे के अन्तर पर गहरे मांस में दें। (शिरा में देने के लिये अलग इन्जेक्शन भी आता है)।	संक्रमण नाशक एवं व्रण को सुखाने के लिए।
९. एक्रोमाइसिन आई० वी० एवं एक्रोमाइसिन आई० एम० (Achromycin I.V. & Achromycin I.M.)	Cymamid	I. V. इन्जेक्शन २५०-५०० मि० ग्रा० शिरा में आवश्यकतानुसार दें। I. M की वाइल दिन में १-२ बार दिलवावें।	संक्रमण नाशक एवं व्रणरोपक।
१०. रिवेरिन आई० एम० (Reverin I. M.)	Hoechst	१ वाइल दिन में १-२ बार मांस में दिलावे।	,, ,,
११. रिवेरिन आई० वी० (Reverin I. V.)	,,	१ वाइल नस में धीमे-धीमे दिलवावें।	,, ,,
१२. रोसिलिन (Roscillin)	Ranbaxy	२५०-५०० मि० ग्रा० की वाइल डिस्टिलवाटर में घोलकर दिन में १ बार आवश्यकतानुसार मांस में दिलवावें।	संक्रमण नाशक एवं व्रणरोपक है। इसके समकक्ष एम्पिसिन (Ampisyn 500 mg.) सिपला कं० का भी उपलब्ध है।
२. कैपसूल—			
१. एलवरसिलिन (Albercillin) 250 mg. & 500 mg.	INGA	२४ घण्टे में १०० मि० ग्रा० से १५०० मि० ग्रा० तक विभाजित मात्रा में दिलावे।	संक्रमण नाशक एवं व्रणरोपक है। इसके समकक्ष वेसीपेन (Bacipen) एलेम्बिक कं० का, एम्पि-

			सिन (Ampisyn) सिपला कं० का, वाइओमिलिन — (Biucillin) वायोकेम कम्पनी का. कैम्पिसिलिन (Campicillin) कैडीला कं० का २५० मि० ग्रा० में तथा रोसिलिन (Roscillin) रैनवैक्सी कं० का २५० तथा ५०० मि० ग्रा० में उपलब्ध है।
२. होस्टासाइक्लिन (Hostacycline) 500 mg.	Hoechst	एक ड्रेगी १२ घण्टे बाद दिलावें।	संक्रमण रोकने तथा घाव सुखाने के लिए दें।
३. रेस्टेक्लीन (Resteclin) 250 & 500 mg.	Sarabhai	१ ग्राम मात्रा दिन में २-४ विभाजित मात्रा में दें।	इनमें विटामिन "सी" का मिश्रण होने से अधिक उपयोगी है।
४. ड्यूरासाइक्लिन (Duracyclin) 100 mg.	Unichem	१०० मि० ग्रा० का कैपसूल सुवह, शाम दें।	इसके समकक्ष डोक्सी कैपसूल (Doxy Cap.) रेनो कम्पनी का, डूराडोक्स (Duradox) मैडीकेयर कं० का भी उपलब्ध है।
२. टेबलेट—			
१. सैप्ट्रान (Septran)	Burroughs Wellcome	२-२ गोली १०-१० घण्टे वाद या सुबह शाम।	घाव सुखाने के लिए उत्तम है। इसके समकक्ष वैक्ट्रिम (Bactrim) रोशे कं० का, सिपिलिन (Cipilin) सिपला कं० का भी उपलब्ध है।
२. ऑरीसूल (Orisul)	Ciba Geigy	२-२ गोली १०-१० घण्टे पर प्रारम्भ में दें, वाद में १-१ गोली सुबह शाम दें।	घाव सुखाने के लिए प्रयोग करावें।

३. पेनीट्राइड (Penitraid)	M. & B.	२-२ गोली १०-१० घण्टे पर प्रारम्भ में दें, बाद में १-१ गोली सुबह-शाम दें।	घाव सुखाने के लिए प्रयोग करावें
४. इल्कोसिन (Elkosin)	Ciba	पहली मात्रा में ४ गोली और बाद में २-२ गोली हर ४ घण्टे पर दें।	,, ,,
५. मैड्रीबोन (Madribon)	Roche	,, ,,	,, ,,
६. आक्जेल्जिन (Oxalgin)	Cadila	१-१ गोली दिन में २ बार सुबह शाम।	व्रण की सूजन तथा दर्द को कम करती है।
७. सुगेनरिल (Sugeuril)	Suhrid Geigy	१-२ गोली दिन में ३-४ बार।	व्रणशोथ को कम करने के लिए प्रयोग करावें।

बाह्य प्रयोग की औषधियां—

१. बेलाडोना प्लास्टर (Belladonnaplaster)	Jonson & Jonson	जितने स्थान पर शोथ हो उससे थोड़ा बड़ा काटकर चिपका दें।	यह पीड़ा शामक तथा शोथहर है। फोड़े-फुंसियों पर लगाने से प्रायः उन्हें बैठा देता है या पकाकर फोड़ देता है।
२ बेडियोनल-जेल (Bedional-Jel)	Bayer	दिन में १-२ बार घाव पर लगावें।	घाव के रोपण के लिए प्रयोग करें।
३. जैन्ट्रीसिन आइण्टमेण्ट (Genticyn Ointment)	Nicholas	,, ,,	,, ,,
४. फ्यूरासिन आइण्टमेण्ट (Furacin Ointment)	Smith kline	,, ,,	,, ,,
५. सोफरामाइसिन (Soframycin)	Kousell	,, ,,	,, ,,
६. न्यूओस्पोरिन आइण्टमेण्ट (Neosporin onitment)	,,	,, ,,	,, ,,
७. नेबासल्फ (Nebasulf)	Pfizer	,, ,,	,, ,,
८. जैलोसिन मलहम (Xylocain Onitment)	Geigy	,, ,,	शोथ पर लगाने से पीड़ा कम करता है।
९. नेबासल्फ पाउडर (Nebasulf Powder)	Pfizer	घाव को साफ करके घाव पर पावडर को छिड़कें।	,, ,,
१०. सिबाजोल डस्टिंग पाउडर (Cibazol Dusting Powder)	Ciba	,, ,,	,, ,,
११. न्यूओस्पोरिन पाउडर (Neosprin Powder)	Burroughs wellcome	,, ,,	,, ,,

वातज विकार

[अ] एकौषध एवं साधारण प्रयोग

(१) यदि वातरोग के कारण रोगी के सर्वाङ्ग शरीर में पीड़ा हो तो अजमोद को तैल में खूब पकाकर मालिश करें और रोगी के बिस्तर पर अजमोद को गर्म कर फैला दें उस पर महीन कपड़ा डालकर रोगी को सुला दें और ऊपर से हलका वस्त्र उढ़ा दें। वातजशूल में जल्द लाभ होता है।

(२) अग्निमन्थ (अरनी छोटी) की जड़ की छाल को छाया शुष्क कर चूर्ण कर लें फिर उस चूर्ण में उसके पत्र स्वरस की ७ भावनायें देकर महीन चूर्ण बनाकर रख लें। ६ रत्ती से १ ग्राम तक गरम दूध या जल के साथ प्रातः-सायं सेवन कराने से वात व्याधि में लाभ होता है।

(३) आक की जड़ को अच्छी तरह साफकर दुगुना जल मिलाकर तैयार करें आधा जल शेष रहने पर छानकर उस पानी में (जल के समान प्रमाण में) गेहूं डालकर औटावें। जल सूख जाने पर गेहूं को धूप में शुष्क कर आटा पिसवा लें। इसमें से नित्य २५० ग्राम या कम अधिक लेकर वाटी बनाकर भली प्रकार कण्डों की आग पर सेक घृत मिलाकर सेवन कराने से जीर्ण वातरक्त यथा गठिया आदि जल्द दूर हो जाते है।

(४) आक के पत्ते ७ नग नीचे एक के ऊपर एक रखकर लोंग, अकरकरा, जायफल १०-१० ग्राम जौकुट कर रख दें। इस चूर्ण पर पुनः ७ पत्ते रखकर नीचे और ऊपर के पत्तों को सीं लें और तवे पर रखकर उस पर प्याला औंधावें नीचे एक पहर तक मन्दाग्नि से अग्नि जलावें जिसमें नीचे वाला पत्र लगभग जल जाय फिर दवाओं को महीन पीसकर रखें। १-४ रत्ती तक उचित अनुपान के साथ सेवन करने से वातजन्य रोगों यथा गठिया आदि में लाभ होता है।

(५) आक की जड़ की छाल १ भाग, कालीमरिच तथा कालानमक ½-½ भाग सबको मिलाकर जल के साथ महीन पीसकर चने के बराबर गोलियां बना लें किसी अंङ्ग में वातजन्य पीड़ा हो तो प्रातः-सायं १-१ गोली ६ ग्राम घृत के साथ सेवन कराने से विशेष लाभ होता है।

(६) आक के पत्र तथा भिलावा ७-७ नग तिल तैल में जलावें जब खूब जल जाय तो तैल छानकर शीशी में रखें। इसके २-२ बार की मालिश से हर प्रकार के दर्द में लाभ होता है।

(७) आक का फूल, सौंठ, कालीमरिच बांस की पत्ती समभाग लें। जल के साथ महीन पीसकर चने के बराबर गोलियां बना लें। २-२ गोली प्रातः-सायं जल के साथ सेवन करने से सभी प्रकार के वातरोगों में विशेष लाभ होता है।

(८) आक के पत्तों का पुटपाक विधि से रस निकालकर अर्धभाग तिल तैल मिलाकर पकावें। तैलमात्र शेष रहने पर शीशी में भरकर रख लें। रात्रि के समय निर्वात स्थान में रोगी की सन्धियों तथा शूल के स्थान पर मालिश करने से वातजन्य पीड़ा में लाभ होता है।

(९) आक के पत्तों को कूटकर वस्त्र में रख दें तथा पोटलिया बना लें इन पर घृत लगाकर तवे पर गरम कर सन्धि स्थान पर सेकने से वातजन्य शूल में लाभ होता है।

(१०) उड़द, कौंच के बीज, रेंडी की जड़ तथा खरैंटी मूल समभाग जौकुट कर अष्टमांश क्वाथ सिद्ध करें उसमें सेंधानमक तथा थोड़ी हींग मिलाकर नित्य प्रातः पीने से वातजन्य रोगों में विशेष लाभ होता है।

(११) लाल अगस्त्य की मूल को जल के साथ पीसकर गर्म कर लेप करने से वातजन्य पीड़ा तथा शोथ में लाभ होता है।

(१२) अखरोट की ताजी गिरी को पीसकर लेप करें तथा ईंट को गरम कर उस पर जल छिड़ककर कपड़ा

लपेट कर उस स्थान पर सेंक कर देने से शीघ्र वातज पीड़ा दूर हो जाती है।

(१३) अकरकरा का महीन चूर्ण ८० ग्राम, असगन्ध तथा सोंठ २५-२५ ग्राम, शुद्ध गूगल १०० ग्राम, एरण्ड-मूल का चतुर्थांश क्वाथ १ किलो लेकर प्रथम क्वाथ में गुग्गुल मिलाकर कलईदार पीतल की कढ़ाही में पकावें जब शहद जैसा गाढ़ा हो जावे तब उसमें शेष औषधियों का महीन चूर्ण धीरे-धीरे बुरकते हुये करछली से चलाते जावें जब सब मिलकर अवलेह के समान हो जाय तो थोड़ा घृत मिलाकर सबको लोहे के खरल में डालकर खूब घुटाई करें और १-२ ग्राम की गोलियां बना लें। दिन में २-३ बार १-१ गोली एरण्ड मूल क्वाथ के साथ सेवन कराने से वातरोगों में विशेष लाभ होता है।

—वनौषधि विशेषांक प्रथम भाग से।

(१४) कटसरिया के पंचांग को जौकुट कर क्वाथ बनाकर उसकी भाप वातज पीड़ा के स्थान पर देने से वातज शूल में लाभ होता है।

(१५) श्वेत कनेर के पत्ते या फूलों को पानी में मिलाकर आग पर पकावें। आधा पानी शेष रहने पर अच्छी तरह मथकर छान लें। पश्चात् इन छने हुये क्वाथ में चतुर्थांश जैतून का तैल और तैल का चौथाई गोंद मिलाकर पकावें जलीय अंश जल जाने पर छानकर रख लें इसकी मालिश से पीठ तथा कमर की पीड़ा तथा अन्य वातजन्य रोगों में लाभ होता है।

(१६) कलिहारी का कन्द ५० ग्राम, धतूरफल, मोठ, अजवायन २५-२५ ग्राम, अफीम ३ ग्राम इनका कल्क बना ५०० ग्राम सरसों के तैल के साथ विधिवत् तैल सिद्ध कर मालिश करने से वातजन्य शूल में लाभ होता है।

(१७) कलिहारी का कन्द तथा शतावरी का कन्द १०-१० ग्राम, धतूरफल स्वरस तथा लहसुन का रस ४०-४० ग्राम, सरसो का तैल ½ किलो लेकर यथाविधि तैल सिद्ध कर मालिश करने से वात पीड़ा तथा गठिया या सन्धिवात में लाभ होता है।

(१८) कलौंजी तैल का अभ्यङ्ग वातरोगों में लाभ-प्रद होता है साथ ही इसको उचित मात्रा का दूध में मिलाकर पान कराने से [illegible], [illegible] आदि वात विकार दूर होते हैं।

(१९) शरीर में वातज पीड़ा या जकड़न होने पर कालीमरिच को जल में महीन पीसकर मोटा लेप पीड़ा स्थान पर चढ़ाकर ऊपर से सेंक करने से जल्द लाभ होता है यदि इसके साथ लहसुन को महीन पीसकर चटनी बना सेवन किया जाय तो विशेष लाभ देखने को मिलता है।

(२०) कुचला के २५ बीज लेकर लगभग ½ किलो पानी में भिगोकर ३-३ दिन में जल बदल दें। इस प्रकार १५ दिन भिगोकर छिलका दूर कर शुष्क कर भस्म करा लें। जितनी भस्म हो उतने ही वजन की कालीमरिच उसमें मिलाकर २-२ रत्ती की गोलियां बना लें। प्रातः-सायं १-१ गोली शहद के साथ मिलाकर सेवन कराने से सभी प्रकार के वात विकारों यथा पक्षाघात गृध्रसी आदि में लाभ होता है।

(२१) कुचले को घी में भूनकर महीन चूर्ण कर उसमें शुद्ध वच्छनाग का महीन चूर्ण समभाग मिलाकर अदरक स्वरस में ७ दिन खरलकर २-२ ग्रेन की गोलियां बना लें। १-२ गोली गर्म घृत के साथ प्रातः-सायं सेवन करने से लकवा तथा अन्य वातरोगों में विशेष लाभ होता है।

(२२) एरण्ड तैल में भुना हुआ कुचला चूर्ण के साथ समभाग कालीमरिच चूर्ण लेकर इन्द्रायण फल के रस की १२ घण्टे तक भावना देकर ½ रत्ती की गोलियां बना लें। १-२ गोली सुबह-शाम [illegible] के रस के साथ कुछ दिनों तक सेवन कराने से जीर्ण वातरोगों में लाभ हो जाता है।

(२३) कुचला के २५ बीजों को आधा किलो [illegible] में भिगोकर दूसरे दिन बीजों को लोहे के खरल में कुचला-कर पुनः उक्त [illegible] में मिला कलईदार कढ़ाही में १ किलो तिल तैल के साथ [illegible] कर पकावें [illegible] के जल जाने पर आग को [illegible] कि सब कुचला जल जाय फिर [illegible] छानकर शीशी में भरकर रख लें। इसकी मालिश से वात की समस्त पीड़ा शीघ्र दूर हो जाती है विशेष कर

हो तो इसे मलकर ऊपर से गर्म रुई से सेककर रेंडीपत्र पर इस तैल को चुपड़कर बांधने से लाभ होता है।

(२४) ५० ग्राम कुचला को भैंसे के १ किलो गोबर में पानी मिलाकर घोलकर धूप में रखें शाम को मटकी में चूल्हे पर चढ़ाकर २ घण्टे मन्दाग्नि दें और लकड़ी से चलाते रहें। प्रातः कुचलों को साफकर बीच की मींगी निकाल दें प्रत्येक के ४-४ टुकड़े कर पोटली में बांधकर १ किलो दूध में पकाकर कूटकर चूर्ण बना लें। इसमें त्रिकटु, जायफल, जावित्री १०-१० ग्राम चूर्ण कर अदरक स्वरस, पान स्वरस या ग्वारपाठे के रस में खरलकर ४-४ रत्ती की गोलियां बना लें प्रातः-सायं १-१ गोली दूध, घृत या मधु के साथ सेवन कराने से जीर्ण वातरोगों में निश्चित रूप से लाभ होता है।

(२५) खरैंटीमूल के क्वाथ में घृत में भुनी हींग तथा सैंन्धवलवण मिलाकर पिलाने से पक्षाघात, गृध्रसी तथा अन्य वातरोगों में विशेष लाभ होता है।

(२६) प्रसारिणी या गन्ध प्रसारिणी के पंचांग को जौकुट कर ४ किलो ले लें और उसे ३२ किलो पानी में औटावें। ८ किलो शेष रहने पर उसमें १ किलो गुड़ मिलाकर पुनः पकावें अवलेह तैयार होने पर उसमें पीपल, पीपरामूल, चव्य, चित्रक तथा सोंठ प्रत्येक का २०-२० ग्राम चूर्ण मिला दें। १० ग्राम सुबह शाम दूध से सेवन करने से आमवात आदि वात विकारों में लाभ होता है।

(२७) गुंजा के पत्तों के कल्क में रेंडी तैल मिलाकर गरमकर पुल्टिस के समान बांधने या वेदना स्थान पर गरम कर रेंडी तैल मर्दन कर ऊपर से इसके पत्तों को गरम कर बांधने तथा ऊपर से सेंकने अथवा पत्तों को गरम किये हुये सरसों तैल में डुबोकर सुहाता-सुहाता बांधने से वातज पीड़ा में लाभ होता है।

(२८) द्रोणपुष्पी (गूमा) के पंचांग का चूर्ण ६ ग्राम प्रातः-सायं २० ग्राम मधु में मिलाकर सेवन कराने से अर्धांगवात, ऊर्ध्ववात तथा अन्य वातरोगों में विशेष लाभ होता है।

(२९) गोरखमुण्डी के फल के साथ समभाग सोंठ चूर्ण एकत्र पीस गरम जल के साथ २-८ ग्राम तक सेवन कराने से तथा फलों को महीन पीसकर पीड़ा स्थान पर लेप करने से सन्धिवात, आमवातजन्य वातरोगों में लाभ होता है। —वनौषधि विशेषांक भाग २ से।

(३०) नागदमनी का स्वरस तथा गोमूत्र दोनों ½-½ किलो लेकर एकत्र कर उसमें सरसों तथा रेंडी का तैल २००-२०० ग्राम मिलाकर मन्दाग्नि पर पकावें। इस तैल में कर्पूर २० ग्राम मिलाकर मालिश करने से वातजन्य रोगों में लाभ होता है।

(३१) निर्गुण्डी पत्र स्वरस के साथ समभाग भांगरा पत्र स्वरस तथा तुलसीपत्र स्वरस एकत्र मिला उसमें ¼ भाग अजवायन चूर्ण मिलाकर पिलाते हैं तथा ७ दिन पश्चात् शुद्ध घृत ५ ग्राम कालीमरिच १ ग्राम एकत्र मिला गरम कर उसमें ५ ग्राम इसका पत्र स्वरस तथा २० ग्राम गोमूत्र मिला रोगी को ७ दिन तक प्रातः पिलाते हैं इससे वातजन्य विभिन्न रोगों में विशेप लाभ होता है।

(३२) निर्गुण्डीपत्र स्वरस, भांगरा स्वरस, धतूरारस, गोमूत्र १-१ किलो एकत्र कर उसमें १ किलो तिल तैल तथा कल्कार्थ वच, कूठ, धतूरा बीज, मालकांगनी, कायफल १०-१० ग्राम तथा वच्छनाग ५० ग्राम एकत्र पीस कल्क कर तैल सिद्ध कर ले। इस तैल की मालिश से विभिन्न वातजन्य रोगों में लाभ होता है।

(३३) निशोथ २० ग्राम, अमरवेल ५ ग्राम, सुरिंजान कड़ुआ २० ग्राम, हरड़ ४० ग्राम, गुलबनफ्सा ४० ग्राम, सोंठ ३० ग्राम, सकमुनिया ३० ग्राम एकत्र कर चूर्ण बना लें। ५-८ रत्ती तक सेवन कराने से विभिन्न वातरोगों में लाभ होता है।

(३४) नीम की अन्तरछाल को पानी के साथ खूब महीन पीसकर वातजन्य पीड़ा के स्थान पर गाढ़ा लेप करने से विशेष लाभ होता है। नीम की अन्तःछाल २०-४० ग्राम की मात्रा में पीने से वातजन्यरोग यथा लकवा, अर्धांगवात आदि में लाभ होता है।

(३५) दूध २०० ग्राम को पकाने पर जब यह आधा रह जाय तब उसमें पिप्पलीमूल का महीन चूर्ण १० ग्राम तक डालकर औटावें। ५० ग्राम दूध शेष रहने पर मिश्री का चूर्ण २० ग्राम मिला प्रतिदिन प्रातः १ बार सेवन

कराने से विभिन्न प्रकार के वात विकारों में लाभ होता है।

(३६) पीलू के पत्तों को कूटकर गरमकर झीने सूती वस्त्र में लपेटकर बांधने से अथवा पत्तों को कूटकर कपड़े में बांधकर पोटली बना आग पर गरम कर पीड़ित स्थान पर सेक करने से वातजन्य पीड़ा में लाभ होता है।

(३७) पोहकरमूल के चूर्ण के साथ समभाग असगन्ध व चोपचीनी का चूर्ण मिला १ ग्राम की मात्रा में शहद के साथ सुबह शाम सेवन कराने से विभिन्न वातरोगों में विशेष लाभ होता है।

—वनौषधि विशेषांक चतुर्थभाग से।

(३८) बादाम की गिरी १-२ लेकर जल में भिगोकर छिलका दूर कर चन्दन घिसने के पत्थर पर थोड़े जल के साथ पूर्णतया घिसकर उसमें समभाग शहद मिलाकर चाटने से कम्पवात तथा अन्य वातजन्य रोगों में लाभ होता है।

(३९) विधारामूल के चूर्ण को यथोचित मात्रा में गोदुग्ध, रेंडी तैल या गोमूत्र के साथ सेवन कराने से विभिन्न प्रकार के वातरोगों में लाभ होता है।

(४०) मिलावें की डण्डी, भुने चने की छाल, नारियल की गिरी, गुड़ तथा घी इन पांचों को समभाग एकत्र कूट-पीसकर ५०-५० ग्राम के लड्डू बना लें। सुबह १ लड्डू दूध के साथ सेवन कराने से विभिन्न प्रकार के वातरोगों में लाभ होता है। —वनौषधि विशेषांक ५ भाग से।

(४१) वातज वेदना में राई तथा थोड़ी शक्कर को पीसकर कपड़े की पट्टी पर लेप कर शूल स्थान पर चिपकाने से लाभ होता है। इस पट्टी को आध घण्टे के बाद खोलकर उस स्थान पर घी या तैल लगाना चाहिये।

(४२) वातरोगों में एरण्ड तैल विशेष गुणकारक है इस हेतु इसे वातारि संज्ञा दी जाती है कटिशूल, गृध्रसी, पार्श्वशूल, आमवात, सन्धिवात इन सब रोगों में एरण्ड-मूल तथा सोंठ का चूर्ण क्वाथ करके देने से एवं वेदना वाले स्थान पर एरण्ड तैल की मालिश करने से लाभ होता है।

(४३) एरण्ड के बीज की जिह्वा निकाली गिरी १०-१० ग्राम दूध में पकाकर सुबह सेवन कराने से गृध्रसी तथा अन्य वातरोगों में लाभ होता है।

(४४) लहसुन का पानी ५० ग्राम, कडुआ तैल ½ किलो दोनों को मिलाकर आग पर रखें जब समस्त पानी जलकर केवल तैल शेष रहे तो शीशी में रख लेवें और आवश्यकता के समय इस तैल को वातजन्य पीड़ा में लगावें तो विशेष लाभ देखने को मिलता है।

(४५) लहसुन साफ किया हुआ २५० ग्राम लेकर ५०० ग्राम दूध में डालकर मन्दाग्नि पर पकावें जब भली प्रकार एक दिल हो जाय तो अच्छी तरह मलकर छान लें और फिर दुबारा आग पर रखकर पकावें यहां तक कि खोवा बन जाय फिर इसमें खांड मिलाकर २०-२० ग्राम के पेड़े बना लें उसमें से १ पेड़ा प्रातःकाल तथा १ पेड़ा शाम को खिलाने से विभिन्न वातरोगों में लाभ होता है।

(४६) लहसुन, सोंठ तथा निर्गुण्डी इन तीनों को २०-२० ग्राम ले लें तथा ८ गुने जल में मिलाकर उबालें। आधा जल शेष रहने पर छानकर इस प्रकार सुबह शाम पिलाते रहने से आमवात तथा अन्य वातरोगों में लाभ होता है।

(४७) लहसुन को स्वच्छ कर १० ग्राम में तथा भुनी हींग, जीरा, कालाजीरा, सेंधानमक, कालानमक, सोंठ, कालीमरिच, पीपल यह सब ३-३ रत्ती मिलाकर कल्क बना लें फिर उसमें थोड़ा तिलों का तैल मिलाकर रोगी को खिलाने से तथा ऊपर से २० ग्राम एरण्ड तैल सेवन कराने से विभिन्न वातरोग यथा एकांगवात, सर्वांगवात, उरुस्तम्भ, सन्धिवात में लाभ होता है।

(४८) छिले हुये लहसुन के कल्क २० ग्राम को चौगुने गोदुग्ध तथा चौगुने जल में पकावें जब क्षीरमात्र शेष रहे तब छानकर सुबह पिलाने से गृध्रसी तथा अन्य वातरोगों में लाभ होता है।

(४९) लहसुन २५० ग्राम, कालीमरिच २५० ग्राम, अफीम २० ग्राम इन तीनों को कूट करके २ किलो काली तिली के तैल में मिला दें फिर इन सबको किसी

लोहे के लोटे में रखकर मुख को किसी पात्र द्वारा सन्धि-बन्धन करके बन्द कर दे और इस लोटे को चूल्हे के नीचे गड्ढा खोदकर उसमें रखकर ऊपर से मिट्टी दवा दें इस चूल्हे पर रोटियां होती रहें। १५ दिन वाद वर्त्तन को चूल्हे से निकाल लें और तैल छानकर वोतल में भर लें इसकी लगातार मालिश करने से समस्त वातरोगों में निश्चित लाभ देखने को मिलता है।

(५०) लहसुन साफ किया हुआ आधा किलो लेकर १ किलो गोदुग्ध में इतना पकावें कि लहसुन भली प्रकार गल जाय फिर मधु ५० ग्राम तथा घी ६० ग्राम मिलाकर खूब घोटें इसके वाद अग्नि से उतार कर लौंग, जायफल, जावित्री, कालीमरिच, रूमीमस्तङ्गी, छोटी इलायची, कावुली हरड़ का छिलका, दालचीनी, सौंठ प्रत्येक ३० ग्राम अगर तथा केशर प्रत्येक १०-१० ग्राम मिलाकर माजून वना वें। ५-७ ग्राम तक १२० ग्राम गावजवां के अर्क के साथ प्रयोग कराने से पक्षवध, अर्दित, कम्पवात आदि विकार दूर होते हैं।

(५१) लहसुन छिला हुआ १ भाग, फरफियुन, अकरकरा प्रत्येक तिहाई भाग, कालीमरिच, सुदाव प्रत्येक ¼ भाग सवका चूर्ण कर नौगुने जैतून तैल में पकावें। औषधि के जल जाने पर उतारकर शीतल कर छान लें। इस तैल के अभ्यङ्ग से वातजन्य पीड़ा में लाभ होता है।

(५२) शीशम की मोटी छाल का चूरा जल में उवालें जव पानी का आठवां भाग शेष रह जाय तव ठण्डा होने पर कपड़े से छानकर फिर इसे चूल्हे पर चढ़ाकर गाढा करें इस गाढ़े पदार्थ की १० ग्राम की मात्रा में घी युक्त दुग्ध पाक के साथ में २१ दिन तक लेने से गृध्रसी तथा अन्य वातरोगों में लाभ होता है।

(५३) शोभांजन के पौधे की जड़ का क्वाथ पिलाने से पुराने वातरोग गठिया, अर्धाङ्गवात, सर्वाङ्गवात आदि में विशेष लाभ होता है।

(५४) संहजने का गोंद २५० ग्राम लेकर उसे घी में तल देना चाहिये फिर गेहूँ का आटा आधा किलो लेकर घी ½ किलो में भून लेना चाहिये फिर गुड़ ½ किलो और सौंठ ४० ग्राम पीसकर सवको मिलाकर लड्डू वना लेने चाहिये। इन लड्डुओं को सुवह शाम सेवन कराने से वायुविकार, गृध्रसी तथा अन्य वातविकारों में लाभ होता है। —वनौषधि विशेषांक छठे भाग से।

(५५) त्रिफला, नीम की छाल, अड़ूसा, परवल सभी को २०-२० ग्राम लें तथा क्वाथ वना लें फिर इसमें थोडा शुद्ध गूंगल मिलाकर प्रातः सेवन कराने से अर्दित तथा अन्य वातरोगों में लाभ होता है।

(५६) वच ३० ग्राम, स्याहजीरा, कलौंजी, पोदीना तथा कालीमरिच १०-१० ग्राम पीसकर कपड़े में छान लें। फिर इस चूर्ण को २०० ग्राम शहद में मिला दें इसमें से ६-८ ग्राम तक दवा चाटने से विभिन्न वातविकार यथा लकवा, गृध्रसी में लाभ होता है।

(५७) कुचले के पत्ते, सौंठ, सांभर का सींग इनको समानभाग लेकर पानी के साथ पीस लें इस लेप को वातजन्य पीड़ा के स्थान पर लेप करने से लाभ होता है।

(५८) अकरकरा, कालीमरिच तथा छोटी पीपर प्रत्येक ३-३ ग्राम, पीपरामूल ६ ग्राम, सौंठ १० ग्राम तथा शुद्ध वच्छनाग १० ग्राम इनको कूट छानकर घी में मिलाकर मूंग के समान गोलियां वना लें। १-२ गोली तक सुवह शाम दूध या जल से सेवन कराने से विभिन्न वातरोगों में लाभ होता है।

(५९) अरण्ड, धतूरा, आक, सहदेई, संहजना, असगन्ध तथा सम्मालू इन सवके पत्तों का १२५-१२५ ग्राम स्वरस निकाल लें इसमें रस के वरावर मीठा तैल मिलाकर मन्दाग्नि से पकावे जव तैल पाक हो जाय तो उसमें २०-२० ग्राम सौंठ तथा कडुआ कूट और पीसकर मिला दें। इस तैल से मालिश करने से विभिन्न प्रकार की वातजन्य पीड़ा में लाभ होता है।

(६०) उड़द की दाल भिगोकर छिलके उतार लें और सिल पर पीठी पीस लें फिर उसमें लहसुन मिलाकर फिर पीसें और अन्दाज का अदरक, हींग, सैंन्धानमक, मिलाकर वड़े वना लें और तिल के तैल में पकावें इन वड़ों का इच्छानुसार सेवन कराने से विभिन्न वातरोगों में लाभ होता है।

(६१) शुद्ध अफीम, शुद्ध कुचला तथा कालीमरिच वरावर-वरावर लेकर वंगला पान के रस के साथ खूब खरल कर १-१ रत्ती की गोलियां वना लें सुवह शाम

गोली शहद या पान के बीड़े के साथ सेवन करने से [illegible] प्रकार की वातव्याधि नष्ट होती है।

(६२) रेंडी १० ग्राम, लाहौरीनमक १० ग्राम, मैदा [illegible] १० ग्राम, हींग ६ ग्राम, गेहूँ का आटा १२५ ग्राम सबको एक साथ सिल पर पीसकर रोटी सी बनाकर [illegible] लें जब रोटी पक जावे तब उसे पीड़ा के स्थान पर [illegible]ने से लाभ होता है।

(६३) अरण्डी के बीजों की गिरी २०० ग्राम, बादाम गिरी ५० ग्राम, लौंग ६ ग्राम, छोटी पीपर ६ ग्राम, [illegible] इलायची ६ ग्राम इन सबको महीन पीसकर १ किलो [illegible] में औटावें जब दूध जलकर खोया हो जाय ७५० [illegible] मिश्री की चाशनी बनाओ उसी खोये में इसे डाल फिर एक साफ मिट्टी के वर्त्तन में उस दवा को भरकर बन्द कर दें और जौ के ढेर में ४० दिन तक दाबकर इसके बाद निकाल लें। इसमें से ३ ग्राम मात्रा दूध [प्र]ातः-सायं सेवन करने से विभिन्न वातरोग निर्मूल हो [जा]ते हैं।

(६४) कालीमूसली, सफेदमूसली, छोटी पीपर, अज-[वाय]न, पीपरामूल २००-२०० ग्राम, शतावर, विधारा, और असगन्ध ८०-८० ग्राम इनको कूट-पीसकर [छान] लें तथा पुराने गुड़ में मिलाकर जंगली बेर के समान [गोलि]यां बना लें। १ गोली सुबह तथा १ गोली रात को [दूध] के साथ सेवन कराने से आमवात तथा अन्य वात-[रोगों] में लाभ होता है।

(६५) सम्मालू के पत्ते कूटकर रस निचोड़ लें [जित]ना रस हो उसमें उतना मीठा तैल मिला दें फिर [आ]ग पर औटावें। जब तैल मात्र शेष रह [जाय] उतार कर छान लें इस तैल से वायु पीड़ित स्थान [पर] मालिश करने से तथा सम्मालू के पत्ते पीड़ित स्थान [पर] बांधने से शूल में लाभ होता है।

(६६) काले धतूरे के पत्ते, फल, जड़ को कूटकर [र]स निकाल लें यह स्वरस १½ किलो ले लें। इसमें १२५ ग्राम तिल का तैल, १२५ ग्राम अलसी का तैल [त]था १२५ ग्राम सरसों का तैल मिला दें। जब रस जल-[कर] तैल मात्र रह जाय उतारकर छान लें इस तैल को वायु से पीड़ित स्थान पर मालिश करने से शीघ्र और स्थायी लाभ होता है।

(६७) एक बड़ा तथा मोटा चमगादड़ लेकर अन्दाज के मीठे तैल में डुबोकर औटाने को रख दें। जब चमगादड़ जल जाय तैल को उतारकर छान लें इस तैल को लगाने से आमवात, कम्पवात, आढ्यवात आदि में लाभ होता है।

(६८) रात के समय आधा किलो तम्बाकू को १ किलो पानी में भिगो दें सुबह मलकर छान लें इस तम्बाकू के पानी में २५० ग्राम तिल तैल मिलाकर आग पर औटावें जब पानी जलकर तैलमात्र रह जाय तो उतारकर छान लें। इस तम्बाकू के तैल की मालिश करने से विभिन्न प्रकार के वातजन्य शूल दूर होते हैं।

(६९) सिरस के पत्ते, सम्मालू के पत्ते तथा सहजने के पत्ते १२५-१२५ ग्राम लेकर २ किलो पानी में औटावें और इसका भपारा वातजन्य पीड़ा के स्थान पर दें तो शीघ्र लाभ होता है।

(७०) बकरी की मेंगनी १२५ ग्राम तथा जौ का आटा ६० ग्राम लेकर जल में मिलाकर लेप बना लें इस लेप को वातजन्य पीड़ा के स्थान पर लेप करने से लाभ होता है। —चिकित्सा चन्द्रोदय भाग ७ से।

(७१) नकछिकनी, असगन्ध, सुरंजानशीरी, सोंठ, इनको बराबर-बराबर लेकर कूट-पीस छानकर रख लें। ३-६ ग्राम तक गर्म जल या दूध के साथ सुबह शाम सेवन कराने से वायु से सम्बन्धित शूल दूर होता है।

—धन्वन्तरि अक्टूबर ४१ से।

(७२) गांजा १० ग्राम, लालमरिच कूटी ४० ग्राम, सरसों का कच्चा तैल १ किलो बिना जल के पकाकर रख लें। वात के किसी भी दर्द में प्रयोग कराने से शीघ्र लाभ होता है। [illegible]

—धन्वन्तरि [illegible] से।

(७३) आक के पत्तों का स्वरस [illegible] पत्तों का स्वरस १ किलो, [illegible] किलो [illegible] के पत्तों का [illegible] किलो, तिल का तैल ३ किलो लेकर सबको [illegible] आग पर पकावें जब

तेल मात्र रहे तो छानकर ठण्डा कर लें और वायु के स्थान पर मालिश कर गरम नामा बांध दें तो कुछ दिन में ही वायु का दर्द मिट जाता है।

—पं० शालिग्राम शर्मा द्वारा
धन्वन्तरि नवम्बर ३१ से।

(७४) शुद्ध कुचला, शुद्ध वत्सनाभ, शुद्ध हिंगुल, शुद्ध धतूरे के बीज चारों ५०-५० ग्राम लेकर हिंगुल के अलावा तीनों चीजों का कपड़छन चूर्ण कर लें फिर इस चूर्ण तथा हिंगुल को मिलाकर एक खरल में आर्द्रक स्वरस, चित्रक के क्वाथ तथा तुलसीपत्र स्वरस की ३-३ भावना देकर गुंजा प्रमाण वटी बना सुखा लें। १-२ गोली तक सुबह शाम जल या दूध के साथ सेवन कराने से सभी प्रकार के वायुरोगों में लाभ होता है।

—आचार्य बद्रीदत्त द्वारा
धन्वन्तरि गुप्तसिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(७५) सोंठ देशी तथा सोंठ बेतरा २००-२०० ग्राम, धनियां २०० ग्राम, गुड़ ६०० ग्राम, तैल सरसों २५० ग्राम लेकर प्रथम सरसों के तैल में सोंठ तथा धनिये को भूनें जब साधारण लाल हो जावे तब गुड़ की चाशनी बनाकर लड्डू बांध लें। प्रातः-सायं १-१ लड्डू सेवन करने से अनेक प्रकार के वातरोगों में लाभ होता है।

—पं० राधेमोहन मिश्रा द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(७६) शुद्ध कुचला, सोंठ, साबरशृङ्ग, आक मूल सभी को लेकर पीसकर गरम कर सुहाता-सुहाता लेप करने से वातजन्य पीड़ा का शमन होता है।

—श्री किशनलाल वर्मा द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(७७) शांवर वेल २५० ग्राम, अजमोद २० ग्राम, सोंठ १० ग्राम को इमामदस्ते में कुछ पानी छिड़कते हुए कूट लें। जब लुगदी से स्वरस निकलने लगे, तब १०० ग्राम स्वरस निकालकर वात के रोगी को प्रातः पिला दें। इसी प्रकार शाम को भी पिला दें। इसके कुछ दिनों के सेवन से वातरोगों में लाभ हो जाता है।

—पं० सागरचन्द महात्मा द्वारा
धन्वन्तरि मार्च ४८ से।

(७८) ताजी झींगा मछली १ किलो, ताजे केंचुए ½ किलो, शुद्ध तैल मीठा २ किलो लें। पहले दोनों चीजों को बारीक कुचलकर मीठे तैल में धीमी धीमी अग्नि से पकावें। जब क्षोम जल जाय, तब ठण्डा होने पर उतार कर शीशियों में भर लें। इसकी मालिश से अङ्ग-प्रत्यङ्ग का दर्द; गठिया, फालिज आदि ७० प्रकार के वातरोगों के लिए रामबाण है। इसका प्रयोग बाह्यरूप से मर्दन आदि द्वारा किया जाता है तथा १ बूंद से ५ बूंद तक पान में डालकर आन्तरिक सेवन भी किया जाता है। इन दोनों विधियों से यह तैल आशातीत गुण करता है।

—हकीम शोभासिंह द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक तृतीय भाग से।

(७९) किशोर गुग्गुल २४० ग्राम, लोह भस्म २ ग्राम, समीरपन्नग रस २ ग्राम, कपर्द भस्म १० ग्राम खरल में डालकर खूब घोटें, फिर पुनर्नवाष्टक क्वाथ घनसत्व चतुर्गुण डालकर खूब घोटें। गोली बनाने योग्य हो जाने पर २-२ ग्राम की गोलियां बना लें। २-२ गोली प्रातः-सायं एरण्ड स्नेह मिश्रित गोदुग्ध के साथ सेवन कराने से विभिन्न वातरोगों में लाभ होता है।

—पं० सुदेवचन्द्र पाराशरी द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(८०) कालीमरिच ५० ग्राम, नकछिकनी १०० ग्राम, नीम के ताजे पत्ते २०० ग्राम, शुद्ध कणगूगल २०० ग्राम; इन सबको यथाविधि खरल में कूटकर ४-४ रत्ती की गोलियां बना लें। १-२ गोली तक उष्ण जल के साथ या दुग्ध के साथ सेवन कराने से विभिन्न वायु-विकारों यथा कमर, घुटनों, सन्धि स्थान की वेदना में लाभ होता है।

—वैद्य खेमराज शर्मा द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(८१) एक हांडी में आधा किलो धतूर के फल रख दें और ऊपर से आधा किलो सोंठ रख दें। फिर आधा किलो अजवायन रख कर ऊपर से आधा किलो धतूरे के फल कटे हुए और रखकर हांडी में गले तक जल भर दें तथा मन्दाग्नि पर पकावें। ६ घंटे बाद नीचे उतार कर सोंठ निकाल लें और सुखाकर चूर्ण कर लें। यह सोंठ

का चूर्ण २५० ग्राम, काला नमक २५० ग्राम, घी में भुनी हींग १२५ ग्राम, फूला सुहागा २५० ग्राम, सबको सहंजने की छाल के स्वरस में ४८ घंटे घोटकर २-२ रत्ती की गोलियां बना लें। १-२ गोली गरम जल या अदरक रस के साथ सेवन करावें, तो सभी प्रकार के वायुरोगों मे लाभ होता है। —वैद्य सुन्दरलाल जैन द्वारा

गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(८२) पारद, गन्धक, मैनसिल, हरताल सब १०-१० ग्राम अशुद्ध ले लें। पारद, गन्धक की कज्जली बनावें। फिर सब चीजों को लोहे की कढ़ाही मे १ किलो सरसों का तैल डालकर पकावें और खरपाक हो जाने पर छान लेवें। बाद में ६ ग्राम अफीम तथा २५ ग्राम कपूर मिला कर बोतलों में रख लेवें। यह तैल हर प्रकार के वायु दर्द के लिए अक्सीर है।

—वैद्य शिरोमणि लक्ष्मीचन्द द्वारा

गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(८३) कपूर देशी २० ग्राम, टरपेण्टाइन आइल ४० ग्राम, यूकेलिप्टिस १० ग्राम, लोंग का तैल १५ ग्राम, जैतून का तैल ८० ग्राम, रौसा का तैल १० ग्राम; इन सभी दवाओं को शीशी में डालकर रख लें। इनकी मालिश करने से गठिया आदि वातव्याधि शीघ्र दूर हो जाती है। —वैद्य रामगोपाल गुप्त द्वारा

गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(८४) पारद गन्धक की कज्जली, कुचला शुद्ध, सींगिया विष तीनों १०-१० ग्राम, जयपाल शुद्ध ३ ग्राम लेकर पान के रस में घोट २-२ रत्ती प्रमाण की गोलियां बना लें। १-१ गोली सुबह, शाम शहद या रास्नादि अर्क के साथ सेवन कराने से गृध्रसी तथा अन्य वातरोग निर्मूल हो जाते हैं। —वैद्य श्यामविहारी द्वारा

गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(८५) विषमुष्टि चूर्ण, एलुआ हिंगु, कर्पूर, टंकण, शुद्ध गुग्गुल सभी समभाग लें। पहले गुग्गुल को एरण्ड स्नेह से कूट पतला कर शेष सभी वस्तुओं का सूक्ष्म चूर्ण इसमें मिलाते जावें। सभी के मिल जाने पर ४-४ रत्ती की गोलियां बना लें। १-१ गोली सुबह, शाम दूध के साथ सेवन कराने से वातरोगों में विशेष लाभ होता है। —श्री निशिकान्त बी० ए० द्वारा

गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(८६) ६० ग्राम बंगला तम्बाकू को आधा किलो जल में १२ घंटे भिगोकर तथा हाथों से मलकर पानी छान लें और धतूरे के पत्तों का रस २५० ग्राम, लहसुन १०० ग्राम छिलका निकला हुआ पीस लें। इनको २५० ग्राम तिल तैल, २५० ग्राम अलसी तैल, २५० ग्राम एरण्ड तैल में मिलाकर कढ़ाही में डाल अग्नि पर पकाकर तैल विधि से तैयार कर लें। इसे वातदर्द, पृष्ठशूल में मालिश करने से लाभ होता है।

—कविराज ब्रह्मानन्द चन्द्रवंशी द्वारा

प्रयोग मणिमाला से।

(८७) कड़वी तुम्बी का गूदा १० ग्राम, हरड़ का वक्कल ५० ग्राम, मुसब्बर २५ ग्राम, सुरञ्जान शीरी २५ ग्राम केशर ६ रत्ती। सबको कूट, कपड़छन करके ग्वारपाठे के रस में घोट चने बराबर गोलियां बना लें। प्रातः, सायं ४-४ गोलियां उष्ण दुग्ध अथवा उष्णोदक के साथ लेने से वायुरोगों में लाभ होता है।

—श्री रघुवीरशरण आयुर्वेदाचार्य द्वारा

प्रयोग मणिमाला से।

(८८) उसवा असली, चोबचीनी दोनों १०-१० ग्राम को कुचलकर ४०० ग्राम पानी में औटावें। जब १४० ग्राम पानी शेष रहे, तब छानकर ५० ग्राम शहद मिला पिलाने से कुछ दिनों में वातरोग निर्मूल हो जाता है।

—वैद्यनाथ प्रसाद शर्मा द्वारा

प्रयोग मणिमाला से।

(८९) सुरञ्जान मीठी १० ग्राम, रूमीमस्तगी १० ग्राम, असगन्ध नागौरी १० ग्राम, सूखकला बिना गिरी १० ग्राम, विधारा ६० ग्राम, मिश्री ५० ग्राम। सभी द्रव्यों को कूट-पीस छानकर शीशी में भर रख लें। ६-६ ग्राम सुबह, शाम गरम पानी या दूध के साथ सेवन कराने से वातरोगों में विशेष लाभ होता है।

—कविराज विष्णुप्रकाश द्वारा

प्रयोग मणिमाला से।

(९०) धतूरे के पके फल २० नग, अण्डी की जड़ की छाल ४०० ग्राम, कटहरी की जड़ २०० ग्राम, तीनों को ४ किलो पानी में कूटकर डाल दें। जब २ किलो पानी शेष रहे, तब छानकर उस क्वाथ में मेंथी २०० ग्राम, असगन्ध १०० ग्राम कूटकर डाल दें और एक दिन रखा रहने दें। फिर सरसों का तैल २ किलो डालकर तैलपाक विधि से तैल बनाकर रख लें। इसकी मालिश करने से शरीर की पीड़ा, गठिया, वात के अन्य विकार सभी नष्ट हो जाते हैं। —वैद्य यमुनाप्रसाद द्वारा प्रयोग मणिमाला से।

वातरोग नाशक कुछ स्वेदन प्रयोग—

(९१) सम्भालू के पत्ते, अरनी के पत्ते, एरण्ड के पत्ते, सहजने की छाल, आक के पत्ते सभी १००-१०० ग्राम लेकर एक बड़े घट में उक्त सभी चीजें डालकर तेज आग पर पकावें। जब आधा पानी शेष रहे, तब आग बन्द कर दें और रोगी को स्वेदन दें। इस प्रकार कुछ दिनों तक स्वेदन देने से पक्षाघात, आमवात आदि विकार दूर होते हैं।[1]

(९२) जौकुट सोंठ तथा लहसुन ६-६ ग्राम, बकायन के पत्ते, सम्भालू के पत्ते २५०-२५० ग्राम, सबको २ कि० पानी में औटावें। खूब अच्छी तरह भाप निकलने पर रोगी को स्वेदन दें। वातरोगों में विशेष लाभदायक स्वेदन है।

(९३) सम्भालू के पत्ते, एरण्ड के पत्ते, सहजने के पत्ते, अमरवेल, धतूरे के पत्ते सभी २००-२०० ग्राम, लेकर ३ कि० पानी में औटावें। तेज भाप निकलने पर स्वेदन विधि से स्वेदन दें। पक्षाघात, गृध्रसी तथा अन्य वातरोगों के लिए उत्तम लाभकारी है।

—धन्वन्तरि पक्षाघात रोगांक से।

(९४) एरण्ड तैल से शुद्ध किये कुचले का कपड़छन चूर्ण, मल्ल सिन्दूर तथा रजत भस्म तीनों सममाग मिला अर्जुन की छाल के क्वाथ की ७ भावनायें देकर ½-½ रत्ती की गोली बना लें। १-२ गोली प्रातः-सायं गोदुग्ध या दशमूल क्वाथ के साथ सेवन कराने से अर्दित, खञ्जवात, कम्पवात आदि वातरोगों में लाभ होता है।

—रसतन्त्रसार सिद्ध योग संग्रह से।

१—स्वेदन देने की विधि—रोगी को बिना बिछौने की चारपाई पर लिटाकर ऊपर से कम्बल उढ़ा दें। कम्बल ऐसा होना चाहिए कि नीचे जमीन तक छूता हुआ लटकता रहे। अब खाट के नीचे दवा का पानी किसी चौड़े मुख के बरतन में डालकर रख दें। अब दवा के इस गरमा-गरम पानी से भाप उठेगी, उसका रोगी के पीड़ित भाग में लगना अति आवश्यक है। भाप के लगने से रोगी को पसीना आने लगता है। रोगी की सामर्थ्य के अनुसार १० मिनट से ६० मिनट तक यह स्वेदन-क्रिया की जा सकती है।

स्वेदन के विषय में ध्यान रखें—

(१) सिर कम्बल से बाहर खुला हुआ रखें।

(२) भाप देने की क्रिया बन्द कमरे में सम्पन्न करें।

(३) प्रथम में स्वेदन कम समय तक करें, बाद में यह समय बढ़ाया जा सकता है।

(४) भाप देने के बाद रोगी को लेटा रहने दें। पसीना भीतर ही भीतर किसी कपड़े से पोंछते जावें। जब तक पसीना निकले, तब तक शरीर को ढंका रहने दें।

(५) जब पसीना आना बन्द हो जावे, तब रोगी को शरीर पर बारीक पिसी हुई सोंठ का चूर्ण मल दें, जिससे रोमछिद्र बन्द हो जावें।

(६) स्वेदन के १ घण्टे बाद तक रोगी को खुली हवा में न जाने दें, न स्नान करावें।

(७) भाप देते समय यह ध्यान अवश्य रखना चाहिए कि भाप दूर से लगे, ताकि रोगी जल या झुलस न जावे और शरीर पर फफोले आदि न पड़ जावें। ऐसा हो जाने पर घी में कर्पूर मिलाकर पीड़ित स्थान पर लगाना चाहिए।

—सम्पादक।

(९५) शुद्ध गुग्गुल १०० ग्राम, लहसुन साफ किया हुआ ५० ग्राम, सोंठ, काली मरिच, पीपल, रास्ना तथा एरण्ड के बीजों का मग्ज यह सब २५-२५ ग्राम लें। सबको मिला कूटकर घी के साथ २-२ रत्ती की गोलियां बना लें। २-४ गोली तक निवाये जल के साथ सुबह, शाम लेने से अनेक बार वातरोगों में लाभ होता है।

—रसतन्त्रसार सिद्ध योग संग्रह से।

(९६) महायोगराज गुग्गुल ८० ग्राम, भुनी हींग २० ग्राम, जीमी निकाली एरण्ड की मिंगी २० ग्राम। इनको मिला रास्नादि क्वाथ में ६-६ घण्टे खरल कर १-१ रत्ती की गोलियां बना लें। १-१ गोली प्रातः, सायं निवाये जल के साथ सेवन कराने से गृध्रसी तथा अन्य वातरोगों में विशेष लाभ होता है।

(९७) ५ किलो या अधिक ताजी कटेरी के पञ्चाङ्ग को कूटकर हांडी में भरें तथा मुख पर कपड़ा बांध ऊपर औंधा सगौना रख सन्धि स्थान में मुद्रा करें, फिर सगौना सह हांडी को लगभग तीन चौथाई जमीन में दबावें। सगौने को नीचे तथा हांडी के तलभाग को ऊपर रखें। फिर ३ घण्टे तक ऊपर अग्नि जलाने से अर्क सगौने में गिरेगा, इस अर्क को छानकर बोतलों में भर लें। ३-३ औंस दिन में ३ बार पिलाने से सन्धिवात तथा अन्य वातरोगों की पीड़ा शान्त होती है।

(९८) सरसों के तैल में उड़द के बड़े बना मक्खन के साथ खिलाते रहने से अति बढ़ा हुआ तीक्ष्ण अर्दित रोग भी एक सप्ताह में शमन हो जाता है। नये रोग के लिए यह उत्तम प्रयोग है, रोग पुराना होने पर उतना लाभ नहीं पहुंचाता। अधिक बड़े खाने से बद्ध कोष्ठ होकर या अपाचित आम आन्त्र में शेष रहकर नया उप-द्रव उपस्थित कर सकता है। अतः आन्त्र को पहले एरण्ड तैल से शुद्ध कर लेना चाहिए और पचनशक्ति के अनुसार बड़े खाने चाहिए एवं बड़े पचन होकर फिर क्षुधा न लगे, तब तक कुछ नहीं खाना चाहिए।

—सफल सिद्ध प्रयोगांक द्वितीय भाग से।

(९९) अण्डी का तैल, उत्तम गुग्गुल, शुद्ध गन्धक तथा त्रिफला प्रत्येक २५०-२५० ग्राम। पहले गुग्गुल को साफ कर लेना चाहिए, फिर अण्डी के तैल में डालकर अग्नि पर मन्द-मन्द पकावें। जब गुग्गुल भुनकर लाल हो जावे, तब उसी समय कड़ाही उतार कर गन्धक और त्रिफले के बारीक चूर्ण को मिलाकर खरल में खूब घोटें, बाद में कांच की शीशी में भर लें। ६-६ ग्राम सुबह, शाम गरम दूध के साथ सेवन कराने से विभिन्न वात-रोगों में लाभ होता है। —धन्वन्तरि दिसम्बर ६७ से।

[आ] अनुभूत एवं परीक्षित प्रयोग

(१) **वातविध्वंसनी वटी**—सोंठ, हरड़, मरिच, सेंधव, पीपल, शुद्ध गन्धक, शुद्ध पारद प्रत्येक १०-१० ग्राम, शुद्ध मुष्टि ७० ग्राम।

विधि—कूट कपड़छन कर कज्जली मिला नीबू के रस में ५ दिन खूब मर्दन करें, फिर मोंठ के बराबर गोली बना लें।

मात्रा—१-२ गोली शहद या रास्नादि क्वाथ से सुबह, शाम दें।

उपयोग—वातरोगों के लिए बहुत उपयोगी योग है। कुछ समय तक सेवन करने से विभिन्न वातरोगों में स्थायी लाभ होता है। —पं० ब्रजमोहन मिश्र द्वारा धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(२) **भल्लातक योग**—भिलावा, तिल काला, नारियल की गिरी, गुड़ देशी पुराना प्रत्येक ४०-४० ग्राम, अजमोद, खुरासानी अजवायन, मस्तगी तीनों २०-२० ग्राम, कुन्दरू गोंद १० ग्राम, शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक दोनों ६-६ ग्राम।

विधि—पहले पारद तथा गन्धक की कज्जली तैयार कर लें। फिर कज्जली में खुरासानी अजवायन की पिष्टी मिलावें। तत्पश्चात् अजमोद और दूसरी दवायें भिलावा, गुड़, नारियल की गिरी आदि मिलाकर गोलियां बना लें।

प्रयोग विधि—१ गोली के कई टुकड़े कर रूई के अन्दर रखकर निगलवा दें, दांत नहीं लगायें। इस प्रकार ७ दिन तक केवल एक बार १ गोली सेवन करावें।

उपयोग—अनेक प्रकार की वात-व्याधियों के लिए लाभदायक योग है। लेकिन औषधि पथ्यपूर्वक सेवन करानी चाहिए। औषधि सेवन के समय घी, दूध, दही का सेवन पर्याप्त रूप से कराना चाहिए। धूप में घूमना, आग के पास बैठना, नमक खाना आदि कार्य नहीं करने चाहिए। —उदयलाल महात्मा द्वारा धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(३) वातरोगान्तक तैल—भांगरे का रस १ कि०, कुकरोंधा का रस, मकोय का रस, रास्ना का रस, आक का रस, सेहुण्ड का रस, धतूरे का रस, सम्मालू का रस प्रत्येक ५०-५० ग्राम।

कल्क—लोंग, काली मरिच, जायफल, जावित्री, सोंठ, बाबूना प्रत्येक ३०-३० ग्राम, संखिया, मीठा तेलिया १०-१० ग्राम, अफीम ६ ग्राम, पानी, सरसों का तैल १-१ किलो।

विधि—सबको कढ़ाही मे डालकर तैल पाक करें, बाद में छानकर शीशियो मे भर लें।

उपयोग—सभी प्रकार के वातरोगों में मालिश के लिये बहुत उपयोगी तैल है। अनेक बार का परीक्षित योग है। —पं० श्यामबिहारीलाल द्वारा धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(४) वातरोगान्तक तैल—स्प्रिट मैथेलेटिड २५० ग्राम, तारपीन का तैल २५० ग्राम, सत् पोदीना १० ग्राम, शिलाजीत असली, अफीम दोनों ६-६ ग्राम, असली हींग, राई, कर्पूर तीनों १०-१० ग्राम, एलुआ २० ग्राम, कस्तूरी २ ग्राम।

विधि—प्रथम कस्तूरी डालकर कूट डालें। बाद में हींग, एलुआ, कर्पूर पीसकर मिलावें और शिलाजीत, अफीम आदि पानी में घिसकर मिला दें। मजबूत डाट लगाकर १५ दिन धूप में रखा रहने दें।

उपयोग—आमवात, गृध्रसी, अर्धाङ्गवात आदि वातरोगों में बहुत उपयोगी योग है। —वैद्यभूषण रामकृष्ण ताम्रकार द्वारा धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(५) वातारि तैल—कडुआ तैल, महुआ का तैल, रेंडी का तैल, धूप का तैल २५०-२५० ग्राम, इन चारों तैलों को अग्नि पर गरम करके कर्पूर २५ ग्राम, तारपीन का तैल, मिट्टी का तैल स्प्रिट २५०-२५० ग्राम।

विधि—सबको एक में मिलाकर खूब हिलावें तैल तैयार है।

उपयोग—हर प्रकार के वायु के दर्द को नष्ट करता है। शरीर मे कहीं भी दर्द होता है। इसकी मालिश करने से तुरन्त दूर हो जाता है। दर्द के स्थान पर तैल लगाने के बाद नामे से सेक देना चाहिये। —पं० अनन्तदेव शर्मा द्वारा धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(६) पीयूष गुटिका—भुनी हींग १ भाग, वच २ भाग, वायविडङ्ग ३ भाग, सैन्धव लवण ४ भाग, कालाजीरा ५ भाग, शुण्ठी ६ भाग, कालीमरिच ७ भाग, पिप्पली ८ भाग, मीठा कूठ ९ भाग, चित्रक १० भाग, भारङ्गी ११ भाग, चिरायता १२ भाग, अजवायन १३ भाग, गुड़ पुराना सबसे द्विगुण।

विधि—सबको कूट-छानकर गुड़ मिलाकर कूटकर बेर के बराबर गोलियां बना लें।

मात्रा—१-१ गोली सुबह शाम दूध से।

उपयोग—सभी प्रकार के वायुरोगों के लिये रामबाण औषधि है। —वैद्य दुर्गाप्रसाद वैद्यरत्न द्वारा धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(७) वातरोगादि तैल—असगन्ध, कटेरी, सैन्धव, रास्ना, चित्रक, लोंग, पीपर, सोंठ, वत्सनाभ, मालकांगनी, अजवायन प्रत्येक १०-१० ग्राम, लहसुन ५० ग्राम।

विधि—कल्क बनाकर ७५० ग्राम तैल मिला देना चाहिये, धतूरा, अरण्ड, आक, थूहर, मांगरा पांचों के २॥ किलो पत्तों को कूट-पीसकर स्वरस निकालकर पूर्वोक्त कल्क में मिला देना चाहिये फिर १ किलो गोमूत्र तथा १ किलो जल मिलाकर यथा विधि तैल पाक करके छान लेना चाहिये।

विधि—इस तैल की मालिश करके थोड़ा सेक करना चाहिये।

उपयोग—सर्वाङ्गवात में बहुत उपयोगी तैल है। अनेक बार का परीक्षित है।

—पं० भवानीशंकर शर्मा द्वारा
धन्वन्तरि अनुभूत प्रयोगांक से।

(८) वातविध्वंस वटिका—सिंगरफ शुद्ध १० ग्राम, हरताल वर्की शुद्ध १० ग्राम, जौहर शुद्धमल्ल १० ग्राम, रसकर्पूर शुद्ध १० ग्राम, कुचला शुद्ध २० ग्राम, अहिफेन ३ ग्राम, मीठा तेलिया १० ग्राम, केसर असली ३ ग्राम, शुद्ध गन्धक ३० ग्राम, जावित्री २० ग्राम, जायफल २० ग्राम, पीपर छोटी २० ग्राम, कूठ मीठा २० ग्राम, कालीमरिच २० ग्राम, निसोथवकली ५० ग्राम, सकमोनियां ६० ग्राम, कुमारीसत १६० ग्राम, लोंग २० ग्राम, सुरंजान मीठी २० ग्राम, कालादाना भुना हुआ ६० ग्राम, फरफयून १५ ग्राम, गारिकून १० ग्राम, जरावन्द २० ग्राम, कड़वी तुम्बी गिरी १० ग्राम, कद्दू की गिरी ६० ग्राम, शुद्ध गूगल १०० ग्राम।

विधि—सब वस्तुओं को कूट कपड़ छानकर कुमारी रस में २ प्रहर मर्दन करें तथा ४-४ रत्ती की गोलियां बना लें।

मात्रा—१-२ गोली तक गरम दूध अथवा जल के साथ प्रातः-सायं सेवन करावें।

उपयोग—वातरोगों पर सर्वोत्तम गोलियां हैं, आमवात, गृध्रसी, अर्धाङ्गवात आदि पर शीघ्र कार्य करती है साथ में निम्न तैल का वाह्य प्रयोग कराना चाहिये।

(९) वातमर्दन तैल—मीठा तेलिया २० ग्राम, मालकांगनी ४० ग्राम, जायफल २० ग्राम, लौंग २० ग्राम, कूठ कडुआ २० ग्राम, पीपल १० ग्राम, मरिचकाली १० ग्राम, हल्दी २० ग्राम, धतूरे के बीज ५० ग्राम, भिलावे ५० ग्राम, जावित्री २० ग्राम, अफीम ६ ग्राम, केशर ६ ग्राम, आकपत्र स्वरस २०० ग्राम, धतूर पत्र स्वरस २०० ग्राम, अरण्डपत्र स्वरस २०० ग्राम, लालमरिचपत्र स्वरस २०० ग्राम, कलानागी स्वरस ४०० ग्राम, गोमूत्र २ किलो, मीठा तैल ४ किलो।

विधि—पकाकर तैल सिद्ध कर लें और छानकर ... भरकर रख लें।

व्यवहार विधि एवं उपयोग—वात पीड़ित स्थान पर तैल की मालिश तथा बाद में सिकाई करने से आमवात, पक्षाघात आदि वायु विकार दूर होते हैं।

—वैद्य इन्द्रदत्त शर्मा द्वारा
धन्वन्तरि अनुभूत प्रयोगांक से।

(१०) वातरोगनाशक तैल—अफीम, एलुआ, कालीमरिच, कुचला, भिलावा, रास्ना, हीरा हींग, आक की जड़, धतूरे की जड़, एरण्ड की जड़ प्रत्येक १०-१० ग्राम, गन्ध प्रसारिणी, भांग ५०-५० ग्राम, सोंठ, तम्बाकू के पत्ता १००-१०० ग्राम।

विधि—सूखी दवाओं को कूट-पीसकर सन्ध्याकाल में भिगो दें और सुबह हरी दवाओं के साथ सिल पर पीसकर कल्क बना लें। तिल का तैल १ किलो, सरसों का तैल १ किलो, जल ८ किलो सब मिलाकर मन्दाग्नि से तैल पकाकर छान लें और प्रयोग में लावें।

उपयोग—दिन में २-३ वार मालिश करने से सभी वातरोगों में लाभ होने लगता है।

—वैद्य नवमीलाल द्वारा
धन्वन्तरि सिद्ध प्रयोगांक से।

(११) सर्वपीड़ाहर कल्प तैल—अकरकरा, सुहागा, दालचीनी, नीलाथोथा, सज्जीखार, कूठ, मैनशिल, मालकांगनी, असगन्ध, इन्द्र जौ, जवासा २०-२० ग्राम पीस छानकर भैंस के दूध १ किलो में घोल दें और इसी घोल में—

तिल का तैल ½ किलो, सरसों का तैल २५० ग्राम, मोम सफेद २० ग्राम, दालचीनी का तैल १० ग्राम, भेड़ का दूध १ किलो, आक के पत्तों का रस ½ किलो सबको एकत्रित करके तैल पाक विधि से पकावें और तैल मात्र शेष रहने पर छान लें। पश्चात् गर्म तैल में मिट्टी का सफेद तैल २५० ग्राम, तारपीन का तैल २५० ग्राम देशी कर्पूर ५० ग्राम और मिला दें। एक दिन होने पर बोतलों में भरकर काग लगाकर १५ दिन तक धूप में रख लें। १५ दिन बाद प्रयोग में लावें।

उपयोग—सभी प्रकार के वातरोगों में चमत्कारिक तैल है इसको थोड़ा गर्म करके पीड़ित स्थान पर मालिश

करने से तथा बाद में थोड़ी सिकाई करने से आशातीत लाभ होता है। —श्री शिवलाल जी तुफैल अहमद द्वारा धन्वन्तरि मार्च ३४ से।

(१२) विषतिन्दुक वटी—गोमूत्र में शुद्ध किया हुआ कुचला २० ग्राम, लोंग ४० ग्राम, कालीमरिच ४० ग्राम, अकरकरा ८० ग्राम, केशर, जायफल, जावित्री तीनों १०-१० ग्राम।

विधि—इन सबका बारीक चूर्ण पीसकर एक खरल में डालकर पीसना चाहिये बाद में उसमें कालीमरिच और लोंग ५०-५० ग्राम तथा जल १½ किलो का चतुर्थांश क्वाथ कर मिलाकर घोटना चाहिये। ३ दिन गोली बनाने योग्य हो जाय तो १-१ रत्ती की गोली बनाकर छाया में सुखाकर रख लेवें।

मात्रा—२-२ गोली प्रातः-सायं दोनों समय दूध के साथ।

उपयोग—इस वटी के सेवन से सभी प्रकार के वात-रोग नष्ट होते हैं। इसका अनेक बार हमने परीक्षण किया है तथा बहुत उपयोगी पाया है।

—वैद्यराज गोपाल जी कंवर जी ठक्कर द्वारा धन्वन्तरि गुप्तसिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(१३) वातरोगारि क्वाथ—रास्ना, अमलतास का गूदा, देवदारु, पुनर्नवा, गोखरू, एरण्डमूल, गिलोय सममाग लेकर यवकुट कर लें।

विधि—इसमें से २० ग्राम लेकर क्वाथ विधि से क्वाथ तैयार कर छानकर एरण्ड तैल २० ग्राम तथा सोंठ का चूर्ण ६ ग्राम मिलाकर रोगी को पिला दें।

उपयोग—वायुरोग नाशक उत्तम योग है इसके सेवन से बिना ऐंठन के आंतों में भरी आम निकल जाती है जिससे वातरोग शान्त हो जाते हैं।

—अत्रिदेव गुप्त विद्यालंकार द्वारा गुप्तसिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(१४) वातरोगनाशक ताम्रपत्र योग—ताम्र (तांबा) के पत्ते ४० ग्राम, अजवायन १०० ग्राम, नीलाथोथा ३० ग्राम, गन्धक ३० ग्राम।

विधि—प्रथम शराव में अजवायन रखें इसके ऊपर गन्धक तथा नीलाथोथा रखें इसके ऊपर ताम्रपत्र रखें पत्ते के ऊपर फिर अजवायन, नीलाथोथा तथा गन्धक रखें और शराव सम्पुट कर गजपुट में अग्नि दें। स्वांग-शीतल होने पर कपड़ मिट्टी खोलकर ताम्र के पत्ते निकाल लें और दोलायन्त्र द्वारा दूध में इन पत्रों का पाक करें-जब तक नीला दूध आता रहे तब तक उबालते रहें बाद में निकालकर खरल में पीस लें बस दवा तैयार है।

सेवन विधि—१ ग्राम सोंठ के चूर्ण के साथ १-२ रत्ती तक सुबह शाम सेवन करावें ऊपर से तिल का तैल १० ग्राम पिला दें।

उपयोग—पक्षाघात, अर्दित, आमवात तथा अन्य जीर्णवात रोगों में कुछ दिन तक सेवन कराने से विशेष लाभ होता है। —वैद्य अम्बाप्रसाद द्वारा धन्वन्तरि गुप्तसिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(१५) वातभंजन तैल—सोंठ देशी २०० ग्राम, संखिया १० ग्राम, सोंठ बंतरा २०० ग्राम, अफीम १० ग्राम, सैन्धानमक १०० ग्राम, कर्पूर १०० ग्राम, तैल सरसों ५०० ग्राम, मिट्टी का तैल ५०० ग्राम।

विधि—दोनों सोंठ तथा सैन्धवलवण को यवकुट कर सरसों के तैल के साथ मन्द-मन्द अग्नि में पाक करें, जब सोंठ का वर्ण लाल हो जाय तब नीचे उतारकर अफीम तथा संखिया तैल में डालकर पड़ा रहने दें, किन्तु ध्यान रहे कि तैल का धुंआ शरीर के किसी भाग में न लगने पावे। शीतल हो जाने पर उसमें कर्पूर तथा मिट्टी का तैल मिलाकर बाद में छानकर शीशी में सुरक्षित रख लें।

उपयोग—इसकी थोड़ी सी मात्रा कठिन से कठिन वात व्याधि के लिये उपयोगी है। आमवात, गृध्रसी तथा अन्य वातरोगों में इस तैल की मालिश से शीघ्र लाभ होता है। —पं० राधेमोहन मिश्र द्वारा गुप्तसिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(१६) विषमुष्टिकावलेह—इलायची छोटी ८ ग्राम, लोंग, चन्दन सफेद ४॥ ग्राम, नरकचूर, इस्तखद्दूस, कतीरा, गोला, चिलगोजा, मिश्री, गुलगावजवां प्रत्येक १३॥-१३॥ ग्राम, आंवला, मुनक्का, छोटी हरड़ तीनों

२॥-२॥ ग्राम, कुचला २७ ग्राम सबको कपड़छन कर लें। दवाओं से तिगुने शहद की चाशनी कर दवा डाल पाक की तरह चकती जमा लें।

मात्रा—२ रत्ती से १ ग्राम तक रास्नादि क्वाथ, एरण्ड क्वाथ, दशमूल अर्क, रास्नादि क्वाथ या दूध से १-२ बार सेवन करावें।

उपयोग—यह प्रयोग वातरोगों के लिये बहुत लाभदायक योग है जब रोगी दर्द से बेचैन हो और सूजन हो रही हो तब इसके प्रयोग से लाभ होता है। जिन रोगियों को वृ० वातचिन्तामणि, रसराज आदि से लाभ नहीं होता तब यह प्रयोग लाभ पहुँचाता है।

—वैद्य देवीशरण गर्ग द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक द्वितीय भाग से।

(१७) विटपिष्टी—कपोत (कबूतर) की विष्टा (वीट) १०० ग्राम, मल्लसिन्दूर २० ग्राम, कस्तूरी उत्तम १० ग्राम, हरताल का फूला ६ ग्राम।

विधि—पहले कबूतर की सूखी वीट को कूट कपड़छान कर लें और फिर सब दवाओं को मिलाकर खरल में डालकर मजबूत हाथों से तीन दिन तक घुटाई करें इस दवा में घुटाई का अधिक होना उत्तम गुणकारी है। उत्तम पिष्टी होने पर शीशी में भरकर रख लें।

मात्रा—१-४ रत्ती तक दिन में ३ बार अद्रक रस तथा शहद के साथ सेवन करानी चाहिये।

उपयोग—यह दवा कष्टसाध्य वातविकारों को भी दूर करती है किन्तु पक्षाघात, अर्दित, कम्पवात की अप्रतिम औषधि है इसका ४० दिन का प्रयोग है। वातरोग के होते ही इसका प्रयोग कर लिया जाय तो ५-७ दिन में ही लाभ हो जाता है।

—वैद्य श्री गुलराज शर्मा द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक द्वितीय भाग से।

(१८) वातमर्दन तैल—मीठा तेलिया २० ग्राम, मालकांगनी ४० ग्राम, जायफल, लौंग, कूठ कडुवा, हल्दी, जावित्री, पीपर, कालीमरिच प्रत्येक १०-१० ग्राम, धतूरे के बीज, भिलावा ५०-५० ग्राम, अफीम ६ ग्राम, केशर ६ ग्राम, आक, धतूरा, अण्डी, तम्बाकू इन सबके पत्तों का स्वरस २००-२०० ग्राम, सत्यानाशी का स्वरस ५०० ग्राम, गोमूत्र २ किलो, जल ५ किलो, तिल का तैल, अलसी का तैल, अण्डी का तैल १-१ किलो।

विधि—तीन दिन तक शनैः-शनैः पाक कर तैल सिद्ध करलें और १ किलो इस तैल में १ किलो तारपीन का तैल भी मिलाकर शीशियों में भरकर रख लें।

उपयोग—यह तैल समस्त वातरोगों के लिये रामबाण है।

—पं० प्रयागदत्त शास्त्री द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक द्वितीय भाग से।

(१९) पीड़ानाशक तैल—कुचला ३ ग्राम, सिंगियाविष ३ ग्राम, धतूरे का रस २५ ग्राम, अफीम २ ग्राम, नारायन तैल १० ग्राम, महाविषगर्भ तैल १० ग्राम, कर्पूर ६ ग्राम, तिली का तैल २५० ग्राम।

विधि—कुचला, सिंगिया को बारीक पीसकर धतूरे का रस तथा अफीम को तिल के तैल में डालकर गर्म करें जब यह सब चीजें जल जांय तब छानकर उसमें कर्पूर तथा नारायन तेल और विषगर्भ तैल डालकर रख दें। तीन दिन के बाद काम में लावें।

उपयोग—गठिया तथा हर तरह के वातरोगों में उपयोगी है।

—वैद्य भूषण पी० एन० पण्डित द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक द्वितीय भाग से।

(२०) वातारि तैल—कुचला ४० ग्राम, मीठा तेलिया ३० ग्राम, हिंगुल २० ग्राम।

विधि—इन तीनों को एक पोटली बनाकर दोलायन्त्र में भैंस के गोबर में शुद्ध करें। फिर निकालकर ऊपर का छिलका उतारकर दूध में पकावें फिर घृत में पकावें, कुचला लाल हो जाने पर उतार लें, फिर कुचला तथा वत्सनाग को गरम पानी में धो डालें फिर जायफल चूर्ण ४० ग्राम मिलाकर ग्वारपाठे के रस में मर्दन करके उड़द के बराबर गोलियां बना लें।

मात्रा—३ गोली सुबह पानी से या दूध से खिलावें, सायंकाल सुरंजान मीठी, सोंठ, असगन्ध, सनाय यह सब समान भाग लेकर इनको ६ ग्राम की मात्रा फांककर २५० ग्राम दूध के साथ देवें और दिन में कंटकारी के छोटे-छोटे टुकड़े कर पानी में उबालकर रोगी को भपारा दें।

उपयोग—अनेक प्रकार की वात-व्याधियों के लिए लाभदायक योग है। लेकिन औषधि पथ्यपूर्वक सेवन करानी चाहिए। औषधि सेवन के समय घी, दूध, दही का सेवन पर्याप्त रूप से कराना चाहिए। धूप में घूमना, आग के पास बैठना, नमक खाना आदि कार्य नहीं करने चाहिए। —उदयलाल महात्मा द्वारा धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(३) वातरोगान्तक तैल—भांगरे का रस १ कि०, कुकरोंधा का रस, मकोय का रस, रास्ना का रस, आक का रस, सेहुण्ड का रस, धतूरे का रस, सम्मालू का रस प्रत्येक ५०-५० ग्राम।

कल्क—लौंग, काली मरिच, जायफल, जावित्री, सोंठ, बाबूना प्रत्येक ३०-३० ग्राम, संखिया, मीठा तेलिया १०-१० ग्राम, अफीम ६ ग्राम, पानी, सरसों का तैल १-१ किलो।

विधि—सबको कढ़ाही मे डालकर तैल पाक करें, बाद में छानकर शीशियों में भर लें।

उपयोग—सभी प्रकार के वातरोगों में मालिश के लिये बहुत उपयोगी तैल है। अनेक बार का परीक्षित योग है। —पं० श्यामबिहारीलाल द्वारा धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(४) वातरोगान्तक तैल—स्प्रिट मैथेलेटिड २५० ग्राम, तारपीन का तैल २५० ग्राम, सत् पोदीना १० ग्राम, शिलाजीत असली, अफीम दोनों ६-६ ग्राम, असली हींग, राई, कर्पूर तीनों १०-१० ग्राम, एलुआ २० ग्राम, कस्तूरी २ ग्राम।

विधि—प्रथम कस्तूरी डालकर कूट डालें। बाद में हींग, एलुआ, कर्पूर पीसकर मिलावें और शिलाजीत, अफीम आदि पानी में घिसकर मिला दें। मजबूत डाट लगाकर १५ दिन धूप में रखा रहने दें।

उपयोग—आमवात, गृध्रसी, अर्धाङ्गवात आदि वातरोगो में बहुत उपयोगी योग है।

—वैद्यभूषण रामकृष्ण ताम्रकार द्वारा धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(५) वातारि तैल—कडुआ तैल, महुआ का तैल, रेंडी का तैल, धूप का तैल २५०-२५० ग्राम, इन चारों तैलों को अग्नि पर गरम करके कर्पूर २५ ग्राम, तारपीन का तैल, मिट्टी का तैल स्प्रिट २५०-२५० ग्राम।

विधि—सबको एक में मिलाकर खूब हिलावें तैल तैयार है।

उपयोग—हर प्रकार के वायु के दर्द को नष्ट करता है। शरीर मे कहीं भी दर्द होता है। इसकी मालिश करने से तुरन्त दूर हो जाता है। दर्द के स्थान पर तैल लगाने के बाद नामे से सेक देना चाहिये।

—पं० अनन्तदेव शर्मा द्वारा धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(६) पीयूष गुटिका—भुनी हींग १ भाग, वच २ भाग, वायविडङ्ग ३ भाग, सैन्धव लवण ४ भाग, कालाजीरा ५ भाग, शुण्ठी ६ भाग, कालीमरिच ७ भाग, पिप्पली ८ भाग, मीठा कूठ ९ भाग, चित्रक १० भाग, भारङ्गी ११ भाग, चिरायता १२ भाग, अजवायन १३ भाग, गुड़ पुराना सबसे द्विगुण।

विधि—सबको कूट-छानकर गुड़ मिलाकर कूटकर बेर के बराबर गोलिया बना लें।

मात्रा—१-१ गोली सुबह शाम दूध से।

उपयोग—सभी प्रकार के वायुरोगों के लिये रामबाण औषधि है। —वैद्य दुर्गाप्रसाद वैद्यरत्न द्वारा धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(७) वातरोगादि तैल—असगन्ध, कटेरी, सैन्धव, रास्ना, चित्रक, लौंग, पीपर, सोंठ, वत्सनाभ, मालकांगनी, अजवायन प्रत्येक १०-१० ग्राम, लहसुन ५० ग्राम।

विधि—कल्क बनाकर ७५० ग्राम तैल मिला देना चाहिये, धतूरा, अरण्ड, आक, थूहर, भांगरा पांचों के २॥ किलो पत्तों को कूट-पीसकर स्वरस निकालकर पूर्वोक्त कल्क में मिला देना चाहिये फिर १ किलो गोमूत्र तथा १ किलो जल मिलाकर यथा विधि तैल पाक करके छान लेना चाहिये।

विधि—इस तैल की मालिश करके थोड़ा सेक करना चाहिये।

उपयोग—सर्वाङ्गवात में बहुत उपयोगी तैल है। अनेक बार का परीक्षित है।

—पं० भवानीशंकर शर्मा द्वारा
धन्वन्तरि अनुभूत प्रयोगांक से।

(८) वातविध्वंस वटिका—सिंगरफ शुद्ध १० ग्राम, हरताल वर्की शुद्ध १० ग्राम, जौहर शुद्धमल्ल १० ग्राम, रसकर्पूर शुद्ध १० ग्राम, कुचला शुद्ध २० ग्राम, अहिफेन ३ ग्राम, मीठा तेलिया १० ग्राम, केसर असली ३ ग्राम, शुद्ध गन्धक ३० ग्राम, जावित्री २० ग्राम, जायफल २० ग्राम, पीपर छोटी २० ग्राम, कूठ मीठा २० ग्राम, कालीमरिच २० ग्राम, निसोथवकली ५० ग्राम, सकमोनियां ६० ग्राम, कुमारीसत १६० ग्राम, लोंग २० ग्राम, सुरंजान मीठी २० ग्राम, कालादाना भुना हुआ ६० ग्राम, फरफयून १५ ग्राम, गारिकून १० ग्राम, जरावन्द २० ग्राम, कड़वी तुम्बी गिरी १० ग्राम, कद्दू की गिरी ६० ग्राम, शुद्ध गूगल १०० ग्राम।

विधि—सब वस्तुओं को कूट कपड़ छानकर कुमारी रस में २ प्रहर मर्दन करें तथा ४-४ रत्ती की गोलियां बना लें।

मात्रा—१-२ गोली तक गरम दूध अथवा जल के साथ प्रातः-सायं सेवन करावें।

उपयोग—वातरोगों पर सर्वोत्तम गोलियां हैं, आमवात, गृध्रसी, अर्धाङ्गवात आदि पर शीघ्र कार्य करती है साथ में निम्न तैल का बाह्य प्रयोग कराना चाहिये।

(९) वातमर्दन तैल—मीठा तेलिया २० ग्राम, मालकांगनी ४० ग्राम, जायफल २० ग्राम, लोंग २० ग्राम, कूठ कडुआ २० ग्राम, पीपल १० ग्राम, मरिचकाली १० ग्राम, हल्दी २० ग्राम, धतूरे के बीज ५० ग्राम, भिलावे ५० ग्राम, जावित्री २० ग्राम, अफीम ६ ग्राम, केशर ६ ग्राम, आकपत्र स्वरस २०० ग्राम, धतूर पत्र स्वरस २०० ग्राम, अरण्डपत्र स्वरस २०० ग्राम, लालमरिचपत्र स्वरस २०० ग्राम, सत्यानाशी स्वरस ४०० ग्राम, गोमूत्र २ किलो, मीठा तैल ४ किलो।

विधि—पकाकर तैल सिद्ध कर लें और छानकर शीशियों में भरकर रख लें।

व्यवहार विधि एवं उपयोग—वात पीड़ित स्थान पर तैल की मालिश तथा बाद में सिकाई करने से आमवात, पक्षाघात आदि वायु विकार दूर होते हैं।

—वैद्य इन्द्रदत्त शर्मा द्वारा
धन्वन्तरि अनुभूत प्रयोगांक से।

(१०) वातरोगनाशक तैल—अफीम, एलुआ, कालीमरिच, कुचला, भिलावा, रास्ना, हीरा हींग, आक की जड़, धतूरे की जड़, एरण्ड की जड़ प्रत्येक १०-१० ग्राम, गन्ध प्रसारिणी, भांग ५०-५० ग्राम, सोंठ, तम्बाकू के पत्ता १००-१०० ग्राम।

विधि—सूखी दवाओं को कूट-पीसकर सन्ध्याकाल में भिगो दें और सुबह हरी दवाओं के साथ शिल पर पीसकर कल्क बना लें। तिल का तैल १ किलो, सरसों का तैल १ किलो, जल ८ किलो सब मिलाकर मन्दाग्नि से तैल पकाकर छान लें और प्रयोग में लावें।

उपयोग—दिन में २-३ बार मालिश करने से सभी वातरोगों में लाभ होने लगता है।

—वैद्य नवमीलाल द्वारा
धन्वन्तरि सिद्ध प्रयोगांक से।

(११) सर्वपीड़ाहर कल्प तैल—अकरकरा, सुहागा, दालचीनी, नीलाथोथा, सज्जीक्षार, कूठ, मैनसिल, मालकांगनी, असगन्ध, इन्द्र जौ, जवासा २०-२० ग्राम पीस छानकर भैंस के दूध १ किलो में घोल दें और इसी घोल में—

तिल का तैल ½ किलो, सरसों का तैल २५० ग्राम, मोम सफेद २० ग्राम, दालचीनी का तैल १० ग्राम, भेड़ का दूध १ किलो, आक के पत्तों का रस ½ किलो सबको एकत्रित करके तैल पाक विधि से पकावें और तैल मात्र शेष रहने पर छान लें। पश्चात् गर्म तैल में मिट्टी का सफेद तैल २५० ग्राम, तारपीन का तैल २५० ग्राम देशी कर्पूर ५० ग्राम और मिला दें। एक दिल होने पर बोतलों में भरकर कार्क लगाकर १५ दिन तक धूप में रख लें। १५ दिन बाद प्रयोग में लावें।

उपयोग—सभी प्रकार के वातरोगों में चमत्कारिक तैल है इसको थोड़ा गर्म करके पीड़ित स्थान पर मालिश

करने से तथा बाद में थोड़ी सिकाई करने से आशातीत लाभ होता है। —श्री शिवलाल जी तुफैल अहमद द्वारा धन्वन्तरि मार्च ३४ से।

(१२) विषतिन्दुक वटी—गोमूत्र में शुद्ध किया हुआ कुचला २० ग्राम, लौंग ४० ग्राम, कालीमरिच ४० ग्राम, अकरकरा ८० ग्राम, केशर, जायफल, जावित्री तीनों १०-१० ग्राम।

विधि—इन सबका बारीक चूर्ण पीसकर एक खरल में डालकर पीसना चाहिये बाद में उसमें कालीमरिच और लौंग ५०-५० ग्राम तथा जल १½ किलो का चतुर्थांश क्वाथ कर मिलाकर घोटना चाहिये। ३ दिन गोली बनाने योग्य हो जाय तो १-१ रत्ती की गोली बनाकर छाया में सुखाकर रख लेवें।

मात्रा—२-२ गोली प्रातः-सायं दोनों समय दूध के साथ।

उपयोग—इस वटी के सेवन से सभी प्रकार के वात-रोग नष्ट होते हैं। इसका अनेक बार हमने परीक्षण किया है तथा बहुत उपयोगी पाया है।

—वैद्यराज गोपाल जी कुंवर जी ठक्कर द्वारा धन्वन्तरि गुप्तसिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(१३) वातरोगारि क्वाथ—रास्ना, अमलतास का गूदा, देवदारु, पुनर्नवा, गोखरू, एरण्डमूल, गिलोय सममाग लेकर यवकुट कर लें।

विधि—इसमें से २० ग्राम लेकर क्वाथ विधि से क्वाथ तैयार कर छानकर एरण्ड तैल २० ग्राम तथा सोंठ का चूर्ण ६ ग्राम मिलाकर रोगी को पिला दें।

उपयोग—वायुरोग नाशक उत्तम योग है इसके सेवन से बिना ऐंठन के आंतों में भरी आम निकल जाती है जिससे वातरोग शान्त हो जाते हैं।

—अग्निदेव गुप्त विद्यालंकार द्वारा गुप्तसिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(१४) वातरोगनाशक ताम्रपत्र योग—ताम्र (तांबा) के पत्ते ४० ग्राम, अजवायन १०० ग्राम, नीलाथोथा ३० ग्राम, गन्धक ३० ग्राम।

विधि—प्रथम शराव में अजवायन रखें इसके ऊपर गन्धक तथा नीलाथोथा रखें इसके ऊपर ताम्रपत्र रखें पत्ते के ऊपर फिर अजवायन, नीलाथोथा तथा गन्धक रखें और शराव सम्पुट कर गजपुट में अग्नि दें। स्वांग-शीतल होने पर कपड़ मिट्टी खोलकर ताम्र के पत्ते निकाल लें और दोलायन्त्र द्वारा दूध में इन पत्रों का पाक करें जब तक नीला दूध आता रहे तब तक उबालते रहें बाद में निकालकर खरल में पीस लें बस दवा तैयार है।

सेवन विधि—१ ग्राम सोंठ के चूर्ण के साथ १-२ रत्ती तक सुबह शाम सेवन करावें ऊपर से तिल का तैल १० ग्राम पिला दें।

उपयोग—पक्षाघात, अर्दित, आमवात तथा अन्य जीर्णवात रोगों में कुछ दिन तक सेवन कराने से विशेष लाभ होता है। —वैद्य अम्बाप्रसाद द्वारा धन्वन्तरि गुप्तसिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(१५) वातभंजन तैल—सोंठ देशी २०० ग्राम, संखिया १० ग्राम, सोंठ बैतरा २०० ग्राम, अफीम १० ग्राम, सैन्धानमक १०० ग्राम, कर्पूर १०० ग्राम, तैल सरसों ५०० ग्राम, मिट्टी का तैल ५०० ग्राम।

विधि—दोनों सोंठ तथा सैन्धवलवण को यवकुट कर सरसों के तैल के साथ मन्द-मन्द अग्नि में पाक करें, जब सोंठ का वर्ण लाल हो जाय तब नीचे उतारकर अफीम तथा संखिया तैल में डालकर पड़ा रहने दें, किन्तु ध्यान रहे कि तैल का धुंआं शरीर के किसी भाग में न लगने पावे। शीतल हो जाने पर उसमें कर्पूर तथा मिट्टी का तैल मिलाकर बाद में छानकर शीशी में सुरक्षित रख लें।

उपयोग—इसकी थोड़ी सी मात्रा कठिन से कठिन वात व्याधि के लिये उपयोगी है। आमवात, गृध्रसी तथा अन्य वातरोगों में इस तैल की मालिश से शीघ्र लाभ होता है। —पं० राधेमोहन मिश्र द्वारा गुप्तसिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(१६) विषमुष्टिकावलेह—इलायची छोटी ८ ग्राम, लौंग, चन्दन सफेद ४॥ ग्राम, नरकचूर, दस्तखद स, कतीरा, गोला, चिलगोजा, मिश्री, गुलगावजवां प्रत्येक १३॥-१३॥ ग्राम, आंवला, मुनक्का, छोटी हरड़ तीनों

२॥-२॥ ग्राम, कुचला २७ ग्राम सबको कपड़छन कर लें। दवाओं से तिगुने शहद की चाशनी कर दवा डाल पाक की तरह चकती जमा लें।

मात्रा—२ रत्ती से १ ग्राम तक रास्नादि क्वाथ, एरण्ड क्वाथ, दशमूल अर्क, रास्नादि क्वाथ या दूध से १-२ बार सेवन करावें।

उपयोग—यह प्रयोग वातरोगों के लिये बहुत लाभदायक योग है जब रोगी दर्द से बेचैन हो और सूजन हो रही हो तब इसके प्रयोग से लाभ होता है। जिन रोगियों को बृ० वातचिन्तामणि, रसराज आदि से लाभ नहीं होता तब यह प्रयोग लाभ पहुँचाता है।

—वैद्य देवीशरण गर्ग द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक द्वितीय भाग से।

(१७) विटपिष्टी—कपोत (कबूतर) की विष्टा (बीट) १०० ग्राम, मल्लसिन्दूर २० ग्राम, कस्तूरी उत्तम १० ग्राम, हरताल का फूला ६ ग्राम।

विधि—पहले कबूतर की सूखी बीट को कूट कपड़छान कर लें और फिर सब दवाओं को मिलाकर खरल में डालकर मजबूत हाथों से तीन दिन तक घुटाई करें इस दवा में घुटाई का अधिक होना उत्तम गुणकारी है। उत्तम पिष्टी होने पर शीशी में भरकर रख लें।

मात्रा—१-४ रत्ती तक दिन में ३ बार अर्द्रक रस तथा शहद के साथ सेवन करानी चाहिये।

उपयोग—यह दवा कष्टसाध्य वातविकारों को भी दूर करती है किन्तु पक्षाघात, अर्दित, कम्पवात की अप्रतिम औषधि है इसका ४० दिन का प्रयोग है। वातरोग के होते ही इसका प्रयोग कर लिया जाय तो ५-७ दिन में ही लाभ हो जाता है।

—वैद्य श्री गुलराज शर्मा द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक द्वितीय भाग से।

(१८) वातमर्दन तैल—मीठा तेलिया २० ग्राम, मालकांगनी ४० ग्राम, जायफल, लौंग, कूठ कडुआ, हल्दी, जावित्री, पीपर, कालीमरिच प्रत्येक १०-१० ग्राम, धतूरे के बीज, भिलावा ५०-५० ग्राम, अफीम ६ ग्राम, केशर ६ ग्राम, आक, धतूरा, अण्डी, तम्बाकू इन सबके पत्तों का स्वरस २००-२०० ग्राम, सत्यानाशी का स्वरस ५०० ग्राम, गोमूत्र २ किलो, जल ५ किलो, तिल का तैल, अलसी का तैल, अण्डी का तैल १-१ किलो।

विधि—तीन दिन तक शनैः-शनैः पाक कर तैल सिद्ध करलें और १ किलो इस तैल में १ किलो तारपीन का तैल भी मिलाकर शीशियों में भरकर रख लें।

उपयोग—यह तैल समस्त वातरोगों के लिये रामबाण है।

—पं० प्रयागदत्त शास्त्री द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक द्वितीय भाग से।

(१९) पीड़ानाशक तैल—कुचला ३ ग्राम, सिंगियाविष ३ ग्राम, धतूरे का रस २५ ग्राम, अफीम २ ग्राम, नारायन तैल १० ग्राम, महाविषगर्भ तैल १० ग्राम, कर्पूर ६ ग्राम, तिली का तैल २५० ग्राम।

विधि—कुचला, सिंगिया को बारीक पीसकर धतूरे का रस तथा अफीम को तिल के तैल में डालकर गर्म करें जब यह सब चीजें जल जांय तब छानकर उसमें कर्पूर तथा नारायन तैल और विषगर्भ तैल डालकर रख दें। तीन दिन के बाद काम में लावें।

उपयोग—गठिया तथा हर तरह के वातरोगों में उपयोगी है।

—वैद्य भूषण पी० एन० पण्डित द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक द्वितीय भाग से।

(२०) वातारि तैल—कुचला ४० ग्राम, मीठा तेलिया ३० ग्राम, हिंगुल २० ग्राम।

विधि—इन तीनों को एक पोटली बनाकर दोलायन्त्र में भैंस के गोबर में शुद्ध करें। फिर निकालकर ऊपर का छिलका उतारकर दूध में पकावें फिर घृत में पकावें, कुचला लाल हो जाने पर उतार लें, फिर कुचला तथा वत्सनाग को गरम पानी से धो डालें फिर जायफल चूर्ण ४० ग्राम मिलाकर ग्वारपाठे के रस में मर्दन करके उड़द के बराबर गोलियां बना लें।

मात्रा—२ गोली सुबह पानी से या दूध से निगलावें, सायंकाल सुरंजान मीठी, सोंठ, असगन्ध सनाय यह सब समान भाग लेकर इनकी ६ ग्राम की मात्रा फांककर २५० ग्राम दूध के साथ देवें और दिन में कंटकारी के छोटे-छोटे टुकड़े कर पानी में उबालकर रोगी को भपारा दें।

विधि—पहले कर्पूर तथा पिपरमेंण्ट १ शीशी में डालकर वन्द कर लें जब दोनों मिलकर एक रूप हो जावें तब २-४ वार अच्छी तरह शीशी को हिलाकर फिर गुलरोगन से वैरोजा तक की ६ वस्तुओं को १ छोटी कढ़ाही में रखकर आग पर गरम करें जब सभी मिलकर एक दिल हो जांय कपड़े से छान लें गरम हालत में पिपरमेंण्ट तथा कर्पूर द्रव डालकर अच्छी तरह मिला दें। ढक्कनदार शीशी में भरकर रख दें। मलहम तैयार है।

उपयोग—इससे सभी प्रकार की वातज वेदनाओं में लाभ होता है। —पं० गणेशदत्त पाण्डेय द्वारा

गुप्तसिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(३०) सुरंजादि चूर्ण—सुरंजान मीठी, कालीमरिच, शुण्ठी, असगन्ध, पिप्पलीमूल, एरण्डमूलत्वक् प्रत्येक ५०-५० ग्राम, विधारात्वक् १०० ग्राम, खांड उत्तम २०० ग्राम।

विधि—सबको कूट-छानकर विधिवत् चूर्ण बनावें।

मात्रा—३-६ ग्राम तक रास्ना सप्तक क्वाथ के साथ या दूध से सुबह शाम।

उपयोग—आमवात, गृध्रसी, सन्धिवात आदि वातरोगों में उपयोगी है।

(३१) शंकरस्वेद—कपासमूलत्वक्, एरण्डमूलत्वक्, जौ, तिल काले, अलसी, सन के बीज, पुनर्नवा सब समानभाग।

विधि—उपरोक्त वस्तुओं को लेकर कूट लें और १ खुले मुख वाले पात्र में लगभग २५० ग्राम के करीब डाल दें और उसमें १० किलो के लगभग जल भर दें। घट के ऊपर चारपाई विछा दें और कम्बलों से उसे ढक दें और घट को अग्नि दें जिससे उसका स्वेद रोगी को लगने लगे। इन सभी वस्तुओं को पोटली बनाकर पीड़ित स्थान की सिकाई भी करनी चाहिये।

उपयोग—सभी प्रकार के वातरोगों के लिये उपयोगी है इससे रोगी के अङ्ग खुल जाते हैं।

—पं० मस्तराम शास्त्री द्वारा

गुप्तसिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(३२) वातरोगहर तैल—मालकांगनी के वीज ८०० ग्राम, मीठा तेलिया, कुचला, लोहवान कौड़िया, लौंग, जायफल, वादाम की मींग ५०-५० ग्राम।

विधि—प्रथम मालकांगनी को वारीक कूट लें पश्चात् सब औषधियां पृथक्-पृथक् वारीक पीसकर मिला देनी चाहिये और एक आतिशी शीशी में भरकर पातालयन्त्र से तेल निकाल लेना चाहिये।

व्यवहार विधि—यह तैल बाह्य तथा अन्तःप्रयोग दोषों के लिये लाभदायक है जहां वात का दर्द तथा शोथ हो वहां मालिश करनी चाहिये मालिश करते ही दर्द दूर हो जाता है। पक्षाघात एवं अन्य जटिल वातरोगों में १-२ बूंद बताशे में रखकर सेवन कराने से विशेष लाभ होता है। —प्रो० माधवाचार्य द्वारा

प्रयोग मणिमालांक से।

(३३) वातव्याधिहर रस—शुद्ध वच्छनाग १० ग्राम, शुद्ध संखिया ३ ग्राम, रसकर्पूर ६ ग्राम, रससिन्दूर ३० ग्राम, चीते की छाल २० ग्राम, लवङ्ग २० ग्राम, केशर २० ग्राम।

विधि—लवङ्ग, चित्रक, केशर, वच्छनाग कूट-कपड़छान करलें। एक खरल में प्रथम रससिन्दूर डालकर ग्वारपाठे के रस में मर्दन करें पश्चात् संखिया, रसकर्पूर, डालकर मर्दन करें फिर १-१ रत्ती की गोलियां बना लें।

मात्रा एवं उपयोग—१-१ वटी प्रातः-सायं दूध के साथ निगलने से वातव्याधि तथा उससे उत्पन्न शोथ एवं शूल दूर होता है। —पं० विश्रामानन्द द्वारा

प्रयोग मणिमालांक से।

(३४) वातव्याधिहर वटी—शुद्ध कुचला, कालीमरिच प्रत्येक ५०-५० ग्राम, सोंठ १० ग्राम, सुरंजानशीरी २० ग्राम, असगन्ध २० ग्राम, विधारा ३० ग्राम, कस्तूरी १ ग्राम, अफीम शुद्ध १० ग्राम।

विधि—प्रथम कुचला को गोमूत्र में ११ दिन भिगो दें बाद को चाकू से छीलकर और वीच से दो परत अलग कर उसमें लगी जीभ निकाल दें और कूटकर सुखा लें फिर थोड़े घृत में भूनकर अफीम, कस्तूरी अलग कर शेष

सब औषधियां मिला कूट-कपड़छन कर लें और एक खरल में प्रथम कस्तूरी डालकर थोड़ा पान का स्वरस डाल मर्दन करें जब कस्तूरी अफीम अच्छी तरह मिल जावें तब शेष औषधि कपड़छन की हुयी मिला पान का स्वरस डालकर १ दिन मर्दन कर बाजरे के बराबर गोली बनाकर सुखा लें।

मात्रा एवं उपयोग—प्रातः-सायं अथवा आवश्यकता के समय १-१ गोली गरम जल या शहद के साथ सेवन कराने से सभी प्रकार के वातव्याधिजन्य कष्ट दूर होते हैं। —पं० शिवनाथ शास्त्री द्वारा प्रयोग मणिमालांक से।

(३५) वातविकारनाशक तैल—त्रिकुटा, त्रिफला ३०-३० ग्राम, मालकांगनी ५० ग्राम, जाविश्री, जायफल ३०-३० ग्राम, दालचीनी १५ ग्राम, बड़ी कटेरी के फूल, सफेद कनेर की जड़, कलिहारी तीनों २०-२० ग्राम, सफेद संखिया, वत्सनाभ काला ३०-३० ग्राम, अफीम २० ग्राम, कुचला १०० ग्राम, भिलावा ३० ग्राम, जमालगोटा की मींग ३० ग्राम, करञ्ज की मींग ३० ग्राम, चौंटनी सफेद २० ग्राम, चौंटनी लाल २० ग्राम, धतूरे के बीज ४० ग्राम, लोहवान ३० ग्राम, गुग्गुल २५ ग्राम, सफेद सरसों ३० ग्राम, राई ३० ग्राम, लाल सरसों ३० ग्राम, केशर १० ग्राम, चर्बी रीछ २० ग्राम, आक का दूध ३० ग्राम, चर्बी शेर २० ग्राम।

विधि—संखिया, अफीम, केशर, चर्बी रीछ और शेर की, आक का दूध निकाल बाकी सब औषधियों को कूट पाताल यन्त्र से तैल निकाल लें और उस तैल में संखिया, केशर, चर्बी, आक का दूध घोटकर शीशी में भर लें।

उपयोग—इसकी मालिश करने से सभी प्रकार के वातजन्यशूल, शोथ आदि दूर होते हैं। —पं० शिवचरनलाल तिवारी द्वारा प्रयोग मणिमाला से।

(३६) शूलनाशक तैल—सरसों का तैल २०० ग्राम, आइल विण्टरगिन (चाय का तैल) १० बूंद, कारबोलिक एसिड ५ बूंद, अफीम २ ग्राम, कुचला २ ग्राम, सींगिया विष २ ग्राम, कर्पूर ६ ग्राम, धतूरे के फल तथा पत्तों का रस २५ ग्राम, अजवायन का फूल ६ ग्राम, पिपरमैण्ट ६ ग्राम।

विधि—धतूरे के रस में अफीम, कुचला, सींगिया विष का मर्दन कर और छानकर सरसों के तैल में मिला शीशी में भर लें और शेष सब औषधियां डालकर खूब हिला १० दिन तक रखा रहने दें, पश्चात् व्यवहार में लावें।

उपयोग—यह तैल सब प्रकार के दर्द में लाभदायक योग है। —आयुर्वेद विशारद पी० एन० द्वारा प्रयोग मणिमाला से।

(३७) वायुनाशक तैल—असगन्ध का रस ५०० ग्राम, अर्कपत्र स्वरस ५०० ग्राम, धतूरे का रस ५०० ग्राम, एरण्ड के पत्तों का रस ५०० ग्राम, थूहर दुग्ध १२५ ग्राम, सहंजने की छाल का क्वाथ १ कि०, तम्बाकू की लकड़ी का क्वाथ ५०० ग्राम, सोंठ १०० ग्राम, पीपल ५० ग्राम, भांग ५० ग्राम, हींग १० ग्राम, कुचला १० ग्राम, दालचीनी २० ग्राम, अजवायन २० ग्राम, मैंथी २० ग्राम, अफीम १० ग्राम, तिल का तैल १ कि०, सरसों का तैल १ कि०, एरण्ड का तैल ५०० ग्राम, महुआ का तैल ५०० ग्राम।

विधि—तैल विधि से पाक कर लें।

उपयोग—इस तैल की मालिश से सभी प्रकार के वातजन्य शूलों में लाभ होता है।

—श्री हरिचरण सिंह द्वारा प्रयोग मणिमाला से।

(३८) महावातारि घृत—छुहारा २० ग्राम, श्वेत गुग्गुल १०० ग्राम, श्वेत मरिच १५ ग्राम, अफीम १५ ग्राम, गोघृत ८०० ग्राम।

विधि—सफेद मरिच कूटकर छान लें, फिर अफीम मिलाकर घोटें। बाद में गुग्गुल मिलाकर कूट लें और छुहारे की गुठली निकाल उसमें भर दें। ३०० ग्राम मैदा पानी में मांडकर उसकी छोटी गुजिया-सी बना उसके अन्दर छुहारे भर दें और गोघृत में पकावें। जब शान्त हो जाय, तब उतार कर और गुजिया फोड़कर छुहारे निकाल लें। उसमें २०० ग्राम मिश्री मिला पीसकर लड्डू

वेर के वरावर गोली बना लें और घृत अलग छानकर तथा छानने से जो बचे उसे भी पीसकर घृत में मिलाकर अलग रखें।

प्रयोग तथा उपयोग—घी की मालिश इतनी करावें कि जलन होने लगे। १ गोली नित्य गोदुग्ध के साथ सेवन करावें। वातव्याधि के लिए बहुत उत्तम योग है।

—पं० हरनारायण मिश्र द्वारा
प्रयोग मणिमाला से।

(३९) वातरोगारि तैल—सरसों का तैल ४०० ग्राम, हाद्रभंगा (मेंगडी) का रस २०० ग्राम, अमरवेल का रस २०० ग्राम, सहंजने का रस २५० ग्राम, आक का रस २५० ग्राम, वेर के पत्तों का रस २५० ग्राम, धतूरे का रस २०० ग्राम, भृङ्गराज का रस २०० ग्राम, अफीम १० ग्राम, सेंधव लवण ५० ग्राम, कुचला ५० ग्राम, कपूर १० ग्राम, जल ४ किलो।

विधि—तैल पाक करके छानकर रख लें।

उपयोग—सभी प्रकार के वातरोगों में लाभदायक तैल है।

—वैद्यरत्न नारायणचन्द्र द्वारा
प्रयोग मणिमाला से।

(४०) वायुनाशक मलहम—अजवायन ५० ग्राम, मोंम १० ग्राम, नीलगिरी तैल १० ग्राम, कायफल ५० ग्राम, सोंठ १० ग्राम, तिल तैल २०० ग्राम।

विधि—इन सबमें से कायफल, अजवायन, सोंठ को पीस लें और तैल आग पर चढ़ा दें। जव तैल गरम हो जाय, तो धीरे-धीरे उपर्युक्त तीनों चीजें सावधानी से थोड़ी-थोड़ी करके डालें, अन्यथा तैल उफन जावेगा। इसका धुंआ भी नाक में नहीं जाना चाहिए। सारी दवा डाली जाने के वाद आग से नीचे उतार लें, फिर छानकर मोंम तथा नीलगिरी मिलाकर चलाते रहें। इस प्रकार मलहम तैयार हो जावेगा।

उपयोग—दर्द के स्थान पर इस मलहम की मालिश से आमवात, गृध्रसी आदि में लाभ होता है।

—श्रीमती यशोदा देवी द्वारा
प्रयोग मणिमाला से।

(४१) वातरोगान्तक वटक—नागौरी असगन्ध, मेंथी दाना, छिले हुए एरण्ड वीज, देशी गुड़ और उत्तम गोघृत ये पांचों चीजें वरावर-वरावर ५० ग्राम लें।

निर्माण विधि—नागौरी असगन्ध, साफ मेंथी दाना दोनों को अलग-अलग खूब वारीक कूट लें और मैदे की वारीक चलनी में छान लें। छिले हुए एरण्ड वीज के ऊपरी कागजी भाग और भीतरी पत्ती को अलग-अलग वारीक घोट लें। इमामदस्ते में छने हुए असगन्ध एवं मेंथी के चूर्ण को डाल दें। फिर घुटे हुए एरण्ड वीज डालकर आधा घण्टा तक जोरदार हाथों से कूटें। वाद में असली घी डालकर कुटाई करें और थोड़ा-थोड़ा घी डालते जावें। इस प्रकार आधा घण्टा कूटकर ५-५ ग्राम के वटक (लघु मोदक) वना लें। उन्हें किसी कांच या चीनी के मर्तवान में भरकर रख लें।

मात्रा एवं व्यवहार—१-१ वटक प्रातः-सायं गरम गोदुग्ध से लें।

विशेष—यदि वातरोग कुछ अधिक बढ़ा हुआ हो, तो रुग्ण को शोधित कुचला चूर्ण ½ से १ रत्ती तक लेकर निर्वीज मुनक्के में दें (वीज निकालकर वीज की जगह कुचला चूर्ण भरकर मुनक्का को लपेटकर रुग्ण को निगलवा दें) फिर आधा घण्टा वाद उक्त वटक गरम गोदुग्ध से दें। रुग्ण को सात्विक आहार पर ही रखें।

आलू, चावल, वासा एवं गरिष्ठ भोजनादि अपथ्य है। ब्रह्मचर्य से संयमपूर्वक रहना अत्यावश्यक है।

कुचले के स्थान पर महायोगराज गुग्गुल भी प्रयुक्त कर सकते हैं। इससे हड़फूटन, सुस्ती, काम करने में मन न लगना, कब्ज, सदा शरीर-दर्द वना रहना आदि विकार सरलता से दूर हो जाते है और साथ ही प्रदर भी मिट जाता है। लगभग एक माह तक प्रयोग में लें। जाड़ों और वरसात में इसका प्रयोग वहुत अच्छा रहता है। प्रौढ़ अवश्य प्रयोग में लें।

—श्रीमती वैद्या प्रकाशवती देवी जैन द्वारा
धन्वन्तरि सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(४२) एरण्ड वटी—एरण्ड के वीजों की मिंगी २५० ग्राम लेकर उन्हें मट्ठे में भिगो दें और ३ दिन तक

रोज मट्ठा बदलते रहें। चौथे दिन उसको पानी में धोकर २५० ग्राम घी में तल लें। फिर इसमें काली मरिच, छोटी पीपल, कुलिञ्जन तीनों १५-१५ ग्राम, असली अकरकरा ६ ग्राम, जवाखार, नौनियाखार, सेंधा नमक, सांचर नमक, लौंग, कलमी शोरा, नागकेशर, पीपरामूल तथा रेणुका प्रत्येक ७॥-७॥ ग्राम।

विधि—इन सबका बारीक चूर्ण करके मैदा की चलनी में छानकर मिला लें और खरल में डालकर खूब घुटाई करें। फिर बड़े बेर के बराबर गोलियां बना लें।

मात्रा—प्रातः-सायं १-१ गोली दूध से दें।

उपयोग—पक्षाघात, गृध्रसी तथा अन्य वातरोगों में उपयोगी गोलियां हैं। —धन्वन्तरि पक्षाघात रोगांक से।

(४३) धात्री भल्लातक वटी—शुद्ध मिलावा १ कि०, हरड़, बहेड़ा, आंवला प्रत्येक ४००-४०० ग्राम, सोंठ, काली मरिच तथा पीपल तीनों ३००-३०० ग्राम, काले तिल १ कि० तथा गुड़ पुराना १ कि०।

विधि—सबको बारीक कूटकर गुड़ मिला १-१ रत्ती की गोलियां बना लें।

मात्रा—१-२ गोली दिन में २ बार जल से दें।

उपयोग—यह वटी विभिन्न प्रकार के वातरोगों यथा—आमवात, सन्धिवात, अर्धाङ्गवात, उरुस्तम्भ, गृध्रसी आदि में लाभ करती है।

(४४) एरण्ड पाक [विशेष]—१ किलो अण्डी की अन्तर्जिह्वा निकाले हुए मग्ज को पीस ४ किलो गोदुग्ध में मिलाकर मावा बनावें। पश्चात् ४०० ग्राम घृत मिलाकर भूनें और २॥ किलो शक्कर की चाशनी कर मावे को मिला दें तथा सोंठ, कालीमरिच, पीपल, दालचीनी, तेजपात, नागकेशर, इलायची, पीपरामूल, चित्रकमूल, चव्य, गिलोयसत्व, शुंठी, अजवायन, अजमोद, हल्दी, दारुहल्दी, असगन्ध, खरेंटी के बीज, पाठा, हाऊबेर, वायविडङ्ग, गोखरू, कुड़ा की छाल, देवदारु, वृद्ध दारु, विदारीकन्द सभी १०-१० ग्राम का कपड़छन चूर्ण मिलाकर पाक बना लें।

मात्रा—४०-८० ग्राम सुबह, शाम दूध से।

उपयोग—इसे जीर्ण वातरोगों में कुछ दिनों तक निरन्तर सेवन कराने से विशेष लाभ होता है।

—रसतन्त्रसार प्रथम भाग से।

(४५) माजून कुचला—शुद्ध कुचला २०० ग्राम, काली मरिच, श्वेत मरिच, रूमीमस्तङ्गी, केशर, लौंग, दालचीनी, सफेद तोदरी, लाल तोदरी, चोबचीनी, शीतल मरिच, आंवला, छोटी इलायची दाने, अजवायन, सफेद चन्दन, पीपल, वंशलोचन, नफेद मूसली, गावजवां, जायफल, अगर, शुद्ध वच्छनाग, ऊदसलिगां, तेजपात, जटामांसी, सोया, सालममिश्री, तुन्दरू यह सब २७ औषधियां १०-१० ग्राम, सोने के वर्क और चांदी के वर्क २०-२० नग तथा शहद सबसे ६ गुना लेवें।

विधि—काष्ठादि औषधियों को कूटकर कपड़छन चूर्ण करें, फिर वर्क तथा शहद मिलाकर माजून बना लें।

मात्रा—१-२ ग्राम तक बकरी या गाय के दूध के साथ या निवाये जल से दिन में २-३ बार दें।

उपयोग—यह माजून वातप्रकोपज वेदना को नष्ट करता है। कलाय खञ्ज, गृध्रसी, सर्वाङ्गवात आदि वात रोगों के लिए बहुत उत्तम योग है।

(४६) भल्लातकासव—टोपी रहित भिलावा ५ कि०, लौंग, सोंठ, काली मरिच, पीपल सभी २५०-२५० ग्राम, दालचीनी, तेजपात, नागकेशर, छोटी इलायची के दाने प्रत्येक १५-१५ ग्राम, धाय के फूल २॥ कि०, गुड़ २५ कि० तथा उबाला जल १०० कि० लेवें।

विधि—भिलावे तथा अन्य औषधियों को जौकुट कर लें। फिर जल, गुड़ तथा सब औषधियों को मिला अमृतवान में भरकर मुंह मुद्रा कर लें। १॥ मास बाद जब आसव परिपक्व हो जाय, तब निकालकर छान लें।

मात्रा—१-१ औंस दिन में २ बार समान जल के साथ दें।

उपयोग—विभिन्न प्रकार के वातरोगों के लिए उपयोगी आसव है। —रसतन्त्रसार सिद्ध योग संग्रह से।

(४७) वातरोगहर तैल—मेथी, दालचीनी, असगन्ध, अजवायन, धतूरे के पत्तों का रस १००-१०० ग्राम, तम्बाकू की लकड़ी ५०० ग्राम, पानी १४ कि०।

विधि—ऊपर की सम्पूर्ण चीजों को यवकुट कर जल में क्वाथ करें। ३॥ कि० जल शेष रह जाय, तो उतारकर अच्छी तरह मसलकर छान लें। फिर इस छने हुए जल मे १॥ कि० तिल तैल डालकर आग पर पकावें और तैल मात्र शेष रहने पर इसे आग पर से उतार लें। उतारने के बाद इसमें १० ग्राम संखिया अच्छी तरह बारीक पीसकर डाल दें और ठण्डा हो जाने पर बोतलों में भर लें।

उपयोग—इस उत्तम तैल की मालिश से सभी प्रकार के वातरोग नष्ट हो जाते हैं। तैल की मालिश कराने के बाद रोगी को धूप में बिठा दें या लिटा दें। ध्यान रहे यह तैल विषैला है, अतः इसकी मालिश सिर एवं शरीर के कोमल अङ्गों पर नहीं करनी चाहिए।

(४८) **मल्लचन्द्रोदय वटी**—सोंठ, काली मरिच, छोटी पीपर, पीपरामूल, जायफल, लोंग, छोटी इलायची के दाने, असली अकरकरा, असली केशर सब ६-६ ग्राम, मल्लचन्द्रोदय ४५ ग्राम लें।

विधि—मल्लचन्द्रोदय को खरल में डालकर ४ घण्टे तक खूब अच्छी तरह से घोटें, फिर सबको मिलाकर २ घण्टे तक खरल में डालकर घोटें। अन्त में सबके बराबर पान का रस देकर मिला लें और घोट-घोटकर सुखा लें। ३ दिन तक घुटाई करके चने के बराबर गोलियां बना लें।

मात्रा—२-२ गोली प्रातः-सायं मधु से देनी चाहिए, ऊपर से रास्नादि क्वाथ पिलाना चाहिए। यदि कब्ज हो, तो इसमें प्रतिबार २० ग्राम एरण्ड तैल ऊपर से मिलाकर रोगी को पिला दें।

उपयोग—इस प्रयोग से पक्षाघात, अर्दित, उरुस्तम्भ तथा अन्य वातरोगों में विशेष लाभ होता है।

—धन्वन्तरि पक्षाघात रोगांक से।

[इ] प्रमुख शास्त्रीय योग

क्रमांक	कल्पना	औषधि नाम	ग्रन्थ सन्दर्भ	मात्रा एवं समय	अनुपान	विशेष
१	रस	योगेन्द्र रस	भै० र०	२५० मि०ग्रा० दिन में २ बार	त्रिफला क्वाथ	योगवाही सर्वरोगकुलान्तकृत्।
२	,,	बृ० वातचिन्तामणि रस	,,	,, ,,	निर्गुण्डीपत्र-स्वरस + मधु	वातपित्तशामक।
३	,,	कृष्णचतुर्मुख रस	,,	१२५ मि०ग्रा० दिन में २ बार	त्रिफला चूर्ण + मधु	,,
४	,,	स्वच्छन्दभैरव रस	,,	,, ,,	रास्नादि-क्वाथ	सर्व वातविकारहर।
५	,,	रसराज रस	,,	२५० मि०ग्रा० दिन में २ बार	दुग्ध	वातव्याधिकुलान्तकृत्।
६	,,	चिन्तामणि रस	,,	,, ,,	शोभाञ्जन-त्वक् क्वाथ	वात, पित्त, कफ शामक।
७	,,	वातगजांकुश रस	र० सा० सं०	,, ,,	पिप्पली चूर्ण + मंजिष्ठादि क्वाथ	क्रोष्टुक शीर्षकमन्यास्तम्भहर।

८	रस	समीरपन्नग रस	यो० र०	६० मि०ग्रा० दिन में २ बार	आर्द्रकस्वरस +मधु	वात, कफ शामक।
९	,,	मल्ल सिन्दूर	सि० मैं० मणि०	,, ,,	,,	,,
१०	,,	वातविध्वंसन रस	यो० र०	१२५ मि०ग्रा० दिन में २ बार	,,	शुद्ध वातविकृति में।
११	,,	त्रैलोक्य चिन्तामणि रस	मैं० र०	,, ,,	,,	वात, कफ शामक।
१२	,,	वातकुलान्तक रस	र० सा० सं०	,, ,,	,,	,,
१३	,,	वेदनान्तक रस	र० त०	,, ,,	,,	वेदनाशामक।
१४	,,	तालकेश्वर रस	भै० र०	५०० मि०ग्रा० प्रातः	दुग्ध	अस्पर्श विनाशक।
१५	,,	स्वर्णभूपति रस	यो० र०	१२५ मि०ग्रा० दिन में २ बार	आर्द्रक स्वरस +मधु	सर्व वातविकारहर।
१६	,,	समीरगजकेसरी	र० त० सा०	२५० मि०ग्रा० दिन में २ बार	ताम्बूल स्वरस	,,
१७	भस्म	स्वर्ण भस्म	र० त०	१५-३० मि०ग्रा० दिन में २ बार	रससिन्दूर +मधु	रोन्द्रियविघ्न, योगवाही, बल्य।
१८	,,	अभ्रक भस्म	,,	१२५–२५० मि० ग्रा० दिन में २ बार	आर्द्रकस्वरस +मधु	वात, कफ शामक।
१९	,,	लौह भस्म	,,	,, ,,	,,	बल्य, रसायन, वातहर।
२०	,,	रौप्य भस्म	,,	६० मि० ग्रा० दिन में २ बार	,,	जीर्ण वातरोगों में।
२१	वटी	अमरसुन्दरी वटी	नि० र०	१–२ गोली दिन में २-३ बार	उष्ण जल	सर्व वातविकारहर।
२२	,,	अग्नितुण्डी वटी	शा० सं०	,, ,,	,,	जीर्ण वातरोगहर।
२३	,,	अजमोदादि वटक	भै० र०	,, ,,	,,	सर्व वातविकारहर।
२४	,,	आरोग्यवर्द्धिनी वटी	र० र० स०	,, ,,	त्रिफला क्वाथ	शोधक, शामक।
२५	,,	वातहर गुटिका	आ० नि० मा०	,, ,,	घृत	शामक, वातहर।
२६	क्वाथ	दशमूल क्वाथ	शा० सं०	१०–२० ग्राम का क्वाथ दिन में १-२ बार	—	वात, कफहर।
२७	,,	महारास्नादि क्वाथ	,,	,, ,,	—	सर्वाङ्ग वायुशामक।
२८	,,	लघु रास्नादि क्वाथ	,,	,, ,,	—	,,
२९	,,	रास्नासप्तक क्वाथ	यो० र०	,, ,,	—	,,
३०	,,	पुनर्नवादि क्वाथ	शा० सं०	,, ,,	—	शोथ, वातहर।
३१	गुग्गुल	योगराज गुग्गुल	ग० नि०	२–३ गोली दिन में २-३ बार	महारास्नादि क्वाथ	आमानुबन्धी वात में।
३२	,,	महायोगराज गुग्गुल	शा० सं०	१–२ गोली दिन में १-२ बार	,,	,,

३३	गग्गुल	त्रयोदशाङ्ग गुग्गुल	भै० र०	२–३ गोली दिन में २-३ बार	महारास्नादि क्वाथ	आमानुबन्धी वात में।
३४	,,	कैशोर गुग्गुल	च० द०	,, ,,	त्रिफलामृता-क्वाथ	रक्तावृत वात में।
३५	,,	सिंहनाद गुग्गुल	भै० र०	,, ,,	रास्नादि-क्वाथ	शोधक, वातहर।
३६	,,	रास्नादि गुग्गुल	,,	,, ,,	,,	सर्व वातविकारहर।
३७	,,	वातारि गुग्गुल	,,	,, ,,	,,	,,
३८	,,	अमृतादि लग्गुल	भा० प्र०	,, ,,	,,	,,
३९	चूर्ण	नारसिंह चूर्ण	च० द०	१–२ ग्राम दिन मे २-३ बार	दुग्ध	वात, कफ शामक।
४०	,,	अजमोदादि चूर्ण	शा० सं०	३–४ ग्राम दिन में २-३ बार	उष्ण जल	शोथशूल, श्लेष्मा शामक।
४१	,,	वैश्वानर चूर्ण	वृ० मा०	३–५ ग्राम दिन में २-३ बार	,,	वातानुलोमक।
४२	,,	नारायण चूर्ण	शा० सं०	,, ,,	,,	कोष्ठशोधक।
४३	आसव-अरिष्ट	दशमूलारिष्ट	,,	१०-१५ मि०लि० भोजनोत्तर	समान जल मिलाकर	सर्व वातविकारहर।
४४	,,	बलारिष्ट	भै० र०	,, ,,	,,	,,
४५	,,	अश्वगन्धारिष्ट	,,	,, ,,	,,	,,
४६	,,	कुमार्यासव	सि० भै० मणि०	,, ,,	,,	कोष्ठशोधक, वातहर।
४७	,,	मृतसंजीवनी सुरा	भै० र०	,, ,,	,,	वात-कफहर, बल्य।
४८	,,	प्रसारणीसंधान	च० द०	,, ,,	,,	वातशामक।
४९	,,	गुग्गुलासव	ग० नि०	,, ,,	,,	,,
५०	,,	द्राक्षारिष्ट	भै० र०	,, ,,	,,	शोधक, बल्य।
५१	पाक-लेह	कल्याण लेह	,,	३–५ ग्राम दिन में २ बार	घृत + मधु	जडगद्गदमूकत्वहर।
५२	,,	रसोनपिण्ड	,,	५–१० ग्राम दिन में १-२ बार	एरण्ड क्वाथ	अपतन्त्रक, अर्दितहर।
५३	,,	एरण्ड पाक	यो० र०	२०–३० ग्राम दिन में १-२ बार	दुग्ध	सर्व वातविकारहर।
५४	,,	अमृत मल्लातक	च० द०	५–१० ग्राम दिन में १-२ बार	धारोष्ण दुग्ध	वात, कफ शामक।
५५	,,	महारसोन पिण्ड	यो० र०	,, ,,	एरण्ड क्वाथ	अर्दित, अपतन्त्रकहर।
५६	,,	एरण्ड पायस	भा० प्र०	४० ग्राम को दुग्ध में पकाकर प्रातः	—	सर्व वातविकारनुत्।
५७	,,	शुंठ्यादि पायस	र० त० सा०	२० ग्राम को १६ गुने दुग्ध में पकाकर प्रातः	—	

५८	घृत	नाराच घृत	भै० र०	५–१० ग्राम दिन में १ बार	उष्ण दुग्ध	कोष्ठशोधक।
५९	,,	अश्वगन्धाद्य घृत	,,	५ ग्राम दिन मे २ बार	दुग्ध	वातघ्न, मांसवर्धक।
६०	,,	दशमूलाद्य घृत	,,	,, ,,	अभ्यङ्गार्थ	तर्पक, पवनार्तिहर।
६१	तैल	विष्णु तैल	,,	यथेष्ट, यथासमय	,,	अर्दित, पार्श्वशूलहर।
६२	,,	बृहद्विष्णु तैल	,,	,, ,,	,,	मन्यास्तम्भगलग्रहहर, वात-पित्त शामक।
६३	,,	नारायण तैल	,,	,, ,,	,,	सर्वाङ्ग वातशामक।
६४	,,	सिद्धार्थक तैल	,,	,, ,,	,,	कुब्जता, पंगुताहर।
६५	,,	हिमसागर तैल	,,	,, ,,	,,	वात-पित्त शामक।
६६	,,	वायुच्छायासुरेन्द्र तैल	,,	,, ,,	,,	आक्षेपक-गात्रकम्पहर।
६७	,,	माष तैल	,,	,, ,,	,,	आक्षेपक-विश्वाची-अवबाहुकहर।
६८	,,	बृहन्माष तैल	,,	,, ,,	,,	हस्तकम्प-शिरःकम्प-बाहुशोषहर।
६९	,,	कुब्जप्रसारणी तैल	,,	,, ,,	,,	कुब्जास्तिमितपङ्गुत्वहर वात-कफशामक।
७०	,,	सप्तशतिकाप्रसारणी तैल	,,	,, ,,	,,	,,
७१	,,	एकादशशतिका-प्रसारणी तैल	,,	,, ,,	,,	वात-पित्त-कफ शामक।
७२	,,	अष्टादशशतिका-प्रसारणी तैल	,,	,, ,,	,,	,,
७३	,,	महाराजप्रसारणी तैल	,,	,, ,,	,,	,,
७४	,,	महाबला तैल	,,	,, ,,	,,	अर्दित-आक्षेपकहर।
७५	,,	महाविषगर्भ तैल	,,	,, ,,	,,	सर्व वातामयहर।
७६	,,	शतावरी तैल	,,	,, ,,	,,	,,
७७	,,	बला तैल	सुश्रुत	,, ,,	,,	आक्षेपकादि वातरोगहर।
७८	,,	लघु विषगर्भ तैल	यो० र०	,, ,,	,,	,,
७९	,,	धत्तूरादि तैल	शा० सं०	,, ,,	,,	,,
८०	,,	महामरिच्यादि तैल	भै० र०	,, ,,	,,	कोष्ठक शीर्षकहर।

वातविकारों में सामान्य चिकित्सा उपक्रम

शुद्ध वातव्याधि में स्नेहन, स्वेदन, स्नेहिकनस्य, तर्पण, अनुवासन बस्ति मधुर, अम्ल लवण रस युक्त बृंहण पदार्थ, मांसरस, उड़द व तिलो से बनी स्निग्ध कृशरा आदि के सेवन से प्रवृद्ध वात को शान्त करना चाहिये। वातहर औषधियों से अनेक बार सिद्ध किया हुआ तैल वातनाशन के लिये सर्वोत्तम वस्तु है। रोगी को घृत, तैल, वसा मज्जा में से किसी एक को या सबको मिलाकर पिलावें। साथ ही आनूप मांस रस, दुग्ध, घृत मिश्रित दालों के यूष आदि का भोजन करावें। अधिक स्नेहन से यदि रोगी उद्विग्न हो जावे तो कुछ दिन स्नेह-पान, मर्दन बन्द कर दें। स्निग्ध व बृंहण भोजन देते रहें। उद्वेग दूर होने पर पुनः स्वेदन करावें। अन्तर नाड़ी,

प्रस्तर, शंकर आदि विविध स्वेदों से आवश्यकतानुसार स्वेद दें। इस तरह स्नेहन, स्वेदन रोगी व रोग की आवश्यकता के अनुसार बार-बार कराना चाहिये। अधिक स्नेहन व गुरु स्निग्ध भोजन से प्रायः स्रोतोवरोध व मल विबन्ध हो जाता है, ऐसी अवस्था में स्नेहन स्वेदन लाभकर नहीं होता। इस अवस्था में हरीतकी चूर्ण, पिप्पली चूर्ण आदि देकर अनुलोमन अथवा गर्म दूध में एरण्ड तैल, सिल्वक घृत देकर विरेचन करावें। दुर्बल रोगियों को वातहर द्रव्यों के क्वाथ से बनी निरुहणवस्ति दें। दीपन-पाचन चूर्ण, पुरातन अरिष्ट के सेवन से पाचकाग्नि को उत्तेजित करें। अग्नि बढ़ जाने पर स्नेहन, स्वेदन, अनुवासन वस्ति आदि का पुनः प्रयोग करें। प्रवृद्ध वात के शमन हो जाने पर भी रोगी को अधिक दिनों तक वातहर औषधियों का सेवन कराना चाहिये।

आक्षेपयुक्त वातव्याधियों में सफल औषधि व्यवस्था-पत्र

तात्कालिक चिकित्सा—आक्षेप के समय रोगी व मुख पर शीतल जल के छींटे देना, कटफल चूर्ण, चूना मिला नौसादर, अमोनियो आदि का नासा में प्रधमन देकर बेहोशी तथा आक्षेप को दूर करने का प्रयत्न करना चाहिये।

दीर्घकालिक चिकित्सा व्यवस्था—(१) रससिन्दूर ७० मि० ग्रा०+वातकुलान्तक १२० मि० ग्रा०+वृ० वातचिन्तामणि ७० मि० ग्रा०×१ मात्रा प्रातः-सायं मांस्यादिक्वाथ[१] से।

(२) सारस्वतारिष्ट २० मि० लि० समान जल मिलाकर भोजनोपरान्त दें।

(३) अपतन्त्रकारि वटी[२] ½ ग्राम×१ मात्रा रात को।

धनुस्तम्भ, आभ्यान्तरायाम, बाह्यायाम, पार्श्वायाम, में सफल औषधि व्यवस्था-पत्र

(१) योगेन्द्र रस ७० मि० ग्रा०, सिद्ध मकरध्वज ७० मि० ग्रा०, ब्राह्मीवटी २४० मि० ग्रा०, मल्ल-सिन्दूर २५० मि० ग्रा०। १ मात्रा × मांस्यादिक्वाथ से।

(२) मृतसंजीवनी सुरा १० मि० लि० + अश्वगन्धारिष्ट २० मि० लि० × १ मात्रा भोजनोपरान्त दोनों समय।

(३) छागलाद्य घृत—१० ग्राम × १ मात्रा प्रातः तथा रात्रि को दूध व मिश्री से।

धनुर्वात में सफल औषधि व्यवस्था-पत्र

(१) वातनाशन रस १२० मि० ग्रा०, रसराज रस, १२० मि० ग्रा०, माहेश्वर रसायन ½ ग्राम। १ मात्रा × आर्द्रक रस तथा मधु से सुबह, शाम।

(२) मल्लसिन्दूर ६० मि० ग्रा०, त्रैलोक्यचिन्तामणि ६० मि० ग्रा०, योगेन्द्ररस १२० मि० ग्रा०। १ मात्रा × नं० १ की औषधि के २-२ घण्टे बाद निर्गुण्डी रस व मधु से।

(३) अश्वगन्धाद्य घृत—१० ग्राम × १ मात्रा रात्रि में मांस्यादि क्वाथ से।

(४) महानारायन तैल—१० ग्राम × १ मात्रा दूध में मिलाकर पीने को दें।

---

१. **मांस्यादि क्वाथ**—जटामांसी १० ग्राम, नागौरी असगन्ध ३ ग्राम, खुरासानी अजवायन के बीज १॥ ग्राम लेकर कूटकर २०० ग्राम पानी में हांडी में उबालें। जब ५० ग्राम क्वाथ बाकी रहे छानकर ठण्डा कर १० ग्राम मधु मिलाकर सेवन कराना चाहिये।

२. **अपतन्त्रकारि वटी**—शुद्ध हींग १० ग्राम, कर्पूर देशी १० ग्राम, गांजा १० ग्राम, खुरासानी अजवायन के बीज या पत्ती २० ग्राम, तथा तगर २० ग्राम सबका कपड़छन चूर्ण कर जटामांसी के फांट में घोटकर २-२ रत्ती की गोलियां बनाकर छाया में सुखाकर रखें।

पक्षवध, एकांगघात, सर्वाङ्गघात व अधरांगघात में सफल औषधि व्यवस्था-पत्र

(१) नवग्रह रस १२० मि० ग्रा०, वातकुलान्तक १२० मि० ग्रा०, बृ० योगराजगूगल ½ ग्राम। १ मात्रा × प्रातः-सायं निर्गुण्डी रस व मधु से।

(२) शुद्ध कुपीलु १२० मि० ग्रा०, महारसोन पिण्ड ३ ग्राम। १ मात्रा × भोजनोत्तर २ बार गर्म जल से।

(३) दशमूलारिष्ट २४ मि० लि० १ मात्रा × समान जल मिलाकर भोजनोपरान्त दें।

(४) महानारायन तैल २० मि० लि० प्रातः या सोते समय दूध में मिलाकर पिलावें।

(५) मालिश के लिये—कुपीलु तैल, महामाष तैल या प्रसारिणी तैल का प्रयोग करें।

अर्दित पर सफल औषधि व्यवस्था-पत्र

(१) स्वर्णसमीरपन्नग ६० मि० ग्रा०, मल्लसिन्दूर ६० मि० ग्रा०, रसराज रस १२५ मि० ग्रा०। १ मात्रा × निर्गुण्डी पत्र स्वरस + मधु से।

(२) महालक्ष्मीविलास रस २५० मि० ग्रा०, महायोगराज गूगल २५० मि० ग्रा०। १ मात्रा × महारास्नादि क्वाथ से ६ बजे तथा मध्याह्न २ बजे।

(३) अश्वगन्धारिष्ट २० लि०, रसोनसुरा १० मि० लि०। १ मात्रा × भोजनोपरान्त समान जल मिलाकर।

(४) नस्य—मरिच + विडङ्ग + तुलसीपत्र + शोभांजन बीज सभी समानभाग मिलाकर आवश्यकतानुसार मात्रा से नस्य दिलावें।

(५) अभ्यङ्ग—श्लेष्मा के ह्रास होने पर प्रसारिणी तैल की मालिश करावें।

(६) लेप—राई + अकरकरा + मधु तीनों ६-६ ग्राम मिलाकर ३-४ बार जीभ पर मलें। इससे जिह्वा-विकार दूर होते हैं। वक्र हुये भाग से विपरीत भाग में कान के नीचे ग्रीवा से ऊपर लहसुन १० ग्राम + गूलर का दूध २० ग्राम पीसकर लेप कर दें। इसके पश्चात् गाय के गोबर के कण्डों की अग्नि से धीरे-धीरे सेक करें।

(७) स्वेदन—दशमूलक्वाथ ५० ग्राम बकरी के दूध में डालकर वक्रभाग पर नेत्र बन्द कराके भाप दिलवावें।

विश्वाची अवबाहुक में सफल औषधि व्यवस्था-पत्र

(१) वातकुलान्तक १२० मि० ग्रा०, रसराज १२० मि० ग्रा०, पंचामृतलोह गुग्गुल ½ ग्राम। १ मात्रा × प्रातः-सायं एरण्डमूल क्वाथ से।

(२) रसोनसुरा १० मि० लि० + दशमूलारिष्ट २० मि० लि० १ मात्रा × भोजन के बाद समान जल मिलाकर दें।

(३) एरण्डपाक २५ ग्राम × १ मात्रा रात्रि को सोते समय दूध से।

गृध्रसी में सफल औषधि व्यवस्था-पत्र

(१) शुद्ध कुपीलु ६० मि० ग्रा० + समीरपन्नग १२० मि० ग्रा० + बृ० योगराज ½ ग्राम रसोनपिण्ड २ ग्राम—१ मात्रा × प्रातः-सायं हारसिंगार क्वाथ या एरण्डमूल क्वाथ के साथ दें।

(२) लशुनक्षीरपाक—२५० ग्राम × १ मात्रा प्रातः १० बजे।

(३) वातगजांकुश २५० मि० ग्रा० + वैश्वानर चूर्ण ३ ग्राम + १ मात्रा × भोजनोत्तर गर्म जल से।

(४) एरण्ड तैल २० मि० लि० १ मात्रा × रात्रि को सोते समय गोमूत्र, शुण्ठी क्वाथ या दुग्ध के साथ दें।

(५) अभ्यङ्ग–महाविषगर्भ तैल से करें।

कोष्टुशीर्षक में सफल औषधि व्यवस्था-पत्र

(१) रसमाणिक्य १२० मि० ग्रा० + गुडुच्यादि लोह २४० मि० ग्रा० + कैशोर गुग्गुल १ ग्राम १ मात्रा × प्रातः दोपहर शाम त्रिफला क्वाथ से।

(२) एरण्ड तैल २० मि० लि०–१ मात्रा × रात्रि में गोदुग्ध के साथ।

(३) अभ्यङ्ग–तीव्र वेदना के समय महामरिचादि तैल एवं पाद दाह होने पर महागुडुची तैल का अभ्यङ्ग करें।

(४) स्वेदन–पुनर्नवा + एरण्डपत्र + विल्वपत्र + काकमांची + आकपत्र + धत्तूरपत्र + गुलबाबूना के क्वाथ से पीड़ित स्थान का स्वेदन करावें।

मन्यास्तम्भ में सफल औषधि व्यवस्था-पत्र

(१) कृष्णचतुर्मुख १२५ मि० ग्रा० + योगराजगूगल १ ग्राम–१ मात्रा × रास्नादिक्वाथ से प्रातः दोपहर शाम दें।

(२) अभ्यङ्ग–स्तब्धता स्वल्प होने पर सैन्धवादि या महाविषगर्भ तैल की मालिश करके बालू की पोटली से सेक करें।

मूक, विमिन्न-गद्‌गद् में सफल औषधि व्यवस्था-पत्र

(१) कल्याणकावलेह २ ग्राम + मण्डूरभस्म २५० मि० ग्रा० + किन्नरकण्ठ रस २४० मि० ग्रा०। १ मात्रा × गर्म दूध में मिलाकर दिन में ३ बार दें।

(२) दशमूल क्वाथ ६० मि० लि०, पुष्करमूल चूर्ण २ ग्राम, शुद्ध हींग १ ग्राम, गोघृत ६ ग्राम। १ मात्रा × प्रातः १० बजे तथा रात्रि को सोते समय दिलवावें।

[ई] प्रमुख पेटेण्ट आयुर्वेदीय योग

क्रमांक	योग का नाम	निर्माता कम्पनी	उपयोग विधि	विशेष
१	रुमालिया टेबलेट	हिमालय ड्रग	१–२ गोली २–३ बार प्रतिदिन।	विभिन्न वातरोगों में उपयोगी।
२	आर० कम्पाउण्ड	अलारसिन	२ गोली दिन में ३-४ बार प्रतिदिन प्रारम्भ में दें। बाद में २ गोली दिन मे २ बार दें।	

३	वातारि टेबलेट	धन्वन्तरि कार्यालय	१–२ गोली दिन में २-३ बार जल या एरण्ड तैल मिले दूध से।	विभिन्न वातरोगों में उपयोगी।
४	रुमालिन टेबलेट	मोहता रसा०	१–२ गोली ३ बार जल से।	,, ,,
५	एमेटीकोल टेबलेट	मार्तण्ड	,, ,,	,, ,,
६	रेमीटोन टेबलेट	गैम्बर्स	,, ,,	,, ,,
७	वातान्तक कैपसूल	गर्ग वनौषधि	१–१ कैपसूल प्रातः सायं जल से।	,, ,,
८	वातरोगहर कैपसूल	ज्वाला आयु०	,, ,,	,, ,,
९	वातारि कैपसूल	पंकज फार्मा	,, ,,	
१०	रास्ना घनसत्व टेबलेट	गर्ग वनौषधि	१–२ टेबलेट दिन में ३ बार जल से।	,, ,,
११	रुमालिया क्रीम	हिमालया ड्रग	पीड़ित स्थान पर दिन में १-२ बार लगाकर रुई से सेकना चाहिये।	
१२	वातनोल मलहम	गर्ग वनौषधि	,, ,,	,, ,,
१३	वातोना मलहम	ज्वाला आयु०	,, ,,	,, ,,
१४	अदमोन	प्रताप फार्मा	१ मि० लि० प्रतिदिन या एक दिन छोड़कर मांस में	,, ,,
१५	कुचला	बुन्देलखण्ड	,, ,,	,, ,,
१६	गिरधार	मार्तण्ड	१–२ मि० लि० त्वचा में आवश्यकतानुसार।	,, ,,
१७	वातकण्टक	जी० ए० मिश्रा	१–२ मि० लि० मांस में १ दिन छोड़कर।	,, ,,
१८	मारुताशी	मार्तण्ड	,, ,,	,, ,,
१९	रास्ना	बुन्देलखण्ड	,, ,,	,, ,,

[उ] प्रमुख पेटेण्ट एलोपैथिक योग

औषधि का नाम	निर्माता	मात्रा एवं व्यवहार-विधि	विशेष
१. इन्जेक्शन—			
१. एल्जेसिन इन्जेक्शन (Algesin)	Alembic	३ मि० लि० की सुई गहरे मांस में नित्य या १ दिन छोड़कर लगावें।	वातजन्य रोगों में लाभदायक।
२. एसजीपायरिन (Esgipyrin)	S. Geigy	,, ,,	यही गुणधर्म ब्युटारिन (Butarin) केमिस कं० का, वी० पी० पाइरिन बी०पी० एल कं० का भी मिलता है।

३ रियूमिनोल (Rheuminol)	East India	३ मि० लि० की सुई गहरे मांस में नित्य लगावें।	वातजन्य रोगों में लाभदायक।
४. नोवाल्जिन (Novalgin)	Hoechst	२–५ मि० लि० नित्य मांस में या नस में आवश्यकतानुसार।	वातजन्य रोगों में तीव्रशूल की अवस्था में।
५. न्यूरोबियोन (Neurobion)	E. Merck	एक इन्जेक्शन नित्य या १ दिन छोड़कर मांस में या नस में दें।	वातरोगों के स्थाई लाभ के लिये ८–१५ दिन तक दिलवावें।
२. कैपसूल—			
१. सिपलासिड (Ciplacid)	Cipla	२५–५० मि० ग्रा० × २ बार भोजन के बाद। धीरे-धीरे मात्रा बढ़ाकर २०० मि० ग्रा० तक लेजावें (विभाजित मात्रा में)।	यही कैपसूल इडीसीन (Idicin) सिपला कं० का, इण्डोसीड (Indocid) एम०एस० डी० कं० का भी उपलब्ध है।
२. ब्यूटा प्राक्सीवॉन (Buta Proxyvon)	Wockhardt	१ कैंपसूल दिन में २ बार आवश्यकतानुसार ३ बार तक दे सकते हैं।	वातजन्य रोगों में शूल कम करने के लिये दें।
३. टेवलेट—			
१. ब्रूफेन (Brufen)	Boots	२ टेवलेट सुबह, शाम प्रारम्भ में देकर बाद में १–१ गोली सुबह, दोपहर, शाम दें।	वातरोगों में लाभदायक। शोथ तथा शूल दोनों में लाभ करती है।
२. बूटाडैक्स (Butadex)	Cadila	,, ,,	,,
३. एल्जेसिन (Algesin)	Alembic	,, ,,	,,
४. ब्यूटाकार्टिडिन (Butacortidin)	Indo Pharma	,, ,,	,,
५. ब्यूटा जौलेन्डीन (Buta Zolandin)	S. Geigy	,, ,,	,,
६. ब्यूटाप्रेड (Butapred)	Biochem	,, ,,	,,
७. प्लेसिडिन (Placidin)	Lupin	१–१ गोली सुबह, दोपहर, शाम।	शोथजन्य वातरोग में लाभप्रद।
वाह्य प्रयोज्य औषधियां—			
१. एल्जीपान (Algipan)	Wyeth	दर्द स्थान पर मलवावें।	पीड़ा तथा शोथ को कम करती है।
२ मैडीक्रीम (Medicreme)	T. C. F.	,, ,,	,,
३. रिलैक्सिल (Relcxyl)	Franco Indian	,, ,,	,,
४. स्लोन्स लिनीमेण्ड (Slones Linimend)	Warner	,, ,,	,,

शिरःशूल

[अ] एकौषध एवं साधारण प्रयोग

(१) अकरकरा के महीन चूर्ण ४ रत्ती को बादाम के हलुवे के साथ प्रातः-सायं सेवन कराने से निरन्तर एक समान बना रहने वाला सिरदर्द दूर हो जाता है। ऐसी अवस्था में अकरकरा के चूर्ण की नस्य भी साथ में देनी चाहिए। यदि आधाशीशी का दर्द हो, तो अकरकरा को छीलकर जिस ओर दर्द हो, उस ओर की दाढ़ में दबाकर धीरे-धीरे चबाने से तत्काल शान्ति मिलती है।

(२) अकल बेर की जड़ को और पत्तों को पीसकर सिर पर बांधने से शिरःशूल में लाभ होता है।

(३) अडूसे के फूलों को छायाशुष्क कर महीन चूर्ण करके १० ग्राम चूर्ण में थोड़ा गुड़ मिला ४ गोलियां बना लें। सिर दर्द का दौरा प्रारम्भ होते ही १ गोली इसकी सेवन कराने से शिरःशूल में शान्ति मिल जाती है।

(४) अडूसा की जड़ २० ग्राम को लेकर २०० ग्राम दूध में अच्छी प्रकार पीस-छानकर उसमें २० ग्राम मिश्री और १५ नग काली मरिच का चूर्ण मिलाकर सेवन करने से शिरःशूल तथा अन्य शिरोरोगों में लाभ होता है।

(५) वासा की पत्ती को छायाशुष्क कर चाय की तरह बना, पीने से शिरदर्द या शिरोरोग सम्बन्धी कोई भी व्यथा हो, दूर हो जाती है।

(६) साधारण प्रतिश्यायजन्य शिरःशूल में १० ग्राम वासा के क्वाथ में मधु तथा मिश्री मिलाकर दोनों समय पीने से शीघ्र लाभ हो जाता है।

(७) शिरःशूल के कारण यदि सिर में जकड़न हो, तो आर्द्रक के रस को माथे पर मलने से शीघ्र लाभ होता है। यदि आधाशीशी का दर्द हो, तो आर्द्रक रस शहद तथा जल समभाग एकत्र कर और रोगी को चारपाई पर इस प्रकार लिटाकर कि उसका सिर नीचे लटकता रहे, इस मिश्रण की २-३ बूंदें दर्द वाली ओर के नाक के नथुने में टपकानी चाहिए। यदि दवा मस्तिष्क तक न पहुंचे और मुंह से होकर बाहर निकल जाय, तो उसी समय पुनः डालनी चाहिए। इस प्रकार ३-४ बार इसे मस्तिष्क तक पहुंचाने से शीघ्र लाभ होता है।

(८) अनन्तमूल की जड़ को पानी में घिसकर गर्म लेप करने से वातजन्य शिरःशूल में लाभ होने लगता है।

(९) सिर में विशेष पीड़ा हो या आधे सिर में पीड़ा हो, तो अपराजिता की ताजी जड़ के रस का नस्य देने से तथा इसके पत्तों को पीसकर सिर पर लेप करने से लाभ होता है।

(१०) सूर्योदय के पूर्व ही सुबह हरे, कच्चे अमरूद को पत्थर पर पीसकर सिर पर जहां दर्द होता हो, वहां खूब अच्छी तरह लेप करने से दर्द में लाभ होता है। यदि दर्द होना प्रारम्भ हो, तो वह शीघ्र ही शान्त हो जाता है। यदि एक दिन में लाभ न हो, तो २-३ दिन और इस प्रयोग को करना चाहिए।

(११) आक के दूध में चिरचिटा तथा सहंजने के बीजों का चूर्ण १० ग्राम तथा बच का चूर्ण ६ ग्राम एकत्र खूब खरल कर तथा सुखाकर नस्य बना लें। इसकी नस्य देने से आधाशीशी, शिरःशूल ठीक हो जाता है।

(१२) आक के दूध में ऊंट की मेंगनी को भिगोकर छायाशुष्क करें और फिर जलाकर राख को महीन पीस शीशी में रखें। इसकी नस्य देने से शिरःशूल में लाभ होता है।

(१३) अर्कमूल की छाल को छायाशुष्क कर महीन चूर्ण १० ग्राम में छोटी इलायची के बीज ७ नग तथा कपूर ४ रत्ती एकत्र करके खूब खरल करें। इस सुगन्धित नस्य से साधारण शिरःशूल, पीनस, अनन्तवात में लाभ होता है।

(१४) आक के पके पत्तों पर थोड़ा गोघृत चुपड़ कोयला की आग पर गर्म कर और मसलकर स्वरस निकाल के रस लें। रोगी को सीधा लिटाकर उसका सिर

नीचा करके नथुनों में २-२ बूंदें टपकाने से आधाशीशी तथा सूर्यावर्तजन्य शिर:शूल में लाभ होता है।

(१५) सूर्योदय से पूर्व रोगी को आक की १ फुनगी ६ ग्राम पुराने या नवीन गुड़ में अच्छी तरह लपेटकर निगलवा दें। इस प्रयोग से प्रथम दिन से ही लाभ होने लगता है। दूसरे तथा तीसरे दिन भी इसे देने से पूर्ण लाभ होता है।

(१६) आक वृक्ष की अंगुल भर मोटी खोखली डालों के ४-४ अंगुल के टुकड़े कर लें। टुकड़े इस प्रकार करें, कि डालें फटने न पावें। फिर इन टुकड़ों को अदरक के रस में २ घण्टे तक डालकर रखें और धूप में सुखा ले। शिर:शूल में एक टुकड़े के एक ओर आग लगाकर नाक से सिगरेट तुल्य पिलावें। यदि आधाशीशी का दर्द हो, तो जिस ओर दर्द होता हो उसके विरुद्ध ओर की नासिका छिद्र से पिलानी चाहिए।

(१७) ईसरमूल के पत्र ३० ग्राम, काली मरिच ६ ग्राम, वंशलोचन ६ ग्राम, इलायचीदाना ३ ग्राम, कपूर ३ ग्राम लेकर खूब महीन पीस कपड़छन कर नस्य देने से सिर की पीड़ा शीघ्र नष्ट होती है।

(१८) गुड़ १० ग्राम तथा काले तिल ६ ग्राम; इन्हें दूध के साथ पीसकर उसमें ६ ग्राम घृत मिला गरम कर मस्तिष्क और कनपटियों पर लेप करने से सूर्यावर्त आदि शिरोवेदना में लाभ होता है।

—वनौषधि विशेषांक प्रथम भाग से।

(१९) कटेरी के पके फलों के टुकड़ों को एक बोतल में भर उसमें इतना तिल तैल डालें कि सब टुकड़े डूब जावें। फिर बोतल का मुख बन्द करके ४० दिन धूप में रखें। पश्चात् तैल को छानकर रख लें। इस तैल की नस्य देने से शिर:शूल, अर्धावभेद शीघ्र ठीक हो जाता है।

(२०) कड़वी तोरई के कोमल फल को पुटपाक विधि से पका कर रस निकाल कनपुटियों पर मर्दन करने से साधारण शिर:शूल में लाभ होने लगता है।

(२१) यदि अनन्तवात का शिर:शूल हो (जिसमें एक या दोनों भौंहों में दर्द होता है) तो कड़वी तोरई के ताजे फलों का रस निकालकर या इसके हिम को उड़द के आटे के साथ गूंथकर एक रोटी बना तवे पर एक तरफ से सेंक कर दूसरी ओर की कच्ची तरफ से सिर पर बांधकर उक्त हिम से भीगा वस्त्र उस पर रख दें। इस प्रकार कुछ दिन करने से अनन्तवात में लाभ हो जाता है।

(२२) श्वेत कनेर की सूखी जड़ को पत्थर पर थोड़े पानी के साथ घिसकर लेप करने से अथवा इस जड़ के महीन चूर्ण को पीड़ित स्थान पर मर्दन करने से अथवा इसके फूलों का महीन चूर्ण १-२ चावल भर जिस ओर दर्द हो, उस ओर के नासिका छिद्र से सुंघाने मात्र से छींके आकर अन्दर का दूषित विकार नासिका द्वारा स्रवित हो जाता है तथा दर्द मिट जाता है।

(२३) बिनौले की गिरी को खरल में घोटकर ५-७ ग्राम की मात्रा मे दूध के साथ सेवन से वातनाड़ी सबल होकर वातजन्य शिर:शूल मे लाभ होता है। साथ ही साथ गिरी को पीसकर कनपुटियों पर लेप करना चाहिए।

(२४) कपूर, मुलहठी, महुआ तथा खस सब २५-२५ ग्राम लें। प्रथम कपूर को छोड़ शेष तीनों को पानी के साथ पीसकर कल्क बनावें। नागरवेल के ४ किलो रस में यह कल्क तथा १ किलो तिल तैल मिलाकर पकावें। तैल मात्र शेष रहने पर छानकर उसमें कपूर मिला बोतलों में भर लें। इस तैल की मालिश से शिर:शूल में विशेष लाभ होता है।

(२५) कमल की जड़ को तैल निर्माण विधि से तिल तैल मे पका छानकर उसमें थोड़ा खस का इतर मिला रखें। इसे सिर पर लगाने से सिर तथा कनपटियों पर होने वाले दर्द में लाभ होता है।

(२६) करञ्ज बीज को पानी में पीसकर उसमें थोड़ा गुड़ मिला किञ्चित उष्ण कर जिस ओर दर्द हो, उसके विरुद्ध बाजू के नासारन्ध्र में १-२ बूंद टपकाने से तथा आधा घण्टा बाद दूसरे नासारन्ध्र में टपकाने से आधाशीशीजन्य शिर:शूल में लाभ होता है।

(२७) करेला के पत्र स्वरस के साथ थोड़ा गोघृत तथा पित्तपापड़े का रस मिलाकर सिर पर लेप करने से शिर:शूल मे लाभ होता है।

(२८) कुष्ठ के साथ सोंठ तथा एरण्डमूल को कांजी में या तक्र में पीसकर लेप करने से शिरःशूल में लाभ होता है।

(२९) खसखस को गुलरोगन के साथ मिला मर्दन करने से शिरःशूल में विशेष लाभ दिखाई देता है।

(३०) गुन्जा की जड़ को पानी के साथ घिसकर नस्य देने से मस्तक शूल, अर्धमस्तक शूल आदि में लाभ होता है।

(३१) गूमा के ताजे पत्ररस को पिलाने तथा नस्य देने से सिर की पीड़ा व सर्दी दूर होती है। आधाशीशी या सूर्यावर्त का दर्द हो, तो इसके ताजे पत्र १० ग्राम को २-३ काली मरिच के साथ थोड़ा जल मिला पीस-छानकर पिलाने से लाभ होता है।

—वनौषधि विशेषांक भाग २ से।

(३२) चना के क्षार में चने का आटा २०० ग्राम तथा राई चूर्ण २५ ग्राम मिलाकर जल में गाढ़ा लेप करने से वातजन्य शिरःशूल में लाभ होता है।

(३३) पित्त प्रकोपजन्य शिरःशूल तथा सिर में जड़ता हो, तो चांगेरी के पंचांग को महीन पीस पानी में पकाकर उफान आने पर उसमें श्वेत प्याज का थोड़ा रस मिला उतार कर ठण्डा होने पर लेप करते तथा इसी का सिर के तालु पर धीरे-धीरे मर्दन करने से शिरःशूल में लाभ होता है।

(३४) विशेषतः पित्तज्वर में रक्तदाब की वृद्धि होकर सिर में भारीपन, खिचाव व वेदना हो, तो चिरायता के पत्र सिर पर बांधने से लाभ होता है।

(३५) चिरोंजी की गिरी के साथ बादाम की गिरी, खजूर (बीजरहित), ककड़ी बीज तथा तिल एकसाथ पीसकर दूध अथवा जल के साथ ८ ग्राम की मात्रा में पिलाने से शिरःशूल मे लाभ होता है।

(३६) चोबचीनी के चूर्ण का सेवन मक्खन, मिश्री के साथ सेवन कराने से थोड़े ही दिनों में मानसिक श्रम या जीर्णज्वरादि से आयी निर्बलता के कारण होने वाली सिर की पीड़ा दूर हो जाती है। जीर्ण शिरःशूल मे अनन्तमूल के क्वाथ के साथ सेवन कराने से लाभ होता है।

(३७) शैलेय के कल्क को गरम कर मस्तक पर लगाने से गरमी से होने वाला शिरःशूल दूर हो जाता है। इसे आग पर जलाकर धूम्र को नाक से खींचते रहने से शिरःशूल मे लाभ हो जाता है।

(३८) जयपाल के बीज को पत्थर पर पानी के साथ घिसकर सलाई से कपाल भ्रू भाग के ऊपर पीड़ा स्थान पर एक सीधी लाइन खींचने से पीड़ा दूर होती है। पीड़ा दूर हो जाने पर कपड़े से पोंछकर घृत लगा देते हैं।

(३९) जवासे के पत्तो को किंचित पानी के साथ पीस-छानकर ३-४ बूंदें स्वरस की नस्य प्रातः खाने-पीने के पूर्व डालने से पित्तज जीर्ण शिरःशूल मे लाभ होता है।

(४०) तम्बाकू १० ग्राम, लौंग १४ नग तथा केशर, कस्तूरी १-१ ग्राम सबको महीन पीस कपड़छन कर शीशी में रखें। यह नसवार ३ बार सुंघावें और ३ घण्टे तक पानी न पीने दें। यदि रात्रि का समय हो, तो समस्त रात्रि पानी न पीवें। इससे शीघ्र शिरःशूल में लाभ हो जाता है।

(४१) तम्बाकू के पत्ते तथा लौंग सममाग को पानी के साथ पीसकर मस्तिष्क पर गाढ़ा लेप करने से अर्धमस्तक शूल में लाभ होता है। अथवा तम्बाकू के पत्ते व लौंग सममाग पानी के साथ पीसकर मस्तिष्क पर गाढ़ा लेप करने से भी अर्ध मस्तकशूल में लाभ होता है।

(४२) तम्बाकू सुरती ५० ग्राम, जायफल १० ग्राम, लौंग २ नग, छोटी इलायची २ नग के बीज, केशर २ ग्राम सोंठ, दालचीनी, सेंधानमक, श्वेत चन्दन बुरादा, कायफल, कालीमरिच, नकछिकनी प्रत्येक १॥-१॥ ग्राम। सबको अत्यन्त बारीक पीसकर यथाविधि नस्य देने से अर्ध मस्तकशूल में लाभ होता है।

(४३) तरबूज के गूदे को निचोड़ छानकर उसमें थोड़ी मिश्री मिला पिलाने से उष्णताजन्य शिरःशूल में लाभ होता है।

(४४) तिल २ भाग व वायविडङ्ग १ भाग दोनों को पीस थोड़ा गरम कर मस्तक पर लेप करने तथा प्रातः-सायं गरम किये हुये दूध में गुड़ मिलाकर पिलाने से अर्ध मस्तकशूल मे लाभ होता है।

(४५) तेजपात के पत्तों का डंठल, या छाल ६ ग्राम जल के साथ महीन पीसकर शिर में जहां दर्द हो वहां मोटा लेप चढ़ा दें ½ घण्टे बाद जब लेप सूख जावे तब उसे हटा दें। इससे शिरःशूल में शीघ्र लाभ देखने को मिलता है।

(४६) कफ या शीतजन्य शिर दर्द हो तो त्वक् को जल के साथ पीसकर कुछ गरम कर शिर पर लेप या इसके तैल का मर्दन करने से लाभ मिलता है।

(४७) त्वक्, तेजपात तथा खांड को चावलों के धोवन के साथ पीसकर नाक में टपकाने से पित्तज शिरःशूल में लाभ होता है।

—वनौषधि विशे० द्वितीय भाग से।

(४८) नाखूना को गुलरोगन तथा सिरका के साथ पीसकर प्रलेप करने से पैत्तिक शिरःशूल में लाभ होता है।

(४९) नींबू को दो भागों में काटकर क्रमशः गरम कर मस्तक तथा कनपटियों पर लगाकर मलने से शिर दर्द में लाभ होता है। अथवा चाय पत्ती की खूब गाढ़ी चाय बनाकर उसमें दूध के स्थान पर थोड़ा नींबू का रस मिलाकर गरम-गरम पीने से शीघ्र लाभ होता है।

(५०) देवदाली के शुष्क फूलों के कपड़छन चूर्ण में लौंग का चूर्ण मिलाकर सूर्योदय से पूर्व ही नस्य देने से शिरःशूल में लाभ होता है।

(५१) अर्धावभेदक रोग में जब निश्चित समय पर शिर में बार-बार एक ओर दर्द होता है तथा साथ में प्रतिश्याय, वमन तथा वात वेदना होती हो तो उसमें १ रत्ती गांजा या भांग के साथ वच्छनाग का प्रयोग करने पर विलक्षण लाभ होता है।

—वनौ० वि० भाग ३ से।

(५२) नीमपत्र शुष्क, कालीमरिच तथा चावल सम-भाग एकत्र महीन चूर्ण कर सूर्योदय से पूर्व जिस ओर पीड़ा हो उसी ओर की नाक में १-२ रत्ती तक नस्य लेने से आधा शीशी का पुराने से पुराना दर्द दूर हो जाता है।

(५३) नीम की छाल, त्रिफला, अडूसा, कटु पटोल १-१ भाग सबको एकत्र कूटकर ४ गुने जल में पकावें। चतुर्थांश शेष रहने पर छानकर उसमें ६ ग्राम शुद्ध गूगल मिला पुनः पकावें गाढ़ा होने पर उतार कर गोलियां बना लें। २-३ ग्राम उष्ण जल के साथ प्रतिदिन सेवन से भयंकर वातकफज शिरःशूल नष्ट हो जाता है।

—वनौ० वि० भाग ४ से।

(५४) बादाम की गिरी के साथ थोड़ी केशर को गाय के घृत में खरल कर नस्य देने से तथा बादाम की गिरी को रातभर भिगोकर प्रातः छिलका दूर कर गिरी को पीसकर दूध में खीर की तरह पकाकर शक्कर मिला ३ दिन तक सेवन करने से शिरःशूल में लाभ होता है।

(५५) बादामरोगन २ ग्राम के साथ केशर १ ग्राम मिलाकर दिन में ३-४ बार सुंघाने से शीघ्र ही शिरःशूल में लाभ हो जाता है।

(५६) वायविडङ्ग के चूर्ण को गाय के मक्खन के साथ मिलाकर माथे पर लेप करने से शिरःशूल में लाभ होता है। यदि आधे शिर में दर्द हो तो विडङ्ग और काले तिल सममाग एकत्र कर नस्य देने से विशेष लाभ होता है।

(५७) भांग ४ ग्राम तक जल ४० ग्राम में भिगोकर छान लेवें उसमें बकरी का दूध ३० ग्राम मिलाकर नासिका में इसकी १० बूंदें डालकर नस्य देने से शिरःशूल में लाभ होता है।

(५८) पीले भांगरे के साथ सममाग बकरी का दूध मिलाकर धूप में रख दें गरम हो जाने पर इसकी नस्य देने से तथा इसके रस में कालीमरिच को पीसकर शिर पर लेप करने से तथा इसके रस में सममाग गोदुग्ध मिलाकर सूर्योदय के पूर्व पिलाने से सूर्यावर्त में लाभ होता है।

(५९) मुलहठी चूर्ण जितना हो उससे चौथा भाग शुद्ध वच्छनाग चूर्ण को भली प्रकार मिलाकर इस चूर्ण में से सरसों के समान चूर्ण नाक में फूंकने से प्रत्येक प्रकार के शिरःशूल में लाभ होता है।

—वनौ० वि० भाग ५ से।

(६०) अर्धावभेदक शिरःशूल में ६ ग्राम लौंग को बारीक पीसकर पानी में घोलकर लेही जैसा तैयार करके किञ्चित उष्ण करके कनपटियों पर लगाने से लाभ होता है।

(६१) शतावरी तथा जीवन्ती का रस तथा गोदुग्ध तीनों ४-४ किलो के साथ गोघृत तथा तिल का तैल १-१ किलो तथा शतावरी और जीवन्ती का कल्क २०० ग्राम मिलाकर यथा विधि सिद्ध करें इनका नस्य कराते रहने से जीर्ण शिरःशूल में लाभ होता है।

(६२) शतावरी, काले तिल, मुलहठी, नीलोफर, दूब तथा पुनर्नवा की जड़ इनको समभाग मिला जल में पीसकर शिर पर लेप करने से सूर्यावर्त तथा शिरःशूल में लाभ होता है।

(६३) शंखपुष्पी १ ग्राम, पारसीक यवानी २ रत्ती, हुरमल चूर्ण ४ रत्ती उष्ण जल के साथ देने से ५ मिनट में शिरःशूल दूर हो जाता है।

(६४) सत्यानाशी के घनसत्व की ३ रत्ती की गोली दिन में ३ समय दूध या जल के साथ सेवन कराने से स्थायी शिरःशूल में विशेष लाभ होता है।

(६५) किसी भी कारण से उत्पन्न शिरःशूल में १५ रत्ती की मात्रा में सर्पगन्धा का चूर्ण सेवन कराने से विशेष लाभ होता है। प्रथम यह वेदना स्थापन का काम करती है और बाद में गहरी नींद लाती है।

(६६) समुद्रफल को बकरी के मूत्र में पीसकर नाक में टपकाने से आधाशीशी में विशेष लाभ देखने को मिलता है।

(६७) हुलहुल के पत्तों के रस में हुलहुल के बीजों को खरल करके कपाल पर २-३ दिन तक लेप करने से आधाशीशी की वेदना मन्त्र शक्ति की तरह बन्द हो जाती है। —वनौ० वि० भाग ६ से।

(६८) चन्दन, कमल, कमलकेशर, मृणाल, कमलकन्द तथा पद्माक इनको समानभाग लेकर और दूध में पीसकर सिर पर लेप लगाने से पित्तजन्य शिरःशूल में लाभ होता है।

(६९) कमलगट्टा, आंवला, हरड़, दूब, खस, नागरमोथा, कर्पूर सबको समानभाग लेकर और पानी में पीसकर लेप करने से पित्तज शिरःशूल में लाभ होता है।

(७०) चन्दन, धनियां, गुलाब के फूल इनको महीन पीस लें फिर इसमें ईसबगोल का लुआब मिला दें। इसको शिर पर लगाने से पित्तज शिरःशूल में लाभ होता है।

(७१) भांगरे का स्वरस और बकरी का दूध इन दोनों को समानभाग लेकर एकत्र मिलाकर और धूप में गरम करके नस्य लेने से सूर्यावर्तजन्य शिरःशूल में लाभ होता है।

(७२) सारिवा, कमल, मुलहठी तथा कूठ इनको एकत्र कर जल में पीसकर शिर पर लेप करने से तथा साथ में घेवर खाने से सूर्यावर्त तथा अर्धावभेदक में लाभ होता है।

(७३) भुने हुये और छिले हुए चने ३० ग्राम लेकर और महीन पीसकर ४० ग्राम बादाम के तैल में भून लें। फिर निशास्ता ३० ग्राम, सफेद खस-खस के बीज २० ग्राम, मिश्री १६ ग्राम, तथा बादाम के तैल में भुना हुआ चनों का आटा सबको मिलाकर गाय के दूध में डाल दें और मन्दाग्नि से पकावें जब हरीरा सा बन जाय तब उतार लें। दूसरी कड़ाही में ३० ग्राम घी डालकर गरम करें जब घी आ जाय उसमें पकाया हुआ हरीरा डालकर चलावें जब एक दिल हो जाय उतार लें। इस हरीरे को गरम-गरम खाने से सब तरह का शिर दर्द ठीक हो जाता है विशेष रूप से मस्तिष्क दौर्बल्यजन्य शिरःशूल में लाभ होता है।

(७४) थोड़ी सी प्याज, महुये के बीज, चार दाने कालीमरिच पानी के साथ पीस लें अगर दाहिनी तरफ दर्द हो तो नाक के बांये नथुने में और जो बांई तरफ दर्द हो तो नाक के दाहिने नथुने में इस दवा की चन्द बूंदें टपकानी चाहिये इससे आधाशीशी में लाभ होता है।

(७५) बन्दाल को पानी में भिगोकर और मल छानकर २ बूंदें नाक में टपकाने से शिर का दूषित बलगम बाहर निकल जाता है और शिरःशूल में लाभ हो जाता है। बादी से होने वाले आधाशीशी के दर्द में भी यह लाभकर उपाय है।

(७६) केवड़े के अर्क में सफेद चन्दन घिसकर एक कांच की शीशी में रखकर ऊपर से बारीक कपड़ा बांध दें इस शीशी को बार-बार हिला हिलाकर सूंघने से गर्मी के शिरदर्द में लाभ होता है। —चिकित्सा चन्द्रोदय से।

(७७) उस्तखद्दूस ६ ग्राम, धनियां ३ ग्राम, कालीमरिच ४ दाने यह १ मात्रा है इस प्रकार की ३ मात्रायें दिन में शहद के साथ चटाने से अर्धावमेदकजन्य शिरःशूल में लाभ होता है। —धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(७८) चूल्हे की राख या साधारण महीन पिसी मिट्टी में आक का दूध मिला दें दूध इतना मिलावें कि मिट्टी तर हो जावे मिट्टी तर हो जाने पर उसे एक कागज पर फैलाकर रख दें ताकि दूध उसमें सूख जाय। सूख जाने पर इसकी नस्य लेनी चाहिये। इससे खूब छींकें आवेंगी और छींक आने से शिर हलका हो जायगा और शिर दर्द ठीक हो जावेगा। —धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(७९) शिर में दर्द, होने पर ६० ग्राम धमासे को २५० ग्राम पानी में उबाल लें उबालते समय जब पानी १२५ ग्राम रह जाय तब उतार कर छान लें फिर उसमें ३ ग्राम ताजा घी डाल दें और पिलावें। इससे शिर का दर्द नष्ट हो जाता है इस औषधि को कम से कम तीन दिन तक अवश्य देना चाहिये इतना ध्यान रखना आवश्यक है कि घी की मात्रा प्रतिदिन दूनी की जाय।

(८०) लहसुन का स्वरस निकालकर रख लें पुनः शिर में जिस ओर दर्द होता हो उस ओर के नथुने में इसकी ३-४ बूंदें डाल दें। ध्यान रहे कि पहले रोगी को खाट पर लिटा देना चाहिये और उसका शिर पाटी से नीचे करके यह रस डालना चाहिये। इससे ५-७ छींकें आकर आधाशीशी का दर्द ठीक हो जाता है।

—धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(८१) नौसादर १० ग्राम, चूना कलई १० ग्राम, कर्पूर ३ ग्राम, सुगन्धित इत्र ५ बूंद शीशी में भर रखें। इसे सुंघाते ही शिर दर्द में लाभ होता है।

—बाबू छोटेलाल जी जैन द्वारा
अनुभूत योगांक से।

(८२) कुये में उपजे पीपल की कोंपल १० ग्राम, सेंधानमक २ रत्ती लेकर हथेली पर रगड़ें और रस को शिर पीड़ा के स्थान पर मलें फिर छूछा भी मल दें कैसा भी शिर दर्द हो शीघ्र बन्द हो जावेगा।

—रामप्रसाददास द्वारा
धन्वन्तरि अनुभूत योगांक से।

(८३) असली पीपरामूल बारीक पीस लें। २ ग्राम में २ ग्राम शर्करा मिलाकर पकावें और ऊपर से गर्म जल या दूध पिला दें। १५ मिनट में ही शिर का दर्द दूर होने लगता है। —पं० सालिगराम शर्मा द्वारा
धन्वन्तरि अनुभूत प्रयोगांक से।

(८४) बादाम तैल, नारियल का तैल, तिल तैल, गोघृत मिलाकर १०-१० बूंद लेकर उसमें १ रत्ती नौसादर डालकर नाक में डालने से शिर का दर्द तत्काल दूर हो जाता है। वातजन्य शिरःशूल के लिये विशेष लाभप्रद है। —धन्वन्तरि नवम्बर १९३१ से।

(८५) ३ ग्राम गूमा की पत्तियों का रस निचोड़ उसमें १ रत्ती सेंधव लवण मिलाकर दोपहर के समय जिस ओर पीड़ा हो, उस ओर की नासिका के छिद्र द्वारा २-२ मिनट के अन्तर पर तीन बार नस्य लेने से आधाशीशी की पीड़ा दूर हो जाती है। स्मरण रहे कि नस्य इतनी जोर से ऊपर को खींचनी चाहिए, कि मस्तिष्क तक पहुंच जाय। यदि एक बार नस्य लेने से पीड़ा निर्मूल न हो, तो २-३ दिन इसी प्रकार प्रयोग करने से अतितीव्र पीड़ा भी शान्त हो जाती है।

—महावीरप्रसाद मालवीय द्वारा
अप्रैल १९८३ से।

(८६) नीलोफर, मुचुकन्द, कूठ, सूखा आंवला, चिचटी की जड़ तथा चावल को जलाकर बनाई हुयी राख सभी समान भाग लेकर पानी में पीस शिर पर लेप करने से शिरःशूल में लाभ होता है।

—पं० चन्द्रदत्त शास्त्री द्वारा
धन्वन्तरि सिद्ध योगांक से।

(८७) कमलगट्टा को तोड़ने से जो सफेद अन्दर मींगी निकलती है, उसे चिकने पत्थर पर पानी डालकर चन्दन के समान घिसें। रोगी को सूर्योदय से १ घण्टा पहले बुला लें और उपरोक्त दवा को जहां दर्द हो, उसे आधे मस्तक पर चन्दनवत् चुपड़ दें। रोगी को १० मिनट बैठा रहने दें। जब दवा सूख जाय, तो कपड़े से पोंछकर उस जगह पर घी लगा दें, तो पुराने से पुराना आधा-

शीशी का दर्द इस प्रयोग से ठीक हो जाता है। इस योग से हमने हजारों अर्ध सिरदर्द के रोगी निरोग किये हैं।

—पं० कृष्णचन्द्र त्रिपाठी द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक द्वितीय भाग से।

(८८) वनतुलसी के बीज १० ग्राम तथा रसकर्पूर १ रत्ती दोनों को बारीक पीसकर रख लें और १६ मात्रा बना लें। दवा देने से प्रथम कचौड़ी सेंक कर खिला दें और दिन में ४ बार तक नस्य देवें। नस्य देकर कर्पूर सुंघाते रहें। जब नाक से पानी बहना आरम्भ हो जावे, तब रोगी को औंधे मुंह चारपाई पर लिटा दें। ३-४ घण्टे में पानी का गिरना बन्द हो जावेगा और वह रोगी जीर्ण शिरःशूल से छुटकारा पा जावेगा।

—कु० रणवीरसिंह वर्मा द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक द्वितीय भाग से।

(८९) मदार का दूध ५० ग्राम, पीपल छोटी ६ ग्राम, जायफल ६ ग्राम। पीपल तथा जायफल को बारीक पीसकर रख लें। फिर एक जंगली कण्डा मंगाकर उसकी तह की मिट्टी चाकू से छीलकर साफ कर लें और आग लगा दें। जब समूचा कण्डा जलकर अंगार के समान बन जावे और कहीं भी कच्चा न रहे, तब उसे मदार के दूध से तर करें और किसी बर्तन से ढंक दें। जब मदार का दूध कण्डा सोख जाय और शुष्क हो जावे, तब खरल में डालकर घोटें तथा घोटते समय पिसी हुयी पीपल व जायफल भी साथ में मिलाकर खरल कर लें। यह दवा शिरःशूल में रामबाण कार्य करती है। आधा सिरदर्द, जीर्ण शिरःशूल तथा प्रतिश्यायजन्य सिरदर्द में इसे लगाने से विशेष लाभ होता है।

—गुप्त सिद्ध प्रयोगांक द्वितीय भाग से।

(९०) नौसादर २ ग्राम, देशी गुड़ १ ग्राम तथा पानी ६ ग्राम इनको पानी में घोलकर जिस ओर आधा-शीशी का दर्द हो उस छिद्र में पिचकारी या वैसे ही नस्य दें एवं सूर्योदय से पूर्व घी में किञ्चित् मिश्री मिलाकर खड़ा होकर ३ दिन पीवें अवश्य लाभ होता है।

—वैद्या शान्तिदेवी आत्रेय द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक द्वितीय भाग से।

(९१) असली केशर १ ग्राम, कर्पूर देशी १ ग्राम, गाय का घी ६ ग्राम, केशर को बारीक पीसकर कर्पूर और घी गर्म करके मिलाकर केशर डालकर जिस तरफ दर्द हो उसी तरफ नाक से सूंघने से आधाशीशी का दर्द तुरन्त बन्द हो जाता है। —वैद्य बचानसिंह द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक तृतीय भाग से।

(९२) मोंथा घास जो खेतों में पाया जाता है इस मोंथा घास की हरी पत्ती लेकर थोड़ा गरम करें गरम करने से यह नरम हो जावेगा तब निचोड़कर इसका अर्क निकाल लें। लगभग १ ग्राम, शुद्ध घृत, पांच कालीमरिच, पीसकर अर्क, घी तथा पिसी हुयी इस काली दवा को ३-३ व ४-४ घण्टे से सूंघें तो आधाशीशी का कैसा भी दर्द हो तत्काल ठीक हो जायगा।

—श्री वासुदेवकृष्ण जोशी द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(९३) अरने कण्डे की शुद्ध भस्म ५० ग्राम, कर्पूर १० ग्राम, केशर ३ ग्राम। सबको महीन चूर्ण कर आक के दूध की भावना देकर छाया में सुखा लें तत्पश्चात् एक शीशी में मजबूत कार्क लगाकर रख लें। १ रत्ती की मात्रा में नस्य लेने से छींकें आकर कैसा भी सिरदर्द हो ठीक हो जाता है। —डा० मदनमोहन अग्निहोत्री द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(९४) सफेद मरिच ६ ग्राम, नारियल की गिरी २०० ग्राम, आनन्दभैरव रस १ ग्राम, चिनौलागिरी ३ ग्राम, पोस्त १० ग्राम, गुड़ २०० ग्राम सबको कूटकर ७ मोदक बना लें। १-१ मोदक प्रातःकाल प्रतिदिन बकरी के दूध के साथ सेवन कराने से वातज एवं कफज शिरःशूल में लाभ हो जाता है।

(९५) गोदन्तीहरताल भस्म ४ रत्ती, वराटिका भस्म ४ रत्ती तथा सूतशेखर रस २ रत्ती लेकर २ मात्रा बना लें मावा के पेड़ा में मिलाकर प्रातः-सायंकाल १-१ मात्रा सेवन कराने से पित्तज शिरःशूल में लाभ होता है।

—पं० सुरेशदत्त शर्मा द्वारा
गुप्तसिद्ध चतुर्थ भाग से।

(९६) अन्दाज से ग्वारपाठे का गूदा निकालकर गेहूँ का आटा मिलाकर २ वाटी वनाकर सेक लें। सेककर उन्हें हाथ से दबाकर शुद्ध घी में डाल दीजिये और प्रातः सूर्योदय के पूर्व खाकर सो जावें। इस प्रकार ५-७ दिन तक सेवन करने से कैसा भी कितना पुराना शिर दर्द हो ठीक हो जाता है।

(९७) शुद्ध नौसादर तथा अद्रक का रस थोड़ा सा लेकर अंगुलि में रखकर जिस तरफ शिर दर्द करता हो उसी नथुने में जोर से सुंघाना चाहिये तथा दूसरे नथुने को अंगुलि से बन्द रखना चाहिये इससे तुरन्त ही आधा-शीशी का दर्द बन्द हो जाता है। यदि प्रथम बार में पूर्ण आराम न हो तो दूसरी बार प्रयोग करना चाहिये।

—डा० रामचन्द्र शाकल्य द्वारा
सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(९८) बादाम की गिरी ४०० ग्राम, बढ़िया जलेबी देशी घी की रसदार ४०० ग्राम तथा केशर ३-६ ग्राम तक। इन सबको कूट-पीसकर ५०-५० ग्राम के लड्डू बना लें सुबह १ लड्डू खाकर ऊपर से दूध पीकर आधे घण्टे तक सो जावें तो कुछ दिन में कैसा भी शिरदर्द हो ठीक हो जाता है। —वैद्य कृष्णगोपाल जोशी द्वारा
सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(९९) कालीमरिच तथा जौ दोनों औषधि समानभाग लेकर तवे पर भून लें जब काली राखवत् हो जाय तब पीसकर शीशी में भर लें। १-१ ग्राम की ३ मात्रा ताजे जल के साथ दर्द होने से ३-४ घण्टे पूर्व देने से अनन्तवात का होने वाला दर्द रुक जाता है।

—वैद्य योगेन्द्रसिंह कश्यप द्वारा
प्राणाचार्य प्रयोग मणिमाला से।

(१००) सोंठ, कालीमरिच, पीपल ६-६ ग्राम, वत्सनाभ ३ ग्राम, पीपल की छाल की राख १५ ग्राम लें। सबको मिलाकर अच्छी तरह खरल करके मिलाकर छान लेवें। इसमें से १-१ रत्ती चूर्ण दोनों नासा पुटों द्वारा सुंघाने से शिरदर्द तुरन्त बन्द हो जाता है।

—रसतन्त्र सार द्वितीय भाग से।

(१०१) घी में भुना धनिये का चूर्ण २५० ग्राम, त्रिफला चूर्ण २५० ग्राम, कालीमरिच का चूर्ण ५० ग्राम, मुलहठी का चूर्ण ५० ग्राम। इन सबको शहद में मिलाकर चटनी सी बना लेवें। इस अवलेह को प्रातःसायं १०-१० ग्राम की मात्रा में गरम दूध के साथ सेवन कराने से सूर्यावर्त तथा अन्य शिरःशूल में लाभ होता है।

(१०२) गूलर के फलों को लेकर तथा उनको सिल पर पीसकर मस्तक पर थोप लेने से शिरःशूल शान्त होकर आराम हो जाता है। यह कई बार का अजमाया हुआ नुस्खा है।

(१०३) पुष्करमूल, शुण्ठी, चित्रक समभाग का चूर्ण ३ ग्राम की मात्रा में दुग्ध या कम मीठा पड़ा हुआ मावे के पेड़े में खिलाने से सम्पूर्ण शिरःशूल, अर्धावभेदक, सूर्यावर्त की दारुणतम स्थिति में अवश्य लाभ करता है।

—सुधानिधि शिरःशूलांक से।

[आ] अनुभूत एवं परीक्षित प्रयोग

(१) **शिरःशूलहर तैल**—खस, वालछड़, छारछबीला, कपूरकचरी, चन्दन सफेद, बुरादा दालचीनी, अगर, तगर, रतनजोत प्रत्येक समभाग।

विधि—सब लेकर अर्थात् प्रत्येक १०-१० ग्राम का चूर्ण कर लें। ७ दिन के पश्चात् मन्दाग्नि से गर्म कर लें जोश आने पर उतार कर ठण्डा कर लें। यदि चाहें तो कोई सुगन्धित इत्र मिला लें।

उपयोग—शिरःशूल की अवस्था में शिर पर मालिश के लिये उत्तम तैल है। अन्य शिरोरोगों यथा भ्रम, शिर में चक्कर आदि में लाभ करता है।

—पं० मनोहरलाल वैद्यराज द्वारा
धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(२) **शिरःशूलनाशक क्षीरपाक**—धनिये की गुली, श्वेतदाना खसखस, बादाम गुली, मीगी कांकड़ी, पिस्ता,

पांचों १०-१० ग्राम, घृत ५० ग्राम, गाय का दूध १ किलो मिश्री इच्छानुसार ।

विधि—गाय के दूध को गर्म करें उसी में घृत डाल दें और सब औषधियों को तथा मिश्री को आधा किलो दूध अवशेष रह जाय तब सेवन करें ।

उपयोग—प्रातः सूर्योदय से पूर्व ४० दिन तक नित्य इस क्षीरपाक का सेवन कराने से जीर्ण शिरःशूल में भी लाभ हो जाता है विशेषकर अनन्तवात और दिमाग की कमजोरी के कारण होने वाले शिरःशूल में लाभ हो जाता है । इस योग को हम ४० वर्षों से रोगियों पर प्रयोग करा रहे हैं कभी निष्फल नहीं हुआ ।

—पं० श्रीकृष्ण शर्मा द्वारा
धन्वन्तरि अनुभवांक से ।

(३) जीर्ण शिरःशूलनाशक पाक—मग्ज पेठा, मग्ज खरबूजा, शुण्ठी, पिस्ता, पंजा सालममिश्री, मग्ज खीरा, श्वेतमूसली, मग्ज तरबूज, शतावरी, मग्ज चिलगोजा, बादाम गुली प्रत्येक २०-२० ग्राम, गुले गावजवां, छोटी पीपर, चिरोंजी, गुड़हलफूल १५-१५ ग्राम, इलायची, बहमन श्वेत, श्वेतचन्दन, बहमन सुर्ख, गुलाब के फूल, सोया के बीज, १०-१० ग्राम, नारियल ४० ग्राम, ब्राह्मीघृत ६० ग्राम, मुक्तापिष्टी, केशर, वर्क चांदी, मूंगा की जड़ ६-६ ग्राम, वर्क सोना ३ ग्राम ।

विधि—काष्ठादि औषधियों का कपड़छन चूर्ण बनाकर पिस्ता आदि मेवा के टुकड़े कर लें । बादामों की पिष्ठी बनाकर घृत में बादामी रंगत आ जावे तब तक भून लें । केशर को गुलाबजल में घोट लें । सब औषधियों से दुगना बूरा लेकर चाशनी बना लेवें । चाशनी तैयार होने पर गुलाबजल में घुटित केशर को मिला दें । पश्चात् सब औषधियों को मन्दाग्नि से घृत में भूनकर चाशनी में मिला देवें और पिस्ता, चिरोंजी आदि मेवा डाल दें ब्राह्मी घृत मिला दें और मुक्तापिष्टी, मूंगा की जड़ का चूर्ण, चांदी के वर्क और सोना मिला दें और इच्छानुसार घृत व मावा डालकर पाक बना लें ।

विधि—सुबह शाम ५० ग्राम की मात्रा में दूध के साथ सेवन करें ।

उपयोग—मस्तिष्क दुर्बलताजन्य शिरःशूल में बहुत लाभकारी योग है । नेत्र दुर्बलता, धातु दुर्बलताजन्य शिरःशूल में भी लाभ करता है ।

—पं० श्रीकृष्ण शर्मा द्वारा
धन्वन्तरि अनुभवांक से ।

(४) शिरःशूलारि घृत—गोघृत ' किलो, गेंदा के फूल पत्तियों का स्वरस ½ किलो, भांगरा का स्वरस ½ किलो, मेंहदी की पत्ती गीली पिसी हुई ½ किलो, छोटी इलायची, चन्दन बुरादा, लौंग, दालचीनी ५०-५० ग्राम, जायफल, कर्पूर २५-२५ ग्राम ।

विधि—कर्पूर के अतिरिक्त समस्त द्रव्यों एकत्र कर अत्यन्त मन्द अग्नि में घृत कड़ाही में सिद्ध करें । घृत मात्र शेष रहने पर उतारकर छान लें । कर्पूर पीसकर मिला देवें ।

सेवन विधि—४-४ बूंद नासिका में २४ घण्टे में एक दो बार सूंघ लेवें और मस्तिष्क पर कई बार मालिश करें ।

उपयोग—हर प्रकार के शिरःशूल में लाभप्रद योग है ।

—धन्वन्तरि अनुभवांक से ।

(५) शिरःशूलनाशक लेप—केशर ३ ग्राम, कुचला ६ ग्राम, चिरोंजी, काले तिल, पोस्त के दाने, तिल की खली, पोस्त के छिलके, पिस्ता, बादाम की मिंगी, राई, लोहबान प्रत्येक ६-६ ग्राम ।

विधि—कुचला को सिल पर पीसकर और शेष दसों को बारीक पीस घी मिलाकर अग्नि पर गरम कर लें ।

व्यवहार—सिर पर लेप करके सेंक करें और कपड़े की पट्टी बांध दें ।

उपयोग—इससे सिर की भयंकर पीड़ा, कनपटी, भौंह, आंख का दर्द आदि में शीघ्र लाभ हो जाता है । अनन्तवात में भी लाभ हो जाता है ।

—श्री बालकराम गुप्त द्वारा
धन्वन्तरि अनुभूत योगांक से ।

(६) शिरःशूलारि मलहम—नारियल का तैल २०० ग्राम, मोम ५० ग्राम, कर्पूर १० ग्राम, सत्वअज-

वायन १० ग्राम, दालचीनी का तैल ३ ग्राम, चाय का तैल १॥ ग्राम, इलायची का तैल ६ ग्राम।

विधि—पहले कर्पूर, सत्व अजवायन, सत्व पिपरमेण्ट को एक में मिलाकर शीशी में डालकर धूप में पिघलाकर खूब हिलाकर एक कर लें। बाद में सब चीजों को डाल मिलाकर रख लें। फिर २५० ग्राम तैल खोपरे को आग पर गरम कर ६० ग्राम मोम डाल दें। मोम के गलते ही पात्र को नीचे उतारकर ऊपर की एकत्र की हुयी चीजें मिलाकर डिब्बे में डालकर रख दें।

उपयोग—गर्मी से होने वाला शिर दर्द, सर्दी से होने वाला शिर दर्द भी इसको थोड़ा सा माथे पर मलते ही शान्त हो जाता है। साथ ही चोट मोच, कमर का दर्द आदि में भी लाभकर है। —डा० रामगोपाल जी मिश्र द्वारा धन्वन्तरि अनुभूत योगांक से।

(७) शिरःशूलारि नस्य—कटफल ५० ग्राम, छोटी पीपर १० ग्राम, तुलसीपत्र १० ग्राम, वायविडङ्ग १० ग्राम, इलायची के बीज १० ग्राम, कर्पूर १० ग्राम।

विधि—खरल में डालकर पीस-कपड़छन कर लें।

व्यवहार—१-२ रत्ती तक।

उपयोग—नासिका में सूंघने से छींकें आकर मस्तिष्क हलका हो जाता है। और शिरःशूल ठीक हो जाता है।

—वैद्य मुन्नालाल गुप्त द्वारा धन्वन्तरि अनुभूत योगांक से।

(८) शिरःशूलान्तक बाम—केशर असली ३ ग्राम, सत् अजवायन ३ ग्राम, पिपरमेन्ट ३ ग्राम, शीतलचीनी ३ ग्राम, कर्पूर देशी १० ग्राम, इलायची का तैल १० ग्राम, मोम सफेद २० ग्राम।

विधि—केशर पीस लें। सब औषधियां मोम सहित बन्द पात्र में गरम कर पिघला लें और चौड़ी शीशियों में भरकर रख लें।

उपयोग—इस बाम को पीड़ा के स्थान पर मालिश करने से तुरन्त लाभ हो जाता है।

—अनन्तदेव वेदपाठी द्वारा धन्वन्तरि अनुभूत योगांक से।

(९) शिरदर्दहर तैल—रास्ना, काहू, मरोड़फली, चाय के फूल, नागरमोथा, चन्दन का बुरादा सफेद, फूल गुलाब सातों २०-२० ग्राम, खस ५० ग्राम, तालकन्द (तिल कंदरा) १०० ग्राम, लौकी २५० ग्राम, भांगरा स्वरस २ किलो, दही गाय का ५०० ग्राम, दूध बकरी का १ किलो, तिल तैल ३ किलो।

विधि—रास्ना से लेकर लौकी तक औषधियों का क्वाथ ४ किलो जल में मन्दाग्नि से पकावें जब खौलने लगे तब भांगरा, स्वरस दही, दूध डालकर मन्दाग्नि में और निम्नलिखित औषधियां दरदरी पिसी हुई डालकर पकावें।

बालछड, कचूर, पत्रज, गुग्गुल, इलायची सफेद, जायफल, नागकेशर, लोहबान, वायविडङ्ग, तज, लौंग, लाल चन्दन, अगर, तगर, यह सभी १७ द्रव्य १०-१० ग्राम, एवं रतनजोत ६ ग्राम। तैल मात्र शेष रहने पर उतारकर २० ग्राम देशी कर्पूर डालकर ढंक देवें। ठण्डा होने पर छानकर शीशियों में भर लें।

प्रयोग विधि—शिरःशूल की अवस्था में शिर पर मालिश करने से शीघ्र लाभ होता है। २-४ बूंदें कान में भी डालनी चाहिये।

(१०) शिरःशूल नाशक चन्द्रकान्त वटी—रस सिन्दूर, अभ्रक, ताम्र, लोहभस्म ६-६ ग्राम, पारद गन्धक की कज्जली १०० ग्राम, शुद्ध गूगल, हरड़, बहेड़ा, सुण्ठी, आंवला, दशमूल १०-१० ग्राम।

विधि—सबमें लेकर सबको महीन कर सेंहुण्ड के दुग्ध की ७ भावनायें दें और १-१ रत्ती की गोलियां बना लें।

मात्रा—शहद के साथ सुबह-शाम १-१ गोली चटा वें।

उपयोग—यह सभी प्रकार के शिर दर्द यथा आधाशीशी, अनन्तवात आदि में लाभकर है।

—वैद्य छत्रधारीलाल द्वारा धन्वन्तरि सिद्ध प्रयोगांक से।

(११) शिरःशूलादि मलहम—कर्पूर, लौंग का तैल, इत्र सन्दल १०-१० ग्राम, इलायची का तैल ६ ग्राम,

दालचीनी का तैल ६ ग्राम, यूकीलिप्टस आइल ६० बूंद, लालकांगनी का तैल २५० ग्राम, मोम देशी साफ १२० ग्राम, पिपरमेंन्ट १५ ग्राम।

निर्माण विधि—प्रथम लालकांगनी के तैल को गर्म करके मोम को उसी में मिला दें। मोम के गल जाने पर सब वस्तुयें एक शीशी में मिलाकर उक्त मोम व तैल में मिलाकर चौड़े मुंह की शीशी में कर लें। ठण्डा होने पर मल्हम जैसा हो जाता है।

उपयोग—पित्तज शिरःशूल में थोड़ी सी मस्तक व कनपुटी पर मल दें तत्काल दर्द दूर हो जाता है।

—पं० राजेश्वर जी द्विवेदी द्वारा गुप्तसिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(१२) शिरःशूलादि मिश्रण—बादाम ५ नग, शुद्ध जयपाल बीज ५ नग, अफीम २ रत्ती, सोनागेरू १ ग्राम लेकर मिश्रण बना लें। सम्भव है कभी-कभी इसका चूर्ण नहीं बनने पाता क्योंकि बादाम और जमालगोटे के तैल से स्निग्धता आ जाती है ऐसी दशा में आवश्यक नहीं कि चूर्ण बने, गोली बने तो गोली बना लें।

मात्रा—एक राई के बराबर लेकर बकरी अथवा गौ की दुग्ध के साथ प्रातःकाल सेवन करना चाहिये। भोजन में हलवा, दूध, मलाई आदि स्निग्ध पौष्टिक चीजें रोगी को खिलावें।

उपयोग—इस प्रयोग के सेवन से अर्धावभेद, अनन्तवात तथा अन्य शिर की बीमारियां ठीक हो जाती है। जिस शिर दर्द में नेत्रज्योति कम होती जाती है उन्हें इस चिकित्सा में तुरन्त लाभ होता है।

—श्री गुलराज शर्मा द्वारा धन्वन्तरि अक्टूबर ४६ से।

(१२) शिरःशूलारि—गोदन्ती २५ ग्राम, अकीक, स्वर्णमाक्षिक, यशदभस्म १०-१० ग्राम, पीपरामूल १५ ग्राम, मुलहठी चूर्ण १५ ग्राम।

विधि—कूटने पीसने वाली वस्तु कपड़छन करके त्रिफले के क्वाथ की तीन भावना देकर ४-४ रत्ती की गोलियां बना लें।

उपयोग—सभी प्रकार के शिरशूल में घृत मिश्रित दूध के साथ १-१ गोली सुबह-शाम सेवन कराने से अर्धावभेदक, अनन्तवात तथा अन्य शिरःशूल में शीघ्र लाभ हो जाता है। साथ में यदि षट्बिन्दु तैल की ५-७ बूंदें नाक में रात्रि को सोते समय डाल दी जावें तो विशेष लाभ होता है। —पं० नन्दराम शर्मा द्वारा धन्वन्तरि जनवरी ४८ से।

(१४) त्रिफला तैल—त्रिफला ७५ ग्राम, नेत्रबाला २५ ग्राम, कपूर कचरी तथा नागरमोथा १५-१५ ग्राम, छबीला, जटामांसी, खस १०-१० ग्राम, तिल तैल ७५० ग्राम।

विधि—तैल विधि से तैल सिद्ध कर लें। क्वाथ बनाने से पूर्व द्रव्य २४ घण्टे जल में भिगोकर रखना चाहिये तथा ध्यान रहे कि तैल पाक खराब न होने पावे।

उपयोग—इस तैल को धीरे-धीरे शिर में लगाने से वात पित्तज शिरःशूल तथा अन्य मस्तिष्क विकारों में शीघ्र लाभ होता है।

—श्री लक्ष्मणप्रसाद ज्योतिषी द्वारा धन्वन्तरि गुप्तसिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(१५) मस्तिष्क दौर्बल्यहर तैल—शुद्ध एवं सुचिक्कन तिली का तैल १ किलो कड़ाई में डालकर उसमें ताजी ब्राह्मी का स्वरस २ किलो डालकर पकावें फिर इसको छानकर एक चौड़े मुंह की नीली कांच की बड़ी शीशी या जार में भर दें और उसमें नीचे लिखी वस्तुयें पीसकर डाल दें—

छारछबीला, नागरमोथा, कपूरकचरी, पानड़ी, धनियां, ताजा गुलाब के फूल, छोटी इलायची, दालचीनी, खस, कंकोल, कबाबा, सुगन्धबाला, बालछड़ यह १३ द्रव्य १०-१० ग्राम, रतनजोत ६ ग्राम, बादामरोगन ५० ग्राम, सन्दल सफेद ५० ग्राम, उक्त शीशी या जार का मुख बन्द कर दिन में सूर्य की तीव्र किरणों में और रात्रि में चन्द्रमा की चांदनी में १५ दिन रख दिया करें फिर उसको छानकर उसमें गुलाब का इत्र मिलाकर शीशी में रख लें।

उपयोग—यह तैल मस्तिष्क की दुर्बलता तथा गर्मी के कारण होने वाले शिरःशूल में विशेष लाभकारी है।

—पं० सोमदेव शर्मा सारस्वत द्वारा गुप्तसिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(१६) शिरशूलादि मलहम—कर्पूर (डली का) १० ग्राम, सत्व अजवायन ६ ग्राम, पिपरमेंन्ट ६ ग्राम, सौंफ का तैल १ ग्राम, दालचीनी का तैल १ ग्राम, यूकेलिप्टस का तैल १ ग्राम, सत्त लोहबान १ ग्राम, कार्वोलिक एसिड ५ बूंद।

विधि—इन सबको मिलाकर १०० ग्राम वैसलीन सफेद में घोटकर चौड़े मुह की शीशी में भरकर कड़ी डाट लगा दें।

उपयोग—इसमें से थोड़ा सा शिर पर लगाने से तत्काल शिरःशूल दूर हो जाता है।

वक्तव्य—उपरोक्त औषधियों को वैसलीन में न मिलाकर शीशी में भरकर भी रख सकते हैं। शिर दर्द पर फुरहरी से लगा दें।

(१७) शिरःशूलान्तक—पुष्करमूल, शुण्ठी तथा चित्रक को पीसकर चूर्ण बना लें।

मात्रा—३ ग्राम।

अनुपान—मेवे के पेड़ा या दुग्ध के साथ।

उपयोग—शिरःशूल, अर्धावभेदक, आदि पर परमलाभदायक योग है। सूर्यावर्त की दारुणतम स्थिति में इसे लाभप्रद पाया गया है। अन्य शिरःशूलों में लाभदायक योग है।
—वैद्य अम्बालाल जोशी द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(१८) वेदनान्तक योग—शुद्ध अहिफेन ३ ग्राम, शुद्ध कर्पूर ३ ग्राम, शुद्ध खुरासानी अजवायन ६ ग्राम, रससिन्दूर ६ ग्राम।

विधि—उपरोक्त सब द्रव्य खरल में डालकर घुटाई करें तदनन्तर ६ ग्राम भांग को ६० ग्राम जल में खूब वारीक रगड़कर छान लेवें और उस जल की भावना देकर घुटाई करते जावें जब तक सब जल शुष्क न हो जावे। इसके उपरान्त २-२ रत्ती की गोलियां बना लें।

मात्रा—१-२ गोली तक शीतल जल के साथ दें।

उपयोग—सब प्रकार के शिरःशूल में लाभकारी योग है। शिरःशूल के अतिरिक्त शरीर में कहीं भी वेदना हो तो इसकी १ गोली से तत्काल शान्ति मिल जाती है।
—प्रोफेसर गंगाशरण शर्मा द्वारा
... गुप्तसिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(१९) मगज शान्ति मधु—मुलहठी १०० ग्राम, इलायची के दाने, तज, तमालपत्र, अलसी, नागकेशर, जायफल, जावित्री, लौंग, वंशलोचन, ... प्रत्येक २५-२५ ग्राम इन द्रव्यों को कूट, कपड़छन चूर्ण बना लें पश्चात् इसमें बादाम मगज, चिरोंजे का मगज, खरबूजे के बीजों का मगज, ककड़ी के बीजों का मगज, तरबूज के बीजों का मगज, घीया तुरई के बीजों का मगज, सौंफ का मगज, बीदाना अनार, अरण्डी के बीज की गिरी प्रत्येक १००-१०० ग्राम इन सबको पत्थर पर पीसकर बारीक पिट्ठी बना लें पश्चात् किञ्चित घृत में भून लेवें और उपरोक्त चूर्ण मे मिला दे। असली केशर, स्वर्णमाक्षिक भस्म, अभ्रक भस्म, प्रवालभस्म प्रत्येक १०-१० ग्राम, अमृतासत्व २५ ग्राम, मुक्तापिष्टी ३ ग्राम, मिश्री २०० ग्राम, विशुद्ध मधु १ किलो। सबको एक चीनी की वरनी में भरें औषधि अच्छी तरह मिला दें वरनी का मुख बन्द करके अनाज की कोठरी मे ७ दिन तक बन्द कर दें। आठवें दिन वरनी को कोठरी के बाहर निकालकर कलछी से सब औषधि मिला दें।

मात्रा—प्रातः-सायं १०-१० ग्राम औषधि खावें ऊपर से दूध या जल पिया जा सकता है।

उपयोग—निरन्तर कुछ दिन तक सेवन करने से शिर की पीड़ा तथा अन्य शिरःशूलजन्य विकार दूर हो जाते हैं।
—वैद्य हरीराम जी वराटे द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(२०) शिरःशूलारि वटी—गोंद बबूल २० ग्राम, कटेरी के फूल ६ ग्राम, अशुद्ध सिंगिया १ ग्राम, गूगल ६ ग्राम, अफीम १ ग्राम।

विधि—पानी के साथ घोटकर गोली बनाकर सुखाकर रख लें।

प्रयोग विधि—१ गोली या २ गोली जितने से दर्द की जगह गाढ़ा सा लेप हो सके पानी के साथ पत्थर पर घिस लें। दर्द की जगह माथे और कनपटी पर पहले-पहले ऊपर से नीचे की ओर धीरे खुरसट सी लकीर कर दें जिससे खून झलक आवे। इस प्रकार ५-७ दिन लेप

करने से आधे माथे तथा कनपटी में होने वाले दर्द में शीघ्र लाभ हो जाता है। —प्रयागदत्त आयुर्वेद शास्त्री द्वारा गुप्तसिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(२१) शिरोरोगारि पाक—बादाम, पिस्ता, पोस्तदाना, चिलगोजा प्रत्येक २००-२०० ग्राम, चिरोंजी दाना ७० ग्राम, खोपरा, छुहारा, कायफल, सफेद मरिच, ब्राह्मी पत्ती, बड़ी इलायची, दाख प्रत्येक ५०-५० ग्राम, केशर १० ग्राम, घिया के बीज १०० ग्राम, ककड़ी के बीज १०० ग्राम, पेठे के बीज १०० ग्राम।

विधि—उपरोक्त सभी वस्तुओं की पिष्टी बनाकर १ किलो घृत में मन्दी अग्नि से सेक लें और २ किलो मिश्री की चाशनी करके उसमें प्रवाल भस्म २० ग्राम, मुक्ताशुक्ति २० ग्राम, स्वर्णमाक्षिक २० ग्राम तथा पिष्टी मिलाकर एकजीव करके बादामपाक की कतली की तरह चक्की काट लें।

मात्रा—प्रातः २० ग्राम दूध के साथ।

उपयोग—मस्तिष्क दौर्बल्यजन्य शिरःशूल में विशेष लाभकारी है। इसके प्रयोग से नेत्रों की ज्योति भी बढ़ जाती है। —वैद्य प्रहलादराय शर्मा द्वारा गुप्तसिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(२२) शिरःशूलान्तक वटी—कर्पूर ६ ग्राम, रससिन्दूर २ ग्राम, खुरासानी अजवायन १२ ग्राम, पीपरामूल १२ ग्राम, पोस्त डोंडा १२० ग्राम।

निर्माण विधि—पीपरामूल तथा खुरासानी अजवायन को कूट-पीस कपड़छन करें। रससिन्दूर तथा कर्पूर को चीनीमिट्टी के खरल में बारीक घोटकर उपरोक्त कपड़छन चीजें मिलाकर घोटें। फिर पोस्त डोंडे को जरा-सा कूटकर १ किलो जल में औटावें। चौथाई जल शेष रहने पर हाथ से मलकर छान लें। फिर उसको मन्द अग्नि पर गाढ़ा कर घनसत्व बना लें और खरल में डालकर ४-६ घण्टे खूब घुटाई कर ३-४ रत्ती की गोली बनाकर सुखा लें।

मात्रा—१-२ गोली तक दूध या गर्म जल से दिन में २-३ बार तक दें।

उपयोग—शिरःशूल तथा अन्य शारीरिक शूलों में १ गोली लेते ही सिर दर्द दूर होने लगता है।

—वैद्य गोवरधनदास चागलानी द्वारा सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(२३) शिरोरोगहर पाक—पोस्त के दाने ५०० ग्राम, बादाम की गुठली २५० ग्राम, पिस्ता २५० ग्राम, चिलगोजा २५० ग्राम, गाय का घी ५०० ग्राम, बूरा १५०० ग्राम।

विधि—खसखस के दाने २ दिन पूर्व भिगो दें और उस पानी को निकालकर कुछ पानी डाल बारीक पीसें तथा दूध के समान होने पर अग्नि पर चढ़ावें। गरम होते ही वह फट जावेगा, तब उसे कपड़े में बांधकर लटका दें। जलीय भाग निकल जाने पर बादाम व पिस्ता को भिगोकर छिलका उतार पिट्ठी बनावें। साथ में चिलगोजे की मींग भी पीस लें। पुन. गाय का घी ५०० ग्राम डालकर सबको सेंक लें।

प्रक्षेप—सोंठ १० ग्राम, मिर्च १० ग्राम, पीपल १० ग्राम, इलायची १० ग्राम, वंशलोचन १० ग्राम, तज १० ग्राम, पत्रज १० ग्राम को कूट वस्त्रपूत कर मिला दें। साथ में प्रवाल भस्म १० ग्राम, कहरवा १० ग्राम, जहरमोहरा १० ग्राम, मोती ३ ग्राम (अभाव में मुक्ताशुक्ति १० ग्राम), लौह भस्म १० ग्राम, वङ्ग भस्म १० ग्राम, शिलाजीत १० ग्राम मिला दें और १५०० ग्राम बूरे की चाशनी में मिला जमाकर चकती काट लें।

मात्रा—१०० ग्राम की चकती २५० ग्राम गाय के दूध के साथ प्रातःकाल सेवन करावें।

उपयोग—जीर्ण शिरःशूल के रोगियों को इस पाक के सेवन से विशेष लाभ होता है। शुक्रक्षयजन्य शिरःशूल के रोगियों के लिए रामबाण योग है।

—वैद्य विजयशंकर शास्त्री द्वारा सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(२४) शिरःशूलारि मिश्रण—स्वर्ण सूतशेखर ३ ग्राम, स्वर्णमाक्षिक भस्म ६ ग्राम, मोती भस्म १½ ग्राम, ब्राह्मी वटी १½ ग्राम, सर्पगन्धा वटी ६ ग्राम, शिरःशूलादि ३ ग्राम।

विधि—सब मिलाकर २१ पुड़िया बना लें।

मात्रा—१-१ पुड़िया सुबह, दोपहर, शाम दूध या शहद से सेवन करावें और ऊपर से गुलकन्द तथा आंवले का मुरब्बा १०-१० ग्राम सेवन करावें। भोजनोपरान्त अश्वगन्धारिष्ट, द्राक्षारिष्ट १-१ चम्मच बराबर पानी मिलाकर सेवन करावें।

उपयोग—अर्ध शिरःशूल, पूर्ण शिरःशूल, जीर्ण शिरःशूल, अनिद्रा आदि में अत्यन्त उपयोगी योग है।

—डा० के० एल० जयसवाल द्वारा सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(२५) शिरःशूलनाशक हिमांशु तैल—तिल तैल २ किलो, छोटी इलायची ६ ग्राम, रतनजोत, कपूर कचरी, लौंग, मुचुकुन्द, पानड़ी, सुगन्धवाला, खस, सफेद चन्दन, कुलंजन, बड़ी इलायची, कर्पूर सब १०-१० ग्राम।

विधि—कर्पूर को छोड़कर शेष सभी औषधियों को उपरोक्त मात्रा में लेकर उनका कल्क तैयार कर लें। उसके भली प्रकार गर्म हो जाने पर उनमें इन दवाओं की लुगदी तथा आधा किलो गाय का दूध छोड़ दें। पाक हो जाने पर उतार लें और उसमें गर्म ही छानकर कर्पूर मिला दें।

उपयोग—शिरःशूलनाशक मालिश के लिए अति-उत्तम तैल है। —बनारस विश्वविद्यालय के परीक्षित प्रयोग पुस्तक से।

(२६) शिरःशूलान्तक मलहम—मोम १० ग्राम, गाय का घी १० ग्राम, नारियल का तैल १० ग्राम, चाय का तैल २० ग्राम, कर्पूर का तैल ५ ग्राम, पिपरमेंट का तैल २ ग्राम, अजवायन का तैल २ ग्राम।

विधि—मोम, गाय का घी तथा नारियल के तैल को आग पर गरम करें। जब तीनों चीजें मिलकर एक दिल हो जावें, तब कपड़े से छान लें और शेष सभी चीजें डालकर मिलावें और गरम रहे, तभी शीशी में रख लें। शीशी का ढक्कन हमेशा बन्द रखें।

उपयोग—इसके प्रयोग से शिरोवेदना शीघ्र मिट जाती है। —अनुभूत योग द्वितीय भाग से।

(२७) शिरःशूलारि वटी—कनक बीज, विजया के बीज, विधारा के बीज, समुद्र फल, कटेरी के बीज, शुद्ध पारद, शुद्ध आंवलासार गन्धक इन सातों चीजों को समभाग लेकर सर्वप्रथम पारद तथा गन्धक की कज्जली तैयार करें और शेष द्रव्यों को बारीक पीसकर कज्जली में मिला दें फिर उसमें थोड़ा अर्द्रक का रस मिलाकर १२ घण्टे खरल करके २-२ रत्ती गोलियां बना लें।

मात्रा—२ गोली तत्कालीन तीव्र शिरःशूल में जल से सेवन करावें। पुराने दर्द में १-१ गोली सुबह शाम शहद से सेवन करावें। —अनुभूत योग प्रकाश से।

(२८) शिरःशूलहर तैल—कर्पूर, नीलगिरी का तैल, नीबू का तैल, लेवेण्डर का तैल, सन्तरे का तैल १-१ औंस और सरसों का तैल १० औंस लें।

विधि—पहले सरसों के तैल को अलग रखें। शेष तैलों में कर्पूर मिला देवें कर्पूर मिल जाने पर सरसों का तैल डालकर बोतल को अच्छी तरह हिला देवें।

उपयोग—शिरःशूल तथा नेत्रशूल की अवस्था में रोगी की नाक में इस तैल की २-२ बूंदें डाल दें और जोर से श्वास लेने को कहें। तैल डालने के लिये तकिये पर मस्तिष्क को झुका दें जिससे तैल मस्तिष्क में सरलता से पहुंच जाय। दर्द अधिक हो तो प्रातःसायं दिन में दो बार तैल डालें। १०-१५ दिन तक तैल डालने से वर्षों का शिरःशूल निर्मूल हो जाता है।

(२९) शिरःशूलान्तक मलहम—सफेद वैसलीन ३ पौण्ड, पैराफीन १ पौण्ड, लोहवान पुष्प २ औंस, कर्पूर २ औंस, पिपरमेंण्ट के फूल १ औंस, अजवायन के फूल २ औंस, नीलगिरी तैल ६ औंस, दालचीनी का तैल २ औंस।

विधि—पहले बर्तन में वैसलीन तथा मोम को गरम करके छान लें। कर्पूर, पिपरमेण्ट तथा अजवायन के फूलों को मिलाकर प्रवाही अर्क बना लें। पश्चात् तैल तथा लोहवान पुष्प को वैसलीन वाले प्रवाही द्रव्य में मिला लें। फिर जब थोड़ा गरम रहे तब अर्क को डालकर, कांच या लोहे की शलाका से चलाकर सबको भली प्रकार मिला लें और शीशियों में तुरन्त भर लें।

उपयोग—इस मरहम की मालिश करने से सिरदर्द में विशेष लाभ होता है। —रसतन्त्रसार द्वितीय भाग से।

(३०) शिरःशूलान्तक हलुवा—यह हमारी चिकित्सा में अत्यन्त लाभकर तथा बहु-चर्चित उपयोगी, चिकित्सकीय औषधि है। प्रायः पचास प्रतिशत से अधिक सिर दर्दों में प्रभावक काम करता है। सैंकड़ों लोग इसे नोट करके प्रतिवर्ष ले जाते रहे हैं। आप भी इससे अवश्य लाभ उठाइये। प्रयोग इस प्रकार है—

१. शाम को डुबान पानी से १ इञ्च ऊपर रखकर १२५ ग्राम पोस्त के डोंडों के बीज (खसखस दाने) पांच छुहारे, पन्द्रह कागजी बादामों की मिंगी लेकर साफ पात्र में शाम को भिगोकर रख दें और प्रातः इनका छिलका उतारकर, सिल पर बारीक पीसकर डालें।

२. लौंग पन्द्रह उत्तम फूलदार लेनी चाहिये।

इसी तरह दस छोटी इलायचियां लें। छोटी इलायची न मिलने पर बड़ी इलायची या डोडा भी काम में ले सकते हैं। इनका बारीक मैदा की चलनी से छना हुआ उत्तम चूर्ण बना लेना चाहिये।

बस, इन पांच चीजों के योग से यह शिरःशूलान्तक हलुवा बनाया जाता है।

विधि—पोस्त के दाने प्रातः फूल जाने पर पानी से अलग कर इन्हें पीसें फिर कढ़ाई में १२५ ग्राम या १२० ग्राम उत्तम गोघृत या उत्तम घृत डालकर आग पर उत्तमरीत्या अकोर लें। फिर ३५० ग्राम कानपुरी मिश्री (अभाव में दानेदार शक्कर) को १२५ ग्राम पानी में घोलकर थोड़ी देर बाद छान लें और अकोरे हुए पोस्त दानों को डालकर हलुवे की तरह पकावें। कुछ पतला हलका-सा बन जाने पर बारीक पिसे हुए छुहारे, कागजी बादामों की फूली छिली पिसी या वर्क की हुई गिरी, पिसी लौंग और इलायचियों का चूर्ण भी मिला दें। करछी से भली-भांति चलाते जायं और भूनते जायं। थोड़ी देर में ही बढ़िया "सिरदर्द नाशक" हलुवा बन जायगा। इसे कुछ पतला ही रखना चाहिये। चाहें तो मिश्री या चीनी का शर्बत बनाते समय उसे पतला बनावें। इस हलुवे को किसी कलईदार पात्र में भर रखें।

नोट—हलुवे को सस्ता बनाने के लिये १२५ ग्राम या १०० ग्राम घी में अकोरी हुई सूजी भी मिलाकर खसखस दानों के साथ भून सकते हैं। पर मिश्री या चीनी तथा पानी की मात्रा छोटी तो अवश्य ही कर लेनी चाहिये। यदि पानी उससे भी कुछ अधिक हो जाय तो कोई हानि नहीं है।

प्रयोग विधि एवं उपयोग—प्रायः जो सिरदर्द विवाहित नवयुवतियों में, अध्ययनशील नवयुवकों में या कामुकवृत्ति के कारण वात विकार से हो जाने वालों में हो जाता है या प्रदररोग ग्रस्त महिलाओं, दिमागी काम करने वालों या क्लर्क प्रभृति बन्धुओं में या आधासीसी के बीमारों में जो सिरदर्द हो जाया करता है, उनके लिये यह प्रयोग अत्युत्तम प्रभावक है। प्रातः दुपहर, शाम एवं रात्रि को इनका प्रयोग करना चाहिये। मात्रा दो तोले से २॥ तोले तक रखिये। किसी औषधि के साथ हलुवा मिलाकर या वैसे ही १-१ अंगुली से चटाते जाइये और ऊपर से १-१ घूंट दूध भी पिलाते जाइये। दूसरे दिन से ही आराम प्रतीत होने लगेगा।

—पं० चन्द्रशेखर जैन द्वारा शिरःशूलांक से।

[इ] प्रमुख शास्त्रीय योग

क्रमाङ्क	कल्पना	औषधि नाम	ग्रन्थ सन्दर्भ	मात्रा एवं समय	अनुपान	विशेष
१	रस	महालक्ष्मीविलास रस	र० सा० सं०	१२५ मि०ग्रा० दिन में २-३ बार	दुग्ध	सर्वविध शिरःशूलहर।
२	,,	शिरःशूलादि वज्र रस	भै० र०	२५० मि०ग्रा० दिन में २-३ बार	बनाद्दुग्ध	,,

३	रस	चन्द्रकान्त रस	भै० र०	२५० मि०ग्रा० दिन मे २-३ वार	मधु	सर्वविध शिर शूलहर।
४	,,	बृ० वातचिन्तामणि रस	,,	१२५ मि०ग्रा० दिन मे २-३ वार	,,	,,
५	,,	शिरो रोगहर रस	र०यो०सा०	६० मि० ग्रा० दिन मे २-३ वार	दुग्ध	,,
६	,,	अर्द्धनारीश्वर रस	भै० र०	५०० मि०ग्रा० दिन में २-३ वार	आर्द्रक स्वरस + मधु	कफाधिक्यजन्य मे।
७	,,	पञ्चामृत रस	,,	२५० मि०ग्रा० दिन में २-३ वार	आर्द्रक स्वरस	पीनसजन्य मे।
८	,,	नवजीवन रस	र० त०	१२५ मि०ग्रा० दिन में २-३ वार	,,	तीक्ष्ण शूल मे।
९	,,	महावातविध्वंसन रस	र० च०	१२५–२५० मि० ग्रा० दिन में २-३ वार	,,	वातक्षोभजन्य तीक्ष्ण शिरःशूल मे।
१०	,,	कामदुघा रस	र०यो०सा०	,, ,,	घृत + सिता	पित्तप्रकोपजन्य में।
११	,,	सूतशेखर रस	यो० र०	,, ,,	दुग्ध	वात पित्तात्मक में।
१२	,,	स्वर्ण भूपति रस	,,	१२५ मि०ग्रा० दिन में २-३ वार	आर्द्रक स्वरस + मधु	,,
१३	,,	अश्वकंचुकी रस	र० रा० सु०	१२५–२५० मि० ग्रा० दिन में २-३ वार	दुग्ध	विबन्ध जन्य में।
१४	,,	स्वर्णवसन्तमालती रस	सि० भै० मणि०	१२५ मि०ग्रा० दिन मे २-३ वार	,,	वात पित्तज में।
१५	वटी	वेदनान्तक वटी	र० त०	१–२ गोली दिन में २-३ वार	घृत + सिता + दुग्ध	शूल शामक।
१६	,,	शिरःशूलहर वटी	सि० भै० मणि०	,, ,,	,,	,,
१७	,,	जया वटी	र० त०	,, ,,	बलामूल क्वाथ	,,
१८	,,	शूलवज्रिणी वटी	र० च०	,, ,,	मरिल + गोरखमुण्डी-स्वरस (उष्ण)	,,
१९	,,	आरोग्यवर्द्धिनी वटी	र० र० स०	,, ,,	त्रिफला क्वाथ	विबन्ध जन्य मे।
२०	,,	चन्द्रप्रभा वटी	र० चि०	,, ,,	दुग्ध	निर्बलता जन्य में।
२१	भस्म	गोदन्ती भस्म	र० त०	५०० मि.ग्रा.– १ ग्रा० दिन में २ वार	घृत + दुग्ध	पित्त प्रकोप में।
२२	,,	प्रवाल भस्म	,,	५०० मि०ग्रा० दिन में २ वार	घृत + सिता	,,
२३	,,	रजत भस्म	,,	३०–१२५ मि० ग्रा० दिन में २ वार	घृत + सिता + दुग्ध	निर्बलता जन्य में।

२४	भस्म	कपर्द भस्म	र० त०	२५० मि०ग्रा० दिन में २ बार	द्राक्षारिष्ट	अजीर्ण जन्य में।
२५	,,	यशद भस्म	,,	,, ,,	चित्रकक्वाथ	अर्धावभेदकहृर।
२६	,,	अभ्रक भस्म	,,	,, ,,	सिता+घृत	,,
२७	,,	स्वर्णमाक्षिक भस्म	,,	,, ,,	,,	,,
२८	क्वाथ	पथ्यादि क्वाथ	शा० सं०	१० ग्राम+ १६०ग्राम जल ४० ग्राम शेष दिन में २ बार	गुड़ मिलाकर	सर्वविध शूलों में।
२९	,,	वासादि क्वाथ	,,	,, ,,	—	,,
३०	,,	देवदार्व्यादि क्वाथ	,,	,, ,,	—	,,
३१	,,	गोजिह्वादि क्वाथ	सि०यो०सं०	,, ,,	सितामिलाकर	पीनसजन्य में।
३२	चूर्ण	सितोपलादि चूर्ण	भै० र०	१ ग्राम दिन में २ बार	मधु	सर्वविध मे।
३३	,,	चन्दनादि चूर्ण	,,	२-३ ग्राम दिन में २ बार	दुग्ध	पित्तजन्य मे।
३४	,,	सारस्वत चूर्ण	,,	,, ,,	मधु+घृत	मस्तिक दौर्बल्यजन्य में।
३५	आसव-अरिष्ट	अश्वगन्धारिष्ट	भै० र०	२०-२५ मि०लि० भोजनोत्तर	समान जल मिलाकर	वातिक में।
३६	,,	सारस्वतारिष्ट	,,	,, ,,	,,	मस्तिक दौर्बल्यजन्य में।
३७	,,	द्राक्षारिष्ट	,,	,, ,,	,,	विबन्धजन्य में।
३८	घृत	यष्ट्यादि घृत	च० द०	५-१० ग्राम दिन में २ बार	दुग्ध	सर्वविध में।
३९	,,	जीवनीय घृत	,,	,, ,,	,,	,,
४०	पाक-लेह	चित्रक हरीतकी	यो० र०	,, ,,	,,	पीनस जन्य में।
४१	,,	च्यवनप्राश	चरक०	१०-२० ग्राम दिन में २ बार	,,	कार्श्यजन्य में।
४२	,,	ब्राह्म रसायन	,,	,, ,,	,,	,,
४३	,,	नारिकेलादि लेह	सि० भै० मणि०	२५ ग्राम प्रातः-सायं	,,	,,
४४	,,	आमलकी रसायन	सि०यो०सं०	१० ग्राम प्रातः-सायं	,,	पित्तजन्य में।
४५	गुग्गुल	योगराज गुग्गुल	ग० नि०	२-३ गोली प्रातः-सायं	,,	वातजन्य में।
४६	,,	रस्नादि गुग्गुल	,,	,, ,,	,,	,,
४७	,,	महायोगराज गुग्गुल	शा० सं०	,, ,,	,,	,,
४८	मोदक	तिलादि मोदक	व० वृ०	३ ग्राम प्रातः	पथ्यादि क्वाथ	अर्धावभेदकहृर।

४९	मोदक	राजकोशातक्यादि मोदक	सि० भै० मणि०	५०–६० ग्राम प्रातः	दुग्ध	अनन्तवातहर।
५०	,,	अभया मोदक	शा० सं०	३ ग्राम सायं	जल	विदग्धजन्य में।
५१	तैल	षड्बिन्दु तैल	च० द०	६-६ बूंद नासा में २-३ बार डालें	—	सर्वविध में।
५२	,,	अणु तैल	सुश्रुत	,, ,,	—	,,
५३	,,	दशमूल तैल	भै० र०	,, ,,	—	,,
५४	,,	गुञ्जा तैल	,,	,, ,,	—	,,
५५	,,	विडङ्ग तैल	यो० र०	,, ,,	—	कृमिज शिरःशूल में।
५६	,,	धुस्तूर तैल	भै० र०	शिर पर अभ्यङ्ग करें	—	वातजन्य में।
५७	,,	कुमारी तैल	भा० प्र०	,, ,,	—	,,
५८	,,	चन्दनबला-लाक्षादि तैल	यो० र०	,, ,,	—	पित्तजन्य में।
५९	,,	महानारायण तैल	च० द०	,, ,,	—	वात जन्य में।
६०	,,	प्रपौण्डरीकाद्य तैल	,,	,, ,,	—	,,
६१	नस्य	कणादि नस्य	सि० भै० मणि०	ताम्रपात्र में रख भूनकर नस्य लें	—	सर्वविध में।
६२	,,	करञ्जादि नस्य	भै० र०	चूर्ण बनाकर नस्य लें	—	,,
६३	हिम	मधुकादि हिम	र० यो० सा०	१०ग्रा.+५०ग्रा. जल में घोलकर प्रातः पीवें	—	,,
६४	लेप	दार्व्यादि लेप	च० द०	काञ्जी में पीस-कर लेप करें	—	कफज शिरोरोगहर।
६५	,,	मरिच्यादि लेप	,,	,, ,,	—	,,
६६	,,	सारिवादि लेप	,,	काञ्जी में पीस घृत, तैल मिला-कर लेप करें	—	सूर्यावर्तावभेदकानान्तवातहर
६७	,,	जीवन्त्यादि लेप	भै० र०	गोदुग्ध में पीस-कर लेप करें	—	क्षयज शिरोरोगहर।
६८	,,	नतोत्पलादि लेप	च० द०	घृत में पीसकर लेप करें	—	त्रिदोषज शिरोरोगहर
६९	,,	हरेण्वादि लेप	भै० र०	जल में पीस गर्मकर लेप करें	—	कफज शिरोगहर।
७०	,,	धात्र्यादि लेप	,,	जल में पीसकर लेप करें	—	रक्तज शिरोगहर।
७१	,,	चन्दनादि लेप	च० द०	दूध में पीसकर लेप करें	—	पैत्तिक शिरोरोगहर।
७२	,,	त्रिपुरादि लेप	भै० र०	,, ,,	—	,,

७३	"	तिलकल्कादि लेप	मै० र०	जल में पीसकर सैन्धव + मधु मिलाकर लेप करें	—	अर्धावभेदकहर ।
७४	"	मुचकन्द लेप	च० द०	पुष्पों को पीसकर लेप करें	—	वातज शिरोरोगहर ।
७५	उपनाह	वातामादि उपनाह	सि० मै० मणि०	घृत में छौंककर शिर पर बन्धन करें	—	समस्त शिरोरोगहर ।

शिरःशूल में सामान्य चिकित्सा उपक्रम

वातिक शिरःशूल में स्नेहन, स्वेदन, मर्दन, नस्य, उपनाह, तथा वातनाशक अन्नपान कराना चाहिये पैत्तिक में स्नेहन करने के बाद विरेचन कराना चाहिये। शर्करोदक तथा दूध में जल मिलाकर सिर पर धारा छोड़नी चाहिये। शतधौत गोघृत का लेप तथा शीतल जल से सिर को धोना चाहिये। कफज शिरःशूल में लंघन, रूक्ष, उष्ण तथा पाचन कारक द्रव्यों की पोटली से स्वेदन, तीक्ष्ण द्रव्यों से बना अवपीडन धूम्रपान तथा तीक्ष्ण उष्ण द्रव्यों से बना कवल गण्डूष का उपयोग कराना चाहिये। सन्निपातज शिरःशूल में तीनों दोषनाशक मिलित चिकित्सा करनी चाहिये। रक्तज शिरःशूल में पित्तज शिरःशूल के समान चिकित्सा करनी चाहिये। रक्तमोक्षण करना विशेष हितकर है। क्षतज शिरःशूल में मूलरोग क्षत को नष्ट करने के लिये बृंहण चिकित्सा करनी चाहिये। वातघ्न, जीवनीय गण के द्रव्यों से पकाये हुये गोघृत का पीना तथा नस्य लेना तथा उरःक्षत अधिकार में वर्णित घृतयुक्त पदार्थ, गोदुग्ध तथा गोघृत मिलाकर नस्य लेना तथा दूध में घी मिलाकर पीना उपयोगी होता है। क्रिमिज शिरःशूल में क्रिमिनाशक द्रव्य से बने नस्य का प्रयोग तथा कफनाशक चिकित्सा करनी चाहिये। सूर्यावर्त में सिरावध करके दूषित रक्त निकालना, दूध में घी मिलाकर नस्य लेना, दूध तथा घृत का निरन्तर सेवन, इसी अनुपात में रेचक द्रव्य देकर विरेचन तथा जंगली जीवों के मांस का उपनाह हितकर है। अर्धावभेदक में स्नेहन, स्वेदन पूर्वक विरेचन शिरोविरेचन, धूपन तथा शामक भेषज तथा स्निग्ध उष्ण भोजन करना चाहिये। इसमें सूर्यावर्त में सब उपक्रम उपयोगी है। अनन्तवात में सूर्यावर्त में कही गयी सब चिकित्सा करनी चाहिये। शंखक में स्वेदन कर्म को छोड़कर शेष सब क्रिया सूर्यावर्त की करनी चाहिये। गोदुग्ध को मथकर निकाले मक्खन के घी का पीना तथा नस्य लेना विशेष हितकर है।

शिरःशूल में सामान्य औषधि व्यवस्था-पत्र

(१) शिरःशूलादि रस १ ग्राम। १ मात्रा × बकरी या गाय के दूध के साथ प्रातः-सायं ६ बजे दें।
(२) पथ्यापडङ्ग क्वाथ ८० ग्राम। १ मात्रा × १० ग्राम पुराना गुड़ मिलाकर प्रातः ७ बजे पिलावें।
(३) प्रवालभस्म ६ रत्ती। १ मात्रा × ६ ग्राम घृत तथा ६ ग्राम मिश्री के साथ २ बजे।
(४) षड्बिन्दु तैल—प्रातः-सायं ६ बूंद दोनों नथनों में छोड़ें।

शिरःशूल के कुछ विशेष प्रकारों में औषधि व्यवस्था-पत्र

१. सूर्यावर्त—

(१) शिरःशूलादि वज्ररस वटी × १ मात्रा। २५ ग्राम पुराने गुड़ के हिम के साथ सूर्योदय से पहले।
(२) प्रवालभस्म १ ग्राम × ६ ग्राम घृत तथा ६ ग्राम मिश्री के साथ।

(३) सारिवादि लेप—माथे पर लेप।

(४) नस्य—कागजी नीबू का रस ५ बूंद सूर्योदय के पहले जिस भाग मे पीड़ा होती है उस ओर नाक में छोड़ें। यदि पूरे शिर मे पीड़ा हो तो दोनों नाक में छोड़े।

२. अनन्तवात—

(१) बृ० वातचिन्तामणि २ रत्ती+चन्द्रकान्त रस २ रत्ती। १ मात्रा×१० ग्राम घृत तथा ६ ग्राम मिश्री के साथ प्रातः ६ बजे तथा अपरान्ह २॥ बजे दें।

(२) शिर:शूलादि वज्र १ ग्राम। १ मात्रा×बकरी के दूध के साथ तथा मिश्री के साथ सायं ४ बजे।

(३) महालक्ष्मीविलास १ रत्ती+लोहभस्म १ रत्ती। १ मात्रा×मुलहठी चूर्ण ६ ग्राम+गोघृत ६ ग्राम तथा मधु १० ग्राम के साथ रात को सोते समय।

(४) अश्वगन्धारिष्ट २० मि० लि०×१ मात्रा भोजनोपरान्त बराबर जल मिलाकर।

(५) लेप—शतधौत घृत का दिमाग व मस्तक पर प्रातः ८ बजे और १२ बजे लेप करना चाहिये।

अनन्तवात की सफल चिकित्सा—आचार्य हरदयाल वैद्य वाचस्पति आयुर्वेद के उत्कट विद्वान् हैं उन्होंने सुधानिधि के शिरःशूलांक में अनन्तवात की सफल चिकित्सा का वर्णन किया है जो अत्यन्त उपयोगी होने से यहां अविकल दिया जा रहा है—

संहिता ग्रन्थों में एवं तदुत्तर कालीन संग्रह ग्रन्थों तथा अधुना प्रकाशित होने वाले ग्रन्थों में शिरोरोगों की चिकित्सा विशद रूपेण उपलब्ध है। संहिता ग्रन्थोक्त चिकित्सा क्रम बहुशोऽनुभूत भी है तथा इसमें—खाद्य, पेय, लेप, शिरोवस्ति, नस्य, रक्तमोक्षण आदि-आदि समस्त प्रकारों का आश्रय लिया गया है। यदि वही चिकित्सा क्रम यथावत् दोहरा दिया जाए तो यह सम्भव है पाठकों को रुचिकर न हो। शास्त्रीय विशाल चिकित्सा क्रम में वर्णित योगो के प्रति यह निश्चय करना प्रत्येक के लिए कठिन होगा कि किस विशेष अवस्था में कौन योग निकाला जाए। उदाहरणार्थ मृत्युंजय, ज्वरांकुश तथा पंचानन रस आदि अनेक योग उपलब्ध है इनमें से कौन योग ज्वर की किस अवस्था में निश्चय लाभकर होगा यह सब के वश की बात नहीं।

अनन्तवात रोग प्रशमनार्थ जो चिकित्सा क्रम हम प्रयोग कर रहे हैं, उसे ही आपकी सेवा में अर्पण किया जा रहा है। चिकित्सा को दो भागों में विभक्त किया जाता है।

(१) आक्रमण कालिक। (२) प्रतिषेधात्मक। इसके वेग काल में दो अवस्थाएं सामने आती है—प्रथम यह कि रोगी तीव्र पीड़ा से ही आकुल हो। दूसरी यह कि पीड़ा के साथ-साथ अर्ध मूर्च्छित व पूर्ण मूर्च्छित हो। इस अवस्था मे चिकित्सक को धैर्य से काम करने की आवश्यकता होती है। कारण कि मूर्च्छा के आरम्भ होते ही बलात् उसे दूर करने के प्रयत्न से समय पूर्व वह दूर नहीं होती और तीव्रोपाय करने से मूर्च्छा निवृत्ति पर रोगी को पश्चात् काल में चिरकाल तक अस्वाभाविक अवस्था में रहना पड़ता है। घण्टे आध घण्टे के पश्चात् वेग शान्त होने पर स्वतः ही मूर्च्छा दूर हो जाती है। इस काल मे नस्य, आंचिचन, हस्तपाद और पिण्डलियों के संघर्षण का कार्य करते रहना चाहिए। मूर्च्छान्त में सावधान होने पर रोगी को बृ० कस्तूरी भैरव १ रत्ती आर्द्रक रस मधु से देना चाहिये। अथवा संजीवनी सुरा आवश्यक मात्रा में दी जानी चाहिए। इससे रोगी की दुर्बलता तथा क्लातता दूर हो जाती है।

प्रतिषेधात्मक चिकित्सा में निम्नलिखित चिकित्सा चालू करने से पुनः २ वेगों का आना एवं अन्य लक्षण शनैः-शनैः शान्त होते जाते है। प्रतिषेधात्मक चिकित्सा काल में भी वेगाक्रमण कभी-कभी हो जाय तब विचलित न होना चाहिए।

रोगी प्रातः बिस्तर से उठते ही त्रिफला चूर्ण ३ माशा नवसादर ४ रत्ती, कृमिघ्न रस १ रत्ती (रसेन्द्रसार संग्रह का) मंदोष्ण जल ½ कप से पिला दें। दो तीन दिन इसे पिलाकर इसमें से कृमिघ्न रस निकाल दें। एवं विधि ३-४ दिन बिना रस के दें और बाद में फिर २-३ दिन मिलाकर दें। किन्तु त्रिफला चूर्ण और नवसादर नित्य प्रति देते रहना चाहिए। तदनु प्रातराश के समय राजमृगांक १ रत्ती (रसेन्द्रसार यक्ष्माधिकारोक्त) पिप्पली चूर्ण २ रत्ती आर्द्रक रस मधु से दें। ऊपर से चित्रकहरीतकी ४ माशा चाटकर गोदुग्ध १ कप दिया जाना चाहिये। भोजन से ½ घण्टा पूर्व वज्ररस (रसरत्नसमुच्चयोक्त) २ रत्ती मरिच चूर्ण २ रत्ती नवसादर ४ रत्ती अभाव में शार्ङ्गधरोक्त लोकनाथ रस शीतल जल से मानुपान दें। भोजन के ½ घण्टा बाद और सायं ४-५ बजे शिरःशूलादिवज्र रस २ रत्ती (भैषज्य०) मधुरक्षार ४ रत्ती मिलाकर दिया जाना चाहिए। रात्रिशयन काल में शार्ङ्गधरोक्त वासादिक्वाथ यथा विधि प्रसाधित करके कट्फल चूर्ण ४ माशा मरिच चूर्ण ४ रत्ती, गुड़ २ तोला, घृत २ तोला में इसका हलुआ सा बनाकर खिला दें और ऊपर से मन्दोष्ण वासादि क्वाथ को पिला दें।

इस प्रकार २-३ सप्ताह चिकित्सा करने से अनन्तवात एवं तत्सदृश अन्य शिरःशूल मिट जाते हैं।

प्रातः कालीन औषधि सेवन करने के आध घण्टा पूर्व नित्य रोगी को कट्फल चूर्ण की नस्य देना चाहिए। इससे संचित श्लेष्मा निकलेगा और गाढ़मूलादोषदुष्टि शनैः-शनैः शान्त होगी। रात्रि की औषधि सेवन के आध घण्टा बाद अणु तैल (सुश्रुतोक्त १ औंस में मद्यसार १ तोला, कर्पूर १ माशा को मद्यसार में विलेय करके अणु तैल में डाल दें। इस मिश्रित योग का १-१ ड्रोपर भर कर लेटे हुए रोगी की नासा में डाल दें। तब तक रोगी को लेटे रहना चाहिये जब तक यह तैल कण्ठ में न पहुंच जाए। कण्ठ में पहुंचने के मुखस्थ तैल थूककर फेंक दें।

रक्तमोक्षण—तीव्र शिरोव्यथा को तुरन्त दूर करने के लिये रक्तमोक्षण एक जादू असर उपाय है। इसका उपयोग दो प्रकार से होता है। एक नासिका द्वारा रक्तमोक्षण, दूसरा जलौकोपचार द्वारा। नासिका द्वारा रक्तमोक्षण कृतविधि और अनुभवी चिकित्सक का काम है। अनभ्यस्त को इसका साहस न करना चाहिये।

अत्यन्त हठीली और तीव्र पीड़ा प्रशमनार्थ अनेक रोगियों पर जलौकोपचार किया जाता है। अति शीघ्र लाभ होता है। कई रोगी तो जलौका प्रयोग से तुरन्त लाभ प्राप्त करके बड़ी गाढ़ी निद्रा में विलीन हो जाते हैं यह निरापद भी है। जोंक लगाने के समय शंखप्रदेश (कनपटियों में) तीन-तीन और नेत्रों के अधःवर्त्म के नीचे दो-दो जोंक लगानी चाहिए। जोंकों की अशुद्धता और ग्राह्यता पर विशेष ध्यान देना चाहिए। जोंक के छूट जाने पर दंश स्थान पर विशुद्ध असली हरिद्रा का चूर्ण छिड़क कर रुई की पट्टी से बांध देना चाहिए।

पथ्य—शास्त्राज्ञानुसार भोजनार्थ मधुमस्त (मालपूए) संयाव (हलुआ) घृतपूर (घेवर) दूध के साथ देना चाहिए नित्यप्रयुक्त अन्न भी दिये जा सकते हैं।

अपथ्य—दिन में सोना, दही, लस्सी, शीत पेय, भिण्डी, अरवी, कचालू, कटहल, केले, अमरूद; आड़ू आदि-आदि श्लेष्मक भोजन।

३. मस्तिष्क दौर्बल्यजन्य शिरःशूल—

(१) सारस्वत चूर्ण ३ ग्राम। १ मात्रा × मिश्री मिश्रित गोदुग्ध के साथ प्रातः-सायं।

(२) सारस्वतारिष्ट—१० मि० लि० ग्राम + अश्वगन्धारिष्ट १० मि० लि० × १ मात्रा बराबर जल मिलाकर भोजनोपरान्त।

(३) बादामपाक—२५-५० ग्राम प्रातः दूध में मिश्री मिलाकर।

(४) ब्राह्मरसायन—२० ग्राम रात्रि को सोते समय दूध से।

(५) हिमसागर तैल से सिर पर मालिश करावें।

[ई] प्रमुख पेटेण्ट आयुर्वेदीय योग

क्रमांक	योग का नाम	निर्माता कम्पनी	उपयोग विधि	विशेष
१	सर्पेन्यिन टेवलेट	मार्तण्ड	१–२ गोली दिन में २-३ बार।	शिरः शूल के विभिन्न भेदों में उपयोगी।
२	सिलेडिन टेवलेट	एलार्सिन	,, ,,	शिरः शूल तथा उसके कारण उत्पन्न अनिद्रा में उपयोगी।
३	पीड़ाहर टेवलेट	राजवैद्य शीतलप्रसाद	,, ,,	शिरः शूल में उपयोगी।
४	दर्दनाशक टेवलेट	वैद्यनाथ	,, ,,	,, ,,
५	सरवाइना स्ट्रांग	डावर	,, ,,	,, ,,
६	ए० पी० सी० एम० टेव०	देशरक्षक	,, ,,	,, ,,
७	शूलान्तक कैपसूल	गर्ग वनौषधि	१–२ कैपशूल आवश्यकता के समय।	,, ,,
८	शूलगजकेशरी कैपसूल	जी० ए० मिश्रा	१–२ कैपसूल प्रति ३ घण्टे पर।	,, ,,
९	अगरको सूचीवेध	डीशेन कं०	½–१ मि० लि० तक मांस में।	,, ,,
१०	शूलारिन सूचीवेध	बुन्देलखण्ड	२ मि० लि० त्वचा में।	,, ,,
११	शूलान्तक सूचीवेध	मार्तण्ड	१–२ मि० लि० त्वचा में।	,, ,,
१२	महालक्ष्मीविलास सूचीवेध	ए० वी० एम०	२ मि० लि० मांस में १ दिन छोड़कर।	शिरःशूल में स्थाई लाभ के लिये प्रयोग करें।
१३	पेन बाम	वैद्यनाथ	शिर पर मालिश करने के लिये।	शिरःशूल को तुरन्त शान्त करता है।
१४	झण्डू बाम	झण्डू	,, ,,	,, ,,
१५	डावर बाम	डावर	,, ,,	,, ,,

[उ] प्रमुख पेटेण्ट एलोपैथिक योग

औषधि का नाम	निर्माता	मात्रा एवं व्यवहार-विधि	विशेष
१. टेवलेट—			
१. एपिडिन (Apidin)	IDAL	१–२ टेवलेट दिन में २-३ वार।	विभिन्न कारणों से उत्पन्न शिरःशूल में लाभप्रद।
२. डिसप्रिन (Disprin)	Reckitt & Colman	,, ,,	,, ,,
३. एक्वाजेसिक (Equagesic)	Wyeth	,, ,,	,, ,,

४. मेजेटोल (Mazetol)	Suhrid geigy	१–१ गोली ४-४ घण्टे पर दें।	विभिन्न कारणों से उत्पन्न शिरःशूल में लाभप्रद।
५. नोवल्जिन (Novalgin)	Hoechst	,, ,,	,, ,,
६. पाइरेजेसिक (Pyrigesic)	East India	,, ,,	,, ,,
७. सुपरेजेसिक (Supergesic)	Themis	,, ,,	,, ,,
८. वेगानिन (Veganin)	Warner	,, ,,	,, ,,
९. जिमाल्जिन (Zimalgin)	Rallis	,, ,,	,, ,,

श्वेतकुष्ठहर सैट

केवल तीन औषधियों

सफेद दाग के लिये एक अनोखा आविष्कार

- श्वेतकुष्ठहर अवलेह : खाने के लिये
- श्वेतकुष्ठहर घृत : दागों पर लगाने के लिये
- श्वेतकुष्ठहर वटी : दागों पर लगाने के लिये

नये तथा पुराने सभी सफेद दागों के लिये अत्यन्त लोकप्रिय

सफेद दाग निवारक, तीव्र प्रभाव करने वाला विश्वसनीय सैट

श्वेतकुष्ठ (सफेद दागों) के लिये हमारी तीन औषधियों का व्यवहार करें तथा इस घृणित रोग से छुटकारा पावें। ये औषधियां आन्तरिक विकृति को नष्ट करके स्थायी और निश्चित रूप में लाभ करती हैं। सैकड़ों, हजारों व्यक्तियों ने लाभ उठाया है। इनके प्रभावशाली गुणों के विषय में शंका करने की आवश्यकता नहीं।

१५ दिन की तीनों औषधियों का मूल्य १८,००, पोस्ट-व्यय पृथक्।

पता—धन्वन्तरि कार्यालय, विजयगढ़ [अलीगढ़]

श्वास-तमकश्वास

[अ] एकौषध एवं साधारण प्रयोग

(१) उत्तम अगर का महीन चूर्ण शहद के साथ दिन में ३-४ बार चाटने से श्वास में लाभ होता है एवं अगर का धुंआ नासिका द्वारा खींचने से भी श्वास में लाभ होता है।

(२) अंकोल की छाल, राई तथा लहसुन तीनों ६-६ ग्राम खूब महीन पीसकर उसमें ३ वर्ष का पुराना गुड़ सबके समभाग मिलाकर १ गोली बनावें। रोगी को प्रथम दूध पिलाकर यह गोली खिलाने से अन्दर से पीड़ादायक कफ का गोला निकालकर पुराने से पुराना श्वास रोगी आराम की नींद सो जाता है।

(३) मुनक्का तथा हरड़ के क्वाथ में मिश्री तथा शहद मिलाकर पिलाने से काससह श्वास में लाभ होता है।

(४) अन्जीर का कल्क ६ ग्राम तथा गोरख इमली की गिरी ३ ग्राम, दोनों एकत्र मिलाकर प्रातः-सायं सेवन कराने से कुछ दिनों में श्वास में आराम होने लगता है।

(५) वासापत्र आधा किलो में समभाग कटेरी का पञ्चांग मिला जौकुट कर ४ किलो के साथ मन्दाग्नि पर पकावें और ऊपर ढक्कन बन्द रखें। लगभग ३ घण्टे पकने के बाद २ किलो जल शेष रहने पर छानकर उसमें १ किलो शक्कर मिला शर्बत बना लें। १० से २५ ग्राम तक श्वासयुक्त कास में देने से विशेष लाभ होता है।

(६) वासा के छायाशुष्क पत्तों का मोटा चूर्ण २० ग्राम को आधा किलो जल में औटावें। आधा जल शेष रहने पर छानकर उसमें सोंठ तथा पीपल १½-१½ ग्राम तथा शहद १० ग्राम एकत्र मिलाकर रखें। १० से २० ग्राम तक जल के साथ सेवन कराने से श्वास में लाभ होता है।

(७) जीर्ण श्वास में कफ अधिक बढ़ गया हो, तो उसे सरलता से निकालने के लिए वासा के सूखे पत्र चिलम में रखकर पिलाने से या इसके सूखे पत्र के चूर्ण २५० ग्राम में ५० ग्राम गिलोय का रस तथा २० ग्राम कलमी शोरा मिलाकर सिगरेट बनाकर धूम्रपान कराने से लाभ होता है।

(८) अदरक को छीलकर छोटे-छोटे टुकड़े करके किसी घी के पात्र में डाल दें तथा अदरक से चौथाई सेंधानमक पीसकर उसी में मिला दें और उसमें उतना ही अदरक का रस डालकर खूब मिला हांडी का मुख अच्छी तरह मिट्टी से बन्द कर धान्यराशि में गाड़ दें और १ माह बाद निकाल लें। १ से ३ ग्राम तक प्रातः, सायं सेवन कराने से कफ निकलकर श्वास में लाभ होता है।

(९) अनन्नास के रस में छोटी कटेरी की जड़, आंवला तथा जीरा का समभाग चूर्ण मिला और थोड़ा शहद डाल सेवन कराने से तमकश्वास में लाभ होता है।

(१०) अपामार्ग की फल वाली शाखा को जौकुट कर या इसके शुष्क पत्तों को ही चिलम या हुक्के में रखकर धूम्रपान कराने से श्वास के तीव्र वेग में लाभ होता है। साथ ही इसकी जड़ का चूर्ण ६ ग्राम में ७ नग कालीमरिच का चूर्ण मिला प्रातः, सायं ताजे जल से लेने से ७ दिन में पूर्ण लाभ हो जाता है।

(११) २५० ग्राम वजन की एक गाजर लेकर उसमें छेद करके ४ ग्राम अफीम अन्दर भर देवें। ऊपर से मिट्टी और कपड़े की कपरौटी कर ४ किलो नीम की लकड़ियों में भस्म करें। २४ घण्टे बाद उसे धीरे से निकाल कपरौटी दूर कर गाजर की राख सहित सबको खरल कर लें। ३-३ रत्ती की मात्रा में शहद के साथ सेवन कराने से श्वास रोग में लाभ हो जाता है।

(१२) अर्जुन की छाल का महीन चूर्ण ४ ग्राम गाय के दूध की खीर उतने में मिलाकर (जितने में खूब मिल जावे) आश्विन सुदी पूर्णिमा की रात्रि को चन्द्रमा के सम्मुख रख दें। रात्रि भर परमात्मा का भजन करें और

प्रातः ५ बजे खावें तथा कुल्ला करके शक्ति के अनुसार मील, दो मील भ्रमण करें। फिर स्नानादि करके भूख लगने पर मूली का साग और बिना घृत की रोटी खाकर सो जावें। नित्यप्रति १५ दिन तक मूंग की दाल तथा रोटी खानी चाहिए। उड़द की दाल, पीला कोहड़ा, बैंगन तथा समस्त खटाई २ माह तक खाना निषेध है। इस प्रयोग से श्वास रोग में ८० प्रतिशत पूर्ण लाभ हो जाता है।

(१३) अलसी बीज [बगैर चूर्ण किये] ५ ग्राम लेकर उसमें ४० ग्राम जल मिला चांदी की कटोरी [अभाव में कांच की कटोरी] में भिगो ढककर रखें। १२ घन्टे बाद केवल जल को छानकर पी लेवें। प्रातः भिगोया हुआ शाम को और शाम को भिगोया हुआ प्रातः, इस प्रकार दोनों समय इस अलसी जल के सेवन से श्वासग्रस्त रोगी को बहुत शान्ति प्राप्त होती है और उसकी श्वासपीड़ा कुछ दिनों में दूर होती है।

(१४) अलसी १०० ग्राम को २५० ग्राम जल में भिगो दें। जब अच्छी तरह फूल जाय, तब मलकर झीने कपड़े में छान लें। फिर इस लुआब में २५० ग्राम खांड मिलाकर आग में पकावें। गाढ़ा होने पर उतार लेवें और उसमें मुलहठी चूर्ण १०० ग्राम तथा कालीमरिच का चूर्ण ५० ग्राम मिला देवें। इस लेह की मात्रा ३ से ६ ग्राम तक प्रातः-सायं सेवन कराने से श्वास तथा कास में लाभ होता है।

(१५) अलसी बीज लगभग ३ ग्राम जौकुट कर १०० ग्राम उबलते जल में भिगो, ढांक कर रख दें। १ घण्टे बाद उसे छानकर थोड़ी शक्कर मिला पिलाने से शुष्क कास ढीली होकर श्वास रोग की घबराहट दूर होती है।

(१६) आक की जड़ तथा मैनसिल समभाग, त्रिकुटा अर्धभाग। इन सबका मोटा चूर्ण थोड़ा चिलम में रख-कर धूम्रपान करें और ऊपर से पान का बीड़ा खावें अथवा दूध पीवें, तो श्वास में लाभ होता है।

(१७) आक के कोमल पत्तों का क्वाथ कर उसमें भुसीरहित भुने हुए जौ को ७ बार भिगो-भिगोकर सुखा लें। फिर चूर्ण कर ६ ग्राम से १० ग्राम की मात्रा में शहद के साथ प्रातः-सायं सेवन कराने से श्वास में विशेष लाभ होता है।

(१८) आक के पत्र पर पानी में महीन पिसा हुआ कत्था तथा चूना लगावें और दूसरे पत्र पर गाय का घी चुपड़कर दोनों पत्रों को परस्पर मिला दें। इस प्रकार कई पत्रों को तैयार कर एक हांडी में रख जला लें। मात्रा १ रत्ती की भस्म को पान में रखकर सेवन कराने से श्वास में लाभ होता है।

(१९) आक का ताजा पत्र १ नग को जल से धोकर गेहूं, ज्वार या बाजरे के आटे के साथ मध्य में रखकर बेलें तथा रोटी बना भली-भांति सेंक लें। जब रोटी तैयार हो जाय, तब पत्र को निकालकर फेंक देवें और रोटी को घृत या दूध के साथ खिलावें। यदि रोगी अपनी प्रकृति के अनुसार उस पत्र का कुछ हिस्सा भी खा सके, तो कोई हानि नहीं। किञ्चित उष्णता प्रतीत होने पर घृत का विशेष सेवन करावें। यह प्रयोग लगातार २१, ३१ या ४१ दिन सेवन कराने से श्वास रोग समूल नष्ट होकर श्वासवाहिनियां मजबूत हो जाती हैं।

(२०) आकमूल को आकदुग्ध में भिगो और सुखा-कर चूर्ण करें। इसे चिलम में रखकर या बीड़ी बनाकर पीने से कफ झड़कर पुरातन श्वास रोग में भी लाभ होता है।

(२१) इलायची, तेजपात, सोंठ, खस, पीपर, भारंगी, तुलसी, अगर, चन्दन और खांड समभाग लेकर चूर्ण बना रखें। १ से ३ ग्राम तक ताजे जल के साथ सेवन कराने से ऊर्ध्वश्वास तथा तमकश्वास में लाभ होता है।

—वनौषधि विशेषांक भाग १ से।

(२२) ककोड़ा के कन्द का चूर्ण ३ ग्राम लेकर उसमें ४ नग कालीमरिच का चूर्ण जल के साथ पीस-छानकर पिलाने से कफ निकलकर श्वास में लाभ होता है।

(२३) कटेरी की जड़ तथा आंवला का समभाग महीन चूर्ण २ से ४ ग्राम तक शहद से दिन में २-३ बार चटाने से कफप्रधान जीर्ण श्वास रोग शान्त होता है।

(२४) कबाबचीनी के मोटे चूर्ण को बीड़ी या चिलम में भरकर धूम्रपान कराने से श्वास के वेग में कमी हो जाती है और कफ सरलता से निकल जाता है।

(२५) गजपीपल का चूर्ण ४ रत्ती से १ ग्राम तक की मात्रा में अदरक के रस व शहद के साथ प्रातः-सायं कुछ दिनों तक देते रहने से अथवा इसके चूर्ण को खाने के पान में रखकर सेवन कराते रहने से श्वास प्रकोप का वेग शान्त होता है, कफोत्पत्ति रुक जाती है।

(२६) गूमापत्र या पंचांग का स्वरस, आर्द्रक स्वरस व शहद समभाग मिला अल्मोनियम के पात्र में फाण्ट बना ६ ग्राम की मात्रा में दिन में ३ बार रोगी को पिलाने से श्वास रोग में आराम होता है।

(२७) गूलर के फल, पत्ते तथा छाल १-१ किलो जौकुट कर ४ किलो पानी में चतुर्थांश क्वाथ सिद्ध कर, छान उसमें १ किलो मिश्री मिला पुनः पकाकर अवलेह बना लें। १०-१० ग्राम दिन में ३ बार चटाने से श्वास रोग में लाभ होता है।

(२८) गूलर के पत्ते तथा छाल १½-१½ किलो लेकर जल मिला मिट्टी के पात्र में २४ घण्टे तक भिगोने के बाद चतुर्थांश क्वाथ सिद्ध कर उसमें शक्कर ३ किलो मिला शर्बत की चाशनी कर लें। २०-२० ग्राम दिन में ३ बार सेवन कराने से श्वास में लाभ होता है।

—वनौषधि विशेषांक भाग २ से।

(२९) नारियल की जटा को तवे पर भूनकर चूर्ण बना ४ रत्ती की मात्रा मे मधु के साथ चटाने से श्वास रोग में लाभ होता है।

(३०) नीमपत्र, बिजौरापत्र तथा पटोलपत्र इन तीनों में से किसी एक के पत्तों का क्वाथ कर उस क्वथित जल में मूग की दाल का यूप यथाविधि सिद्ध कर उसमें त्रिकटु चूर्ण और यवक्षार या अपामार्ग क्षार उचित मात्रा में अवचूर्णित कर सेवन कराने से श्वासरोग में लाभ होता है।

(३१) पारस पीपल के फल के रस में अथवा इसके वृक्ष को छेदने से जो दूध निकलता है उसमें कालीमरिच तथा हल्दी का चूर्ण मिलाकर २-२ रत्ती की गोलियां बना लें। इसकी १-१ गोली आवश्यकता के समय सेवन करने से दूषित कफ निकल कर श्वासरोग में लाभ हो जाता है।

(३२) पिप्पली चूर्ण को ८ प्रहर तक खरलकर मधु के साथ चटाने से श्वासरोग में विशेष लाभ होता है।

(३३) पुष्करमूल का चूर्ण, कचूर तथा आंवले का चूर्ण समभाग एकत्र कर शहद के साथ थोड़ा-थोड़ा दिन में ३-४ बार चटाने से कफ सरलता से निकलकर श्वास का वेग शमन हो जाता है तथा कास में भी लाभ होता है।

(३४) पुष्करमूल के चूर्ण को पिप्पली चूर्ण के साथ मिलाकर शहद में ४-६ रत्ती की मात्रा में सुबह-शाम चटाने से कफ निकलकर श्वासरोग में लाभ प्रतीत होता है।

—वनौ० वि० भाग ४ से।

(३५) वरुण के पत्तों की राख में दो गुना शहद मिलाकर १० ग्राम की मात्रा में चटाने से हर प्रकार के श्वास में लाभ होता है।

(३६) बहेड़े के फल का छिलका ५० ग्राम, लवङ्ग, अनार का छिलका, कत्था प्रत्येक २५ ग्राम, कालीमरिच १० ग्राम तथा कर्पूर ६ ग्राम सबको कूट-पीसकर रख लेवें इसमें से ६ ग्राम लेकर एक पत्थर या कांच की प्याली में, शहद २० ग्राम व अदरक का रस ६ ग्राम मिलाकर ७ बार में थोड़ा-थोड़ा चटाने से कास तथा श्वास में लाभ होता है।

(३७) बहेड़े के पक्व शुष्क फलों के ऊपर घृत चुपड़कर ऊपर से गेहूं का आटा जल में सानकर चारों ओर मोटा-मोटा लेप कर धीमी आग पर पकावें। ऊपर का आटा रोटी जैसा पक जाने पर निकालकर फलों की छाल के टुकड़े कर रखें। १-१ टुकड़ा मुख मे धारण कर चूसते रहने से कफ निकलकर कास तथा श्वास में शीघ्र लाभ होता है।

(३८) बहेड़े के फल का छिलका २०० ग्राम तवे पर रखकर धीमी अग्नि पर सेककर महीन चूर्ण कर लें उसमें १० ग्राम नौसादर (तवे पर सेका हुआ) का चूर्ण मिला खरल कर १-२ ग्राम की मात्रा में शहद के साथ प्रातः-सायं चटाने से श्वास में लाभ होता है।

(३९) बहेड़े के फलों का छिलका १ किलो लेकर ३ किलो जल में पकावें। २ किलो जल शेष रहने पर छानकर उस जल को एक मिट्टी की हांडी में भरकर

पुनः आग पर चढ़ाकर उसमें शुद्ध नीलाथोथा १० ग्राम, अडूसे का क्षार, अपामार्ग का क्षार तथा नागकेशर प्रत्येक १५ ग्राम एकत्र मिलाकर पोटली में बांधकर हांडी में लटका देवें। मटकी का सब जल शुष्क हो जाने पर पोटली को बाहर निकाल सुखाकर पीसकर शीशी में सुरक्षित रखें। ग्लूकोज या बताशे में ½ रत्ती पिपरमेंण्ट घोटकर उसमें उक्त क्षार ४ रत्ती मिलाकर प्रातः-सायं चटाने से श्वास में ७ दिन में लाभ हो जाता है।

(४०) बहेड़े के फलों के छिलके १ किलो लेकर महीन चूर्ण बना लें। फिर बबूल वृक्ष की अन्तरछाल, अपामार्ग पंचांग, कटेरी पंचांग १-१ किलो, मिलावा २०० ग्राम लेकर जौकुट कर १५ किलो जल में पकावें। जब गाढ़ा होने लगे तब उक्त बहेड़े का चूर्ण मिलाकर गाय या भैंस के घृत में अच्छी तरह सेककर उसमें कुटे हुये तिल आधा किलो तथा समानभाग बूरा मिलाकर २५ ग्राम के लड्डू बना लें। यह लड्डू बलानुसार गरम दूध से सेवन कराने से तमक श्वास में कुछ दिन में आशातीत लाभ देखने को मिलता है।

(४१) ब्रह्मदण्डी का स्वरस आग पर थोड़ा गरमकर (गुनगुना कर) थोड़ा-थोड़ा कर १० ग्राम तक चटाने से श्वास के वेग में आशातीत लाभ होता है। दौरा आसान हो जाता है और कफष्ठीवन आसानी से होता है।

(४२) गांजा १० ग्राम, तम्बाकू १५ ग्राम, सोरा १० ग्राम, सौंफ १० ग्राम, लोहबान कौड़िया ५ ग्राम सबको कूटकर चूर्ण कर लें। १ ग्राम चूर्ण चिलम में रखकर या आग पर रखकर धूनी देते हैं इससे श्वास के वेग में लाभ होता है।

(४३) भारङ्गीमूलत्वक् और सोंठ को समानभाग लेकर बनाया गया चूर्ण ३ ग्राम की मात्रा में गरम जल के साथ बार-बार सेवन कराने से दमा तथा खांसी में लाभ होता है। —वनौ० वि० भाग ५ से।

(४४) राई आधा ग्राम को घी, शहद में मिलाकर प्रातः-सायं देते रहने से कफ प्रकोप सह श्वासरोग शमन हो जाता है। यदि अपचन होकर श्वास का दौरा हुआ हो तो २-२ घण्टे पर राई देने से वेग शमन हो जाता है।

(४५) ४-८ ग्राम तक रीठे के छिलके का चूर्ण गरम पानी में क्वाथ करके पिलाया जावे तो अल्पकाल में ही वमन हो जाती है। पुनः गरम पानी खूब पिलायें जिससे पुनः वमन होकर संचित कफ वमन द्वारा बाहर निकल जाय। इस क्रिया से फुफ्फुसों में संचित कफ निकल जाने से श्वास का दौरा थम जाता है।

(४६) स्वर्णक्षीरी के पंचांग का अर्क प्रातः-सायं १०-१० ग्राम एक माह पर्यन्त पथ्यापथ्य का विशेष विचार कर लेने तथा खाद्य पदार्थ के साथ प्रतिदिन ६० ग्राम घृत अवश्य देते रहने से श्वास में लाभ होता है।

(४७) सर्पगन्धा चूर्ण १५ रत्ती की मात्रा में सुबह-शाम जल के साथ लेने से श्वास के रोगी को आराम पहुँचता है। दमा शुरू होते ही इसको शहद के साथ चटाना चाहिये।

(४८) श्वासरोग में समुद्रफल तथा सफेद गोकर्णी के मूल ६-६ ग्राम को दूध में पीसकर पिलाया जाता है इससे वमन विरेचन होकर श्वासावरोध दूर हो जाता है।

(४९) कफ प्रधान श्वासरोगी को नागरबेल के पान के साथ हारसिंगार की छाल २-२ रत्ती दिन में ३ बार देते रहने से कफ का ह्रास हो जाता है और श्वास के वेग में शान्ति हो जाती है।

(५०) हेमकन्द का चूर्ण शक्कर के साथ देने से कफ शिथिल होकर सरलता से निकल जाता है। कफ प्रधान तमक श्वास में इसका अर्क पिलाने या १॥-१॥ ग्राम १-१ घण्टे तक २-३ बार निवाये जल के साथ देने से लाभ होता है। —वनौ० वि० भाग ६ से।

(५१) सोंठ, कालीमरिच, छोटी पीपर तथा भुना सुहागा इनको बराबर-बराबर लेकर पीस छान लें। फिर पान के रस में खरल करके १-१ रत्ती की गोलियां बना लें। १-१ गोली दिन में ३-४ बार खाने से श्वास तथा कफ नष्ट हो जाता है।

(५२) कंटकारी, अडूसा, छोटी पीपर, सोंठ, धाय के फूल, पोस्त के डोंडे तथा बबूल की छाल इनको ३-३ ग्राम लेकर कुचल लें और २५० ग्राम पानी में क्वाथ बनावें

चतुर्थांश रहने पर छानकर ३-४ ग्राम शहद मिलाकर सुबह-शाम पिलाने से श्वासवेग में लाभ होता है।

(५३) बंगला पानों का रस आधा किलो, अदरक का स्वरस आधा किलो, अनार का रस आधा किलो, छोटी पीपर ७० ग्राम तथा कालीमरिच ५० ग्राम सबको मिला लें और उत्तम बूरा डालकर चाशनी कर लें और शर्वत बना लें। सुबह-शाम १०-१० ग्राम शर्वत चटाने से सब प्रकार के श्वास-कास में लाभ होता है।

(५४) आक के फूल ६ तथा कालीमरिच ६ इन दोनों को पीसकर चने समान गोलियां बना लें। दिन में २-३ गोली खाने से कफ की अधिकता वाले श्वासरोग में लाभ हो जाता है।

(५५) भटकटैया के पंचांग को छाया में सुखाकर पीस छान लें। इस चूर्ण में से ४ या ६ ग्राम चूर्ण लें उसमें रससिन्दूर मिला लें और दोनों को ६ ग्राम शहद में मिलाकर चाटें तो श्वास में लाभ होता है।

(५६) हरड़ बहेड़े के बक्कुल, बिना बीज के आंवले, सोंठ, देवदारु, छोटी पीपर, वच, कालीमरिच, नागबला इनको समानभाग लेकर पीस छान लें फिर इस चूर्ण का १८ घण्टे तक काले धतूरे के रस में १८ घण्टे तक भांगरे के रस से खरल करें और १-१ रत्ती की गोलियां बना लें। सुबह शाम तथा सोते समय १-१ गोली खाने से श्वास तथा कफ विकार नष्ट हो जाते हैं।

(५७) रविवार के दिन सुबह छोटी दुद्धी लाकर उसमें से ६ ग्राम तोल लें और सफेद जीरा ३ ग्राम ले लें। दोनों को सिल पर पीसकर पानी में घोल लें और रोगी को पिला दें। उस दिन केवल एक बार दही में चिउड़ा भिगोकर इच्छानुसार सेवन करावें। इसके बाद सोमवार को दवा न खावें। मंगल को पुनः इसी तरह दवा सेवन करें और दही चिउड़ा खावें। फिर बुध, बृहस्पति, शुक्र तथा शनि को दवा न खावें। फिर रविवार को इसी तरह दवा खावें और दही चिउड़ा का भोजन करावें इस तरह केवल ३ दिन दवा खाने से पुराने से पुराना दमा निश्चय चला जाता है।

(५८) आग पर फुलाई हुयी फिटकरी २० ग्राम तथा मिश्री २०० ग्राम दोनों को पीसकर रख लें। १-२ ग्राम सुबह-शाम सेवन करने से श्वासरोग चला जाता है।

(५९) मदार की जड़ ३० ग्राम, अजवायन २० ग्राम, गुड़ ५० ग्राम सबको पीसकर जंगली बेर के समान गोलियां बना लें। हर दिन सुबह २-२ गोलियां खाने से दमा या श्वास चला जाता है।

(६०) थूहर का मोटा डण्डा लाकर उसे एक तरफ से पोला करलें फिर उसमें ६० ग्राम फिटकरी भर दें और मुंह बन्द करके कपरौटी कर दें। फिर कण्डों की आग में डण्डे को रखकर जला दें। आग शीतल होने पर डण्डे से फिटकरी निकाल लें। उसमें से २ रत्ती रोज पान में रख कर खाने से १५-२० दिन में दमा चला जाता है।

(६१) कायफल, सोंठ, पोहकरमूल, काकड़ासिंगी, भारङ्गी, छोटी पीपर बराबर-बराबर लेकर पीस छान लें। इसे ३-६ ग्राम की मात्रा में शहद में मिलाकर चाटने से श्वास तथा कास में विशेष लाभ होता है।

(६२) छोटी पीपर ४॥ ग्राम, कालीमरिच ४॥ ग्राम, काकड़ासिंगी २ ग्राम, सफेद सज्जी १ ग्राम, अफीम ४ रत्ती इनको कूट-पीसकर अदरक के रस में खरल करें और जंगली बेर समान गोलियां बना लें। सुबह-शाम १-१ गोली खाने से श्वासरोग में लाभ होता है।

(६३) अकरकरा, कालीमरिच, अनार के छिलके, अजमोद, अडूसे के पत्ते, छोटी कटेरी की जड़, बबूल की छाल, सज्जी, लाहौरीनमक, सांभरनमक सबको १-१ ग्राम लें और शुद्ध अफीम २ ग्राम लें। सुबह पीस-छानकर अदरक के रस में खरल करें और चने समान गोलियां बना लें। १-१ गोली मुंह में रखकर चूसते रहने से खांसी तथा श्वास में लाभ हो जाता है।

(६४) गुलबनफसा ६ ग्राम, छिली मुलहठी ४ ग्राम, बीज निकाले उन्नाव ६ ग्राम, अलसी ६ ग्राम, मिश्री १० ग्राम इन सबको कुचलकर २५० ग्राम पानी में मिट्टी की हांडी में पकावें जब आधा पानी शेष रहे तब मल छान-कर पिला दें। इसी तरह सुबह-शाम दोनों समय पिलाने से श्वासरोग में लाभ हो जाता है।

—चिकित्सा चन्द्रोदय से।

(६५) गोदन्तीहरताल ४० ग्राम, मदनफल ८ नग, तम्बाकू २० ग्राम, कदलीक्षार १० ग्राम लें। पहले मदन-

फल को जल में घोटकर गोदन्ती के टुकड़ों पर लेप करें फिर एक उपले में गड्ढा करके उसमें मैनफल लगे टुकड़े रख देवें। पीछे ५ किलो उपलों में रखकर अग्नि लगा दें। भस्म तैयार होने पर इसमें कदलीक्षार तम्बाकू मिलाकर महीन पीसकर रख लें। ३ रत्ती की मात्रा पान के रस में डाल-कर शहद मिलाकर दें। श्वास में अत्यन्त लाभ कर योग है। —कवि० विद्याधर शर्मा द्वारा धन्वन्तरि सिद्ध प्रयोगांक से।

(६६) छोटी पीपर, शुद्ध कुचला, कालीमरिच तीनों समभाग लें और कपड़छन करके रखलें इसमें घृतकुमारी का रस मिलाकर तीन दिन घोटकर चने बराबर गोली बना लें। १ गोली ६० ग्राम गोघृत के साथ ५-१० दिन तक सेवन कराने से श्वास, पार्श्वशूल में लाभ हो जाता है। —पं० सोमदेव शर्मा द्वारा अनु० चिकित्सांक से।

(६७) उत्तम ताम्रभस्म ६ ग्राम, मकरध्वज ६ ग्राम खरल में पीसकर १-१ रत्ती की मात्रा बना लें। शहद के साथ सुबह-शाम सेवन कराने से जीर्णश्वास में लाभ करता है।

(६८) शुद्ध मीठा विष ६ ग्राम, शुद्ध अफीम ६ ग्राम, धतूरा बीज ३ ग्राम, तम्बाकू की पत्ती ३ ग्राम लेकर पानी में खूब घोटकर सरसों के बराबर गोली बना लें। १-३ गोली तक बंगलापान में रखकर सेवन कराने से श्वास का वेग रुक जाता है। —गंगादेवी राजवैद्या द्वारा धन्वन्तरि अनुभूत प्रयोगांक से।

(६९) अपामार्ग पंचांग, सुहागा, गुलाबी फिटकरी १०-१० ग्राम बारीक पीसकर फूंक लें ३-३ रत्ती पान में रखकर नित्य चूसने से श्वास का वेग शान्त हो जाता है। —सेठ आनन्दीलाल जैन द्वारा धन्वन्तरि अनुभूत प्रयोगांक से।

(७०) सेंधव को आक के दूध में जितनी घुटाई हो सके करनी चाहिये जितना आक का दूध अधिक पचन होगा उतना अधिक लाभ होगा। पूर्णतया गरल होने पर १०-१० ग्राम की टिकिया बनाकर धूप में सुखा लें। सूख जाने पर शराव सम्पुट में रखकर गजपुट में फूंकना चाहिये। घुटाई करके बोतल या शीशी में भरकर रख लें। १ रत्ती मात्रा में पान के स्वरस और शहद के साथ दिन में २ बार सेवन कराने से श्वासरोग में लाभ होता है। —अमृतलाल शर्मा द्वारा अनुभूत प्रयोगांक से।

(७१) अपामार्ग की जड़ १० ग्राम, कालीमरिच २ अदद, जीरा स्याह २ अदद कपड़छानकर रख लें यह एक मात्रा है यह औषधि साल में केवल २ बार सेवन की जाती है अर्थात् (फागुन सुदी पूर्णमासी तथा असाढ़ शुदी पूर्णमासी) इन दोनों दिनों के अलावा इस दवा के सेवन से लाभ नहीं होता। यदि किसी कारण एक बार दवा खाने से लाभ न हो तो विश्वास के साथ ६ माह के बाद पुनः सेवन करें।[1] —कवि० बी० एन० शर्मा द्वारा धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(७२) पुराने बाजरे को थूहर के दूध की ७ भावना देवें। लटजीरा के बीज तथा सांभरनमक इन दोनों में अर्क दुग्ध की अलग-अलग सात भावनायें देकर छाया में सुखा लें। फिर एक हांडी में कुमारी का गूदा २ पर्त बिछाकर ऊपर थूहर भावित बाजरा फिर कुमारी का गूदा, फिर लटजीरा फिर गूदा इसके अन्दर सांभरनमक फिर ऊपर से गूदा देकर हांडी के ऊपर पारा ढांककर कपड़-मिट्टी कर गजपुट में फूंक दें। शीतल हो जाने पर हांडी खोलकर दवा निकालकर रख लें। १-२ रत्ती की मात्रा में बंगलापान में डालकर २-३ बार सेवन करावें। इसके

१. सेवन विधि—फाल्गुन शुदी पूर्णमासी या आषाढ़ सुदी पूर्णमासी की रात्रि को ९-१० बजे ५० ग्राम बढ़िया पुराने चावल की १ किलो गाय के दुग्ध में खीर, मिट्टी, कलई या चांदी के बर्तन में तैयार करें। दवाई खीर में मिलाकर खीर, केले, कमल, ढाक के पत्ते पर या चांदी, सोने, कांसे के थाल में डालकर किसी पवित्र स्थान में चन्द्रमा की चांदनी में रख दें। चार पांच घण्टे बाद शुद्ध होकर रोग दूर होने की ईश्वर से प्रार्थना करके और मन में यह विचार करके कि इस औषधि से मुझे अवश्य आरोग्यता प्राप्त होगी, खीर खावें। ईश्वर की कृपा से अवश्य लाभ होगा। यही औषधि चित्रकूट पर इन दोनों समय पर बांटी जाती है।

सेवन से दमा में निश्चित लाभ होता है इस योग को हमें एक संन्यासी महात्मा जी ने चित्रकूट में बताया था तब से मैं इसका प्रयोग अनेक रोगियों पर कर चुका हूँ।

(७३) अपामार्ग भस्म १०० ग्राम, शुद्ध तबकी हरताल, मल्लभस्म, गृहधूम १०-१० ग्राम सबको मिलाकर भस्म करें फिर शुद्ध कुचला २०० ग्राम मिला देवें और प्रवालभस्म १० ग्राम (सेंहुड दुग्ध पुटित) मिलाकर रख लें। १-२ रत्ती तक मधु से लेने पर श्वास में शीघ्र लाभ होता है।

(७४) धतूरे के पत्र शुष्क, मैनशिल, हरताल तबकी, मुलहठी, जटामांसी, नागरमोंथा, इन्द्रायण मूल प्रत्येक ६०-६० ग्राम। इन औषधियों का चूर्ण बनाकर चिलम में रखकर पीवें अथवा बीड़ी बनाकर पीवें तो श्वास में लाभ होता है। —पं० शान्तिस्वरूप मिश्र द्वारा धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(७५) नमक सातों व नौसादर समानभाग लेकर रोहू मछली की खोपड़ी में रखकर कपरौटी कर फूंक दें २४ घण्टे की अग्नि दें। १-१ रत्ती लगे पान में डालकर जिसमें सुपारी न पड़ी हो देना चाहिये। २१ दिन में श्वास समूल नष्ट हो जाता है। —श्री कौशिक वैद्य द्वारा धन्वन्तरि अप्रैल १९४१ से।

(७६) पिपरमेंण्ट, सत्व अजवायन, कर्पूर, वासाक्षार समानभाग शहद सबसे दुगुना लेकर एक शीशी में सबको एकत्र कर मिश्रित करें और एक लगे पान में सींक से लगाकर सेवन करावें तो श्वास का वेग थम जाता है।

—वैद्य मुन्नालाल गुप्त द्वारा धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(७७) बहेड़े का छिलका २५० ग्राम, नौसादर का फूला १० ग्राम, सोनागेरू ६ ग्राम। प्रथम बहेड़े के छिलकों को खूब बारीक पीसकर छान लें तथा ऊपर से नौसादर और गेरू मिला दें। ३-३ ग्राम दवा सुबह, शाम शहद के साथ खिलाने से श्वास रोग में लाभ होता है।

—धन्वन्तरि गुप्त सिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(७८) तुतिया [नीलाथोथा] १० ग्राम तबकी हरताल १० ग्राम, मुर्दासंग १० ग्राम। इन तीनों को ग्वारपाठे के रस में घोटकर छोटी-छोटी टिकिया बना सुखा लें और दो सकोरों में बन्द कर कपड़मिट्टी करके गजपुट में फूंक दें। स्वांगशीतल होने पर निकाल उसे खूब महीन पीसकर रख लें। शहद के साथ दिन में दो बार १-१ रत्ती चटाने से श्वास में लाभ होता है।

—पं० बिहारीलाल मिश्रा द्वारा गुप्त सिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(७९) थूहर, नागफनी के पके फल लाकर जो लाल हों, उनका रंग निकालें और उस रंग में मिश्री डालकर सीरा बना लें। फिर उस सीरा में कुटकी का चूर्ण ६ रत्ती मिलाकर खाने से श्वास का दौरा शीघ्र ही रुक जाता है। —ईश्वरीप्रसाद शर्मा द्वारा गुप्त सिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(८०) शुद्ध आंमलासार गन्धक १० ग्राम, अडूसा के बीज २० ग्राम, नकछिकनी १० ग्राम। इन तीनों को पीसकर २ भावना पान के अर्क की २ भावना अदरक के रस की देवें, फिर घोटकर सफूफ कर लें। ४ रत्ती से १ ग्राम तक शहद में चटाने से श्वास में लाभ होता है।

—वैद्य बचानसिंह द्वारा गुप्त सिद्ध प्रयोगांक द्वितीय भाग से।

(८१) लाल फिटकरी ५० ग्राम, सेंधानमक ५० ग्राम लेकर पीस लें। फिर एक मिट्टी की हांडी में आक का दूध १½ किलो डालकर उसमें ऊपर वाली दवा मिलाकर उसके मुख पर ढक्कन रख उसे कपड़मिट्टी से अच्छी तरह बन्द करके सुखा लें और उसे गजपुट में रखकर अग्नि लगा दें। जब अग्नि शान्त हो जाय और हांडी बिलकुल ठण्डी हो जाय, तब इसमें से दवा निकाल बारीक पीसकर शीशी में भर रख लें।

सेवन विधि—पूर्णिमा के दिन रात्रि को रोगी से कहना चाहिए कि वह जितना खा सके उतनी खीर पका ले। फिर खीर तैयार होने पर उसमें १२ रत्ती १२ पहरी पीपल मिलाकर उसे ३ घण्टे तक चांद की चांदनी में रखा रहने दें। इसके पश्चात् उपरोक्त दवा में से २ रत्ती दवा खिलाकर वह खीर खिला दें और रोगी से कहें कि कल सुबह जितनी दूर जा सके, घूम आवे और ३ माह तक तैल, खटाई और बादी की चीजों से परहेज रखें।

इसी प्रकार प्रत्येक पूर्णिमा को ३ मास तक दवा खिलाने से श्वास रोग में स्थायी लाभ हो जाता है।

—वैद्य आई० आई० शेख द्वारा

गुप्त सिद्ध प्रयोगांक द्वितीय भाग से।

(८२) शुद्ध पारद १० ग्राम, शुद्ध गन्धक १० ग्राम, काले धतूरे के बीज १० ग्राम लें। पहले पारद, गन्धक की कज्जली कर लें। फिर इस कज्जली में धतूरे के बीजों के चूर्ण को मिलाकर आर्द्रक के रस में ३ पहर घोटें। इसके पश्चात् सुखाकर रख लें। मधु तथा घृत के साथ १-२ रत्ती तक की मात्रा में देने से सभी प्रकार की श्वास में लाभ हो जाता है।

—स्वामी ईश्वरदास शास्त्री द्वारा

गुप्त सिद्ध प्रयोगांक द्वितीय भाग से।

(८३) अदरक का रस, प्याज का रस, लहसुन का रस, ग्वारपाठा का रस, शुद्ध मधु, पान का रस प्रत्येक ३०-३० ग्राम। उक्त सब रसों तथा मधु को लेकर एक कर लें। कांच की बोतल में भर लें और डाट लगा हिलाकर मिला लें तथा १ फुट गड्ढा खोदकर जमीन में गाड़ दें। १५ दिन बाद निकाल रोगी को १०-१५ ग्राम की मात्रा में सुबह, दोपहर, शाम को पिलाने से दमा रोग में कुछ दिन सेवन करने से छुटकारा मिल जाता है।

—वैद्य शिवनरेश पाठक द्वारा

गुप्त सिद्ध प्रयोगांक तृतीय भाग से।

(८४) सोडाबाई-कार्ब १६ रत्ती और संखिया २ रत्ती मिलाकर खूब पीस लेवें। एकजीव हो जाने पर १-१ रत्ती की १८ पुड़ियां बना लें। सुबह, शाम १-१ पुड़िया शीतल जल के साथ देवें। यह ९ दिन की दवा है। पूरा लाभ न होने पर २ सप्ताह के बाद फिर इसे लेना चाहिए। इसके सेवनकाल में घी में भुना दलिया खाना चाहिए। नमक न रहे, यह ध्यान रखना चाहिए।

—आचार्य नित्यानन्द शास्त्री द्वारा

गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(८५) श्वेत मल्ल १ ग्राम, उत्तम वंशलोचन १० ग्राम, उत्तम सफेद कूंजा की मिश्री १० ग्राम। सबको २४ घण्टे निरन्तर खरल करके शीशी में भर रख लें। १-२ रत्ती तक शहद में अथवा मलाई, मिश्री में मिलाकर प्रातः, सायं चटाने से श्वास में लाभ होता है।

—पं० उमादत्त शर्मा द्वारा

गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(८६) दूद्धी ६ ग्राम, जीरा सफेद ३ ग्राम पानी में पीस एक गिलास जल में छानकर रोगी को मंगलवार या इतवार को पिला दें। कुछ दिनों में दमा जड़ से मिट जाता है।

(८७) अर्जुन वृक्ष की छाल ६ ग्राम, गाय के दूध की खीर २५० ग्राम में मिलाकर शरद्पूर्णिमा की चांदनी रात में खुले में रख दें। रातभर रोगी को जगाकर ४ बजे रात को स्नान कराके खिलावें तो दमा से हमेशा के लिए छुटकारा मिल जाता है। चित्रकूट में शरद् पूर्णिमा के दिन हजारों रोगी इसी औषधि से लाभ उठाते हैं।

—पं० वैनीप्रसाद शर्मा द्वारा

गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(८८) दीमक के छत्ते को संग्रह करके एवं सुखाकर अच्छी तरह स्वच्छ कर लें। पश्चात् अर्ध सम्भाग मात्रा में अग्निसंस्कार रहित अर्थात् कच्चा तथा इतनी ही मात्रा में अग्निसंस्कारित अर्थात् जलाया हुआ (राख) को लेकर दोनों को समभाग में ही कूट-पीसकर तथा छानकर ५० ग्राम में १० ग्राम परिमाण के हिसाब से कालीमरिच मिला दें। बस सुन्दर श्वासारि योग बनकर तैयार हो गया। आवश्यकता पड़ने पर श्वास पीड़ित रोगी को शक्ति, बल के अनुसार बाल एवं वृद्ध का विचार कर २-४ रत्ती तक शहद में मिलाकर प्रातः, सायं दोनों समय व्यवहार करानी चाहिए। २१ या ३० दिन तक परहेज से रहना चाहिए।

(८९) कुचला ५० ग्राम लेकर कढ़ाही में घृत डाल मन्दाग्नि से जला लें। पश्चात् पीसकर चूर्ण कर लें और उसमें सोंठ, कालीमरिच, पीपर, सुहागे का फूला, दालचीनी प्रत्येक १०-१० ग्राम, इन सबको बारीक पीसकर उक्त चूर्ण में मिला रख लें। आवश्यकता पड़ने पर ४ रत्ती एफेड्रीन हाइड्रोक्लोर में ५ रत्ती चूर्ण मिश्रित करके रोगी को ताजी पानी से प्रातः, सायं ७ दिन तक सेवन कराने से श्वास में अवश्य लाभ होता है।

(९०) मुलहठी २०० ग्राम, अपामार्ग क्षार २०० ग्राम दोनों को मिलाकर खरल करें, थोड़े जल के छींटे भी लगा सकते हैं। अवलेह रूप हो जाने पर एक केले के फूल पर लेप कर दें (फूल न दीखे) और गजपुट में फूंक दें। स्वांग-शीतल होने पर निकालकर पीस लें। १ रत्ती की मात्रा में पान में रखकर ४१ दिनों तक सेवन कराने से श्वास रोग में लाभ होता है। —पं० अश्विनीकुमार शर्मा द्वारा गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(९१) मल्लसिन्दूर १० ग्राम को खरल करके उसमें स्वर्ण भस्म १० ग्राम मिलाकर घोटें। एकजीव हो जाने पर अभ्रक भस्म १० ग्राम, लौह भस्म २० ग्राम मिलाकर घोटें। जब खूब घुट जाय, तो उसमें कालीमरिच तथा छोटी पीपल के दाने बारीक पिसे और छने हुए डालकर घोटें। फिर पानों के छने स्वरस तथा आर्द्रक स्वरस से १-१ दिन घोटकर १-१ रत्ती की गोलियां बना लें। प्रातः, सायं १-१ गोली तुलसीपत्र स्वरस १० से ६० ग्राम के साथ सेवन कराने से ईसोनोफिलजन्य श्वास रोग में लाभ होता है। —स्वर्गीय पं० रामस्वरूप शर्मा उखलाना द्वारा सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(९२) १२० ग्राम भर्जित अलसी गरम-गरम पीस लें। ६० ग्राम पोस्तदाना कूट-पीस लें और ६० ग्राम बादाम गिरी पीस लें। २० ग्राम धनियां के बीज पीस लें। सबको ५०० ग्राम मधु में मिलाकर शीशी या चीनी के पात्र में रख लें। २० ग्राम की मात्रा में दिन में ३-४ बार चटाने से श्वास रोग में जब श्वास लेने में अत्यन्त कष्ट हो, कफ निकलने में कठिनाई हो, लाभ होता है। दौरे की स्थिति में १०-१० ग्राम २-३ घण्टे के अन्तर से देना चाहिए। रोगशमन होने लगे, तब समय में अन्तर कर देना चाहिए।

(९३) सोमकल्प चूर्ण ३ ग्राम, छोटी इलायची के दाने १ ग्राम, असली दालचीनी ४ रत्ती, तेजपात १ ग्राम, लौंग १ ग्राम, ६ औंस जल, दूध तथा शक्कर आवश्यकतानुसार चाय की तरह निर्माण कर और छानकर पिलाने से श्वास रोग में लाभ होता है।

—श्री योगेन्द्रदत्त त्रिपाठी द्वारा सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(९४) विशुद्ध हरिद्रा चूर्ण [जितनी बारीक हो सके] अच्छे देशी घी में लाल-लाल भूनकर उतार लेनी चाहिए। उसे कैपसूलों में ४-४ रत्ती की मात्रा में भरकर रख लेना चाहिए। वातोल्वण श्वास रोग में दिन में आवश्यकतानुसार २-२ कैपसूल ३-६ बार तक गाय के घृत व गरम जल के साथ प्रयोग कराना चाहिए। पित्तानुबन्ध हो तो थोड़े गर्म दुग्ध के साथ प्रयोग कराना चाहिए। जहां कफ का स्राव अधिक हो, वहां कण्टकारी मूल के क्वाथ के साथ प्रयोग कराना चाहिए। इससे श्वास रोग में विशेष लाभ मिलता है। यह मेरा शासकीय आयुर्वेद महाविद्यालय ग्वालियर में अनुसन्धानित योग है।

—कविराज एस० एन० बोस द्वारा सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(९५) कलिहारी कन्द १०० ग्राम, बिना घुनी (क्वार कार्तिक में खोदी हो तो अधिक उत्तम है) लेकर उसका बारीक चूर्ण कर लें। इस चूर्ण को ५० ग्राम घी में कढ़ाही में डालकर खूब भून लें। जब वह लाल हो जाय और एक विशेष प्रकार की गन्ध देने लगे; तब उतार लें और शीशी में भरकर रख लें। इस चूर्ण में से ½ रत्ती से २½ रत्ती तक वय एवं प्रकोप के अनुसार शहद, कबाबचीनी चूर्ण या जल के साथ कुछ दिनों तक सेवन कराने से अपने उष्ण और तीक्ष्ण गुण के कारण क्रियाकर रेचन द्वारा कफ को निकालता है। —डा० सिद्ध गोपाल पुरोहित द्वारा सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(९६) कटु [कडुआ] तैल तथा पुराना गुड़ इन दोनों को समान भाग मिलाकर अवलेह की तरह बना २-२ ग्राम की मात्रा में दिन में ४ बार तक चटाने से श्वास रोग में लाभ होता है। औषधि सेवन के तुरन्त बाद ठण्डा जल रोगी को न पीने दें। दमे का दौरा बहुत तीव्र होने पर अवलेह जल्दी-जल्दी चटाया जा सकता है। जिससे रोगी को दौरे में शीघ्र आराम होता है।

—डा० वेदप्रकाश शर्मा द्वारा सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(९७) पीपल के कोमल पत्तों का छाया शुष्क चूर्ण २ रत्ती, वासापत्र चूर्ण १ रत्ती, मृगशृङ्ग भस्म १ रत्ती,

श्वासकुठार रस १ रत्ती, सितोपला चूर्ण २ रत्ती, वांसावलेह एवं मधु समभाग में मिलाकर सुबह, दोपहर, शाम चटाने से श्वास रोग में लाभ होने लगता है।

(९८) यवक्षार, अर्कक्षार दोनों २-२ रत्ती, पीपर, सेंधव लवण, काकड़ासिंगी, लवंग, पोहकरमूल प्रत्येक ५-५ ग्राम, अडूसा के पत्ते १० ग्राम। उपरोक्त अष्ट द्रव्यों के सूक्ष्म चूर्ण को तुलसी एवं नागरवेल के पान स्वरस की ४-५ भावनायें देकर मूंग के प्रमाण की गोलियां बना लें। दिन भर में ८-१० बार २-२ गोली मुंह में डालकर चूसने से श्वास रोग में लाभ होता है। दौरे के समय भी २-२ गोली चूसने से श्वासवेग थम जाता है।

—वैद्य जवरी व्यास द्वारा सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(९९) मदार के फूल १० ग्राम, छोटी पीपर ५ ग्राम, कटेरी पुष्प १० ग्राम, मूलहठी सत्व १० ग्राम। चारों द्रव्यों को बारीक पीसकर धूप में सुखा लें। तत्पश्चात् उचित मात्रा में शहद के साथ घोटकर गोलियां बना लें। दौरे के समय २ गोली गुनगुने पानी के साथ निगल लें। कुछ क्षणों में श्वास का दौरा शान्त हो जाता है।

—वैद्य चन्द्रभूषण पाण्डेय द्वारा
सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(१००) टंकण भस्म २ ग्राम, मुलहठी चूर्ण २ ग्राम, प्रवाल चन्द्रपुटी ½ ग्राम, सत् गिलोय २ ग्राम, मृगशृङ्ग भस्म ½ ग्राम, घृतभृष्ट हरिद्रा २ ग्राम, सितोपला चूर्ण २ ग्राम, आंवले का चूर्ण २ ग्राम, उप . औषधियों का मिश्रण करें तथा इसकी ४ मात्रायें बना लें। यह १ दिन की वयस्क पुरुष की मात्रा है। इसे शहद के साथ चटाना चाहिए। इसके साथ कनकासव २-२ चम्मच, ४ चम्मच शीतल जल में मिलाकर सेवन कराने से श्वास रोग में लाभ होता है। —श्री रूपनारायण कोठारी द्वारा
सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(१०१) वतरा सोंठ, नारियल फल का छिलका, ताड़ का नेड़ा [कुछ पुरुष जातीय ताड़ के वृक्ष में इस प्रकार का लम्बा-सा लगता है], कटहल का नेड़ा [कटहल फल के मध्य में यह रीढ़ के सदृश डण्ठल से लगा रहता है]। इन चारों को बराबर की मात्रा में लें। अब वतरा सोंठ को अच्छी तरह सुखाकर कूट-कपड़छन कर लें। शेष तीन वस्तुओं को मन्द अग्नि में जलाकर भस्म कर लें। अब भस्म और चूर्ण दोनों को मिला दें। ३ ग्राम की मात्रा में दवा सुबह, शाम ठण्डे जल के साथ सेवन कराने से दमा के प्रबल वेग का शमन होता है तथा २ माह तक इसका सेवन कराने से स्थायी लाभ होता है।

—वैद्य निरंजनपुरी द्वारा सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(१०२) शुद्ध कृष्णांजन १० ग्राम, रेशम की राख १० ग्राम, हुक्के की गुल की भस्म १० ग्राम। (चिलम के अन्दर की जली हुई तम्बाकू की गुली) को लेकर पुनः निर्धूम अंगार पर रखकर जला लें। ठण्डी हो जाने पर खरल में घोट लें तथा रेशम को भी जला लें और कृष्णांजन को भी खरल कर लें। बाद में तीनों चीजों को पृथक्-पृथक् शीशी में रख लें। तीनों शीशियों में से १-१ रत्ती औषधि लेकर २ मात्रा बना प्रातः, सायं खिलाने से श्वास रोग में लाभ होता है।

—पं० छेदालाल शर्मा द्वारा
सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(१०३) स्वर्णक्षीरी के दूध का घनसत्व ५० ग्राम, श्वेत राल २० ग्राम, लगभग ५ वर्ष का पुराना गुड़ ५० ग्राम। तीनों को खरल करके २-२ रत्ती की गोलियां बना रख लें। दिन में ३ बार उष्णोदक से सेवन कराने से श्वास रोग में शीघ्र लाभ होता है।

—वैद्य कृष्णप्रसाद त्रिवेदी द्वारा
प्रयोग मणिमाला से।

(१०४) महायोगराज गुग्गुल ४ से ८ रत्ती तक धूम्रपान कराने से तत्काल श्वास का दौरा शमन हो जाता है। आवश्यकता पर एक घण्टा बाद फिर से दूसरी बार धूम्रपान कराना चाहिए।

(१०६) छाया में सुखाई गयी अडूसे की पत्ती ४ भाग, छाया में सुखाई गयी धतूरे की पत्ती, भांग, काली मरिच, खुरासानी अजवायन की पत्ती प्रत्येक २-२ भाग लें। सबको कूटकर मोटा चूर्ण बना कलमी शोरे के तृप्त द्रव में [कलमी शोरे को जल में मिलाकर घोल करें, जब उसमें और अधिक शोरा न घुल सके, तब उस घोल को तृप्त द्रव कहते हैं] भिगोकर छाया में सुखा लें। आवश्यकतानुसार इसकी मोटे कागज में बीड़ी बनाकर धूम्रपान

कराने से श्वास का वेग तत्काल रुक जाता है। छाती में घबराहट दूर हो जाती है और कफ सरलता से बाहर निकल जाता है। —रसतन्त्रसार द्वितीय भाग से।

(१०६) तम्बाकू क्षार, हरमल क्षार, अर्क क्षार, गुड़ जलाया हुआ चारों चीजों को सममाग लेकर खूब अच्छी तरह खरल करके सुरक्षित रख लें। प्रातः, सायं १/२-१/२ रत्ती दवा उचित अनुपान के साथ सेवन कराने से श्वास रोग में लाभ होता है। —अनुभूत योग प्रकाश से।

(१०७) रससिन्दूर १ भाग तथा सोमचूर्ण २० भाग लें। प्रथम रससिन्दूर को खूब महीन पीसकर उसमें सोम का कपड़छन चूर्ण मिला एक दिन मर्दन करके शीशी में भर लें। ५-१० रत्ती अकेली या अभ्रक भस्म, भागोत्तर वटी अथवा चन्द्रामृत रस के साथ मिलाकर सेवन कराने से श्वास में तात्कालिक वेग में शीघ्र लाभ होता है। —सिद्ध योग संग्रह से।

(१०८) अर्कपर्णी की लगभग ३ से ५ इञ्ज तक लम्बी हृष्ट-पुष्ट पत्तियों का संग्रह कर लें एवं रोगी की अवस्था, बल के अनुसार पत्रवृन्त को तोड़कर प्रातःकाल कुछ खाने से पूर्व एक पत्र को पान की तरह चबाना चाहिए। रोगी जब सम्पूर्ण रस निगल जावे, तो ऊपर से कुछ गुनगुना पानी उसे पिला देना चाहिए। रोगी को इसके बाद १/२ घण्टा तक आराम से लिटा देना चाहिए। यही प्रयोग ७ या ६ दिन तक कराना चाहिए।

इसके प्रयोग से रोगी को २-३ वमन हो सकती हैं और बेचैनी सी कुछ देर तक हो सकती है। कभी मुख-पाक [छाले] हो सकते हैं। ऐसी दशा में रोगी को घबराना नहीं चाहिए, यह लक्षण स्वयं शान्त हो जाते हैं। इस प्रयोग से दमा रोग में निश्चित रूप से लाभ देखने को मिलता है।• —श्री मायाराम उनियाल द्वारा हृदय फुफ्फुस रोग चिकित्सांक से।

[आ] अनुभूत एवं परीक्षित प्रयोग

(१) **श्वासरोगारि अवलेह**—अडूसा (वांसा) का रस, कटेरी का रस, भांगरे का रस, तीनों २००-२०० ग्राम, मिश्री ३२० ग्राम, पीपर, गाय का घृत ८०-८० ग्राम एकत्र कर मन्दाग्नि पर पकावें। जब आधा अवलेह बन चुके तब नीचे लिखी वस्तुएं भी उसमें मिला दें—मुलहठी, सुहागा, वंशलोचन, अनार के छिलके, बहेड़े का बक्कुल पांचों २००-२०० ग्राम, काकड़ासिगी ४० ग्राम, कायफल, अकरकरा, तालीसपत्र, १००-१०० ग्राम, अदरक का रस ५० ग्राम। अब पूर्ण अवलेह तैयार करें। जब ठण्डा हो जाय तब शहद ३२० ग्राम मिलाकर चीनी या कांच के पात्र मे रख दें।

मात्रा—६-६ ग्राम प्रातः-सायंकाल सेवन करावें।

• **अर्कपर्णी तथा श्वास रोग**—आयुर्वेदिक ग्रन्थों में टायलोफोरा इण्डिका नामक बूटी किस नाम से जानी जा सकती है, यह प्रश्न विद्वानों के समक्ष आ सकता है। लेखक के विचार से यह वनस्पति संहितोक्त अर्कपर्णी है जिसका कि उल्लेख सुश्रुत ने कल्प स्थान आठ में किया है, जो विषघ्न है। जामनगर आयुर्वेद विश्वविद्यालय मे इस बूटी पर शोधकार्य किया गया तथा यह निष्कर्ष निकाला गया कि अर्कपर्णी (टायलोफोरा इण्डिका) है। काफी समय पूर्व से इसके मूल एवं पत्रों का उपयोग चिकित्सा में किया जाता है। बम्बई बाजार में बहुत समय पूर्व से ही इसके मूल का विक्रय अन्तःमूली या रास्नामूल के नाम से किया जाता है। आधुनिक चिकित्सा में टायलोफोरीन नामक अल्कोलायड का उपयोग किया जाता है। यह अल्कोलायड पत्तों में सबसे अधिक पाया जाता है। श्वास एवं कफ रोग में इपिकाक का यह अच्छा प्रतिनिधि द्रव्य माना जाता है। इण्डियन फार्मेकोपिया में मूल की अपेक्षा पत्र अधिक उपयोगी पाये गये हैं। इस वनस्पति की संदिग्धता एवं अज्ञात का कारण यह भी सम्भव है, कि बहुत सीमित क्षेत्रों में यह वनस्पति पाई जाती है एवं अर्कसदृशपर्ण और अर्क-कुल की वनस्पति होने के कारण आक (अर्क) का प्रचलन प्रधान हो गया है।

उपयोग—श्वास पर रामवाण योग है। कास पर भी लाभ करता है। —पं० लक्ष्मीनारायन दुवे द्वारा धन्वन्तरि सिद्ध प्रयोगांक से।

(२) श्वासहर आसव—अपामार्ग की जड़ तथा शाखों से रहित ऊपर का हिस्सा, अडूसापत्र, घृत कुमारी का गूदा, केला के पत्र, जगल बेर की जड़ की छाल प्रत्येक २-२ किलो यह सब ताजे डालें। गुड़ देशी पुराना ४ किलो लें। इसमें जवाखार ५० ग्राम, सज्जी १०० ग्राम, नौसादर २५ ग्राम।

विधि—यदि बहुत तेज बनाना हो तो पानी ६ किलो अन्यथा जल १२ किलो डालकर मटके में आसव की तरह बन्द करके रख देवें मद्यांश उत्पन्न हो जाने पर वारुणी यन्त्र (भवके) द्वारा अर्क खींच लें।

मात्रा—२-७ बूंद जल में मिलाकर सेवन करावें।

उपयोग—श्वासरोग में बहुत उपयोगी है। श्वास के तीव्र वेग को शीघ्र रोक देता है।

—वैद्य नौरातारास द्वारा
धन्वन्तरि सिद्ध प्रयोगांक से।

(३) श्वासहर भस्म—शुद्ध तूतिया १ ग्राम, अडूसे का क्षार १५ ग्राम, अपामार्ग क्षार १५ ग्राम, नागकेशर १५ ग्राम, बहेड़े के फल १ किलो।

विधि—पहले बहेड़े अधकुट करके चार किलो पानी में औटायें। १ किलो जल शेष रहने पर उतारकर शीतल होने पर हाथ से मलकर छान लें। एक हांडी के पेंदे में मिट्टी लगाकर उसमें इस क्वाथ को रखकर आग पर चढ़ा दें। नागकेशर कूट छान लें और शेष तीनों औषधियों सहित पतले वस्त्र में ढीली पोटली बांध लें। पोटली धागे में बांधकर हांडी में ऐसे लटका दें कि क्वाथ में डूबी रहे पर हांडी की तली न छुये। मन्दाग्नि से पकाते रहें जब क्वाथ सब सूख जाय तब पोटली निकालकर फेंक दें। हांडी में एक काली औषधि चिपकी रह जावेगी उसे छुरी से खुरचकर धूप में सुखा लें और पीसकर रख लें

व्यवहार तथा मात्रा—२-४ रत्ती तक प्रातः सायं बताशे या मिश्री के चूर्ण के साथ खाकर ऊपर से २ घूंट गरम जल पीना चाहिये।

उपयोग—श्वास में अत्यन्त लाभकारी योग है। रोगी की बेचैनी एक दो मात्रा देते ही शान्त हो जाती है और निरन्तर सेवन कराते रहने से श्वास में स्थायी लाभ हो जाता है। —श्री महावीरप्रसाद मालवीय द्वारा धन्वन्तरि अनुभूत प्रयोगांक से।

(४) श्वासारि तैल—लोहवान ४० ग्राम, तजकलमी ६ ग्राम, अजवायन देशी ६ ग्राम, जायफल ६ ग्राम, लौंग २ ग्राम, शीतलचीनी २ ग्राम, जावित्री २ ग्राम।

विधि—सबका एकत्र चूर्ण करके बालुकायन्त्र से तैल निकाल लें।

मात्रा—२-६ बूंद बताशे में रखकर यदि किसी को गर्मी करे तो मलाई में रखकर सेवन करें। प्रयोग प्रारम्भ करने से पूर्व किसी वैद्य द्वारा वमन, विरेचन लेना विशेष लाभकारी है।

उपयोग—श्वास, कास, फुफ्फुस क्षय में लाभकारी योग है। —पं० श्रीनिवास द्वारा
धन्वन्तरि अनुभूत प्रयोगांक से।

(५) श्वासनाशक अमृतबिन्दु तैल—जायपत्री, बादाम की गिरी, जायफल, लौंग, पिस्ता, कालेतिल, अकरकरा, अजवायन, सफेद चन्दनचूरा, बड़ी इलायची दाने, कौड़िया लोहवान, निबौरी की गिरी, चिरौंजी, बहेड़े की गिरी, मालकांगनी, कंजा की गिरी।

विधि—सब बराबर-बराबर लेकर बालुका गर्भ पातालयन्त्र से तैल निकाल लें।

मात्रा—पान में २-३ बूंद यह तैल डालकर सेवन करावें।

उपयोग—श्वासरोग में लाभदायक तैल है कुछ दिन के प्रयोग से स्थायी लाभ होता है।

—बाबू गंगाधर जी स्वर्णकार द्वारा
धन्वन्तरि अनुभूत प्रयोगांक से।

(६) श्वासनाशक योग—सेंधानमक, यवक्षार, कालानमक, सज्जीक्षार, सांभरनमक, अपामार्गक्षार, बिडनमक, टंकणक्षार, कालियानमक, समुद्रफेन, फिटकरी, शंख, सीप, कौड़ी।

विधि—१४ वस्तुएं बराबर लें। १ दिन आक के दूध में घोटें और लुगदी बनाकर ऊपर आक के ही पत्ते लपेट

कपरौटी कर लें। फिर उपलों की तीव्र अग्नि में फूंक दें स्वांगशीतल होने पर निकाल बारीक पीसकर शीशी में भर लें।

मात्रा एवं व्यवहार विधि—१-३ रत्ती तक दिन व रात्रि में शहद से चटावें।

उपयोग—श्वास में उपयोगी योग है खांसी, कफ सर्दी में भी लाभकर है। —श्री गंगाप्रसाद स्वर्णकार द्वारा धन्वन्तरि अनुभूत प्रयोगांक से।

(७) श्वासचिन्तामणि—श्वेतमल्ल को क्रमशः गोमूत्र, निम्बरस, गोदुग्ध में स्वेदन कर नीबू रस में ७ दिन मर्दन करें और १ दिन मृतसंजीवनी में मर्दन कर डमरू-यन्त्र से उसके फूल उड़ा लें। यह शतमल्ल भस्म कहलाती है यह शतमल्ल भस्म १० ग्राम लें इसमें प्रवालभस्म तथा शुक्तिभस्म ४०-४० ग्राम मिलाकर खरल में खूब घुटाई करें।

मात्रा—प्रातः-सायं १-१ रत्ती विषम मात्रा में घृत तथा मधु या मलाई में चटाकर ऊपर से दूध सेवन करावें।

उपयोग—श्वास संस्थान के समस्त रोगों के लिये रामबाण औषधि है श्वास पर प्रभाव करने वाला ऐसा अचिन्त्य शक्ति प्रयोग मेरे अनुभव में दूसरा नहीं आया।

—वैद्य महावीरप्रसाद जोशी द्वारा धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(८) श्वासवज्र—अजवायन, हल्दी २०-२० ग्राम, जवाखार १० ग्राम, लाहौरीनमक ४० ग्राम, रसकर्पूर ३ ग्राम।

विधि—इन सब चीजों को पीसकर ६० ग्राम दही में छोड़ देवें और मिट्टी के वर्तन में डालकर ऊपर से मिट्टी का शराव ढांक देवें। फिर कपड़मिट्टी कर सुखा लेवें। एक गड्ढा खोदकर उसमें १०-१५ कंडे नीचे फिर बीच में दवा का सम्पुट और ऊपर से कण्डे रखकर अग्नि रख दें। स्वांगशीतल होने पर पात्र से दवा निकालकर खरल करके कांच की शीशी में मजबूत कार्क लगाकर रखें।

मात्रा—१ रत्ती प्रातः-सायं शहद या मलाई से।

उपयोग—इसके सेवन से ७ दिन मे श्वासरोग में लाभ हो जाता है। घी दूध का प्रयोग औषधि सेवनकाल में पर्याप्त करना चाहिये।

(९) कन्टकार्यावलेह विशेष—कटेरी का रस, रूसे की छाल का रस, अपामार्ग का रस, मुनक्के का क्वाथ, मिश्री प्रत्येक ½-½ किलो लेकर औटावें जब कुछ गाढ़ा हो जाय उतार कर नीचे लिखी औषधियां प्रत्येक २५-२५ ग्राम लेकर कपड़छन चूर्ण कर उसमें मिला दें, मुलहठी, वंशलोचन, पीपर छोटी, आंवला, सुहागे की खील, मारङ्गी।

मात्रा—१० ग्राम प्रातः-सायं बकरी के दूध के साथ।

उपयोग—दमा तथा खांसी में बहुत लाभ दिखाता है हमारा कई बार का अनुभूत है। —पं० शान्तिस्वरूप द्वारा धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(१०) श्वासारि क्वाथ—वेल की मूल २५ ग्राम, रूसा के पत्ते १५ ग्राम, नागफनी थूहर के पके फल २० ग्राम, सोंठ, कालीमरिच, पीपर छोटी प्रत्येक २-२ ग्राम कूटकर ४०० ग्राम जल में पका अष्टमांश क्वाथ सिद्ध कर प्रातः-सायं शहद मिलाकर सेवन कराना चाहिये।

उपयोग—श्वास या दमा में इस क्वाथ से विशेष लाभ होता है। विशेषतः श्वासनली के प्रदाह के कारण छाती में रक्ताधिक्यता के कारण अथवा मानसिक दुर्बलता से जो श्वास होता है उस पर रामबाण कार्य करता है।

—पं० कृष्णप्रसाद त्रिवेदी द्वारा धन्वन्तरि अप्रैल ४१ से।

(११) श्वासान्तक अवलेह—ब्राह्मी का पंचांग, मुनक्का ५००-५०० ग्राम, मोरेली, कटेरी का पंचांग, बड़ी हरड़ का वक्कुल प्रत्येक २००-२०० ग्राम, उन्नाव, गांजवां, गिलोय, खतमी, लसोड़ा, पोहकरमूल, कटेरी का पंचांग, काकड़ासिंगी, इलायची छोटी, कत्था, चमेली फूल, जवासा, खुब्बाजी प्रत्येक ५०-५० ग्राम।

विधि—सब औषधियो को कूटकर १० किलो जल में भिगो देवें और २॥ किलो शेष रहने पर २ किलो मिश्री या दाना शक्कर डालकर चाशनी बनाकर नीचे लिखी औषधि मिला देवें—

वंशलोचन, पीपल छोटी, तज, इलायची छोटी, लौंग, केशर १०-१० ग्राम, शहद ५० ग्राम कूट-पीस छानकर यह औषधि मिलाकर शीशी में रख लेना चाहिये।

मात्रा—रात दिन में ४ बार ३-३ ग्राम की मात्रा में दूध से।

उपयोग—श्वास कास में बहुत लाभकारी योग है। कुछ समय तक प्रयोग करने से स्थायी लाभ होता है।

—पं० शम्भुनाथ पाण्डेय द्वारा
धन्वन्तरि जून ४१ से।

(१२) श्वासान्तक वटी—बहेड़ा, आंवला, मुनक्का, बेर की गुठली, वायविडङ्ग, पीपर, पोहकरमूल, शहद, मिश्री प्रत्येक १०-१० ग्राम, लोहभस्म ८० ग्राम, सोमकल्प चूर्ण १०० ग्राम अदरक स्वरस की भावना देकर बेर जैसी गोली बना लें।

मात्रा—१-१ गोली ६-६ घण्टे पर सेवन करावें।

उपयोग—श्वास के लिये उत्तम औषधि है।

—श्री ब्रह्मदत्त शर्मा आयुर्वेदाचार्य द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(१३) सिद्धश्वासघ्न तैल—गंगा जी की बालू २०० ग्राम, कलमीशोरा २०० ग्राम, शुद्ध संखिया, जावित्री २०-२० ग्राम, लवङ्ग, तज, शीतलचीनी, पठानीलोध्र, जायफल, केशर, छोटी इलायची के बीज प्रत्येक १०-१० ग्राम।

निर्माण विधि—सबको कूटकर आतशी शीशी (कपड़ मिट्टी की हुयी) में भर दें। पातालयन्त्र विधि से तैल निकाल लें। इसमें तैल बहुत कम निकलता है अतएव सावधानी से निकालकर शीशी में रख लें।

सेवन विधि—इस तैल की शीशी में १ सींक डुबोकर लगे हुये बंगलापान में लगा दें। इस पान को प्रातः-सायंकाल सेवन करावें। यदि गर्मी अधिक मालूम हो तो मक्खन व मिश्री मिलाकर उसमें सींक से तैल लगाकर मिलाकर सेवन करें।

उपयोग—सभी प्रकार के श्वासरोग में उपयोगी तैल है।

—पं० सुरेन्द्रनाथ दीक्षित द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(१४) श्वासान्तक लेह—खसखस के दाने ४०० ग्राम, पोस्त के डोंडे ६० ग्राम।

विधि—इन दोनों को रात के समय एक मिट्टी के बर्तन में १ किलो पानी में भिगो दें। प्रातः सबको सिल पर पीसकर उसी पानी में घोल दें और कपड़े में छान लें। इस दूध जैसे पदार्थ को कलईदार कढ़ाही में डालकर आग पर पकावें और जब कुछ गाढ़ा हो जावे तब उसमें ७५० ग्राम मिश्री पीसकर मिला दें जब चाटने के योग्य हो जावे तब उसमें ५० ग्राम मुलहठी का चूर्ण भी मिला दें और उतारकर कढ़ाही से निकालकर कांच के पात्र में रख लें।

मात्रा—४ ग्राम सुबह-शाम दोनों समय।

उपयोग—इसके सेवन से अत्यन्त बढ़ा हुआ श्वास तुरन्त दब जाता है। तत्काल फल दिखाने वाला योग है।

—श्री हरिनारायन शास्त्री द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रथम भाग से।

(१५) श्वासारि अद्भुत योग—१॥ किलो बांसा (अडूसा) की जड़ खोद लावें और उसको अच्छी तरह पानी से धो डालें और फिर उसके छोटे १-१ अंगुल के टुकड़े कर लें। इसके बाद मिट्टी या पत्थर के किसी चौड़े पात्र में या लकड़ी के पात्र (कठौता) में उनको रखकर और २॥ सौ ग्राम बकरी का दूध डाल दें और धूप में रख दें। दिन भर धूप में रखने से दूध सूख जायगा। बीच में एक दो बार लकड़ी से चला दें। इस प्रकार रोजाना ४० दिन तक नियम से २॥ सौ ग्राम बकरी का दूध डालकर धूप में रख दिया करें। तात्पर्य यह कि प्रतिदिन ४० दिन तक २॥ सौ ग्राम बकरी का दूध डालकर सुखावें। (यदि गरमी होगी तो १ दिन में ही दूध सूख जायगा, किन्तु जाड़े में २ दिन भी लग सकते हैं। इस हिसाब से ४० दिन से ज्यादा भी समय लग सकता है)।

तत्पश्चात् एक चौड़ी हांडी में (हांडी इतनी बड़ी हो जिसमें दवा आ जावे) उसे डाल देवें, हां हांडी में दवा डालने से पहले उस हांडी में एक छोटा सा मटर के बराबर मोटा गोल छेद कर देना चाहिये। बाद में दवा भरकर ऊपर से एक बराबर फिट बैठने वाला ढक्कन मिट्टी का रखकर कपरौटी करदे सिर्फ ऊपर ही गले तक करनी चाहिये। इसके बाद एक जमीन में १। हाथ लम्बा इतना ही चौड़ा और इतना ही गहरा गड्ढा (गर्त) खोदें (जमीन गीली न हो) और इस गड्ढे के बीच में एक छोटा सा गड्ढा करीब ६ अंगुल का चौड़ा तथा इतना

ही लम्बा और ४ अंगुल गहरा खोदें इस छोटे बीच वाले गड्ढे में एक आलमोनियम या कांसे की कटोरी रखदें जो कि गड्ढे में बिलकुल फिट आती हो। इस कटोरी की ऊंचाई गड्ढे के ऊपर न होनी चाहिये बाद में हांडी उन गड्ढे में इस तरह से रखें जिससे हांडी का छेद नीचे की कटोरी के बीचों बीच में हो, बाद में अगल-बगल चारों ओर सूखे कंडे (अगर बिनवा हों तो ज्यादा अच्छा) भरदें और ऊपर भी कंडे रखदें, बाद में आग लगादें। अगर कंडे तेजी से जलने लगें तो पानी का हल्का छींटा मारदें ऊपर से कोई चीज ढंकदें ताकि आग धीरे-धीरे सुलगे। जब सब आग अपने आप ठंडी पड़ जाय (स्वांग-शीतल हो जाय) तब धीरे से पहले सब राख निकालें और राख निकालने के बाद सहारे से हांडी अलग करें, आप देखेंगे कि उस नीचे की कटोरी में घृत जैसा पदार्थ होगा जो कि दूध का घी बनकर अडूसे के तत्व को खींचकर कटोरी में टपक जाता है। इसे आप यदि उसमें राख न मिली हो (असावधानी से कभी राख मिल जाती है तो उसे कपड़े से छान लेना चाहिये) शीशी में भर कर रखलें।

गुण—समस्त प्रकार के श्वास, कास, उरःक्षत, मुंह से खून का आना, हिचकी तथा बच्चों की कुकरखांसी आदि में पूरी मात्रा में एक सींक सुबह और एक सींक शाम को बंगलापान में दें; अद्भुत लाभ होता है। छोटे छोटे बच्चों को आधी सींक बंगलापान के रस में या मां के दूध में दें, जादू की तरह पहले ही दिन एक ही दो सींक में लाभ मालूम हो जायगा। अति वृद्ध श्वास भी ८ दिन के सेवन से बिलकुल नष्ट हो जावेगा। बच्चों के पसली चलने पर भी तुरन्त लाभ होगा। राजयक्ष्मा में लाभदायक है। सिरदर्द होता हो और इसका नस्य दिया जाय तब भी लाभ होता है।

कफ वाली खांसी तथा सब तरह की श्वास पर तो चमत्कार ही दिखाता है। दमा श्वास तो एक दिन में ही ऐसे बन्द हो जाता है जैसे कि डाक्टरी दवा एफेड्रीन से बन्द होता है। —पं० सत्यनारायन मिश्र द्वारा गुप्तसिद्ध प्रयोगांक द्वितीय भाग से।

(१६) यवानी वटी—बढ़िया अच्छी अजवायन लेकर साफ कर लें उसमें से १०० ग्राम के लगभग किसी मिट्टी के पात्र में डालकर उसमें अर्क दुग्ध डाल दें। अर्क दुग्ध इतना डालें कि अजवायन उसमें डूब जावे। फिर १०० ग्राम कालानमक अथवा सेंधवलवण का टुकड़ा उसमें रख दें और कपरौटी कर दें। सूखने पर गोबर के अम्बार में २-३ हाथ नीचे दबा दें। एक माह पर्यन्त पड़ा रहने दें फिर किसी खरल में डालकर ६ घण्टे रगड़ें। अच्छे परिश्रम से औषधि को एकजीव करें। बाद में ½ रत्ती प्रमाण की गोली बना लें यही यवानी वटी है।

मात्रा—१-२ गोली दिन में २-३ बार।

अनुपान—मुनक्का के एक दाने में से बीज निकालकर वटी भर दें मुख में रखकर चबावें नहीं, गले से निगल लें आवश्यकता होने पर ऊपर से गरम जल, चाय क्वाथ आदि सेवन करावें।

उपयोग—इसके सेवन से श्वासरोग में तत्काल लाभ देखने को मिलता है। श्वास में लाभकर अन्य एलोपैथिक योगों के समान यह तत्काल लाभ करती है। बलाबल विचारकर इसका प्रयोग अधिक लाभकर होता है।

—कविराज धर्मदत्त चौधरी द्वारा गुप्तसिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(१७) सोमकल्पासव—सोमलता, अडूसा दोनों १-१ किलो, धतूर पंचांग ½ किलो, महुआ, मुलहठी, कटेरी, पीपर, नागकेशर, सोंठ, भारङ्गी, तालीसपत्र, काकड़ासिंगी, १२५-१२५ ग्राम, शक्कर १५ किलो, मुनक्का १ किलो, शहद ५ किलो, धाय के फूल १ किलो, जल ४० किलो।

विधि—आसव विधि से निर्माण करें।

उपयोग—यह श्वास, दमा, क्षीणता, में अति उपयोगी है इससे फुफ्फुस तथा श्वासवाहिनियों के रोग दूर होते हैं और दमा के दौरे में अत्यन्त लाभ करता है।

—कविराज ब्रह्मदत्त शर्मा द्वारा धन्वन्तरि गुप्तसिद्ध प्रयोगांक से।

(१८) श्वासान्तक लेह—आंवला (ताजा सूखा हुआ) ६० ग्राम, बकरी के दूध २५० ग्राम में रात को

चीनी या कलई के बर्तन में भिगोकर रख दें। प्रातःकाल उसी दूध में उबालकर मथ लीजिये फिर किसी झिरझिरे वस्त्र में छानकर घी में तल लें। ४०० ग्राम मिश्री की चाशनी में अवलेह बना लें और उसमें निम्न वस्तुएँ पीसकर डालें—

मुलहठी, बंसलोचन, रूमीमस्तङ्गी, गिलोयसत्व, इलायची छोटी, प्रवालभस्म, मुक्ताशुक्ति भस्म प्रत्येक ६-६ ग्राम।

मात्रा—६ ग्राम से १० ग्राम तक बकरी के दूध के साथ सेवन करावें।

उपयोग—श्वासरोग के लिये बहु-परीक्षित योग है।

—विद्याभूषण वैद्य द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(१९) श्वासकल्प—फिटकरी (लाल) २०० ग्राम, धतूरे का स्वरस २ किलो।

विधि—पहले फिटकरी का चूर्ण कर लोहे की कढ़ाही में डालें और उसमें थोड़ा धतूरे का रस डालकर पकाते जावें जब द्रव्य सूख जाय तब उसे एक घण्टे की अग्नि दें इससे कृष्णवर्ण की भस्म बन जाती है इसे खरलकर उपयोग में लेना चाहिये।

मात्रा—१-४ रत्ती तक मधु, वांसावलेह, कण्टकारी अवलेह किसी एक के साथ मिलाकर चाटना चाहिये।

उपयोग—तमकश्वास की अवस्था में अत्यन्त गुणकारक प्रयोग है श्वास के अतिरिक्त कास, हिक्का, पार्श्वशूल, श्लेष्मज ज्वर में भी उपयोगी है।

—वैद्य मिलापचन्द जैन द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(२०) श्वासान्तक वटी—अकरकरा, कालीमरिच, अनार की छाल, अजमोद, अडूसा, छोटी कटेरी, बबूल की छाल, सफेद सज्जी, सेंधानमक, सांभरनमक, शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, ताम्रभस्म प्रत्येक १-१ ग्राम, शुद्ध अफीम २ ग्राम।

विधि—इन सबको कूट-पीसकर अदरक, नागरपान के रस की १-१ भावना देकर १ रत्ती प्रमाण की गोली बना लें।

मात्रा—१ गोली सुबह तथा १ गोली शाम को अदरक शहद के साथ मिलाकर लेवें।

उपयोग—नवीन तथा पुराने श्वासरोग में बहुत लाभदायक योग है। —पं० महावीरप्रसाद शर्मा द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(२१) श्वासारि मिश्रण—आक की जड़, धतूरा पंचांग, अपामार्ग पंचांग, तम्बाकू का डंठल, अडूसा पंचांग, कटेरी पंचांग, बहेड़े का बक्कल, अमलतास का गूदा प्रत्येक ४००-४०० ग्राम, पांचों नमक २५० ग्राम, सज्जीखार ५० ग्राम, हल्दी, अजवायन, सुहागा चौकिया, कलमीशोरा, *नौसादर प्रत्येक २००-२०० ग्राम।*

निर्माण विधि—इन सबको यवकुट करके एक हांडी में भरकर मुंह बन्द करके गजपुट में फूंक दें और इस काली राख को पीसकर रख लें, सोमलता १०० ग्राम, पोहकरमूल १२५ ग्राम का चूर्ण बनाकर रख लें। और सत् लोहवान ६० ग्राम लें। अब काली राख २५० ग्राम, सोमलता एवं पोहकरमूल का चूर्ण २५० ग्राम, सत् लोहवान ६० ग्राम तीनों को मिलाकर रख लें।

मात्रा—छोटे बच्चे को १-१ रत्ती, बड़े बच्चे को २-२ रत्ती तथा बड़ों को ४ रत्ती से १ ग्राम तक दिन में ३ बार शहद के साथ।

उपयोग—श्वास में बहुत लाभकारी योग है। श्वास की अत्यधिक अवस्था में भी लाभकारी है एवं स्थायी लाभ भी करता है। —वैद्य प्रयागदत्त शास्त्री द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(२२) श्वासारि हरड़ योग—अडूसे के पत्ते, नीम का बुरादा, झाड़ की जड़, तीन साल पुराना गुड़ चारों ½-½ किलो, बड़ी हरड़ ८० नग ले लें। इनको एक मटके में डालकर ४ किलो पानी भर देवें और मुंह बन्द करके चूल्हे पर चढ़ावें। बेरी की लकड़ी ५ किलो की मन्दाग्नि से जलाते रहें और यह ध्यान रखें कि कभी मुंह न खुल जाय। फिर उतारकर ८० हरड़ निकाल लेवें बाकी सबको फेंक दें। आधा किलो शहद में हरड़ें डाल देवें।

मात्रा—१-१ हरड़ प्रातः-सायं शहद के साथ ४० दिन तक सेवन करावें।

उपयोग—श्वासरोग में अत्यन्त उपयोगी योग है।

—वैद्य रामधन शर्मा द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(२३) श्वासान्तक योग—गुलाबी फिटकरी, सफेद फिटकरी, तैलिया सुहागा, चौकिया सुहागा, सावरश्रृङ्ग, शंख, सीप के टुकड़े, पीली कौड़ी, सेंधव, कलमीशोरा, अजवायन, कटेरी, वासा, निम्ब, हल्दी, अफीम डोंडा, बाजरा, हीरा कसीस, गांजा, तम्बाकू, धतूरा, इन्द्रायण का फल सभी समानभाग।

विधि—इनको यवकुट करके मक्खन से चुपड़कर एक हांडी में बड़ के पत्ते बिछाकर कुमारी का गूदा रखें उस पर कुटी हुई दवा और उसके ऊपर कुमारी का गूदा और आक के पीले पत्ते रखकर दृढ़ कपरोटी करें फिर तेज अग्नि में फूंक देवें। आग शीतल होने पर हांडी को निकालकर उसमें भस्म हुयी दवा को निकालकर खरल में पीसकर शीशी में भर लें।

मात्रा—१-४ रत्ती तक प्रातः-सायं शीत प्रकृति वाले को अद्रक, पान का रस मधु से चटावें या केवल मधु से चटावें। गर्म प्रकृति वाले को अनार रस सहित तथा मधु मक्खन के साथ चटावें।

उपयोग—जीर्ण तथा नूतन श्वास में धैर्यपूर्वक सेवन करने से निश्चित लाभ होता है।

—वैद्य मुकुन्दचन्द व्यास द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(२४) शरद् पूर्णिमा पर सेवन की जाने वाली श्वासरोगनाशक बहु प्रचलित दवा—आश्विन शुक्ला प्रतिपदा को पीपल वृक्ष की अन्तर्छाल ताजा लाकर छाया में सुखा लें। आधी छाल का बारीक चूर्ण कर लें और शेष आधी छाल को जलाकर राख कर लें। दोनों में से १॥-१॥ माशा मिलाकर एक मात्रा बना लें।

सेवन विधि—शरद् पूर्णिमा को सूर्योदय से लेकर रात्रि के १२ बजे (औषधि सेवन का समय) तक उपवास करें तथा जल आदि कुछ भी न लें। पूर्णिमा को सायंकाल आगे दी हुई विधि से खीर बनाकर चांदी या मिट्टी के पात्र में खुली चांदनी में रख दें। १२ बजे रात्रि को १ मात्रा उक्त औषधि की मिलाकर खावें। दवा उतनी ही खीर में मिलावें, जितनी खा सकें।

औषधि सेवन के बाद २ घण्टे तक जल बिल्कुल न पीवें। कुल्ले कर सकते हैं, जल पेट में न जावे। औषधि सेवन करने के बाद टहलने को निकल जावें। शक्ति के अनुसार जितना भ्रमण कर सकें, करें। कार्तिक कृष्णा १ को भूख लगने पर हल्का भोजन करें।

खीर बनाने की विधि—शरद पूर्णिमा को सायंकाल ५ बजे गाय का ताजा और शुद्ध दूध १ किलो, मिश्री (खांड से बनी) २५ ग्राम और चावल बढ़िया २५ ग्राम इनसे चांदी या मिट्टी के बर्तन में यथाविधि खीर बनावें। खीर (तस्मई-क्षीर) तैयार होने पर चन्द्र उदय होते ही चांदनी में रख दें। अर्द्धरात्रि को इसमें से थोड़ी खीर में औषधि डालकर २-४ ग्रासों में खाकर ऊपर से इच्छानुसार और खीर खा लें।

औषधि में पूर्ण विश्वास रखते हुए और अपने इष्टदेव का ध्यान करते हुए औषधि सेवन करें, लाभ अवश्य होगा। पथ्य या विधान में गड़बड़ी न करें।

औषधि सेवन के बाद २ माह तक लालमिर्च, तैल, खटाई, मद्य, गुड़, तली चीजें और गरिष्ट पदार्थ, दही, छाछ, कढ़ी, चाय, ये वस्तुएं न लेवें। ब्रह्मचर्य से रहें, अधिक परिश्रम न करें। —सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(२५) श्वास पर अव्यर्थ योग—गोमूत्र ५ किलो, अपामार्ग भस्म १ किलो, सफेद संखिया १० ग्राम, नौसादर १० ग्राम, पांचों नमक १०० ग्राम।

विधि—पहले गोमूत्र ५ किलो तथा अपामार्ग भस्म १ किलो को लेकर ३ दिन तक भिगोना चाहिए तथा प्रतिदिन डण्डे से हिलाते रहना चाहिए। चौथे दिन पानी नितार कर कढ़ाही में चढ़ाना चाहिए। फिर उसमें सफेद संखिया १० ग्राम, नौसादर १० ग्राम, पांचों नमक १० ग्राम मिलाकर पकाना चाहिए। गाढ़ा होने पर शीशी में भर लेना चाहिए।

प्रयोग विधि—७ दिन तक १ सींक में भरकर पान या बताशे में रखकर देना चाहिए।

उपयोग—श्वास रोग पर अव्यर्थ योग है।

—पं० द्वारकाप्रसाद दुबे द्वारा
सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(२६) श्वासामृत—शुद्ध संखिया १० ग्राम, लाल फिटकरी २० ग्राम, धत्तूरपत्र स्वरस, कण्टकारी स्वरस, आक का दुग्ध प्रत्येक २-२ किलो।

निर्माण विधि—शुद्ध संखिया का सूक्ष्म चूर्ण कर फिटकरी मिला खरल करें। पश्चात् धत्तूरपत्र स्वरस तथा अर्कदुग्ध की क्रमशः भावना देकर (पुट देकर) सूक्ष्म खरल करके सुरक्षित रख लें।

मात्रा—१ से २ रत्ती तक।

अनुपान—मधु, च्यवनप्राश, वासावलेह अथवा कण्टकार्यावलेह के साथ मिलाकर चटावें या पान में रखकर खिलावें। कफ कम आने पर कण्टकार्यावलेह और कफ अधिक आने पर मधु या च्यवनप्राश के साथ दें।

उपयोग—श्वास रोग में उपयोगी योग है, अनेक बार का अनुभूत है। —वैद्य कृष्णलाल वर्मा द्वारा
सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(२७) श्वासहर लोह—लोह भस्म २०० ग्राम लें उसमें संखिया १० ग्राम, कपूर ३ ग्राम मिलाकर ग्वारपाठे के रस में घोटकर टिकिया बना सुखा लें तथा गजपुट में फूंक देवें। पश्चात् सिंगरफ १० ग्राम मिलाकर ग्वारपाठे के रस में घोट टिकिया बनाकर सुखा लें और गजपुट में फूंक दें। इसके पश्चात् हरताल १० ग्राम, कपूर ३ ग्राम मिलाकर ग्वारपाठे के रस में घोट टिकिया बना कर सुखा गजपुट में फूंक दें। इस प्रकार १६ पुट देवें। १६ पुट लगाने के पश्चात् इस लोह भस्म को पोटली में बांधकर मिट्टी वर्तन में डालकर जहां गीली मिट्टी रहती हो वहां गाड़ देवें तथा १५ दिन बाद निकालकर काम में लावें।

मात्रा—इसकी मात्रा ½ रत्ती है।

सेवन विधि—बादामगिरी १५ नग को पीसकर लुगदी बना उसमें दवा रखकर प्रातःकाल ४० दिनों तक सेवन करें।

उपयोग—इसके प्रयोग से श्वास रोग निर्मूल हो जाता है। सुपरीक्षित योग है।

—वैद्य हनुमानप्रसाद शर्मा द्वारा
सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(२८) अपामार्गासव—अपामार्ग २ किलो, वासा के पत्ते २ किलो, केले के नये नर्म पत्ते २ किलो, देशी गुड़ ४ किलो, जंगली बेर की जड़ की छाल २ किलो।

विधि—गुड़ को ६ किलो पानी में भिगोकर अन्य औषधियों को यवकुट करके मिट्टी के वर्तन में डाल दें और १-२ बार हिला दें। अगले दिन इसमें यवक्षार ६० ग्राम, सज्जीक्षार १२० ग्राम, नवसादर पापड़िया २० ग्राम डाल दें। इसको १५ दिन तक मुंह बन्द करके रखा रहने दें। १५ दिन बाद निकाल लें और मोटे कपड़े से छानकर बोतलों में भर लें।

मात्रा—२-४ चम्मच तक आवश्यकतानुसार जल मिलाकर।

उपयोग—श्वास के तीव्र वेग को शान्त करता है तथा कुछ दिनों के सेवन से स्थायी लाभ होता है।

—श्री विश्वनाथ त्रिपाठी द्वारा
सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(२९) दमादमन—काकड़ासिंगी ५० ग्राम, पोहकर मूल ५० ग्राम, पिप्पली ५० ग्राम, बहेड़े की छाल ५० ग्राम, नौसादर सत्व १० ग्राम, शुद्ध सोनागेरू ६ ग्राम।

विधि—सबको खूब बारीक पीस छानकर रख लें।

सेवन विधि—४ रत्ती से १॥ ग्राम तक मधु में मिलाकर २-३ बार चटावें।

उपयोग—श्वास रोग में अति उत्तम उपयोगी योग है। —पं० रामगोपाल शर्मा द्वारा
प्रयोग मणिमाला से।

(३०) श्वास रोगान्तक वटी [१]—शुद्ध सोमल १० ग्राम, मृगश्रृङ्ग १०० ग्राम, सोहागे का फूला तथा सफेद मरिच का चूर्ण २०-२० ग्राम।

विधि—सबको मिला नागरवेल के पत्र के रस में ३ दिन खरल करके १-१ रत्ती की गोलियां बना लें।

मात्रा—१-२ गोली दिन में २ बार शहद में घोलकर या मिश्री मिले दूध अथवा घृत के साथ।

उपयोग—नया तथा पुराना श्वास रोग जिसमें कफ बहुत गिरता हो, श्वास नलिकायें कफ से भरी रहती हों थोड़ा परिश्रम करने पर श्वास रुकने लगती हो, ऐसे श्वास रोग में इस वटी से शीघ्र लाभ होता है।

(३१) श्वासरोगान्तक वटी [२]—शुद्ध वच्छनाग, शुद्ध सिंगरफ, सोहागे का फूला, पीपरामूल प्रत्येक २०-२० ग्राम, पीपर, सफेद मरिच, मुनक्का, छोटी हरड़, मुलहठी प्रत्येक ५०-५० ग्राम, काली तम्बाकू के डण्ठल १०० ग्राम, केशर ६ ग्राम।

विधि—सबको कूट कपड़छन कर नागरवेल पान के रस में १२ घण्टे खरल करके ½-½ रत्ती की गोलियां बना लें।

मात्रा—१-२ गोली दिन में ३ बार जल, शहद या नागरवेल के रस के साथ देवें।

उपयोग—यह वटी तम्बाकू के व्यसन से होने वाली श्वास को दूर करती है। अन्य प्रकार के श्वास रोग में भी उपयोगी है।

(३२) मल्लादि वटी—शुद्ध सोमल, वंशलोचन, इलायची, जावित्री २०-२० ग्राम मिला गुलाबजल में २ दिन खरल करके ज्वार के दाने बराबर गोलियां बनावें।

मात्रा—१-१ गोली दिन में २ बार दूध के साथ देवें।

उपयोग—इस वटी के सेवन सेकफ श्वास आदि विकार शीघ्र ठीक हो जाते हैं।

(३३) श्वासदमन चूर्ण—शुद्ध मैनशिल, भुनी हींग, वायविडङ्ग, कूठ, कालीमरिच, सेंधानमक समानभाग मिलाकर बारीक चूर्ण करलें।

मात्रा—४-४ रत्ती दिन में २ बार। दौरा होने पर २-२ घण्टे से २-३ बार शहद तथा घी के साथ दें।

उपयोग—इस औषधि के सेवन से श्वास, कास, हिक्का आदि में विशेष लाभ होता है।[१]

—रसतन्त्रसार प्रथम भाग से।

(३४) श्वासदमन गुटिका—धतूरे के पके फल, आक के पीले पत्ते, तम्बाकू के सूखे पत्ते, अडूसे के पत्ते, अनाज निकाली हुयी मक्का की सूखी डोंडी, अपामार्ग पंचांग, केले के पान यह ७ औषधियां १-१ किलो, नौसादर, सोरा, सेंधानमक ८०-८० ग्राम, मुलहठी १०० ग्राम।

विधि—सबको मिलाकर एक हांडी में मुखमुद्रा कर गजपुट में अग्नि दें। स्वांगशीतल होने पर भस्म को निकालकर ४ गुने जल में मिलावें। जल नितर जाने पर ऊपर से सम्हालकर जल निकाल लें। भस्म में क्षारांश रहा हो तो पुनः जल मिलाकर नितार लेवें। पश्चात् जल को उबालकर क्षार बना लेवें उसे बोतल में भरलें। उक्त क्षार ४० ग्राम, काकड़ासिंगी का चूर्ण १२० ग्राम, लोहवान पुष्प १० ग्राम, सकमोनियां ६० ग्राम और बीज निकाले हुये मुनक्का ३० ग्राम मिला खरलकर १-१ रत्ती की गोलियां बना त्रिकटु के कपड़छन चूर्ण में डालते जावें।

मात्रा १-१ गोली दिन में २ बार मलाई से।

उपयोग—श्वास दमन गुटिका तमक श्वास और प्रतमक श्वास दोनों को दूर करती है कफ को सरलता से बाहर निकालती है और उसकी उत्पत्ति का दमन करती है। १ सप्ताह के सेवन करने पर लाभ मालूम होने लगता है और ४० दिन पथ्यपूर्वक सेवन करने से फुफ्फुसों से चिपका कफ निकल जाता है और फिर रोगी स्वस्थ हो जाता है।

(३५) पीतश्वास कुठार—शुद्ध मनःशिला तथा कालीमरिच का कपड़छन चूर्ण दोनों को समानभाग लें।

विधि—सबको मिलाकर अदरक के रस और नागरवेल के पान के रस में १२-१२ घण्टे खरलकर १-१ रत्ती की गोलियां बनालें।

मात्रा—१-१ गोली २-२ घण्टे पर २-३ बार नागरवेल के पत्र या जल के साथ दिन में २ बार।

उपयोग—पीतश्वासकुठार श्वासरोग का दमन करने के लिये उपयोगी है। आशुकारी आक्षेपकाल में २-

---

१—इस औषधि का उपयोग आक्षेप काल में श्वास वेग के दमनार्थ अधिक होता है। इस औषधि में आक्षेप हर मुख्य औषधि कूठ है और हींग सहायक है। मनःशिलादि शेष औषधियां कफघ्न है। आक्षेपकाल में इस औषधि का सेवन १-१ घण्टे पर ३ बार और आक्षेप न होने पर २-३ बार कराया जाता है।

घण्टे पर देते रहना चाहिये। एवं आक्षेप का असर हो तब तक गरम करके शीतल किया हुआ जल देते रहें अन्न नहीं देना चाहिये। इस तरह सम्हालकर २-३ बार देने पर दौरा शमन हो जाता है यह शीत प्रकोपजश्वास की अपेक्षा अपचजन्य श्वास प्रकोप पर अधिक कार्य करता है।

(३६) तालीससोमादि चूर्ण—तालीसपत्र, सोम, मुलहठी, अडूसे के फूल और पुष्करमूल इन ५ औषधियों को समभाग लें।

विधि—सबको मिला कूटकर कपड़छन चूर्ण करें।

मात्रा—५-५ रत्ती दिन में ३-४ बार शहद के साथ सेवन करावें।

उपयोग—यह चूर्ण श्वासवेग का दमन करता है एवं श्वास, कास तथा प्रतिश्याय को दूर करता है यह चूर्ण उत्तेजक, कफघ्न, मूत्रल एवं श्वासकासहर है। धूम्रपान का व्यसन पुराना होने पर अनेक लोगों को श्वासरोग की सम्प्राप्ति हो जाती है फिर फुफ्फुस तथा श्वास प्रणालियों में कफ बना रहता है थोड़ा चलने पर श्वास भर जाता है और कार्य करने में उत्साह मन्द हो जाता है उस पर इस चूर्ण का सेवन २-४ माह तक कम मात्रा में लाभ पहुँचाता है कितने ही रोगियों को श्वास का दौरा बार-बार होता है फुफ्फुस कफ से भर जाते है बोलने एवं श्वास लेने में बड़ी कठिनाई होती है बार-बार कास चलती रहती है किन्तु कफ नहीं निकलता है ऐसी स्थिति में तालीससोमादि चूर्ण सत्वर लाभ करता है।

(३७) श्वासान्तक चूर्ण—बहेड़ा २०० ग्राम, लोंग ३० ग्राम, अपामार्गक्षार, स्वर्णवंगक्षार, वच तथा सोनागेरू ६-६ ग्राम लेवें।

विधि—बहेड़े तथा लोंग को कूटकर कपड़छन करें फिर शेष औषधियां मिलाकर खरल कर लेवें।

मात्रा—३-३ ग्राम प्रातः-सायं शहद के साथ।

उपयोग—यह चूर्ण श्वास तथा कास में संग्रहीत कफ को सत्वर दूर करता है थोड़े दिनों तक सेवन कराने से कफ निकलकर साफ हो जाता है कफोत्पत्ति बन्द हो जाती है और श्वास कास रोग दूर हो जाते हैं।

(३८) श्वासारि लवण—आक के २०० पीले पके पत्र, १०० ग्राम के लगभग शुद्ध घृत, १ किलो सैंधवलवण।

विधि—आक के पत्तों को अच्छी तरह कपडे से पोंछकर साफ कर लें फिर एक मिट्टी की हांडी के भीतर पत्रों को जमावें प्रत्येक पत्र पर थोड़ा घी चुपड़कर ऊपर सैंधानमक चूर्ण डालें ऊपर दूसरा पत्र फिर घी लगाकर सैंधानमक डालकर रखें इस प्रकार सब पत्र घी तथा सैंधानमक लगाकर हांडी में रखकर ढक्कन ढक मुखमुद्रा करके गजपुट में पुट देवें। स्वांगशीतल होने पर आक के दूध में मिलाकर हलवे के समान गाढ़ाकर हांडी में भर मुखमुद्रा करके गजपुट देवें। स्वांगशीतल होने पर नमक को पीसकर बोतल में भर दें।

मात्रा—२-४ रत्ती शहद के साथ तेज आक्रमण के समय १-१ घण्टे पर २-३ बार देवें। श्वासरोग की सामान्य अवस्था में १-२ रत्ती दिन में २ बार शहद या नागरबेल के पान में देवें।

उपयोग—यह लवण कफ प्रधान श्वासरोग में आक्रमण के बल को तुरन्त शिथिल कर देता है तथा कफ को सरलता से बाहर निकालने लगता है। जीर्णावस्था में भी यह हितावह है। —रसतन्त्रसार द्वितीय भाग से।

(३९) दमादमन—बावची, लोटासार, कनक बीज, कालीमरिच, नौसादर टीकरी, सुहागा, सज्जी, कलमीशोरा, देशी अजवायन, पीपल प्रत्येक १०-१० ग्राम इन सब औषधियों को बारीक करके ४ दिन आक के दूध में भिगोकर रखें फिर १० ग्राम संखिया सफेद का तैल[1]

१. संखिये का तैल बनाना—संखिया सफेद १२० ग्राम, सज्जीक्षार ६० ग्राम, जल २४० ग्राम, तीनों चीजों को किसी कढ़ाही में डालकर मन्द अग्नि पर पकावें। जब २५-३० ग्राम पानी शेष रहे तब कढ़ाही को चूल्हे पर से नीचे उतार दें। कढ़ाही शीतल होने पर पानी सूख जावेगा। फिर तैल सावधानी से निकाल लें यही संखिया का तैल है।

मिलाकर घोटें जितना अधिक घोटेंगे उतना ही अधिक गुणकारी होगा।

सेवन विधि—वात तथा कफजन्य श्वास रोगियों को १ रत्ती दवा गुलकन्द में खिलावें तथा पित्त जनित श्वास वाले को १ चावल के बराबर अर्क गुलाब के साथ सेवन करावें।

उपयोग—श्वासरोग में बहु-परीक्षित योग है। वातजन्य एवं कफजन्य श्वासरोग में विशेष उपयोगी है।

(४०) श्वासनाशक आसव—धतूरे का तैल २४ ग्राम, शुद्ध अफीम २४ ग्राम दोनों को भली प्रकार घोटकर वासा स्वरस ६०० ग्राम, मिश्री देशी ३०० ग्राम डालकर आसव की विधि से बन्द करके रखदें और फिर २१ दिन के बाद खोलकर छानलें।

मात्रा—१५-५० बूंद तक अर्क दशमूल में मिलाकर दिन में ३ बार पिलावें।

उपयोग—श्वासरोग नाशक उपयोगी आसव है अनेक बार इसकी परीक्षा की जा चुकी है।

—अनुभूत योग प्रकाश से।

(४१) श्वासान्तक घृत—एक कांस्य (फूल) के कटोरा में ६० ग्राम गाय का घृत तथा दूसरे कटोरा में उतना ही आर्द्रक का स्वरस लें और दोनों कटोरों को अलग-अलग गरम करें बाद में छोंक लगाने की तरह एक ही में डालदें फिर ऊपर से फूल की थाली से ढकदें। सनसनाहट बन्द होने के बाद घृत को मृत्तिका निर्मित पात्र में रखलें।

मात्रा एवं सेवन विधि—इस घृत को २० ग्राम की मात्रा में १२५ ग्राम गर्म गाय या बकरी के दूध में डालकर सन्ध्या समय श्वासाक्रान्त रोगी को नियमपूर्वक सेवन तथा उसी समय इसी घृत की सुहाता-सुहाता गर्म मालिश रोगी के वक्षस्थल कण्ठ पर करानी चाहियें।

उपयोग—इस प्रयोग से कफ पतला होकर निकलने लगता है जिससे श्वासरोग में लाभ मालूम होता है।

—श्री श्यामदास प्रपन्नाश्रमी द्वारा
धन्वन्तरि अगस्त ५३ से।

(४२) सोमशार्कर—सोमलता चूर्ण ५० ग्राम, हरिद्रा चूर्ण ५० ग्राम, मिश्री ५०० ग्राम।

विधि—पूर्व में सोमलता एवं हरिद्रा का क्वाथ बना लें। इसी क्वाथ में मिश्री के शर्बत की चासनी बनाकर शर्बत बनालें।

मात्रा एवं प्रयोग विधि—३-३ चम्मच सोमशार्कर पिलाकर ऊपर से गर्म जल पिलाना चाहिये।

उपयोग—यह प्रयोग श्वास की अत्यधिक अवस्था में उपयोगी पाया गया है।[1]

—वैद्य वासुदेव शास्त्री द्वारा
धन्वन्तरि अक्टूबर ७६ से।

(४३) सोमशारदीय रजनी कल्प—रससिंदूर १ भाग, सोमकल्प चूर्ण ५ भाग, सौ वर्ष पुराने अश्वत्थ की अन्तस्त्वक् ५ भाग, रजनी (हरिद्रा) ५ भाग, सिता (मिश्री) चूर्ण ५ भाग,। सर्वप्रथम रससिंदूर की अच्छी तरह घुटाई करें फिर क्रमशः १-१ चूर्ण को मर्दन करते हुए डालते जांय तथा सूक्ष्म चूर्ण बनालें।

मात्रा—१ से २ ग्राम तक अवस्थानुसार शर्बत जूफा व वासावलेह अथवा मधु से दें, श्वासवेगशामक स्थायी लाभदायक योग है। —वैद्य अम्बालाल जोशी द्वारा,
सुधानिधि श्वासरोग चिकित्सांक से।

(४४) श्वासरोगारि—मल्लसिंदूर १ ग्रा०, कज्जली (अष्टसंस्कारित पारद की) १ ग्रा०, त्रिफला क्षार १ ग्रा०, शुद्ध वत्सनाभ १ ग्रा०, छोटी इलायची चूर्ण १ ग्रा०, नागकेशर चूर्ण १ ग्रा०, प्रवालपिष्टी २ ग्रा०, कुचलासत्व २ ग्रा०, पीपल घनसत्व २ ग्रा०, ताम्रभस्म (गन्धक जारित) २ ग्रा०, वंगभस्म ३ ग्रा०, अभ्रकभस्म (शतपुटी) ३ ग्रा०, शंखभस्म ३ ग्रा०, सत् शिलाजीत ३ ग्रा०, हरताल सत्व ३ ग्रा०, कपूर चूर्ण ३ ग्रा०, यवक्षार ३ ग्रा०, सज्जीक्षार ३ ग्रा०, वांसा घनसत्व ३ ग्रा०, स्वर्णमाक्षिक भस्म ४ ग्रा०, भारंगी घनसत्व ४ ग्रा०, भूम्यामलकी घनसत्व ४ ग्रा०, गुडूचीसत्व ४ ग्रा०, काकड़ासिंगी घनसत्व ४ ग्रा०, धत्तूर घनसत्व ५ ग्रा०।

१—आयुर्वेद महाविद्यालय चिकित्सालय उदयपुर में आये श्वास रोगियों पर उपरोक्त सोमशार्कर योग का परीक्षण किया जा चुका है और ८०% सफलता का दावा किया गया है।

उपरोक्त २५ दवाओं को खरल में डालकर सूखी ही २४ घण्टे की घुटाई करें, फिर मुलहठी क्वाथ, ताम्बूल स्वरस, वासा स्वरस, छोटी कटेरी स्वरस का पृथक्-पृथक् १-१ भावना देकर अन्त में बकरी के दूध की १ भावना देकर १-१ रत्ती की गोलियां बना लें। प्रातः, सायं १-१ गोली रोग के लक्षणानुसार उचित अनुपान से सेवन करें, असाध्य रोगियों पर अव्यर्थ ब्रह्मास्त्र योग है।

—कविराज बी० एस० प्रेमी द्वारा,
सुधानिधि श्वासरोग चिकित्सांक से।

(४५) श्वासारि—मदारपुष्प १० ग्राम, कटेरीपुष्प १० ग्राम, मधुयष्टी सत्व १० ग्राम, छोटी पिप्पली ५ ग्राम। उपरोक्त दवाओं को सुखाकर, खरल कर मधु की सहायता से गोलियां बनालें। दौरे के समय गोली को गुनगुने पानी से निगल लेने पर तत्काल श्वासवेग का शमन होता है।

—वैद्य चन्द्रभूषण पांडेय द्वारा
सुधानिधि श्वासरोग चिकित्सांक से।

(४६) श्वासशमन—सोमवल्ली (सोमकल्प) १५ ग्राम, अर्कमूलत्वक् १० ग्राम, वासापत्र १० ग्राम, यष्टीमधु १० ग्राम, कंटकारी क्षार ५ ग्राम, टंकण भस्म ५ ग्राम, अपामार्ग भस्म १० ग्राम, लोहबान पुष्प ५ ग्राम, श्वासकुठार रस १० ग्राम, तालीसादि चूर्ण २० ग्राम।

निर्माण—काष्ठौषधियों को कूटकर पश्चात् अन्य दवाएं मिलाकर खरल कर रखलें।

मात्रा—४-८ रत्ती तक उष्ण जल या चाय से लेवें।

गुण—यह तमकश्वास व शुष्ककास के आवेग को शमन करता है तथा दमे के वेग को शीघ्र शान्त करता है तथा चिक्किट कफ का निष्कासन करता है। श्वास के घुटन को दूर करने वाली, शतशोऽनुभूत, सौम्य औषधि है। बहुत लाभदायक एवं अनुभूत योग है।

—श्री वैद्य मधुसूदन जोशी द्वारा
सुधानिधि श्वासरोग चिकित्सांक से।

(४७) कनकशार्करीय—धतूर पंचांग २५० ग्राम को २ किलो (लिटर) पानी में पकावें तथा अष्टमांश (२५० मि० लि०) शेष रहने पर आग से उतार छानकर मिश्री २५० ग्राम डालकर मिला लें। पुनः छानकर १०० मि० लि० रेक्टीफाइड स्प्रिट या मृतसंजीवनी सुरा डालकर हिलाकर शीशी में कार्क लगाकर रखलें।

प्रयोग—५ से ३० बूंद तक गर्म दूध अथवा वासारिष्ट या कनकासव के साथ देने से तत्काल श्वासरोग की उग्रावस्था का शमन होता है, अधिक प्रयोग वर्जित है।

द्रष्टव्य—आचार्य विश्वनाथ द्विवेदी का अनुभूत योग है जिसको हमने मृतसंजीवनी के संयोग से बनाकर लाभदायक पाया है। मात्रा का प्रयोग समझ बूझकर करें, अन्यथा रोगी को नशा चढ़ जाता है और नशे में कपड़े फाड़ने लग जाता है।

—वैद्य चन्द्रभूषण पांडेय द्वारा
सुधानिधि श्वासरोग चिकित्सांक से।

(४८) तालीससोमादि चूर्ण—तालीसपत्र, सोमलता (Ephedea Antermedia), मधुयष्टि, अडूसे के फूल और पुष्करमूल, इन पांचों औषधियों को समभाग मिला कूट कपड़छान कर चूर्ण बनालें। ५-५ रत्ती दिन में ३-४ बार मधु से दें। श्वासकुठार रस आदि किसी शास्त्रीय योग के साथ प्रयोग करना अति हितकर है।

उपयोग—श्वासवेगहर, ज्वरहर, कफघ्न, मूत्रल एवं कास-श्वासनाशक सिद्धयोग संग्रह का योग है जो हमारे द्वारा शतशोऽनुभूत है।

—वैद्य श्री जवरी व्यास द्वारा
सुधानिधि श्वासरोग चिकित्सांक से।

(४९) श्वासरोगहर—अश्वत्थ की कोंपल का चूर्ण १०० ग्राम, वासापत्र १०० ग्राम, मृगशृङ्गभस्म १०० ग्राम, श्वासकुठार रस १०० ग्राम, लवङ्गादि चूर्ण १०० ग्राम, सितोपलादि चूर्ण २०० ग्राम सबको खरल करके शीशी में भरकर रखें।

मात्रा अनुपान—प्रातः-सायं वासावलेह एवं मधु से सेवन करने से श्वासरोग का निर्मूलन होता है।

—वैद्य श्री जवरी व्यास द्वारा
सुधानिधि श्वासरोग चिकित्सांक से।

(५०) श्वासहर धूप—नीम की पत्ती ८० ग्राम, बड़ी हरड़ ४० ग्राम, गुग्गुल २० ग्राम, अजवायन २० ग्राम, आक २० ग्राम, मोरपंखी ५ ग्राम, सरसों ५ ग्राम, वच, अगर, देवदारु, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, गुडूची,

तुलसी के सूखे पत्ते प्रत्येक ५-५ ग्राम, हींग १ ग्राम सबको कूटकर मिलाकर धूप बनालें।

प्रयोग—रोगी के कमरे में प्रतिदिन प्रातः-सायं इसकी धूप (कण्डे पर डालकर धुंआं करना) से श्वास और यक्ष्मा के रोगियों को आशातीत लाभ होता है।

—डा० अञ्जनीनन्दन वर्मा द्वारा
सुधानिधि श्वासरोग चिकित्सांक से।

(५१) कर्णवेध—विधि द्वारा तमकश्वास चिकित्सा—रविवार या मंगलवार शुभपर्व दिन में सूर्य की किरणों के समक्ष लेखक ने अपने घर पर ही, कर्ण-वेधन के समय कान को स्प्रिट आदि से विसंक्रमित कर, विसंक्रामक सुई और धागे को लेकर, बाहरी कान के मध्यभाग में भीतर की ओर से बाहर की ओर वेध करते हुए पार कर देते हैं, पश्चात् धागे को बाली का आकार देते हुए दो गांठें लगाकर अवशिष्ट धागे को काट देते हैं, इस विधि द्वारा वेधन के समय रक्तस्राव नहीं होता। सात दिन तक धागे को कान मे लगा रहने देते है फिर सरसों का तेल लगाकर धागे को काटकर निकाल देते है तथा पीतल की बाली पहना देते है। उसे ४८ दिन तक रहने देते हैं, फिर चाहें तो बाली सोने की डाल सकते है।

पथ्य—रोगी को ४० दिन तक निम्न १३ चीजें ही खाने को दी जाती हैं, अन्य वर्जित है रोटी—गेहूं, जौ, दाल—अरहर, मूंग, साग—लौकी, नेनुआ, परवल, जल-पान—किशमिश, मुनक्का, मिश्री, मसाला—कालीमरिच, नमक, पीना—जल, ४८ दिन की अवधि में अन्य कोई दवा न लें, श्वासवेग होने पर मिश्री की चाशनी में कालीमरिच मिलाकर चाटने से आराम मिलता है। अधिकाश रोगियो का कर्णवेधन वैद्य श्री केदारनाथ जी ने किया, कुछ नये रोगियों का लेखक ने स्वयं किया जिनमें से कुछेक की रक्त परीक्षा, व ऐक्स-रे भी लिए गये।

पर्यालोचन—कर्णवेधन का प्रभाव, श्वासरोग में प्रभावशाली पाया गया, ४३ रोगियों में से ४० पूर्ण स्वस्थ होना ९७% बिलकुल ठीक होना अत्यन्त ही उत्साहवर्धक है। अतः दुर्जेय श्वासरोग का नाश करने में कर्णवेधन एक अत्यधिक उपयोगी चिकित्सा है।

प्रसङ्ग सन्दर्भ—लेखक के पिता वैद्य श्री केदारनाथ जी को कानपुर के श्री रामप्रसाद जी से यह विधि प्राप्त हुई थी जिसका प्रयोग सन् १९४८ से सफलतापूर्वक कर रहे हैं। अब तक २६२५ तमकश्वास रोगियों की चिकित्सा की जा चुकी है जिनमें से १२२ रोगियों से पत्रादि प्राप्त हुए। ५० रोगियों से पत्राचार किया गया किन्तु उत्तर ७ रोगियों के आये। इसके अतिरिक्त कुछ पुराने रोगी स्वयं आये और नये रोगियों का कर्णछेदन करके ४३ रोगियों का विवेचन किया गया जिनके परि-णाम अत्यन्त ही उत्साहवर्धक रहे।

—डा० सत्यार्थप्रकाश द्वारा
सुधानिधि श्वासरोग चिकित्सांक से।

(५२) श्वासरोगान्तक अवलेह—तवाखीर २० ग्राम, दालचीनी, तेजपात, इलायची, नागकेशर, लवङ्ग, भारङ्गी, काकड़ासिंगी, पोहकरमूल, चिरायता, देवदारु, असगन्ध, जायफल, अगर, कैथ, मुनक्का, लोहभस्म, अभ्रकभस्म, प्रवालभस्म, शृङ्गभस्म, शंखभस्म प्रत्येक १०-१० ग्राम, कायफल, अडूसा, मुलहठी तीनों २०-२० ग्राम, त्रिकटु, त्रिफला, बहेड़ा ३०-३० ग्राम, आर्द्रक, चीनी १-१ किलो।

निर्माण विधि—आर्द्रक को कद्दूकस करके ४०० ग्राम घृत में इतना भूनलें कि रङ्ग लाल हो जाय मगर जले नही। बाद में चीनी की चाशनी तैयार करके अदरक तथा ऊपर की अन्य समस्त चीजों को सूक्ष्म पीसकर चासनी में मिलाकर अमृतवान में भरकर रखलें।

मात्रा—१० ग्राम से १५ ग्राम तक गरम दूध के साथ केवल रात्रि को सोते समय १ बार।

सेवन अवधि—२१-४१ दिन तक।

उपयोग—यह अवलेह श्वास को जड़ से नष्ट करने वाला योग है। श्वासरोग से पीड़ित ऐसे रोगी जो वर्षों से अनेक औषधि सेवन कर निराश हो गये उन्हें इस अव-लेह से स्थायी लाभ हुआ। —वैद्य गुरदास द्विवेदी द्वारा
सुधानिधि दिसम्बर ७४ से।

(५३) सर्व श्वासहर प्रयोग—भारङ्गी ५ तोला, मधुयष्टि (मुलहठी) ५ तोला, शुण्ठी (सोंठ) ५ तोला,

निशा (हल्दी) ५ तोला, वासापत्र चूर्ण ५ तोला, धतूरा पत्र चूर्ण १ तोला, हरीतकी ५ तोला।

विधि—उपरोक्त सातों औषधियों का यथाविधि चूर्ण बना लें।

सेवन विधि—इस चूर्ण की मात्रा ६ माशे से लेकर एक तोला तक। रोगवेग, तथा रोगी अवस्था, बल पर मात्रा निर्भर है। उष्णोदक से ही प्रायः यह मात्रा प्रातः-सायं और सूर्योदय से २ घण्टे पूर्व दी जाती है।

उपयोग—यह चूर्ण श्वासरोगियों के लिए अमृतवत् है। यह प्रयोग हमारी खानदानी परम्परा में गुप्त रहा है।

—श्री वैद्य मदनलाल कौशिक द्वारा

स्वास्थ्य जनवरी ८० से।

[इ] प्रमुख शास्त्रीय योग

क्रमांक	कल्पना	औषधि नाम	ग्रन्थ सन्दर्भ	मात्रा एवं समय	अनुपान	विशेष
१	रस	श्वासकासचिन्तामणि रस	र०यो०सा०	१२५ मि०ग्रा० दिन में २ बार	कण्टकारी-स्वरस+मधु	सभी प्रकार के श्वासों में।
२	”	श्वासचिन्तामणि रस	भै० र०	” ”	बिभीतक चूर्ण+मधु	”
३	”	श्वासकुठार रस	”	२५० मि०ग्रा० दिन में २ बार	ताम्बूल+आर्द्रकस्वरस	”
४	”	वसन्ततिलक रस	र० सा० सं०	१२५ मि०ग्रा० दिन में २ बार	आर्द्रकस्वरस+मधु	”
५	”	मल्लसिंदूर	सि० भै० मणि०	६० मि० ग्रा० दिन में २ बार	”	कफाधिक्य में।
६	”	लक्ष्मीविलास रस	र०यो०सा०	१२५ मि०ग्रा० दिन में २ बार	”	छिन्न श्वास में।
७	”	हेमगर्भपोटली रस	भै० र०	६० मि० ग्रा० दिन मे २ बार	”	हृदयावरोध में।
८	”	चन्द्रामृत रस	”	२५० मि०ग्रा० दिन में २ बार	”	छिन्न श्वास में।
९	”	प्रवाल पंचामृत	यो० र०	” ”	”	प्रतमक श्वास में।
१०	”	कफकेतु रस	भै० र०	” ”	”	तमक श्वास में।
११	”	आनन्दभैरव रस	”	” ”	”	”
१२	”	श्रृङ्गाराभ्र रस	”	” ”	”	”
१३	”	कामदुधा रस	र० यो० स०	” ”	”	प्रतमक श्वास में।
१४	”	मृगाङ्क रस	र० सा० सं०	६० मि०ग्रा० दिन में २ बार	”	जाठराग्निमंदता में।
१५	”	सूर्यावर्त रस	र० त०	१२५ मि०ग्रा० दिन में २ बार	”	तमक श्वास में।
१६	”	स्वर्णसमीरपन्नग रस	सि०यो०सं०	६० मि०ग्रा० दिन में २ बार	”	”
१७	”	शिला सिन्दूर	र० त० सा०	१२५ मि०ग्रा० दिन में २ बार	मधु	”
१८	”	रससिन्दूर	र० त०	” ”	”	”

तुलसी के सूखे पत्ते प्रत्येक ५-५ ग्राम, हींग १ ग्राम सबको कूटकर मिलाकर धूप बनालें।

प्रयोग—रोगी के कमरे में प्रतिदिन प्रातः-सायं इसकी धूप (कण्डे पर डालकर धुंआं करना) से श्वास और यक्ष्मा के रोगियों को आशातीत लाभ होता है।

—डा० अञ्जनीनन्दन वर्मा द्वारा सुधानिधि श्वासरोग चिकित्सांक से।

(५१) कर्णवेध—विधि द्वारा तमकश्वास चिकित्सा—रविवार या मंगलवार शुभपर्व दिन में सूर्य की किरणों के समक्ष लेखक ने अपने घर पर ही, कर्ण-वेधन के समय कान को स्प्रिट आदि से विसंक्रमित कर, विसंक्रामक सुई और धागे को लेकर, बाहरी कान के मध्यभाग में भीतर की ओर से बाहर की ओर वेध करते हुए पार कर देते हैं, पश्चात् धागे को बाली का आकार देते हुए दो गांठें लगाकर अवशिष्ट धागे को काट देते हैं, इस विधि द्वारा वेधन के समय रक्तस्राव नहीं होता। सात दिन तक धागे को कान मे लगा रहने देते हैं फिर सरसों का तेल लगाकर धागे को काटकर निकाल देते हैं तथा पीतल की बाली पहना देते हैं। उसे ४८ दिन तक रहने देते हैं, फिर चाहें तो बाली सोने की डाल सकते हैं।

पथ्य—रोगी को ४० दिन तक निम्न १३ चीजें ही खाने को दी जाती है, अन्य वर्जित हैं रोटी—गेहूँ, जौ, दाल—अरहर, मूंग, साग—लौकी, नेनुआ, परवल, जल-पान—किशमिश, मुनक्का, मिश्री, मसाला—कालीमरिच, नमक, पीना—जल, ४८ दिन की अवधि में अन्य कोई दवा न लें, श्वासवेग होने पर मिश्री की चाशनी में कालीमरिच मिलाकर चाटने से आराम मिलता है। अधिकाश रोगियों का कर्णवेधन वैद्य श्री केदारनाथ जी ने किया, कुछ नये रोगियों का लेखक ने स्वयं किया जिनमें से कुछेक की रक्त परीक्षा, व ऐक्स-रे भी लिए गये।

पर्यालोचन—कर्णवेधन का प्रभाव, श्वासरोग में प्रभावशाली पाया गया, ४३ रोगियों में से ४० पूर्ण स्वस्थ होना ९७% बिलकुल ठीक होना अत्यन्त ही उत्साहवर्धक है। अतः दुर्जेय श्वासरोग का नाश करने में कर्णवेधन एक अत्यधिक उपयोगी चिकित्सा है।

प्रसङ्ग सन्दर्भ—लेखक के पिता वैद्य श्री केदारनाथ जी को कानपुर के श्री रामप्रसाद जी से यह विधि प्राप्त हुई थी जिसका प्रयोग सन् १९४८ से सफलतापूर्वक कर रहे हैं। अब तक २६२५ तमकश्वास रोगियों की चिकित्सा की जा चुकी है जिनमें से १२२ रोगियों से पत्रादि प्राप्त हुए। ५० रोगियों से पत्राचार किया गया किन्तु उत्तर ७ रोगियों के आये। इसके अतिरिक्त कुछ पुराने रोगी स्वयं आये और नये रोगियों का कर्णछेदन करके ४३ रोगियों का विवेचन किया गया जिनके परि-णाम अत्यन्त ही उत्साहवर्धक रहे।

—डा० सत्यार्थप्रकाश द्वारा सुधानिधि श्वासरोग चिकित्सांक से।

(५२) श्वासरोगान्तक अवलेह—तबाशीर २० ग्राम, दालचीनी, तेजपात, इलायची, नागकेशर, लवङ्ग, भारङ्गी, काकड़ासिंगी, पोहकरमूल, चिरायता, देवदारु, असगन्ध, जायफल, अगर, कैथ, मुनक्का, लौहभस्म, अभ्रकभस्म, प्रवालभस्म, शृङ्गभस्म, शंखभस्म प्रत्येक १०-१० ग्राम, कायफल, अडूसा, मुलहठी तीनों २०-२० ग्राम, त्रिकटु, त्रिफला, बहेड़ा ३०-३० ग्राम, आर्द्रक, चीनी १-१ किलो।

निर्माण विधि—आर्द्रक को कद्दूकस करके ४०० ग्राम घृत में इतना भूनलें कि रङ्ग लाल हो जाय मगर जले नहीं। बाद में चीनी की चाशनी तैयार करके अदरक तथा ऊपर की अन्य समस्त चीजों को सूक्ष्म पीसकर चासनी में मिलाकर अमृतवान में भरकर रखलें।

मात्रा—१० ग्राम से १५ ग्राम तक गरम दूध के साथ केवल रात्रि को सोते समय १ बार।

सेवन अवधि—२१-४१ दिन तक।

उपयोग—यह अवलेह श्वास को जड़ से नष्ट करने वाला योग है। श्वासरोग से पीड़ित ऐसे रोगी जो वर्षों से अनेक औषधि सेवन कर निराश हो गये उन्हें इस अव-लेह से स्थायी लाभ हुआ। —वैद्य गुरदास द्विवेदी द्वारा सुधानिधि दिसम्बर ७४ से।

(५३) सर्व श्वासहर प्रयोग—भारङ्गी ५ तोला, मधुयष्टि (मुलहठी) ५ तोला, शुण्ठी (सोंठ) ५ तोला,

निशा (हल्दी) ५ तोला, वासापत्र चूर्ण ५ तोला, धतूरा पत्र चूर्ण १ तोला, हरीतकी ५ तोला।

विधि—उपरोक्त सातों औषधियों का यथाविधि चूर्ण बना लें।

सेवन विधि—इस चूर्ण की मात्रा ६ माशे से लेकर एक तोला तक। रोगवेग, तथा रोगी अवस्था, बल पर मात्रा निर्भर है। उष्णोदक से ही प्रायः यह मात्रा प्रातः-सायं और सूर्योदय से २ घण्टे पूर्व दी जाती है।

उपयोग—यह चूर्ण श्वासरोगियों के लिए अमृतवत् है। यह प्रयोग हमारी खानदानी परम्परा में गुप्त रहा है।

—श्री वैद्य मक्खनलाल कौशिक द्वारा
स्वास्थ्य जनवरी ८० से।

[इ] प्रमुख शास्त्रीय योग

क्रमांक	कल्पना	औषधि नाम	ग्रन्थ सन्दर्भ	मात्रा एवं समय	अनुपान	विशेष
१	रस	श्वासकासचिन्तामणि रस	र०यो०सा०	१२५ मि०ग्रा० दिन में २ वार	कण्टकारी-स्वरस+मधु	सभी प्रकार के श्वासों में।
२	"	श्वासचिन्तामणि रस	भै० र०	" "	विभीतक चूर्ण +मधु	"
३	"	श्वासकुठार रस	"	२५० मि०ग्रा० दिन में २ वार	ताम्बूल+आर्द्रकस्वरस	"
४	"	वसन्ततिलक रस	र० सा० सं०	१२५ मि०ग्रा० दिन में २ वार	आर्द्रकस्वरस +मधु	"
५	"	मल्लसिंदूर	सि० भै० मणि०	६० मि० ग्रा० दिन में २ वार	"	कफाधिक्य में।
६	"	लक्ष्मीविलास रस	र०यो०सा०	१२५ मि०ग्रा० दिन में २ वार	"	छिन्न श्वास में।
७	"	हेमगर्भपोटली रस	भै० र०	६० मि० ग्रा० दिन मे २ वार	"	हृदयावरोध में।
८	"	चन्द्रामृत रस	"	२५० मि०ग्रा० दिन में २ वार	"	छिन्न श्वास में।
९	"	प्रवाल पंचामृत	यो० र०	" "	"	प्रतमक श्वास में।
१०	"	कफकेतु रस	भै० र०	" "	"	तमक श्वास मे।
११	"	आनन्दभैरव रस	"	" "	"	"
१२	"	शृङ्गाराभ्र रस	"	" "	"	"
१३	"	कामदुधा रस	र० यो० सा०	" "	"	प्रतमक श्वास में।
१४	"	मृगाङ्क रस	र० सा० सं०	६० मि०ग्रा० दिन में २ वार	"	धात्वाग्निमंदता में।
१५	"	सूर्यावर्त रस	र० त०	१२५ मि०ग्रा० दिन में २ वार	"	तमक श्वास में।
१६	"	स्वर्णसमीरपन्नग रस	सि०यो०सं०	६० मि०ग्रा० दिन में २ वार	"	"
१७	"	शिला सिन्दूर	र० त० सा०	१२५ मि०ग्रा० दिन में २ वार	मधु	"
१८	"	रससिन्दूर	र० त०	" "	"	"

१९	रस	महावातराज	र० त० सा०	६०—१२५ मि० ग्रा० दिन में २ वार	आर्द्रकस्वरस + मधु	हृदयावरोध में।
२०	"	पूर्ण चन्द्रोदय	र० सा० सं०	१२५ मि०ग्रा० दिन में २-३ वार	"	"
२१	"	नागार्जुनाभ्र रस	"	" "	"	"
२२	"	अश्वकंचुकी रस	र० रा० सु०	" "	"	मलावरोध में।
२३	"	तालसिन्दूर	र० त० सा०	६० मि० ग्रा० दिन में २ वार	"	तमक श्वास में।
२४	"	श्लेष्मकालानल रस	र० सा० सं०	२५० मि०ग्रा० दिन में २-३ वार	"	"
२५	"	स्वर्णवसन्त मालती	सि० भै० मणि०	१२५ मि०ग्रा० दिन में २ वार	"	ज्वरानुबन्धी में।
२६	"	स्वर्णभूपति रस	यो० र०	" "	"	धात्वाग्निमन्दता में।
२७	लौह	महाश्वासरि लौह	भै० र०	१२५ मि०ग्रा० दिन में २-३ वार	आर्द्रक स्वरस + मधु	महाश्वास में।
२८	"	शिलाजित्वादि लौह	"	" "	"	कार्श्य में।
२९	"	पिप्पल्यादि लौह	"	" "	"	महाश्वास।
३०	"	विडंगाद्य लौह	"	" "	"	वातश्लेष्म वृद्धि में।
३१	भस्म	अभ्रक भस्म	र० त०	" "	वासा स्वरस + मधु	सर्वोपद्रवों में।
३२	"	मयूरपुच्छ भस्म	च० द०	२५० मि०ग्रा० दिन में २-३ वार	पिप्पली चूर्ण + मधु	तमक श्वास में।
३३	"	लौह भस्म	र० त०	" "	आर्द्रक स्वरस + मधु	"
३४	"	मल्ल भस्म	र० त० सा०	आधे चावल से एक चावल तक दिन में १-२ वार	मुनक्का में रखकर	"
३५	"	वैक्रान्त भस्म	र० त०	६०—१२५ मि० ग्रा० दिन में १-२ वार	घृत + मधु	प्रतमक श्वास में।
३६	"	ताम्र भस्म (सोमनाथी)	र० र० स०	" "	मरिच + मधु	तमक श्वास में।
३७	"	यशद भस्म	र० त०	२५० मि०ग्रा० दिन में १-२ वार	आर्द्रकस्वरस + मधु	"
३८	"	कासीस भस्म	"	" "	"	"
३९	"	शृङ्ग भस्म	"	" "	"	"
४०	"	गोदन्ती भस्म	"	" "	"	प्रतमक श्वास में।
४१	वटी	भागोत्तरी वटी	भै० र०	२—२ गोली दिन में २-३ वार	गोजिह्वादि क्वाथ	तमक श्वास में।
४२	"	लवंगादि वटी	वै० जी०	" "	चूसते रहें	"

४३	वटी	आरोग्यवर्द्धिनी वटी	र० र० स०	२–२ गोली दिन में २-३ बार	त्रिफला क्वाथ	विवन्धजन्य में।
४४	,,	विजय वटी	भै० र०	,, ,,	वासादि क्वाथ	सभी श्वासों में।
४५	,,	व्योषादि वटी	शा० सं०	,, ,,	चूसते रहें	
४६	,,	मरिच्यादि वटी	,,	,, ,,	,,	,,
४७	,,	एलादि वटी	चरक०	,, ,,	,,	,,
४८	,,	मल्लादि वटी	र० त० सा०	१–१ गोली दिन में २-३ बार	दुग्ध	,,
४९	क्षार	अपामार्गक्षार	र० त०	१२५ मि०ग्रा० दिन में २-३ बार	वासापानक	कफावृत वातोल्वण श्वास में।
५०	,,	यवक्षार	,,	१ ग्राम दिन में २-३ बार	घृत	,,
५१	,,	वासाक्षार	,,	,, ,,	,,	,,
५२	चूर्ण	लवंगादि चूर्ण	भै० र०	१–२ ग्राम दिन में २-३ बार	मधु	तमक श्वास में।
५३	,,	चिन्तामणि चूर्ण	वैं० जी०	३ ग्राम दिन में २-३ बार	,,	क्षुद्र श्वास में।
५४	,,	शृंग्यादि चूर्ण	शा० सं०	२–३ ग्राम दिन में २-३ बार	कवोष्ण जल	सर्वविध श्वासों में।
५५	,,	तालीसादि चूर्ण	भै० र०	१–२ ग्राम दिन में २-३ बार	मधु	,,
५६	,,	सितोपलादि चूर्ण	,,	५०० मि०ग्रा० दिन में २-३ बार	,,	,,
५७	,,	मुक्ताद्य चूर्ण	चरक०	२५०–५०० मि० ग्रा० दिन में २ बार	मधुयष्टि+घृत+मधु	प्रतमक श्वास में।
५८	,,	मरिचादि चूर्ण	शा० सं०	२–३ ग्राम दिन में २ बार	मधु	तमक श्वास में।
५९	क्वाथ	भार्ग्यादि क्वाथ	यो० र०	१०ग्राम षोडसगुना जल, चतुर्थांश शेष	—	,,
६०	,,	दशमूल क्वाथ	भै० र०	,, ,,	—	वाताधिक्य में।
६१	,,	सिंह्यादि क्वाथ	यो० र०	,, ,,	—	तमक श्वास में।
६२	,,	गोजिह्वादि क्वाथ	सि०यो०सं०	,, ,,	सिता डालकर	,,
६३	,,	वासादि क्वाथ	वैं० जी०	,, ,,	मरिच मिलाकर	,,
६४	,,	कंटकारी क्वाथ	भै० र०	,, ,,	मधु मिलाकर	,,
६५	आसव–अरिष्ट	सोमकल्पासव	रा.औ.यो.सं.	१० मि० लि० दिन में २-३ बार	समान जल मिलाकर	श्वासशामक, कफनिस्सारक।
६६	,,	कनकासव	यो० र०	२० मि० लि० दिन में २-३ बार	,,	श्वासशामक, निद्राकारक।

६७	आसव-अरिष्ट	द्राक्षासव	यो० र०	२५ मि० लि० दिन में २-३ बार	समान जल मिलाकर	श्वासशामक स्रोतः शुद्धिकर।
६८	"	मृगमदासव	भै० र०	१० मि० लि० दिन में २-३ बार	"	श्वासशामक प्रलापहर।
६९	"	दशमूलारिष्ट	शा० सं०	२५ मि० लि० दिन में २-३ बार	"	वातहर, श्वासहर।
७०	"	वासारिष्ट	भै० र०	" "	"	प्रतमक, तमक श्वासहर।
७१	"	अर्जुनारिष्ट	"	" "	"	हृदयरोगियों को।
७२	"	अभयारिष्ट	चरक०	" "	"	विबन्ध जन्य श्वासहर।
७३	पाक-लेह	भार्गीगुड़	भै० र०	१० ग्राम दिन में १-२ बार	हरीतकी+कवोष्ण जल	सर्वविध श्वासों में।
७४	"	च्यवनप्राश	शा० सं०	२० ग्राम दिन में १-२ बार	अजादुग्ध	"
७५	"	वासावलेह	भै० र०	५-१० ग्राम दिन में १-२ बार	"	"
७६	"	कण्टकार्यवलेह	शा० सं०	" "	"	"
७७	"	अगस्त्य हरीतकी	चरक०	" "	"	"
७८	"	चित्रक हरीतकी	भै० र०	" "	"	"
७९	"	व्याघ्री हरीतकी	यो० र०	" "	"	"
८०	"	तमाल्यवलेह	सि० भै० मणि०	१० ग्राम दिन में १-२ बार	"	"
८१	"	मार्ङ्गीहरीतक्यवलेह	भै० र०	५-१० ग्राम दिन में १-२ बार	"	"
८२	घृत	दशमूलषट्पल घृत	"	" "	"	हृत्पार्श्वरुजायुक्त श्वास में।
८३	"	तेजोवत्यादि घृत	"	" "	"	"
८४	तैल	चन्दनादि तैल	"	यथेष्ट, यथासमय	अभ्यङ्गार्थ	"
८५	"	लाक्षादि तैल	"	" "	"	"
८६	"	महानारायण तैल	"	" "	"	"
८७	"	सहचर तैल	"	" "	"	पार्श्वशूल में।
८८	"	पंचगुण तैल	सि०यो०सं०	" "	"	—
८९	धूम्र	जात्यादि धूम्र	यो० र०	—	वर्ति को घी में चुपड़कर धूम्रपान करें	—
९०	"	देवदार्वादि धूम्र	मा० प्र०	—	"	—
९१	"	मनःशिलादि धूम्र	वृ० मा०	—	"	—

श्वास में सामान्य चिकित्सा उपक्रम

श्वास वाले रोगी को सर्वप्रथम उर तथा पार्श्व में लवणयुक्त तैल की मालिश कर नाड़ी प्रस्तर या शंकर विधि से स्निग्ध स्वेदन कराना चाहिए। इससे जकड़ा हुआ कफ स्रोतों में पिघल जाता है। स्रोत मृदु हो जाते हैं, जिससे वायु अनुलोम हो जाती है। इसके बाद ठीक स्विन्न जानकर तत्काल स्निग्ध भोजन खिलाना चाहिए। इससे कफ की वृद्धि हो जाती है। बाद में पीपर, सेंधानमक तथा मधु मिले हुए मैनफल के क्वाथ को पिलाकर वमन कराके कफ निकाल देना चाहिये। वमन इतना ही कराना चाहिए कि वायु का प्रकोप न हो जाय। कफ निकल जाने से रोगी को बहुत शान्ति मिलती है। यदि कफ पूरा न निकले और कुछ शेष रह जाय, तो उसे धूम्रपान के प्रयोग से शान्त करना चाहिए।

श्वास रोग वाला रोगी कोई बलवान् तथा कोई दुर्बल होता है और उसमें भी कोई कफाधिक्य वाला तथा कोई रूक्ष वातप्रकोप वाला होता है। जो कफाधिक्य और बलवान् है, उसे वमन-विरेचन कराके पथ्य सेवन कराते हुये धूम, लेह आदि शमन औषध का प्रयोग करना चाहिए और जो दुर्बल, बालक या वृद्ध है, उन्हें वातनाशक शमन औषध स्नेह, यूप या मांसरस आदि सेवन कराते हुए सन्तर्पण करना चाहिए।

श्वास रोग की आत्ययिक अवस्था में औषधि व्यवस्था-पत्र

(१) श्वासकास चिन्तामणि रस १०० मि० ग्रा०, श्वासकुठार रस १०० मि० ग्रा०, अपामार्ग क्षार २०० मि० ग्रा० × १ मात्रा भारङ्गी शुण्ठी क्वाथ के साथ सुबह, दोपहर, सायं चटावें।

(२) चित्रक हरीतकी ६ ग्राम × १ मात्रा, प्रातः तथा रात्रि को गरम जल के साथ सेवन करावें।

(३) द्राक्षारिष्ट १० मि० लि० + कनकासव १० मि० लि० × १ मात्रा समान जल मिलाकर भोजन के उपरान्त पिलावें या द्राक्षारिष्ट २० मि० लि० में भुना कलमी शोरा १ ग्राम और सममाग जल मिलाकर भोजनोपरान्त पिलावें।

(४) तालीसादि चूर्ण ६ ग्राम, यवक्षार १।। ग्राम × १ मात्रा, १० ग्राम अडूसा शर्बत + १० ग्राम लिसोड़ा शर्बत + १० ग्राम शर्बत गावजवां में मिलाकर रखें और थोड़ा-थोड़ा दिन में कई बार चटावें।

(५) स्नेहन-स्वेदन—पुराने गोघृत में थोड़ा नमक मिलाकर छाती, पसली पर मलकर दिन में कई बार स्वेदन कराना चाहिए।

श्वास रोग में स्थायी लाभ हेतु औषधि व्यवस्था-पत्र

(१) शृङ्गाराभ्र भस्म ४ रत्ती, शिलाजत्वादि लौह ३ रत्ती; श्वासकुठार रस ४ रत्ती, सोमलता चूर्ण १ ग्राम, यवक्षार ८ रत्ती, तालीसादि चूर्ण ६ ग्राम खरल में बारीक पीसकर ४ खुराक बना लें। ६-६ घण्टे पर १-१ खुराक मधु में मिलाकर चटावें।

(२) च्यवनप्राश १० ग्राम + वासावलेह १० ग्राम + वासा-कण्टकारी शर्बत (कासारि) ४ चम्मच मिलाकर १ मात्रा बना लें। प्रात- १० बजे तथा रात्रि को सोते समय सेवन करावें।

(३) कनकासव १० मि० लि० + द्राक्षारिष्ट १० मि० लि० + वासारिष्ट १० मि० लि० × १ मात्रा, समान जल मिलाकर भोजन के बाद सेवन करावें।

श्वास रोग की विशेष अवस्थाओं में सफल औषधि व्यवस्था

(१) **असहिष्णुजन्य श्वास रोग में**—घृतभृष्ट हरिद्रा चूर्ण १ ग्राम की मात्रा प्रातः-सायं मधु के साथ सेवन करावें तथा रात्रि को सोते समय मल्लयोग १ पुड़िया (१ पुड़िया में—मल्लसिन्दूर ½ रत्ती + मनःशिला ½ रत्ती + सोमकल्प चूर्ण ४ रत्ती + पिप्पली चूर्ण १ ग्राम) मधु के साथ चटावें।

(२) **उपसिप्रियताजन्य श्वास रोग में**—उपसिप्रियताहर वटी (मल्लसिन्दूर ३० ग्राम, श्वासकुठार रस, अभ्रक भस्म, लौह भस्म, पिप्पली, कालीमरिच, घृतभृष्ट हरिद्रा प्रत्येक १०-१० ग्राम मिलाकर पान के स्वरस में घोटकर २-२ रत्ती की गोली बना ले) १-१ गोली तुलसीपत्र रस या उष्ण जल से सुबह, शाम सेवन करावें।

(३) **हृदयजन्य श्वास रोगों में**—श्वासकास चिन्तामणि १ रत्ती+नागार्जुनाभ्रक १ रत्ती+शृङ्ग भस्म १ रत्ती+हृदयार्णव रस १ रत्ती मिलाकर १ पुड़िया बना लें। सुबह, शाम शहद या खमीरा गावजवां से चटावें। भोजनोपरान्त वासारिष्ट १० मि० लि०+अर्जुनारिष्ट १० मि० लि० मिलाकर समान जल से दिलवावें। पुष्करमूलादि चूर्ण (भै० र०) १ ग्राम रात्रि को सोते समय जल से दें।

(४) **बच्चों के श्वास रोग में**—शृङ्गाराभ्र १ रत्ती+चन्द्रामृत रस २ रत्ती+टंकण क्षार २ रत्ती+तालीसादि चूर्ण ४ रत्ती मिलाकर १ पुड़िया बना लें और सुबह, शाम मधु से चटावें।

(५) **वृद्धों के श्वास रोग में**—मल्लसिन्दूर १ रत्ती+स्वर्ण भस्म १ रत्ती+अभ्रक भस्म २ रत्ती+पिप्पली चूर्ण ४ रत्ती मिलाकर २ मात्रा बना लें और च्यवनप्राश १० ग्राम में मिलाकर सुबह, शाम चटावें। मृतसंजीवनी ५ मि० लि०+द्राक्षारिष्ट १० मि० लि० में समान जल मिलाकर भोजन के बाद दिलवावें।

(६) **श्वास में कफ रुक जाने पर**—टंकण भस्म (सुहागे की भस्म) ४ रत्ती+चन्द्रामृत रस २ रत्ती+अपामार्ग क्षार २ रत्ती+शुद्ध नवसादर २ रत्ती मिलाकर १ मात्रा बना लें। उष्ण जल से जब भी कफ न निकले दिलवा दे।

(७) **श्वास में घबराहट होने पर**—वसन्तमालती १ रत्ती+योगेन्द्र रस १ रत्ती+जहरमोहरापिष्टी २ रत्ती मिलाकर १ पुड़िया बना लें। घबराहट होने पर मलाई में मिलाकर चटावें।

(८) **श्वास में शीतांग होने पर**—लक्ष्मीविलास १ रत्ती+वसन्तमालती १ रत्ती+वृ० वातचिन्तामणि १ रत्ती+मकरध्वज १ रत्ती मिलाकर १ पुड़िया बना लें। शहद तथा अदरक के रस में मिलाकर चटावें।

[ई] प्रमुख पेटेण्ट आयुर्वेदीय योग

क्रमांक	योग का नाम	निर्माता कम्पनी	उपयोग विधि	विशेष
१	सोमा टेवलेट	मार्तण्ड	२–२ गोली प्रातः, रात्रि के समय गर्म पानी या दूध के साथ।	श्वास, दमा कफयुक्त कास में उपयोगी। इसके प्रयोग से श्वास का दौरा तत्क्षण शान्त हो जाता है।
२	श्वासान्तक कैपसूल	गर्ग वनौषधि	१–१ कैपसूल जल या कनकासव के साथ सुबह, शाम।	श्वासरोग नाशक।
३	श्वासहारी कैपसूल	ज्वाला आयु०	,, ,,	,, ,,
४	एज्मोसूल कैपसूल	पंकज फार्मा	,, ,,	,, ,,
५	श्वास का...रि	जी० ए० मिश्रा	१–१ कैपसूल प्रातः, दोपहर, शाम जल के साथ।	,, ,,
६	दव दमा	डावर	साधारण अवस्था में १०-१५ बूंद ओषधि १४ मि० लि० शीतल जल में मिलाकर, एक खुराक दिन में	,, ,,

			३ बार दें। दमा के तीव्र वेग में १०-१५ बूंद औषधि दिन में तीन बार प्रति ३ घण्टे पर दें।	
७	अपमार्गादि घनसत्व	गर्ग वनौषधि	१-१ ग्राम आवश्यकतानुसार जल से।	इससे कफ ढीला होकर निकल जाता है और दौरा शान्त होकर रोगी को चैन आ जाता है।
८	कल्पसोमा सूचीवेध	प्रताप फार्मा	१-२ मि० लि० मांस में।	श्वास की तीव्रता में लाभकर है।
९	श्वासरि	जी० ए० मिश्रा	" "	" "
१०	श्वासामृत	ए० वी० एम०	२ मि० लि० मांस में। दौरे के समय २ मि० लि० नस में धीमे-धीमे लगावें।	" "
११	सोमा	मार्तण्ड	१ मि० लि० चर्म में (इसका सूचीवेध केवल चर्म में ही लगाना चाहिये) आवश्यकता पड़ने पर ३० मिनट बाद दुबारा लगावें।	श्वासनाशक सुप्रसिद्ध सूचीवेध है। (विशेष विवरण नीचे देखें)[1]
१२	हिरण्य	मार्तण्ड	१ मि० लि० चर्म में प्रतिदिन।	श्वास के जीर्ण रोगियों में सोमा के साथ मिलाकर दें।

• **सोमा इञ्जेक्शन**—यह श्वास, दमे का सुप्रसिद्ध इञ्जेक्शन है। यह श्वास-प्रश्वास की गति को नियमित करता है तथा हृदय को उत्तेजित करता है। इससे वायुकोषों तथा श्वास-नलिकाओं की सिकुड़न और ऐंठन दूर होती है तथा श्वास सरलतापूर्वक लाने में सहयोग प्रदान करता है। रोगी को प्राणवायु मिलने से उसकी बेचैनी तुरन्त दूर हो जाती है। यह तमक श्वास के तीव्र दौरे को तुरन्त शान्त करता है। निपात (Collapse) एवं स्तब्धता (Shock) की अवस्था में हृदय तथा रक्त परिभ्रमण को उत्तेजित करने के लिए इसका प्रयोग लाभप्रद पाया गया है। —सम्पादक।

[३] प्रमुख पेटेण्ट एलोपैथिक योग

औषधि का नाम	निर्माता	मात्रा एवं व्यवहार-विधि	विशेष
१. इञ्जेक्शन—			
१. बेटनेसोल (Betnesol)	Glaxo	४ मि० ग्रा० का एम्पुल दिन में ३-४ बार मांस में या नस में आवश्यकतानुसार दें।	श्वास की आत्यधिक अवस्था में इनका प्रयोग करावें।
२. डेकाड्रोन (Decadron)	M. S. D.	१ मि० ग्रा० से २ मि० ग्रा० तक आवश्यकतानुसार मांस में या नस में दें।	" "

३ डेल्टाकार्टिल (Deltacortil)	Pfizer	२०-३० मि० ग्रा० तक विभाजित मात्रा में एक दिन में मांस में दें।	श्वास की आत्ययिक अवस्था में इसका प्रयोग करावें।
४. डेरीफाइलिन (Deriphylin)	German Remedies	१–२ एम्पुल दिन में २-३ बार आवश्यकतानुसार नस में या मांस में दें।	" "
५. एमीनोफाइलिन (Amenophylin)	B. I.	१ एम्पुल दिन में २-३ बार नस में धीमे-धीमे दें।	" "
६. केडीफाइलेट (Cadiphylate)	Cadila	१ एम्पुल मांस में आवश्यकतानुसार दें। तीव्र प्रभाव के लिये ३ मि० लि० डिस्टिल वाटर मिलाकर नस में दें।	" "
७. डाइक्राइस्टीसिन-एस (Dicrictisin-S)	Sarabhai	सैन्सिटिविटी टैस्ट करके ½ ग्राम से १ ग्राम तक दिन में १-२ बार।	संक्रमण को रोकने के लिए इसका प्रयोग करावें। संक्रमण के लिए और भी एण्टीबायोटिक्स ग्रुप दिये जाते हैं, जैसे एम्पिसिलिन ग्रुप में वेसीपेन (एलेम्बिक), कैम्पिसिलिन (कैडीला), आक्सी टेट्रामाइक्लिन ग्रुप में टेरामाइसिन (फाइजर) आदि इनके इञ्जेक्शन या कैपसूल आवश्यकतानुसार दें।
२. कैपसूल तथा टेबलेट—			
१. एस्मापेक्स डिपोट टेबलेट (Asmapex depot tab.)	Nicholas	१ गोली सुबह तथा १ गोली रात को दें। आवश्यकतानुसार अधिक भी दे सकते हैं।	श्वासवेग की तीव्रता को रोकती है।
२. एस्थेलिन टेब० (Asthalin tab.)	Cipla	१–२ टेबलेट दिन में ३-४ बार सेवन करावें	" "
३. कैडीफाइलेट टेबलेट (Cadiphylate tab.)	Cadila	" "	" "
४. कोर्टास्मिल टेबलेट (Cortasmyl tab.)	Roussel	" "	" "

५. डेरीफाइलिन टेवलेट (*Deriphylin tab.*)	German Remedies	१-१ गोली दिन में ३-४ वार सेवन करावें।	श्वासवेग की तीव्रता को रोकती है।
६. मेरैक्स कैपसूल (Marax cap.)	Pfizer	१–१ कैपसूल दिन में ३-४ वार।	" "
७. सेडोनल टेवलेट (Sedonal tab.)	East India	१–२ गोली दिन में ३-४ वार दें।	" "
८. टेड्राल टेवलेट (Tedral tab.)	Warner	" "	" "
९. टेड्राल-सी टेव० (Tedral-C tab.)	"	" "	अधिक समय तक जीर्ण श्वास के रोगी को प्रयोग करावें।
१०. एफरान टेवलेट (Afran tab.)	Hoechst	१–२ ड्रेगी दिन में ३-४ वार दें।	" "
११. डेकाड्रॉन टेवलेट (Decadron tab.)	M. & D.	१–२ टेवलेट दिन में २-३ वार।	श्वासवेग को रोकने के लिए।
१२. फारिस्टाल टेव० (Foristal tab.)	Ciba Geigy	½–१ गोली दिन में २-३ वार दें।	असहिष्णुताजन्य श्वास में उपयोगी।
१३. हिस्टाप्रेड टेव० (Histraped tab.)	Wyeth	१–२ गोली दिन में २-३ वार दें।	" "
१४. इन्सीडाल टेवलेट (Incidal tab.)	Bayer	" "	" "
१५. बेनाड्रील कैपसूल या कैपसील (Benadryl caps or Kapseals)	Parke Davis	१ कैपसूल (२५ मि०ग्रा०) सुबह, दोपहर, शाम। कैपसील (५० मि०ग्रा०) सुबह, शाम या आवश्यकतानुसार।	" "
३. पेय—			
१. एविल एक्सपेक्टोरेण्ट (Avil Expectorant)	Hoechst	१–२ चम्मच × ४ वार, बच्चों को आधी मात्रा दें।	कफ को बाहर निकालकर श्वासवेग को कम करती है।
२. एफेडैक्स सीरप (Efedex Syrup)	Alembic	" "	" "
३. बेनाड्रिल एक्सपेक्टोरेण्ट (Benadryl Expectorant)	Parke Davis	" "	" "
४. जीट एक्सपेक्टोरेण्ट (Jeet Expectorant)	Alembic	" "	" "
५. सेडेक्स (Sedex)	Wockhardt	" "	" "
६. सोवेण्टोल (Soventol)	Boehringer knooll	" "	" "

स्त्रीविकार (सामान्य)

[अ] एकौषध एवं साधारण प्रयोग

[1] मासिकस्राव सम्बन्धी विकार (रजोदोष)—

(१) अजवायन चूर्ण २ ग्राम की मात्रा में प्रातः-सायं गर्म दूध या जल के साथ कुछ दिन तक निरन्तर सेवन कराते रहने से मासिकधर्म की रुकावट दूर होकर खुलकर रजःस्राव होने लगता है।

(२) मासिकधर्म के समय भयंकर वेदना या कष्ट हो और रजःस्राव बहुत कम होता हो तो खुरासानी अजवायन के १ ग्राम चूर्ण में थोड़ा सा खाने का सोड़ा मिलाकर गोखरू के क्वाथ के साथ सेवन कराने से मासिकस्राव की रुकावट दूर होकर कष्ट का निवारण हो जाता है।

(३) यदि रजःरोध हो मासिकधर्म न होता हो तो अडूसापत्र १० ग्राम तथा मूली के बीज, गाजर के बीज ६-६ ग्राम इनका क्वाथ करके कुछ दिन तक पिलाने से यह विकार दूर हो जाता है।

(४) यदि रजःस्राव में रुकावट हो तो अनन्नास के कच्चे फल के १० ग्राम रस में अश्वत्थ वृक्ष की छाल का चूर्ण तथा गुड़ १०-१० ग्राम मिलाकर सेवन कराने से मासिकस्राव की रुकावट दूर हो जाती है।

(५) यदि अत्यार्तव सम्बन्धी विकार हो तो अपामार्ग के ताजे पत्ते २५ ग्राम को १० ग्राम दूर्वा के साथ पत्थर पर पीसकर ५० ग्राम जल में छानकर उसमें १०० ग्राम गाय का दूध तथा १० ग्राम मिश्री मिलाकर प्रतिदिन प्रातः ७ दिन तक पिलाने से लाभ होता है।

(६) बड़ी अरनी के पत्ते २५ नग, छोटी कटेरी के पत्र २५ नग तथा बायविडङ्ग, कलोंजी, मूली के बीज ३-३ ग्राम जौकुट कर आधा किलो जल में अष्टमांश क्वाथ सिद्ध कर उसमें १० ग्राम पुराना गुड़ मिला ऋतु समय से ३ दिन पूर्व प्रातःसायं पिलाने से मासिकधर्म खुलकर साफ हो जाता है।

(७) अश्वगन्धा ५० ग्राम, पठानीलोध्र तथा विधारा ४०-४० ग्राम तीनों को कूट-पीसकर रख लेवें। ६ ग्राम तक की मात्रा में दूध के साथ सेवन कराने से अत्यार्तव में लाभ होता है तथा अत्यार्तव जन्य दुर्बलता दूर होती है।

(८) अत्यार्तव या गर्भाशय से स्रवित होने वाले रक्तस्राव की अवस्था में आंवले का कल्क ६ ग्राम तथा शहद ३ ग्राम मिश्रण कर प्रातः-सायं सेवन कराने से विशेष लाभ होता है। यदि योनि से दुर्गन्धयुक्त गाढ़ा स्राव होता हो तो उक्त प्रयोग के साथ आंवलों के फाण्ट से उत्तर वस्ति द्वारा गर्भाशय का प्रक्षालन करने से विशेष लाभ होता है।

(९) मासिकधर्म की रुकावट हो तो इन्द्रायण के बीज ३ ग्राम तथा कालीमरिच ५ नग दोनों को यवकुट कर २५० ग्राम जल मे चतुर्थांश क्वाथ सिद्ध कर पिलाने से तथा इन्द्रायण की जड़ ४० ग्राम और जायफल १० ग्राम दोनों को जौकुट कर प्रातः-सायं भग स्थान पर धूनी देने से मासिकधर्म का स्राव होने लगता है।

(१०) उलटकम्बल की जड़ को जौकुट कर लगभग १ किलो ले लें और ४ किलो जल मे पकावें। १ किलो शेष रहने पर छानकर उसमें १०० ग्राम कालीमरिच का चूर्ण तथा १। किलो गुड़ मिलाकर चीनी मिट्टी के पात्र में मुख बन्द कर १ माह तक धान्यराशि में दबादें फिर छानकर बोतलों में सुरक्षित रखलें। १०-२५ ग्राम तक समानभाग जल मिलाकर दोनों समय भोजनोपरान्त ऋतुधर्म होने से १ सप्ताह पूर्व इसका सेवन कराने से ऋतुधर्म की रुकावट दूर होती है।

(११) अनियमित ऋतुस्राव के साथ गर्भाशय जंघा तथा कमर में विशेष पीड़ा हो तो उलटकम्बल के मूल का रस ४ ग्राम तक लेकर उसमें शक्कर मिलाकर सेवन करने से २ दिन में ही लाभ हो जाता है।

(१२) उलटकम्वल की जड़ की छाल ६ ग्राम तथा कालीमरिच ३ नग दोनों को शीतल जल में पीस छानकर ऋतु के सात दिन पहले से सेवन कराने से मासिक सम्वन्धी सभी विकार दूर होकर ऋतुस्राव खुलकर होता है और गर्भाशय वलिष्ट होता है।

—वनौषधि विशेषांक भाग १ से।

(१३) कठगूलर के फलों का रस ६ ग्राम तक लेकर उसमें सममाग शहद मिलाकर सेवन करावें तो मासिक-स्राव में आने वाला अति रक्तस्राव दूर होता है।

(१४) कपास की जड़ का क्वाथ पञ्चमांश सिद्ध करके अर्थात् १ किलो जल हो तो शेष जल २०० ग्राम रहने पर छानकर उसमें थोड़ी सी चीनी मिलाकर २५-५० ग्राम तक की मात्रा में दिन में २ वार देने से अनार्तव में लाभ होता है।

(१५) कष्टार्तव के शमनार्थ कपासमूल ५० ग्राम का यथाविधि १६ गुना जल मिलाकर क्वाथ करें। वादामरोगन ६० ग्राम मिलाकर प्रातः पान करने से लाभ होता है।

(१६) कपासफूल की पुटपक्वभस्म ३ ग्राम की मात्रा में जल के साथ दिन में २-३ वार पिलाने से मासिकधर्म के समय प्रमाण से अत्यधिक रक्तस्राव में लाभ होता है।

(१७) कलौंजी का चूर्ण ५-१० रत्ती तक शहद के साथ दिन में २-३ वार चटाते रहने से रजोरोध तथा कष्टार्तव में लाभ होता है। कष्टप्रसव तथा प्रसव के पश्चात् गर्भाशय संशोधनार्थ इसका प्रयोग कराने से लाभ होता है।

(१८) कायफल के साथ काले तिल, केशर तथा सनई के वीजों का एकत्र चूर्ण कर गुड़ के अनुपान के साथ देने से कष्टार्तव में लाभ होता है

(१९) कासनी के वीज १० ग्राम जौकुट कर ४०० ग्राम जल में अष्टमांश या चतुर्मांश क्वाथ सिद्ध कर दिन में २-३ बार गुड़ मिलाकर पिलाते रहने से ३-४ दिन में मासिकस्राव की रुकावट दूर हो जाती है।

(२०) कीड़ामार पंचांग के मोटे चूर्ण १० ग्राम को २५० ग्राम पानी में फाण्ट या हिम बनाकर २५ से ५० ग्राम तक की मात्रा में पिलाने से ऋतुस्राव की रुकावट दूर होती है तथा वह नियमित हो जाता है।

(२१) कूठ के चूर्ण १॥ ग्राम के साथ कर्पूर ४ रत्ती खरल कर शहद ४ ग्राम में मिलाकर दिन में २-३ वार देने से मासिकधर्म बिना कष्ट पीड़ा के समय पर आने लगता है तथा नष्टार्तव और पीड़ितार्तव दूर होता है। यह प्रयोग मासिकधर्म आने के ७ दिन पहले शुरू कर देना चाहिये। तीव्र पीड़ा की शान्ति हो जाने पर यह प्रयोग प्रातः-सायं ७ दिन तक लेवें इस प्रकार ४-६ माह तक प्रयोग करना चाहिये।

(२२) कनेर ५ रत्ती से १० रत्ती तक लेकर उसमें सममाग अकरकरा चूर्ण मिलाकर जल के साथ खूब खरल कर ३ गोली बनाकर दिन में २-३ वार सेवन कराने से तथा इसी चूर्ण की गोली बनाकर योनिमार्ग में रखने से पीड़ितार्तव, कष्टार्तव तथा गर्भाशयशूल में लाभ होता है। अथवा इसकी १ ग्राम मात्रा के साथ ४ रत्ती कर्पूर मिलाकर उष्णोदक में खरल कर मासिकधर्म के समय तीन दिन पहले प्रातः-सायं पिलाते रहने से गर्भाशयशूल नहीं होता तथा मासिकधर्म खुलकर हो जाता है।

—वनौषधि विशेषांक भाग २ से।

(२३) चौलाईमूल के साथ गुलाब के पत्ते व तेलिया गेरू प्रत्येक ६-६ ग्राम, कपास की जड़ १½ रत्ती तथा पुराना गुड़ २० ग्राम लेकर सबको ७५० ग्राम जल में चतुर्थांश क्वाथ सिद्ध कर छानकर नित्य ३ दिन तक केवल प्रातः-काल पिलाने से मासिकधर्म की रुकावट दूर होती है तथा गर्भाशय की शुद्धि हो जाती है।

(२४) जटामांसी के चूर्ण तथा काले जीरे का चूर्ण १-१ ग्राम तथा कालीमरिच चूर्ण ½ ग्राम एकत्रकर मिश्रण को दिन में २ वार जल के साथ अथवा गोमूत्र के साथ सेवन कराने से स्त्रियों के मासिकस्राव के समय होने वाली पीड़ा तथा मानसिक और शारीरिक अवसाद में लाभ होता है।

(२५) काले तिल, लसोड़ा तथा सौंफ का क्वाथ कर उसमें गुड़ मिलाकर पीने से अथवा २५ ग्राम तिलों को कूटकर १०० ग्राम पानी में पकावें ५० ग्राम पानी शेष रहने पर १० ग्राम पुराना गुड़ मिलाकर छानकर कुछ दिन इसी प्रकार प्रातः-सायं पीने से ७-१४ दिन में मासिकधर्म खुलकर होने लगता है व कष्टार्तव में भी

लाभ होता है। अथवा काले तिल, सोंठ, मरिच, पीपर, भारङ्गी तथा गुड सममाग का क्वाथ नित्य प्रातः-सायं १५ दिन तक पिलाने से अनार्तव, कष्टार्तव में लाभ होता है।

(२६) मासिकस्राव के समय यदि अत्यधिक रक्त आता हो, तो तिल के क्वाथ में त्रिकटु, भारङ्गी व लोध्र का चूर्ण मिला सेवन कराने से वह बन्द हो जाता है।

(२७) तृण चाय (Andropogan citralus) ताजा तथा गीला २५-३० ग्राम तक की मात्रा में और कालीमरिच ३ ग्राम लेकर उसमें १०० ग्राम पानी मिलाकर पकावें। ७५ ग्राम जल शेष रहने पर छानकर उसमें थोड़ा गुड़ या शक्कर मिलाकर, जब मासिकधर्म के समय उदर में शूल हो तब पिला दें तो पीड़ितार्तव, नष्टार्तव तथा अल्पार्तव में लाभ होता है।

(२८) मासिकधर्म बहुत कष्ट से [अति पीड़ापूर्वक] आता हो, तो नागफनी-थूहर के फलो को कुचलकर १०० ग्राम रस निकाल उसमे सममाग कूपजल मिलाकर पकावें। उबाल आने पर नीचे उतार उसमें से आधा गरम कर रात्रि के समय पिला दें और शेष आधा क्वाथ फेंक दें। इस प्रकार कुछ दिनो तक सेवन कराने से लाभ होता है।

(२९) कुटा हुआ धनिया ६ ग्राम को आधा किलो जल मे कलईदार पात्र में पकावें। आधा जल शेष रहने पर छानकर मिश्री १०-२० ग्राम मिला सुखोष्ण पिलावें। इस प्रकार ३-४ दिन तक पिलाने से अत्यार्तव में लाभ हो जाता है।

(३०) स्त्री को अकाल में ही मासिक बन्द हो गया हो या साफ न आता हो, तो श्वेत दूब और अनार की कली दोनों को बासी पानी मे धोये हुए चावल के धोवन के साथ पीसकर ७ दिन तक पिलाने से लाभ होता है।

—वनौषधि विशेषांक भाग ३ से।

(३१) अत्यार्तव की दशा में जब खून अधिक आता हो और रुकता न हो, तो ७ नीबुओं के रस में रसौत साफ ५० ग्राम तथा अफीम साफ १० ग्राम एकत्र मिला साफ खरल में घोटें और गाढ़ा हो जाने पर छोटी-छोटी गोलियां बना लें। १-१ गोली ३-४ घण्टे के बाद चावलों के धोवन के साथ अथवा रसौत के पानी (४ रत्ती को १०० ग्राम पानी में मिला दें) के साथ प्रातः-सायं केवल २ वार देवें। गर्भपात होने के पूर्व जो रक्तस्राव प्रारम्भ हो जाता है, उस समय भी उक्त गोलियों के सेवन से कितना भी खून आ रहा हो, उसी क्षण बन्द हो जाता है। समयानुसार १५-१५ मिनट या १-१ घण्टा या २-२ घण्टे बाद देवें। यदि ग्रीष्म ऋतु हो, तो चन्दन के शर्बत या चावलों के धोवन के साथ सेवन करावें। शीत ऋतु में ताजे पानी से दें।

(३२) कष्टार्तव या मासिकधर्म में पीड़ा की विशेषता हो, तो नीमपत्रों को पानी की भाप पर स्वेदित कर गरम-गरम नाभि के नीचे बांधने से मासिकधर्म के समय होने वाला कष्ट दूर होता है।

(३३) जौकुट की हुई नीम की छाल, गाजर के बीज, ढाक के बीज प्रत्येक ६-६ ग्राम, काले तिल तथा पुराना गुड़ २०-२० ग्राम, सबको एकत्र कर मृतपात्र में ३०० ग्राम पानी के साथ पकावें। १०० ग्राम शेष रहने पर छानकर ७ दिन तक पिलाने से मासिकधर्म खुलकर होने लगता है।

(३४) रुद्धार्तव में प्याज ५० ग्राम को १ किलो जल में पकावे। १००-२०० ग्राम जल शेष रहने पर उसमें ३० ग्राम गुड़ मिलाकर गरम-गरम पिलाने से अथवा प्याज के ५० ग्राम रस को गुनगुना कर रात्रि को सोते समय पिला देने से अथवा १०० ग्राम प्याज को कतरकर उसमें गरम मसाला मिला घृत में भूनकर खिलाने से रुका हुआ मासिकधर्म होने लग जाता है।

(३५) देवदाली के पके हुए शुष्क फल तथा बीज २५ ग्राम, रेंडी बीज की गिरी तथा पुराना गुड़ ५०-५० ग्राम लेवें। प्रथम गुड़ में थोड़ा जल मिलाकर चाशनी करें। फिर उसमें उक्त शेष द्रव्यों का चूर्ण मिलाकर जामुन जैसी लम्ब गोल वत्तियां बना लेवें। इसे गर्भाशय या योनिमार्ग में धारण करने से बन्द हुआ मासिकधर्म पुनः आने लगता है। ध्यान रहे यदि गर्भाशय या गर्भाशय के मुख पर शोथ हो, तो इस प्रकार के तीव्र उपचारों का प्रयोग नही कराना चाहिये तथा अधिक निर्बल एवं नाजुक प्रकृति की रुग्णा के लिए सौम्य उपचार करना चाहिये।

(३६) देवदाली के पंचांग स्वरस में रुई भिगोकर बत्ती बना गर्भाशय के मुख पर दिन में २ बार रखने से ७ से १४ दिनों में आर्तव प्रवृत्ति होने लगती है, किन्तु गर्भिणी और निर्बल स्त्रियों पर इसका प्रयोग नहीं कराना चाहिये। —वनौषधि विशेषांक भाग ४ से।

(३७) कष्टार्तव या नष्टार्तव की अवस्था में बांस की गांठ का मोटा चूर्ण २० ग्राम तथा ४० ग्राम सोया बीज दोनों को एकत्र ६६० ग्राम जल में पकावें। अष्टमांश शेष रहने पर छानकर उसमे २५ ग्राम गुड़ मिला सेवन करावें, तो कुछ दिनों मे लाभ हो जाता है।

(३८) बांस के कोमल पत्र, सोया बीज, अमलतास का गूदा, वायविडङ्ग, कलोंजी, मूली बीज, हंसराज, अजमोद, मंजीठ, अपामार्ग मूल, तोदरी सुर्ख, हरमल; इन्द्रायणमूल प्रत्येक १०-१० ग्राम, चित्रकमूल की छाल ८ ग्राम, कपासमूल की छाल व गाजर के बीज २०-२० ग्राम। सबको यवकुट कर उसमे से २० ग्राम चूर्ण ४०० ग्राम जल में शाम को मिट्टी के पात्र मे भिगोकर प्रातः पकावें। १०० ग्राम जल शेष रहने पर उसमे गुड़ डालकर महायोगराज गुग्गुल १० ग्राम के साथ, जिस दिन मासिकधर्म हो उसी दिन से प्रारम्भ कर ४ दिन तक सेवन कराने से मासिकधर्म के सर्व विकार अनियमित रूप से होना, कष्ट के साथ होना आदि दूर होते हैं और ऋतुस्राव खुलकर साफ होता है। गर्भाशय के सभी विकार दूर होते हैं तथा दूषित रक्त मासिकधर्म के साथ निकल जाता है एवं गर्भाशय सन्तानोत्पत्ति के योग्य हो जाता है।

(३९) बांस की गांठ अथवा कोमलपत्र, अमलतास की फली की छाल, कपासमूल, गाजर बीज, मूली बीज, काले तिल, गोखरु, इन्द्रायणमूल, कचरी बीज, सौंफ की जड़ समभाग जौकुट कर १० ग्राम चूर्ण को ३२० ग्राम जल में चतुर्थांश क्वाथ कर छान उसमे १० ग्राम पुराना गुड़ मिलाकर प्रातः पिलावे। ७ दिन पिलाने से बहुत समय का रुका हुआ मासिकधर्म पुनः शुरु हो जाता है।

(४०) केला की जड़ का मोटा चूर्ण कर ३ ग्राम की मात्रा में २०० ग्राम जल मिलाकर चतुर्थांश क्वाथ सिद्ध कर दिन में २-३ बार सेवन कराने से ३ दिन में ही मासिकधर्म की शुद्धि होकर रजःस्राव कम होना, कष्ट के साथ होना, गर्भाशय में दर्द होना आदि विकार दूर होते हैं।

(४१) ब्रह्मदण्डीमूल जौकुट कर २० ग्राम, पुराना गुड़ ३० ग्राम और जल ३०० ग्राम एकत्र कर पकावें। १०० ग्राम शेष रहने पर छानकर प्रातः सूर्योदय के पूर्व पिला दें। यह प्रयोग मासिक होने के ७ दिन पूर्व चालू करना चाहिये। इससे मासिक खुलकर आ जाता है तथा मासिकस्राव के समय होने वाली पीड़ा शान्त होती है।

(४२) यदि जीर्ण बीजाशय प्रदाह के कारण मासिक धर्म में विकृति हुई हो तो चरस १ भाग, अफीम १ भाग, कर्पूर २ भाग एकत्र मिलाकर ग्वारपाठे के रस मे या जल में खरल कर २-२ रत्ती की गोलियां बना लें। प्रातः-साय १-१ गोली २-४ मास तक देते रहने से बीजाशय तथा मासिकधर्म विकृति दूर होती है।

(४३) अरीठे के फलो की मगज को पीसकर उसकी बत्ती बना स्त्री की जननेन्द्रिय मे रखने से मासिकधर्म की रुकावट दूर होती है। प्रसव के समय भी बत्ती रखने से बिना विलम्ब के प्रसव हो जाता है।

(४४) सौंफ यवकुट २० ग्राम को १ किलो पानी में क्वाथ करें। चतुर्थांश शेष रहने पर खांड २० ग्राम, दूध २५० ग्राम मिलाकर सुबह, शाम पिलाने से, यदि स्राव कम हो गया हो या बन्द हो गया हो, तो जारी हो जाता है।

(४५) यवकुट सौंफ २० ग्राम, गुड़ २० ग्राम को १ किलो पानी में क्वाथ बनावें तथा चतुर्थांश होने पर छानकर मन्दोष्ण पिलावें तो रुका हुआ ऋतुधर्म चालू हो जाता है।

(४६) मासिकधर्म बन्द हो जाना, मासिकधर्म के समय अत्यन्त कष्ट होना, मासिकधर्म अत्यन्त देर से आना आदि विकारों में हरमल का फाण्ट कुछ दिन तक ३-४ माह तक मासिकधर्म आने के एक सप्ताह पहले से देने से ये विकार दूर हो जाते हैं

—वनौषधि विशेषांक भाग ६ से।

(४७) कड़वी तुम्बी के बीज, दन्ती, बड़ी पीपर, पुराना गुड़, मैनफल, सुराबीज तथा यवक्षार इन सबको बराबर-बराबर लेकर पीस छानलें। फिर इस चूर्ण को थूहर के दूध में पीसकर छोटी अंगुलि के समान वत्तियां बनाकर छाया में सुखालें इसमें से १ रत्ती रोज गर्भाशय के मुख या योनि में रखने से मासिकधर्म खुल जाता है।

(४८) कालेतिल, सोंठ, कालीमरिच, पीपर, भारङ्गी तथा गुड़ यह सब दवायें समान-समान भाग लेकर २० ग्राम का क्वाथ बनाकर २० दिन तक पिया जाय तो निश्चित रुका हुआ मासिकधर्म खुल जाता है।

(४९) मूली के बीज, गाजर के बीज, मैंथी के बीज इन तीनों को ६०-६० ग्राम लाकर कूट-पीस और छान-कर रखलें। इस चूर्ण में से १० ग्राम के लगभग गरम पानी से कुछ दिन तक लेते रहने से मासिकस्राव खुलकर आने लगता है।

(५०) असमय में रजोधर्म बन्द हो जाने पर इन्द्रा-यन की जड़ को सिल पर जल के साथ पीसकर छोटी अंगुलि के समान वत्ती बनालें और उस वत्ती को योनि या गर्भाशय के मुख पर रखें तो कुछ दिन में रजोधर्म खुलकर होने लगता है।

(५१) भारङ्गी, सोंठ, बड़ी पीपर, कालीमरिच, कालेतिल इन सबको मिलाकर २० ग्राम ले लें और २५० ग्राम पानी के साथ हांडी में पकावें। जब चौथाई जल रह जाय तो उतारकर छानलें और रोगिणी को पिलादें इस योग से रुका हुआ मासिकधर्म खुलकर आने लगता है।

—चिकित्सा चन्द्रोदय से।

(५२) कालेतिल, ब्रह्मदण्डी, जेष्टीमधु, सोंठ, पीपर, कालीमरिच सब समानभाग लेकर यवकुट कर १ किलो पानी में पकावें चौथाई भाग अवशेष रहने पर छानकर पीवें तो रजोविकार ठीक हो जाता है।

—पं० रमाकान्त झा द्वारा
धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(५३) मुसब्बर धुला हुआ, मुरमकी दोनों २०-२० ग्राम, केशर, लोहभस्म, हींग तीनों ६-६ ग्राम सब औष-धियों को कूट छानकर शहद में मिलाकर १-१ रत्ती की गोलियां बनालें। माहवारी खून दर्द से आना, ठीक न आना, आदि पर यह गोलियां मासिकस्राव से कुछ दिन पहले देने से लाभ होता है। —कविराज विश्वनाथ द्वारा
धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(५४) गुड़हर के फूल ५ नग को घोट-पीसकर २५० ग्राम जल में छानलें फिर मालकांगनी के पत्तों की भस्म २ ग्राम मिलाकर नित्य प्रातः-सायं पिलावें तो बन्द रजो-धर्म फिर जारी हो जाता है और नियमित सहज होने लगता है। —पं० शंकरलाल जैन द्वारा
धन्वन्तरि अनुभूत योगांक से।

(५५) कमलगट्टा की मिगी, तगर, कूठ मीठा, मुल-हठी, श्वेत चन्दन पांचों १०-१० ग्राम पीस लें। बकरी के दूध के साथ ६-६ ग्राम ऋतु के दिनों में सेवन करावें, तो मोक्षक पीड़ा, पेडू की जलन, हाथ-पैरों की गरमी आदि विकार दूर होते हैं।

(५६) मुलहठी, श्वेत चन्दन, खस, कमल, लाख, खीरा की मींग, पद्माक, धाय के फूल, कदली फल, बट के अंकुर प्रत्येक १०-१० ग्राम ले पीसकर रखें। ४-४ ग्राम की मात्रा में ऋतु के दिनों के बाद प्रातः, सायं २४ दिन गोदुग्ध में मिश्री मिलाकर सेवन करावें, तो मासिक-स्राव की पीड़ा शान्त हो जाती है तथा मासिक विना कष्ट के खुलकर आने लगता है।

—गोस्वामी सीताराम शर्मा द्वारा
नारी रोगांक से।

(५७) बबूल का गोंद ३० ग्राम, छोटी इलायची के दाने १० ग्राम, नागौरी असगन्ध, शतावर ५०-५० ग्राम इन चारों चीजों का चूर्ण बनावें। इस चूर्ण को गाय के धारोष्ण दूध से कम से कम ४० दिनों तक अवश्य सेवन कराना चाहिए। थोड़े दिन ३ से ४ ग्राम तक सेवन कराने से आर्तवशुद्धि हो जाती है। जिनके गर्भ न रहता हो, उन्हें सर्वप्रथम इस औषधि से आर्तव का शोधन कर लेना चाहिए। रजोशुद्धि के बाद ही अन्य चिकित्सा सफल हो सकती है। —पं० चन्द्रशेखर जैन द्वारा
धन्वन्तरि नारी रोगांक से।

(५८) कटुतुम्बी बीज, दन्ती, आसव किण्व, यवतन्तु, पीपल, मैनफल सबको समान भाग ले कूट-पीसकर थूहर के दूध में घोट अंगुली के बराबर मोटी वर्तिका बनाकर रात्रि के समय योनि में धारण करके सुबह निकाल देनी चाहिये। इससे निश्चय ही आर्तव खुल जाता है।

—गुणप्रकाश शर्मा द्वारा
धन्वन्तरि नारी रोगांक से।

(५९) आवश्यकता के अनुसार अजवायन लेकर मिट्टी के बर्तन में ग्वारपाठे के रस की ७ भावना देकर बारीक चूर्ण कर लें। यह अजवायन का चूर्ण ५० ग्राम, उत्तम चीनी ४० ग्राम, गोघृत ४० ग्राम। पहले घृत को गरम करें, फिर उसमें अजवायन का चूर्ण मिलाकर बाद में चीनी मिलावें और किञ्चित् उष्ण रहते ही सेवन करा दें। इसके आठ दिनों के सेवन से स्त्री के ऋतुकाल में होने वाली पीड़ा, रजावरोध आदि विकार दूर हो जाते हैं। गर्भधारण की शक्ति बढ़ती है।

—श्री रामगोपाल शर्मा द्वारा
धन्वन्तरि नारी रोगांक से।

(६०) बांस की कोंपल, काला तिल, कपास की पत्ती १५०-१५० ग्राम, पुराना गुड़ २०० ग्राम। इन सबको चूर्ण कर गुड़ में मिला गूलर के बराबर गोलियां बना लें। गरम जल के साथ सुबह, शाम सेवन कराने से मासिकस्राव खुलकर आने लगता है।

—पं० राधावल्लभ मिश्र द्वारा
धन्वन्तरि सितम्बर ४७ से।

(६१) गाजर के बीजों का कपड़छन चूर्ण १ भाग, मूली के बीजों का कपड़छन चूर्ण १ भाग, सुहागे की खील का चूर्ण आधा भाग। इन सबको एकत्र मिश्रित कर शीशी में बन्द करके रखें। १ से २ ग्राम तक पुराने गुड़ के शर्बत के साथ प्रयोग कराने से कष्टार्तव, नष्टार्तव में लाभ होता है। ऋतुकाल के एक सप्ताह पूर्व से एक सप्ताह बाद तक प्रातःकाल एवं आवश्यकतानुसार सायं भी उपरोक्त औषधि को खिलाकर ऊपर से शर्बत पिलाना चाहिये। रुक-रुक कर होने वाले मासिकधर्म की विकृति में सामान्यतः ३-४ ऋतुकाल पर्यन्त सेवन कराने से आशातीत लाभ होते देखा गया है।

—पं० रामावतार पाण्डेय द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक द्वितीय भाग से।

(६२) प्रत्येक माह मासिकस्राव के समय कटि, पेड़ू आदि में भयंकर दर्द जिन स्त्रियों को होता है; उन्हें कुश की जड़, कास की जड़, अण्डी की जड़, गोखरू की जड़ सभी समभाग लें। इनको कूटकर १२५ ग्राम जल तथा १२५ ग्राम दूध में उबाल लें। जब दूध मात्र शेष रहे, तब रोगिणी को उसकी इच्छानुसार मीठा मिलाकर पिलाने से लाभ होता है।

—श्री जीवानन्द साहू द्वारा
सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(६३) केशर काश्मीरी २० ग्राम, जायफल २० ग्राम, गूलर की छाल २० ग्राम, अशोक की छाल २० ग्राम; कलमी शोरा २० ग्राम, यवक्षार २० ग्राम; सबको कपड़छन करके रख लें। २ ग्राम औषधि में १० ग्राम काले तिल मिलाकर सेवन कराने से सभी प्रकार के रजःविकार दूर होते हैं।

—डा० भगवानदास भण्डारी द्वारा
प्रयोग मणिमाला से।

(६४) राई २० ग्राम, पुराना गुड़ २० ग्राम, केशर १ ग्राम लें। पहले राई को पीसकर गुड़ तथा केशर डाल मूसल से इतना कूटें कि तैल निकलने लगे, तब १-१ ग्राम की गोली बना लें। मासिकधर्म प्रारम्भ होने के १-२ दिन पहले से १-१ गोली प्रातः-सायं कुमारी आसव के साथ सेवन कराने से कष्टार्तव में लाभ होता है।

—वैद्य नाथूराम चौरसे द्वारा
प्रयोग मणिमाला से।

(६५) घृत कुमारी का रस २५० ग्राम, कलमीशोरा ६० ग्राम, हरिद्रा १० ग्राम। सबको कड़ाही में डालकर खूब गरम करें। फिर इस औटाये हुए १० ग्राम रस के साथ गुञ्जा की बुकनी १-१½ रत्ती मिलाकर सेवन करावें। कष्टार्तव में बहुत लाभदायक योग है।

—हरीराम बराटे द्वारा
महिला रोग चिकित्सांक से।

(६६) बबूल का गोंद ३० ग्राम, छोटी इलायची के दाने १० ग्राम, नागौरी असगन्ध, शतावर ५०-५० ग्राम, इन चारों चीजों का चूर्ण बना लें। इस चूर्ण को १० ग्राम की मात्रा में गाय के धारोष्ण दूध के साथ कम से कम ४० दिनों तक सेवन कराने से आर्तव शुद्धि होकर ठीक समय पर तथा ठीक परिमाण में आर्तवस्राव होने लगता है। —पं० चन्द्रशेखर जैन द्वारा धन्वन्तरि नारी रोगांक से।

[२] गर्भाशयजन्य रोग—

(६७) खुरासानी अजवायन के चूर्ण या सत्व की बत्ती बनाकर योनि में धारण कराने से अथवा इसके चूर्ण की छोटी-सी पोटली बनाकर धारण करने से गर्भाशय की वेदना रुक जाती है।

(६८) अनार के १०० ग्राम ताजे पत्तों को १ किलो पानी में पकावें। आधा पानी शेष रहने पर छानकर दिन में २-३ बार इस जल से गर्भाशय का प्रक्षालन करके उसका पिचु धारण कराने और अनारपत्र का कपड़छन चूर्ण ६-६ ग्राम प्रातः-सायं जल के साथ सेवन कराने से लाभ होता है।

(६९) बड़ी अरनी के क्वाथ और पत्र स्वरस के साथ माजूफल के महीन चूर्ण को खरल कर शुष्क करें। इसी प्रकार ७ भावनायें देकर छोटे बेर जैसी गोली बनाकर खिलाने से नीचे को लटकता हुआ गर्भाशय अपने स्थान पर बैठ जाता है।

(७०) योनि मे वायु प्रवेश हो जाने से यदि गर्भाशय में दर्द हो, तो अरनी के ताजे हरे पत्तों का घनसत्व तैयार कर चने जैसी गोली बना गर्भाशय के मुख में रखने से शीघ्र लाभ होता है।

(७१) आम के फूल, छाल तथा पत्तों को पानी में पीस पिचुवर्तिका बना योनि मे धारण करने से गर्भाशय द्वारा स्रवित दुर्गन्धयुक्त जल बन्द हो जाता है तथा योनि की दुर्गन्ध दूर हो जाती है। साथ में यदि आम के बौर का चूर्ण भी प्रातः-सायं १-२ ग्राम की मात्रा में जल के साथ सेवन कराया जाय, तो उक्त रोग में विशेष लाभ होता है। —वनौषधि विशेषांक भाग २ से।

(७२) कपास की जड़ को जौकुट करके ५० ग्राम लेकर ३०० ग्राम जल में यथाविधि क्वाथ करें। जब १०० ग्राम जल शेष रह जाय, तब रजत भस्म १ रत्ती, क्षीरकाकोली चूर्ण १ ग्राम, चोबचीनी चूर्ण ४ रत्ती का मिश्रण मधु के साथ चटाकर ऊपर से यह क्वाथ कुछ दिनों तक पिलाने से गर्भाशय भ्रंश में विशेष लाभ होता है। सप्ताह मे २ बार बला तैल की उत्तरबस्ति देनी चाहिए। इस प्रकार ४०-८० दिनों में पूर्ण लाभ देखने को मिलता है। औषधि की एक मात्रा प्रातःकाल देनी चाहिए।

(७३) गेरुआ[1] १० से २० रत्ती तक, मकई की काजली[2] ७ से ३० रत्ती तक एकत्र खरल कर सोंठ या पीपरामूल के फाण्ट के साथ पिलाने अथवा गेरुआ ६ ग्राम लेकर १२० ग्राम अधौटा (खूब उबलता) पानी में डालकर आधे घण्टे तक ढककर रख दें। बाद में छानकर २५ ग्राम की मात्रा में पिलाने से गर्भाशय संकुचित होने लगता है, जिससे सुविधापूर्वक प्रसव होकर प्रसव के बाद रक्तस्राव नही होता। दर्द शान्त हो जाता है एवं गर्भाशय अपनी पूर्व स्थिति में आ जाता है। प्रसव के बाद ५-६ दिनों तक इसका प्रयोग कराने से बहुत ही लाभ होता है।

(७४) गर्भस्राव या गर्भपात हो जाने के बाद गर्भाशय में उग्रता रह जाने से जो शूल पैदा होता है, उसके निवारणार्थ गोखरू, मुलहठी व मुनक्का को जल के साथ पीस कल्क करें। फिर दूध में मिला-छान शक्कर डालकर पिलाते रहें, तो गर्भाशय शूल शमन हो जाता है। —वनौषधि विशेषांक भाग २ से।

---

१. **गेरुआ**—गेहूँ, जौ आदि के पौधों में होने वाले छत्रक कुल (Fungi) की रोग विशिष्ट वनस्पति को गेरुआ कहते हैं। यही अंग्रेजी में अर्गट (Ergot) कहलाता है।

२. **मकाई की काजली**—मकई तथा ज्वार के खेतों में होने वाली वनस्पति है। इसे काजली, कण्डों, अंगारा आदि कहते है।

(७५) गर्भाशय का मुख संकुचित हो जाने से कई बार गर्भधारणा नहीं हो पाती। ऐसी दशा में शल्यकर्म द्वारा गर्भाशय का मुख चौड़ा करना पड़ता है। लेकिन चित्रक की छाल का क्वाथ कर ठण्डा हो जाने पर छानकर गर्भाशय के मुख पर पतली धार से डूश करते हैं। इससे गर्भाशय का मुख बिना शल्यकर्म के चौड़ा हो जाता है। चित्रक अत्यन्त तीक्ष्ण होती है, इसलिए डूश देने से पहले योनि की दीवारों पर घृत चुपड़ लेना चाहिए।

(७६) गर्भाशय शूल की अवस्था में चौलाई मूल, आंवला, अशोक छाल तथा दारुहल्दी मिला फाण्ट बनाकर पिलाने से गर्भाशय शूल दूर होता है। यह प्रयोग गर्भाशय से होने वाले अति रक्तस्राव में भी लाभकारी है।

(७७) पलाश के पत्तों के स्वरस का डूश देने से अर्थात् गर्भाशय में पत्र स्वरस की वस्ति देने से गर्भाशय-शोथ तथा उसके अन्य विकारों में लाभ होता है।

(७८) प्रसवकाल में पीड़ा बढ़ने पर तथा गर्भाशय शैथिल्यजन्य अति रजःस्राव में गर्भाशय की मांसपेशियों के शैथिल्य को दूर करने के लिए त्वक् चूर्ण, पीपरामूल तथा भांग के साथ उचित मात्रा में खिलाने से लाभ होता है।

(७९) नरगिस के कन्द का चूर्ण २ ग्राम लेकर शहद और जल के पाक (१ भाग शहद और ४ भाग जल एकत्र पकावें, तृतीयांश शेष रहने पर उतार कर ठण्डा करें।) के साथ सेवन कराने से अपरा तथा गर्भाशय के दोष दूर होते हैं।

(८०) नरगिस के कन्द को पीसकर योनि मार्ग में लेप करने से या इसके फल की वर्ति बनाकर गर्भाशय में रखने से गर्भाशय का मुख खुलकर उसके दोष दूर हो जाते हैं।

(८१) प्रसवकाल में सावधानी न रखने से गर्भाशय योनिमार्ग से बाहर निकल आया हो और रोग नया हो, तो उसे पाठामूल के क्वाथ से धोते रहने तथा मांजूफल और फिटकरी की पोटली धारण करते रहने से शीघ्र लाभ होता है।

(८२) बबूल की छाल १ भाग को जल १०० भाग में रात्रि के समय भिगोकर प्रातः आग पर पकावें। आधा जल शेष रहने पर उसे छान बोतलों में भर लें। पेशाब करने के बाद स्त्री इस जल से अपनी योनि को धो लें। अथवा इसका पिचु योनि में धारण कर लें, तो कुछ दिनों में योनि शैथिल्य दूर हो जाता है।

—वनौषधि विशेषांक भाग ४ से।

(८३) गर्भाशय में कर्कस्फोट (कैंसर) होने पर शिरा या केशिका के टूटने पर रक्त निकल जाता है, लसिकास्राव भी होता है। यह स्राव अति दुर्गन्धमय होता है। इस स्राव की अधिक हानि से बचने के लिए सप्ताह में २-३ बार राई के निवाये जल की उत्तरवस्ति द्वारा धोते रहने से लाभ होता है।

(८४) गूलर के ताजे पत्ते १०० ग्राम २ किलो जल में पकावें। जब १ किलो जल शेष रहे तब छानकर टंकण भस्म ३ ग्राम डाल सुखोष्ण जल से योनिप्रक्षालन कराने से तथा योनिप्रक्षालन के बाद शतधौत घृत १०० ग्राम देशी कर्पूर १० ग्राम, यशद पुष्प ३ ग्राम मिलाकर योनि में लगाने से योनिकण्डू रोग दूर होता है।

—पं० वासुदेव शास्त्री द्वारा
महिला रोग चिकित्सांक से।

[३] गर्भावस्था तथा प्रसूतिजन्य विकार—

(८५) अडूसे के पौधे को शनिवार के दिन निमन्त्रण देकर रविवार को प्रातः उसकी मूल लाकर लाल तागे से बांध स्त्री की कमर में बांध दें तथा साथ ही साथ इसकी मूल को जल में घिसकर नाभि के नीचे और योनि पर लेप कर देने से शीघ्र सुखपूर्वक प्रसव हो जाता है।

(८६) वासापत्र ७ ग्राम में समभाग घृत मिलाकर दिन में एक बार ७ दिन तक पिलाने से विभिन्न प्रकार के प्रसूत रोगों से छुटकारा मिल जाता है।

(८७) ताजे अनन्तमूल की छाल १०० ग्राम केले के पत्ते में लपेटकर पुटपाक विधि से पका उसमें श्वेत जीरा २० ग्राम, भुनी हुई प्याज १०० ग्राम, खांड २०० ग्राम, इनको महीन पीसकर सबके समभाग गोघृत मिला नित्य प्रातः-सायं २०-३० ग्राम की मात्रा में ४१ दिनों तक सेवन कराने से गर्भिणी का शरीर कान्तिमान हो जाता है और गर्भपात, गर्भस्राव का भय नहीं रहता।

(८८) अनार के ताजे पत्र २० ग्राम को १०० ग्राम जल में पीस-छानकर पिलाते रहने से तथा पत्तों को पीसकर पेडू पर लेप करते रहने से गर्भपात या गर्भस्राव का भय नहीं रहता।

(८९) औंधाहूली के पंचांग का स्वरस ४० ग्राम तक प्रातः-सायं कुछ दिनों तक पिलाते रहने से सूखा हुआ मूढ़गर्भ अनायास द्रवीभूत होकर बाहर निकल जाता है।

(९०) अरलू के ताजे पत्तों का रस २० ग्राम के साथ २ गुना नारियल का दूध तथा थोड़ी शक्कर और शहद एकत्र मिला सेवन कराने से प्रसूता की क्षुधा एवं शक्ति में वृद्धि होती है। उक्त छाल के अष्टमांश क्वाथ के प्रयोग से प्रसूता का ज्वर, श्वास-कास भी दूर हो जाता है।

(९१) अरलू की छाल के महीन चूर्ण १ ग्राम में समभाग सोंठ तथा पुराना गुड़ मिला ३ गोलियां बनाकर दिन में ३ बार दशमूल क्वाथ के साथ अथवा ताजे जल के साथ ही सेवन कराने से प्रसूता की सर्व प्रकार की पीड़ायें शीघ्र दूर हो जाती हैं तथा लगातार इसे १५ दिन तक देते रहने से प्रसव के बाद आने वाली दुर्बलता दूर होकर सूतिका रोग होने का भय नहीं रहता।

(९२) अशोक घनसत्व के साथ समभाग लोध्र का घनसत्व, गिलोयसत्व, कमल केशर का घनसत्व तथा वंशलोचन सबको गुलाबजल में खरल कर शुष्क हो जाने पर शीशी में भरकर रखें। १ ग्राम की मात्रा में ३-३ घण्टे के अन्तर से जल के साथ सेवन कराने से स्त्रियों के बार-बार होने वाले गर्भपात तथा गर्भस्राव में लाभ होता है।

(९३) अश्वगन्धा २० ग्राम को चूर्ण कर १ किलो जल और २५० ग्राम गोदुग्ध में पकावें। दूधमात्र शेष रहने पर उसमें गोघृत तथा मिश्री ६-६ ग्राम मिलाकर ऋतुकाल के शुद्धि स्नान के बाद तीन दिन तक सेवन कर पुरुष समागम करने से गर्भ न रहने वाली स्त्री को गर्भधारण हो जाता है।

(९४) यदि बार-बार गर्भस्राव या गर्भपात हो जाता हो, तो अश्वगन्धा तथा श्वेत कटेरी की जड़, इन दोनों का १०-१० ग्राम स्वरस निकालकर प्रथम मास से पांचवें मास पर्यन्त प्रतिदिन प्रातःकाल सेवन कराने से अकाल गर्भपात नहीं होता और गर्भपात के समय इससे गिरता हुआ गर्भपात भी रुक जाता है।

(९५) इन्द्रायण की जड़ को जल में पीसकर और उसमें घृत मिला योनि के ऊपर की ओर तथा पेडू पर लेप करने से शीघ्र प्रसव होकर कष्ट की निवृत्ति होती है, किन्तु फिर उक्त लेप को शीघ्र ही धो डालना चाहिए।

—वनौषधि विशेषांक भाग १ से।

(९६) ककड़ी की जड़ १० ग्राम को २५० ग्राम दूध तथा २५० ग्राम जल के मिश्रण में कुचलकर मिला दें और फिर मन्दाग्नि पर पकावें। दुग्ध मात्र शेष रह जाने पर सुखोष्ण पिलाने से गर्भिणी के उदरशूल में शीघ्र लाभ होता है।

(९७) गर्भपात, मृतवत्सा आदि विकारों पर बड़ी कटेरी तथा छोटी पीपर को भैंस के दूध में पीस-छानकर कुछ दिनों तक नित्य २ बार पिलाते रहने से गर्भ सुरक्षित रहकर स्वस्थ शिशु का जन्म होता है।

(९८) कठगूलर की जड़ १०० ग्राम के महीन चूर्ण में मुलहठी ५० ग्राम, मदार के शुष्क फूल, लौंग तथा कालीमरिच तीनों १०-१० ग्राम। इन सबका महीन चूर्ण मिला शहद के साथ खरल कर १॥-२ ग्राम तक की गोलियां बना लें। २-२ गोली दिन में ३ बार खिलाने से गर्भिणी को होने वाली उलटियां या उबाक की शान्ति होती है।

(९९) प्रसव के पश्चात् यदि आंवल ठीक समय पर न निकले तो कटुतुम्बी के फल का सूखा चूर्ण २ भाग, कड़ुवी तोरई का चूर्ण १ भाग, सर्प की कैंचुली १ भाग; इन तीनों के मोटे चूर्ण को सरसों तैल में मिला आग पर थोड़ा-थोड़ा डालें और उस पर एक नलिका रखकर योनि में धुआं प्रवेश करावें, तो आंवल शीघ्र निकल आती है।

(१००) कमल के बीजों को मिश्री मिले हुए दूध के साथ ३-६ ग्राम तक सेवन कराते रहने से गर्भवती स्त्री का शरीर सबल हो जाता है और गर्भस्राव या गर्भपात होने का भय नहीं रहता।

(१०१) यदि बच्चा उत्पन्न होने के समय अधिक विलम्ब हो रहा हो, तो कलिहारी के कन्द को कांजी या गरम पानी में पीसकर पैरों के तलुवों पर, हाथ की हथेलियों पर, पेट पर तथा भगोष्ठों पर लेप करने से शीघ्र प्रसव होता है। प्रसव हो जाने पर लेप को शीघ्र गरम जल से धो डालना चाहिए।

(१०२) यदि प्रसव के समय कोई कष्ट न हो तथा बच्चा पैदा हो गया हो, किन्तु अपरा या जेर शीघ्र न गिरे, तो उपर्युक्त प्रलेप उक्त प्रकार से कराने से लाभ होता है। यदि इससे लाभ न हो, तो कलिहारी के कन्द को महीन पीस बत्ती बनाकर गर्भाशय में प्रविष्ट करावें। सुखपूर्वक प्रसवार्थ उक्त प्रकार से लेप कराने के साथ ही साथ कन्द के १ इन्च के टुकड़े को स्त्री की कमर में बांधने से लाभ होता है।

(१०३) कीड़ामार के शुष्क मूल का चूर्ण ३-६ ग्राम तक लेकर फाण्ट बना पिलाने से या इसके स्वरस को पिलाने से शीघ्र ही गर्भाशय का संकोच होकर सरलतापूर्वक गर्भ निकल आता है। प्रसव के पश्चात् गर्भाशय को संकुचित एवं यथा स्थिति करने में भी यह प्रयोग अर्गट के समान क्रिया करता है।

(१०४) यदि गर्भावस्था में सगर्भा स्त्री के गर्भाशय में अकस्मात शूल होकर रक्तस्राव होने लगे, तो केशर १ ग्राम की मात्रा में २० ग्राम गाय के मक्खन में मिला तथा थोड़ी मिश्री मिला सेवन कराने तथा आवश्यकतानुसार २-३ घण्टे पर पुनः इसे देने से और स्त्री को पूर्ण विश्राम देने से शूलसहित रक्तस्राव की निवृत्ति होती है।

(१०५) खिरनी [Mimusops Hexandra] के बीजों की गिरी, एलुआ, इन्द्रायण की जड़ तथा गाजर के बीज प्रत्येक ३-३ ग्राम, लहसुन की गुली लेकर महीन पीस लम्बी बनाकर स्त्री के गर्भाशय में रखने से बहुत दिनों का रुका हुआ मासिकस्राव चालू हो जाता है। यह प्रयोग अनुभवी वैद्य द्वारा कराना चाहिए। गर्भवती को यह प्रयोग न करावें अन्यथा गर्भस्राव का भय रहता है।

(१०६) खिरनी के बीजों की गिरी के चूर्ण की छोटी पोटली बना उसमें एक लम्बा तागा बांधकर योनिमार्ग के भीतर धारण करें। ३-४ घण्टे बाद तागा खींचकर पोटली निकाल लें। इस प्रकार कुछ दिन करने से गर्भाशय के मार्ग का अवरोध दूर होकर आर्तवस्राव प्रारम्भ हो जाता है। नित्य ताजी पोटली बनाकर धारण करना चाहिए। —वनौषधि विशेषांक भाग २ से।

(१०७) प्रसव के पश्चात् कई स्त्रियों को अनेक विकार हो जाते हैं, यथा—मुंह आ जाना, दस्त लग जाना, योनिशोथ, योनिकण्डू आदि। ऐसी अवस्था में चित्रकमूल चूर्ण को छाछ के साथ उचित मात्रा (१-२ ग्राम) में कुछ दिनों तक खिलाने से यह विकार नहीं होने पाते। यदि प्रसूता को ज्वर हो गया हो, तो चित्रक की मूल २ से ६ ग्राम तथा निर्गुण्डी के मूल की छाल १० ग्राम, इन दोनों को जौकुट कर २५० ग्राम जल में चतुर्थांश क्वाथ सिद्ध कर ठण्डा हो जाने पर उसमें १० ग्राम शहद मिलाकर पिलाने से निर्मूल हो जाता है। इससे गर्भाशय उत्तेजित भी होता है और दूषित आर्तव का स्राव होकर मक्कलशूल की सम्भावना नहीं रहती।

(१०८) यदि बच्चा गर्भाशय के भीतर ही मृत हो, तो उसे बिना शल्यकर्म के चित्रकमूल की छाल का महीन चूर्ण ४ से ८ रत्ती तक की मात्रा में निर्गुण्डी मूल के क्वाथ के साथ पिलाते हैं तथा साथ ही साथ उक्त चूर्ण को मलमल वस्त्र के टुकड़े में पोटली बांधकर योनि में धारण कराने से बाहर निकाला जा सकता है।

(१०९) जिस स्त्री को गर्भस्राव होने की शिकायत हो, उसे रजोदर्शन के समय ४-५ दिन तक प्रत्येक माह चौलाई का क्वाथ यथोचित मात्रा में पिलाने से गर्भपात का भय नहीं रहता।

(११०) जवासे के बीज १० ग्राम में गोघृत ५० ग्राम मिलाकर रजःस्वला होने के ३ दिन बाद ३ दिन तक पिलाने से गर्भस्थापना में सहायता मिलती है। यह साधु-प्रदत्त योग है।

(१११) जामुन की छाल तथा आमवृक्ष की छाल २०-२० ग्राम जौकुट कर १६ गुने पानी में ¼ भाग क्वाथ सिद्ध कर उसकी ३ मात्रा बना दिन में ३ बार धनियां व जीरा चूर्ण २०-२० ग्राम मिलाकर पिलाने से गर्भावस्था में होने वाले अतीसार में शीघ्र लाभ हो जाता है।

(११२) गर्भ के प्रथम माह में ढाक (पलाश) के एक कोमल पत्र के महीन टुकड़े कर २५० ग्राम गोदुग्ध (समभाग जल मिश्रित) में मिला पकावें। दुग्धमात्र शेष रहने पर छानकर मिश्री मिला दिन में १ वार सुखोष्ण पिलावें। इस प्रकार द्वितीय माह में २ पत्र, तीसरे माह में ३ पत्र, इस प्रकार प्रतिमाह १-१ पत्र बढ़ाते हुए ९वें माह में ९ पत्रों का सेवन कराना चाहिए। दूध गाय का होना चाहिए तथा वह स्त्री की इच्छानुसार जितना चाहे, उतना ले सकती है। यह प्रयोग गर्भस्राव या गर्भपात को रोकने के लिए बहुत उत्तम प्रमाणित है। जिन स्त्रियों को ८-१० वार तक गर्भस्राव हो चुका था, उन्हें इससे लाभ हुआ है।

(११३) वार-वार गर्भस्राव व गर्भपात होने की अवस्था में पलाश अर्क• की १० बूंद शर्करा में मिलाकर ९ मास तक देते रहने से गर्भावस्था में कोई उपद्रव नहीं होते और पूर्ण अवधि में सुखपूर्वक प्रसव होता है।

(११४) तिल चूर्ण १० ग्राम, पद्माक या लालचन्दन का चूर्ण ६ ग्राम, दोनों को सिल पर पीसकर १० ग्राम जल में छान थोड़ी मिश्री मिलाकर दिन में १-२ वार पिलाते रहने से वार-वार गर्भस्राव होने का कष्ट दूर हो जाता है। योग ४० दिनों तक सेवन कराना चाहिए।

(११५) धनिये का चूर्ण ३ ग्राम तथा शक्कर १० ग्राम दोनों को चावलों के धोवन में घोट छानकर थोड़ा वार-वार पिलावें। इससे सगर्भा स्त्री के प्रातःकाल होने वाले वमन आदि विकारों में लाभ होता है। यदि सगर्भा की वमन तीव्र हों तो धनियां, नागरमोथा, मिश्री २०-२० ग्राम तथा सोंठ ६ ग्राम इनको आधा किलो पानी में पकाकर आधा शेष रहने पर दिन में ४-४ घण्टे से पिलाने से थोड़े दिन में ही वमन की निवृत्ति हो जाती है।

(११६) गर्भावस्था की प्रारम्भिक दशा में जब गर्भवती को रक्तस्राव होने लगता है तब हरी या श्वेत दूब के ५ ग्राम स्वरस में स्वर्णमाक्षिक भस्म तथा मुक्ताशुक्ति भस्म १-१ रत्ती मिलाकर २-३ वार देने से गर्भस्राव या गर्भपात नहीं होने पाता। —वनौ० वि० भाग ३ से।

(११७) तीसरे माह में या ४ महीने के पूर्व यदि गर्भस्राव का भय हो, गर्भिणी के गर्भाशय में वेदना हो तो नागकेशर के चूर्ण में मिश्री तथा वंशलोचन का समभाग चूर्ण मिलाकर गाय के कच्चे दूध के साथ सेवन कराने से लाभ होता है।

(११८) गर्भवती के वमन, अतीसार, खट्टी डकार आदि की अवस्था में नारङ्गी के रस २५ ग्राम में मधु अथवा मिश्री मिलाकर दिन में ३-४ वार पिलाने से लाभ होता है।

(११९) नारियल का फल जब कली के रूप में होता है उसे नारियल का कोका या पोई कहते है। ऐसी बिना खिली एक पोई लेकर ऊपर का छिलका दूर कर अन्दर के दानों को खरल में कूटकर वारीक करलें। फिर उसमें जायफल, जावित्री, लौंग, कालीमरिच तथा सोंठ २०-२० ग्राम तथा केशर १५ ग्राम पीसकर कपड़े में छानकर मिला देवें फिर थोड़े नारियल के दूध के साथ घोटकर १४ गोलियां बनालें यदि पोई ताजी न मिले तो उसमें नारियल का दूध या गाय का दूध मिलाकर घोटकर गोलियां बनालें। इसकी १-१ गोली प्रातः-सायं गोदुग्ध के साथ सेवन करावें। पथ्य में केवल गोदुग्ध देवें। जल का सेवन विलकुल न करावें। रोगिणी की स्थिति के अनुसार ७,१४,२१ दिन तक यह औषधि दी जाती है तथा औषधि पूरी हो जाने पर भी ४-५ दिन तक पानी पीने को नहीं दिया जाता इस प्रयोग से प्रसूता स्त्री की क्षुधा तीव्र होती है, दूध पचता है, शरीर में रक्त वृद्धि होकर चेहरे पर तेज और लाली दीखने लगती है। सूतिका रोग के अतिरिक्त यह प्रयोग क्षय, संग्रहणी तथा मन्दाग्नि में भी लाभदायक है।

• **पलाश अर्क बनाने की विधि**—ताजी पलाश की जड़ वसन्तकाल में एकत्र कर लें और छोटे-छोटे टुकड़े करके भवका द्वारा अर्क निकाल लें। फिर जड़ से चौथाई भाग ताजे पलाश बीज ले, जौकुट करके उक्त अर्क में रातभर भिगोये रखें। दूसरे दिन इस बीजयुक्त अर्क को भवके से पुनः खींच लें। यही पलाश अर्क कहलाता है।

(१२०) नवीन केशर १० ग्राम तथा रेवन्दचीनी, पीपरामूल, पिप्पली तथा कालीमरिच २०-२० ग्राम, जाविस्री, खांड, लौंग, जायफल, सौंफ, दालचीनी तथा जीरा ४०-४० ग्राम, एवं नारियल की बाल कलिकायें उक्त सब द्रव्यों के बराबर लेकर सबका महीन चूर्ण कर नारियल के दूध या पानी से घोटकर सुपारी के फल जैसी गोलियां बनालें। १-१ गोली प्रातः गोदुग्ध के साथ सेवन से १४ दिन में दुःसाध्य सूतिका रोग भी नष्ट हो जाता है।

(१२१) निर्गुण्डी ३ ग्राम से १० ग्राम तक लेकर क्वाथ विधि से क्वाथ सिद्ध कर ५० ग्राम शेष रहने पर छानकर उसमें पिप्पली चूर्ण २ रत्ती मिलाकर पिलावें। दिन में ३ बार इस क्वाथ के सेवन से गर्भाशय का दूषित अंश दूर होकर प्रसूति के समस्त विकार नष्ट हो जाते हैं। प्रसूतावस्था में श्वेतपाद (सूतिका के पैर की सफेद सूजन (Plegmasia albadolans) नामक व्याधि हो जाती है उसमे भी यह क्वाथ सत्वर लाभकारी है।

(१२२) निर्गुण्डी के पुष्प चूर्ण १-२ ग्राम को शहद के साथ देने से प्रसूता के सूतिका ज्वर में होने वाला गर्भाशय का संकोच दूर होकर अवरुद्ध रक्त निकलने लगता है। समस्त शोथ उतरकर गर्भाशय पूर्व स्थिति में आ जाता है। शोथ अधिक हो तो जननेन्द्रिय पर इसके पत्तों को गरमकर बांधना चाहिये।

(१२३) प्रसूता को प्रथम दिन से ही ३ दिन तक नीम के पत्तों का ताजा रस १५ ग्राम तक की मात्रा में प्रातः पिलाते रहने से गर्भाशय का संकोच होकर उसके आस-पास की सूजन दूर होती है रक्तस्राव ठीक से होता है ज्वर नहीं आता। प्रसूता के दुग्ध की शुद्धि होती है तथा उसकी वृद्धि होती है।

(१२४) नीम पत्तों को मिलाकर पकाये हुये सुखोष्ण पानी से प्रसूता की योनि धोने से प्रसव के कारण होने वाला योनिशूल एवं शोथ नष्ट होता है तथा व्रण सूखकर योनि शुद्ध तथा संकुचित हो जाती है। योनिशूल की अधिकता हो तो नीम पत्तों के साथ निंबौली की गिरी तथा एरण्ड बीज की गिरी को पीसकर लेप करने से शीघ्र लाभ होता है।

(१२५) नीम की अन्तरछाल के छोटे-छोटे टुकड़े ३०० ग्राम कूटकर ३ भाग करें तथा तीन मटके लेकर प्रत्येक में १०-१० किलो पानी और १००-१०० ग्राम कुटी हुई छाल भरकर उन पर ढक्कन लगाकर आग पर पकावें जब पानी खौलने लगे तब प्रसूतरोगग्रस्त स्त्री को खाट पर लिटा दें (लिटने से पहले सम्पूर्ण शरीर पर तैल की मालिश कर लेवें) और ऊपर से खूब लम्बा चौड़ा कम्बल ओढ़ावें। जिससे स्त्री का शरीर भी ढक जाय तथा खटिया से लेकर जमीन तक झूलता रहे, (मुख मात्र खुला रखें)। फिर १ मटकी लाकर खाट के नीचे स्त्री की छाती तथा गरदन के नीचे के भाग की ओर रख पात्र का मुख खोल दें। ५-७ मिनट बाद वाष्प कम होने पर उस मटके को कमर के नीचे सरका दें और दूसरा मटका छाती के नीचे रखकर बफारा देवें। पुनः उसकी वाष्प कम होने पर कमर के नीचे वाले मटके को पैरों के नीचे सरका दें तथा उक्त नं० २ मटके को कमर के नीचे लगावें और नं० ३ के मटके को लाकर नं० २ के स्थान पर रखकर बफारा दें। फिर १० मिनट बाद तीनो मटके हटा देवें। स्वेद आया हो उसे पोंछकर ½ घण्टा विश्राम के बाद उसे उन्हीं मटकों के पानी से निर्वात स्थान में स्नान करा देवें। इस प्रकार ३ दिन तक नित्य प्रातः स्वेदन क्रिया करने से सूतिका रोग का विष प्रस्वेद द्वारा निकल कर रुग्णा को लाभ होता है। भोजन में दूध, पुराने चावलों का भात, घृत, शक्कर या दलिया दूध देवें तथा गरम करके ठण्डा किया हुआ जल पीने को देवें।

(१२६) यदि बालक स्त्री के उदर में मर गया हो तथा उसका विष फैल गया हो और स्त्री बेहोश हो गयी हो तो पुनर्नवा की ताजी जड़ ५० ग्राम जौकुट कर ४०० ग्राम जल में पकाकर १०० ग्राम शेष रहने पर छानकर उस स्त्री को किसी प्रकार पिलादें इसके पेट में पहुंचते ही प्रसव तुरन्त हो जाता है और मृत गर्भ बाहर निकल जाता है। —वनौ० वि० भाग ४ से।

(१२७) बांस की १० पत्तियों को २०० ग्राम जल में पकावें। ५० ग्राम जल शेष रहने पर छानकर उसमें

१० ग्राम गुड़ मिलाकर गरम-गरम प्रसूता को पिलाने से जेर, झिल्ली, निकलकर पीड़ा भी दूर हो जाती है।

(१२८) प्रसवावस्था के समय जब गर्भाशय का मुख खुल जावे। अर्थात् उसमें से गन्दा बदबूदार पानी निकलने लगे तथा पी० वी० करने पर दो अंगुलि विस्फार हो तथा भीतर के जीवित या मृत बच्चे का शिर दिखलाई दे तब निर्धूम कोयलों की आग पर फुलाये हुये सुहागे का चूर्ण ४ ग्राम को बांस के पत्र के क्वाथ १०० ग्राम में मिलाकर पिला देने से शीघ्र ही प्रसव हो जाता है यदि एक बार के पिलाने से कुछ भी असर न हो तो आध घण्टे बाद दूसरी खुराक पिलावें। यह २-३ खुराक तक दिया जा सकता है।

(१२९) यदि गर्भाशय में शुष्क गर्भ चुपक गया हो तो बांस की गांठ को जौकुट कर १ किलो जल में चतुर्थांश क्वाथ सिद्ध कर छानकर उसमें कच्ची फिटकरी १ ग्राम गुड़ २० ग्राम मिलाकर प्रतिदिन प्रातः ३ से १० दिन तक पिलाते रहने से शुष्क गर्भ बाहर निकल जाता है। यह इस कार्य के लिये निर्भय उपाय है सब प्रकार की प्रवृत्ति वाली स्त्रियों के लिये अनुकूल है। यह प्रयोग काठियावाड़ में अनेक वर्षों से घरेलू उपचार के रूप में प्रसिद्ध है इससे पूर्णरूप से सफलता मिलती है गर्भ के निकल जाने पर सोया और सोंठ ६ ग्राम से १० ग्राम तक प्रतिदिन क्वाथ कर उसमें गुड़ २० ग्राम मिलाकर ७ दिन तक पिलाते रहने से गर्भाशय में चिपका हुआ दूषित द्रव्य निकलकर जो विष लीन रूप से रहा हो वह जल जाता है तथा गर्भाशय शुद्ध और सबल हो जाता है।

(१३०) अयोग्य आहार-विहार एवं पोषक खाद्य के अभाव में प्रायः गर्भवती स्त्री अशक्त एवं निर्बल हो जाती है जिससे गर्भ के बालक की परिपुष्टि नहीं होती ऐसी अवस्था में किसी विटामिन की अपेक्षा केवल बादाम के तैल को ३ ग्राम की मात्रा में शहद के साथ या दूध के साथ प्रतिदिन लेते रहने से पूर्ण लाभ हो जाता है।

(१३१) तेलगिरी २० ग्राम को चावल के धोवन या मांड के साथ पीसकर थोड़ी मिश्री मिलाकर दिन में २-३ बार देने से गर्भवती के वमन तथा अतीसार में लाभ होता है।

[४] योनिरोग-सोमरोग—

(१३२) अनार के ताजे पत्र २० ग्राम, कालीमरिच १० ग्राम दोनों को जल में पीस छानकर प्रातः-सायं पिलाने से तथा अनार की जड़ की छाल आधा किलो जौकुट कर उसका क्वाथ बनाकर उससे योनि का प्रक्षालन करने से सोमरोग तथा पदर दूर होता है।

(१३३) यदि योनिमार्ग में दाह या खुजली हो तो अपामार्ग के ताजे पत्र के कल्क में थोड़ा मक्खन मिला योनि के भीतर प्रलिप्त करने से विशेष लाभ होता है तथा योनिशूल भी प्रायः दूर हो जाता है।

(१३४) आंवला स्वरस मे मधु तथा शक्कर मिलाकर पिलाते रहने से शीघ्र ही योनि की जलन दूर हो जाती है।

(१३५) सोमरोग जिसमें स्त्रियों को पेशाब रोकने की शक्ति नष्ट हो जाने से अत्यधिक स्राव होता रहता है ऐसी अवस्था में आंवला स्वरस के साथ पका केला; मधु तथा मिश्री मिलाकर खिलाते रहने से या आंवले के रस में मधु व शक्कर मिला रोज प्रातः पिलाते रहने और पके केले खिलाते रहने से थोड़े ही दिन में लाभ होता है।

(१३६) यदि योनिशूल हो तो इन्द्रायण की जड़ के साथ ग्वारपाठे का गूदा और सोंठ का चूर्ण एकत्र कर बकरी के घृत में पीसकर योनि पर लेप करने से शीघ्र लाभ होता है।

(१३७) उड़द के साथ समभाग मुलहठी तथा विदारीकन्द का चूर्ण एकत्र मिलाकर प्रातःकाल १० ग्राम की मात्रा में खांड तथा शहद मिलाकर सेवन करने से सोमरोग में लाभ होता है। —वनौ० वि० भाग १।

(१३८) कटु तुम्बी के बीजों की गिरी और लोध्र को पानी में घिसकर योनि के भीतर लेप करने से प्रसव के पश्चात् हुई विस्तृत या शिथिल योनि आंकुचित हो जाती है। प्रसूता स्त्री की योनि में यदि क्षत हो गये हों तो कटु तुम्बी की पत्ती के साथ लोध्र चूर्ण को जल में पीसकर लेप करने से लाभ होता है।

(१३९) गर्भाशय या योनिशूल मे कलिहारीकन्द को अच्छी तरह चिकना कर योनि में धारण कराने अथवा

कन्द के साथ अपामार्ग और इन्द्रायणमूल को पीस पोटली बनाकर योनि में धारण कराने से लाभ होता है।

(१४०) गोरखमुण्डी के पंचांग को १० ग्राम तक जल से पीस छानकर पिलाने से भयंकर योनिशूल दूर होता है प्रदर में भी लाभ होता है।

—वनौ० वि० भाग २ से।

(१४१) ढाक के कोमल पत्र छायाशुष्क करलें और उनका महीन कपड़छन चूर्ण करलें उसमें सममाग मिश्री मिलाकर ३-६ ग्राम तक प्रातः-सायं ताजे जल के साथ १४ दिन तक सेवन करने से तथा इसके गोंद की पोटली योनि में धारण करने से अधिक प्रसव या श्वेत स्राव से होने वाला योनि शैथिल्य दूर हो जाता है। गोंद की पोटली के अभाव में इसकी छाल के क्वाथ से योनि प्रक्षालन करते रहने से लाभ हो जाता है।

(१४२) योनि शैथिल्य की अवस्था में ढाक का गोंद महीन करलें और पानी में घोल लें फिर फिटकरी २० ग्राम को किसी पात्र में आग पर पिघलावें और धीमे-धीमे उक्त गोंद का घोल उसमें डालते जावें सब घोल का शोषण जब हो जाय नीचे उतारकर ठण्डा होने पर इस फिटकरी फूले को १० ग्राम धाय के फूल के चूर्ण के साथ खरल करालें। यह मिश्रण चूर्ण योनि में रखने से लाभ होता है।

(१४३) पलाश के बीजों का महीन चूर्ण आटे में मिलाकर हाथ की हथेली के बराबर टिकिया बनाकर योनि पर रखकर पट्टी बांध दें तथा लंगोट कसकर बांध दें। इस प्रयोग से योनिकन्द में लाभ होता है।

(१४४) ढाक के बीज तथा गूलर के फलों को पीसकर तिल तैल से चिकना कर शहद मिलाकर लेप करने से योनि की शिथिलता दूर होती है।

(१४५) काले धतूरे के २-३ पत्ते महीन पीसकर १ पत्ती में सेंधानमक और घृत मिलाकर बारीक कपड़े में बांधकर लम्बी सी पोटली बनाकर योनिमार्ग में रखने से सब प्रकार का योनिशूल नष्ट होता है।

—वनौ० वि० भाग ३ से।

(१४६) नागदमनी का स्वरस, गोदुग्ध तथा काले तिल का तैल तीनों आधा किलो एकत्र कर मन्द अग्नि पर पकाकर तैल सिद्ध करलें। इस तैल का फाहा योनि में रखने से योनिकन्द, दाहशूल, शोथ में लाभ हो जाता है।

(१४७) नीमपत्र के शीतकषाय या क्वाथ से योनि को दिन में कई बार धोते रहने से तथा नीमछाल का धुआं देने से या नीम पत्रों को पीसकर थोड़ा गरम कर सुखोष्ण लेप करते रहने से थोड़े ही दिन में योनि के भीतर का चिपचिपापन दूर होकर दुर्गन्ध एवं खुजली दूर हो जाती है।

(१४८) नीम की छाल को अनेक बार पानी में धोकर उसी पानी में रुई को भिगोकर प्रतिदिन योनि में धारण करने से तथा धोने से बची हुई छाल को सुखाकर आग पर जलाकर उसका धुआं योनि मुख पर देने से योनि एकदम प्रगाढ़ हो जाती है।

(१४९) निबौली को नीमपत्र रस में १२ घण्टे पीसकर लम्बी गोलियां बनावें उनमें से १-१ गोली अपत्यमार्ग में चढ़ाते रहने से योनिशूल में लाभ होता है अथवा निबौली के बीजों की गिरी तथा अण्डी के बीजों की गिरी तथा नीमपत्र रस तीनों को सममाग घोटकर बत्ती बनाकर योनि में धारण करने से योनिशूल में लाभ होता है।

(१५०) प्रसव के बाद गर्भाशय में या योनिप्रदेश में शूल होने लगे तो पीले भांगरे की जड़ का चूर्ण तथा सममाग बेल की जड़ की छाल के चूर्ण के साथ मद्य मिलाकर उचित मात्रा में देने से शीघ्र ही शूल शमन हो जाता है।

(१५१) माजूफल के चूर्ण में ८वां हिस्सा फिटकरी का चूर्ण मिलाकर पोटली बनाकर योनि में धारण करने से तथा माजूफल के फाण्ट की उत्तरबस्ति देने से योनिभ्रंश में लाभ होता है। —वनौ० वि० भाग ५ से।

(१५२) योनिमार्ग से गर्भाशय तथा योनि बाहर आ जाने से लजालू के पत्तों का रस या मूल घिसकर कमल पर लेप लगाकर ऊपर से लंगोट बांधने से योनि-भ्रंश विकार दूर होता है। —वनौ० वि० भाग ६ से।

(१५३) मैनफल, मुनक्का तथा कपूर इन तीनों को बराबर लेकर महीन पीस छानलें फिर इस चूर्ण को महीन

कराना चाहिये। यह योग स्त्री के प्रदरादि सर्व विकारों को भी दूर कर हृष्ट-पुष्ट बनाता है।

—वनौ० विशेषांक भाग ५ से।

(१७५) मुलहठी का बारीक चूर्ण करलें। निरोगी गाय जिसका बछड़ा भी मौजूद हो उसका २५० ग्राम दूध तथा २५० ग्राम पानी और ३ ग्राम चूर्ण तीनों को एकत्रित कर मन्दाग्नि पर पकावें जब दुध मात्र शेष रहे तब शीतल होने पर बिना शक्कर मिलाये स्त्री को प्रथम माह से नवम माह तक नियमित पिलाते रहने से स्त्री को गर्भ सम्बन्धी कोई रोग नहीं सताता और पूर्ण समय पर निरोग बालक की उत्पत्ति होती है। —कृष्णाकुमारी द्वारा सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

[६] स्तन विकार—

(१७६) इन्द्रायन की जड़ का लेप करने या पुल्टिस जैसी बांधने से स्तनशोथ, स्तन पाक दूर होता है और सभी प्रकार की स्तनजन्य पीड़ा दूर होती है।

—वनौ० विशेपांक भाग १ से।

(१७७) बड़ी कटेरी की जड़, अनार वृक्ष की छाल तथा कन्दूरी की छाल तीनों को पीसकर लेप करते रहने से लटकते हुये ढीले स्तन दृढ़ एवं कड़े हो जाते हैं।

(१७८) गेंदा के पत्तों को कपड़े में बांधकर ऊपर से कपड़ मिट्टी कर पुटपाक विधि से भूमल में सेककर अन्दर के गर्म पत्रों को निकालकर स्तन पर बांधने से स्तनशोथ दूर होता है।

(१७९) ग्वारपाठे की जड़ को कुचलकर थोड़े जल में महीन पीसकर हल्दी मिलाकर गरम कर दिन में २-३ बार इनकी मोटी लुगदी बांधने से स्तनशोथ में लाभ होता है। यदि किसी चोट आदि के कारण स्तनग्रन्थि बन गयी हो तो ग्वारपाठे की जड़ या पत्ते के गूदे में हल्दी मिला पुल्टिस बनाकर बांधने से गांठ बिखर जाती है।

—वनौ० विशेषांक भाग २ से।

(१८०) कभी-कभी प्रसूता स्त्री के दुग्ध वेग की अतिवृद्धि होकर स्तन पर तीव्र वेदनायुक्त सूजन होती है ऐसी दशा में पान के पत्तों को गरम कर स्तनों पर बांधने से दुग्धवेग रुक जाता है व सूजन कम हो जाती है। अथवा पान के रस में थोड़ा चूना मिला गरम कर लेप करने या पान की लुगदी में चूना मिलाकर पुल्टिस के रूप में व्यवहार करने से भी लाभ होता है।

(१८१) धतूरे के पत्तों को हल्दी तथा थोड़ी अफीम के साथ थोड़े पानी में पीस कुछ गर्म कर स्तनों पर लेप करने से स्तनों का पीड़ायुक्त शोथ दूर हो जाता है। शोथ की प्रारम्भिक दशा में कुछ पत्तों पर तैल चुपड़कर लोहे के तवे पर रखकर गरम कर स्तन पर बांधने से लाभ हो जाता है। जिन स्त्रियों के स्तन ढीले होकर लटक गये हों यदि वह धतूरे के पत्तों को गरम कर स्तन पर कसकर बांधें तो कुछ दिन में ही उनमें कड़ापन आकर उनकी दशा ठीक हो जाती है।

(१८२) स्तन पाक होकर व्रण हो गया हो तो नीम के पत्तों की काली राख बनाकर उसमें २५ ग्राम पत्तियों की राख को ५० ग्राम सरसों के तैल में मिलाकर आग पर रखकर नीम के डंडे से खूब घोटकर उस राख मिश्रित तैल को चुपड़ दें तथा कुछ सूखी राख को ऊपर से बुरककर वस्त्रखण्ड से बांध दें। २-३ दिन के उपचार से विशेष लाभ हो जाता है।

(१८३) स्तन में जब प्रदाहयुक्त पाक होकर स्तन लाल वर्ण के हो गये हों या घाव होकर दुर्गन्धयुक्त राध निकलती हो तो पुनर्नवा की जड़ का लेप करने से शीघ्र यह पाक दूर हो जाता है।

(१८४) स्तन के घाव पर २५ ग्राम प्याज को १०० ग्राम मीठे तैल में डालकर आग पर जला लेवें फिर नीम के कुछ पत्र जलालें और दोनों को खूब घोटकर थोड़ा मोम मिला मलहम बनाकर लगाते रहने से शीघ्र घाव भर जाता है।

(१८५) बच्चे के सिर मार देने से या दूध के रुक जाने या अन्य किसी कारण से स्त्री के स्तन पर जो शोथ हो जाता है जिसे भाषा में कहीं-कहीं थनेला कहते है यदि इस सूजन में पीड़ा हो तो, तथा कुछ दाह भी हो किन्तु भीतर पीव न पड़ी हो तो इसकी गिरी के साथ सम-भाग किशमिश और मुनक्का एकत्र थोड़े पानी के साथ खूब महीन पीसकर थोड़ा गरम कर सुखोष्ण लेप दिन में ३ बार करने से २-३ दिन में लाभ हो जाता है।

(१८६) अविकसित स्तन वाली स्त्री जिसके स्तन बिलकुल छोटे हों शरीर के अन्य अंगों के साथ बढ़ते न हों तो बादाम के तैल की नियमित मालिश करते रहने से वे विकसित एवं पुष्ट हो जाते है।

—वनौ० विशे० भाग ५ से।

(१८७) किन्हीं बालकों तथा पुरुषों को कभी-कभी स्तनों में शोथ उत्पन्न हो जाता है उस शोथ को दूर करने के लिये छुईमुई पंचांग की लुग्दी गर्म कर लेप करने से अतिशीघ्र लाभ होता है। —वनौ० विशे० भाग ६ से।

(१८८) यदि स्तनों में शोथ हो पीड़ा हो और बालक दूध न पीता हो तब दूध को प्रतिदिन ३-४ बार दूध निकालने के यन्त्र से दूध निकालकर स्तन पर इन्द्रायन की जड़, हल्दी, कत्था, मैनफल, गूगुल सब समान भाग कूटकर चूर्ण कर उसमें धतूरे के पत्र-स्वरस को मिलाकर गरम-गरम लेप करने से लाभ होता है।

—धन्वन्तरि नारी रोगांक से।

(१८९) मुलहठी, नीम की छाल, नीम के पत्ते, हल्दी, सम्मालू, धाय के फूल सबको समान भाग लेकर चूर्ण करें। इस चूर्ण को स्तन व्रण पर बुरकने से स्तन व्रण भर जाता है।

(१९०) अलसी के बीज, बाबूना, ईसबगोल, तिल, नाखूना पाचों समभाग लेकर बारीक पीसकर गुलरोगन में मिलाकर लेप करने से स्तन-शोथ दूर हो जाता है।

—धन्वन्तरि नारी रोगांक से।

[आ] अनुभूत एवं परीक्षित प्रयोग

[१] मासिकस्राव सम्बन्धी विकार—

(१) **स्त्री गदान्तक वटी**—सोंठ, हीराकसीस १०-१० ग्राम, एलुआ, हीराबोल, तैलिया सुहागा तथा उलटकम्बल चूर्ण ४०-४० ग्राम।

विधि—इनको घृतकुमारी रस में घोटकर २-२ गुंजा के बराबर गोलियां बनालें।

मात्रा—सायंकाल २-३ गोली पुनर्नवादि क्वाथ के साथ सेवन करावें। भोजनोपरान्त दोनों समय अशोकारिष्ट २-२ औंस बराबर जल मिलाकर सेवन करावें।

उपयोग—इस प्रयोग के कुछ दिन तक नियमित सेवन कराते रहने से २-३ माह से अवरुद्ध हुआ रज भी नियमित होकर आने लगता है।

(२) **रजःकृच्छ्र हर वटी**—मुसब्बर, केशर, अफीम, बंगभस्म ६-६ ग्राम, लवंग चूर्ण २० ग्राम।

विधि—पान के रस में घोटकर २-२ रत्ती की गोलियां बनालें।

मात्रा—मासिकधर्म आने के समय से ८-१० दिन पूर्व इस योग का सेवन मकोय स्वरस, कुमारीआसव या जल के साथ कराना चाहिये।

उपयोग—यह योग रजःकृच्छ्र को दूर करने के लिए अत्यन्त उपयोगी तथा निरापद है अनेक बार का परीक्षित है।

(३) **ऋतुशोधक वटी**—लोहभस्म, मण्डूरभस्म, कसीसशुद्ध, अभ्रकभस्म, रससिन्दूर, स्वर्णमाक्षिक भस्म प्रत्येक १०-१० ग्राम, एलुआ, बीजाबोल, शिलाजीत शुद्ध २०-२० ग्राम, कुटकी, गुग्गुल शुद्ध ५०-५० ग्राम।

व्यवहार विधि—घृतकुमारी रस में घोटकर २ रत्ती प्रमाण की गोलियां बना छाया में सुखाकर हवा से सुरक्षित करदें।

मात्रा—२ गोली गोदुग्ध के साथ भोजन के १ घण्टा पश्चात् दिन में २ बार। प्रातःकाल बादाम के हलुवे में २ रत्ती प्रवालभस्म देते रहें।

उपयोग—२ माह के अन्दर ही शरीर में नवीन और शुद्ध रक्त उत्पन्न होकर पूर्ववत् मासिकधर्म आने लगता है तथापि स्थायी लाभ के लिये २-३ माह तक इस प्रयोग करना चाहिये। यह योग विशेषकर रक्ताल्पताजन्य मासिकधर्म विकृति पर अधिक उपयोगी है।

(४) **रजःकृच्छ्र हर मिश्रण**—इमली फल का गूदा (रेशे और बीज रहित) २०० ग्राम, गोराकर्मा २०० ग्राम।

व्यवहार विधि—दोनों एकत्र खूब कूटकर उसकी अंगुष्ठ जैसी मोटी बत्ती बनाकर उसके एक सिरे में अग्नि लगादें और फिर एक घड़े मटके में रख छोड़ें। यह

मटका खुली हवा में रख छोड़ें। आध घण्टे में वह वत्ती जलकर भस्म हो जावेगी। पश्चात् खरल मे डालकर महीन वस्त्रपूत करलें। एक बड़ी चीनी की थाली लेकर उसमें वह भस्म फैलाकर डालदें और वह थाली किसी ठण्डी जगह रखदें। २ दिन में इस थाली में पानी सा काला द्रव तैयार हो जावेगा। उसको निथार कर कपड़े या प्लाटिंग से छानलें और बोतल में कार्क बन्द कर रख दें।

मात्रा—३०-६० बूंद ५० ग्राम जल के साथ दिन में ३-४ बार सेवन करावें।

समय—रजोधर्म के पूर्व ४ दिन से लेकर पश्चात् भी ४ दिन तक देवें।

उपयोग—इस प्रयोग से मासिकधर्म विना कष्ट के योग्य प्रमाण में आने लगता है। वाधकशूल को नष्ट करने में अद्वितीय योग है। —एस० वी० सातोडकर द्वारा धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(५) अत्यार्तव रिपु—श्वेत फिटकरी, काला सुरमा १०-१० ग्राम, कहरवा समई ३० ग्राम, हीरावोल कतीरा गोंद, गोंद बवूल तीनों २५-२५ ग्राम।

विधि—प्रत्येक वस्तु को पृथक्-पृथक् कूट-पीसकर छानकर फिर मिलाकर रगड़ कर रखलें।

मात्रा—३ ग्राम से ६ ग्राम तक बलाबल के अनुसार गोदुग्ध के साथ सेवन करावें।

उपयोग—यह योग हजारों रोगियों पर परीक्षित किया हुआ है इससे रक्तप्रदर, अत्यार्तव में अत्यधिक लाभ होता है। —डा० वेदव्यासदत्त द्वारा धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(६) कष्टार्तव हर क्वाथ—असगन्ध नागौरी ३ ग्राम, मंजीठ ६ ग्राम, वायविडङ्ग ६ ग्राम, ब्रह्मदण्डी ६ ग्राम, काले तिल ६ ग्राम, पुराना गुड़ ६ ग्राम।

विधि—सवको ३२० ग्राम जल में चतुर्थांश क्वाथ कर पिलाना चाहिये। मासिकधर्म होने के ४ दिन पहले से इस क्वाथ का सेवन प्रारम्भ कराना चाहिये।

उपयोग—इससे कष्टार्तव, कृच्छ्रार्तव, न्यूनार्तव आदि विकार शान्त हो जाते हैं।

—श्री मुनेश्वरीप्रसाद द्वारा स्त्री रोगांक से।

(७) रजःशोधक वटी—त्रिफला, पोहकरमूल, यवक्षार, पीपर, मैंथी, चन्द्रशूर, मूलीबीज, गाजर बीज, कलौंजी, कालाजीरा सभी समानभाग।

विधि—कूट कपड़छन करके इस चूर्ण से आधा गुड़ मिलाकर १-१ ग्राम की गोलियां बनालें।

मात्रा—१-१ गोली सुबह-शाम जल के साथ।

उपयोग—रजःशुद्धि के लिये बहुत उपयोगी गोली है कुछ दिन के सेवन से रजःशुद्ध होकर नियमित हो जाता है। —पं० गुणप्रकाश शर्मा द्वारा नारी रोगांक से।

(८) ऋतुकर क्वाथ—अपामार्ग के बीज, मूली के बीज, सोये के बीज, हंसराज, अमलतास का गूदा, अजमोद, वायविडंग, मंजीठ, कलौंजी प्रत्येक ६-६ ग्राम, चित्रकमूल की छाल ४ ग्राम, गाजर के बीज १०ग्राम, गुड़ पुराना २० ग्राम।

विधि—सब औषधियों को कूटकर रात्रि के समय आधा किलो जल में भिगोवें प्रातः अग्नि पर चढ़ाकर क्वाथ करलें जब १२५ ग्राम पानी शेष रहे तो मल-छान कर शीशी में रखदें।

उपयोग—ऋतुकर उत्तम योग है। नियमित सेवन करने से मासिक खुलकर और नियमित आने लगता है।

(९) ऋतुकरी वर्तिका—बिन्दाल डोंडे की जाली और बीज २५ ग्राम, मुसब्बर, इन्द्र जौ, एरण्ड बीजगिरी, विरोजा सूखा चारों ६-६ ग्राम, महुये के बीजों की गिरी २ ग़दद, अम्बर बढ़िया ३ ग्राम, गुड़ पुराना १२ ग्राम।

विधि—सबको बारीक पीसकर ३ रत्ती की गोली बनालें।

प्रयोग—आवश्यकता के समय योनि में धारण करावें।

उपयोग—बन्द मासिक को लाने के लिये उत्तम वर्ति है। —पं० देवदत्त शर्मा द्वारा धन्व०-नारीरोगांक से।

(१०) रजःप्रवर्तक क्वाथ—सोंठ, मरिच, पीपर १-२ ग्राम, वायविडंग, भारंगी, बिनौले, इन्द्रायन की जड़ सफेद वच, मूली के बीज, गाजर के बीज, सोयाबीज ३-३ ग्राम, काले तिल २० ग्राम, पुराना गुड़ २५ ग्राम।

विधि—समस्त औषधियों के यवकुट चूर्ण को २०० ग्राम पानी में कम से कम १२ घण्टे भिगोकर अग्नि के ऊपर औषधि पात्र को चढ़ा देना चाहिये। ५० ग्राम क्वाथ शेष रहने पर कपड़े से छानकर प्रातः तथा रात्रि में सोते समय सेवन कराना चाहिये।

उपयोग—रजःप्रवर्तन के लिये बहुत उत्तम योग है। साथ में रजःप्रवर्तिनी वटी मुख में रखकर ऊपर से क्वाथ को पीने से विशेष लाभ होता है।

(११) रजःप्रवर्तक पोटली—कडुवी तोरई का गूदा, छोटी पीपर, मैनफल, यवक्षार, पुनर्नवा के बीज, पुराना गुड़ १०-१० ग्राम।

विधि—समस्त औषधियों को कूट-पीस छानकर चूर्ण बनाना चाहिये अनन्तर उसी में हाथ से गुड़ को मसलकर किसी चौड़े मुख की साफ शीशी में औषधि को भरकर रख देना चाहिये।

प्रयोग तथा उपयोग—आवश्यकतानुसार १ ग्राम से ३ ग्राम तक थोड़ी सी शराब में मिलाकर और स्वच्छ कपड़े में पोटली बनाकर रात्रि में सोते समय गर्भाशय में रखने से बन्द हुआ मासिकधर्म पुनः प्रारम्भ होकर खुल जाता है।

(१२) रजःप्रवर्तक वर्त्ती—अजमोद, वायविडङ्ग, गंधाविरोजा, फिटकरी का फूला, सोये के बीज, लौंग, नरकचूर, सेंधानमक प्रत्येक १०-१० ग्राम।

विधि—समस्त औषधियों का कपड़छान किया हुआ सूक्ष्म चूर्ण १५० ग्राम, शुद्ध तिल के तैल में मिलाकर रख लेना चाहिये। इस तैल में अंगुष्ठ प्रमाण रुई का पिचु या कपड़े की मोटी वत्ती डुबाकर रात्रि में सोते समय योनि में रखने से मासिकधर्म खुलकर होता है।

(१३) रजःप्रवर्तक डूस—दशमूल १०० ग्राम, त्रिफला ३० ग्राम, माजूफल, दन्ती, रास्ना, असगन्ध, समुद्रफेन, कायफल, हल्दी, गोखरू, जायफल, जावित्री, छारछवीला, लवङ्ग प्रत्येक १०-१० ग्राम।

विधि—समस्त औषधियों को यवकुट कर किसी बोतल में भरकर रख लेना चाहिये।

मात्रा तथा उपयोग—५० ग्राम औषधि को ३ पौण्ड पानी में १२ घण्टे भिगोकर तथा अग्नि के ऊपर चढ़ाकर १॥ पौण्ड क्वाथ सिद्ध कर लेना चाहिये। इस क्वाथ से कुछ समय तक डूस लेने से योनि के समस्त रोग दूर होकर नियमित रूप से मासिकधर्म होने लगता है।

—डा० इन्द्रादेवी द्वारा धन्वन्तरि नारी रोगांक से।

(१४) रजःवृद्धि हर योग—कौंच बीज, छोटा गोखरू, सेमल की मूसली, गिलोयसत्व, आवला, पीपर की लाख, सिंघाड़ा, कसेरू।

विधि—यह सब औषधियां समभाग ले कूट-पीस कपड़छान कर कुल चूर्ण के बराबर मिश्री मिलाकर चार-चार ग्राम की पुड़िया बनालें।

मात्रा—१-१ पुड़िया सुबह-शाम दूध से सेवन करावें।

उपयोग—मासिकधर्म अधिक समय तक जारी रहे तब यह प्रयोग विशेष लाभदायक रहता है।

(१५) रजःवृद्धि हर योग—सफेद चन्दन, कमलगट्टा, धायफूल, खस, अनार का फूल, जामुन की गुठली, नागरमोथा, जटामांसी, मंजीठ, पाठा, रसौत, कमलकेशर, लोध्र, अतीस, मिश्री, बेलगिरी, आम की गुठली, कुड़ा की छाल हाऊबेर, इन्द्रयव, मोचरस, छोटी इलायची।

विधि—इन औषधियों को बराबर ले कूट-पीसकर छानकर तीन-तीन ग्राम की पुड़िया बनालें।

मात्रा—१-१ पुड़िया सुबह-शाम चावल के धोवन के साथ प्रयोग करावें।

उपयोग—अतिरजःस्राव में अति उपयोगी योग है। रक्तप्रदर, में भी उपयोगी है।

—श्री मुकुन्दप्रसाद जी आयु० रत्न द्वारा धन्वन्तरि नारी रोगांक से।

(१६) रजावरोध हर क्वाथ—मूली, गाजर, मैथी, चन्द्रसूर, मालकांगनी सभी ३-३ ग्राम, सोये के बीज ४ ग्राम, अमलतास फली की छाल ४ ग्राम, कलौंजी ४ ग्राम, सबको कूटकर १ किलो पानी में डालकर किसी मिट्टी के पात्र में पकावें। चतुर्थांश शेष रहने पर उतारकर छानलें और ३० ग्राम पुराना गुड़ मिलाकर उष्ण ही रोगी को पिलावें।

उपयोग—इसकी प्रातः-सायं २ मात्रा पीने से ही कई दिन का रुका रज पर्याप्त मात्रा में निकल जाता है एवं रोगी को शान्ति मिलती है। —पं० रामप्रसाद शर्मा वैद्य द्वारा गुप्तसिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(१७) वनिता विनोद—पीपर, पीपरामूल, चित्रक, सोंठ, मरिच, रीठा १००-१०० ग्राम, शीशम के पत्ते २०० ग्राम, काले तिल २ किलो, गुड २ किलो।

विधि—शीशम के पत्ते व काले तिलों को २० किलो जल में औटावें। चौथाई शेष रहने पर छानकर अन्य औषधियां एवं गुड़ मिलाकर अरिष्ट विधि द्वारा अरिष्ट निर्माण करें।

(१८) नष्टपुष्पान्तक क्वाथ—काले तिल ५ ग्राम, सोंठ १ ग्राम, भार्ङ्गी ५ ग्राम, गुड़ १० ग्राम, मरिच १ ग्राम, पीपल १ ग्राम, हीरावोल ½ ग्राम, शुद्ध सुहागा ½ ग्राम, गाजर बीज १ ग्राम, जल ८० ग्राम।

विधि—क्वाथ विधि से क्वाथ कर लें।

उपयोग—यह क्वाथ १५-२० दिन तक पिलाने से रुका हुआ आर्तवस्राव शुरू हो जाता है।

विशेष—इस योग में हीरावोल से थोड़ा जी मिचलाया करता है, पर थोड़ी देर में स्वतः ठीक हो जाता है। जिन स्त्रियों को रक्ताल्पता हो, तो उन्हें यह योग नहीं देना चाहिए। प्रयोग के समय खाने के लिए चावल नहीं देना चाहिए। साथ में पेड़ू प्रदेश पर खेत में से एक हाथ नीचे से खोदकर लाई हुई मिट्टी को पानी में सानकर कपड़े की पट्टी भी रोज १ घण्टे तक रखने से अधिक लाभ होता है। —पं० जगदीशप्रसाद द्वारा गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(१९) रजावरोधक मुञ्जिस—बनपसा ६ ग्राम, गुलाब के फूल १० ग्राम, मुनक्का ७ दाने, अञ्जीर ४ दाने, मालकांगनी ४ ग्राम, निशोथ ७ ग्राम, तुरञ्जवीन १० ग्राम, सनाय ७ ग्राम, बड़ी हरड़ का छिलका १० ग्राम, नीलोफर ६ ग्राम।

विधि—उपरोक्त १ मात्रा को रात्रि को ½ किलो जल में भिगो दें। प्रातः मलकर औटावें और आधा जल शेष रहने पर छानकर पिला दें।

व्यवहार—५ दिन तक मुञ्जिस पीकर कोष्ठ साफ कर लें, फिर नीचे लिखी वटी का सेवन करावें

आर्तव प्रवर्तनी वटी—सनाय की पत्ती, एलुआ, निशोथ, सुरञ्जान मीठा, नवसादर, इन्द्रायन की जड़, सकमूनिया प्रत्येक १०-१० ग्राम।

विधि—सब औषधियों को कूट छानकर घृतकुमारी के रस में तीन दिन तक बराबर घोटकर छोटे बेर के बराबर गोली बना लें।

व्यवहार विधि—मासिकधर्म के एक दिन पहले २० ग्राम गुलाब जल के साथ १-१ वटी सेवन करानी चाहिए।

उपयोग—मासिकधर्म के न होने या कम होने की अवस्था में उपयोगी है।

—वैद्य बालकराम शुक्ल द्वारा धन्वन्तरि नारी रोगांक से।

(२०) रजःप्रवर्तकारिष्ट—कलौंजी २०० ग्राम, कबीला २०० ग्राम, गाजर के बीज २०० ग्राम, मूली के बीज २०० ग्राम, रेवन्दचीनी १०० ग्राम, इन्द्रायण की जड़ २०० ग्राम, सज्जी लोटिका २५० ग्राम, काला नमक ५० ग्राम, एलुआ २२० ग्राम, राई ६० ग्राम, हींग १० ग्राम, गजपीपल ३०० ग्राम, धाय के फूल २०० ग्राम, गुड़ ५ किलो।

विधि—सब औषधियों को यवकुट कर लें और गुड़ तथा धाय के फूलों को अलग रख लें। जौकुट की हुयी औषधि में से १ किलो पृथक् कर दें, बाकी सब औषधि को ४० किलो पानी में औटावें। जब १० किलो पानी शेष रहे तब छान लें और उसमें गुड़, धाय के फूल जौकुट कर बची हुयी औषधि में डाल मिट्टी के घड़े में मुख बन्द कर १ माह तक जमीन में गाढ़ दें। फिर निकाल छानकर बोतलों में भर लें।

मात्रा—४-४ चम्मच दिन में ३-४ बार बराबर जल मिलाकर दें।

उपयोग—कृच्छ्रार्तव, कष्टार्तव, अनार्तव आदि उपयोगी योग है। —पं० रामप्रसाद शर्मा द्वारा प्रयोग मणिमाला से।

(२१) हब्बमुदिर हैज—पीला एलुआ २ ग्राम, हीराकसीस तथा काश्मीरी केशर १-१ ग्राम।

विधि—सबको जल में महीन पीसकर तीन गोलियां बना लेवें।

मात्रा एवं सेवन विधि—१ गोली सुबह, १ दोपहर तथा १ रात्रि को सोते समय जल या सौंफ अर्क के साथ

४-५ दिन तक सेवन करावें। यदि उष्णता प्रतीत हो, तो मात्रा कम कर दें।

उपयोग—यह कृच्छ्रार्तव, निरुद्धार्तव में परम गुणकारी योग है।

(२२) शाफामुदिर्र हैज—महुआ के बीज की गिरी, पीला एलुआ, कड़ुआ कूठ, हीरावोल प्रत्येक ४-४ ग्राम, फिटकरी २ ग्राम, सज्जी १ ग्राम।

विधि—इनको जल में पीसकर छुहारे की गुठली के बराबर मोटाई में वर्ति बना लें।

प्रयोग विधि—वर्ति को रेंडी के तैल से चिकना करके गर्भाशय के मुख पर रखें।

उपयोग—यह आर्तव प्रवर्तन के लिए परम् गुणकारी योग है। —वैद्य दलजीत सिंह द्वारा महिला रोग चिकित्सांक से।

(२३) लक्ष्मणा लौह—लक्ष्मणा पंचांग ४ किलो, अशोक छाल, कुश की जड़, महुये का मगज, मुलहठी, खरैटी की जड़, पाठा तथा वेलगिरी यह ७ औषधियां ४०-४० ग्राम तथा लौह भस्म सबके समान लें।

विधि—पहले लक्ष्मणा को जौकुट कर ८ गुना जल मिलाकर चतुर्थांश क्वाथ बना मसल-छानकर पुनः चूल्हे पर चढ़ाकर घन बना लें। काष्ठादि औषधियों को कूटकर कपड़छान चूर्ण करें। पश्चात् घन, चूर्ण और सबके समान लौह भस्म मिला मर्दन कर २-२ रत्ती की गोलियां बना लें।

मात्रा—१-२ गोली तक जल, अशोकारिष्ट या रोगानुसार अनुपान के साथ दिन में २ बार देवें।

उपयोग—यह लौह स्त्रियों के गर्भाशय की विकृति को नष्ट करता है। गर्भाशय प्रदाह, मासिक समय पर न आना, मासिकधर्म आने के समय कष्ट होना, मासिकधर्म बहुत कम आना, गर्भाशय में शूल चलना आदि विकार दूर होते हैं।

(२४) सौभाग्यादि गुटिका—सोहागे का फूला, भुनी हींग तथा कसीस तीनों १०-१० ग्राम, अजवायन २० ग्राम, कालीमरिच ३० ग्राम, एलुआ ५० ग्राम।

विधि—सबको मिलाकर घीग्वार के रस में ६ घण्टे खरल कर १-१ रत्ती की गोलियां बना लें।

मात्रा—१-४ गोली निवाये जल या अर्क सौंफ अथवा रोगानुसार अनुपान के साथ देवें।

उपयोग—मासिकधर्म में कष्ट होना, मासिकधर्म समय पर न होना, मासिकधर्म की विकृति से सिरदर्द, नेत्र की दुर्बलता आदि विकारों में लाभदायक योग है।

(२५) रजोदोषहर वटी—मुश्क तरामसी, रेवन्द चीनी, तगर, तुख्म हरमल, सातर, सौंफ, अनीसून, तुख्म कार्पस, अजखर, सोया तथा वास की जड़ यह ११ द्रव्य १००-१०० ग्राम, उलट कम्बल की जड़ ४०० ग्राम मिला जौकुट कर चौगुने जल में पकावें। चौथाई जल शेष रहने पर कपड़े से छानकर मन्दाग्नि से पकावें। जब करछली से लगने लगे, तब नीचे उतारकर धूप में सुखावें। गोली बनाने योग्य हो जाय, तब उसमें कूठ का चूर्ण २० ग्राम, जावशीर २० ग्राम, जुन्दवेदस्तर १० ग्राम मिलाकर २-२ रत्ती की गोलियां बना लें।

मात्रा—४-४ गोली प्रातः, सायं जल से देवें। रजोदर्शन के समय निम्न क्वाथ से देवें—

अजखर, मुश्क तरामशी, अनीसून, अवहल, ककड़ी का मगज, गोखरू, हंसराज प्रत्येक ६-६ ग्राम जल में पकाकर ५० ग्राम जल शेष रहने पर कपड़े से छानकर १० ग्राम गुड़ मिला पिलावें।

उपयोग—यह वटी स्त्रियों के मासिकधर्म की विकृति, अल्प रजःस्राव कष्ट रजःस्राव आदि में उपयोगी है।

(२६) पीड़ितार्तवहर लेप—तिल तथा सरसों की खली, गुठली रहित खजूर ४०-४० ग्राम, टीकामाली, गूगल, एलुआ, पोस्त डोडे सभी २०-२० ग्राम।

विधि—इनको २०० ग्राम जल में मिलाकर हलवे के समान पकावें। फिर सहन हो सके, इतना गरम रहने पर ग्राम को गर्भाशय और बीजाशय के ऊपर तैल लगाकर लेप करना चाहिए और ऊपर से रुई चिपका कर कपड़ा बांध देना चाहिए। सुबह लेप को छुड़ाकर तैल लगा दें।

उपयोग—इस लेप के प्रयोग से मासिकधर्म साफ आ जाता है, कष्ट नहीं होता, गर्भाशय में शोथ हो तो वह भी दूर हो जाता है। यह अति निर्भय और श्रेष्ठ उपाय है। —रसतन्त्रसार द्वितीय भाग से।

(२७) शोणितार्गल रस—लोह भस्म, अभ्रक भस्म, रसौत, शुद्ध खपरिया चारों १०-१० ग्राम, फिटकरी का फूला ५ ग्राम, रक्तचन्दन, सोनागेरू, रससिन्दूर, पीपल की लाख प्रत्येक २०-२० ग्राम।

विधि—सबको बारीक पीसकर, रसौत का पानी बनाकर उसमें सब चीजें मिला २-२ रत्ती की गोलियां बनाकर सुखा लें।

मात्रा—१ गोली दिन मे ३ बार जल के साथ लेनी चाहिए।

उपयोग—अत्यधिक रक्तस्राव, रक्तप्रदर, मासिकधर्म की अधिकता मे लाभदायक योग है। जिन स्त्रियों को हर माह आर्तवस्राव अधिक मात्रा में होता हो, उन्हें इस योग को प्रयोग कराने से स्राव कम तथा नियमानुसार होने लगता है।

(२८) स्त्री गदान्तक वटी—एलुआ २० ग्राम, रक्तबोल २० ग्राम, राकनीस १० ग्राम, सोंठ १० ग्राम, सुहागे का फूला २० ग्राम, दालचीनी २० ग्राम।

विधि—इन सबको मिला बारीक पीस लें और थोड़ा मधु डालकर चने के बराबर गोलियां बना लें। योग में यदि क्विनीन १० ग्राम और मिला दी जाय तो अधिक उपयोगी हो जाता है।

मात्रा—२-२ गोली प्रातः, सायं पानी के साथ ऋतु आने के ६ दिन पूर्व लेनी चाहिए। ऋतु ठीक आने पर दवा बन्द कर देनी चाहिए। इसके साथ कुमारी आसव १-१ तोला और सेवन कराया जाय, तो अधिक लाभ होता है।

उपयोग—मासिकधर्म कष्ट से आना, कम आना, देर से आना और न आना इत्यादि मासिकधर्म की शिकायतें इस योग के सेवन कराने से ठीक हो जाती है।

विशेष—यदि मासिक बहुत कष्ट से आता हो, तो उस समय गोली के साथ उलट कम्बल का क्वाथ सेवन कराने से लाभ होता है। —वैद्य गोपालकुंवर ठक्कर द्वारा धन्वन्तरि नारी रोगांक से।

(२९) आर्तव प्रवर्तिका—कटु तुम्बी बीज, दन्ती, आसव किण्व, यवक्षार, गोमूत्र, मैनफल।

विधि—सबको समान भाग लेकर कूट-पीस थूहर के दूध में घोटकर कन अंगुली के बराबर मोटी, लम्बी वर्तिकायें बना लेनी चाहिए।

प्रयोग विधि—रात्रि के समय योनि के अन्दर घृत में चुपड़कर लगा दें और सुबह निकाल दें।

उपयोग—इसके प्रयोग से रुका हुआ आर्तव प्रवर्त हो जाता है।

(३०) ऋतुशोधक वटी—एलुआ ४० मि० ग्रा०, बोल २५ मि० ग्रा०, सोंठ १२ मि० ग्रा०, सुहागा १२ मि० ग्रा०, शुद्ध नौसादर १२ मि० ग्रा०, काले तिल १२ मि० ग्रा०, गोखरू १२ मि० ग्रा०, गाजर के बीज १२ मि० ग्रा०, मैंथी के बीज १२ मि० ग्रा०, सोया के बीज १२ मि० ग्रा०, उलट कम्बल १२ मि० ग्रा०।

भावना—चित्रक क्वाथ, उलटकम्बल, कपास की जड़, इन्द्रायण की जड़, वासा के पत्ते, मूली के बीज, अजवायन, निर्गुण्डी के क्वाथ की ३-३ भावना देकर ३-३ ग्राम की गोलिया बना लें।

मात्रा—२-२ गोली दिन में ३ बार पानी के साथ।

उपयोग—रुके हुए मासिकधर्म, कष्ट से होने वाला मासिकधर्म, नष्टार्तव, अनियमित आर्तव आदि में उपयोगी है। —वैद्य सुन्दरलाल जैन द्वारा धन्वन्तरि जनवरी ७७ से।

(३१) अल्पार्तव तथा कृच्छ्रार्तवहर अनुभूत योग—एलुआ २४ ग्राम, सोंठ ३० ग्राम, शुद्ध हींग (घी में भुनी हुई) ५ ग्राम, साबुन (लक्स) २४ ग्राम।

विधि—सब चीजो को कूटकर महीन चलनी या कपड़े से छान लें। साबुन लक्स २० ग्राम के चाकू से महीन वर्क कर लें और प्रथम खरल मे डाल घोट-पीस कर महीन कर लें। फिर अन्य कपड़छन अथवा महीन चलनी में छनी हुई चीजें डालकर घोटें। तत्पश्चात् ६० ग्राम थोड़े कुटे हुए इन्द्रायण के गूदे को ½ किलो पानी में औटावें। चतुर्थांश जल शेष रहने पर छानकर क्वाथ बना लें और इसमें उपर्युक्त दवा को घोट लें। गोली बनाने योग्य होने पर ४-४ रत्ती की गोली बना लें। मैंने यह प्रयोग "धन्वन्तरि" से लेकर मलावरोध (कब्ज) के लिए बनाया था और फिर अल्पार्तव तथा कष्टार्तव की

रोगिणी महिलाओं पर अनुभव किया, तो अधिक सफल रहा। तब से कई बार प्रयोग किया है।

नोट—गोली कुछ कसैली (कड़वी) होती हैं, अतः साबित निगलवानी चाहिए। चबाकर खाने या पीसकर देने से उल्टी (वमन) होने की सम्भावना रहती है। किसी रोगी महिला को निम्नलिखित काढ़ा भी सुबह-शाम बता दिया गया—काले तिल ६ ग्राम, बिनौले (कपास के बीज) ६ ग्राम, अजवायन ६ ग्राम, गुड़ २५ ग्राम डालकर जल ४०० ग्राम में औटावें। ६०० ग्राम शेष रहने पर छान-कर गुनगुना (थोड़ा गर्म) काढ़ा पिलावें। कई स्त्रियों को महायोगराज गुग्गुल अथवा योगराज गुग्गुल, कुमारी आसव भी देने की आवश्यकता पड़ती है।

सावधानी—कोई गर्भवती स्त्री या अत्यार्तव की रोगी महिला इन प्रयोगों को काम में न लें।

—वैद्य गोवर्धनदास बागलानी द्वारा
सुधानिधि दिसम्बर १९७२ से।

[२] योनि एवं गर्भाशय सम्बन्धी विकार—

(३२) योनिशोधक तैल—गिलोय, देवदारु, रास्ना, कटेरी, मालती, खरैटी, चित्रक, मुलहठी, चमेली की जड़ सातों १०-१० ग्राम।

विधि—रात को यवकुट कर ५ किलो जल में भिगो दें प्रातः पीसकर २ किलो तैल में मिलाकर अग्नि पर चढ़ा देवें। उसमें २ किलो गोदुग्ध तथा २ किलो गोमूत्र भी मिला दें। मन्द-मन्द अग्नि पर पचावें जब केवल तैल मात्र रह जावे उतारकर छान लें बोतल में रखें।

प्रयोग विधि—इस तैल में फाहा तर कर नित्य १ माह तक प्रतिदिन योनि में रखना चाहिये।

उपयोग—योनि के अनेक विकार योनि शोथ, योनि-दाह, योनिकण्डू आदि विकारों के लिये अति उत्तम तैल है।

—गोस्वामी सीताराम द्वारा
धन्वन्तरि नारी रोगांक ३२ से।

(३३) योनिशोधक पिचकारी—नीम की छाल १० ग्राम, महुआ की छाल १० ग्राम, अशोक की छाल और पत्ती १० ग्राम, नीम की पत्ती २० ग्राम, गूलर की छाल २० ग्राम, जामुन की छाल २० ग्राम, आम की छाल २० ग्राम, अरण्ड के जड़ की छाल ५० ग्राम, बकायन की जड़ १० ग्राम, वटवृक्ष की कच्ची जटा २० ग्राम, हरड़ बड़ी का वक्कुल १० ग्राम, बहेड़े का वक्कुल १० ग्राम, आंवले का छिलका १० ग्राम, फिटकरी ६ ग्राम।

विधि—इन सबको कूटकर जौकुट करलें और आठ गुना (२॥ किलो) जल डालकर अर्धावशेष रहे तब उतार लें और छानकर रखलें।

व्यवहार—रोगिणी को इस प्रकार लिटावें कि कमर कुछ नीची और जांघें कुछ ऊंचाई पर रहे। और इस क्वाथ की जरा गरम-गरम योनि में पिचकारी दें। इसके बाद रुग्णा योनि द्वार को हाथ से कुछ देर बन्द रखें ताकि जल अन्दर प्रभाव करता रहे और कुछ सेक करें। क्वाथ ठण्डा होने पर निकालकर पुनः पिचकारी दें इस प्रकार २१ दिन तक योनिप्रक्षालन करें।

उपयोग—योनिगत विकार, योनिशोथ, योनिकण्डू, सोमरोग, प्रदर आदि में अत्यन्त उपयोगी पिचकारी है। बिना किसी औषधि के अन्तः प्रयोग से यह पिचकारी जीर्ण प्रदर को ठीक करने में समर्थ है।

(३४) गर्भाशय शोधक—छुहारे, जायफल, नागकेशर, जावित्री, असगन्ध, शतावर ६ वस्तुयें ६-६ ग्राम, लौंग ३ ग्राम, केशर ३ ग्राम, बादाम की मिंगी १० ग्राम, कमलगट्टा की मिंगी १० ग्राम, चीनी ६० ग्राम।

विधि—सब औषधियां कूट-पीसकर वस्त्र में छान-कर खांड मिलादें और १४ पुड़िया बनाकर रखें।

व्यवहार विधि—मासिकधर्म जारी हो उसी दिन से प्रातः-सायं १ पुड़िया खाकर ऊपर से गोदुग्ध पिलावें। इस प्रकार २७ दिन सेवन करावें।

उपयोग—गर्भाशय के सभी दोष दूर होकर गर्भ धारण और गर्भ स्थापना होगी।

—श्री पं० गंगादत्त शर्मा द्वारा
धन्वन्तरि नारी रोगांक से।

(३५) गर्भाशयशोधक वर्त्तिका—इन्द्रायण के अन्दर का गूदा बीज समेत १० ग्राम, महुआ की गिरी २ नग, एलुआ स्याह, एरण्ड की गिरी, इन्द्रायन, बहरोजा शुष्क चारों ६-६ ग्राम, कूट-पीसकर पुराना गुड़ बत्ती बनाने योग्य मिलाकर ३ बत्तियां बनावें आवश्यकता

हो तो सोंफ का अर्क मिलावें। एक सिरा पतला रहे जो गर्भाशय में जावे। ४ अंगुल वत्ती होवे और बांस की सीख उसमें होवे जिससे बारीक सिरा टूटकर गर्भाशय में न रहे। बांस की सीख में एक मोटा धागा भी बांधकर रखें। साया में सुखालें और सूखने के बाद केशर १ रत्ती कस्तूरी १ ग्राम (इनके बिना भी काम में ला सकते हैं) पीसकर लेप करके सुखा लेवें ऐसा २ वत्तियों पर करलें। जब वत्ती प्रयोग करानी हो तब शहद लगाकर दाई से रखवा दें तीन घण्टे के बाद निकाल दें बाद यदि कॅण्डू प्रतीत हो तो घी लगादें।

उपयोग—यह बहुत उपयोगी बर्त्ति है। गर्भ स्थिति के लिये बहुत सी औषधियां इसलिये बेकार जाती हैं कि गर्भाशय को साफ नहीं किया जाता। इस वर्त्ति का एक माह तक प्रयोग करने के बाद गर्भ कारक औषधि दें तो गर्भधारणा होती है। गर्भाशय का मुंह बन्द हो तो इससे खुल जाता है। इसके ५-६ माह पश्चात् गर्भ न रहे तो एक बार फिर इस वत्ती का प्रयोग करना चाहिये। इससे बन्द हुआ मासिक स्राव भी खुल जाता है।

—पं० ठाकुरदत्त शर्मा द्वारा
धन्वन्तरि नारी रोगांक से।

(३६) गर्भाशय शोधक वर्त्ति-[२]—जामुन की गुठली, आम की गुठली की मींग, माजूफल, फिटकरी, धाय के फूल, त्रिफला, कासीस सभी समानभाग एकत्र कर शहद के साथ खरल कर कपास में तर कर वर्त्ति बना लें।

उपयोग—इस वर्त्ति को योनि में धारण कराने से गर्भाशयशोथ, गर्भाशय वेदना आदि विकार दूर होते है।

—कृष्णप्रसाद त्रिवेदी द्वारा
धन्वन्तरि नारी रोगांक से।

(३७) सोमेश्वर वटी—शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, अभ्रकभस्म, लोहभस्म, वंगभस्म, नागभस्म, मृगश्रृङ्ग-भस्म, प्रवालभस्म, मुक्ताशुक्ति भस्म, स्वर्णमाक्षिक भस्म, श्वेत सुरमा की भस्म, वंशलोचन यह १०-१० ग्राम, शुद्ध गूगल, शुद्ध शिलाजीत, गिलोयसत्व ५०-५० ग्राम, रीठा की मिंगी २७० ग्राम।

विधि—पारद गन्धक की उत्तम कज्जली बनाकर तथा खरल में डालकर प्रथम रस भस्मों को मिलाकर खरल करना चाहिये बाद में वंशलोचन, गिलोयसत्व, रीठा की मीग का चूर्ण मिलाकर खरल करना चाहिये। इन सब द्रव्यों के एकजीव हो जाने पर शुद्ध गूगल तथा शुद्ध शिलाजीत मिलाकर घृत के योग से औषधि को खूब कूटना चाहिये। कम से कम ३ दिन तक कूटने के बाद जब औषधि पिण्ड स्निग्ध हो जाय तो ४-४ रत्ती की गोली बनाकर सुखाकर शीशी में रख लेना चाहिये।

मात्रा एवं उपयोग—१-२ गोली सुबह-शाम जल या दूध के साथ कुछ दिन तक सेवन कराना चाहिये।

उपयोग—यह सोमरोग तथा अन्य योनिगत स्रावों के लिये उत्तम योग है। —पं० गयाप्रसाद शर्मा द्वारा
धन्वन्तरि नारी रोगांक से।

(३८) सोमरोग हर चूर्ण—छोटी इलायची का दाना २५ ग्राम, गोंद बबूल, मखाने २००-२०० ग्राम, गोंद कतीरा, वंशलोचन, शतावर १००-१०० ग्राम, लवङ्ग २५ ग्राम, संगजराहत ५० ग्राम, मिश्री १। किलो।

विधि—गोंद बबूल को घृतमें भूनलें पश्चात् सब औषधियों को कूट-पीसकर छानकर रख लें।

मात्रा—१०-१५ ग्राम प्रातः-सायं गाय के दूध के साथ सेवन करावें।

उपयोग—सोमरोग को नष्ट करने के लिये अति उत्तम चूर्ण है। यदि भोजन के साथ फलघृत का भी प्रयोग कराया जाय तो विशेष लाभ मिलता है।

(३९) सोमरोग हर योग—प्रवालभस्म उत्तम १० ग्राम, शतावर, सेमर पुष्प, मुलहठी प्रत्येक ५०-५० ग्राम, दुद्धी छोटी का पंचांग सूखा १०० ग्राम, मिश्री १ किलो।

विधि—सबको कूट-पीसकर छानकर भस्म मिलाकर रख लें।

मात्रा—६ ग्राम से १० ग्राम तक इसे खिलाकर ऊपर से मिश्री युक्त दूध पिलाना चाहिये।

उपयोग—सोमरोग में अति उत्तम योग है। यदि रोग बढ़ा हुआ हो तो शीतल पानी में फिटकरी तथा रसौत मिलाकर वस्ति देने से सोमरोग में लाभ होता है।

—तेजीलाल नेमा द्वारा
धन्वन्तरि नारी रोगांक से।

(४०) **योनिरोग हर चूर्ण**—सोया, मंजीठ, वेतस, गोरखमुण्डी, नागपुष्पी, लज्जालू, नागदमनी, मौलसिरी; गूलर, पलास, पीपर।

विधि—इन्हें बराबर-बराबर लेकर चूर्ण करलें। गोदुग्ध के साथ सेवन करें।

मात्रा—१-२ ग्राम तक।

उपयोग—यह समस्त योनिरोग नाशक उपयोगी चूर्ण है।

(४१) **सोमरोग हर वटी**—कर्पूर, गिलोयसत्व, लोध्र, कांस, मुक्ताशुक्ति, प्रवालभस्म, नागभस्म प्रत्येक १०-१० ग्राम।

विधि—सबको अलग-अलग रखें और चूर्ण करने वाली चीजों को बारीक चूर्ण कर सबको मिलादें। बाद में पुनर्नवा के रस में ६ घण्टे और केला की जड़ के रस में ६ घण्टे खरलकर ५ रत्ती की गोली बना लें।

मात्रा—प्रतिदिन सुबह-शाम १-१ गोली मधु और चौलाई के रस के साथ सेवन करें।

उपयोग—सोमरोग नाशक अति उत्तम योग है।

—श्री वैद्यनाथ कैशोरि द्वारा
धन्वन्तरि नारी रोगांक से।

(४२) **योनिकन्दहर योग (वाष्प)**—आंवला ४० ग्राम, हरड़, वहेड़ा, नीम की छाल, वकायन की छाल, वकायन की पत्ती, एरण्ड की जड़, जंगली तुलसी, दारुहल्दी, अशोकपत्र १०-१० ग्राम, सम्भालू की पत्ती व छाल २० ग्राम, आक के पत्ते ३ ग्राम, फिटकरी १ ग्राम, मैंथी २ ग्राम।

विधि—इन सबको यवकुट कर रात्रि में १½ किलो पानी में सुराही के अन्दर डालकर भिगो दिया जाय प्रातःकाल आग पर जोश देकर जब खूब खौलने लग जाय तो रोगी को छेददार कुर्सी पर बिठाकर सुराही को कुर्सी के नीचे रखदी जाय जिससे पूरी भाप योनि में लगती रहे।

उपयोग—योनिकन्द, योनिशूल आदि विकारों में अति उत्तम वाष्प है। अनेक बार की परीक्षित है।

—पं० मनोहरलाल मिश्र द्वारा
धन्वन्तरि नारी रोगांक से।

(४३) **गर्भाशयशोथ हर क्वाथ**—अशोकत्वक्, मंजीठ, शतावरी २५-२५ ग्राम, लोध्र, पुनर्नवा, कृष्णजीरक, सौंफ, नागरमोथा १०-१० ग्राम, कमल फूल २० ग्राम।

विधि—इनको यवकुट करके प्रथम २-३ घण्टे १६ गुने जल में भिगोवें, पश्चात् क्वाथ करें जब जल ४ भाग शेष रहे तब छानकर १०-१५ ग्राम क्वाथ थोड़ी मिश्री मिलाकर प्रातः-सायं पीना चाहिये इसी क्वाथ को धाय के फूल व गुड़ मिलाकर आसव पद्धति से भी निर्माण किया जा सकता है।

उपयोग—गर्भाशय शोथ, मासिकस्राव में अनियमितता, रजःस्राव के समय या पूर्व पैर तथा पेडू में पीड़ा होना, रजःस्राव की कमी से होने वाला वन्ध्यत्व, अत्यधिक श्वेत तथा रक्तप्रदर आदि विकारों में बहुत लाभदायक योग है।

—वैद्या अपर्णादेवी द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक द्वितीय भाग से।

(४४) **योनिसंकोचनी वटी**—हरड़ का वक्कल, वहेड़े का वक्कल, आंवला, इलायची के बीज, अनार छाल, मंजीठ, कमरकस, बबूल की छाल, लोध्र, सफेद कत्था, नागकेशर, बबूल का गोंद, चिकनी सुपारी यह सब १०-१० ग्राम, माजूफल, फिटकरी का फूला, शक्कर तीनों २०-२० ग्राम, वंशलोचन ४० ग्राम।

विधि—इन सबको कूट-पीसकर कपड़छन करलें उसमें निम्नलिखित वनस्पतियों का घनसत्व मिलाकर गोलियां बना लें।

अग्निमन्थ (अरनी) गोजिह्वा, सितावर, बहुफली, दुद्धी (हजार दाना) नीम का बौर। यह सब वस्तु गीली (ताजी) मिल जावें अन्यथा सूखी लेकर पानी मिलाकर औटावें। थोड़ा पानी रहने पर छान लें और फिर छने हुये क्वाथ को गरम करें। हलुवा जैसा होने पर घनसत्व बना समझें और उपर्युक्त दवा मिलाकर गोली बना लें।

प्रयोग विधि—इन गोलियों को सम्भोग से कुछ समय पूर्व योनि में रखनी चाहिये।

उपयोग—किसी भी कारण से योनि ढीली हो गयी हो तो यह गोलियां लाभ करती हैं।

—श्रीमती मनोरमा आचार्य द्वारा
गुप्तसिद्ध प्रयोगांक तृतीय भाग से।

(४५) गर्भाशय भ्रंशहर मूषक तैल—तिल तैल २०० मि० लि०, मूषक मांस रस ४०० मि० लि०।

निर्माण विधि—दोनों को इकट्ठा करके धीमी आग से पकावें तैल अवशेष रहने पर छानकर बोतल में भर दें।

प्रयोग विधि एवं मात्रा—४ इञ्च सफेद धागे के साथ थोड़ा सा रुई का गोला बांध देते हैं। ३ से ५ मि० लि० मूषक तैल रुई पर लगाकर योनि मार्ग में से ३ इंच अन्दर को रख देना चाहिये और ऊपर से कोपीन बन्ध बांधना चाहिये।

उपयोग—बहु-प्रसव, संदंश यन्त्र द्वारा प्रसव तथा दौर्बल्यता के कारण योनिमार्ग की दोनों दीवार तथा गर्भाशय बाहर निकल आता है उस अवस्था में योनिपिचु रखने से उसे ६ माह की अवधि में योनि तथा गर्भाशय का भ्रंश दूर होता है। —इला श्रीकान्त देशपाण्डेय द्वारा सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(४६) योनिकण्डूहर योग—सिंगरफ १ ग्राम, तूतिया १ ग्राम, सफेद सुरमा २० ग्राम, दही का तोड़ १२० ग्राम, गुलाबजल १२० ग्राम।

विधि—औषधियों को खरलकर थोड़ा सा दही का तोड़ डालकर घोटें जब दवा नहीं रहे तब शेष दही का तोड़ और गुलाबजल मिलाकर १ शीशी में भरकर रख लें।

व्यवहार विधि—रुई का फोहा भिगोकर योनि मार्ग को इससे स्वच्छ करदें।

उपयोग—योनिकण्डू नाशक उत्तम योग है।

—श्रीमती सरोजनी देवी द्वारा प्रयोग मणिमाला से।

(४७) गर्भाशय शोथहर डूश—खैर छाल, अनार की छाल, बबूल की छाल तीनों २०-२० ग्राम, मांजूफल तथा हरड़ १०-१० ग्राम।

विधि—सबको मिलाकर जौकुट चूर्ण करें।

प्रयोग विधि—इसमें से २० ग्राम चूर्ण को १॥ किलो जल में मिलाकर उबालें। ४-६ उफान आने पर उतार कर ढक देवें। निवाया रहने पर छानकर ६ ग्राम बोरिक एसिड तथा ३ ग्राम कच्ची फिटकरी मिलाकर गर्भाशय में डूश देवें। यह प्रयोग रोज प्रातः एक बार कराना चाहिए।

उपयोग—४-६ दिन के प्रयोग मात्र से गर्भाशय शुद्ध होकर उसका जीर्ण शोथ भी ठीक हो जाता है। यदि गर्भाशय में कोई क्षत होता है, तो वह भी भर जाता है। गर्भाशय से आने वाला दूषित स्राव बन्द हो जाता है। गर्भाशय शिथिल हो गया हो और बाहर निकल आता हो, तो भी यह डूश लाभ करता है। यह डूश गर्भाशय को शुद्ध, सुदृढ़, सबल तथा निरोग बनाने वाला है।

—रसतन्त्रसार द्वितीय भाग से।

(४८) सोमहर चूर्ण—भिण्डी की जड़, सूखा आंवला, विदारीकन्द तीनों ४०-४० ग्राम, उड़द की धोई दाल की मैदा २० ग्राम।

विधि—इन सब औषधियों को कूट-कपड़छन करके शीशी में रख लें।

मात्रा एवं व्यवहार विधि—प्रातः तथा सायं ६-६ ग्राम औषधि खाकर ऊपर से मिश्री मिला हुआ दूध पीना चाहिए।

उपयोग—इससे स्त्रियों के सोमरोग में लाभ होता है।

—अनुभूत योग प्रथम भाग से।

(४९) गर्भाशय मांसांकुर वृद्धिहर योग—स्याह जीरा, हाथी दांत का बुरादा दोनों ४-४ रत्ती, रेंडी का तैल १॥ ग्राम।

विधि—स्याह जीरा तथा हाथी दांत के बुरादे को खूब घोट ले और जब वह पावडर की तरह काफी महीन हो जाय, तब उसे तैल में मिलाकर महीन कपड़े से छान रख लें। यह एक मात्रा है।

व्यवहार विधि—इस तैल में रुई का फाया भिगोकर रात्रि को सोते समय योनि में रखना चाहिए और प्रातः काल हटा देना चाहिए।

उपयोग—इसके प्रयोग से गर्भाशय के अन्दर उत्पन्न मांसांकुर मिट जाते हैं। —अनुभूत योग चतुर्थ भाग से।

(५०) योनि संकोचक पोटली—बड़ी मांई, छोटी मांई, फिटकरी, मांजूफल, जंगली बेर की छाल, पठानी लोध्र, गुलाब के फूल, केशर प्रत्येक ३-३ ग्राम, तगर, बालछड़ तथा छरीला तीनों १-१ ग्राम।

बनाने की विधि—सभी चीजों को कपड़छन करके साफ मलमल के कपड़े में रख १-१ ग्राम की पोटलियां बना लें।

व्यवहार विधि—योनि को गरम जल से धोकर उसके अन्दर पोटली रखनी चाहिए। १० मिनट के बाद पोटली को निकालकर फैंक देनी चाहिए।

उपयोग—इस प्रयोग से योनि से पानी गिरना, दुर्गन्ध आना, ढीला होना आदि विकार दूर हो जाते हैं।

(५१) योनि संकोचक कटफलादि धूप—कायफल, केशर, गेरू, जूही का फूल, कूठ, सफेद चन्दन का बुरादा प्रत्येक १०-१० ग्राम।

विधि—सभी चीजों को कूट-कपड़छन कर रख लें।

व्यवहार विधि—कण्डे की धीमी आग पर थोड़ी-सी औषधि डालकर धूनी देनी चाहिए।

उपयोग—इसके प्रयोग से स्त्री की ढीली योनि कस जाती है और उसकी दुर्गन्धि नष्ट हो जाती है।

—प्रयोग रत्नावली से।

[३] वन्ध्यत्वहर योग—

(५२) वन्ध्यत्वहर पाक—हाथी दांत का चूरा, गुल अनार, शृङ्ग भस्म, सुपारी, आबरेशम प्रत्येक १-१ ग्राम, मोती अनविधे, मूंगा, मूंगा की जड़, संगयशम श्वेत, फूल गुलाब, गिरी धनियां, रूमीमस्तगी, नरकचूर, कबाबचीनी प्रत्येक २०-२० ग्राम, सीरा खांड ४० ग्राम, असली शहद ८० ग्राम।

विधि—सब औषधियों को कूट-छान लें। फिर सीरा और शहद मिलाकर अवलेह बना लें।

मात्रा—३ ग्राम की मात्रा से प्रातः सेवन करावें।

उपयोग—वन्ध्यत्वनाशक बहुत उपयोगी योग है। जिन्हें बार-बार गर्भपात हो जाता हो, ऐसी स्त्रियों को २ माह गर्भ रहने के बाद ही इसका प्रारम्भ कर देना चाहिए।

—कविराज विश्वनाथ द्वारा धन्वन्तरि अनुभवांक से।

(५३) शिव गुटिका—अश्वगन्धा, खरैटी, नागबला, मुलहठी, नागकेशर, मायाफल, पुत्रजीवक, कमल बीज, मखाने, कटफल त्वक् प्रत्येक १०-१० ग्राम।

भावनार्थ द्रव्य—बटांकुर स्वरस या क्वाथ, जीवन्ती।

विधि—उक्त सब औषधियों का चूर्ण कर उसमें बटांकुर की तीन भावनायें दें। यदि उपलब्ध हो सके, तो श्वेत कण्टकारी के स्वरस या क्वाथ की भावनायें भी दे दें। यदि जीवन्ती न मिले तो उसकी भावना न दें। बाद में ४-४ रत्ती की गोलियां बना लें।

मात्रा—६ गोली प्रतिदिन जल के साथ सेवन करें।

उपयोग—यह योग पुत्रप्रद तथा गर्भस्राव हर है। या जिन स्त्रियों के लड़कियां ही लड़कियां होती हों या जिनके बच्चे मर जाते हों अथवा जिन्हें ३-४ मास का गर्भस्राव हो जाता हो, उनके लिए अति उत्तम है।

—कविराज महेन्द्रकुमार शास्त्री द्वारा गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(५४) वन्ध्यत्वनाशक योग—पीपल की जटा ४ भाग, शिवलिंगी १ भाग, अश्वगन्धा २ भाग, कुड़ा की जड़ १ भाग, लाल कुमुदनी के फूल ४ भाग, नागकेशर १ भाग, सोंठ १ गांठ, छोटी इलायची १ भाग, बड़ की कोमल पत्ती १ भाग, सतावरी ४ भाग, वरियारी की जड़ १ भाग।

विधि—उपरोक्त सभी वस्तुओं को कूट-कपड़छन चूर्ण तैयार कर रख ले।

मात्रा—३ ग्राम चूर्ण को मधु के अनुपान के साथ देकर ऊपर से २५० ग्राम दूध मिश्री मिलाकर पिलावें।

उपयोग—काकवन्ध्या, मृतवत्सा, गर्भस्राव का बार-बार होना, योनिदोष आदि विकारों में उपयोगी योग है।

—धन्वन्तरि नवम्बर १९५८ से।

(५५) कामिनी कुलमण्डन रस—शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक, अभ्रक भस्म, ताम्र भस्म तथा लोह भस्म प्रत्येक १०-१० ग्राम, हरड़, बहेड़ा, आंवला, रेवन्द चीनी चारों ३०-३० ग्राम, चित्रकमूल त्वक्, शुद्ध गुग्गुल तथा शुद्ध शिलाजीत तीनों ५०-५० ग्राम, एलुआ, सोंठ, काली मरिच तथा पीपल चारों २०-२० ग्राम, कुटकी ४० ग्राम।

निर्माण विधि—प्रथम पारद तथा गन्धक की कज्जली बना लें। फिर अभ्रक भस्म, ताम्र भस्म तथा लोह भस्म को मिलाकर घुटाई करें। फिर एलुआ, गुग्गुल तथा

शिलाजीत को मिलाकर कूटें और एकजीव करके रखें। इसके बाद त्रिफला, त्रिकुटा आदि औषधियां मिलाकर कूटें और कपड़े से खूब छान लें। सभी औषधियों को थोड़ी-थोड़ी कर खरल में मिला लें, फिर कुमारी स्वरस में मर्दन कर गोली बना लें और छायाशुष्क कर गोलियां शीशी में रख लें।

सेवन विधि—१-१ गोली प्रातः-सायं सुखोष्ण गोदुग्ध के साथ सेवन करें। भोजन के पूर्व प्रातः तथा रात्रि में सोते समय दें।

उपयोग—नारी के स्थौल्य तथा वन्ध्यापन को दूर करती हैं तथा रजःप्रवृत्ति को नियमित करती है।

विशेष—यह प्रयोग यशस्वी चिकित्सक पं० गोवर्धन जी शर्मा छांगाणी, भिषग् केशरी नागपुर वालों द्वारा धन्वन्तरि के नारी रोगांक में (सन् १९४०) प्रकाशित किया गया था। यह प्रयोग आरोग्यवर्धनी वटी का ही अपभ्रंश प्रयोग है, जिसमें निम्बपत्र स्वरस के स्थान पर कुमारी स्वरस की भावना दी गई है। लेखक ने इन गोलियों के सेवन के साथ अशोकारिष्ट का प्रयोग करना लिखा है। परन्तु हमने इसमें कुमारी आसव का प्रयोग प्रशस्त पाया है। इसके साथ हम रुग्णा को मधु-शीतजल तथा निम्बस्वरस का प्रयोग भी दिन में एक बार कराते हैं, यह प्रयोग वैद्य जीवन का है। दुग्ध में भी हमने यह परिष्कार किया है। एक कप दूध (चाय वाला प्याला) तथा एक कप पानी में २ पत्ते पीपल (अश्वत्थ) के डाल कर उबालें। पानी जल जाने पर केवल दुग्ध में से पत्ते निकाल कर उक्त दुग्ध सेवन करें।

—वैद्य अम्बालाल जोशी द्वारा
सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(५६) गर्भस्रावी वन्ध्या में बबूल गोंद खोवा—बबूल का गोंद ५० ग्राम, गाय का दूध २ लिटर।

निर्माण विधि—बबूल का गोंद दूध में डालकर जिस तरह दूध से खोवा बनाते है, उसी तरह धीमी आग से खोवा बनाना चाहिए। आवश्यकतानुसार शर्करा डालने के बाद खोवा को स्वादिष्ट बनाने के लिए छोटी इलायची, बादाम आदि भी डाल सकते हैं।

मात्रा—२०-५० ग्राम तक प्रातःकाल या मध्याह्न भोजन के पूर्व दें।

उपयोग—वात, पित्त तथा रक्त की विशेष दुष्टि के कारण ही पुनः-पुनः गर्भस्राव होता है। आधुनिक परीक्षण में पति एवं पत्नी में विशेष विकृति न आई हो, तो इस गोंद के खोवा को ३ से ९वें मास पर्यन्त सेवन कराने से अवश्य प्राकृत प्रसव होता है।

—इला श्रीकान्त देशपाण्डेय द्वारा
सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(५७) वन्ध्यत्वहर योग—स्फटिका श्वेत तथा मांजूफल।

प्रयोग विधि तथा मात्रा—रजोधर्म से पूर्णतः निवृत्ति होने पर ७ दिनों तक स्फटिका द्वारा उत्तर वस्ति (डूश) का प्रयोग करना चाहिए एवं मासिकधर्म प्रारम्भ होने के ४ दिन पहले से मासिक निवृत्ति तक १० ग्राम उलट कम्बल का क्वाथ बनाकर सुबह, शाम दें। मासिक समाप्ति के बाद माजूफल चूर्ण २ ग्राम में प्रातःकाल कुछ भी खाये-पीये बिना सूर्य की तरफ मुंह किये जल के साथ लगातार ४ दिन तक दें। इसी बीच अशोकारिष्ट २० ग्राम समान जल मिलाकर भोजनोपरान्त दोनों समय दें तथा प्रवालपिष्टी १-१ रत्ती प्रातः, सायं मधु से दें।

उपयोग—प्रदर एवं अन्य कारणों से उत्पन्न विकृतियां जिसमें स्त्रियां अपने को गर्भधारण में अक्षम पाती हैं। इनमें उपरोक्त प्रयोग विशेष लाभप्रद प्रमाणित हुआ है।

—श्रीमती राजकुमारी त्यागी द्वारा
सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(५८) मृतवत्सा योग—रक्त चन्दन, देवदारु, छोटी इलायची, पित्तपापड़ा, सुगन्धवाला, वच मीठी, रसौत, वायविडङ्ग, बड़ी हरड़ का छिलका, पिप्पली, एलुआ प्रत्येक १०-१० ग्राम, रजत भस्म ५ ग्राम, स्वर्णमाक्षिक भस्म ५ ग्राम, शुद्ध खर्पर या यशद भस्म ५ ग्राम, मुक्तापिष्टी ३ ग्राम।

विधि—काष्ठौषधियों का सूक्ष्म वस्त्रपूत चूर्ण कर भस्मों और पिष्टी को मिश्रित कर खरल में एकजीव होने तक मर्दन करें। बाद में शीशी में भरकर सुरक्षित रख लें।

नागकेशर, दालचीनी, कमलकेशर, सालममिश्री सभी १०-१० ग्राम, चांदी के वर्क ५० ग्राम, काश्मीरी केशर ६ ग्राम, उत्तम कस्तूरी ४ रत्ती, गाय का घृत ६०० ग्राम, गाय दुग्ध का खोवा ४८० ग्राम, वूरा ८०० ग्राम कि लगभग।

विधि—वादाम भिगो छीलकर उतार लें। कोंच और कमलगट्टा के छिलके उतार दें। सौंफ जीरा कूट फटक कर उनके चावल निकाल लें अद्रक भी छील लें इन सबको पीस लें और शेष चीजें अलग पीस लें और फिर ३०० ग्राम घी में ५ मिनट तक सबको भून लें। शेष ३०० ग्राम घी मे खोवा कुछ लाल होने तक भून लें। फिर केशर, कस्तूरी, चांदी के वर्क पीसकर वूरा सहित मिला दें और खूब एकजीव कर मिट्टी के पात्र में रखलें।

व्यवहार विधि—६-६ ग्राम प्रातः-सायं सेवन कर थोड़ा दूध पिलावें।

उपयोग—स्त्रियों के लिये अमृत रसायन है। प्रसूति के विकार दूर कर निरोग और बलवान् बनाता है।

—श्री भुवनेश्वरीप्रसाद शर्मा द्वारा
धन्वन्तरि नारी रोगांक से।

(६३) गर्भरक्षक पाक—अनविधे मोती, अकरकरा ३-३ ग्राम, सोंठ, रूमीमस्तङ्गी १४-१४ ग्राम, कपूरकचरी, तज, केशर, छोटी इलायची के दाने, जायफल, जावित्री सब ७-७ ग्राम, वहमन सुर्ख, वहमन सफेद, छोटी पीपर, श्वेत मरिच १०-१० ग्राम, दालचीनी १५ ग्राम, मिश्री कुंजा ३०० ग्राम।

विधि—मिश्री व मोतियों को छोड़कर शेष दवाओं को कूट कपड़छन करलें और खरल में डालकर सुरमा की तरह घोटकर रखलें और मोतियों को अर्क केवड़े में घोटकर इसमें मिला दें। अर्क गुलाव डालकर मिश्री की चाशनी करके उसमें उपरोक्त सब औषधियां मिला दें।

मात्रा—४-४ ग्राम प्रातः-सायं ३ घूंट ताजा जल के साथ।

उपयोग—यह गर्भरक्षक पाक गर्भपात एवं गर्भस्राव की रोगिणी के लिये बहुत उत्तम है। गर्भधारण होते ही पाक का प्रयोग करने स गर्भपात या गर्भस्राव का भय नही रहता। गर्भावस्था की पूर्ण अवधि तक लेते रहने से गर्भ पुष्ट होता है। —वैद्य गुणप्रकाश शर्मा द्वारा
धन्वन्तरि नारी रोगांक से।

(६४) प्रसूतिका रोगहर पाक—जीरा, हाऊवेर, धनियां, सौंफ, देवदारु, अजवायन, अजमोद, हींग, तेजपात, कसौंदी, पीपर, पीपरामूल, सोये के बीज, चीते की छाल प्रत्येक ४०-४० ग्राम, कसेरु, सोंठ, कूठ मीठा, अजवायन प्रत्येक १६०-१६० ग्राम, गुड़ या वूरा ५ किलो, घृत १ किलो, दूध २ किलो।

विधि—इन सब वस्तुओं से ५०-५० ग्राम के मोदक बनालें।

मात्रा—रात्रि को गर्म दुग्ध के साथ सेवन करावें।

उपयोग—यह प्रसूतरोगनाशक अति उत्तम पाक है।

—पं० मनोहरलाल वैद्यराज द्वारा
धन्वन्तरि नारी रोगांक से।

(६५) प्रसूतरोगारि [१]—गिलोय १ किलो, परवल की पत्ती, चिरायता ½-½ किलो, निशोथ, लालचन्दन २५०-२५० ग्राम इन सबको २० किलो जल में क्वाथ करना चाहिये ५ किलो शेष रहने पर छान लें इस प्रकार किया हुआ क्वाथ ५ किलो, उत्तम मधु १० किलो, धाय के फूल १ किलो, वायविडङ्ग, छोटी इलायची, पीपर, स्याहजीरा, सोंठ, २०-२० ग्राम।

विधि—उपरोक्त लिखित औषधियों को कूटकर मिला देना चाहिये और मजबूत मटके का मुंह वन्द कर १५ दिन जमीन के अन्दर गाढ़ देना चाहिये।

मात्रा—२० ग्राम वरावर जल मिलाकर प्रातः-सायं १० दाने किशमिश खाकर दवा को पीना चाहिये।

उपयोग—इसके सेवन से विभिन्न प्रकार के प्रसूतरोग नष्ट होते हैं। —पं० हरीशंकर पाचोली द्वारा
धन्वन्तरि नवम्बर ४० से।

(६६) प्रसूतरोगारि—देवदारु, वच मीठा, कूठ मीठा, पीपर, सोंठ, कायफल, नागरमोंथा, चिरायता, कुटकी, धनियां, हरड़, गजपीपर, धमासा, गोखरू, जवासा, कटेरी की जड़, अतीस, गिलोय, स्याहजीरा, काकड़ासिंगी प्रत्येक ४०-४० ग्राम।

विधि—यवकुट कर मिट्टी के पात्र में १६ किलो पानी में क्वाथ बना लें इस क्वाथ में १ किलो मिश्री और १ किलो धाय के फूल का क्वाथ मिलाकर दूसरे मिट्टी के पात्र में मुंह बन्द कर एक माह रखा रहने दें। १५ दिन के बाद इस अर्क को छानकर बोतलों में भरकर रख लें।

मात्रा—१०-२० ग्राम तक भोजन के बाद सेवन कराना चाहिये।

उपयोग—प्रसूत ज्वर तथा उससे उत्पन्न अन्य उपद्रव यथा खांसी, श्वास, शिरःशूल, शरीर का दर्द आदि विकार शान्त होते हैं।

—गुप्तसिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(६७) प्रसूतरोग हर क्वाथ—पीपल, अजमोद, पीपरामूल, सरसों, कालीमरिच, भारङ्गी, गजपीपर, सोंठ, इन्द्रजौ, चित्रकमूल, जीरा, इलायची, चव्य, निम्ब की छाल, अतीस, कुटकी, वायविडङ्ग प्रत्येक ५०-५० ग्राम, दशमूल ४०० ग्राम, मुनक्का १ किलो ४०० ग्राम।

विधि—सब औषधियों को यवकुट कर ३८ किलो जल में मिलाकर मिट्टी के पात्र में उबालें लगभग १० किलो जल शेष रहने पर उतार मथकर छानलें फिर शीतल होने पर शहद १ किलो ८०० ग्राम तथा गुड़ १ किलो ५०० ग्राम मिलाकर यथा विधि चीनी मिट्टी के पात्र में मुख मुद्रा करके १॥ माह तक रखदें परिपक्व होने पर छान लें।

मात्रा—१० ग्राम से १५ ग्राम तक दिन में २-२ घण्टे से जल मिलाकर दें।

उपयोग—यह प्रसूता स्त्री के लिये अत्यन्त हितकर क्वाथ है। —गुप्तसिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(६८) प्रसूतरोगारि अर्क—श्वेत चन्दन, लालचन्दन, गजपीपर, धनियां, जीरा, अजमोद, त्रिफला, पलासपापड़ा, वायविडङ्ग, साहतरा, चिरायता, पीपर छोटी, मरोड़फली, काकड़ासिंगी, नेत्रबाला, पाठा, नागकेशर, मुलहठी, पोहकरमूल, अकरकरा, भारङ्गी, कायफल, सोंठ प्रत्येक २०-२० ग्राम, कुटकी ४० ग्राम, वनपसा ५० ग्राम, लाहौरीनमक ५० ग्राम, हींग ६ ग्राम, दशमूल ½ किलो, बतौता २५० ग्राम, अरण्ड की जड़, कुश, कांस, झाऊ, बांसा, जवासा दोनों कटेरी इन सबकी जड़ शुद्ध जल से धुली हुयी २०-२० ग्राम लें। नीम का बक्कुल, बरना की छाल, कचनार की छाल, वन (कपास) हुरी कांसी प्रत्येक २०-२० ग्राम।

विधि—प्रथम इन औषधियों में स्वच्छ करने योग्य औषधियों को स्वच्छ करलें पश्चात् सबको दरदरा करके सबके से भली प्रकार अर्क खींचलें फिर स्वच्छ करके बोतलों में भरकर रखदें।

मात्रा—१० ग्राम से २० ग्राम तक प्रातः-सायं।

उपयोग—बच्चे की उत्पत्ति के समय स्त्रियों को विविध प्रकार के रोग हो जाते हैं उस समय से लेकर यदि जब तक बच्चा कम से कम ३ माह का हो जाय तब तक स्त्रियों को पिलाया जाय तो उन्हें किसी प्रकार के प्रसूतजन्य रोग नहीं सताते। प्रसूता के ज्वर दुर्बलता में विशेष लाभकारी योग है। —पं० छाजूराम शर्मा द्वारा

गुप्तसिद्ध प्रयोगांक तृतीय भाग से।

(६९) गर्भरक्षक अमृत भस्म—प्रवालशाखा, मुक्ताशुक्ति, अकीक पत्थर, पत्थरबेर, शंखनाभि, पीतकपर्द प्रत्येक १०-१० ग्राम।

निर्माण विधि—सबको शामिल कर कूटकर छानलें फिर ½ किलो गोदुग्ध में डालकर गजपुट दें फिर गुलाबजल में घोटकर टिक्की बनाकर सुखालें तथा १० किलो कण्डों की अग्नि दें। ऐसे ३ पुट दें। आवश्यकता पड़ने पर पुनः पुट दें। फिर आधी बोतल गुलाबजल में घोटकर पिष्टी बनालें।

उपयोग—यह पिष्टी समस्त स्त्रीरोगों की अनुपम औषधि है। विशेषकर गर्भावस्था में इसका सेवन करने से स्त्री तथा बच्चा दोनों पुष्ट होते हैं और कैल्शियम की पूर्ति सम्यक् रूप से होती रहती है।

—पं० अम्बालाल जोशी द्वारा

धन्वन्तरि गुप्तसिद्ध प्रयोगांक से।

(७०) नरनारायन योग—कमलगट्टे की गिरी (जिभी रहित), अनन्तमूल, छोटी इलायची के दाने, वंशलोचन, गोखरू छोटे, उत्तम नागकेशर, शतावरी, सौंफ, श्वेतमूसली, मुलहठी, सफेद चन्दन, प्रवालपिष्टी, गोदन्ती

पिष्टी, शुक्तिभस्म, नीलकमल, खस सभी औषधियां १-१ भाग, अष्टवर्ग १२ भाग।

विधि—इन द्रव्यों का कपड़छन चूर्ण बनाकर शीशी में भरलें।

मात्रा—१०-१० ग्राम भोजन से पूर्व दूध अथवा जल से।

उपयोग—यह प्रयोग गर्भस्राव, गर्भपात, गर्भ का समुचित विकास न होना, योनिपथ प्रदाह, गर्भिणी की दुर्बलता, स्तन्य की कमी आदि विकारों में अतीव लाभप्रद योग है। —पं० रामनारायन शास्त्री द्वारा सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(७१) गर्भरक्षक रसायन—अकरकरा ६ ग्राम, उत्तम सोंठ २७ ग्राम, रूमीमस्तङ्गी २७ ग्राम, कपूर कचरी ७ ग्राम, दरुनज अकरबी ७ ग्राम, तुख्म करफस ७ ग्राम, चित्रक ७ ग्राम, तज ७ ग्राम, बड़ी इलायची के दाने ७ ग्राम, दक्षिणी जायफल ७ ग्राम, जावित्री ७ ग्राम, बहमन सुर्ख ७ ग्राम, बहमन श्वेत ७ ग्राम, छोटी पीपल १० ग्राम, कालीमर्च १० ग्राम, दालचीनी १८ ग्राम, असगन्ध नागौरी ७ ग्राम, ढाक के सूखे पत्ते २४ ग्राम, मोती की सीप घुटी १२ ग्राम, मिश्री सफेद ३०० ग्राम।

विधि—मोती की सीप तथा मिश्री को छोड़कर शेष सब दवाओं को कूट-पीस वस्त्रपूत कर लें। उत्तम मोती की सीप को अर्क चन्दन में घोटकर सुरमे की तरह बना मिला दें। २०० ग्राम मिश्री की अर्क केवड़े में चाशनी बनावें। जब माजून के योग्य चाशनी बन जावे, तब कुटे पिसे चूर्ण को भली प्रकार मिला दें व कांच की साफ बरनी या चौड़े मुंह की शीशी में रखकर ६-६ ग्राम गर्म रहते ही खिलाना प्रारम्भ कर दें।

उपयोग—बच्चा होने तक इस गर्भरक्षक रसायन का प्रयोग लगातार कराया जाय, तो नियत समय पर बच्चा हृष्ट-पुष्ट उत्पन्न होता है। अपूर्ण गर्भ गिरना बन्द हो जाता है। —डा० ताराचन्द्र लोढ़ा द्वारा सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(७२) गर्भामृत वटी—श्वेत चन्दन, रक्त चन्दन, शतावरी, असगन्ध, इलायची, विदारीकन्द, नागकेशर, नागरमोथा, मोचरस, कमल बीज, लोध्र पठानी, रूमीमस्तङ्गी, सुपारी चिकनी, वंशलोचन, अशोक स्वरस, अडूसा स्वरस, कचूर, गैरिक, धाय के फूल सबको समभाग लें।

विधि—सबको कूट-कपड़छन कर क्रमशः बटदुग्ध, चौलाई रस, चन्दन क्वाथ में घोटकर चने प्रमाण की गोलियां बना लें।

मात्रा—१-१ गोली सुबह, शाम दूध से दें।

उपयोग—गर्भावस्था में सेवन कराने से पूर्णकाल में स्वस्थ प्रसव होता है। गर्भपात का भय नहीं रहता। —महावीरप्रसाद जोशी द्वारा धन्वन्तरि नारी रोगांक से।

(७३) केशरादि वटी—केशर, कालीमरिच, चित्रक मूल, जायफल, जावित्री, शुद्ध हिंगुल, शुद्ध वच्छनाग, अभ्रक भस्म प्रत्येक १०-१० ग्राम तथा एरण्ड तैल से शुद्ध किया हुआ कुचला ५० ग्राम।

विधि—सबको यथाविधि मिला नागरवेल पान के स्वरस में १२ घण्टे खरल कर १-१ रत्ती की गोलियां बना लेवें।

मात्रा—१-१ गोली दिन में २-३ बार अदरक के रस और शहद के साथ दें।

उपयोग—यह योग सूतिका ज्वर, कफ कास, हृदय की शिथिलता, वातप्रकोपज उपद्रव में लाभकारी है।

(७४) सूतिका रोगान्तक क्वाथ—रास्ना, देवदारु, इन्द्रायन, दारुहल्दी, अतीस, पीपरामूल, चित्रकमूल, भारङ्गीमूल, हल्दी, कुटकी, पुष्करमूल, निर्गुण्डी, खुरासानी अजवायन, कुष्ठ, सोया, गोखरू, हरड़, ब्राह्मी, वासापत्र, पियावांसा, गिलोय, नागरमोथा, धमासा, अरणी, पुनर्नवा, पाठा, खरैटी के बीज, रेणुका बीज, विधारा; गोरखमुण्डी, निशोथ, सोंठ, अरणी मूल, फिटकरी का फूला, सारिवा, सतावर, चिरायता, पीपल, खस, त्रायमाण, छोटी कटेरी, बड़ी कटेरी, अमलतास की फली का गूदा, वायविडङ्ग, निम्बछाल, पटोलपत्र, इन्द्रजौ, लहसुन, गुग्गुल तथा प्रसारणी इन ५० औषधियों को समभाग मिलाकर जौकुट चूर्ण करें।

मात्रा—२०-४० ग्राम का १६ गुने जल में क्वाथ बनाकर २ भाग करें। प्रातः, सायं ६-६ ग्राम शहद मिलाकर पिलाते रहें।

उपयोग—यह सूतिका रोगान्तक क्वाथ प्रसूता के ज्वर, वातप्रकोप, घबराहट, वमन, अतीसार, शोथ; कटिवेदना आदि को दूर करता है। सूतिका के नये तीव्र विकार और जीर्ण विकार दोनों अवस्थाओं में यह क्वाथ उपयोगी सिद्ध हुआ है।

(७५) सूतिका ज्वरहर कषाय—हरड़, बहेड़ा, आंवला, गिलोय, मुलहठी, वच प्रत्येक ६-६ ग्राम तथा पोस्त के डोंडे १ ग्राम।

विधि—सबको मिला जौकुट कर १६ गुने जल में मिलाकर चतुर्थांश क्वाथ करें।

मात्रा एवं व्यवहार विधि—इसके २ भाग कर सुबह तथा रात्रि को पिलावें। पिलाने के समय गुड़ और हल्दी २-२ ग्राम तथा कलमी चूना १ ग्राम मिलावें।

उपयोग—इस कषाय का उपयोग १ सप्ताह करने पर यह सूतिका विष को जला देता है, रक्त का प्रसादन करता, आम का पचन करता है, कफ को बाहर निकालता है और वातप्रकोप को शमन करता है।

—रसतन्त्रसार द्वितीय भाग से।

(७६) प्रसूति दोषहर कषाय—देवदारु, बालवच, कूठ, अडूसा, पीपल, सोंठ, कायफल, नागरमोथा, चिरायता, कुटकी, धनियां, बड़ी हरड़, गजपीपल, जवासा, गोखरू, धमासा, बड़ी कटेरी, अतीस, गिलोय, काकड़ासिंगी तथा स्याह जीरा प्रत्येक ५०-५० ग्राम।

निर्माण विधि—बड़ी हरड़ की गुठली निकालकर वजन करें। सभी औषधियों को कूटते समय ही ताजी गिलोय को भी मिलाकर कूटें और यवकुट औषधियों को २-४ घण्टे तक धूप में डाल दें। इस प्रकार ताजी गिलोय का रस सभी औषधियों में मिश्रित हो जायगा और सूख जावेगा। सूख जाने पर कूटकर मोटी चलनी से सभी को एक बार छान पात्र में ढंककर रख लें।

मात्रा—इस कषाय में से २०-२५ ग्राम लेकर एक मिट्टी के पात्र में डालें और ऊपर से आधा किलो जल डालकर रात्रि में ढंक दें। प्रातःकाल क्वाथ पकावें और १२५ ग्राम शेष रहने पर कपड़े से छानकर सेवन कराना चाहिए।

उपयोग—इससे प्रसूता स्त्री के शरीर में होने वाले विविध कष्ट दूर होते हैं। विशेषकर यह कषाय शूल, खांसी, ज्वर, कम्प तथा शिर में होने वाले दर्द को शीघ्र मिटाता है। —अनुभूत योग भाग ५ से।

[५] स्त्रीरोग नाशक सामान्य योग—

(७७) स्त्री जीवन—अशोकछाल असली ५ किलो, बांसे के पत्ते आधा किलो, बांसा के फूल, गूलर छाल, कमल पुष्प, शतावर स्वरस, पीपर की लाख १-१ किलो, लक्ष्मणा, कृष्णजीरक, श्वेतजीरक, नागरमोथा, नागकेशर असली, सोंठ, छोटी इलायची के बीज, शिवलिंगी ५०-५० ग्राम, त्रिफला ७५० ग्राम, उत्तम मधु ५ किलो, पुराना गुड़ १० किलो।

विधि—काष्ठादिक औषधियों को यवकुट करके ४० किलो पानी में एक रात्रि भिगोकर क्वाथ करें और फिर छानकर शतावर स्वरस गुड़ मधु मिलाकर किसी चिकने पात्र में भरकर मुख बन्द करके जमीन में गाड़ दें। ४० दिन बाद निकालकर छान लें और बोतलों में भरकर दस दिन धूप में रखें उसके पश्चात् छानकर सुरक्षित रखें।

मात्रा—२० ग्राम आवश्यकतानुसार या शुद्ध जल के साथ।

उपयोग—यह औषधि अनुपान भेद से स्त्रियों के सब रोगों पर सेवन कराई जाती है और तत्काल अपना चमत्कारी प्रभाव दिखाती है। साधारणतया सभी प्रकार के प्रदर, योनि विकार सन्तान का न होना, मासिकस्राव की खराबी आदि पर उत्तम है।

—डाक्टर इन्द्रदत्त शर्मा द्वारा
धन्वन्तरि सिद्ध प्रयोगांक से।

(७८) नारीरसायन [टॉनिक]—त्रिफला, त्रिकटु, तेजपत्र, कालाजीरा, जायफल, सफेद जीरा, जावित्री, पीपरामूल, काकड़ासिंगी, चित्रक, श्वेतचन्दन, सौंफ, अजमोद, कलोंजी, धनियां, नागकेशर, दालचीनी, कमलगट्टे की गिरी, मोचरस, लौंग, बला, श्वेतइलायची, वराहीकन्द, असगन्ध, शतावर, सिंघाड़ा, भीमसेनी कर्पूर, केशर,

चिकनी सुपारी, वंशलोचन सभी २०-२० ग्राम, छुहारे ५० ग्राम, बादाम १०० ग्राम, शिलाजीत १०० ग्राम, चिरोंजी १६० ग्राम, गोला २०० ग्राम, निशोथ ४०० ग्राम, सोंठ का चूर्ण ४ किलो, गोदुग्ध २० किलो, घृत ४ किलो, मिश्री १६ किलो, मधु १ किलो।

विधि—प्रथम सोंठ के दूध में खोवा बनाकर घृत में भून लें और मिश्री की चाशनी बनाकर ऊपर की औषधियां मिलादें और मोदक के समान चाशनी आने पर उतार लें। ठंडा हो जाने पर मधु मिलाकर रखलें।

मात्रा—२० ग्राम से १०० ग्राम तक सुबह-शाम दूध के साथ सेवन करावें।

उपयोग—यह स्त्रियों के लिये रसायन है यह वन्ध्यत्व को दूर करता है। गर्भिणी को खिलाने से प्रसव सुखपूर्वक होता है तथा वह स्वस्थ रहती है प्रसूति के पश्चात् खाने से बल बहुत शीघ्र आता है प्रत्येक अङ्ग सुडौल हो जाता है कुचों में कठोरता आ जाती है। प्रदर, कटिशूल आदि स्त्री विकारों से शीघ्र छुटकारा मिल जाता है। स्त्रियों को साल में ३-४ माह इसका सेवन कराने से विशेष शक्ति की प्राप्ति होती है। —श्रीमती गंगादेवी द्वारा

धन्वन्तरि नारी रोगांक से।

(७९) सौभाग्य संजीवनी—अशोक की छाल ५ किलो, बीजरहित द्राक्षा १ किलो लेकर ८० किलो जल में औटावें। २० किलो जल शेष रह जाय, तब उसमें निम्न प्रक्षेप डालें—

गुड़ ५ किलो, शर्करा ५ किलो, मधु २½ किलो, धाय के फूल १ किलो, वासा, आम की गुटली, दारुहल्दी, सफेद जीरा प्रत्येक का चूर्ण ८०-८० ग्राम, सेमर के फूल, गुड़हल के फूल, पोस्त के फल, श्वेत सारिवा, कृष्ण सारिवा, खरैटी, कमल, नागरमोथा, कालाजीरा, सोंठ, मांगरा, तगर, पतङ्ग काष्ठ, लोध्र, आंवला, हरड़, बहेड़ा, खैरसार, चिरायता, रसौत, बेलगिरी, शुद्ध भिलावा, नागकेशर, रक्त चन्दन, दालचीनी, इलायची के बीज, लोंग, केशर प्रत्येक ४०-४० ग्राम।

सन्धान समय—३० दिन।

मात्रा—१० से २५ ग्राम तक समभाग जल मिलाकर भोजनोपरान्त दें।

उपयोग—स्त्री रोगनाशक अत्यन्त उपयोगी औषधिकल्प है। प्रदर, अनियमित रजःस्राव, दुर्बलता, अजीर्ण, रक्ताल्पता आदि में बहुत उपयोगी है। गर्भकाल में देने से गर्भ को पुष्टता प्राप्त होती है। स्त्रियों को आयु, पुष्टि, बल, कान्ति बढ़ाने वाली नवजीवन प्रदाता रसायन है।

—पं० श्यामसुन्दरलाल द्वारा

धन्वन्तरि नारी रोगांक से।

(८०) नारी रोगारि—वंशलोचन, छोटी इलायची के दाने, जायफल, सुपारी दखिनी, मांजूफल, केशर, नागकेशर, छोटी मांई, शिवलिंगी बीज, पीपल की दाढ़ी, पीपल की कोंपल, जावित्री, कमरकस।

विधि—प्रत्येक १०-१० ग्राम लेकर चूर्ण करें। फिर पीपल, जामुन, गूलर तथा बबूल इन चारों वृक्षों की अन्तरछाल समपरिमाण में २ किलो लें और १६ किलो जल में पकावें। ४ किलो शेष रहने पर छान लें, फिर इस क्वाथ को कढ़ाही में पकावें और गाढ़ा हो जाने पर उपरोक्त चूर्ण डाल गोली बनाने योग्य करके चने के बराबर गोलियां बना लें।

मात्रा—१ से २ गोली तक दुग्ध, अर्क सौंफ अथवा दशमूल अर्क से दें।

उपयोग—हर प्रकार के स्त्री रोगों में उपयोगी योग है। कष्टार्तव, अनियमित ऋतु, योनिशूल, कटिशूल, शारीरिक दुर्बलता आदि में उपयोगी है।

—श्री धर्मदत्त चौधरी द्वारा

गुप्त सिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(८१) स्त्री दौर्बल्यहर पाक—जीरा १ किलो, लोध्र ½ किलो। इन दोनों के वस्त्रपूत चूर्ण को १ किलो मावे में मिलाकर १ किलो गोघृत में अच्छी तरह भूनें। फिर मिश्री की बरफी बनाने योग्य चाशनी बना उसमें उपरोक्त घृतपूत मावा आदि तथा तज, पत्रज, नागकेशर, पीपल, सोंठ, जीरा, खैर, रसौत, धनियां दोनों हल्दी, अडूसा, वंशलोचन तथा तवाखीर प्रत्येक १०-१० ग्राम का चूर्ण डाल खूब मिलाकर थाली में जमा दें और २०-२० ग्राम की कतली बना लें।

मात्रा—प्रातःकाल तथा रात्रि को सोते समय गरम गोदुग्ध के साथ १-२ कतली प्रयोग करानी चाहिए।

उपयोग—स्त्रियों की किसी भी प्रकार की दुर्बलता के लिए उपयोगी पाक है। श्वेतप्रदर की अधिकता से या गर्भपात के कारण होने वाली दुर्बलता के लिए इसका प्रयोग विशेष उपयोगी है। *—पं० श्रीकृष्ण शर्मा द्वारा गुप्त सिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।*

(८२) स्त्री जीवन—असगन्ध नागौरी, नागकेशर, सोंठ, पाषाणभेद, दारुहल्दी, हजरत जहूर, पठानी लोध्र प्रत्येक २५-२५ ग्राम।

विधि—सबको पीस-छानकर अशोक की छाल के क्वाथ में और पाढल के रस में १-१ दिन घोटकर सुखा लें। बाद में हरड़, बहेड़ा, आंवला तथा रसौत चारों २५-२५ ग्राम, तज १५ ग्राम, वंशलोचन ६ ग्राम, मोती की सीप का कपड़छन चूर्ण ६ ग्राम, मिश्री २०० ग्राम मिलाकर रख लें।

मात्रा—६ से १० ग्राम तक सुबह; शाम गरम दूध से देनी चाहिए।

उपयोग—यह औषधि स्त्रियों के प्रत्येक रोग के लिए रामबाण लाभ करती है। हर तरह के प्रदर, रजदोष, मासिकधर्म की अधिकता आदि में विशेष लाभदायक है। —डा० भगवानदास भण्डारी द्वारा गुप्त सिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(८३) सौभाग्य शृङ्गार—अशोक की छाल २०० ग्राम, अश्वगंधा २०० ग्राम, अर्जुन की छाल २०० ग्राम, अतीस, काला जीरा, धनियां, वच, सोंठ, देवदारु, हरड़, मरिच, बहेड़ा, आंवला, पीपल, वायविडङ्ग, मोथा, हल्दी, चित्रक, चव्य, पीपरामूल, दारुहल्दी, चिरायता, गजपीपल प्रत्येक १०-१० ग्राम, निशोथ १५० ग्राम, दन्तीमूल १५० ग्राम को यवकुट कर ८० किलो जल में पकावें। जब चतुर्थांश शेष रह जाय, तब छान लेवें और पुनः अग्नि पर चढ़ावें तथा निम्न प्रक्षेप उसमें मिलावें—

शिलाजीत सूर्यतापी ४०० ग्राम, शुद्ध गूगल ४२० ग्राम, यव क्षार, सज्जी क्षार, सेंधव लवण, विड नमक प्रत्येक ५०-५० ग्राम। उपरोक्त वस्तुयें डालकर जब गाढ़ा हो जावे, तब तक हिलावें। पुनः लेही जैसा गाढ़ा होने पर निम्न वस्तुयें डाल दें।

एला चूर्ण, दालचीनी, तेजपत्र तीनों ५०-५० ग्राम, लौह भस्म १६० ग्राम, कर्पूर २० ग्राम, तबासीर १०० ग्राम, स्वर्णमाक्षिक भस्म ८० ग्राम।

विधि—ठीक तरह मिलाकर ४-४ रत्ती की गोली बना लें।

मात्रा—२-२ गोली सुबह, शाम दूध से दें।

उपयोग—कष्टार्तव, नष्टार्तव, अल्पार्तव, प्रदर तथा उसके उपद्रवों के लिये रामबाण है। स्त्रियों की दुर्बलता, रक्ताल्पता आदि में विशेष उपयोगी है।

—श्री सत्यव्रत प्रेमी द्वारा गुप्त सिद्ध प्रयोगांक प्रथम भाग से।

(८४) महिलामृत मोदक—इमली के बीजों का आटा २०० ग्राम, बबूल का गोंद ४० ग्राम, आंवले सूखे बीजरहित ५० ग्राम, गूलर के फल छाया शुष्क ४० ग्राम, चोबचीनी, फूल मखाना, चिरोंजी प्रत्येक २०-२० ग्राम, नागकेशर १० ग्राम, मगज बादाम ४० ग्राम, इलायची १० ग्राम, शक्कर ६०० ग्राम, गोघृत ३०० ग्राम।

विधि—उपरोक्त औषधियों में से कूटे जाने वाली दवाओं को कूट-कपड़छन कर लेना चाहिए। मगज बादाम के छिलके साफ कर बारीक पीस लेना चाहिए। घृत को अलग गरम कर छान लेना चाहिए। फिर सबको एकत्र कर घृत, शक्कर मिला ४०-४० ग्राम के लड्डू बना लेवें।

मात्रा—१-१ लड्डू प्रातः, सायं लेवें।

उपयोग—स्त्रियों के गुप्त रोग, योनि रोग, श्वेत रक्तप्रदर पीड़ा आदि रोगों में अद्वितीय लाभकारी है। शरीर को स्वस्थ कर गर्भाशय को बलवान् बनाता है।

—पं० ताराचरन शर्मा द्वारा गुप्त सिद्ध प्रयोगांक तृतीय भाग से।

(८५) नारीसंजीवन चूर्ण [१]—शतावरी, असगन्ध नागौरी, पठानी लोध्र; सफेद विधारा, समुद्र सोस, मांजूफल, मोचरस, कमरकस, कतीरा गोंद, चुन्नी गोंद प्रत्येक ५०-५० ग्राम, मिश्री या शक्कर ५०० ग्राम।

विधि—समस्त औषधियों को कूट-पीस छानकर सूक्ष्म चूर्ण बना लेना चाहिए। मिश्री या शक्कर को भी

पीस-छानकर उक्त चूर्ण में हाथ से मसलकर एकजीव कर लेना चाहिए।

मात्रा—२ से ४ ग्राम तक गोदुग्ध या जल के साथ सुबह, शाम दिन में २ वार दें।

उपयोग—स्त्रियों के सर्वप्रकार के रोगों में उपयोगी चूर्ण है। दुर्वलता को कम करता है और प्रदर तथा प्रदर-जन्य विकारों के लिये विशेष उपयोगी है।

(८६) नारी संजीवनी चूर्ण [२]—पठानी लोध्र, शतावरी, अनार के फूल, छोंकर की माई, रूमीमस्तङ्गी, धाय के फूल, कत्था, सफेद मांजूफल, अनार फल के छिलके (भुने) कहरवा, वंशलोचन, राल सफेद, मोचरस, सेलखरी, सोनागेरू, शुद्ध फिटकरी प्रत्येक २५-२५ ग्राम, शुद्ध हिंगुल, मोती की सीप की भस्म, त्रिवङ्ग भस्म, संगजराहत की भस्म चारों २५-२५ ग्राम।

विधि—शुद्ध फिटकरी पर्यन्त १६ औषधियों को कूट-पीस छानकर सूक्ष्म चूर्ण वना लें। इसी चूर्ण में खरल किया हुआ शुद्ध हिंगुल तथा शेष भस्मादि मिलाकर एवं खरल में डालकर एकजीव करना चाहिए। अनन्तर मिश्री या शक्कर मिलाकर शीशी में रखना चाहिए।

मात्रा—१॥ से ३ ग्राम तक मधु, गोदुग्ध या ताजे जल के साथ प्रातः, सायं या रात्रि के समय दें।

उपयोग—प्रदर तथा प्रदरजन्य उपद्रव, रक्ताल्पता तथा दुर्वलता के लिए उपयोगी है।

(८७) नारी संजीवनी वटी—सतावरी, सफेद मूसली, काली मूसली, मुलहठी, मोचरस, अमृतासत्व, वंशलोचन, शुद्ध सोनागेरू, सफेद राल, कहरवा प्रत्येक १०-१० ग्राम, प्रवाल भस्म, स्वर्णमाक्षिक भस्म, नाग भस्म, त्रिवङ्ग भस्म, लोह भस्म पांचों २०-२० ग्राम।

विधि—काष्ठादि औषधियों तथा अन्य द्रव्यों को कूट-पीस छानकर सूक्ष्म चूर्ण वना लेना चाहिये। उक्त चूर्ण तथा भस्मादि को खरल में डालकर एकजीव करना चाहिये। अनन्तर पके हुये अनारदानों के रस तथा आवलो के स्वरस की ३-३ भावनायें देकर २-२ रत्ती की गोलियां वना लेनी चाहिये।

मात्रा—१ से २ गोली तक गोदुग्ध या जल के साथ प्रातः, सायं या रात्रि को सोते समय दें।

उपयोग—रक्तप्रदर, श्वेतप्रदर, सोम रोग, कटिशूल, अङ्गमर्द, दुर्वलता आदि विभिन्न स्त्री रोगों में उपयोगी है। अनेक वार का परीक्षित है।

—डा० इन्द्रिरा देवी द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(८८) देवी सुधा—दशमूल क्वाथ ८ किलो, अशोक क्वाथ ४ किलो, जीरक क्वाथ ४ किलो, लोध्र क्वाथ ४ किलो, मधुयष्टी क्वाथ ४ किलो, चीनी १६ किलो। उक्त द्रव्य तव तक औटाये जावें, जव तक चीनी की चिकनाहट हाथ में न लगने लगे। फिर उसमें धाय के फूल १ कि०, अर्जुनत्वक् ½ कि०, अश्वगन्धा ½ कि०, चन्दन चूरा २५० ग्राम, कमल पुष्प २५० ग्राम, कुमुदनी पुष्प २५० ग्राम।

विधि—सभी को १ माह तक अरिष्ट के रूप में सन्धान कर लें और वाद में छानकर वोतलों में भर लें।

उपयोग—स्त्रियों के विभिन्न प्रकार के रोगों के लिये उपयोगी औषधि है, अनेक वार का परीक्षित है।

—पं० शशीन्द्र पाठक द्वारा
गुप्त सिद्ध प्रयोगांक चतुर्थ भाग से।

(८९) नारी रोगनाशक वटी—वंशलोचन, सूक्ष्म एलावीज, जायफल, केशर, सुपारी दक्खिनी, मांजूफल, नागकेशर, छोटी मांई, वीज शिवलिंगी, पीपल की दाढ़ी, जावित्री, कमरकस गूदा प्रत्येक १०-१० ग्राम।

विधि—सवको कूट-पीस वस्त्रपूत कर लें। फिर पीपल, गूलर, जामुन, ववूल, अशोक वृक्ष की अन्तरछाल प्रत्येक मिलाकर २ किलो लें और १६ किलो पानी में पकावें। ४ किलो जल शेष रह जाने पर छान लें। फिर इस गाढ़े क्वाथ को वाष्पयन्त्र द्वारा पकावें, ताकि इसका जलीयांश सूख जाय। शिलाजीत की तरह सूख जाने पर उपरोक्त चूर्ण डालकर चने के वरावर गोली वनावें।

मात्रा—१ से २ गोली तक दूध, अर्क सौंफ अथवा दशमूल अर्क के साथ दें।

उपयोग—यह अनेक प्रकार के स्त्री रोगों में उपयोगी है। इससे कष्टार्तव, अनियमित ऋतुस्राव, योनिशूल,

कटिशूल आदि के लिये उपयोगी है। स्त्री रोग अथवा जननेन्द्रिय विकारों में ३० वर्ष से इस योग का उपयोग हमने किया है। —श्री धर्मदत्त चौधरी द्वारा सफल सिद्ध प्रयोगांक से।

(९०) महिला बन्धु—अशोकत्वक् घनसत्व, लाक्षा चूर्ण, दम्बुल अखवेन, घृत पाषाण, सफेद जीरा, मुलहठी, वंशलोचन, इलायची दाना, नागकेशर, आंवला, निशोथ प्रत्येक समभाग और मिश्री सब के बराबर लें।

विधि—सबका कपड़छन चूर्ण तैयार करके शीशी में रखना चाहिए।

मात्रा—३-३ ग्राम की मात्रा में मक्खन के साथ चटावें और ऊपर से धारोष्ण दुग्धपान करावें।

उपयोग—सर्व प्रकार के प्रदर, योनिदोष, गर्भाशय शोथ आदि स्त्री विकारों में बहुत लाभदायक योग है।

—पं० प्रभुदत्त शास्त्री द्वारा प्रयोग मणिमाला से।

(९१) कामिनी कल्पलता—शुद्ध स्वर्ण गैरिक, घी में भुना हुआ गोंद बबूल, गोखरू बड़े, फिटकरी का फूला, पीपल की लाख, चमेली का पत्ता, कतीरा, सेलखरी, कत्था पपरिया प्रत्येक १०-१० ग्राम, सफेद सुरमा २० ग्राम।

विधि—इन सबका बारीक कपड़छन चूर्ण करके शतावर के क्वाथ में एक दिन मर्दन कर १॥-१॥ ग्राम की गोलियां बना लें।

मात्रा—१-२ गोली अडूसा, शतावर, दारुहल्दी, खरैटी, बेलगिरी, रसौत, लाल चन्दन, चिरायता, नागरमोथा इन सबको समभाग लेकर १० ग्राम औषधियों के शीत कषाय के साथ सेवन करावें।

उपयोग—स्त्रियों के सभी प्रकार के प्रदर, कटिशूल, मासिकधर्म के समय का शूल, शिरःशूल, अङ्गमर्द तथा रज के दोषों को दूर करता है।

—पं० रामदत्त शर्मा द्वारा प्रयोग मणिमाला से।

(९२) स्त्री रोगहर खण्ड—दक्षिणी सुपारी ४०० ग्राम, छुहारा गुठली रहित ४०० ग्राम, मजीठ १०० ग्राम, तीनों को कूट-कपड़छन कर लें और उसे १० किलो गाय के दूध मे डाल खोवा बना ले। फिर मूग का आटा २०० ग्राम, गेहूं का आटा २०० ग्राम को थोड़े से घृत में भून लें। फिर खोवा मिलाकर और १ किलो गाय का घृत डालकर मन्दाग्नि से खूब भून लें। जब लाल-सा हो जावे तब ३ किलो मिश्री की चाशनी में डालकर घोटें। जब एकजान हो जावें, तब बबूल का गोंद २०० ग्राम पृथक् घी में भूनकर उसमें ही मिला दें और बादाम की गिरी छिली-पिसी ४०० ग्राम को भी उसमें मिला दें। फिर गोखरू ४०० ग्राम, पलाश का गोंद २०० ग्राम, गोला २०० ग्राम, सालम मिश्री २५ ग्राम, दालचीनी २५ ग्राम, लौंग २५ ग्राम, बड़ी इलायची के दाने २५ ग्राम, सोंठ २५ ग्राम, जायफल २० ग्राम, जावित्री १० ग्राम, पिस्ते का फूल १५ ग्राम, सुपारी का फूल १५ ग्राम, कचनार की छाल ६ ग्राम, बबूल की छाल ६ ग्राम, शंखाहूली ६ ग्राम, केशर १० ग्राम, कस्तूरी ६ ग्राम।

विधि—सबको कूट कपड़छन कर उसमें ही मिला दें और अग्नि पर ही रखकर खूब घोटें। जब रवा-रवा से हो जांय अर्थात् खिल जांय, तब उतार कर रख लें।

सेवन विधि—इसको १० ग्राम सुबह तथा १० ग्राम रात्रि को दूध के साथ सेवन करावें।

उपयोग—इसके सेवन से सब प्रकार के आर्तव रोग नष्ट हो जाते हैं। कटिशूल, कुक्षिशूल, गर्भाशय विकार नष्ट होकर सन्तान सुख प्राप्त होता है।

—पं० कृष्णाचार्य द्वारा प्रयोग मणिमाला से।

(९३) स्त्री रोगहर मोदक—नवीन जीरा १ कि०, लोध्र ½ किलो, खोवा १ किलो, गोघृत १ किलो, मिश्री ३ किलो, तज, तेजपात, इलायची छोटी, नागकेशर, पीपर छोटी, सोंठ, जीरा स्याह, देवदारु, खैर, रसौत, धनियां, हल्दी, दारुहल्दी, अडूसा, वंशलोचन, तबाशीर प्रत्येक १०-१० ग्राम।

विधि—जीरा, लोध्र को कूट-कपड़छन कर मावा मिला घृत में भून लें और मिश्री की चाशनी कर उसमें मिला लें तथा शेष औषधियां भी कपड़छन कर उसमें मिला जमा दें और २०-२० ग्राम की कतली काटकर रख लें।

सेवन विधि—प्रातःकाल तथा रात्रि को सोते समय १-१ कतरी दूध के साथ सेवन करानी चाहिये।

उपयोग—स्त्रियों की सभी प्रकार की दुर्बलता में लाभकारी है। —पं० श्रीकृष्ण शर्मा द्वारा प्रयोग मणिमाला से।

(९४) सोहाग पुड़ा योग—जायफल, सुपारी दक्षिणी, जावित्री, अमलतास, नारियल, बादाम, छुहारा, केशर, नागकेशर, सूक्ष्म एला बीज, माजूफल, शिवलिंगी बीज, कमरकस, छोटी मांई, पीपर की कोंपल, वड़ जटा, वंशलोचन प्रत्येक १०-१० ग्राम लेकर पीस वस्त्रपूत कर लें। फिर गूलर, बबूल, पीपल, अशोक तथा जामुन इन पांचों की अन्तरछाल बराबर परिमाण में लेकर (२-२ किलो) १६ किलो जल में औटाकर घनसत्व तैयार कर लें और उसमें उपरोक्त वनौषधियों का चूर्ण मिला दें। जब गोली बनाने लायक हो जाय, तब चने प्रमाण की गोली बनाकर शीशी में भर रख लें।

मात्रा—१-२ गोली अवस्थानुसार सुबह-शाम दें।

उपयोग—महिलाओं के सर्वप्रकार के प्रदर रोगों में उपयोगी है। कष्टार्तव, अनियमित आर्तव, योनिशूल, गर्भाशय शोथ आदि में लाभकर है।

—चौधरी धर्मदत्त वैद्य द्वारा महिला रोग चिकित्सांक से।

(९५) अबला संजीवनी वटी—वंग भस्म श्वेत ३ ग्राम, प्रवाल भस्म ५० ग्राम, मकरध्वज १० ग्राम, लोह भस्म ३ ग्राम, अभ्रक भस्म ४० ग्राम, वड़ की कोमल जटा १०० ग्राम, अशोक छाल १२० ग्राम, कृष्ण सारिवा १०० ग्राम, रक्त चन्दन १०० ग्राम, मंजीठ १०० ग्राम, दारुहल्दी १०० ग्राम, छोटी इलायची दाने ५० ग्राम।

विधि—सब दवायें मिलाकर खरैंटी, सेमल छाल, गूलर छाल इनके क्वाथ में २-२ दिन खरल करके २-२ ग्राम की गोलियां बना लें।

मात्रा—१-१ गोली सुबह, शाम मिश्री मिलाकर गाय के दूध से ४० दिनों तक सेवन करावें।

उपयोग—यह वटी स्त्रियों के विविध रोगों पर उत्तम कार्य करती है। अति रजःस्राव, रक्त प्रदर, श्वेत प्रदर, प्रसव के पश्चात् गर्भाशय की शिथिलता, गर्भाशय शोथ तथा दाह में लाभकारी है।

(९६) महिला सौख्य वटी—हरड़ त्वक्, बहेड़ा त्वक्, आंवला, सोंठ, पीपर, काली मरिच, पीपरामूल, वायविडङ्ग, नागकेशर, शिवलिंगी बीज, दालचीनी, तमालपत्र, छोटी इलायची, नागरमोथा, जटामांसी, सेंधव लवण, अनन्तमूल, कचूर, अतीस, शीतल मरिच, बच, देवदारु, मंजीठ, मिश्री, हल्दी, निम्ब बीज मग्ज प्रत्येक ४०-४० ग्राम, पारद, गन्धक, लोह भस्म, स्वर्णमाक्षिक भस्म, वंशलोचन, अभ्रक भस्म, प्रवाल भस्म, रौप्य भस्म, शुक्ति भस्म प्रत्येक १६०-१६० ग्राम गाय का घी १६० ग्राम, सूर्यतापी शिलाजीत, मधु, शुद्ध गुग्गुल तीनों ३२०-३२० ग्राम।

विधि—सबको मिलाकर भृङ्गराज के रस में ७ दिन तक खरल करके १-१ रत्ती की गोलियां बना लें।

मात्रा—२-४ गोली प्रातः-सायं धारोष्ण दूध या रोगानुसार अन्य अनुपान से सेवन करावें।

उपयोग—गर्भाशय के विकार, योनिरोग, रजोदोष, सूतिका दोष, दुर्बलता आदि विकारों में अमृत के समान गुणकारी यह गोलियां हैं। —श्री हरिराम वराटे द्वारा महिलारोग चिकित्सांक से।

(९७) महिला बत्तीसा—वायविडङ्ग, छोटी मांई, बड़ी मांई, गोखरू, तोदरी सफेद, तोदरी सुर्ख, बहमन सफेद, बहमन सुर्ख, मूसली सफेद, मूसली स्याह, मूसला सेमल, पिस्ता के फूल, सुपारी का फूल, धवयी के फूल, सालम मिश्री, सकाकुल मिश्री, चुनियां गोंद, मैदा लकड़ी, तज, तालमखाना, मंजीठ, छोटी इलायची, सतावर, पाषाणभेद, हरामाजू, चिकनी सुपारी, तुख्म सखाली, बीजवन्द, समुद्रसोख, लोध्रपठानी, संगजराहत, इमली के बीज, बहुफली प्रत्येक १०-१० ग्राम, घी में भुना हुआ बबूल का गोंद २५० ग्राम, मीठे बादाम की गिरी, पिस्ता की गिरी प्रत्येक ६०-६० ग्राम, नारियल की गिरी १२५ ग्राम, छुहारा, सफेद मखाना, सिंघाड़े का आटा, गेहूँ का आटा, मूंग का आटा, चारों घी में भुने हुये प्रत्येक २५० ग्राम, चीनी २ किलो। चीनी की चाशनी करके शेष

समस्त द्रव्यों का कपड़छन चूर्ण करके मिलायें और ६०-६० ग्राम के लड्डू बनाकर रखें।

मात्रा—१-२ लड्डू सुबह कलेवा के रूप में सेवन करावें।

उपयोग—यह स्त्रीजन्य रोगों के लिये बहु-उपयोगी योग है। योनि के विविध प्रकार के स्रावों (सोम) श्वेत प्रदर तथा शुक्रमेह को रोकने के लिये अधिक गुणकारी तथा प्रसवोत्तर कालीन निर्बलता को दूर करने के लिये बहुत लाभकारी एवं परीक्षित योग है।

—हकीम दलजीतसिंह द्वारा
महिलारोग चिकित्सांक से।

(९९) अबला संजीवन अर्क—अशोक छाल, कालीसारिवा, रक्त चन्दन, मंजीठ, दारुहल्दी इन पांचों को १-१ किलो लें।

विधि—सबको जौकुट कर चूर्ण करें। फिर ८ गुने जल में भिगोकर अर्क खींच लेवें।

मात्रा—१-२ औंस दिन में २-३ बार पिलावें।

उपयोग—यह अर्क स्त्रियों के विविध रोगों पर व्यवहृत होता है। अति रजःस्राव रक्तप्रदर, प्रसव के पश्चात् गर्भाशय की शिथिलता, गर्भाशय दाह, शोथ, गर्भाशय विकार के कारण चक्कर आना, घबराहट, हाथ-पैरों में दाह, निर्बलता को दूर करता है।

—सिद्ध प्रयोग संग्रह से।

(१००) नारी मंगला—अभ्रकभस्म २० ग्राम, लौहभस्म, स्वर्णमाक्षिक १० ग्राम, शंखभस्म २० ग्राम, पिप्पलीचूर्ण २० ग्राम, सोंठ का चूर्ण २० ग्राम, गिलोय-घनसत्व २० ग्राम, रससिन्दूर १० ग्राम।

निर्माण विधि—प्रथम रससिन्दूर को अच्छी तरह खरल कर और भस्में मिलादें फिर चूर्ण तथा घन मिलावें सब एक प्राण हो जाने के बाद दशमूल क्वाथ की ३ भावना देकर २-२ रत्ती की गोली बनालें।

मात्रा—२-२ गोली मधु के साथ प्रातः-सायं दें।

उपयोग—यह योग स्त्री की दुर्बलता के लिये रामबाण है। किसी भी रोग के कारण स्त्री की दुर्बलता के बाद इस योग का प्रयोग कराने से लाभ होता है। यह योग प्रसूति रोग के बाद आयी दुर्बलता तथा अन्य विकारों के लिये उपयोगी है। —वैद्य मोहनलाल द्वारा
धन्वन्तरि नारीरोगांक से।

(१०१) महिलारक्षक चूर्ण—विदारीकन्द, दालचीनी, गोखरू, समुद्रशोख, बीजबन्द, तालमखाना, सकाकुल, सालममिश्री, बेदाना, सफेद मूसली, इन्द्रजौ, बहमन दोनों, उटंगन बीज, कौंच के बीज, सतावर, कतीरागोंद, त्रिफला, ईसबगोल की भुसी, सनाय, तवाशीर, लक्ष्मणा, असगन्ध, मोचरस, मिश्री ५०-५० ग्राम, शिलाजीत २५ ग्राम, वंगभस्म, प्रवालभस्म १०-१० ग्राम।

विधि—सब औषधियों को बारीक चूर्ण कर मिश्री मिला लेवें।

मात्रा—६ ग्राम गोदुग्ध के साथ।

उपयोग—सभी प्रकार के प्रदर, मासिकधर्म की अनियमितता, दुर्बलता, योनिशैथिल्य योनिगत रक्तस्राव आदि विकार दूर होते हैं। —श्री रतनलाल जैन द्वारा
धन्वन्तरि नारीरोगांक से।

(१०२) सुन्दरीरक्षक पाक—बहमन सफेद, उटंगन, बीज, शुद्ध कौंच बीज, शतावर, इन्द्रजौ, कतीरा गोंद, ईसबगोल की भुसी, हरड़ की छाल, सनाय, बहेड़ा, आंवला, बबूल फली, तवाशीर, लक्ष्मणा, असगन्ध, मोचरस, शिलाजीत, वंगभस्म, समानभाग का कपड़छन चूर्ण कर फिर मिश्री सबके बराबर मिलाकर शीशी में भरकर रखलें।

मात्रा—४-४ ग्राम सुबह-शाम गोदुग्ध के साथ सेवन कराना चाहिये।

उपयोग—योनि से विभिन्न प्रकार के स्राव तथा उनसे होने वाली दुर्बलता, सिर का दर्द, कमर तथा पेडू का दर्द, क्षुधानाश, मन्दाग्नि, रजोविकार, आदि समस्त जननेन्द्रिय सम्बन्धी विकार थोड़े दिन में ठीक हो जाता है।

—उमाशंकर दधीच द्वारा
धन्वन्तरि चिकित्सा समन्वयांक से।

(१०३) चन्द्रप्रभा मोदक—बादाम मींग, द्राक्षा बीजरहित तथा मिश्री कूजे की तीनों ५०-५० ग्राम, बंसलोचन असली १० ग्राम, मस्तगिमीय १० ग्राम, पीपर ६ ग्राम, छोटी इलायची के बीज ६ ग्राम।

विधि—बादाम भिगोकर छिलका साफकर सिल पर बारीक पीसलें। बीजरहित द्राक्षा की अलग चटनी करलें और मिश्री आदि द्रव्यों को अलग एकत्र कर कूट-पीस कर अति सूक्ष्म करलें यहां तक कि खरल की मूसला से चुपकने लगे इतना घोटें तत्पश्चात सबको एक कर घोटें। एक जीव हो जाने पर १०-१० ग्राम प्रमाण मोदक बनालें और चांदी के वर्क लपेटते जावें। यह चन्द्रप्रभा मोदक है।

मात्रा तथा प्रयोग विधि—प्रातः सायं १-१ मोदक मिश्री युक्त दुग्ध के साथ सेवन कराना चाहिये।

उपयोग—स्त्रियों की किसी भी प्रकार की दुर्बलता के लिये अति उपयोगी योग है। गर्भावस्था, प्रसूतावस्था में जब स्त्री अत्यन्त दुर्बल हो जाती है तो इसका सेवन बहुत लाभ पहुंचाता है इसको पुरुष भी सेवन कर बलवीर्य प्राप्त कर सकते हैं। —गनेशीलाल जैन द्वारा धन्वन्तरि समन्वयांक से।

(१०४) **प्रमदा जीवन**—संगजराहत १०० ग्राम, गिलोयसत्व २५ ग्राम, उत्तम सूर्यतापी शिलाजीत २० ग्राम, उत्तमधूप (राल) १० ग्राम, प्रवाल भस्म ६ ग्राम शुद्ध कुचला ३ ग्राम।

विधि—इन सब औषधियों को मूसली सफेद, सतावर, जामुन की छाल, मुलहठी इनके क्वाथ से मर्दन कर १-१ ग्राम की गोली बनालें।

मात्रा—१-१ गोली प्रातः-सायं गोदुग्ध के साथ सेवन करावें।

उपयोग—श्वेतप्रदर तथा उससे होने वाला कटिशूल, योनि से सदैव लसदार पदार्थ का बहना बन्द करने में अचूक योग है। स्त्रियों की निस्तेजना, दुर्बलता को दूर कर उन्हें हृष्ट-पुष्ट बनाती है। —श्री जगदीशनारायन द्वारा धन्व० समन्वयांक से।

[इ] प्रमुख शास्त्रीय योग

क्रमांक	कल्पना	औषधि नाम	ग्रन्थ सन्दर्भ	मात्रा एवं समय	अनुपान	विशेष
१	रस	बसन्तकुसुमाकर रस	र० यो० सा०	१२५ मि०ग्रा० दिन में २-३ बार	सिता + नवनीत	प्रदर, सोमरोगहर बल्य।
२	,,	पुष्पधन्वा रस	भै० र०	,, ,,	मधु	वन्ध्यत्व, योनि स्रावहर।
३	,,	कामदुधा रस	र० यो० सा०	२५० मि०ग्रा० दिन में २-३ बार	जीरक + सिता	रक्तप्रदर, सगर्भावान्तिहर।
४	,,	चन्द्रकला रस	नि० र०	,, ,,	अशोकारिष्ट	प्रदरहर, गर्भपोषक।
५	,,	स्वर्ण मालिनी बसन्त	सि० भै० मणि०	१२५ मि०ग्रा० दिन में २-३ बार	मधु	,,
६	,,	बोलबद्ध रस	नि० र०	२५०-५०० मि० ग्रा० दिन में २-३ बार	तण्डुलोदक	प्रदर (रक्त) गर्भपातहर।
७	,,	प्रदरान्तक रस	र० त० सा०	२५० मि०ग्रा० दिन में २-३ बार	आमलकी-स्वरस + मधु	प्रदरहर।
८	,,	प्रदरारि रस	नि० र०	२५०-५०० मि० ग्रा० दिन में २ बार	तण्डुलोदक	,,
९	,,	सर्वाङ्गसुन्दर रस	र० चं०	१२५ मि०ग्रा० दिन में २ बार	मधु	सूतिकारोगहर।

१०	रस	हिंगुल रसायन	र० त० सा०	३०-६० मि०ग्रा० दिन में २ बार	ताम्बूल में	प्रदरहर।
११	,,	हेमनाथ रस	भै० र०	१२५ मि०ग्रा० दिन में २ बार	मधु	प्रदर, कार्श्यहर।
१२	,,	कालकूट रस	र० त० सा०	६०-१२५ मि० ग्रा० दिन में २ बार	आर्द्रकस्वरस + मधु	कफ प्राधान्यप्रसवोत्तर अनुवृत्ति-हर।
१३	,,	प्रतापलंकेश्वर रस	यो० र०	२५० मि०ग्रा० दिन में २ बार	आर्द्रकस्वरस + मधु	सूतिकारोगहर।
१४	,,	महावातविध्वंसन रस	र० चं०	१२५ मि०ग्रा० दिन में २ बार	मधु	गर्भाशयविकृति, मक्कलशूलहर।
१५	,,	कस्तूरीभैरव रस	र० रा० सु०	,, ,,	दशमूल क्वाथ	सूतिकारोग, योषापस्मारहर।
१६	,,	लक्ष्मीनारायण रस	यो० र०	,, ,,	,,	,,
१७	,,	सूतिकारि रस	र० त० सा०	२५० मि०ग्रा० दिन में २ बार	आर्द्रकस्वरस + मधु	,,
१८	,,	गर्भपाल रस	र० चं०	,, ,,	मृद्विका स्वरस	गर्भस्राव, पातहर,
१९	,,	गर्भचिन्तामणि रस	र० त० सा०	,, ,,	दुग्ध	सगर्भारोगहर।
२०	,,	अष्टमूर्ति रसायन	,,	३०-५० मि०ग्रा० दिन में २ बार	मधु	फिरंगज गर्भस्राव, पातहर।
२१	,,	लक्ष्मीविलास रस	र०यो०सा०	१२५ मि०ग्रा० दिन में २ बार	यवक्षार + दशमूल क्वाथ	मक्कलशूलहर।
२२	,,	चन्द्रांशु रस	र० चं०	२५० मि०ग्रा० दिन में २ बार	जीरक क्वाथ	योनिशूल, दाहहर।
२३	,,	स्वर्ण सिंदूर	र० सा०	१२५ मि०ग्रा० दिन में २ बार	दशमूल क्वाथ	प्रसूतरोगहर।
२४	भस्म	नाग भस्म	र० त०	१२५-२५० मि० ग्रा० दिन में २ बार	मधु	गर्भाशयदोषहर।
२५	,,	बंग भस्म	,,	,, ,,	,,	,,
२६	,,	त्रिवंग भस्म	र० त० सा०	,, ,,	शृङ्ग भस्म + तण्डुलोदक	श्वेतप्रदरहर।
२७	,,	स्वर्णमाक्षिक भस्म	र० त०	,, ,,	मधु	प्रदरजन्य पाण्डुहर।
२८	,,	प्रवाल भस्म	,,	,, ,,	,,	प्रदरजन्य कार्श्यहर।
२९	,,	संगजराहत भस्म	र० त० सा०	,, ,,	सिता + नवनीत	,,
३०	,,	गोदन्ती भस्म	र० त०	२५०-५०० मि० ग्रा० दिन में २ बार	तण्डुलोदक	रक्तप्रदरहर।
३१	,,	मण्डूर भस्म	,,	,, ,,	सन्तानिका	प्रदरजन्य उपद्रवहर।
३२	,,	लौह भस्म	,,	,, ,,	,,	,,
३३	,,	स्वर्ण भस्म	,,	३०-१०० मि० ग्रा० दिन में २ बार	तण्डुलीय मूल-स्वरस	दारुण प्रदरहर।

३४	भस्म	रजत भस्म	र० त०	६०–१२५ मि० ग्रा० दिन में २ वार	ब्रह्मदण्डीचूर्ण +घृत	योषापस्मारहर।
३५	"	अभ्रक भस्म	"	१२५–२५० मि० ग्रा० दिन में २ वार	देवदार्व्यादि क्वाथ	प्रसूतरोगहर।
३६	"	कासीस भस्म	र० त० सा०	" "	एलवा+हिंगु	रजावरोगहर।
३७	" पिष्टी	प्रवाल पिष्टी	"	" "	मधु	शामक, दोषहर,
३८	"	तृणकान्तमणि पिष्टी	"	२५०–५०० मि० ग्रा० दिन मे २ बार	खूनखरावा-चूर्ण+ अशोकारिष्ट	रक्तप्रदरहर।
३९	लौह	प्रदरान्तक लौह	"	१ ग्राम दिन में २ वार	सिता+घृत +मधु	जीर्णप्रदरहर।
४०	"	ताप्यादि लौह	"	२५० मि०ग्रा० दिन में २ वार	"	"
४१	पर्पटी	अभ्र पर्पटी	व० रा०	१२५ मि०ग्रा० दिन में ३-४ बार	जीरक चूर्ण +मधु	गर्भवती अतीसारहर।
४२	"	पंचामृत पर्पटी	भै० र०	१२५–५०० मि० ग्रा० दिन में २-३ वार	कुटजत्वक् +मधु	सूतिका, ग्रहणी; अतीसारहर।
४३	"	बोल पर्पटी	"	" "	अशोकारिष्ट	प्रदरहर।
४४	"	लौह पर्पटी	"	" "	दशमूल क्वाथ	सूतिकारोगहर।
४५	मण्डूर	पुनर्नवा मण्डूर	च० सं०	२–४ गोली दिन में २-३ वार	कुमार्यासव	कार्श्य, पाण्डु, शोथहर।
४६	गुग्गुल	योगराज गुग्गुलु	च० द०	" "	"	वन्ध्यादोषहर।
४७	"	महायोगराज गुग्गुलु	शा० सं०	१–२ गोली दिन में २-३ वार	"	"
४८	"	गोक्षुरादि गुग्गुल	"	२–४ गोली दिन में २-३ वार	अशोकारिष्ट	प्रदरहर।
४९	वटी	कासीसादि वटी	र० त०	२ गोली दिन में २ वार	जल	अनियमित रजोदर्शन में।
५०	"	अमरसुन्दरी वटी	नि० र०	" "	"	जीर्णप्रदर, सूतिकारोगहर।
५१	"	कन्यालोहादि वटी	र० त० सा०	" "	"	अनियमित रजोदर्शन में।
५२	"	रजःप्रवर्तनी वटी	भै० र०	" "	दशमूल क्वाथ	योनिव्यापद्हर।
५३	"	चन्द्रप्रभा वटी	शा० सं०	" "	दुग्ध	प्रदर, गर्भस्रावहर।
५४	"	बोलादि वटी	सि०यो०सं०	" "	जटामांसी क्वाथ	अनार्तव नाशक।
५५	"	कुमारिका वटी	भै० र०	१–२ गोली दिन में २-३ वार	उष्ण जल	योनिशूल, मक्कलशूलहर।
५६	"	कांकायन वटी	शा० सं०	" "	उष्ट्री दुग्ध	रक्तगुल्महर।
५७	"	प्रदरान्तक वटी	र० त० सा०	" "	तण्डुलोदक	रक्तप्रदरहर।
५८	"	चन्द्रकला वटी	भै० र०	" "	"	"

५९	आसव-अरिष्ट	अशोकारिष्ट	भै० र०	१५-३० मि०लि० भोजनोत्तर	समान जल मिलाकर	प्रदर, योनिशूलहर।
६०	,,	कुमार्यासव	यो० र०	,, ,,	,,	गर्भाशयविकारहर।
६१	,,	उशीरासव	शा० सं०	,, ,,	,,	रक्तप्रदरहर।
६२	,,	देवदार्व्याद्यरिष्ट	,,	,, ,,	,,	प्रदर, गर्भाशयदोषहर।
६३	,,	दशमूलारिष्ट	,,	,, ,,	,,	योनिव्यापद्हर।
६४	,,	पत्रांगासव	भै० र०	,, ,,	,,	प्रदर, ज्वरपाण्डुहर।
६५	,,	जीरकाद्यरिष्ट	,,	,, ,,	,,	सूतिकारोग, ग्रहणी, अतीसारहर
६६	,,	सारस्वतारिस्ट	,,	,, ,,	,,	रजोदोष, अपतन्त्रकहर।
६७	,,	अभयारिष्ट	,,	,, ,,	,,	गर्भाशयविकृतिहर।
६८	,,	चन्दनासव	,,	,, ,,	,,	उष्णताहर।
६९	घृत	दूर्वाद्य घृत	भै० र०	१०-२० ग्राम दिन में १-२ बार	दुग्ध	रक्तप्रदरहर।
७०	,,	फल घृत	शा० सं०	,, ,,	,,	वन्ध्यत्वहर।
७१	,,	अशोक घृत	भै० र०	,, ,,	,,	प्रदरहर।
७२	,,	वृ० धातु घृत	,,	,, ,,	,,	सोमरोगहर।
७३	पाक-लेह	कुटजाष्टकावलेह	शा० सं०	५-१० ग्राम दिन में १-२ बार	अजादुग्ध	प्रदररोगहर।
७४	,,	जीरकाद्यवलेह	यो० र०	,, ,,	दुग्ध	प्रदर, दाह, तृषा, क्षीणताहर।
७५	,,	शुंठ्यादि पाक	र० त० सा०	१०-२० ग्राम दिन में १-२ बार	,,	सूतिका दौर्बल्यहर।
७६	,,	सौभाग्यशुण्ठी पाक	,,	२०-२५ ग्राम दिन में १-२ बार	,,	सूतिकारोगहर।
७७	,,	मधुकाद्यावलेह	,,	५-१० ग्राम दिन में १-२ बार	,,	प्रदरहर।
७८	,,	सुपारी पाक	वृ० पा० सं०	,, ,,	,,	प्रसवजातकार्श्यहर, योनिदोषहर।
७९	क्वाथ	दार्व्यादि क्वाथ	शा० सं०	१० ग्राम का क्वाथ कर दिन में २ बार	मधु	सशूल, प्रदरहर।
८०	,,	अर्कादि क्वाथ	वै० जी०	,, ,,	,,	सूतिकाज्वरहर।
८१	,,	दशमूल क्वाथ	शा० सं०	,, ,,	,,	सूतिकादोषहर।
८२	,,	स्तन्यशोधक क्वाथ	यो० र०	,, ,,	,,	स्तन्यदोषहर।
८३	,,	देवदार्व्यादि क्वाथ	नि० र०	,, ,,	भृष्टहिंगु + सैन्धव	सूतिकारोगहर।
८४	,,	त्रिफला क्वाथ	चरक०	१० ग्राम का क्वाथ कर दिन में १-२ बार	—	वातानुलोमन।
८५	,,	न्यग्रोधादिगण क्वाथ	सु० उ०	,, ,,	मधु	प्रदरहर।

८६	तैल	धातक्यादि तैल	च० सं०	यथेष्ट	पिचु धारणार्थ	योनिशूल, योनिकंदहर।
८७	,,	नतादि तैल	वं० से०	,, ,,	,,	वातजयोनिरोगहर।
८८	,,	लाक्षादि तैल	शा० सं०	,, ,,	अभ्यङ्गार्थ	गर्भपुष्टि हेतु।
८९	,,	बलादि तैल	,,	,, ,,	,,	सूतिकारोगहर।
९०	,,	शतावरी तैल	,,	,, ,,	पिचु धारणार्थ	योनिशूलहर।
९१	,,	चन्दनबला-लाक्षादि तैल	यो० र०	,, ,,	अभ्यङ्गार्थ	गर्भवती हेतु हितकारी।
९२	,,	सिद्धार्कादि तैल	र० त० सा०	,, ,,	पिचु धारणार्थ उत्तरवस्ति हेतु	अपरापातनार्थ।

कुछ प्रमुख स्त्रीरोगों में सामान्य चिकित्सा उपक्रम

(१) प्रदर में अन्य उपायों के साथ रक्त-पित्त नाशक क्रिया उपयोगी है। (विशेष विवरण प्रदर तथा असृग्दर के अन्तर्गत पृथक् देखें)।

(२) सोमरोग में उदकमेहवत चिकित्सा करनी चाहिये।

(३) योनि व्यापद् में वातशामक चिकित्सा—यथा वस्ति, उत्तर वस्ति, अभ्यंग, परिषेक, प्रलेप, पिचु धारण आदि हितकारक है।

(४) गर्भिणी चिकित्सा में मासानुमासिक क्रम से व्यवस्था करनी चाहिये। गर्भावस्था में उत्पन्न रोगों का उपचार सौम्य होना चाहिये।

(५) सूतिका रोगों में प्रधानतः वातनाशक चिकित्सा करनी चाहिये।

कुछ प्रमुख स्त्री रोगों में सफल औषधि व्यवस्था-पत्र

सोमरोग—(१) वृ० सोमनाथ रस २ रत्ती, वसन्तकुसुमाकर १ रत्ती। १ मात्रा × कच्चे गूलर के फल के छाया शुष्क चूर्ण ६ ग्राम मधु के साथ प्रातः-सायं।

(२) माषादि चूर्ण ६ ग्राम × १ मात्रा मधु में मिलाकर प्रातः ८ बजे।

(३) बहुमूत्रान्तक रस १ रत्ती, तारकेश्वर रस १ रत्ती। १ मात्रा × आमलकी स्वरस तथा मधु के साथ दिन में २ बजे तथा रात्रि को सोते समय।

(४) चन्द्रप्रभावटी २ गोली × १ मात्रा प्रातः १० बजे तथा रात्रि को सोते समय जल या दूध से।

नष्टार्तव और कष्टार्तव—(१) रजःप्रवर्तिनी वटी—२ गोली × १ मात्रा १ घूंट गर्म जल के साथ ६ बजे प्रातः-सायं और रात को सोते समय।

(२) नष्टपुष्पान्तक रस २ रत्ती, टंकणक्षार (सुहागे की खील) ६ रत्ती। १ मात्रा × प्रातः १० बजे तथा सायं ४ बजे तिलादि क्वाथ[1] ५० मि० ग्रा० के साथ।

(३) कुमारीआसव-२० मि० लि० × १ मात्रा। भोजनोपरान्त बराबर जल मिलाकर दोनों समय।

(४) आर्तव प्रवर्तिकावर्ति[2]—रात्रि में सोते समय योनि में धारण करावें।

१ **तिलादि क्वाथ**—काले तिल की जड़ या तिल, लसोड़े की पत्ती, कलोंजी-प्रत्येक ५-५ ग्राम लेकर २५० ग्राम जल में पकावें। जब चौथाई रहे तब १० ग्राम गुड़ मिलाकर ठण्डा करके पियें।

२. **आर्तव प्रवर्तिका वर्ति**—कड़ुवी तुम्बी के बीज, दन्ती की जड़, पीपर, मैनफल का चूर्ण, यवक्षार, आसवारिष्ट की सीठी (गाद), गुड़ तथा सेंहुड का दूध सब समभाग लेकर पीसकर वर्तिका बनालें।

वन्ध्यत्व—(१) चतुर्मुख रस १ रत्ती × १ मात्रा। प्रातः ८ बजे मधु के साथ दिन में १ बार।

(२) फलघृत–२ चम्मच × १ मात्रा। प्रातः १० बजे तथा रात्रि को सोते समय २५० ग्राम अश्वगन्धा क्षीरपाक[३] में।

(३) दशमूलारिष्ट १० मि० लि० × १ मात्रा। भोजनोपरान्त दोनों समय।

(४) सुपारीपाक–१० ग्राम × १ मात्रा। रात्रि को सोते समय दूध से।

वन्ध्यत्व (गर्भस्थापनार्थ) की सफल चिकित्सा—सुधानिधि के आदि सम्पादक वैद्य देवीशरण गर्ग ने सहस्रों वन्ध्या स्त्रियों की चिकित्सा कर उन्हें पुत्रवती बनाया। इस रोग की वह जो चिकित्सा करते थे उसका विवरण उन्होंने सुधानिधि के महिलारोग चिकित्सांक में विस्तार से दिया था उसे पाठकों के लाभार्थ यहां अविकल दिया जा रहा है—

गर्भ स्थापनार्थ चिकित्सा करने से पूर्व सर्वप्रथम यह देखना अत्यन्त आवश्यक है, कि पुरुष के वीर्य में सन्तानोत्पादक कीटाणु हैं अथवा नहीं? यदि पुरुष के वीर्य में सन्तानोत्पादक कीटाणु नहीं हैं, तो सर्वप्रथम पुरुष की ऐसी चिकित्सा होनी चाहिये जिससे सन्तानोत्पादक कीटाणु उत्पन्न हो जांय। बहुत से व्यक्तियों के वीर्य में, सन्तानोत्पादक कीटाणु होते तो हैं, किन्तु वे अत्यन्त निर्बल या मृतप्राय होते हैं। जिन पुरुषों के वीर्य में सन्तानोत्पादक कीटाणु हैं ही नहीं, उनकी चिकित्सा बहुत कठिन है। किन्तु जिन पुरुषों के वीर्य में सन्तानोत्पादक कीटाणु निर्बल या मृतप्राय हैं, उनकी चिकित्सा की जा सकती है। पुरुष वीर्य में सन्तानोत्पादक कीटाणु हैं या नहीं? इसका पता किसी मेडीकल अस्पताल में या टैस्ट करने वाले किसी डाक्टर से कराई जा सकती है।

यदि पुरुष वीर्य में जनन-शक्ति है तो यह समझना चाहिये कि स्त्री में ही इस प्रकार की त्रुटि है कि गर्भ नहीं रहता। इसलिये सर्वप्रथम यह देखना आवश्यक है, कि, स्त्री को मासिकधर्म सम्बन्धी कोई विकृति तो नहीं है। मासिकधर्म समय पर आता है या नहीं? मासिकधर्म के समय विशेष कष्ट तो नहीं होता और स्त्री पुराने प्रदर की रोगिणी तो नहीं है? यदि इनमें से कोई विकार है, तो पहले उसे दूर करने का यत्न करना चाहिये; फिर गर्भस्थापनार्थ औषधि का व्यवहार करना चाहिए। ऐसा न करने से कभी-कभी उत्तम से उत्तम गर्भस्थापक प्रयोग भी व्यर्थ हो जाते हैं।

गर्भस्थापक चिकित्सा—यह चिकित्सा मासिकधर्म होने के पश्चात् स्त्री के शुद्ध होने पर प्रारम्भ करनी चाहिये और जब तक पुनः मासिकधर्म प्रारम्भ न हो, यह चिकित्सा चलनी चाहिये।

प्रातः, सायं—कामिनीकुलमण्डन रस २ गोली, संगजराहत भस्म २ रत्ती, प्रवालपिष्टी १ रत्ती। सब वस्तुओं को पीसकर १ मात्रा बनावें और ऐसी १ मात्रा प्रातः भोजन से पूर्व तथा १ मात्रा सायंकाल भोजन से २ घण्टे पूर्व शर्बत पलाश में मिलाकर चटावें।

भोजनोपरान्त—अशोकारिष्ट १० मि० लि० बराबर जल मिलाकर पिलावें।

रात्रि को—पलाश-पत्र साधित गोदुग्ध में १० मि० लि० फलघृत मिलाकर पिलावें।

कामिनीकुलमण्डन रस का प्रयोग—पारा शुद्ध, गन्धक शुद्ध, अभ्रक भस्म शतपुटी, उत्तम ताम्र भस्म, लोह भस्म तीनसौ पुटी प्रत्येक १०-१० ग्राम, हरड़, बहेड़ा, आंवला, रेवन्दचीनी चारों ३०-३० ग्राम, त्रिफला छाल, शुद्ध गुग्गुल, शिलाजीत सूर्यतापी तीनों ५०-५० ग्राम, एलुआ, सोंठ, मरिच, पीपल तीनों २०-२० ग्राम, कुटकी ४०० ग्राम।

३. अश्वगन्धा क्षीरपाक—दूध २५० ग्राम में जल भी २५० ग्राम मिलाकर २० ग्राम अश्वगन्धा डालकर पकावें। पानी जल जाय तब उतारकर छानकर उसमें थोड़ा घृत तथा मिश्री मिलाकर देना चाहिये।

विधि—प्रथम पारा, गन्धक की अच्छी प्रकार कज्जली बनावें और उसमें अभ्रक भस्म, ताम्र भस्म, लोह भस्म मिलाकर पुनः एक दिन घुटाई करके इसे अलग रख लें। फिर गुग्गुल, शिलाजीत और एलुआ मिलाकर कूटें और एकजीव करके रखें, फिर त्रिफला आदि औषधियों को कूटकर कपड़छन कर लें। अब इसमें अलग रखा हुआ गुग्गुल, शिलाजीत, एलुआ का मिश्रण अच्छी तरह मिला दें। उसके पश्चात् भस्मों सहित रखी हुई कज्जली मिलायें और १ दिन ग्वारपाठे के रस में तथा १ दिन पलास-पत्र में घोटकर २-२ रत्ती की गोली बना लें।

पलास-पत्र साधित दुग्ध बनाने की विधि—ढाक का एक हरा और कोमल पत्ता लेकर उसके ५-६ छोटे-छोटे टुकड़े करके २५० ग्राम गोदुग्ध तथा २५० ग्राम जल मिलाकर उसमें डाल दें और फिर आग पर औटावें। जब दुग्ध मात्र शेष रहे, तब उतार कर छान लें और मिश्री मिलाकर पिलावें। यदि नित्यप्रति पलाश-पत्र न मिले तो छाया में सुखाये हुये पलाश-पत्रों के चूर्ण को ३ ग्राम की मात्रा में गोदुग्ध में मिलाकर औटावें। लेकिन जितना शीघ्र लाभ हरे पत्ते मिला औटाकर होता है, उतना चूर्ण से नहीं होता।

यह चिकित्सा जब तक मासिकधर्म का प्रारम्भ नहीं होता, निरन्तर चलनी चाहिये। जैसे ही मासिकधर्म प्रारम्भ हो जाय, निम्नलिखित प्रयोग प्रारम्भ करें—

ढाक के एक कोमल पत्र को लेकर खूब बारीक पीसें और पीसते समय आवश्यकतानुसार गाय के कच्चे दूध के छींटे देते जांय। जब खूब बारीक पिस जाय, तो गाय के ५० ग्राम कच्चे दूध में इसे घोलकर मिला लें और स्त्री को पिलाकर ऊपर से गाय का कच्चा दूध पिलावें। प्रथम दिन स्त्री को केवल गोदुग्ध पान करावें तथा अन्य कोई वस्तु खाने को न दें। प्रातःकाल की औषधि तो कच्चे दूध के साथ ही सेवन कराई जायगी, उसके पश्चात् औटाये हुये दूध मे मिश्री मिलाकर पिलाना चाहिये। इस प्रकार जिन स्त्रियों को तीन दिन मासिकस्राव होता है, उनको तीन दिन और चार दिन मासिकस्राव होता हो, उन्हें चार दिन व्यवहार करानी चाहिये। तीन या चार दिन इस प्रयोग के करने के पश्चात् पुनः पूर्व लिखित औषधियों का सेवन कराना प्रारम्भ कर दें और पुनः मासिकधर्म होने पर इस प्रयोग को करायें।

साधारण दिनो में जैसा कि लिखा जा चुका है, पलास-पत्र चूर्ण का प्रयोग दुग्ध बनाने में कराया जा सकता है। किन्तु मासिकधर्म के समय प्रयोग कराने के लिए हरा और ताजा पत्र ही होना आवश्यक है।

औषधि सेवन काल में गर्म, तली हुई वस्तु, कब्जकारक पदार्थ, मीठा, मिर्च, खटाई, चाय का व्यवहार नहीं करना चाहिये और पुरुष सहवास एक मास मे दो बार से अधिक नहीं करना चाहिए।

यद्यपि सभी बातें स्पष्ट और विस्तार से लिखी गयी है, फिर भी यदि कोई बात समझ में न आवे तो पत्र द्वारा स्पष्ट करली जा सकती हैं।

फलघृत शास्त्रीय औषधि है, इसका प्रयोग भैषज्य रत्नावली, रसतन्त्रसार किसी ग्रन्थ में देखा जा सकता है। इस फलघृत को या तो स्वयं बनाना चाहिये या किसी विश्वस्त स्थान से लेना चाहिये।

शर्बत पलाश बनाने की विधि—हरे पलास पत्रों को जल के छींटा लगाकर खूब कूटें और कपड़े में निचोड़कर रस निकाल ले। ऐसे ५० ग्राम रस में १० ग्राम मिश्री डालकर शर्बत की चासनी कर लें।

उक्त विधि से प्रयोग करने वाले चिकित्सकों से प्रार्थना है, कि फलाफल अवश्य लिखें।

गर्भस्राव (बार-बार होने वाला)—बार-बार गर्भस्राव होने वाली स्त्री को गर्भ धारण के पश्चात् ९ माह तक निम्न औषधि व्यवस्था करने से लाभ होता है—

(१) गर्भपाल रस २ रत्ती + संगजराहत ४ रत्ती + सूतशेखर रस २ रत्ती + प्रवालभस्म २ रत्ती, १ मात्रा × प्रातः दोपहर शाम आंवले के मुरब्बे के साथ या शहद से दिन में ३ बार।

(२) मुक्तापिष्टी १ रत्ती+प्रवालपिष्टी २ रत्ती+त्रिवङ्गभस्म १ रत्ती—१ मात्रा × प्रातः-सायं १० ग्राम च्यवनप्राश में मिलाकर चटावें।

(३) पलाशपत्र साधित दुग्ध २५० ग्राम प्रातः ८ बजे (विधि वन्ध्यत्व की चिकित्सा में वर्णित है)।

सूतिका रोग—(१) प्रतापलंकेश्वर रस ३ रत्ती १ मात्रा × अदरक का रस २ ग्राम तथा मधु ३ ग्राम के साथ ६ बजे प्रातः मध्याह्न तथा सायंकाल।

(२) देवदार्व्यादि क्वाथ—८० ग्राम। १ मात्रा × प्रातः ७ बजे।

(३) सौभाग्यशुण्ठी पाक २० ग्राम। १ मात्रा × गोदुग्ध के साथ प्रातः ८ बजे तथा सायं ४ बजे।

सूतिका ज्वर—(१) प्रतापलंकेश्वर रस २ रत्ती+लक्ष्मीविलास रस २ रत्ती+वसन्तमालती १ रत्ती—१ मात्रा × प्रातः, दोपहर, सायं पीपर चूर्ण २ रत्ती तथा मधु के साथ प्रातः ६ बजे। ऊपर से दशमूल क्वाथ पिलावें।

(२) दशमूलारिष्ट २० मि० लि० १ मात्रा × बराबर जल मिलाकर भोजन के पश्चात्।

(३) चन्दनबला लाक्षादि तैल—अभ्यंग के लिये प्रयोग करें।

[ई] प्रमुख पेटेण्ट आयुर्वेदीय योग

क्रमांक	योग का नाम	निर्माता कम्पनी	उपयोग विधि	विशेष
१	ल्यूकोल टेब०	हिमालय	१–२ गोली दिन में २-३ बार।	प्रदर, मासिकस्राव की अनियमितता, गर्भाशयजन्य रक्तस्राव में उपयोगी है।
२	स्टिपलोन टेब०	एलार्सिन	,, ,,	गर्भाशयिक रक्तस्राव में उपयोगी।
३	आयापोन टेब०	,,	१–२ गोली दिन में ३-४ बार।	विभिन्न कारणों से उत्पन्न गर्भाशयिक रक्तस्राव में उपयोगी, प्रसूति के बाद होने वाले रक्तस्राव में भी उपयोगी।
४	एलोज कम्पाउण्ड टेब०	,,	,, ,,	अनियमित मासिकधर्म, अल्प रजःस्राव, नष्टार्तव, रजःकृच्छ्रता, वन्ध्यत्व में उपयोगी।
५	लेप्टाडिन टेब०	चरक	२ गोली दिन में ३ बार ७ दिन तक।	बार-बार होने वाले गर्भपात में उपयोगी।
६	फैरीटोन टेब०	,,	२ गोली सुबह, शाम जल के साथ।	गर्भावस्था में उत्पन्न विकारों यथा वमन, अरुचि, मलावरोध में उपयोगी।
७	टीनापेन टेब०	,,	२ गोली २-३ बार १० दिन तक।	कष्टार्तव, अनियमित आर्तव में उपयोगी।
८	लूनारेक्स टेब०	,,	२ गोली २-३ बार।	मासिकहीनता या विलम्ब से होने वाले मासिक स्राव में उपयोगी।

	लूनारेक्स फोर्ट	चरक	२ गोली दिन में ३-४ बार जल के साथ ६-७ दिन तक।	मासिकधर्म की इच्छानुसार शीघ्र आवश्यकता हो तो इसका प्रयोग करावें. मासिकधर्म की रुकावट में गर्भ पहिचान (Pregnencytest) के लिये उपयोगी है।
१०	पोसेक्स टेब० साधारण एवं फोर्ट	"	" "	गर्भाशयिक रक्तस्राव मे उपयोगी।
११	रजावरोधान्तक कैप०	गर्ग वनौषधि	१—१ कैप० प्रातः तथा रात्रि को।	अल्प मासिकस्राव, कष्टरज, मासिक-विलम्ब, गर्भाशयशोथ में उपयोगी।
१२	एम० टोन० लिक्विड	चरक	१—२ चम्मच भोजन से ½ घण्टे पहले।	अत्यार्तव तथा अनियमित आर्तव में उपयोगी।
१३	हेमपुष्पा	राजवैद्य शीतलप्रसाद	" "	मासिक अनियमिता, गर्भाशयशोथ वन्ध्यत्व, मे उपयोगी।
१४	कामिनी कार्डियल	मार्तण्ड	१—२ चम्मच दिन में २-३ बार।	गर्भधारण में अशक्त तथा गर्भाशय-शोथ, योनि-दुर्गन्धितस्राव आदि में उपयोगी।
१५	अशोका कार्डियल फोर्ट	गर्ग वनौषधि	" "	गर्भाशय-शोथजन्य रोगों में उपयोगी।
१६	स्त्रीसुधा	धन्वन्तरि कार्यालय	" "	"
१७	अबलारि	डाबर	" "	गर्भाशय-शोथ; गर्भाशय से विभिन्न प्रकार के स्रावों में उपयोगी।
१८	अपामार्ग सूचीवेध	बुन्देलखण्ड	१—२ मि० लि० आवश्यकतानुसार।	विलम्बप्रसव तथा कष्टप्रसव में उपयोगी।
१९	उलट कम्बल सूचीवेध	जी० ए० मिश्रा	" "	कष्टरजःस्राव, गर्भाशयिक दुर्बलता मे उपयोगी।
२०	ऋतुशोधन सूचीवेध	मार्तण्ड	१ एम्पुल प्रतिदिन मांस में।	कष्टार्तव, अनियमित मासिकस्राव, गर्भाशय-शोथ में उपयोगी।
२१	गर्भपाल रस सूचीवेध	बुन्देलखण्ड	१—२ सि० लि० सप्ताह में २ बार।	वार-वार होने वाले गर्भपात में उपयोगी।
२२	घृतकुमारी	"	१—२ मि० लि० १ दिन छोड़कर।	कष्टार्तव में उपयोगी।
२३	दशमूल	"	१—२ मि० लि० प्रतिदिन मांस में।	प्रसूतिजन्य विकारों में उपयोगी।

[उ] प्रमुख पेटेण्ट एलोपैथिक योग

औषधि का नाम	निर्माता	मात्रा एवं व्यवहार-विधि	विशेष
[१] मासिकस्राव सम्बधी विकार			
१. इन्जेक्शन—			
१. इरगोमेट्रीन (Ergometrine)	B. D. H.	मासिकधर्म प्रारम्भ होने से पहले ·२५ से ५ मि० ग्रा० तक मांस में नित्य तब तक लगावें, जब तक मासिकस्राव आना बन्द न हो जाय।	मासिकस्राव के कष्ट से आने पर इसका प्रयोग करावें।
२. ओवोसाइक्लीन (Ovocyclin)	Ciba	१·५ मि० ग्रा० का इन्जेक्शन मांस मे नित्य लगावें। कुल ५ इन्जेक्शन लगावें।	,, ,,
३. टेस्टोस्टेरोन प्रोपियोनेट (Testosterone Propionate)	B. I.	मासिकधर्म के तुरन्त बन्द होने पर १० मि० ग्रा० मास में नित्य या हर तीसरे दिन कुल ४—८ इन्जेक्शन रोग के अनुसार लगावें।	,, ,,
४. पेथिडीन हाइड्रोक्लोराइड (Pethedine Hydro chloride)	B. I.	५०—१०० मि० ग्रा० का इन्जेक्शन रोजाना मांस में लगावें।	असह्य मासिकस्राव की पीड़ा मे प्रयोग करावें।
५. स्टिलबोएस्ट्रोल (Stilboestrol)	B. C. Co.	हर माह माहवारी बन्द होने के बाद १—५ मि० ग्रा० नित्य माह मे लगावें।	अनियमित मासिकस्राव को सुधारने के लिए प्रयोग करावें।
२. टेबलेट—			
१. बारडेस (Bardase)	Parke Davis	१ गोली दिन में २-३ बार दें।	मासिकस्राव के कष्टपूर्वक आने पर प्रयोग करावें।
२. बुसकोपान कम्पोजीटम (Buscopan Compositum)	German Remedies	१—२ ड्रेगी दिन मे २-३ बार दें।	मासिकस्राव के अनियमित तथा कष्ट के समय प्रयोग करावें।
३. इरगाटैब (Ergatab)	Mercury	१—२ कैपसूल दिन मे २-३ बार दें।	मासिकस्राव के रुकने पर इसका प्रयोग करावें।
[२] गर्भपात एवं गर्भस्राव—			
[गर्भपात एवं गर्भस्राव प्रकरण देखें]			

[३] प्रसवोत्तर रक्तस्राव एवं वेदना			
१. इरगोमैट्रीन (Irogometrine)	Dey's	$\frac{१}{२४०}$–$\frac{१}{१२०}$ ग्रेन की सुई चर्म में लगावें।	प्रसवोत्तर रक्तस्राव को रोकता है।
२. मिथर्जिन (Methergin)	Glaxo	१ सी० सी० की सुई चर्म में लगावें।	प्रसवोत्तर रक्तस्राव में लाभ करता है।
३. पिटोसिन (pitocin)	Parke Davis	$\frac{१}{३}$–१ सी० सी० सुई मांस में लगावें।	,, ,,
४. पेथिडीन हाइड्रोक्लोराइड (Pethidine Hydrochloride)	B. I	५०–१०० मि० ग्रा० की २ सी०-सी० की सुई दिन में १-२ वार चर्म में लगावें।	प्रसवोत्तर वेदना में लाभप्रद।
[४] वन्ध्यत्व—			
१. इटीसाइक्लीन (Eticyclin)	Ciba	७५ मि० ग्रा० की १-२ टिकिया नित्य माहवारी आने से पहले दें।	वन्ध्यत्व की अवस्था में उपयोगी।
२. एनोव्लर २१ (Anovolar 21)	Sherring	माहवारी आने के पांचवे दिन से इक्कीस दिन तक १-१ गोली नित्य रोगानुसार दे।	,, ,,
३. ओवोसाइक्लीन (Ovocyclin)	Ciba	१–१ गोली मासिक आने के दिन से २ सप्ताह तक रोजाना सेवन करावें।	वन्ध्यत्व की अवस्था में उपयोगी। (इसका इन्जेक्शन भी आता है।)
४. वोल्डीज (Voldys)	B. D. H	माहवारी आने के पांचवें दिन से बीस दिन तक १-१ गोली नित्य सेवन करावें।	,, ,,
[५] योनि रोग (Vaginal Disease)			
१. फ्लेजिल (Flagyl)	May & Baker	२०० मि० ग्रा० दिन में ३ वार ७ दिन तक दे या ४०० मि० ग्रा० दिन में २ वार ५ दिन तक दें।	योनिगत स्राव; दुर्गन्धि आदि के लिए उपयोगी।
२. गाइनोसान (Gynosan)	Suhrid geigy	१ गोली रात को योनि में धारण करावें।	योनिशोथ, योनिगत स्राव में उपयोगी।
३. ट्रिपिल सल्फा क्रीम (Triple Sulfa)	Ethnor	योनि में लगावें।	योनिशोथ, योनिकण्डू आदि में उपयोगी।
४. माइकोस्टेनिन वैजाइनल (Mycostanin vaginal)	Sarabhai	१–२ गोली योनि के अन्दर तक रखवावें।	योनिगत दुर्गन्धित स्राव में उपयोगी।

[६] सामान्य स्त्री-रोगों में पेय			
१. अशोका कार्डियल (Ashoka cardial)	Bangal	२–४ चम्मच खाने के बाद।	दुर्बलता, प्रदर, मासिक अनियमिता में उपयोगी।
२. यूटेरोमीनोल (Uteromenol)	Eastern drug	" "	" "
३. यूटेरोन (Uteron)	Bengal Chemical	" "	" "
४. एलेट्रिस एलिक्सिर (Aletris Elixir)	Alembic	" "	श्वेतप्रदर तथा अन्य स्त्री विकारों में उपयोगी।
५. अशोकाविन विद हार्मोन्स (Ashokavin with Harmones)	Smith	" "	" "
६ हिपेटोग्लोबिन सीरप (Hepatoglobin syrup)	Raptakos	" "	विभिन्न कारणों से उत्पन्न रक्ताल्पता में उपयोगी।